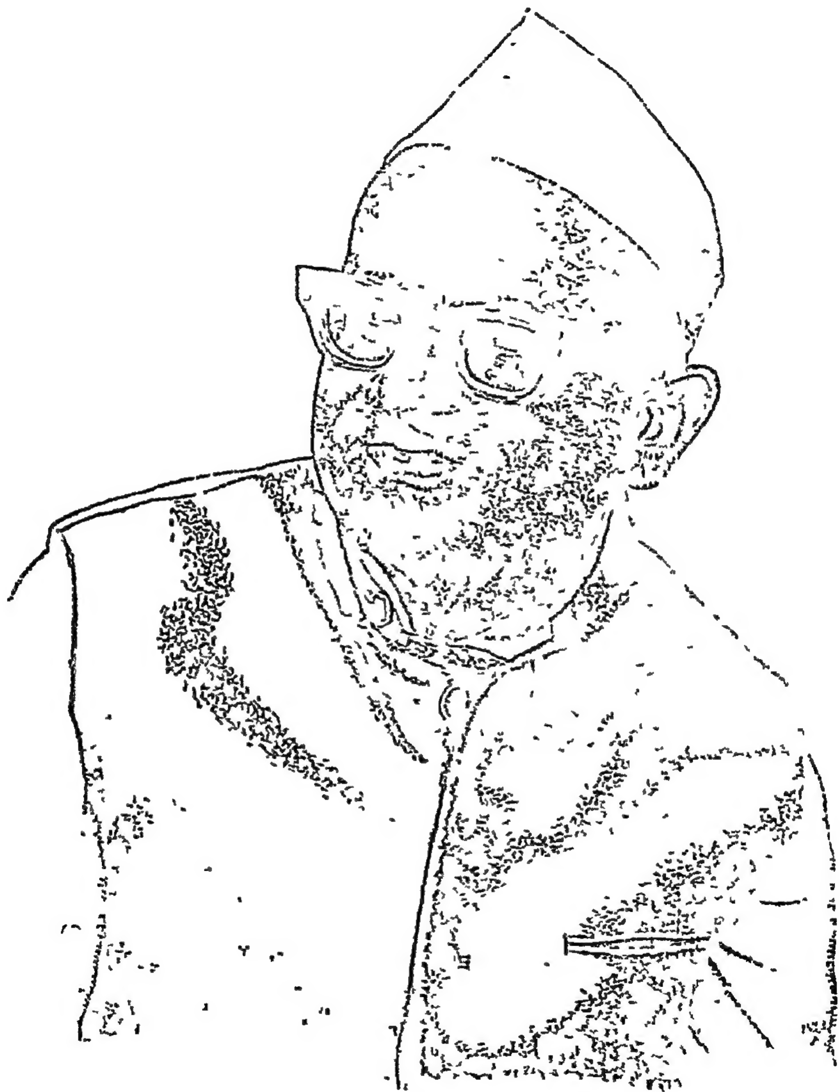


महिला–मण्डल के कार्यकर्ता अपने तत्कालीन अध्यक्ष (बीचमें) श्री लक्ष्मीलाल जोशी के साथ साथ में हैं मंडल की प्रथम अध्यक्ष श्रीमती विज्यालक्ष्मी नागर

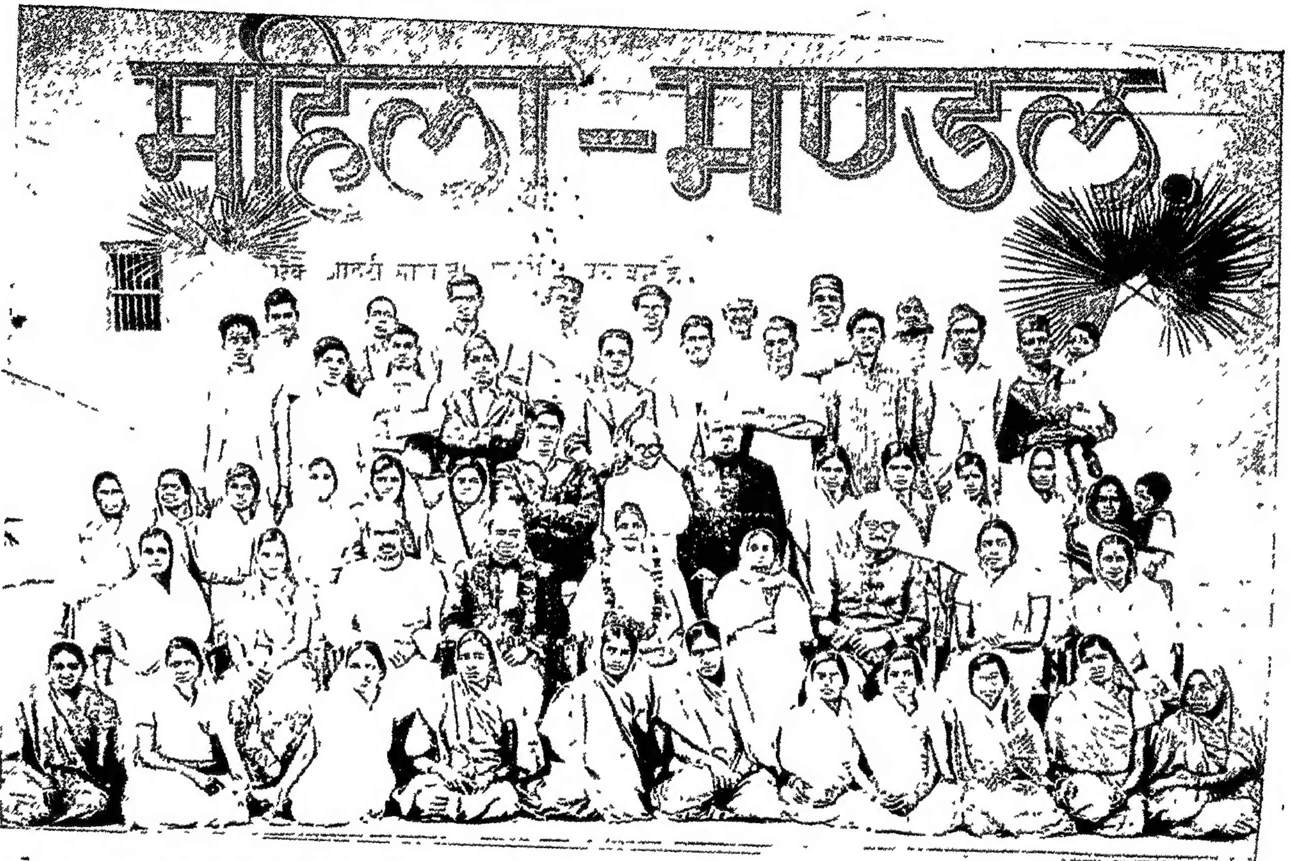
श्री दयाशंकर श्रोत्रिय अभिनन्दन-ग्रन्थ



नागरिक अभिनन्दन समिति, उदयपुर (राज.)



महिला–मडल के साहित्य-महाविद्यालय की छात्राएं, प्राध्यापक और प्रबन्धक बीच में हैं श्री और श्रीमती श्रोत्रिय



महात्मा गांधी की सदेशवाहिका श्रीमती हंसा महेता ने महिला-मण्डल के कस्तूरबा प्रशिक्षण विद्यालय की और समाजसेवी उद्योगपति श्री बसन्तिलाल मुरारका ने विधवा-सहायता-केन्द्र का उद्घाटन किया। उस अवसर पर महिला-मण्डल परिवार के साथ श्रीमती हंसा महेता और श्री मुरारका अतिथियों के ठीक पीछे खड़े हैं श्री मोहनलाल सुखाड़िया और श्री दयाशंकर श्रोत्रिय

सम्पादकीय—

समाज सेवको, विद्वानो, वैज्ञानिको, शिक्षको, साहित्यकारो, कलाकारो और कार्यकर्त्ताओ का समुचित सम्मान होने पर ही कोई देश सर्वांगीण उन्नति कर सकता है। ऐसे व्यक्ति समाज के प्राण–पोषक होते है और जनता का हृदय जीत कर युग–निर्माता बनते हैं। समाज बहुधा ऐसे व्यक्तियो का महत्त्व बहुत देर से समझता हैं। राजनेताओ के अल्पकालिन प्रभाव और धनिक उद्योगपतियो के प्रलोभन मे रहकर समाज अपने वास्तविक कर्णधारो का मूल्याकन यथा समय नही कर पाता और अन्तत पश्चाताप ही शेष रहता है। प्रशासको के समक्ष निरोह जनता नतमस्तक रहती है और भय के कारण ऊपरी सम्मान भी प्रदर्शित करती है। इसी प्रकार धनपतियो के प्रति भी, प्रलोभन मे पड कर लोग सम्मान प्रदर्शित करते है, किन्तु समाज-सेवको, विद्वानो, वैज्ञानिको, शिक्षको, साहित्यकारो, कलाकारो और कार्यकर्ताओ के प्रति सम्मान व्यक्त करते हुए श्रद्धा सुमन अर्पित किये जाते है, उनका महत्व किसी भी प्रकार से न्यून नही होता। अवश्य ही हमारे प्रशासक अथवा धनपति भी मूलत समाज-सेवक और कार्यकर्ता बनते हुए ऐसे सम्मान के अधिकारी हो सकते है। ऐसे सम्मान का विशेष महत्व इसीलिये होता है कि यह किसी प्रकार के दबाव से न हो कर स्वत हृदय-प्रेरित होता है।

श्री दयाशकरजी श्रोत्रिय के नागरिक अभिनन्दन एव अभिनन्दन ग्रन्थ का विशेष महत्व इसीलिये है कि श्री श्रोत्रियजी देश के कोई मन्त्री अथवा उद्योगपति न होकर स्वाधीनता–सग्राम के सक्रिय सेनानी, समाज-सेवक और कार्यकर्ता रहे हैं। इन्होने अपना सम्पूर्ण जीवन पिछड़े हुए समाज की सेवा में समर्पित कर दिया है। यदि श्री श्रोत्रियजी चाहते तो अपने कार्य-कौशल, व्यवस्था-शक्ति और कुशाग्रबुद्धि के बल पर भारतीय स्वाधीनता-काल मे मन्त्री बन कर महत्वपूर्ण विभागो का उपभोग करते अथवा उद्योगपति बनकर आर्थिक सम्पन्नता प्राप्त करते। किन्तु इन्होने देश के स्वाधीनता-सग्राम में असीम यातनाएं सहन करते हुए भी स्वाधीनता से निजी लाभ प्राप्त करने का विचार छोडकर अपनी बहुमुखी प्रतिभा और व्यवस्था-शक्ति को शिक्षा तथा समाज-सेवा मे समर्पित किया।

श्री श्रोत्रिय–दम्पत्ति और इनके सहयोगियो के सेवा–कार्य महत्त्वपूर्ण है क्योंकि इनका सम्बन्ध भारत के पिछडे प्रदेश राजस्थान में अविकसित मेवाड–क्षेत्र के सर्वथा अशिक्षित महिला समाज से रहा हैं। राजस्थान मे महिला–शिक्षा के क्षेत्र मे अन्य व्यक्ति एव सस्थाए भी सलग्न हैं किन्तु उनका क्षेत्र आदिवासी भील–क्षेत्र नही है। यह श्री श्रोत्रिय दम्पत्ति, इनके सहयोगियों एव महिला–मण्डल की ही देन है कि पशुतुल्य जीवन व्यतीत करने वाले भील समाज की बालिकाए आज राष्ट्रीय रेकार्ड तोडती हुई अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कर रही हैं और उनके भाई-बहिन विभिन्न क्षेत्रो में सराहनीय सेवा-कार्य कर रहे है।

श्रद्धेय श्री श्रोत्रियजी के नागरिक अभिनन्दन और अभिनन्दन ग्रन्थ की पृष्ठ-भूमि मे विचारधारा रही है। इस महत्वपूर्ण कार्य मे होने वाली बाधाओ और कठिनाईयो का ही भान रहा किन्तु महाकवि भर्तृहरि की निम्नलिखित पक्तिया निरन्तर प्रेरणा देती रही—



महिला-मण्डल द्वारा आयोजित 'मोण्टेसरी प्रशिक्षण शिविर'की प्रशिक्षार्थी अध्यापिकाओंके साथ संरक्षक श्री हमेरलाल मुर्डिया, वैद्य भवानीशंकर शर्मा और संचालक दयाशंकर श्रोत्रिय

प्रारम्यते न खलुविघ्न भयेन नीचैः,
प्रारभ्य विघ्नविहिता विरमन्ति मध्याः।
विघ्नैः पुनपुनरपि प्रतिहन्यमाना,
प्रारभ्य चोत्तम जना न परित्यजन्ति ॥

प्रस्तुत कार्य का श्रीगणेश लगभग तीन वर्ष पूर्व किया गया बात इस प्रकार हुई कि महिला-मण्डल के कार्यकर्ता अर्थ-सग्रह के लिए जोधपुर आये हुये थे इस समय महिला मण्डल घोर आर्थिक सकट में था और कार्यकर्त्ताओ का वेतन तक कई माह से नही दिया जा सका था। महिला-मण्डल के सहयोग के लिए जोधपुर मे कई साथी तैयार हुये। कला प्रदर्शन के द्वारा अर्थ-सग्रह किया गया। इसी अवसर पर जोधपुर मे ही उनके साथियो ने अनुभव किया कि महिला-मण्डल के कर्मठ संचालक श्री श्रोत्रियजी जिन्होने आजीवन समाज सुधार, पिडितो की सहायता और महिला-शिक्षण के सेवा-क्षेत्र मे त्यागमय सघर्ष किया है उसका किसी उपयुक्त स्थान पर नागरिक अभिनन्दन किया जाना चाहिये और साथ ही उन्हे एक अभिनन्दन-ग्रन्थ भी भेंट किया जाना चाहिये। तब यह निश्चय भी किया गया कि इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य श्री श्रोत्रियजी के त्यागमय और प्रेरक परिचय के प्रकाशन के साथ ही महिला-मण्डल की महत्वपूर्ण कार्य-प्रवृत्तिया का प्रकाशन हो जिससे महिला-मण्डल के कार्य को प्रगति मिलें।

उक्त निश्चय के अनुसार तुरन्त ही कार्यक्रम और ग्रन्थ की पूरी योजना बनाली गई। सयोग से यह योजना श्री श्रोत्रियजी के हाथ पड़ गई फिर तो लम्बे समय तक वह योजना नही प्राप्त हुई। यहा तक कि महिला-मण्डल के प्रमुख कार्यकर्त्ता भी उस योजना के लिए आनाकानी करते रहे।

तब योजना उदयपुर मे दूसरी बार बनाई गई। सभी पत्रादि सभालकर रक्खे गये और सम्बन्धित व्यक्तियो से इस विषय में सुझाव आमन्त्रित किये गये। देश के प्रमुख सहयोगियो से सहमति-पत्र मिलने पर उदयपुर के नागरिको की एक बैठक दिनांक १६ नवम्बर, १९६९ को आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता स्वाधीनता सग्राम के सेनानी, सेवामूर्ति श्रीमान् प० भवानीशंकरजी वैद्य ने की। इस बैठक मे—

१. सर्वश्री हमेरलालजी मुर्डिया, एडवोकेट, २. भगवतीलालजी चौर्डिया, एडवोकेट, ३. हीरालालजी आचार्य, अध्यक्ष, नगर कांग्रेस, ४. प्रो० चन्द्रसिंहजी नैनावटी ५. पं० टेकचन्दजी वैद्य, आयुर्वेदाचार्य, सपादक 'कायाकल्प' ६. श्री योगेशचन्द्रजी शर्मा, महामत्री, राजस्थान सार्वजनिक शिक्षण सस्था सघ, ७. श्री गोवर्धनसिंहजी महता, ८ पद्मश्री देवीलालजी सामर, ९. श्री लालसिंहजी शक्तावत, सस्थापक—श्री गीतारामायण सेवासघ, १०. वासुदेवजी शर्मा, चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट, श्रीमति मोहनदेवी शर्मा, १२. डॉ० श्री वशीलालजी भटनागर १३. श्री मागीलाल खाब्या एडवोकेट १४. श्री सुन्दर लाल शर्मा, एडवोकेट, १५. श्रीमति विमला कोठारी, १६. श्री कालुलाल मेनारिया, १७. प्रो. कृष्णचन्द्र



श्री उ न. ढेबर : आशीर्वाद



संरक्षक, श्री घनश्यामदास बिड़ला

श्रोत्रिय, १८. श्रीमति सुशीला बहिन दसोरा, १९ श्री जीवनसिंह चोरवड़िया एडवोकेट आदि अनेक व्यक्तियो ने भाषण देते हुए योजना को स्वीकार किया और विभिन्न समितियो का चुनाव भी इसी अवसर पर किया गया।

उक्त बैठक के निर्णयानुसार कार्यवाही प्रारम्भ की गई। श्री श्रोत्रियजी का जीवन-परिचय और महिला-मण्डल का इतिहास तैयार करने का महत्वपूर्ण कार्य हाथ मे लिया गया। श्री श्रोत्रियजी ने स्वाधीनता सग्राम मे सक्रिय भाग लेते हुवे अपना समय जेलो में भी व्यतीत किया। इनके सामान की अनेक बार पुलिस द्वारा तलाशिया ली गई और प्राप्त पत्रादि जब्तकर नष्ट कर दिये गये। इनका कार्यक्षेत्र भी राजस्थान, गुजरात और उत्तर प्रदेश तक अनेक स्थानो मे विस्तृत रहा। अतएव इनकी प्रामाणिक जीवनी लिखने का कार्य बहुत कठिन था। श्रोत्रियजी के साथियो ने इस कार्य में पूर्ण सहयोग दिया और डॉ० भारद्वाज सा० द्वारा महत्वपूर्ण सामग्री थोडे ही समय मे एकत्रित कर ली गई।

महिला-मण्डल का इतिहास भी लगभग ३५ वर्ष पूर्व प्रारम्भ होता है। श्रद्धेय डाक्टर श्रीमोहनसिंह मेहता की प्रेरणा तथा श्री श्रोत्रिय दम्पति के सद्प्रयत्न और अनेक व्यक्तियो के सहयोग से इस सस्था की स्थापना की गई थी धीरे २ इस सस्था ने अपनी उपयोगिता के कारण विकसित होते हुये एक महान् वट-वृक्ष का रूप धारण कर लिया है। इस संस्था की कार्य-प्रवृत्तियाँ ही नहीं, कार्यालय भी झोपडियो में चलता रहा, जिससे समय समय पर दीमक और चूहे सामग्री को नष्ट करते रहे। देश के लगभग सभी प्रमुख नेताओ, समाज सेवियो और शिक्षा शास्त्रियो आदि ने इस सस्था की उपयोगी कार्य-प्रवृतियो का समय-समय पर प्रत्यक्ष निरीक्षण किया और लिखित में अपने अभिमत प्रकट किये। उन्हें प्रयत्न पूर्वक सकलित किया गया। सहयोगी कार्यकर्ताओ की सूची भी बनाई गई। सतोष का विषय है कि डॉ० श्री भारद्वाज के प्रयत्न से सस्था का सक्षिप्त, किन्तु प्रामाणिक इतिहास भी तैयार हो गया।

सारे देश में श्री श्रोत्रियजी के परिचित और सहयोगी है। इनसे भी पत्र-व्यवहार किया गया। सभी ओर से सहयोग के स्वर सुनाई दिये। यथासम्भव सबसे इस महत्वपूर्ण कार्य से सहयोग लेने का प्रयत्न किया गया।

आशीर्वचन और शुभकामना के रूप मे एक ओर राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति और अन्य शीर्षस्थ व्यक्तियो के सन्देश प्राप्त हुये। दूसरी ओर श्रोत्रियजी के जेलजीवन और बालक्रीड़ा के साथियो के हार्दिक उद्‌गार भी प्राप्त हुए। सम्बधित अनेक भाई-बहिनो ने योजनानुरूप अपने निबन्ध भी भेजे।

उदयपुर जैसे छोटे स्थान पर ऐसे आयोजन में कठिनाईयाँ बहुत आई। यहा किसी सार्वजनिक कार्यकर्ता के ऐसे अभिनन्दन ग्रन्थ समर्पण का यह पहला ही अवसर है। स्वागताध्यक्ष श्रीमान् हीरालालजी देपुरा, राज्य मत्री गृह, पर्यटन और जनसम्पर्क राजस्थान तथा कार्यवाहक स्वागताध्यक्ष श्रद्धेय प० भवानीशकरजी वैद्य द्वारा निरन्तर प्रोत्साहन प्राप्त होता रहा। समिति के अनेक भाई-बहिन निरन्तर इस कार्य



कपोलो की राग–रेखाओ मे
काल के अंतराल को चीरती हुई
अग्रसर हो रही हैं ।"

फिरसे एक बार रीतिकालीन कवियो की परम्परा को मात करने के विचार से शायद नवोदित कवियो ने नये आयाम, नये स्वर, नयी रेखा, नयी उपमाओ सहित नारी सौन्दर्य व रूपराशि का वर्णन करना आरभ कर दिया –

"तुम्हारी याद की चम्पई रेखा
उभर
आई
बडी–बडी सुरमई आँखें
कपूरी गात
प्रवाल होटो पर
वही कांपते इन्द्रधनु–रेखा
उतर
आई ।"

और एक दूसरा नयनाभिराम चित्र उपस्थित है —

"इस रगीन साँझ मे तुमने
पहने रेशम वस्त्र जीले
भरी गोल गोरी कलाइयो मे पहिनी थी
नयन डोर–सी वे महीन रेशमी चूडियाँ
चदन बाँह उठाते ही मे
खिसक चली वे तरल गूंज से
उदय हो रहा इन्दु सुनहला
पूर्व सिंधु से जैसे ऊपर उठता आता
रत्न–कलश भरकर सपूर्ण सुधा रजनी की
आज यही रस–डूबा चाँद बन गई हो तुम ।"

एक कलाकार की तूलिका से अकित नारी के 'सत्यम्–शिव–सुन्दरम्' का रूप निम्न लिखित पक्तियो मे प्रकट हुआ है जो मनोरम एव अनुपम है–"वह सुकन्या होकर व्यक्ति के सत्यम् को प्रकट करती है, नारी होकर उसके सुन्दरम् को और माँ होकर उसके शिव को आकार देती है ।"

[८ फर्स्ट स्ट्रीट, लेक एरिया, मद्रास–३४]

मे तत्पर रहे जिनमे श्रीमती मोहन देवी शर्मा, श्रीमती कमला देवी शर्मा, डा० श्री शान्तिलालजी भारद्वाज, श्री कालूलाल मेनारिया श्रीमति विमला कोठारी, चन्द्रकला बहिन, नर्वदाशकर दवे, वी. एन. उपाध्याय एव सभी मण्डल के कार्यकर्ताग्रो आदि का सहयोग विशेष उल्लेखनीय है।

उदयपुर मे मुद्रण-कार्य करना भी बहुत कठिन है क्योंकि यहा के मुद्रणालय अभी अविकसित हैं। किन्तु इस कार्य मे श्रीगीता प्रिन्टिग प्रेस के भाई श्री कालूलालजी मेनारिया और इनके सहयोगियो का समुचित सहयोग प्राप्त होगया जिससे ग्रथ का मुद्रण समय पर पूर्ण हो सका।

अनेक विशिष्ट व्यक्तियो ने अपने शुभकामना पूर्ण सन्देश, सस्मरण और निवन्ध भेजकर समिति को सहयोग दिया है। डा० शान्तिलालजी भारद्वाज ने ग्रंथ के सम्पादन कार्य मे भी महत्वपूर्ण सहयोग दिया है।

समिति की ओर से उक्त सभी सहयोगियो के प्रति हार्दिक आभार प्रकट करता हुआ श्री श्रोत्रियजी के सेवामय दीर्घ जीवन और महिला-मण्डल तथा इसके सहयोगियो के विकास की कामना प्रकट करता हू। साथ ही उल्लेखनीय है—

परगुण परमाणून पर्वतीकृत्य नित्यम्।
निज हृदि विकसन्त. सन्ति ॥

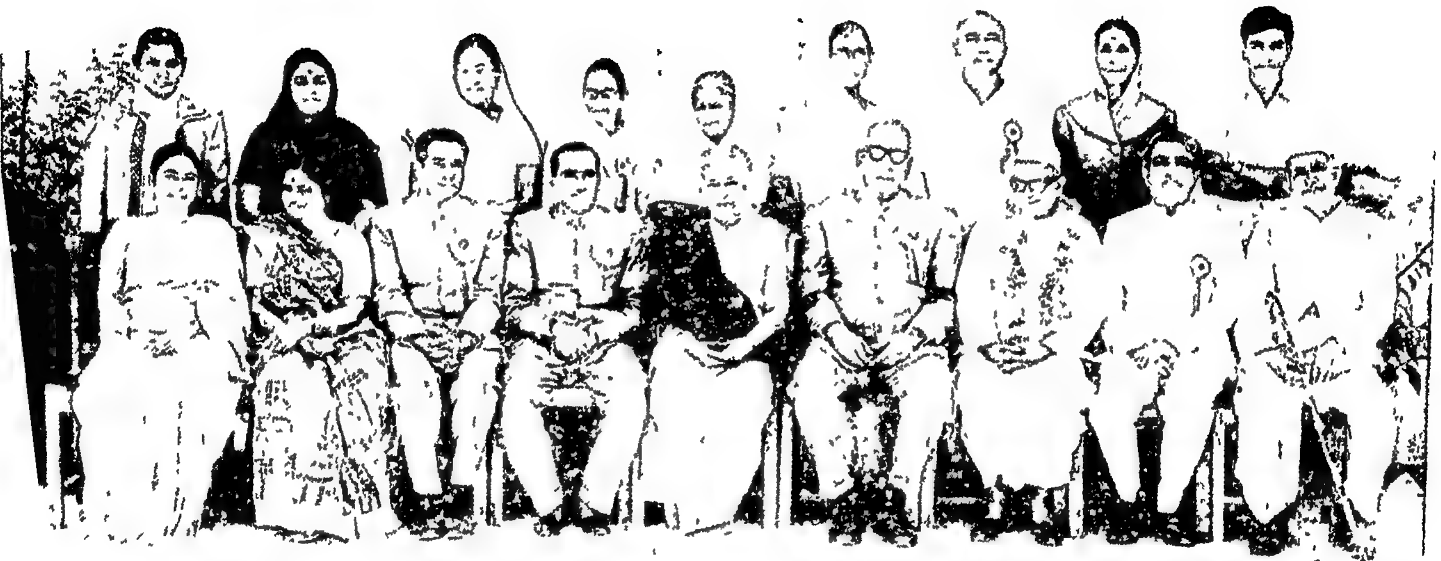
इति शुभम्

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान,
जोधपुर
कार्तिक पूर्णिमा, २०२७

—पुरुषोत्तमलाल मेनारिया
सपादक

—:—





महिला-मण्डल की कार्यकारणी के बीच
श्री दयाशंकर श्रोत्रिय अभिनन्दन समारोह के प्रमुख अतिथि



श्री दयाशंकर श्रोत्रिय

माल्यार्पण : महिला–मण्डल के अर्थ मन्त्री श्री सुन्दरलाल शर्मा एडवोकेट, अध्यक्ष बार एसोसिएशन, उदयपुर





माल्यार्पण : राजस्थान शिक्षण संस्था संघ के महामन्त्री और राजस्थान विद्यापीठ के मन्त्री श्री योगेशचन्द्र शर्मा





श्रीमती कमला श्रोत्रिय : दो विशिष्ट स्मृतिया



महिला-मण्डल की सकल्पित साधना का प्रतीक-चिन्ह



त्यागमूर्ति आचार्य विनोबा : संस्थाका सौभाग्य



महिला-मण्डल-परिवार के स्थायी सदस्य, राजस्थान के लोकप्रिय मुख्यमंत्री
श्री मोहनलाल सुखाड़िया



राजस्थान के मुख्यमंत्री स्व जयनारायण व्यास, और श्री मोहनलाल सुखाडिया के साथ मण्डल के अतिथि बने तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री जवाहरलाल नेहरु



स्थानीय कार्यकर्ताओं के बीच श्री जवाहरलाल नेहरु



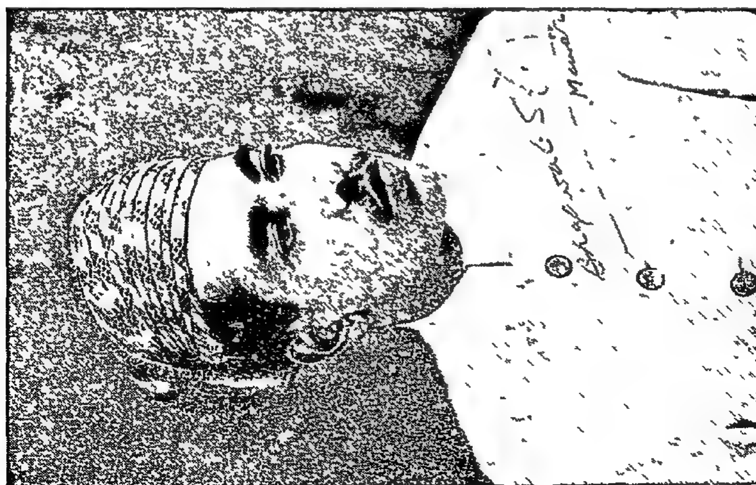
तपोधनी श्री श्रीकृष्णदास जाजू, वर्धा



विख्यात राष्ट्र-सेवी श्री जमनालाल बजाज, जिनकी प्रेरणासे संस्था जन्मी



महिला-मण्डल के संरक्षक श्री साहू शान्तिप्रसाद जैन।



महिला-मण्डल के संरक्षक, मेवाड़ के भूतपूर्व महाराणा श्री भगवतसिंहजी।

: अनुक्रम :

(१) आशीर्वचन : सदेश · शुभकामनाएँ १–४४

राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, सर्वश्री राजबहादुर, के सी. रेड्डी, सत्यनारायण सिंह, डा. वि. पावटे, रामनिवास मिर्धा, शेरसिंह, प्रकाशचन्द्र सेठी, नरेन्द्रसिंह महीडा, सिद्धेश्वरप्रसाद बी तारावाई, एस.एस कोठारी, शान्ताबाई रानीवाला, मोहनलाल सुखाडिया, सरलादेवी, साराभाई, मुनि नगराजजी, गोकुलभाई भट्ट, सीताराम जाजू, वृजसुन्दर शर्मा, हरिदेव जोशी, नन्दकुमार सोमानी डा मोहनसिंह मेहता, रामप्रसाद लड्ढा, नारायणसिंह मसूदा, बरकतुल्ला खा, अमृतलाल यादव, जोरावरसिंह झाला, हरिभाऊ उपाध्याय, जानकीदेवी बजाज, कमलनयन बजाज नरेन्द्रपाल चौधरी, श्रीराम भारतीय, अनन्तराय जोशी, डा सूर्यनारायण व्यास, श्रीमती मदालसा नारायण, यशपाल जैन, रामकिशोर व्यास ऋषि जैमिनी कौशिक, दामोदरलाल व्यास, ओंकारलाल बोहरा, रावधीरसिंह हरिसिंह, भीमसेन, शिवचरणसिंह, रामचन्द्र पचोली, मिश्रीलाल गगवाल, कुम्भाराम आर्य, लीलावती मुन्शी, मोहनलाल जालान सोहनलाल जाजोदिया, डा. गोविन्ददास, मंगतूराम जयपुरिया, डा. देवीसिंह, धीरजलाल शाह, नवलकिशोर शर्मा, सत्यनारायण नाथानी, देवीशकर तिवाडी, जुगमन्दिर जैन, रामनारायण पडित, सत्यदेव शर्मा, प चन्द्रभूषण, लाडाराम वैद्य, गो वृजभूषण, शर्मा, रामचन्द्र पचोली रूपकुमारी मेहता, महेशचन्द्र भट्ट, जगजीवनराम, शांतिप्रसाद जैन शकरदत्त वैद्य, रोशनलाल साभर, तेजसिंह कोठारी, ओ. पी. कुलश्रेष्ठ, के एम जोशी, भजनीदेवी, मदनकुमार चौबे, गिरधर शर्मा.

(२) महिला-मण्डल अतिथियो का मूल्यांकन १–२६

आचार्य विनोवा, सी राजगोपालाचारी, उ. न. ढेवर, रामेश्वरी नेहरु, मोरारजी देसाई, जगजीवनराम, विजयालक्ष्मी पण्डित जे बी कृपलानी, ठक्करबापा, दुर्गाबाई देशमुख, राहुल साकृत्यायन, जयनारायण व्यास वृजलाल बियाणी, मोहनलाल सुखाडिया, दौलतसिह कोठारी, धीरेन्द्र मजुमदार कन्हैयालाल मुन्शी, लीलावती मुन्शी, श्रीमन्नारायण अग्रवाल, सुनीतिकुमार चटर्जी, सीताराम जाजू, बी. वी केसकर, गगाशरणसिह, राजमाता सिंधिया, हन्सा मेहता, हरिभाऊ उपाध्याय, डा कालुलाल श्रीमाली, महाराणा भगवतसिह कमलादेवी चटोपाध्याय, जैनेन्द्रकुमार, मुनि जिनविजय, वाग खेर, श्रीमती मदालसा नारायण शिवरत्न मोहता,. वसतलाल मुरारका, टी विजयराघवाचारी, रामगोपाल

मोहता, बी. वी. खरे, राजबहादुर, सेठ गोविन्ददास, जानकीदेवी बजाज, निरंजननाथ आचार्य. सा. देशपाण्डे, जी. सी. महाजनि, देवेन्द्रकुमारी, श्रीराम भारतीय, प्रेमनारायण माथुर, वैजनाथ महोदय, भागीरथ कानोडिया, एफ. जी. पियर्स, यशपाल जैन, दामोदर लाल शर्मा, अमरसिंह, कमला नेवटिया, रामदेव चोखानी, सरस्वतीबाई काले, पारसजैन, केसरपुरी गोस्वामी, झाबरमल शर्मा, ईश्वरदास जालान, शांतिप्रसाद जैन, अब्दुल कयूम असारी, डा कैलाश, मूलचन्द देशलहरा भक्तदर्शन, सीताराम सेकसरिया सूर्यरतन चांडक रघुनाथसिंह, शंकरसहाय सक्सेना, उर्मिलादेवी, सत्यनारायण नाथानी, एच पी सोढाणी, ठा.गोपालसिंह, डा मागलिक लीलावती झंवर, रामेश्वरलालजी नाथानी, दुर्गाप्रसाद, द्वारिकालाल गुप्त, राधादेवी गोईनका, रामप्यारी शास्त्री, कु. प्रतापसिंह, जसवन्तसिंह मेहता, पी. बी चादवानी, चम्पालाल बाठिया, प्रेमचन्दलाल, के एन. श्रीवास्तव, महादेवलाल मुरारीशरण मांगलिक, प्रहलादराय केडिया, लक्ष्मीदास म. श्रीकान्त, मिलोस्लाव क्रासा, शेको स्टावाकिया, विनीफ्रेड वाईस, लालसिंह शक्तावत, फूलचन्द अग्रवाल, श्रीनाथसिंह, तेजसिंह कोठारी, राजेन्द्रशंकर भट्ट, अचलराज लोढा, महेन्द्रसिंह ठाकुर, राधाकृष्ण कानोडिया, खेमचन्द्र चौधरी, जगन्नाथसिंह मेहता इन्दुमती चिमनलाल, काशीप्रसाद मोदी, अचलेश्वरप्रसाद, शिवशंकर जसवन्तसिंह मेहता, महावीर अधिकारी, उमाशंकर, शुकदेव प्रसाद, जी. एन, तिवारी, भीष्म चौहान, विष्णु प्रभाकर, हरिराम गुटगुटिया, डा मडन मिश्र, दामोदरलाल जयपुरिया, काका हाथरसी, मोहनलाल कटौतिया, फूलचन्द जैन, अर्जुन चोखानी, गौरीशंकर, लक्ष्मीनिवास झुनझुनवाला, प्रो. जोशी, विद्याभूषण चिंतामणि अनन्तशयनम् आयगर, बनारसीदास चतुर्वेदी, गोपीकृष्ण विजयवर्गीय, हीरालाल देवपुरा, गो. वृजभूषणलालजी, वृहस्पति पाठक, श्री प्रकाश, एच वी. पातस्कर, केडिया ज०. गोपालकृष्ण अ. नन्दा, गुलाम रसूल आजाद

(३) दयाशंकर श्रोत्रिय : एक संघर्षशील जीवन का इतिवृत्त १–४५

(४) दयाशंकर श्रोत्रिय : संस्मरणों की छाया में १–८२

कर्मठ श्रोत्रिय दम्पत्ति — श्री केसरपुरी गोस्वामी
मेरे अग्रज : मेरे राम — इच्छाशंकर श्रोत्रिय
सानिध्य और स्मृतियां — पुरुषोत्तम चौधरी
पहला साक्षात्कार — गुलाबचन्द मेवाड़ी
साथी श्रोत्रियजी : पुरानी यादें — मथुरालाल बाहेती
जेल जीवन के साथी — जयचन्द्र रैगर
श्रोत्रिय जी : जैसा मैंने पाया — भूरेलाल बया
मूक जन सेवक — युगलकिशोर चतुर्वेदी

बन्दी पिता का बाल पोस्टमेन	रमेशचन्द्र श्रोत्रिय
मेरे कर्मठ साथी	भवरलाल-त्रायलिया
गुदडी के लाल	रमापति आर्य
मेरे समधी एक निष्काम कर्मयोगी	डा. पण्डित
एक अपराजेय सकल्प	वैद्यरत्न भवानीशकर शर्मा
कर्मयोगी श्रोत्रिय जी	योगेशचन्द्र शर्मा
एक जिन्दगी मातृजाति की सेवामे	डा शभूलाल शर्मा
श्रोत्रियजी का सानिध्य	उत्सवलाल शर्मा
नारिया जिनकी कृतज्ञ हैं	श्रीमती राज नैयर
एक प्रेरक व्यक्तित्व	शिवकुमार त्रिवेदी
नारी जागरण के अग्रदूत	डा मण्डन मिश्र
एक स्वप्नद्रष्टा	जगजीवनसिंह मसीह
महिला–प्रगति के सूत्रधार	श्रीमती जे. जे. सिंह
एक निष्काम कर्मयोगी	उदय जैन
श्रोत्रियजी का योगदान	सुन्दरलाल शर्मा
राजस्थान की महिला उनकी सेवाओ का परिणाम	राधादेवी गोयनका
व्यक्तित्व और कृतित्व के धनी	अश्विनीकुमार चित्तोड़ा
मगलाशिष .	प चन्द्रशेखर शास्त्री
त्यागमूर्ति प. श्रोत्रिय	चम्पालाल एस. चास्टवे
क्रान्तिकारी देशभक्त और समाजसेवक	अचलेश्वर प्रसाद शर्मा
जन सेवा को समर्पित श्रोत्रिय दम्पत्ति	बलवन्तसिंह मेहता

(४) जेल की डायरी जो एक सस्मरण बन गई ५३–६९

मेवाडी सिकचो के पीछे	दयाशकर श्रोत्रिय
लोकसेवक श्रोत्रिय जी	महन्त श्री मुरली मनोहर शरण जी
एक प्रेरक व्यक्तित्व	डा. पुरषोत्तमलाल मेनारिया
सस्मरण–पत्र	नर्वदादेवी पालीवाल
अभिनन्दन	जगन्नाथसिंह चौहान
कर्मठ समाज-सेवी	प्रेमशकर शर्मा
अर्जुनसिंहजी भाटी (एक परिचय)	

(५) महिला–मण्डल सतत सेवा के ३५ वर्ष १–५८

सस्था का इतिवृत्त
सरक्षक सहयोगी और कार्यकर्त्ताओ की स्मृति-

महिला–मण्डल की मुख्य प्रवृत्तिया
महिला–मण्डल परिवार : कुछ प्राणवान कार्यकर्त्ता

(६) नारी कल्याण में संलग्न कुछ ख्याति प्राप्त संस्थान १–११

महिला सेवा मडल, वर्धा	१
वनस्थली विद्यापीठ	३
आर्य कन्या महाविद्यालय, बडौदा	५
बिडला बालिका विद्यापीठ, पिलानी	८
प्रयाग महिला-विद्यापीठ, इलाहाबाद	१०
सावित्री कन्या महाविद्यालय, अजमेर	११

(७) भारतीय नारी : अतीत वर्तमान और भविष्य १–७४

भारतीय नारी : युगयुग मे और आज	मुनी श्री नगराजजी	१
हिन्दू समाज मे नारी की स्थिती (समाज शास्त्रीय विवेचन)	डा. रामनाथ शर्मा	९
नारी की १४ विद्यायें और ६४ कलायें	कुसुम महता 'प्रियदर्शिनी'	१५
भारतीय नारी : सस्कृत साहित्य के आलोक मे	डा. रुद्रदेव त्रिपाठी	१८
नारी एक : रुप अनेक	डा. पी. आर. रुक्माजी राव	२३
भारत में नारी शिक्षा	श्रीमती आशारानी व्होरा	३४
स्त्री शिक्षा का विकास किस दिशा मे हो	श्रीमती हसा मेहता	४१
लोक कल्याण और नारी	श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी	४३
राजपूत विरांगनाएं	डा. कृष्णचन्द्र श्रोत्रिय	४५
भारत में महिला–कल्याण प्रवृत्तियो का विकास · एक सिंहावलोकन	कुमारी पुष्पा भटनागर	४९
नारी (कविता)	श्री नरोत्तमदास स्वामी	५४
आधुनिक राजस्थान को प्रथम आदरास्पद महिला	श्री दयाशंकर श्रोत्रिय	५५
जाग्रत नारी	डा मोहनसिंह भटनागर	५९
बाल शिक्षण पद्धति की अग्रदूत . मारीआ माटेसरी	श्रीमती मोहनदेवी शर्मा	६६
स्वतन्त्र भारत में शिक्षित महिलाओ का कार्य	श्रीमती प्रतिभा कुलकरणी	६८
बच्चों के प्रति मा का कर्त्तव्य	श्रीमति इन्दिरा गाधी	६९
महिलाएं . अधिकार और कर्त्तव्य	डा. उषाकिरण मेहरा	७२-७४

(८) श्री दयाशंकर श्रोत्रिय : अभिनन्दन-समारोह-परिशिष्टांक

मुद्रक :
श्रीगीता प्रिन्टिंग प्रेस, उदयपुर (राज.)

श्रोत्रिय-अभिनन्दन-ग्रन्थ

राजनेताओं, शिक्षा-शास्त्रियों, सहयोगियों एवं समाजसेवियों के आशीर्वचन





आचार्य विनोबा।

भारतीय जीवन की नैतिक, अध्यात्मिक और आर्थिक क्रान्ति के अग्रदूत महिला-मण्डल के विशिष्ट अतिथि।



चक्रवर्ती सी. राजगोपालाचारी–

स्वाधीन भारत के प्रथम गवर्नर जनरल। प्रबुद्ध राजनैतिक विचारक और वयोवृद्ध राष्ट्रसेवी।



श्रीमती विजयालक्ष्मी पण्डित–

संयुक्त राष्ट्रसंघ की भूतपूर्व अध्यक्षा। अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त भारतीय समाज सेविका। श्रोत्रिय ग्रन्थ विमोचन समारोह की प्रमुख अतिथि।



श्री दयाशंकर श्रोत्रिय अभिनन्दन ग्रन्थ



स्व० माणिक्यलाल वर्मा—

राजस्थान की राजनैतिक चेतना के लोकनायक। मेवाड़ प्रजामण्डल के संस्थापक। संयुक्त राजस्थान के प्रथम मुख्यमंत्री।



माननीय सरदार हुकुमसिंह—

भारतीय लोकसभा के भूतपूर्व अध्यक्ष। प्रबुद्ध विचार और विनम्र समाज-सेवी। वर्तमान में राजस्थान के महामहिम राज्यपाल।



डा० मुनि नगराज—

अणुव्रत आन्दोलन के प्रेरक आचार्य तुलसी के निकटस्थ सहयोगी संत प्रकाण्ड विद्वान और तत्त्वदर्शी।





स्वर्गीय जयनारायण व्यास—

राजस्थान के दिवगत भूतपूर्व मुख्य मत्री। पत्रकार, लेखक, कवि और राजनेता। 'देशी राज्य प्रजा परिषद्' के क्रातिदूत। सामन्ती दमन के अजय सेनानी।



डा० दौलतसिंह कोठारी—

विश्व विद्यालय अनुदान आयोग के अध्यक्ष। भारतीय वैज्ञानिको की शीर्षस्थ पक्ति मे प्रतिष्ठित। प्रलोभनों से दूर, राष्ट्र-सेवा में सलग्न।



श्री टीकाराम पालीवाल—

राजस्थान के भूतपूर्व मुख्य मंत्री। जो महिला-मण्डल की प्रवृत्तियो को सदैव प्रोत्साहित करते रहे।



श्री दयाशंकर श्रोत्रिय अभिनन्दन ग्रन्थ



श्री युगलकिशोर चतुर्वेदी--

भूतपूर्व संयुक्त मत्स्य राज्य के उप प्रधान मंत्री। शिक्षा तथा निर्माण मंत्री भी रहे। असहयोग आन्दोलन एवं नमक सत्याग्रह के कार्यकर्ता। राष्ट्र भाषा के प्रचार एवं मद्य-निषेध में सक्रिय।



श्रीराम भारतीय--

अखिल भारतीय सेवा समिति, प्रयाग के मंत्री। राष्ट्रीय रचनात्मक कार्यों में संलग्न समाज सेवी। श्रोत्रियजी के इलाहबाद-प्रवास में जिनका विशेष योगदान रहा।



श्री हरदेव ज्योतिषी--

श्रोत्रिय अभिनन्दन समारोह के उप-स्वागताध्यक्ष। विख्यात ज्योतिषी एवं मार्तण्ड-पंचांग के सह संपादक। 'विश्वविजय पंचांक' और 'ज्योतिष्मती' के संपादक। अ. भा. ज्योतिष परिषद् के दो बार अध्यक्ष निर्वाचित।





मास्टर श्री भोलानाथ—

राजस्थान के भूतपूर्व मंत्री और वर्तमान में संसद सदस्य। सार्वजनिक जीवन के सक्रिय कार्यकर्ता। महिला-मण्डल के सहयोगी।



श्री निरंजननाथ आचार्य—

राजस्थान विधान सभा के लोकप्रिय अध्यक्ष। लेखक, कवी और गद्य-गीतकार। ग्रामीण-जीवन के नवोत्थान में सक्रिय।



श्रीमती इन्दुबाला सुखाड़िया—

भूतपूर्व अध्यक्ष राजस्थान समाज कल्याण बोर्ड। सामाजिक रूढ़ियों की सदैव से विद्रोही। महिला-मण्डल की अध्यक्षा।



श्री गुलाबचन्द मेवाड़ी--

प्रजामण्डल के कार्य में वर्माजी व श्रोत्रियजी के सहयोगी। इसी कारण 'नवज्योति' की सेवाओ का त्याग। छोटी सादड़ी मे प्रजामण्डल को सगठित किया। मेवाड की जन-चेतना के एक विशिष्ट सेनानी।



श्री रमेशचन्द्र व्यास--

ससद सदस्य। श्रोत्रियजी के साथी। भीलवाडा क्षेत्र की जन-क्राति में योगदान। जेल-यात्राए की। राजस्थान की श्रमिक-चेतना के प्रमुख सहयोगी।



सेठ राधाकृष्ण कानोड़िया--

प्रमुख उद्योगपति। महिला-मण्डल के प्रारम्भ से ही सहयोगी। समाज सेवा की प्रवृत्तियो मे विशिष्ट योगदान।





श्री मोहनलाल सोनी--

व्यावसायिक क्षेत्र में विभिन्न पदों पर कार्य करते हुए अब सेवाश्रम के प्रबन्ध सचालक। राजस्थान बोलीवाल एसोसियेशन के अध्यक्ष। उदयपुर के नगर सघ चालक मण्डल--परिवार के सदस्य।



श्री धीरजलाल शाह--

स्वातन्त्र्य आन्दोलन एव रचनात्मक कार्यों की लम्बी सेवा। सेवामण्डल रतलाम के संस्थापक सदस्य, कोषाध्यक्ष व ट्रस्टी। हरिजन सेवक संघ व राष्ट्र-भाषा प्रचार से सम्बद्ध। हरिजन छात्रावास के सचालक।



श्री राजेन्द्रशकर भट्ट--

निदेशक सार्वजनिक सपर्क कार्यालय राजस्थान। प्रमुख पत्रकार एवं लेखक।



श्री बरकतउल्ला खां—

जोधपुर क्षेत्र के लोकप्रिय जनसेवी । राजस्थान मत्री-मण्डल मे विधि मत्री ।



'पद्मश्री' देवीलाल सामर—

अध्यक्ष राजस्थान सगीत नाटक अकादमी । सचालक भारतीय लोक कला मण्डल । अतर्राष्ट्रीय सम्मान प्राप्त कला प्रदर्शनो के निदेशक । लेखक और एकाकीकार ।



श्री भोगीलाल पाड्या—

राजस्थान के स्वतत्रता आन्दोलन के वरिष्ठ सेनानी । वागड़ प्रदेश के क्रातिदूत राजस्थान के भूतपूर्व मत्री ।





राष्ट्रपति सचिवालय
राष्ट्रपति भवन,
नई दिल्ली-४

राष्ट्रपतिजी को यह जानकर प्रसन्नता हुई कि महिला-मण्डल, उदयपुर के संचालक श्री दयाशंकर श्रोत्रिय को उनके ६८ वें जन्मदिवस पर अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट करने का आयोजन किया जा रहा है।

इस अवसर पर राष्ट्रपतिजी श्री दयाशंकर श्रोत्रिय के दीर्घजीवन की कामना करते हैं तथा समारोह की सफलता के लिये अपनी शुभकामनायें भेजते हैं।

—क्षेमराज गुप्त
राष्ट्रपति के अपर निजी सचिव





मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि महिला-मण्डल उदयपुर के संचालक श्री दयाशंकर श्रोत्रियजी की सेवामे उनके ६८ वें जन्म-दिवस के अवसर पर एक अभिनन्दन ग्रंथ भेंट किया जायेगा। श्री दयाशंकरजी की सेवायें लोकप्रिय और सराहनीय हैं। मैं समिति को इस शुभ कार्य के लिये बधाई देता हूँ और दिवस की सफलता के लिये अपनी हार्दिक शुभकामनायें अर्पित करता हूँ।

—गोपाल स्वरूप पाठक
उपराष्ट्रपति, भारत
नई दिल्ली





भारतीय राजदूत, नेपाल,
काठमाण्डू

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आदरणीय दयाशंकरजी श्रोत्रिय को एक अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट किये जाने का आयोजन महिला-मण्डल, उदयपुर की ओर से हो रहा है। श्री दयाशंकरजी ने अपना जीवन राष्ट्र की सेवा मे समर्पित किया। वह एक अथक और कर्मठ सार्वजनिक कार्यकर्त्ता रहे हैं। इस अवसर पर मैं उनको अपनी ओर से हार्दिक अभिनन्दन प्रस्तुत करता हूँ।

शुभकामनाओं सहित,

—राज बहादुर
भारतीय राजदूत, नेपाल,
काठमाण्डू

—•—



राजभवन,
भोपाल-३

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि महिला-मण्डल, उदयपुर द्वारा श्री दयाशकर श्रोत्रिय को उनके ६८ वे जन्मदिवस पर उनके संघर्ष और साधनामय सेवाकाल के ५० वर्ष पूर्ण होने पर, सार्वजनिक रूप से एक अभिनन्दन ग्रंथ भेंट किया जा रहा है।

मैं इस अवसर पर श्री दयाशकर श्रोत्रिय की दीर्घायु की कामना कर समारोह की सफलता हेतु अपनी शुभकामनाएं भेजता हूं।

—के. सी. रेड्डी
राज्यपाल, मध्य प्रदेश, भोपाल



श्री दयाशंकर श्रोत्रिय अभिनन्दन ग्रन्थ



मन्त्री
सूचना और प्रसारण तथा सचार
भारत, नई दिल्ली

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि श्री दयाशंकर श्रोत्रियजी को उनके ६८ वे वर्ष-प्रवेश पर एक अभिनन्दन ग्रंथ भेंट किया जा रहा है। मैं श्री श्रोत्रियजी की दीर्घायु की कामना करता हूं और आशा करता हूं कि वह इसी तरह जनता की सेवा करते रहेगे। इस उपलक्ष मे आयोजित समारोह की सफलता के लिए मेरी शुभकामनायें हैं।

—सत्यनारायणसिंह
केन्द्रीय सूचना, प्रसारण तथा सचार मन्त्री,
नई दिल्ली

श्री दयाशकर श्रोत्रिय को इनके ६८ वें जन्मदिवस पर इनकी सामाजिक, राजनैतिक, शैक्षणिक एवं धार्मिक क्षेत्र में बहुमूल्य दीर्घकालीन सेवाओं के उपलक्ष्य में अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट निश्चय ही एक प्रशसनीय सराहनीय पग है।

श्री श्रोत्रिय एक निस्वार्थ तथा सक्रिय देशभक्त हैं, जिन्होंने न केवल स्वतन्त्रता संग्राम, अपितु, प्रत्येक क्षेत्र मे त्याग और बलिदान की भावना से एक सच्चे सेवक की भाति कार्य किया है।

ये एक निडर और न्यायप्रिय व्यक्ति हैं, तथा इन्होंने अन्याय के आगे कभी मस्तक नहीं झुकाया। भारतीय महिला-समाज के सेवा-साधक के रूप में इन्होंने एक अपूर्व आदर्श उपस्थित किया, जो हमारे समाज के युवा वर्ग विशेष तथा समस्त विश्व की जाग्रत महिलाओ के लिये परम उपयोगी और प्रेरणादायक सिद्ध होगा।

मैं इस 'अभिनन्दन ग्रन्थ समर्पण' समारोह के शुभावसर पर अपनी शुभकामनाएं भेजता हूँ।

—डा. चि. पावटे
राज्यपाल, पजाब, चण्डीगढ़





मन्त्री
गृह मन्त्रालय, भारत शासन
नई दिल्ली

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि महिला-मण्डल, उदयपुर (राजस्थान) द्वारा आगामी १३ नवम्बर, १९७० को श्री दयाशकरजी श्रोत्रिय को अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट किया जा रहा है।

श्री श्रोत्रियजी ने उक्त सस्था के लिये अपना सम्पूर्ण जीवन अर्पण करके उसको इस स्तर पर पहुचाया। उनके कार्यकाल में महिला समाज की सामाजिक सास्कृतिक, राजनैतिक, शैक्षणिक और आर्थिक दशा में बहुत प्रगति हुई। यह सब उनकी तपस्या का फल है।

मेरा विश्वास है कि श्री श्रोत्रियजी के निर्देशन एव दिग्दर्शन मे महिला-मण्डल दिनोंदिन और उन्नति करेगा। मै इस अवसर पर अपनी हार्दिक शुभ कामनायें प्रेषित करता हूँ।

—रामनिवास मिर्धा
केन्द्रीय गृह राज्य मन्त्री
नई दिल्ली

— —



—राज्य मन्त्री
सूचना और प्रसारण मन्त्रालय
तथा सचार विभाग, भारत
नई दिल्ली

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि महिला-मडल, उदयपुर के तत्वावधान मे उसके सचालक आदरणीय श्री दयाशकर श्रोत्रियजी को उनके ६८ वे जन्म-दिवस पर एव उनके सघर्ष एव साधनामय सेवा काल के ५० वर्ष पूरे होने पर आगामी १३ नवम्बर को एक अभिनदन ग्रथ भेंट किया जारहा है।

सच्चे जनसेवक का अभिनन्दन समाज के अन्य लोगो मे भी सच्ची सेवा का भाव जगाता है। श्री श्रोत्रियजी ने पिछले पचास वर्षों मे समाज सेवा के विभिन्न क्षेत्रो में विशेषकर महिला-मण्डल के रूप मे, जो कार्य किये है, वे अनुकरणीय हैं।

मुझे आशा है कि यह अभिनन्दन ग्रथ परम तपस्वी श्री दयाशकर श्रोत्रिय के सर्वथा अनुकूल होगा और इससे देश के नवयुवको को जन-सेवा की सबल प्रेरणा प्राप्त होगी।

—शेरसिंह
केन्द्रीय राज्य मत्री, सूचना एव प्रसारण
नई दिल्ली



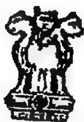


राज्य मन्त्री रक्षा उत्पादन
भारत
नई दिल्ली

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आपने कर्मयोगी एव लोकसेवक श्री दयाशकर श्रोत्रिय को उनके ६८ वे जन्म दिवस पर १३ नवम्बर को एक अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट करने का निश्चय किया है। इस पुनीत अवसर पर मै उनकी दीर्घायु होने की शुभकामना करता हूँ और आशा करता हू कि उनकी अमूल्य सेवाए सारे देश की जनता को प्राप्त होती रहेगी। मैं आपके द्वारा सकल्पित प्रयास की भी पूर्ण सफलता की शुभकामना करता हूँ।

—प्रकाशचन्द्र सेठी
केन्द्रीय राज्य मन्त्री, रक्षा उत्पादन
नई दिल्ली

—



मंत्री, रक्षा मत्रालय
भारत

यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि महिला-मडल, उदयपुर के सचालक कर्मयोगी वीर लोकसेवक श्री दयाशकर श्रोत्रिय को उनके ६८ वे जन्मदिवस पर आगामी १३ नवम्बर को उनको सार्वजनिक रूप से एक अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट किया जा रहा है। मेरी ओर से कर्मयोगीजी के जन्मदिवस पर बहुत २ बधाई हो। परमात्मा उनको दीर्घायु प्रदान करे। प्रभु उनको इतनी शक्ति दें कि वह त्यागपूर्ण, तपस्वी एव आदर्शमय जीवन व्यतीत करते हुए जीवनपर्यन्त लोकसेवा मे रत रहे और महिला-मण्डल उदयपुर को उन्नति के उच्चतम शिखर पर पहुँचाएं।

—नरेन्द्रसिंह महीडा
केन्द्रीय राज्य मंत्री, रक्षा मत्रालय,
नई दिल्ली





सिचाई बिजली, उप मंत्री
भारत

यह हर्ष का विषय है कि महिला-मण्डल, उदयपुर के ३७ वे स्थापना दिवस के अवसर पर संस्था के संचालक श्री दयाशंकर श्रोत्रिय को अभिनन्दन ग्रंथ भेंट करने का आयोजन किया गया है। श्री श्रोत्रिय के सेवा काल के ५० वर्ष पूरे होने पर उनके सम्मानार्थ यह आयोजन उपयुक्त ही है। मुझे आशा है कि मंडल के कार्यकर्ता इस अवसर पर श्रोत्रियजी को ६८ वे जन्म-दिन की बधाइयां देने के साथ उनके कार्य को आगे बढ़ाने का भी संकल्प लेंगे।

—सिद्धेश्वरप्रसाद
केन्द्रीय उप मंत्री, सिंचाई व बिजली,
नई दिल्ली

—

I have great pleasure in sending our very best wishes on behalf of the All India women's conference on the occasion of the Release of the Abhinandan Granth published to honour the great worker, Shri Dayashankarji of Rajasthan.

—Smt B Tara Bai,
President
All India women's conference,
New Delhi





—S. S. Kothari
Member of Parliament

I am glad to learn that an Abhinandan Granth will be presented to Shri Dayashankar Shrotriya, Director-General of Mahila-Mandal, Udaipur on the occasion of his completing fifty years of public service

I have known Shri Shrotriya for a number of years and have been observing with great interest his dedicated service to the cause of women's education and in various other public fields

It is with selfless workers such as Shri Shrotriya that the country's public life becomes richer and acquireshigh values. His principles and life would provide inspiration to other public workers also

I take this opportunity to express my deep appreciation of the outstanding work Shri Shrotriya has performed in various fields in which he functioned and also my deep regard for him, who has proved himself to be a true son of Mewar and rajasthan

—S. S. Kothari.
M P.

—

महिला–आश्रम, वर्धा

महिला–मण्डल से मेरा परिचय बहुत वर्षों से है, राजस्थान जैसे रूढिवादी प्रदेश में श्री दयाशकरजी और सौ. श्री कमलाबहन ने जिस लगन और प्रेम से काम किया है, वह प्रशसनीय है । इस अवसर पर मेरी हार्दिक शुभकामनाएं हैं। ईश्वर उन्हे दीर्घायु देवें और उन्हे अपने काम को बढाने के लिये स्वस्थ रखें ।

—शान्ताबाई रानीवाला
सचालिका





जयपुर
राजस्थान

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता है कि श्री दयाशंकरजी श्रोत्रिय के सम्मान में एक अभिनन्दन-ग्रंथ प्रकाशित किये जाने का निर्णय लिया गया है।

श्री दयाशंकरजी श्रोत्रिय कर्मठ, उत्साही और समाज सेवी निस्पृह कार्यकर्त्ता हैं। समाज-सेवा एवं शिक्षा में, विशेष रूप से महिला-शिक्षा एवं महिला-कल्याण के क्षेत्र में उनका मूल्यवान योगदान रहा है। उनके सार्वजनिक सम्मान के रूप में अभिनन्दन ग्रंथ प्रस्तुत करने का निर्णय स्वागत योग्य है।

मैं श्री श्रोत्रियजी की समाज सेवा में दीर्घायु की कामना करते हुए अभिनन्दन ग्रंथ के सफल प्रकाशन के लिये अपनी हार्दिक शुभकामनायें भेजता हूं।

—मोहनलाल सुखाड़िया
मुख्य मंत्री, राजस्थान

श्री दयाशकरजी श्रोत्रिय, महिला-मण्डल, उदयपुर के एकनिष्ठ कार्य मे पचास वर्ष पूरा कर रहे हैं। इस अवसर पर उनके सम्मानार्थ आप सब अभिनन्दन ग्रन्थ प्रकाशित कर रहे हैं, यह जानकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हुई ।

श्री दयाशकरजी अपनी सेवा-कार्य से महिला-मण्डल उदयपुर तथा अन्य संस्थाओं को विकसित करते रहे ऐसी मेरी इस अवसर पर उनको शुभेच्छा दिजीएगा ।

—सरलादेवी साराभाई
शाहीबाग, अहमदाबाद-४



समाज-सेवी कार्यकर्त्ता समाज के लिये दिशा-सूचक यंत्र होते हैं। जिस समाज मे सामाजिक कार्यकर्त्ता नही होते, वह समाज अंधेरे मे भटक जाता है। नारी समाज बहुत पहले से ही अशिक्षा और अन्धविश्वासो की बेड़ियो से जकडा रहा है। श्री दयाशकरजी श्रोत्रिय उन पहले व्यक्तियो में हैं, जिन्होने आगे बढकर नारी-समाज की उन अज्ञान व अन्धविश्वास की बेडियो पर सफल प्रहार किया। उन्होने नारी-समाज के लिये जो किया है, नारी-समाज उसके लिये उनका युग-युग तक ऋणी रहेगा।

—मुनि नगराजजी
बम्बई प्रवास



श्री दयाशकरजी श्रोत्रिय अभिनन्दन ग्रन्थ का प्रकाशन नवम्बर मास में होने जा रहा है। यह पढकर खुशी हुई।

भाई दयाशकरजी श्रोत्रिय ने अपने जीवन का मुख्य कार्य महिला उन्नति का मान रखा है और उसी मे वे सतत लगे हैं। ऐसे सेवक का अभिनन्दन करना जनता का कर्तव्य है। उन्होंने न सिर्फ उदयपुर शहर की महिलाओ के लिये कार्य किया पर पुराने मेवाड इलाके के नारी-जगत को फायदा पहुँचाया है।

ऐसे लगनशील भाई को मेरा स्नेहपूर्वक अभिनन्दन।

—गोकुलभाई भट्ट
राजस्थान समग्र सेवा सघ, जयपुर

—

यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि आप राष्ट्र सेवक, समाज उद्धारक भाई श्री दयाशकरजी श्रोत्रिय को अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट करने का आयोजन कर रहे हैं।

श्रोत्रिय दम्पति ने, सामाजिक दृष्टि से, विशेषकर महिलाओ के सम्बन्ध मे पिछडे हुए राजस्थान क्षेत्र और उसमे भी तत्कालीन मेवाड राज्य में राष्ट्रीय जीवन के इस अग का उत्थान कार्य आरम्भ किया, वह वास्तव में बडा ही साहस का था। उस युग मे इन जैसे दीवानो और कर्मठ लक्ष्यबद्ध लोगो की निष्ठा ही इस कठिनतम कार्य क्षेत्र मे उतार सकती थी। यदि अग्रेजी का उपयोग करू तो यह 'हरक्यूलियन टास्क' (Herculian Task) था।

वैसे हमारी सस्कृति और इतिहास मे महिलाओ के महत्त्व की सर्वत्र चर्चा है। किन्तु इस युग मे तो इन्होने ही इसे मूर्त रूप करके राष्ट्र उत्थान के इस क्षेत्र को सुदृढ बनाया है। यह सदैव ही कृतज्ञता पूर्वक याद किया जायगा।

परमेश्वर से प्रार्थना है कि श्री श्रोत्रियजी को दीर्घायु बनाये और वे अपने लक्ष्य की ओर दिन प्रतिदिन ऐसी प्रगति करे कि विश्व के किसी भी राष्ट्र के समक्ष भारतीय नारी द्वितीय न रहे और प्राचीन-काल के गौरवमय आख्यानानुसार भारतीय नारी जीवन के प्रत्येक क्षेत्र मे विश्व का नेतृत्व प्रदान रहे और यही श्रोत्रिय दम्पति की कीर्ति और सफलता हो।

—सीताराम सूजाज्र
भू. पू. मत्री, नीमच (म० प्र०)



जयपुर
राजस्थान

महिला-मण्डल उदयपुर के व्यवस्थापक श्री दयाशकर श्रोत्रिय को अभिनन्दन ग्रथ समर्पित कर सम्मानित किया जा रहा है, यह जानकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हुई। श्री श्रोत्रियजी मेरे निजी मित्र हैं। उनके स्वभाव एव स्नेह युक्त वाणी से जो भी एक बार सम्पर्क मे आया, प्रभावित हुए बिना नही रहा। उनकी लगन एव शिक्षा प्रेम का ज्वलत उदाहरण महिला-मण्डल, उदयपुर है, जो प्रदेश मे ही नहीं, देश मे अपना विशिष्ट स्थान रखती है।

महिला-शिक्षा के प्रति जन साधारण का मानस बनाने में श्री श्रोत्रियजी के नेतृत्व मे महिला-मण्डल ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। श्रोत्रियजी का सार्वजनिक अभिनन्दन करके, हम उन जैसे समाज सेवियो का अभिनन्दन कर रहे है। श्री श्रोत्रियजी ने शिक्षा-जगत एव सामाजिक क्षेत्र मे जो मार्गदर्शन प्रदान किया है समाज उसका ऋणी रहेगा।

—बृजसुन्दर शर्मा
चिकित्सा एव श्रम मत्री
राजस्थान, जयपुर





जयपुर
राजस्थान

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि महिला-शिक्षण सस्था महिला-मण्डल उदयपुर के छत्तीसवे स्थापना दिवस के अवसर पर सस्था के सस्थापकजी श्री दयाशकरजी श्रोत्रिय का अभिनन्दन कर रही है। उनकी निस्वार्थ सार्वजनिक सेवाओ और सक्रिय महिला प्रगति मे अगाध रुचि प्रशसनीय रही है और उनके अभिनन्दन का निश्चय वास्तव मे स्वागत योग्य है।

मैं श्री श्रोत्रियजी को उन्हे स्वस्थ एवं दीर्घायु होने की कामना करता हूं तथा प्रकाशन की सफलता चाहता हूं।

—हरिदेव जोशी
उद्योग एवं खनिज मन्त्री
राजस्थान, जयपुर





श्री निवास हाऊस
वाडवी रोड, बम्बई–१

मुझे यह जानकर अतीव प्रसन्नता हुई कि महिला-मण्डल, उदयपुर के कर्मठ सचालक श्री दयाशकर श्रोत्रियजी का ६८ वा जन्म महोत्सव एक ग्रन्थ समापन के रूप मे मनाया जा रहा है। श्री श्रोत्रियजी का त्याग व सेवायें अनुकरणीय है, विशेष रूप से आज के 'कुर्सीवाद' के वातावरण में, जबकि सामाजिक कार्यकर्त्ता निष्काम सेवा के क्षेत्र से विलीन हो रहे हैं।

इस शुभ अवसर पर मै श्री दयाशकरजी की दीर्घायु एव उत्तरोत्तर सफलता के लिये अपनी शुभ कामनायें भेजता हूँ।

—नन्दकुमार सोमानी
ससद सदस्य

—

सेवा मन्दिर
उदयपुर, राजस्थान

मुझे यह जानकर हर्ष होता है कि मेरे पुराने साथी, श्री दयाशकर श्रोत्रिय को उनकी दीर्घकालीन, निष्ठापूर्ण तथा उत्तम समाज सेवा के लिए अभिनन्दन ग्रथ भेंट करके सम्मानित किया जावेगा।

स्त्री शिक्षा का पुण्य कार्य समाज के समग्र उत्थान के लिए एक बुनियादी अभियान है। श्री दयाशकर श्रोत्रिय ने समाज सेवा के इस बुनियादी पहलू पर ध्यान दिया है तथा उसे अपने खून और पसीने को एक करके सीचा है, जिसके लिए हम सब ही लोग दयाशकरजी को हमेशा आदर तथा कृतज्ञता से याद रखेंगे।

मैं उनके अभिनन्दन मे सम्मिलित होने में प्रसन्नता का अनुभव करता हूँ तथा उनके दीर्घ जीवन एव उनकी प्रिय सस्था महिला-मण्डल के उत्तरोत्तर उत्कर्ष की कामना करता हूँ।

—डॉ॰मोहनसिंह मेहता
अधिष्ठता
सेवा-साधना समिति, उदयपुर





जयपुर
राजस्थान

यह जानकर बहुत प्रसन्नता हुई कि महिला-मण्डल के ३६ वे स्थापना दिवस के अवसर पर श्री श्रोत्रिय के अभिनन्दन हेतु एक वृहद् ग्रथ प्रकाशित किया जा रहा है।

श्री श्रोत्रियजी मेरे बड़े अच्छे मित्र एव सहयोगी रहे है। महिला-मण्डल की स्थापना से लेकर अब तक जो कार्य उन्होने किया है और कर रहे हैं—वह किसी से छिपा नहि है।

आज महिला-मण्डल ने जो ख्याति अर्जित की है तथा प्रान्त मे जो स्थान बनाया है— उसमे श्री श्रोत्रियजी का बहुत बडा योगदान रहा है। ऐसे सामाजिक कार्यकर्त्ताओ पर हम सबको गर्व है।

मै आपके प्रयास की सफलता की कामना करता हुआ अपनी शुभकामनाए प्रेषित करता हूँ।

—रामप्रसाद लड्ढा
यातायात मन्त्री, राजस्थान,
जयपुर

● — ●



जयपुर
राजस्थान

मुझे प्रसन्नता है कि महिला-मण्डल के ३६ वे स्थापना दिवस के अवसर पर महिला-मण्डल के सस्थापक और विख्यात सार्वजनिक कार्यकर्त्ता श्री दयाशकरजी श्रोत्रिय के अभिनन्दन हेतु एक वृहद ग्रन्थ प्रकाशित किया जा रहा है। श्रोत्रिय परिवार की महिला-जगत के लिये महती एव अनुकरणीय सेवाए है और यह उनका उचित ही अभिनन्दन होगा। मैं ग्रन्थ की सफलता के लिये शुभकामना प्रेषित करता हूँ।

—नारायणसिंह मसूदा
वन एवं निर्वाचन मंत्री, राजस्थान
जयपुर

श्री दयाशंकर श्रोत्रिय अभिनन्दन ग्रन्थ





जयपुर
राजस्थान

मुझे यह जानकर अत्यधिक प्रसन्नता हुई कि महिला-मण्डल के संस्थापक श्री दयाशकरजी श्रोत्रिय के अभिनन्दन हेतु एक ग्रथ का प्रकाशन किया जा रहा है।

इस ग्रन्थ की सफलता के लिये मेरी शुभकामनाए आपके साथ हैं।

—बरकतुल्ला खाँ
विधि एवं विद्युत मंत्री, राजस्थान,
जयपुर

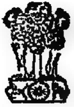




जयपुर
राजस्थान

यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि देश के कर्मठ लोकसेवी श्री दयाशकरजी श्रोत्रिय सचालक, महिला-मण्डल, उदयपुर को ६७ वर्ष की आयु मे उनके सतत सघर्ष और साधनामय सेवा काल के ५० वर्ष पूर्ण होने पर अभिनन्दन ग्रथ समर्पित किया जा रहा है। इस अवसर पर आप मेरी ओर से शुभकामना स्वीकार करने का कष्ट करें। मेरी कामना है कि श्री श्रोत्रियजी इसी लगन से जनता की भलाई मे लगे रहे।

—अमृतलाल यादव
सहकारिता मंत्री, राजस्थान
जयपुर



जयपुर
राजस्थान

यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि इस वर्ष समिति द्वारा श्री दयाशकरजी श्रोत्रियजी को उनको ६८ वी वर्ष गाठ पर अभिनन्दन ग्रन्थ समर्पित करने का शुभ निश्चय किया गया है।

भवदीय
—जोरावरसिंह झाला
मुख्य सचिव, राजस्थान,जयपुर



भाई दयाशंकरजी के अभिनन्दन की जो योजना बनाई है, उसकी मुझे खुशी है। वास्तव मे इस श्रोत्रिय दम्पति ने राजस्थान मे उस समय मे नारी जाति की सेवा का कार्य आरम्भ किया, जब कि यहा नारी जागरण की शुरूआत ही हुई थी। अब भी वे उसी लगन से नारी जाति के उत्थान और शिक्षण मे लगे हुए है—इसलिये मैं भी उनके अभिनन्दन मे अपनी शुभ कामनाए भेज रहा हू। मैं चाहता हूँ कि उनका अगीकृत कार्य सफल होता रहे और आगे बढता रहे।

—हरिभाऊ उपाध्याय
गाधी आश्रम हटूण्डी, अजमेर



जमनालालजी को तो सदा ही महिलाओ के कार्य के लिये प्रेम व अखण्ड उत्साह था। राजस्थान मे स्त्री शिक्षा की जितनी अधिक आवश्यकता थी उस समय उतनी ही उसमें कठिनाई भी थी। सनातनी विचारो के घरो की बहू-बेटियो को घाघरा-घू घट मे सस्थाओ मे सिखाने लाना कोई आसान कार्य थोडा ही था। आज वे ही बहनें सस्थाओ को सभालती हैं।

श्री दयाशकरजी को उस समय श्रीमती कमलाजी श्रोत्रिय ने जो विशेष साथ दिया तभी वे इतना कार्य कर पाये। 'हिम्मते मर्दा मददे खुदा' के आधार पर यह सस्था चल रही है।

पू० विनोबाजी भी अपनी १४ वर्ष की पद यात्रा मे राजस्थान गये तब उदयपुर मे इनकी सस्था मे गये थे। भाग्य से इन वर्षो मे मेरा उदयपुर जाना कई बार हुआ और पुराने कार्यकर्त्ताओ से मिलने का मौका मिला।

जमनालालजी का घनिष्ठ सम्बन्ध होने के कारण जब वहां जाती हूं तो विशेष आत्मीयता अनुभव होती है।

श्री दयाशकरजी श्रोत्रिय अभिनन्दन ग्रन्थ के लिये मेरी शुभकामनाए तो हैं ही।

—जानकी देवी बजाज



श्री दयाशकर श्रोत्रिय अपनी वर्ष के ६७ वर्ष पूरे कर रहे हैं और इस अवसर पर उन्हें अभिनन्दन ग्रन्थ समर्पित करने की योजना है—जानकर खुशी हुई।

श्री श्रोत्रियजी सेवा कार्य मे आजादी के पहले से लगे हैं। एक निष्ठा से अपना समस्त जीवन ही उन्होने तथा उनकी पत्नी ने इस कार्य में लगा दिया है। आज के वातावरण मे उनके जीवन मे से अनुकरण करने को बहुत कुछ मिल सकता है।

ईश्वर से प्रार्थना है कि वह उन्हे दीर्घायु करे जिससे उनकी सेवाओ का लाभ देश व समाज को मिल सके।

—कमलनयन बजाज
बम्बई

साथी दयाशकरजी श्रोत्रिय का अभिनन्दन समारोह किया जा रहा है– प्रसन्नता की बात है। साथी दयाशकरजी श्रोत्रिय हमारे साथ मेवाड प्रजामण्डल के सस्थापकों मे से तथा मेवाड प्रजा-मण्डल द्वारा मेवाड शासन को उखाड फेंकने के लिये चलाये गये संघर्ष मे (हमारे साथ) सत्याग्रहियो के रूप में जेलो में डडेदार बेडिया खनखनाने वालो मे से एक अच्छे साथी रहे हैं।

एक छोटे गाव मे पैदा होने वाले, जो मोटर ड्राईवरो की मजदूरी से लेकर जीवनयापन हेतु रेस्टोरेन्ट चलाकर एक अच्छे समाज सेवी के रूप मे निखरे ऐसे बहुत कम लोग ही होते हैं। श्री श्रोत्रियजी राजनैतिक उखाड–पछाड मे जम न सके और अपनी प्यारी पत्नी कमलाजी के उत्थान मे लगे रहे। दोनो प्राणियो ने उदयपुर नगर मे नारी उत्थान हेतु महिला-मण्डल सस्था की स्थापना की और उसके माध्यम से चमके।

आज जो इनका अभिवादन किया जा रहा है यह इनकी कार्य कुशलता का ही परिणाम है।

दरिद्रनारायण एव हरिजनो के उत्थान हेतु पुन समाज से सघर्ष कर जेल मे रहने का सौभाग्य साथी श्रोत्रिय से छूट गया, पर जो नारी उत्थान का काम जमकर पकडा, उसके लिये साथी श्रोत्रिय का अभिवादन जायज है।

मेरी शुभकामना है कि कमला श्रोत्रिय की सुहाग की बिन्दी चिरायु हो।

—नरेन्द्रपालसिंह चौधरी
राष्ट्रीय विद्यापीठ, नाथद्वारा

❁—❁

यह अति उत्तम है कि आपकी सेवाओ को लोग सराह कर आपको अभिनन्दन ग्रथ देना चाहते हैं। उचित ही है कि समाज अपने सेवको के कार्य की सराहना करे। मैं भी तो आपका उपासक हू। मेरी हार्दिक बधाई स्वीकार करें। एक और भी सूझ है कि जब लोग आपके कार्य की सराहना करें और आपको ग्रथ भेंट करें तो आपके मन मे अहंकार न हो और आप यह न समझे कि आपने बहुत बड़ा कार्य समाज के लिये किया। आप क्या हैं- इस पर विचार करें। एक निमित्त मात्र। कार्य तो और कोई करता है जो आपको साधन बना लेता है। जब लोग सराहना करें तो आप भगवान को धन्यवाद दे और अपना अनुग्रह रखे।

आपके कार्य की सफलता के लिये शुभकामनाए भेजता हूँ।

—श्री श्रीराम भारतीय
सेवा समिति मार्ग, इलाहबाद





राजभवन, अहमदाबाद

माननीय राज्यपाल को यह जानकर प्रसन्नता हुई कि महिला-मण्डल की ओर से आगामी नवम्बर मे श्री दयाशकरजी श्रोत्रिय को अभिनन्दन-ग्रथ भेंट किया जा रहा है। इसके लिये वे अपनी हार्दिक शुभ-कामनाए भेजते हैं।

—अनन्तराय जोशी
सचिव

—

बन्धुवर श्रोत्रियजी ने महिला-मण्डल की प्रतिष्ठापना कर जिस निष्ठा से कार्य किया है और अपना उत्सर्ग किया है- उससे सभी सुपरिचित हैं।

उनकी सेवा का सौरभ सर्वत्र विस्तृत है, अर्ध-शतो के समय में निरन्तर मीरा की पुनीत भूमि मे नारी-जागरण मे अपने को अर्पित कर दिया है। उनके श्रम, उनकी सेवा और निष्ठा के प्रति यह अभिनन्दन आयोजन उचित ही है। मैं इस प्रसग पर हृदय से बधाई देता हू और शतायु की कामना करता हूँ।

—डॉ० सूर्यनारायण व्यास
भारती भवन, उज्जैन



श्री दयाशंकरजी श्रोत्रिय ने महिला-मण्डल को तन-मन-धन और अपने जीवन के सम्पूर्ण भावनामय चिंतन से सींचा है। पचास वर्ष के कार्य-काल मे मण्डल द्वारा मेवाड़ के महिला-समाज का सर्वतोमुखी विकास हुआ है, और आज भी हो रहा है। यह महिला-मण्डल आज मातृ संस्था के रूप मे अनेक नई संस्थाओ की प्रेरक बनी हुई है।

स्वराज्य आन्दोलन मे भी इस मण्डल ने समाज का समयोचित नेतृत्व किया है। फलस्वरूप भारत ने स्वराज्य पा लिया है। प्रजातन्त्र की स्थापना भी हो चुकी है। इतना ही नही स्वतन्त्र भारत मे जन्म प्राप्त बालक-बालिकाओ ने अपनी स्वर्णिम आयु के २१ वर्ष भी पूर्ण कर लिये है और वे सार्वभौम प्रजासत्तात्मक राज्य के मौलिक अधिकारो से दिनोदिन विभूषित हो रहे हैं। तदनुसार महिला-मण्डल की जिन बालिकाओ ने इस प्रतिष्ठित नागरिकता के साथ प्रजातन्त्र के सचालन के अनुरूप परिपूर्ण मताधिकार प्राप्त कर लिया है, मै उन्हे हार्दिक बधाई देती हू और उन्ही के साथ श्रद्धेय श्रोत्रियजी का भी हार्दिक अभिनन्दन करती हूँ।

—श्रीमती मदालसा नारायण
राजभवन, अहमदाबाद

•—•

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि आप श्री दयाशंकरजी श्रोत्रिय की सेवाओ के उपलक्ष मे उन्हे एक अभिनन्दन ग्रंथ समर्पित कर रहे है। आपका यह सत्प्रयास सराहनीय है। श्री दयाशंकरजी ने सामाजिक, शैक्षिक तथा राजनीति में जो सेवाए की हैं, उन्हे कौन नही जानता। उदयपुर का महिला-मण्डल वास्तव मे उनकी प्रबन्ध-पटुता, सूझ-बूझ तथा परिश्रम का फल है।

आज के युग मे दयाशंकरजी जैसे निस्पृही, त्यागी एव निष्ठावान व्यक्ति बहुत कम हैं। ऐसे व्यक्तियो का सम्मान करना अपने को गौरवान्वित करना है। श्रोत्रियजी ने कभी सेवा के प्रतिफल की आकाक्षा नही रखी, इसलिये सम्मान अथवा अभिनन्दन उनके लिये बहुत प्रेरक सिद्ध होंगे, ऐसी आशा नही है। लेकिन जिनके हम ऋणी है, उनके प्रति कृतज्ञता-ज्ञापन करना हमारे लिय हितकर है।

मेरी हार्दिक कामना है कि श्रोत्रियजी दीर्घायु हो स्वस्थ रहे और अपनी निःस्वार्थ सेवा के द्वारा नई पीढी को अनेक वर्षों तक अनुप्राणित करते रहे।

—यशपाल जैन
सस्ता साहित्य मण्डल,
नई दिल्ली





जयपुर
राजस्थान

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि महिला-मण्डल, उदयपुर अपने सचालक श्री दयाशकरजी श्रोत्रिय को उनके ६८ वें जन्म दिवस के उपलक्ष मे आगामी १३ नवम्बर, ७० को एक अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट करने जा रहा है। मुझे आशा है कि इस ग्रन्थ के माध्यम से श्री श्रोत्रियजी के प्रेरणादायक व्यक्तित्व के अलावा महिला जगत के प्रति उनके त्याग व बलिदान एव सेवाभाव का परिचय पाठको को मिल सकेगा, जो जागृत महिलाओ के लिए अति लाभप्रद होगा। ऐसे सेवाभावी पुरुष को उनके द्वारा किये गये कार्यों के प्रति कृतज्ञता के रूप मे अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट करना परम आवश्यक है। अन्त मे मै आपकी सस्था, इसके सचालक एव अभिनन्दन ग्रन्थ के उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ।

—रामकिशोर व्यास
राजस्वमत्री, राज , जयपुर



आदरास्पद भाई श्रोत्रियजी,

आप राजस्थान के नव निर्माण-काल की ऐसी-विभूति है, जो इस अवधि के राजनीतिक इतिहास के धूमिल हो जाने के बाद भी नक्षत्र की तरह चमकते रहेंगे। आपने राजस्थान के गांधी युग की प्रवृत्तियो को प्राणहीन नही होने दिया।

आपके अभिनन्दन ग्रथ मे उन सभी को रुचि होगी, जो राजस्थान के अमर प्राणों से प्यार करते हैं, उसमे सफलता प्रभु अवश्य देंगे।

मैं उसमें कुछ लिख पाता, कृतार्थ होता, पर ? आपको मेरा अन्त स्वर सुनाई पडेगा, यह मान कर चलता हूँ।

—ऋषी जैमिनी कौशिक, बरुआ
हरीसन रोड, कलकत्ता





जयपुर
राजस्थान

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि महिला-मण्डल उदयपुर, के संचालक श्री दयाशकर श्रोत्रिय को उनके ६८ वें जन्म दिवस पर आगामी १३ नवम्बर को सार्वजनिक रूप से एक अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट किया जा रहा है। तथा इस अवसर पर सस्था का ३७ वा स्थापना दिवस और ३६ वा वार्षिकोत्सव भी मनाया जा रहा है।

कर्मयोगी एव लोकसेवक श्री श्रोत्रियजी का महिला समाज सम्बन्धी सामाजिक, सास्कृतिक, राजनैतिक, शैक्षिक एव आर्थिक प्रगति में बहुत कुछ योगदान रहा हैं। वास्तव मे महिला-मण्डल, उदयपुर उनकी ही देन है। ऐसे त्यागी, तपस्वी समाज सेवी का सार्वजनिक रूप से अभिनन्दन किया जाना समाज का सौभाग्य एव कर्त्तव्य है। मेरी कामना है कि भगवान उन्हे शतायु बनावे ताकि महिला जगत को उनकी सेवाओ का लाभ अधिक से अधिक प्राप्त हो सके।

—दामोदर व्यास
गृहमन्त्री, राजस्थान, जयपुर

—



१०४ ए, ग्रे स्ट्रीट,
कलकत्ता—५

श्री श्रोत्रियजी के अभिनन्दन का समाचार पढकर प्रसन्नता हुई। सचमुच मे अभी हमारे देश मे नारी-जीवन स्वाधीन नही है। पिछले कुछ वर्षो से आधुनिक ज्ञान-विज्ञान के प्रभाव के कारण नगरो मे जो स्वतन्त्रता दिखाई देती है, वह भी स्वाभाविक नही हैं। इस विराट देश मे महिला जीवन की मुक्ति के लिए भागीरथ प्रयत्न करना होगा। यो तो प्रधान मत्री श्रीमती गाँधी के रूप मे नारी शक्ति का परिचय सामने आ ही रहा है। परन्तु इन कुछ कतिपय इने गिने नमूनो को समुचित भारतीय नारी की चेतना का प्रतिक नही माना जा सकता। आर्थिक परावलम्बन व आर्थिक विषमता एव सामाजिक बन्धनो के कारण विशाल भारतीय नारी-समाज राष्ट्र के नव निर्माण मे अपना सक्रिय योगदान नही दे पा रहा है। इस सदर्भ मे मेवाड़ के पिछड़े क्षेत्र मे श्री श्रोत्रिय दम्पति ने जो नम्र प्रयास प्रारम्भ किया है, उससे मेवाड़ के नारी जागरण में पर्याप्त योगदान मिला है।

स्वय श्री श्रोत्रियजी ने अथक परिश्रम करके निरन्तर लगन के साथ इस दिशा मे जो कार्य किया हैं, वह सराहनीय है। श्रोत्रियजी धीरज के धनी एव संकल्प के पक्के हैं। इसीलिए उन्होने योजनापूर्वक धीरे २ महिला-मण्डल की प्रवृत्तियो का व्यापक विस्तार किया हैं।

श्री श्रोत्रियजी दीर्घायु हो, यही मेरी शुभकामना हैं।

—ओंकारलाल बोहरा
ससद सदस्य, लोक सभा

श्री दयाशंकर श्रोत्रिय अभिनन्दन ग्रन्थ





जयपुर
राजस्थान

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि महिला-मण्डल, उदयपुर के सचालक कर्मयोगी और लोकसेवक श्री दयाशकरजी श्रोत्रिय को उनके ६८ वें जन्म दिवस पर उनके सघर्ष और साधनात्मक सेवाकाल के ५० वर्ष पूर्ण होने पर सार्वजनिक रूप से एक अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट किया जा रहा है।

मैं इस अभिनन्दन ग्रन्थ के प्रकाशन की सफलता की हृदय से कामना करता हू।

—रावघोरसिंह
उप मत्री शिक्षा, राजस्थान

•—•



जयपुर
राजस्थान

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता है कि श्री श्रोत्रियजी के जन्म दिवस के उपलक्ष मे आयोजित अभिनन्दन समारोह पर उनको एक ग्रन्थ भेंट किया जा रहा है तथा इसी अवसर पर सस्था का वार्षिकोत्सव भी मनाया जा रहा है। नि सन्देह श्री श्रोत्रियजी एक सेवा भावी एव तपस्वी कार्यकर्त्ता है। आपने अपने जीवनकाल में कई एक सस्थाओ को मार्गदर्शन दिया एव लगभग ३७ वर्ष तक महिला-मण्डल सस्था का सचालन किया है। आपकी ही सद्प्रेरणा से आज यह सस्था चरम सीमा पर पहुच कर सम्पूर्ण भारत में अपना अनूठा स्थान प्राप्त किया है तथा भविष्य में पूरा पूरा मार्ग दर्शन मिलता रहेगा।

इस शुभ अवसर पर मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

—हरिसिंह
उप मत्री, कृषि, राजस्थान, जयपुर





जयपुर
राजस्थान

मुझे यह जानकर खुशी है कि कर्मयोगी व लोकसेवक श्री दयाशकर श्रोत्रिय के ६८ वें जन्म दिवस के अवसर पर उनके सघर्ष और साधनामय सेवाकाल के ५० वर्ष पूर्ण होने पर उनका सार्वजनिक रूप से अभिनन्दन करने का आयोजन किया जा रहा हैं तथा इस अवसर पर उन्हे अभिनन्दन ग्रथ भेंट करने का निश्चय किया गया है।

श्री श्रोत्रिय का जीवनकाल त्याग, तपस्या एवं सेवा का ज्वलन्त उदाहरण रहा है। महिला-मण्डल, उदयपुर इनके त्याग एव सेवा का जीता जागता प्रतीक है। ऐसे भावनाशील कर्मठ व्यक्तित्व का सार्वजनिक अभिनन्दन करना समाज मे श्रेष्ठ कार्य करने की प्रेरणा देने मे सहायक होगा।

मै आपके प्रयास की सफलता की कामना करता हूं।

—भीमसेन
उपमत्री, उद्योग एव खनिज
राजस्थान, जयपुर

•—•



जयपुर
राजस्थान

यह अत्यन्त ही प्रसन्नता का विषय है कि श्री दयाशकर श्रोत्रियजी का सार्वजनिक अभिनन्दन समारोह आयोजित किया गया है और इस अवसर पर उन्हे एक अभिनन्दन ग्रन्थ भी भेंट किया जा रहा है। श्री श्रोत्रियजी सच्चे माने मे एक सेवा भावी लोक सेवक हैं। आपने अपना प्रारम्भिक जीवन स्वतन्त्रता-सग्राम मे कठोर सघर्ष एव त्याग मे बिताया। तत्पश्चात् समाजसेवा का निश्चल व्रत लेकर महिला जागरण के अग्रदूत के रूप में पिछले अनेक वर्षों से राजस्थान महिला-मण्डल का सफल सचालन, सामाजिक एव शैक्षणिक क्षेत्र मे उनके अनवरत सेवा भाव का एक अनुपम आदर्श है। आपने इस सस्थान के माध्यम से महिला समाज की विभिन्न सामाजिक, सास्कृतिक, शैक्षणिक और आर्थिक अभिवृद्धि मे महान योग दिया हैं। आपका व्यक्तित्व त्याग और तपस्या मय जीवन साधना से परिपूर्ण और प्रेरणास्पद है। इस अभिनन्दन समारोह के अवसर पर श्री श्रोत्रियजी के प्रति मैं अपना स्नेहसिक्त अभिवादन प्रेषित करता हू।

—शिवचरणसिंह
उपमत्री, आबकारी एव मुद्रणालय
राजस्थान, जयपुर

श्री दयाशंकर श्रोत्रिय अभिनन्दन ग्रन्थ



स्वनाम धन्य ! गूर्जर गौड जाति शिरोमणि श्री दयाशकरजी श्रोत्रिय ने भारत के शैक्षणिक एव सार्वजनिक जगत मे जो सेवाएं की हैं—उनके लिये गुर्जर गौड ब्राह्मण महासभा गर्व का अनुभव करती है। एक साधारण स्तर से महिला-शिक्षण के प्रयोग को महान व्यापक रूप देकर उदयपुर ही नही वरन् भारत के समस्त नारी-जगत मे शिक्षण एव उन्नति की चेतना का स्फुरण कर श्री श्रोत्रियजी ने भारत के इतिहास में अपना नाम अमर कर दिया है।

महासभा श्री श्रोत्रियजी द्वारा की हुई महान् सेवाओ के लिये उनका हार्दिक अभिनन्दन करती है और आशा है कि श्री श्रोत्रियजी की अमूल्य सेवाओ से देश उत्तरोत्तर लाभान्वित होगा।

—रामचन्द्र पचोली
प्रधान मन्त्री
अखील भारत वर्षीय गूर्जरगौड ब्राह्मण महासभा

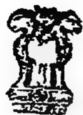


जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि महिला-मण्डल, उदयपुर के सचालक कर्मयोगी, लोकसेवक देशभक्त श्री श्रोत्रियजी का सार्वजनिक रूप से अभिनन्दन कर रहे हैं। इसी सुअवसर पर उन्हे एक ग्रन्थ भी भेंट किया जायगा।

श्री दयाशकरजी श्रोत्रिय एक निष्ठावान सच्चे देशभक्त के साथ ही सच्चे मानवता के पुजारी उन्हे कहा जाय तो अतिशयोक्ति नही होगी। उन्होने जिस जिस क्षेत्र मे कार्य किया है तथा जिन जिन महान विभूतियो के सत्सग मे रहकर ज्ञान अर्चन किया उसका सदुपयोग जनता की सेवा के माध्यम से ही किया है।

इस सुअवसर पर मैं उनकी दीर्घायु की कामना करते हुए आपके इस पुनीत कार्य की सफलता चाहता हूँ।

—श्री मिश्रीलाल गंगवाल
अध्यक्ष, मध्यप्रदेश कांग्रेस कमेटी, भोपाल



विट्ठलभाई पटेल भवन,
नई दिल्ली

महिला मण्डल उदयपुर के संचालक श्री दयाशंकर श्रोत्रिय को उनके ६८ वें जन्म दिवस पर एक अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट किया जा रहा है, इसके लिए शुभकामना।

श्री दयाशंकरजी श्रोत्रिय का जीवन समाज सेवा मे लगा रहा। राजनैतिक उथल पुथल उन्हे प्रभावित न कर सकी और वे साधनामय सेवाकाल मे निष्ठा के साथ अपने कर्त्तव्य पर कटिबद्ध रहे। समाज सेवी साधको का देश मे अभाव है। श्री श्रोत्रियजी के जीवन से सार्वजनिक कार्यकर्त्ताओ को राजनीति से परे रह कर कार्य करने मे प्रेरणा मिलेगी। समयाभाव के कारण मै उनके जीवन सम्बन्धी सेवाओ का जिक्र नही कर पा रहा हूं, इसके लिए क्षमा। शुभकामनाओ के साथ।

—कुम्भाराम आर्य
ससद सदस्य



श्री श्रोत्रियजी की अनेकमुख सेवाओ से राजस्थान के ही नही भारत के सभी विज्ञ परिचित हैं। उनका उचित सम्मान करना सेवा की लोकप्रतिष्ठा बढाना है और उनके प्रति हमारे ऋण का स्वीकार है।

इस अवसर पर अभिनन्दन ग्रंथ का प्रकाशन सर्वथा आवश्यक है।
मै श्री श्रोत्रिय के स्वास्थ्यपूर्ण दीर्घायु की कामना के साथ आपका भी अभिनन्दन करती हूं।

—श्रीमती लीलावती मुंशी
भारतीय विद्याभवन, बम्बई



यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुयी कि महिला-मण्डल के कर्मयोगी, लोकसेवी तथा सस्था को तन, मन से विकसित करने वाले श्री दयाशकरजी श्रोत्रिय को एक वृहद अभिनन्दन ग्रथ भेंट किया जा रहा है।

जिस भांति श्रोत्रियजी द्वारा सुसचालित महिला-मडल राजस्थान की महिलाओं में व्याप्त अशिक्षा रूपी अभिशाप को दूर करने में सहायक सिद्ध हुयी है वह वास्तव में सराहनीय है। उसी भांति आशा है कि आप लोगो के सदप्रयास से प्रकाशित उक्त अभिनन्दन ग्रथ भी नारी शिक्षा को चतुर्दिक प्रोत्साहन देने मे महत्त्वपूर्ण योगदान करेगा।

आप लोगो के इस सराहनीयपूर्ण कार्य तथा विमोचन समारोह की सफलता के लिये मेरी हार्दिक विशेष शुभकामनायें हैं।

—मोहनलाल जालान
कलकत्ता



मुझे यह जानकर बडी प्रसन्नता हुई कि आप महिला-मण्डल की ओर से परम यशस्वी एव मान-नीय श्री दयाशकरजी श्रोत्रिय के सम्मानार्थ एक वृहद अभिनन्दन ग्रथ भेंट कर रहे हैं।

वास्तव मे आदरणीय श्री दयाशकरजी श्रोत्रिय जैसे महान् कर्मठ एव कर्त्तव्यपरायण एव लोकसेवी पुरुष के ही सहयोग से महिला-मण्डल सस्था अपने चर्मोत्कर्ष विकास की ओर उन्मुख हो रही है। स्वनाम-धन्य श्री श्रोत्रियजी की सेवा प्रशसनीय है और मैं आपका हृदय से स्वागत करता हूँ।

—सोहनलाल जाजोदिया
बम्बई



राजा गोकुलदास महल
जबलपुर

श्री दयाशंकरजी श्रोत्रिय एक दीर्घकाल से सेवा के कार्य मे सलग्न हैं। पचास वर्ष का समय व्यक्ति के जीवन मे एक लम्बा समय ही माना जायगा और इतने लम्बे समय की सेवा एक ऐतिहासिक स्थान रखती है।

श्री श्रोत्रियजी को जो अभिनन्दन ग्रथ दिया जा रहा है वह यथार्थ मे उनकी सेवा का अभिनन्दन है। इस मर्त्यलोक मे असख्यों लोग आये और चले गये। महत्व कार्य का है। श्री श्रोत्रियजी के कार्य से सदा प्रेरणा मिलती रहेगी।

भगवान से प्रार्थना है कि वह उन्हे सौ वर्ष की पूर्ण आयु दे और वे सेवा मे सलग्न रहे।

—डॉ॰ सेठ गोविन्ददास
ससद सदस्य, नई दिल्ली



यह जानकर प्रसन्नता हुई कि श्री दयाशकरजी श्रोत्रिय को सार्वजनिक रूप से एक वृहद अभिनदन ग्रथ समर्पित करने की योजना प्रस्तुत की गई है।

श्री श्रोत्रियजी से विगत कई वर्षों से मेरा परिचय है। 'सास्कृतिक' सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्र में उनकी अटूट साधना निश्चय ही उनकी लोकप्रियता का प्रमुख कारण है। उनके द्वारा देश और समाज के लिए की गई सेवायें सदैव चिरस्मरणीय रहेगी।

मै इस पुनीत अवसर पर समारोह के आयोजको को बधाई देते हुवे प्रभु से प्रार्थना करता हूँ कि श्रद्धेय श्रोत्रियजी को दीर्घायु करें ताकि वह देश तथा समाज की अधिकाधिक सेवा करने मे समर्थ हो सकें।
शुभ कामनाओं सहित—

—श्री मंगतूराम जैपुरिया
कानपुर



भोपाल



मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि 'महिला-मण्डल उदयपुर' अपने सचालक श्री दयाशकरजी श्रोत्रिय को उनके ६८ वें जन्म दिवस पर सार्वजनिक रूप से एक अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट कर सम्मानित करने जा रहा है। मैं एक लम्बे अर्से से श्री श्रोत्रिय से व्यक्तिगत रूप में परिचित हूँ। इसमे कदापि दो रायें नहीं हो सकती कि श्री श्रोत्रिय ने कर्मठ निष्ठावान एव रचनात्मक व्यक्तित्व पाया है, समाज के लिये उनकी सेवाए अमूल्य है तथा अमर रहेगी। आज समाज में यह भी एक खराबी पनप रही है कि लोग सेवाओ की समुचित सराहना नही करते, जो अवाछनीय है। हमारा कर्तव्य है कि सेवाभावी लोगो को पहचानें, उनका आदर करें और समाज में उन्हे आदरणीय स्थान दें, उनके त्याग का मूल्य चुकाना तो असम्भव है तथा उनकी सेवाओ का मूल्यांकन कार्य इतिहासकार तथा भावी पीढियां करेंगी। हमे चाहिये कि जिन आदर्शों के लिये श्री श्रोत्रियजी जैसे समाज सेवियो का जीवन बीता है, हम उनके कार्यों को अपने हाथ मे लेकर उन्हें भविष्य के लिये निश्चित करें।

नारी समाज का अनिवार्य अग है और आदिकाल से आज तक नारी ने नीव का पत्थर बनकर समाज को जो सवारा सुधारा है, उसके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने का अब समय आगया है तथा यह कार्य उस समय तक पूरा नही हो सकता जब तक कि नारी को सम्माननीय तथा शोषण रहित व्यक्तित्व नही दिया जाता। किन्तु इस बात मे एक सावधानी आवश्यक है कि नारी और पुरुष के बीच–अधिकारो को लेकर कटुता तथा स्वेच्छाचारिता को स्थान नही होना चाहिये। मैने अपने विदेश भ्रमण तथा अध्ययन में यह अनुभव किया है कि कुछ स्थानो पर नारी तथा पुरुष के सम्बन्ध मात्र भौतिक स्तर तक ही सीमित होते जा रहे हैं, जबकि सृष्टि के रचयिता की मशा यही रही है कि ये सदैव एक दूसरे के पूरक रहे।

भारत वर्ष मे नारी पुरुष के सम्बन्ध न केवल एक जन्म-बल्कि जन्म जन्मान्तरो तक माने जाने की कल्पना रही है, वास्तविकता कुछ भी हो, लेकिन इस भावना ने पुरुष को नारीमय और नारी को पुरुषमय बना दिया है। किन्तु इसके साथ ही यह सत्य भी झुठलाया नही जा सकता कि परिवार तथा समाज में पुरुष की जो विशिष्ठ स्थिति रही है, उसने नारी की भावना का अनुचित लाभ भी उठाया है। इसीके साथ समय और इतिहास की विभिन्न धाराओ ने भी नारी के साथ क्रूरता का व्यवहार किया, फलस्वरूप यह स्पष्ट है कि पिछली शताब्दियो में पुरुष ने कितनी ही प्रगति की हो—नारी के लिये वह एक अधकार पूर्ण युग रहा, जिसमे नारी की अबला मूर्ति के रूप में असम्मानपूर्ण स्थान पर स्थापित किया गया।

लेकिन नारी की शक्ति को पहचानने और समझने वाले लोग भी यदाकदा समाज मे अवतरित होते रहे है। विभिन्न साहित्य और सस्कारो से जो नवजागरण आया, उसका पहला पृष्ठ नारी हितों के लिये स्व०

राजारामोहन राय ने लिखा था। नारी जागरण विभिन्न धाराओं से गुजरता हुआ जब 'गांधी युग' में आया तो उसे उत्थान और आदर्श की नई दिशाएं मिली और पूज्य गांधीजी ने एक नायक की तरह नारी शक्ति और नारी चेतना की नवसृष्टि की, श्री दयाशंकरजी श्रोत्रिय उसी विचार धारा के एक पुंज पुरुष है।

आज भारतीय संविधान नारी की प्रतिष्ठा, सुरक्षा तथा विकास का प्रखर प्रहरी है। हम कामना करते हैं कि संविधान मे व्यक्त भावना देश के नव जागरित नागरिको मे प्रतिष्ठित होगी तथा सारा देश इस नव शक्ति के आशीर्वाद से और दृढ़, शांति पक्ष पर तथा विकासोन्मुख होगा। इन्ही शब्दों के साथ मे कर्मवीर जनसेवी श्री दयाशंकरजी श्रोत्रिय का अभिनन्दन करता हूँ तथा कामना करता हूँ कि उनका काम न केवल भारत मे वरन् उन सभी देशो मे भी मार्गदर्शक बने, जहां नारी आज भी दलित, शोषित, पीड़ित तथा उपेक्षित हैं। इति।

—डॉ॰ देवीसिंह
मन्त्री, लोक स्वास्थ्य एवं जेल
मध्यप्रदेश, भोपाल



श्री दयाशंकरजी श्रोत्रिय के साथ करीब तीस वर्ष से एक सामाजिक कार्यकर्त्ता के नाते मेरा घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है।

आप एक सन्निष्ट गांधीवादी रचनात्मक समाज सेवक है। श्री दयाशंकरजी एवं श्रीमती कमलादेवी श्रोत्रिय ने महिला-मण्डल उदयपुर की स्थापना और विकास मे आजीवन सेवा देकर राजस्थान की महिलाओं की उन्नति मे अपूर्व योगदान दिया है।

नि:स्वार्थ सेवाभावी त्यागभावी व्यक्ति समाज मे स्वाभाविक ही आदर का स्थान प्राप्त करते हैं। संस्था उन्हे अभिनन्दन–ग्रंथ समर्पित कर सम्मान करे, यह समुचित है।

मेरी हार्दिक प्रार्थना है कि परमात्मा उन्हें पूर्ण स्वास्थ्य सहित शतायु जीवन प्रदान करे और समाज की अधिकाधिक सेवा करते रहे।

उज्ज्वल यश प्राप्ति की शुभ कामनाओं सहित मेरे श्रद्धा के सुमन अर्पित करता हूं।

—धीरजलाल शाह
चांदनी चौक, रतलाम





दौसा

श्री श्रोत्रिय महात्मा गाधी के सानिध्य में रहे हैं और उन्हें बडे २ महानुभाव प० मालवीय, व कुन्जरू जैसे लोगो के सम्पर्क मे रहने का मौका मिला है। इनकी योग साधना किनसे छिपी है। राजस्थान का हर शिक्षाविद् एव राजनैतिक इनके द्वारा किये गये कार्यों से परिचित हैं। उदयपुर महिला-मण्डल संस्था का सफल सचालन इनकी योग्यता व लगन का परिणाम है।

मैं आपके इस अभिनन्दन ग्रन्थ की सफलता की कामना करता हूँ।

—नवलकिशोर शर्मा
ससद सदस्य



श्री दयाशकरजी का अभिनन्दन ग्रन्थ प्रकाशित होने जा रहा है। यह जानकर बडा हर्ष हुआ।

श्री दयाशकरजी के साथ का परिचय बहुत पुराना है। अत उनके लिये मैं हमेशा प्रस्तुत हू। ग्रन्थ की पूर्ण सफलता की कामना है।

—सत्यनारायण नाथानी
कलकत्ता

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि दयाशकरजी श्रोत्रिय को उनकी साधना के ५० वर्ष का कार्य-काल समाप्त होने पर एक अभिनन्दन ग्रन्थ समर्पित किया जा रहा है। श्री श्रोत्रियजी का कार्य महिला उत्थान की दिशा मे एक सराहनीय प्रयत्न है। उनकी सेवाए सदा ही याद की जायगी। श्रोत्रियजी के स्वास्थ्य के लिये शुभकामना करता हुआ मैं चाहता हूँ कि अनेक वर्षों तक उदयपुर एव राजस्थान को उनके द्वारा समाज सेवा के क्षेत्र मे प्रेरणा मिलती रहे।

—देवीशकर तिवाड़ी
जयपुर, राजस्थान



श्री दयाशकरजी श्रोत्रिय को अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट किये जाने का समाचार जानकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। उन्होंने अपने क्षेत्र में नारी-जगत की उन्नति के लिये जो प्रयास किये हैं, वे अत्यन्त सराहनीय है।

श्रोत्रियजी को मुझे बहुत ही निकट से परखने का सुअवसर मिला है और उनकी लगन, निष्ठा तथा सेवाओ से मै काफी प्रभावित हुआ हूं। वे सामाजिक कार्यकर्त्ता होने के साथ अपने नगर की विभिन्न समस्याओ को हल करने मे सदैव लीन रहे हैं। वे कांग्रेस के पुराने कार्यकर्त्ताओ मे से हैं। महिला-मण्डल के तो वे प्राण ही हैं। आज इस संस्था को हम जो वर्तमान मे देख रहे हैं—वह श्रोत्रियजी की नि स्वार्थ सेवाओ का परिणाम है।

इस अवसर पर मै उनका अभिनन्दन करते हुए कामना करता हू कि श्री श्रोत्रियजी समाज एव देश की सेवा करते हुए दीर्घायु हो।

इस अभिनन्दन के आयोजको को भी मैं धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकता जिन्होंने श्रोत्रियजी महाराज की सेवाओ का समुचित मूल्याकन किया है।

—जुगमन्दिरदास जैन
कलकत्ता



श्रद्धास्पद श्री दयाशकरजी श्रोत्रिय मेरे बहुत ही निकटतम कृष्ण सुदामा की तरह साथी हैं। मैं उन्हे अच्छी तरह जानता हूँ कि वे अपनी धुन के पक्के है।

श्री श्रोत्रियजी को महिला-मण्डल की ५० वर्षीय सेवा के उपलक्ष मे अभिनन्दन ग्रथ भेंट किया जा रहा है।

मुझे यह जानकर अत्यन्त खुशी हुई कि श्री श्रद्धेय श्रोत्रियजी को महिला-मण्डल की स्थापना निर्वाधित रूप से उस कठिन परिस्थिति मे जबकि देश (मेवाड) की पिछडी समाज पर्दा-प्रथा की जजीर में जकड़ी हुई थी, मार्ग बिलकुल कुठित था, कार्य करना मुश्किल ही नही बल्कि असभव था। ऐसे स्थान पर अडिग होकर, धैर्य पूर्वक, अटूट उत्साह एव दृढ लगन और तत्परता के साथ पूर्ण त्याग से कार्य करने का ही फल है–जो आज ऐसी सुवर्णमय सुन्दर योजना है। इसलिये मुझे हार्दिक प्रसन्नता और सहानुभूति है।

—रामनारायण पडित सा. महामहोपाध्याय
एक्स प्रधानाध्यापक, माध्यमिक विद्यालय, सुखेडा



श्रद्धेय श्री दयाशकरजी श्रोत्रिय, सचालक महिला-मण्डल उदयपुर के लिये अभिनन्दन-ग्रन्थ तैयार किया जा रहा है–यह जानकर अत्यन्त हर्ष हुआ।

श्री श्रोत्रियजी की सेवाएँ नारी–जागृति एव नारी–शिक्षा के क्षेत्र में अत्यन्त सराहनीय रही है। मेरी ओर से भी श्री श्रोत्रियजी का हार्दिक अभिनन्दन है।

इस अभिनन्दन–ग्रन्थ की योजना को पूर्ण सफलता और महिला-मण्डल की उत्तरोत्तर उन्नति के लिये मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ हैं।

—सत्यदेव शर्मा
बीकानेर



आपने विगत शताब्दियो से तमोग्रस्त नारी–जगत मे दिव्य ज्योति का सजोहल करके जो आलोक प्रदान किया है, वह अनुपमेय है। आशा है भावी युवक युवतियो के लिये वह प्रेरणाप्रद एव अनुकरणीय रहेगा। ईश्वर आपको दीर्घायु करे, यह हमारी हार्दिक मगलाऽऽशसा है।

—प० चन्द्रभूषण
चित्तौड़गढ़



श्री महिला-मडल, उदयपुर के निर्माता उदारमना श्री दयाशंकरजी श्रोत्रिय ने अपनी बेशकीमती युवावस्था की सारी शक्ति राजस्थान की अपढ और अर्धजागृत महिलाओ की सर्वाङ्गीण उन्नति मे लगा दी, जिनको मैने कई गावो में शिविर लगा लगा कर कार्य करते देखा है। नेताजी श्री सुभाषचन्द्र बोस ने इनके लिये कहा था, 'इस प्रकार सुशिक्षा द्वारा नवनिर्माण से ही देश और दुनिया की महिलाए धीर, वीर और गभीर बनकर विश्व की सर्वोपरी वैदिक सस्कृति को अपनाते हुए समृद्धिशाली बनावेगी।' इनकी धर्मपत्नी कमलादेवी श्रोत्रिय और लडके–लडकियाँ, सारा का सारा परिवार समाजसेवी हैं। इन पर देश को गर्व है।

—लाडाराम वैद्य
सचालक,
राजस्थान ग्रामोद्योग केन्द्र,
बागर, जोधपुर



शिक्षा एव संस्कृति के विकास की दिशा में विशेष कर नारी जागरण के लक्ष्य की सिद्धि के लिये श्रोत्रियजी की सेवाएँ सर्वदा स्मरणीय रहेगी। महिला-मण्डल उनके अनवरत प्रयास और मनोयोग का प्रतीक है।

उसके लिये अभिनन्दन ग्रन्थ की योजना एक समुचित सम्मान का सूचक है। उनके सुखी और दीर्घ जीवन की शुभकामना के साथ—

—गो० श्री ब्रजभूषण शर्मा
बड़ौदा



परम हर्ष का विषय है कि वयोवृद्ध एव विख्यात सार्वजनिक कार्यकर्त्ता श्रीमान् दयाशंकरजी साहब श्रोत्रिय के अभिनन्दन स्वरूप महिला-मण्डल के ३६ वें स्थापना दिवस पर उन्हे अभिनन्दन-ग्रन्थ भेंट किया जा रहा है।

इस जमाने मे जबकि सामाजिक मूल्यो का ह्रास हो रहा हैं, महान पुरुषो की तपस्या ही हमारे आदर्शों को सजोये हुए है। ऐसे महामानव इस युग मे श्री दयाशंकरजी श्रोत्रिय हैं, जिन्होंने परिश्रम एव साधना के साथ शिक्षा-जगत की जो सेवा की है, वह इस देश के इतिहास में चिरस्थायी रहेगी। उदयपुर नगर की जो प्रगति हुई है, उसकी एक ठोस बुनियाद महिला शिक्षा है, जिसका श्री गणेश श्री श्रोत्रियजी ने किया।

श्री श्रोत्रियजी द्वारा की हुई अनुपम सार्वजनिक शिक्षा सेवाओं के लिये मैं उन्हे हार्दिक बधाई देता हू और शुभकामना करता हूँ कि श्रोत्रियजी को भगवान दीर्घायु करें और स्वस्थ रखें ताकि अमूल्य सेवाएँ निरन्तर समाज को मिलती रहे।

—रामचन्द्र पचोली
एडवोकेट, बेगू

पण्डित दयाशकरजी श्रोत्रिय का सार्वजनिक अभिनन्दन आयोजित किया जा रहा है, यह आवश्यक और उपयुक्त ही है। पडित दयाशकरजी लगभग ५० वर्ष से समाज सेवाओ मे लगे हुए हैं और इनकी सेवाओ की उपलब्धियें स्पष्ट हैं।

महिला-मण्डल और उनकी अनेक प्रवृत्तियो के ये सचालक और पोषक है और आज इस वृद्धावस्था मे भी एक युवक की तरह दिनरात काम मे लगे रहते हैं। ये समाज सेवियो के लिये एक अच्छे उदाहरण हैं।

मैं परमात्मा से प्रार्थना करता हू कि इन्हे दीर्घायु करें, स्वास्थ्य, शक्ति और साधन प्रदान करें, जिससे कि जैसी सेवाए करते रहे हैं, उससे भी और अच्छी सेवा करते रहे।

—रूपकुमारी महता
सम्पादिका
गोरा बादल 'पाक्षिक'
उदयपुर (राज०)

—

श्री दयाशकरजी श्रोत्रिय अभिनन्दन-ग्रन्थ समिति, महिला-मण्डल के सस्थापक एव सचालक के सम्मान मे एक अभिनन्दन ग्रथ प्रकाशित कर रही है, यह जानकर मुझे बडी प्रसन्नता हुई। कर्मठ श्रोत्रियजी के सानिध्य एव घनिष्ठ सम्पर्क का जितना भी अवसर मिला, उसमे उनके कर्मनिष्ठ व्यक्तित्व से मैं बडा प्रभावित हुआ हूँ। अत. मेरी उनके प्रति बडी श्रद्धा हैं।

उन्होने अपने प्रान्त मे जिस क्षेत्र को सेवा के लिये चुना है, वह उस समय मे भी बडा उपेक्षित था। उनकी कर्मठतापूर्ण एव सच्ची लगन से सेवा के कारण ही, वह कार्य उनके देश प्रसिद्ध महिला-मण्डल के रूप मे प्रस्फुटित हुआ है। प्रान्त के इतिहास मे, स्वतन्त्रता सग्राम से लेकर, स्वतन्त्रोत्तर देश मे भी उनकी सेवाएं अमूल्य और अनुकरणीय रही है। उनकी सगठन शक्ति बड़ी ही अद्भुत है। इस अवसर पर मैं उनके दीर्घ और सुखी जीवन की हृदय से कामना करता हूँ। वे नवयुवको के लिये भी प्रेरणा स्रोत और मार्गदर्शक है।

—महेशचन्द्र भट्ट
निरीक्षक, शिक्षाविभाग
उदयपुर





नई दिल्ली

महिला-मण्डल, उदयपुर के वार्षिक अधिवेशन के अवसर पर उसके सचालक, श्री दयाशकर श्रोत्रिय को उनके ६८ वें जन्म दिवस पर एक अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट किया जा रहा है, यह ज्ञात हुआ।

आशा है, ग्रन्थ मे इनकी जीवनी एवम् सेवाओ की समुचित जानकारी होगी।
अधिवेशन सफल एवम् ग्रन्थ उपयोगी सिद्ध हो।

—जगजीवन राम
रक्षा मत्री, भारत





६, सरदार पटेल रोड,
नई दिल्ली—२१

श्री दयाशकर श्रोत्रिय अभिनन्दन ग्रन्थ समिति की ओर से आपका ५ अक्टूबर का पत्र मिला। महिला-मण्डल, उदयपुर के सचालक, लोक सेवक श्री दयाशकर श्रोत्रिय के जन्म दिन पर आप ग्रन्थ भेंट कर रहे हैं, यह प्रसन्नता की बात है। १३ नवम्बर को ग्रन्थ विमोचन समारोह है। समारोह की सफलता के लिए मेरी हार्दिक कामनाएं स्वीकार करें।

—शान्तिप्रसाद जैन

श्रीयुत दयाशंकरजी श्रोत्रिय उन आदर्श पुरुषों में हैं, जो अपनी सूझ-बूझ द्वारा अपने लिये तथा दूसरो के लिये सर्व-हितैषी जीवन मार्ग तलाश कर तथा अनेक साथियो को साथ लेकर सोत्साह मानव जीवन व्यतीत करने वाले होते हैं। उनकी कार्य शैली सपरिश्रम सफलता-द्योतक है। वह अपने को कष्ट मे रख कर मानव समाज को कल्याणकारी मार्ग प्रदर्शित करने वाले व्यक्ति हैं।

महिलाओ की सभाल तथा उच्च शिक्षा के लिये इस दम्पती ने उदयपुर मे 'महिला-मण्डल' बडे शहर के लिये वहा के युवक युवतियो को महिला-समाज मे शिक्षा सम्बन्धी अनेक कार्य करने के लिये मानव हितैषी मार्ग प्रदर्शित किये हैं।

उनका छोटा सा शरीर देश के बडे बडे कार्य सभालने मे प्रबल स्तम्भ बन गया है। अपनी और अपनी धर्मपत्नी श्रीमती कमलादेवी श्रोत्रिय एम. एल. ए. की स्वत. ही शिक्षा-दीक्षा सम्पन्न कर युवक वर्ग के लिये आदर्श कर्म-क्षेत्र का मार्ग प्रशस्त किया है। हम श्रोत्रियजी के निकटतम साथियो मे से हैं।

भगवान से प्रार्थना है कि इस दम्पती को चिरायु रखें जिनके द्वारा राजस्थान मे और भी हितकारी कार्य होते रहे।

—शंकरदत्त वैद्य
बीकानेर



मुझे अत्यन्त हर्ष है कि श्री श्रोत्रियजी को अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट किया जा रहा है। मेरे विचार से यह अवसर देर से आया। ऐसे त्यागी तवस्वी समाज सेवक को बहुत पहले ही प्रकाश मे लाना चाहिए था। फिर भी 'देर आयद दुरुस्त आयद' के असूल को मानकर हम श्रोत्रियजी के आदर्श जीवन से अब भी प्रेरणा लेना आरम्भ करें और उनके अनुकरणीय कार्यों से देश और काल को परिचित कराकर आने वाली पीढियो को मार्ग दर्शन मिलने दे तो भी समाज और विशेषकर महिला-समाज का बडा उपकार हो। अपने सक्रिय जीवन के आरम्भ मे श्री श्रोत्रियजी आवश्यकतानुसार राजनीति से हटकर समाज सेवा के रचनात्मक कार्य-क्षेत्र मे प्रविष्ठ हुए और उन्होने चुना अत्यन्त कठिन एव समस्या प्रधान महिला-समाज की सेवा का महान् कार्य। उनके स्त्री समाज सेवा के कार्यों का वर्णन करना सूरज को दिया दिखाने जैसा होगा। अत. इतना ही कहना पर्याप्त समझता हू कि उनके जीवन का एक २ पल और उनके शरीर का एक २ कण निरन्तर अधिकाधिक महिला-समाज को ऊँचा उठाने में रत है।

मैं ऐसे महान कर्मठ व्यक्तित्व को जो इस आयु पर भी अपनी साधना में बड़े वेग से आगे बढा जा रहा है शत-शत नमस्कार करता हूँ और ईश्वर से प्रार्थना करता हूं महिला-जगत के पुनरुद्धार के आपके कार्य मे महान् सफलता प्राप्त करते हुए अनेक वर्षों तक हमारे बीच रहे।

—रोशनलाल सांभर
एडवोकेट, उदयपुर



अत्यन्त प्रसन्नता की बात है कि महिला-मण्डल श्री श्रोत्रियजी के अभिनन्दन हेतु 'महिला-विश्व-कोष' प्रकाशित करने जा रहा है।

महिला-मण्डल की स्थापना और उसका आज का स्वरूप एवं विकास, श्री श्रोत्रियजी के अनेक गुणों की वृहद् कहानी की एक पुस्तिका है।

उनकी कर्मठता, कार्य शैली, विचार-शक्ति एवं दृढता अनोखी है। अनेक विषम परिस्थितियों एवं प्रलोभनों से द्वन्द करते हुए श्री श्रोत्रियजी "नारी शिक्षा एवं दीक्षा" के अपने सुनिश्चित पवित्र उद्देश्य की तरफ निरन्तर अग्रसर हैं। महिला-मण्डल उनके इस त्याग एवं तपस्या का मुखरित रूप है।

काश ! हम लोग इस कर्मठ समाज सेवी वृहद् युवक के अनेक गुणों के कुछ अंश भी अपने में समा सकते।

—तेजसिंह कोठारी
कलकत्ता



कर्म योगी एवं प्रतिष्ठित लोकसेवी श्रद्धेय दयाशंकरजी श्रोत्रिय को मेरी हार्दिक शुभ कामनाएं स्वीकार हों, जिन्होंने अरावली की उपत्यकाओं में नूपुरों से निनादित उदयपुर नगरी में अपने संघर्षीय जीवन के साधनामय पचास वर्ष समर्पित करके उस आदर्श स्तम्भ की स्थापना की है, जो सदैव इस समाज के लिये अनुकरणीय रहेगा। शुभ कामनाओं सहित।

—प्रो पो. कुलश्रेष्ठ
रवीन्द्रनाथ टैगोर मेडिकल कॉलेज
उदयपुर

नवभारत टाइम्स मे आपकी सेवा के बारे मे की हुई तारीफ को पढकर बहुत आनन्द महसूस हुआ। आपको बहुत बहुत बधाई। भगवान आपकी ख्याति दिन पर दिन बढावे। अभिनन्दन समारोह पर शुभ-कामनाए।

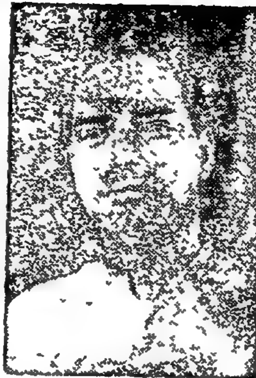
—जे. एम. जोशी
चीफ इन्जिनियर वर्मा शैल
बम्बई



मुझे यह जानकर बडी प्रसन्नता हुई कि महिला-मण्डल अपने सस्थापक आदरणीय श्री दयाशकरजी श्रोत्रिय को अभिनन्दन-ग्रथ भेंट करने जा रही है। यह महिला जगत के लिये बड़ा गौरव है।

—भजनी देवी, मुख्याध्यापिका
वैदिक कन्या उ. मा. विद्यालय,
बागर, जोधपुर





युग उन्नायक

(१) कौन हिमालय सा उन्नत है,
अटल कौन विन्ध्या सा ?
कौन अरवली सा व्रत धारी,
कौन शान्त सन्ध्या सा ??

(२) कौन सन्त तुलसी सा त्यागी'
नन्हा नानक जैसा ?
फक्कड जैसे दास कबीरा,
स्नेही बालक जैसा ??

(३) किसका है व्यक्तित्व अनोखा,
किससे छलबल हारा ?
किसके सत-सकल्प बन गये-
लोक-हेतु ध्रुव-तारा ??

(४) किसने निज कर्त्तव्य-सुधा से-
नई-वाटिका सींची ?
जीवन के कटक चुनने मे-
कभी न आँखें मीची ??

(५) बापू की आज्ञा से किसने,
खोला-' महिला-मण्डल" ?
अन्धकार मे नत-नारी को-
दिया आश का सम्बल ??

(६) किसने पददलिता-नारी को
दिया उच्च सिंहासन ?
किसने नारी की उन्नति का
किया अहर्निश चिन्तन ??

(७) ' नारी, ना री 'चरण-पादुका,'
'छुई-मुई' ना 'अबला' ।
नारी है ज्योतिर्मय शाश्वत,
'देवी, दुर्गा, सबला ।।"

(८) "जाग्रत नारी सदा राष्ट्र की,
जीवन-ज्योति अमर है ।"
इसी सूत्र के युग-उच्चारक
विज्ञ "दया शकर" हैं ।।

(९) दीप्तिमान ओजस् के वाहक
विप्रोचित तप धारी ।
सर्व-समर्पण को चिर-उत्सुक,
अविरल कर्म-पुजारी ।।

(१०) 'नेकी करो, कुए में डालो,'
जिनका मन्त्र यही है ।
आस्था है निष्काम-कर्म में,
हर पग नपा, सही है ।।

(११) अर्द्ध शती की सेवा का
क्या मूल्याकन है सम्भव ?
उसका क्या हो पुरस्कार
जो करे कर्म सब नीरव ??

(१२) आशुतोष की दया-वृष्टि से
'श्रोत्रिय' अजर-अमर हो ।
शत अभिनन्दन-ग्रन्थ आपको,
जीवन मे अर्पित हो ।।

— मदनकुमार चौबे —
एम. ए. सा. रत्न

—

श्री दयाशंकर श्रोत्रिय का परिचय सन् १९३६ से है। मुझे स्मरण है कि श्रीमतीकमला श्रोत्रिय तथा श्री दयाशकर श्रोत्रिय, दोनो पतिपत्नी बड़ी लगन से उदयपुर की महिलाओ के घरो मे जाकर उनको पढ़ने के लिये प्रेरित करते थे। जो स्त्रियें कताई करती या नाज साफ करती होती, उनको अपने साथ लाये हुए थेलो से सलेट वर्तनो को देकर लिखना पढना सिखाते और उनको प्रेरित करने हेतु उनके हाथ का कार्य खुद करने लग जाते। ताकि वे काम के बहाने पढने से न रुक जायें। उस समय स्त्रियो को पढाना बेकार माना जाता था। महिलाओ मे शिक्षा का प्रचार उन्होने पूरे धैर्य और दक्षता के साथ किया और इस प्रकार महिला-मण्डल की स्थापना की। मैं इनके काम से प्रभावित था। आर्थिक कठिनाई को देखकर म अपने वेतन से आर्थिक सहायता करता रहा। श्रोत्रियजी ने जिन कठिन परिस्थितियो मे कार्य करके महिला-मण्डल को एक आदर्श शिक्षा सस्था का रूप दिया यह उनकी कठोर तपस्या, कार्यकुशलता और सफल व्यवस्था शक्ति का परिणाम है। उदयपुर तथा मेवाड का महिला-समाज इनकी सेवाओ का सदा ऋणी रहेगा।

—लालसिंह शक्तावत B A., LL. B.

महिला-मण्डल के अध्यक्ष श्री लालसिंहजी

संक्षिप्त जीवनी—

राजनीति प्रवीण ठाकुर श्री लालसिंह शक्तावत का शिशोदिया कुल की शक्तावत शाखा मे सवत् १९५१, ग्राम जगत, तहसील गिर्वा मे जन्म हुआ। श्री शक्तावत साहब महाराणा उदयसिंहजी के चौदहवी पीढी मे है। रियासत मेवाड के राजपूतो मे सर्व प्रथम इन्होने मैट्रिक से आगे बढकर बी. ए, एल. एल. बी. प्रथम श्रेणी मे उत्तीर्ण हुवे। अपनी कक्षाओ मे आरभ से अन्त तक प्रथम रहे। ठिकाना ऋणि होने से किफायत, छात्रवृत्तिये, ट्यूशन और ऋण लेकर पढाई की।

इनके पास होकर आते ही महाराज कुमार श्री भोपालसिंहजी ने इनको विशेप तनख्वाह १५०) पर रख मिस्टर ट्रेन्च सेटलमेन्ट कमिश्नर के पास एसिस्टेन्ट सेटलमेन्ट आफिसर बनाया। कार्य कुशलता तथा ईमानदारी के कारण इनको सीनियर एसिस्टेन्ट, फिर सेटलमेन्ट आफिसर के पदो पर तरक्की दी और रियासत मे सर्व प्रथम केवल इन्ही को ग्रेड ३५०) से ५५०) की स्वीकार की और सरकारी मोटर दी। इनकी कार्य दक्षता से प्रसन्न होकर महाराणा साहब ने "राजनीति प्रवीण" का खिताब दिया।

सन् ४२ मे इनकी न्याय प्रियता, इमानदारी और बन्दोवस्त की विशेपज्ञता की ख्याति के कारण भारत सरकार ने अजमेर-मेरवाड़े के सेटलमेन्ट, के लिये १०००) एक हजार महावार वेतन पर लिये। यह पहला उदाहरण था जबकि भारत सरकार ने इतने ऊँचे ओहदे पर किसी रियासत के आफिसर को मागकर राजपूताना मे लिया हो।



अजमेर के कार्य की सराहना के कारण रियासत अलवर ने सन् ४७ में इनकी सेवाएं माग कर रेवेन्यू मिनिस्टर के पद के लिये उपलब्ध की।

भारत की स्वतन्त्रता के बाद सन् ४८ मे भूतपूर्व राजस्थान बना उसमें कोटा रियासत का चार्ज इन्होने लिया और एकीकरण के साथ साथ जनता के आन्दोलन को धैर्य पूर्वक दक्षता से शान्त कर दिया। रेवेन्यू बोर्ड के अध्यक्ष रहकर नौ रियासतो के चढे काम को साफ किया। वर्तमान राजस्थान मे सटेलमेन्ट कमिश्नर और डायरेक्टर, लेण्डरेकार्डस तथा रेवेन्यू बोर्ड के सदस्य का कार्य कर ५ मई सन् ५१ को रिटायर हुए।

जागीरदार माफीदारो के आग्रह पर उदयपुर के ३ जिलों की २५ सीटो का चुनाव का कार्य भार सभाला और १३ सीटें जीती। सन् ५२ मे विरोधी दल मे होते हुए भी सर्व सम्मति से उपाध्यक्ष चुने गये। दूसरा चुनाव चित्तौड से डूगरपुर दरबार के मुकाबले मे लडकर सफलता प्राप्त की।

विधान सभा मे रहते हुए २१ मई सन् ५३ को चार सौ वर्ष से शून्य पडे हुवे मीरा मन्दिर चित्तौड़-गढ मे गिरधर गोपाल की चित्र सेवा प्रारम्भ करादी और स्वय मन्दिर में रहने लगे। मन्दिर के काम में ११०००) ग्यारह हजार रुपये खुद के खर्च किये। गीता रामायण सेवा सघ की इनकी अध्यक्षता में उदयपुर, मेवाड तथा राजस्थान मे अनेक जगह इसकी शाखाए कार्य कर रही है और भारतीय सस्कृति सेवा सघ नामक सस्था इन्ही की अध्यक्षता मे भारत वर्ष मे जम्मूकश्मीर से केरल तक धर्म प्रचार का कार्य कर रही है। प्रारम्भ ही से ये गुरुकुल चित्तौड के उपाध्यक्ष हैं वे। अपनी आमद का २० प्रतिशत से स्थानो की सस्थाओ की सहायता में तथा धर्म के प्रचार मे खर्च करते रहे हैं।

—उदयलाल दात्या

आपकी ओर से श्री दयाशकरजी श्रोत्रिय का नागरिक अभिनन्दन करने की सूचना प्राप्त हुई, यह जानकर अत्यन्त हर्ष हुआ कि श्री दयाशकरजी श्रोत्रिय का सार्वजनिक अभिनन्दन किया जा रहा है। यह शुभ कार्य तो उनकी विशिष्ठ सेवाओ को देखते हुवे बहुत पहले ही सम्पन्न हो जाना चाहिये था। किन्तु फिर भी आपने इस शुभ एव महत्त्वपूर्ण कार्य को समय पर करने का निर्णय लेकर अभिनन्दन समिति का गठन किया हैं, इस काय से आपने राजस्थान एव उदयपुर का गौरव बढाया हैं, इसके लिये आप हार्दिक धन्यवाद के पात्र हैं।

श्री दयाशकरजी श्रोत्रिय ने महिला एव जन-जागरण के लिये जो परिश्रम और कार्य किया है, उसका उदयपुर एव राजस्थान सदा ऋणी रहेगा, हमे वह समय याद है जब उदयपुर में महिला-जागृति के लिये कुछ भी नही किया गया था। ऐसे कठिन समय मे श्री दयाशकरजी ने महिलाओ मे फैली पर्दा-प्रथा, जो घर घर मे दृढता से अपने पाव फैला रखे थे, पर्दा-प्रथा की बात तो दूर रही उस समय लडकियो को घर के बाहर निकालना भी अपराध समझा जाता था, उसका स्मरण आते ही रोगटे खडे हो जाते हैं। श्री श्रोत्रिय दम्पत्ति ने घर घर जाकर जो जागृति पैदा की तथा महिलाओ का मार्ग दर्शन किया, तथा उन्हें उन्नति के

शिखर पर पहुंचाने का जो विशाल तथा कठिन कार्य किया, उसके लिये महिला-समाज आपका सदा ऋणी रहेगा तथा महिला-समाज मे की गई इन सेवाओ की स्मृतिया सदा महिलाओ के हृदय मे अंकित रहेगी।

श्री श्रोत्रियजी ने महिलाओ तथा लडकियो को हजारो की तादाद मे शिक्षित कर अध्यापिकाएं बनाकर, जो उनका मार्ग दर्शन कर आर्थिक सकट से मुक्त कर सुख सम्पत्ति का जो स्त्रोत बहाया हैं, वे हजारो महिलाएं आपको अपना उद्धारक समझ कर मुक्त कंठ से आशीर्वाद दे रही है।

श्री दयाशकरजी श्रोत्रिय को रचनात्मक कार्यों मे सब जगह देखा जा सकता हैं। उदयपुर की कोई ऐसी प्रवृत्ति नही, जिसमें श्री श्रोत्रियजी का योगदान न रहा हो। आदिवासी क्षेत्र श्री दयाशकरजी श्रोत्रिय को अपना परम हितैषी, उद्धारक एव मार्गद्रष्टा तथा मसीहा मानते हैं। आदिवासी छात्रावास की महिला-मण्डल मे स्थापना कर आदिवासी लड़कियो के लिये शिक्षा का जो सुलभ मार्ग प्रशस्त किया हैं, उसके लिये आदिवासी लोग तथा महिलाए आपकी भूरी २ प्रशसा किये बिना नही रह सकती।

श्री श्रोत्रियजी मेवाड प्रजा-मण्डल की नींव सुदृढ करने मे एव आजादी की लडाई मे एक योद्धा के रूप मे कांग्रेस के सेनानी रहे हैं और जन जाग्रति एव रचनात्मक कार्य मे अपना पसीना बहाकर देश को आजाद कराने मे अपने जो विशिष्ट सेवाए की हैं, देश आपका सदा ऋणी रहेगा।

ऐसे मनीषि, राजनैतिक कार्यकर्त्ता, समाज सेवी, महिला-समाज एव महिला-मण्डल के प्रेरणास्त्रोत हजारों महिलाओ के घरो मे सुख सम्पति की अमर ज्योति जलाने वाले, जिन्होने अपना सारा जीवन समाज एव देश के लिये अर्पित कर दिया हो, जितना अभिनन्दन किया जाय थोडा है।

आपके अभिनन्दन स्तुत्य कार्य का अभिनन्दन करता हूं तथा आपके अभिनन्दन ग्रथ की शुभकामना करता हूं।

श्री श्रोत्रियजी ने राजस्थान एव उदयपुर की जो अपूर्व सेवा की हैं, वह महिला-मण्डल के जरिये हजारो वर्षों तक लोगो को श्री श्रोत्रियजी की याद दिलाती रहेगी तथा उसकी रोशनी सारे भारतवर्ष मे फैलती रहेगी। श्री श्रोत्रियजी के लिये मै दीर्घजीवन की शुभकामना करता हूं।

—वैद्य गिरधर शर्मा
सर्वोदय औषधालय
मोतीचोहट्टा, उदयपुर



श्री हरिभाऊ उपाध्याय आशीर्वाद



डा राजकुमारी अमृतकौर : विशिष्ट अतिथि



'पद्मश्री' सूर्यनारायण व्यास



डॉ सेठ गोविन्ददास



श्री गौरीशंकर आचार्य



श्री [illegible] गगवाल



महिला सम्मेलनको उद्‌बोधित करते हुए प दयाशकर श्रोत्रिय



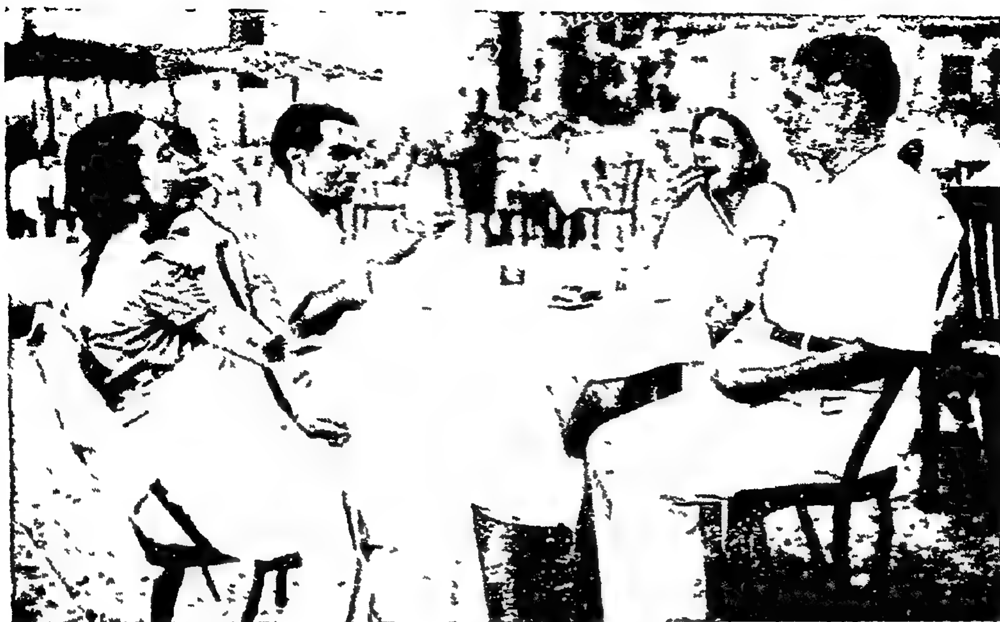
प्रौढ शिक्षण : एक स्मृति



महिलामण्डल ने अपने बीच स्वागत किया भारतके प्रथम गवर्नर जनरल श्री सी. राजगोपालाचारीका साथ में हैं संयुक्त राजस्थानके मुख्यमंत्री श्री माणिक्यलाल वर्मा, श्री मोहनलाल सुखाडिया और दयाशंकर श्रोत्रिय



श्रीमती दुर्गाबाई देशमुख, जो केन्द्रीय समाज कल्याण बोर्ड की ओर से महिला-मण्डलकी अनेक प्रवृत्तियोंकी सहयोगिनी रहीं।



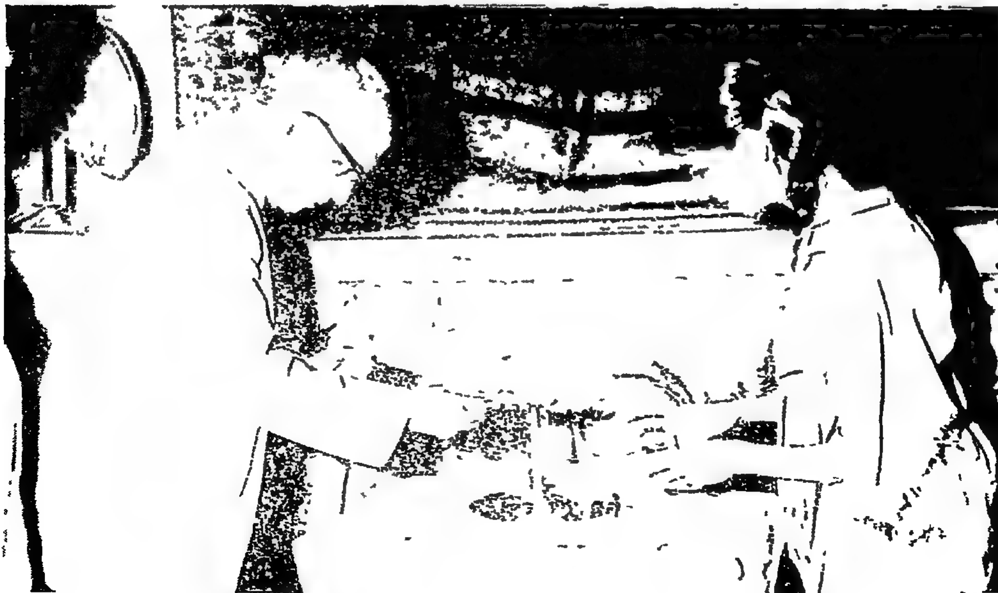
महिला-मण्डल की प्रारंभिक प्रवृत्ति 'दम्पति-सम्मेलन' का एक स्थल



केन्द्रीय-शिक्षा मन्त्रालयका प्रतिनिधि मण्डल बालमंदिर के बच्चोंके बाच



देश के २३ शिक्षाशास्त्रियो के दल के निमित्त, प्रतिनिधिमण्डल के अध्यक्ष श्री वी. मिश्रका स्वागत करती हुई आचार्या श्रीमती विमला कोठारी



'दीप-दान' करके कार्यक्रम का श्रीगणेश कर रहे है उदयपुर विश्वविद्यालय के उपकुलपति डॉ जी एस महाजनी



महिला-मण्डल में माता रामेश्वरी नेहरु के चित्र का अनावरण करते हुए राज्य के सहकारिता मंत्री श्री अमृतलाल यादव



महिला-मण्डलके वार्षिकोत्सव में राज्य के पर्यटन, गृह और जनसम्पर्क राज्यमंत्री श्री हीरालाल देपुरा.



महिला-मण्डल परिवार में दानवीर श्री ाहनलाल दूगड साथ मे श्री श्रोत्रिय, पं. भवानीशंकर शर्मा और श्री ओकारलाल बोहरा



महिला-मण्डल के एक समारोह मे श्रोत्रियजी से चर्चा करते हुए राज्यके समाज कल्याण मंत्री श्री राव नारायणसिंह मसूदा.

महिला-मण्डल

अतिथियों का मूल्यांकन



महिला-मण्डल की स्थापना के अवसर पर
पूज्य बापू का आशीर्वाद



राजस्थान को बढ़ाओ,
सेविकाएँ तैयार करो,
ऐसे शुभ कार्य में,
मेरा आशीर्वाद है।

—मो. क. गांधी



"मुझे महिला-मण्डल में निवास करने का अवसर मिला। महिला-मण्डल मातृ-जाति के शैक्षणिक विकास मे पूरा परिश्रम कर रहा है। मैं श्रोत्रिय दम्पती से आशा करता हूं कि वे पूरी निष्ठा से इस पुन्य कार्य मे जुटे रहकर अच्छी देश-सेविकाएँ तैयार कर राष्ट्र की प्रगति मे सहयोग करें।"

—आचार्य विनोबा

"The Udaipur Mahila-Mandal has been doing excellent work. The Mandal is fortunate in getting an energetic and capable secretary in Mrs -Shrotriya. The Mandal deserves the warmest Support and encouragement"

—C. Rajgopalacharya

'महिला-मण्डल' को देख अत्यन्त प्रसन्न हुआ। सस्था के संचालक श्री दयाशकरजी एवं श्रीमती कमलाजी से मैं पहले से ही परिचित हूँ। महिला-जागृति की दशा मे श्री श्रोत्रिय दम्पती का परिश्रम सराहनीय है। आशा है इस संस्था द्वारा देश की अधिकाधिक सेवा होती रहेगी।

—उच्छंगराय नवलशंकर ढेबर
भू० पू० काग्रेस अध्यक्ष

महिला-मण्डल के पुस्तकालय और दफ्तर मे मैं गई। पुस्तको एव समाचार पत्र व मासिक पत्रो का बहुत अच्छा सग्रह मैंने देखा। यह जानकर बहुत आनन्द हुआ कि स्त्री-पुरुषों की बड़ी सख्या पुस्तकालय का उपयोग करती है। महिला-मण्डल के कई केन्द्रो को देखा, शेष काम का विवरण भी सुना। यो तो पूरे एक वर्ष से, जबसे महिला-मण्डल का काम शुरू हुआ है, मैं इसकी उन्नति को देख रही हूँ। परदा तोड़ने के सम्बन्ध मे पुरानी और बुरी रूढिया और रस्मो को छुड़ाने मे मण्डल ने सराहनीय उद्योग किया है। महिला-मण्डल ने जो कार्य हाथ मे लिया है वह बहुत आवश्यक और जाति निर्माण का बुनियादी काम है। श्रीमती कमलादेवी और उनके पति श्री दयाशंकर श्रोत्रिय ने इसे अपने हाथ मे लेकर बड़ा उपयोगी काम किया है। मेरी सद्भावनायें सस्था के साथ हैं।

—रामेश्वरी नेहरू

महिला-मण्डल अपने ढग की एक निराली सस्था है। इस सस्था का सचालन श्रोत्रिय दम्पती द्वारा बडे अच्छे ढग से हो रहा है। आदिवासी कन्याओ के रहने, भोजन आदि की उत्तम व्यवस्था है। मातृ-जाति की जागृति और उन्नति के लिये यह सस्था बहुत सुन्दर कार्य कर रही है। मै सस्था की पूर्ण सफलता चाहता हूँ।

—मुरारजीभाई देसाई
भू पू. वित्त मत्री, भारत सरकार

नारी और पुरुष दोनो समान गति से प्रगति करें तभी समाज मे सामंजस्य स्थापित रहता है। मुझे प्रसन्नता है कि महिला-मण्डल शिक्षा प्रचार, समाज-सुधार आदि कार्यों द्वारा महिला समाज के सर्वांगीण विकास मे गत ३४ वर्षों से रत है। यह मण्डल दिन-दिन अधिक उन्नत होगा, ऐसी मुझे आशा है।

—जगजीवनराम
ग्रृह मत्री, नई दिल्ली



महिला-मण्डल को देखकर और यहां के बारे में सुनकर मुझे बहुत ही हर्ष हुआ है। ऐसी संस्थाएँ बडा भारी काम कर रही है और हर एक स्त्री व पुरुष की सहानुभूति व सहायता की अधिकारी है। मुझे पूरी आशा है कि महिला-मण्डल दिन-दिन बढेगा और मेवाड़ की स्त्री-जाति को उन्नति के मार्ग की ओर ले जावेगा।

—विजयलक्ष्मी पण्डित

It was a great pleasure to see the mahila Mandal and the Mahila Pustakalaya to hear of their achievements and methods of works. Shri kamala Devi and her husband are working for a much needed cause-as yet in our Country sufficient attention is not being paid to adult education which is a much more difficult task them educating children with in sufficient funds and other resorsees The workers of this institution have had to wark all these years under great handicaps and what soever success they have achieved is due to their euthusiasm, untiring effoth andsacrifes we hope this institution will receive sufficient public sympaty support and thues, make good progress

J. B. Kripalani

Suchita Kripalani

"सुन्दर और उपयोगी सस्था"

—अ वि ठक्कर बापा

मैंने महिला-मण्डल को देखा। सस्था आदिवासी बालिकाओ के लिये श्री कस्तूबा-कन्या छात्रावास चला रही है। सस्था के छात्रावास में रहती हुई ये बालिकाएं सस्था के हॉ हायर सेकेन्डरी स्कूल मे शिक्षण पा रहा हैं। सस्था म विभिन्न प्रकार की शैक्षणिक प्रवृत्तियां हैं। इन सभी का लाभ इन आदिवासी कन्याओ का मिल रहा है। यह प्रसन्नता है। स्त्री-जाति के शैक्षणिक विकास मे सस्था पूरी लगन से लगी हुई उत्तरोत्तर वृद्धि करे, यह मेरी कामना है।

—दुर्गाबाई देशमुख

भूतपूर्व अध्यक्ष, केन्द्रीय समाज कल्याण बोर्ड,
नई दिल्ली

महिला-मण्डल के कार्य को देखा यह एक बडी ही उपयोगी सस्था है और इसके द्वारा विशेष-तौर पर मेवाड की और साधारणतया सारे राजस्थान की महिलाओ मे शिक्षा और उपयोगी शिल्प का अच्छा प्रचार हो रहा है। मुझे आशा है, विद्या-प्रेमी जन इस सस्था को सहायता दे इसे अपने उद्देश्य की पूर्ति मे सफल बनायेंगें।

—श्री राहुल सांस्कृत्यायन

महिला-मण्डल हेडक्वार्टर्स मे जाकर बड़ी खुशी हुई। मैंने जानबूझकर केन्द्रीय कार्यालय को हेड-क्वार्टर्स सम्बोधित किया है। क्योकि वहा जाकर मुझे यह अनुभव हुआ कि श्रीमती कमला बहन अपने

अथक उद्योग द्वारा न सिर्फ दूसरे केन्द्रों में महिला उत्थान का काम कर रही है, बल्कि इस केन्द्र द्वारा महिलाओ मे जीवन और जागृति फूक रही है। वेशक महिलाए, महिलाएं हैं वे मर्द नही बन सकती पर जिस राष्ट्रीय और स्वतत्र वातावरण मे और जिस सुव्यस्थित और कर्मठ तरीके से काम चल रहा है उसका परिणाम महिलाओ को मर्दाना बनाना अवश्य होगा और तब सामाजिक और राजनैतिक क्षेत्रो मे स्त्रियो को पुरुषो के बराबरी के स्थान प्राप्त कर चुकने का इतिहास लिखा जावेगा। उस समय महिला-मण्डल को भी प्रमुख पन्नो मे याद किया जायगा।

श्री दयाशकरजी श्रोत्रिय भी अपनी धर्मपत्नी कमला बहिन की भाति इस सस्था को सर्वाङ्ग उन्नति की ओर आगे बढाने मे अपना भविष्य और शरीर अर्पण कर चुके हैं।

मै हृदय से इस लोकोपयोगी सस्था के उत्थान और इसके द्वारा राजस्थान के उत्थान की कामना करता हूँ।

—श्री जयनारायण व्यास

महिला-मण्डल आज से नहीं, बहुत पहले से काम कर रहा है। महिलाओं को सर्वांगिण उन्नति के क्षेत्र मे एक इसी सस्था ने सराहनीय काम किया है। मेरे विचार से राजस्थान की यह एक प्रथम श्रेणी की सस्था है।

—श्री ब्रजलाल बियाणी

महिला-मण्डल की स्थापना के अवसर से ही इन्दुजी का और मेरा इस सस्था से सम्बन्ध रहा है। मैं इस सस्था की कार्यकारिणी का वर्षों तक सदस्य भी रहा हूँ। मै जब इस सस्था के प्रागण मे आता हूँ और अपने को यहा के कार्यकर्त्ताओ के बीच पाता हूँ तो ऐसा महसूस होता है मानो मै अपने परिवार के बीच ही हूँ। इस सस्था ने समाज सुधार और स्त्री-शिक्षण के क्षेत्र मे काफी उपयोगी कार्य किया है। मडल के कार्य प्रसार का समस्त श्रेय भाई दयाशकजी एव बहिन कमलाजी के कष्ट-साध्य प्रयत्नो पर है। मैं अपनी इस सस्था के उज्ज्वल भविष्य की शुभकामना करता हूँ।

—श्री मोहनलाल सुखाड़िया, मुख्यमत्री, राज०

महिला-मण्डल ने शिक्षा-जगत के क्षेत्र मे एक ठोस कार्य किया है। श्री दयाशकरजी व उनके साथियो को मैं इस कार्य पर हार्दिक बधाई देना चाहता हूँ। मेरी शुभ कामना है कि यह सस्था भविष्य मे और भी ज्यादा सफलता प्राप्त करे। सस्था को देखकर व अपने मित्र श्रोत्रियजी से मिलकर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई।

—श्री दौलतसिंह कोठारी
(अध्यक्ष, विश्वविद्यालय, अनुदान आयोग)

महिला-मण्डल का काम देखकर खुशी हुई।............ बहिनो मे श्रमिक वृत्ति का विकास होना चाहिये।

—श्री धीरेन्द्र मजुमदार



महिला-मण्डल अच्छा कार्य कर रहा है। उसकी उत्तरोत्तर वृद्धि हो-ऐसी हमारी शुभेच्छा है।

—श्री कन्हैयालाल मुन्शी
—श्रीमती लीलावती मुन्शी

रोज करीब १८०० बहनो को शिक्षा का लाभ मिलता है, यह सतोष की बात है। मुझे पूर्ण आशा है कार्यकर्त्ताओ के लगन और परिश्रम को देखते हुए यह सस्था दिन-दिन उन्नत होती जायगी।

—श्रीमन्नारायण अग्रवाल
राज्यपाल, गुजरात

One of the pleasant surprises of my viset to Udaipur this time after 16 years has been to see how a most remarkable institutien of highest social value has been started and has been doing its most useful work. The instiututian is still far from obtaining the open heanted suppori of both the stali and the public The Mahila Mandal is in urgent Need of financial and other assestance, and there is a room for expansion in every direction. was indeed filled with both admiration and every admiration for the noble work that is being done and every because we dont have any thing like it in otherpart of India

—Sunil Kumar Chatterji
professor–Calcatta Univeisity

आपने इस सस्था मे अपना जीवन देकर देश के सामने महिलाओ के कार्य मे एक कीर्तिमान स्थापित किया है।

—सीताराम जाजू
भू पू उद्योग मत्री, नीमच (म प्र.)

आपका पत्र मिला। मुझे बहुत खुशी हुई कि आपका मण्डल समाज सुधार और शिक्षा प्रचार का काम राजस्थान की महिलाओ मे कर रहा है।

—बा॰ वि॰ केसकर
अध्यक्ष-नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली

मण्डल की उत्तरोत्तर उन्नति हो और वह अपने उद्देश्यो की पूर्ति में सफलता प्राप्त करे, यह मेरी हार्दिक इच्छा है। मेरी शुभ कामनायें आपके साथ है।

—श्री गगाशरणसिह सिन्हा, एम. पी.
भूतपूर्व चेयरमेन, प्रजा सोशलिस्ट पार्टी

इस प्रकार की महिला सम्बन्धी सस्थाओ के प्रति जो नारी समाज की सर्वतोमुखी उत्तरोत्तर उन्नति के हेतु नि.स्वार्थ भाव से प्रयत्नशील है, मेरी सदैव शुभकामना है।

—वि. रा. सिंधिया, राजमाता सिंधिया, ग्वालियर



I visited the office and the library of the Mahila Mandal. The library seems to have a good collection of books and magzins the Mandal is doing work on the right lines. He has an uptile task as the fight against old customes believed to be a hand one One must have patienee I wish the mandal every sucess.

—Hansa Mehata

महिला-मण्डल से मेरा निजत्व बहुत पहले से है। स्त्री-जाति के उत्थान मे प्रयत्न करने वाला राजस्थान की प्रमुख सस्थाओ मे यह संस्था अपना स्थान रखती है। भाई दयाशकरजी और बहिन कमला श्रोत्रिय निस्वार्थ वृत्ति से मातृ-जाति की सेवा मे लगे हुए हैं। मण्डल मातृ-जाति बहुमुखी विकास मे लगा हुआ है। मैं महिला-मण्डल की साधना की सफलता चाहता हूँ।"

—श्री हरिभाऊ उपाध्याय

भू. पू. मुख्य मन्त्री. अजमेर, राज्य

"आज अपने ही घर उदयपुर में महिला-मण्डल के कार्य-प्रचार को देखकर मैं बहुत खुश हुआ। शिक्षा के क्षेत्र मे देश मे आगे बढे—इस बात का पूरा प्रयत्न भारत सरकार कर रही है। राजस्थान जैसे पिछडे प्रदेश मे आज से लगभग २२ वर्ष पूर्व स्त्री जाति को शिक्षित कर जगाने का जो प्रयास भाई दयाशंकरजी श्रोत्रिय एव बहिन कमलाजी ने किया वह बहुत ही कठिन था—अत. सराहनीय है। मैं अपनी इस संस्था के शुभ भविष्य की कामना करता हूँ। स्त्री-जाति के शिक्षण मे आज भी काफी प्रयत्न करना शेष है। इस क्षेत्र मे भारत सरकार भी अधिक रुचि ले रही है और काफी आवश्यक सहायता देने के लिये तत्पर है।

—डॉ० कालूलाल श्रीमाली

भू. पू. शिक्षा मन्त्री, भारत सरकार

वैसे तो आजकल शिक्षा की अनेक प्रकार की सुविधाएं दी जाकर कई स्थानो पर तरह-तरह के महिला शिक्षा-केन्द्र राज्य सरकार की सहायता से चल रहे हैं परन्तु यह बड़े हर्ष की बात है कि इस तरह का केन्द्र उदयपुर मे बहुत पहले से स्थापित हो चुका है।

इस केन्द्र की यह दूरदर्शिता एव सुविधा है कि विवाहित महिलाएं भी, जिनकी विद्या द्वारा जागृति, जो केवल विवाह होने के कारण बन्द हो गई थी, उचित विद्याध्ययन का लाभ गृह कार्य करते हुए भी पा सके, अत्यन्त प्रशसनीय है। इस सुविधा से न केवल मेवाड़ अपितु शहर की अनेक महिलाओ ने भी लाभ उठाया है व उठा रही हैं। इस समारोह के अवसर पर वैसे तो इस सस्था के सभी कार्यकर्त्ताओ को अत्यन्त खुशी होगी ही परन्तु हार्दिक प्रशसा के अधिकारी श्री दयाशकरजी श्रोत्रिय व उनकी धर्म पत्नी है, जिन्होंने पूर्ण लगन के साथ इस केन्द्र को आज की ख्याति प्राप्त करने योग्य बनाया। मुझे इस अवसर पर सस्था के सभी कार्यकर्त्ताओ व विशेषकर इन दोनो व्यक्तियो को हार्दिक बधाई देते हुए अत्यन्त प्रसन्नता होती है।

मैं महिला-मण्डल की भविष्य मे उत्तरोत्तर वृद्धि के लिये शुभकामना करता हूँ।

—श्री भगवतसिंह, महाराणा, उदयपुर



I am very happy to have had this opportunity to visit the Mahila Mandal and see the every excellent work, it is carrying on the so many diverse and essential fields. the need for such institution is keently felt all over and I must congratulate its organisers and workers on their venture, I wish it every success".

—Kamla Devi Chattopadhya

महिला-मण्डल का पुस्तकालय देखा और उसकी दूसरी प्रवृत्तियो के बारे मे भी श्री दयाशकरजी श्रोत्रिय ने बताया। श्रोत्रिय दम्पत्ति की लगन और उनकी कार्य पद्धति से मैं प्रभावित हुआ हूँ। वह व्यवस्थित और शात हैं। इसी से वह सफल भी हैं। उनको नगरवासियो से जो सहायता प्राप्त हुई है वह अभी उनकी सेवा क्षमता के लिये काफी नही है और वह उससे भी अधिक सहायता और सहयोग के अधिकारी हैं। मैं उन्हें और उनके नगर को महिला-मण्डल की विविध प्रवृत्तियो के लिये बधाई देता हूँ।

—जैनेन्द्र कुमार

मुझे श्रीमती कमलादेवीजी तथा भाई श्री दयाशकरजी श्रोत्रिय दम्पति द्वारा सचालित महिला-मडल को देखने का तथा उसके कार्य का ज्ञान प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इस मण्डल का उद्देश्य और कार्य वह है जिससे हमारी जन्म भूमि और जाति के उद्धार और उत्थान मे असाधारण प्रगति हो सकती है।

इसे देखकर मुझे आशा हो रही है कि सारे राजपूताने में अपने ढग की यह अकेली सस्था केवल उदयपुर मे ही नही परन्तु सारे मेवाड और उससे आगे सारे राजपुताना मे स्त्री-जाति की उन्नति और प्रगति के लिये एक आदर्श भूत उदाहरण उपस्थित करेगी।

—मुनि जिनविजय
अध्यक्ष
राजस्थान हिन्दी साहित्य सम्मेलन

महिला-मण्डल का विविध कार्य देखा और मेरे विचार उनके आगे रखे, जो किया है वह तो ठीक है मगर जो करना चाहिये वह मुझसे बहुत ही अधिक है। भारत के अन्य प्रान्तो के खास करके पश्चिम भारत के विभाग के मुकाबिले यहा अधिक जागृति की जरुरत है। इसमे महिला-मण्डल को सफलता प्राप्त हो।

—बाग खेर

आज महिला-मण्डल में आकर यहां वर्षों से चलने वाली विविध प्रवृत्तियो को देखकर बहुत खुशी हुई। विशेषत राजस्थान के आसपास बसने वाले परिवारो की बालिकाएँ भी नागरिक बहनो के साथ ऊँचे सस्कार और शिक्षा प्राप्त कर रही हैं—यह देखकर बहुत प्रसन्नता हुई। मैं सस्था के सचालक को बधाई देती हूँ और बालिकाओ के सर्वाङ्गीण विकास की शुभकामनाए व्यक्त करती हूँ।

—श्रीमती मदालसा नारायण, अहमदाबाद

हम लोगो को बडा ही आश्चर्य हुआ कि इस पुराने रुढिवादियो के दुर्ग मेवाड की जनता जो आज कल सबसे अधिक रुढ़िवादी कही जाती है और जहा की अधिकतर जनता मे दरिद्रनारायण का साक्षात

दर्शन होता है। वहाँ इस प्रकार की जागृति किस तरह हो गई। परन्तु ज्यादा विचार करने की आवश्यकता नही है। श्री दयाशकरजी श्रोत्रिय व उनकी धर्मपत्नी कमलाकुमारीजी के त्याग, प्रेम भरा उत्साह को देखा तो फिर आश्चर्य को कहां स्थान था? हमे बडी प्रसन्नता हुई और अपने को भाग्यवान समझते हैं कि ऐसी वास्तविक धार्मिक सस्था को देखने का हमें अवसर मिला। इस सस्था से हम लोग बहुत कुछ आशा रखते है।

—शिवरत्न मोहता, सरस्वती मोहता

उदयपुर पहुच कर मैने महिला-मण्डल की प्रत्येक प्रवृत्ति का निरीक्षण किया। नारी जाति के जागरण के लिये यह सस्था अपने ढग की एक ही है। मेरा प्राय: भारतवर्ष के हर एक शहरो से सम्बन्ध रह चुका है। नारी जाति का जागरण की कोई भी सस्था मेरी दृष्टि मे नही आई। उदयपुर और खासकर मेवाड जैसे प्रदेश मे जहां आज भी १८ वी शदी के विचार मौजूद है वहा यह सस्था नारी जागरण का कार्य कर राष्ट्र के नवनिर्माण की कमी को पूरा कर रही है। मैं हृदय से इनकी सफलता चाहता हूँ और महिलाओ के कार्य करने वाले भाईयो से अनुरोध करता हूँ कि वे उदयपुर पधार कर इस सस्था को प्रोत्साहन दें।

—बसतलाल मुरारका

Thanks to the courtesy of the organisers and of Dr. Mohan singh Mehta who seems to be the friend of every good cause in Udaipur My daughter and I had the previlege of seeing somethiny of the work of the Mahila Mandal at favr of its city centres on the evening of the 16th instant We are delighted with what we saw. The organisers have had difficulties to content with, difticulries of finance and difficalties produced by uneneightned local sentiment It was pathetic to see the little rooms in which the tutional work was carried on with feble kerosine lights which hardly made the darkness visible. But the organisers have won the day Nothing can now stop the awakening. That desire is bound to grow and to and to spread I give my blessings (for whatever they are worth) to the good cause and to the good men and the good women whe have made up their minds that ignerance must be banished and onlightment shall take its place.

—T. Vijayaraghavacharya

आज श्रीयुत दयाशकरजी श्रोत्रिय और श्रीमती कमलाकुमारीजी के निमत्रण पर मैने महिला मडल को देखा और इससे बडी प्रसन्नता हुई। मातृ जाति की जागृति और उन्नति के लिये यह सस्था बहुत सुन्दर कार्य कर रही है। इसके कार्यकर्ताओ का उद्योग और प्रयत्न अत्यन्त प्रशंसनीय है। मुझे हर्ष है कि महिला मडल ने यह काम बहुत ही सफलता पूर्वक आरम्भ कर दिया है और सौभाग्य से उपरोक्त दम्पत्ति कार्य सचालन प्राप्त हो गए है।

मातृ जाति के एक सेवक के नाते मैं इस सस्था की पूर्ण सफलता चाहता हूँ।

—रामगोपाल मोहता



महिला मडल का कार्य देखते हुऐ मुझे बहुत संतोष हुआ। बहुत से कार्यकर्त्ताओं को महिलाओ में किस तरह कार्य करें ऐसा चिंतन रहता है। उनकी चिन्ता यह मडल देखते हुये दूर हो जायगी। श्री दयाशकरजी और श्रीमती कमलाकुमारीजी सेवा मे तत्पर हैं। इस सस्था को जितना हो सके उनकी मदद हर एक को देनी चाहिये। ऐसी सस्थाओ का हर जगह स्थापन होना आवश्यक है। इस सस्था का उद्देश्य जल्दी सफल हो ऐसी मेरी इच्छा है।

—बालकृष्ण विट्ठल भाई खरे
मत्री दक्षिण सस्थान

महिला-मण्डल ने उदयपुर क्षेत्र मे महिला जाति की पिछले वर्षों मे प्रशंसनीय सेवा की है जो सर्वथा अभिनन्दनीय है।

इस अवसर पर मैं मण्डल के समस्त अधिकारियो और उसमे काम करने वाले समस्त भाइयो और बहिनो को अपनी ओर से हार्दिक बधाई एव शुभकामनाएं अर्पित करता हू।

—राजबहादुर
भारतीय राजदूत, नेपाल

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि राजस्थान में महिला-मण्डल शिक्षा व शिल्प क्षेत्र मे रचनात्मक कार्य कर रहा है। मुझे प्रसन्नता है कि इस निर्माण के युग में यह महिला-मण्डल अपने रचनात्मक कार्यों द्वारा राजस्थानी महिलाओ की उस प्राचीन गौरवमयी परम्परा को अक्षुण्य बनाये हैं। मैं इस सस्था के लिये अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करता हू और आशा करता हू कि शिक्षा और शिल्प जैसे रचनात्मक कार्य करते हुए यह सस्था भारत के नारी वर्ग मे राष्ट्रीय चेतना के दीप को प्रज्ज्वलित रखेगी।

—सेठ गोविन्ददास
ससद सदस्य

बडी पुरानी सस्था को फली-फूली देखकर खुशी होती है, आशीर्वाद तो है ही—ईश्वर से प्रार्थना है कि हम सब को, खानपान मे शुद्ध विचार रखेगा। गाय का दूध भी पीना मिले तो गाय का प्रेम है।

—श्रीमती जानकी देवी बजाज
वर्धा

श्रोत्रिय दम्पत्ति की अविरल उपासना एव प्रयत्नो के फलस्वरूप आज महिला-मण्डल भारतीय स्तर पर शैक्षणिक सस्था के रूप-ख्याति प्राप्त कर रही है। मेवाड के लिए यह परम सौभाग्य एव गर्व का विषय है। नारी जागरण एव शिक्षा क्षेत्र मे इस सस्था की अपूर्व सेवाए हैं। मुझे विश्वास है भारत के भविष्य निर्माण मे इस सस्था का पूर्ण योग रहेगा। उत्सव की पूर्ण सफलता चाहता हूँ।

श्री निरजननाथ आचार्य
अध्यक्ष, राजस्थान विधान सभा

मंडल का सूत-कताई का कार्य देखकर बहुत खुशी हुई। इस कार्य को व्यवस्थित करने के लिये और उदयपुर की गरीब बहिनो को उद्योग के जरिये सहायता पहुंचाने के लिये राजस्थान चरखा सघ की तरफ से सूत-कताई केन्द्र यहा स्थापित किये जाने का मैंने आश्वासन दिया है। मण्डल की सहायता से चरखा-सघ अपना केन्द्र अच्छी तरह यहा जमा सकेगा।

—सा. देशपांडे

The organisers of the Mahila Mandal attempt to deal with a wide sector-from children to adults-and I join so many others who havs seen the work in wishing every success to the efforts.

—Dr Mahajani
Vice Chancellor, Delhi University

We have the priviledge to see the institution this day The institution has been rendering valuable services, particularly to women and children of nursery class we wish all success for its future.

—Devendrakumari,
—Rani of chamba

बहुत वर्षों की साख के बाद महिला-मण्डल मे आकर तीन दिन रहने का सुअवसर मिला। यहा की हर कार्यशैली को देखा, और अनुभव से कह रहा हूँ कि यह काम बहुत ही अच्छी तरह चल रहा है। श्री दयाशकरजी और उनके सहयोगी कार्यकर्त्ताओ को बहुत बहुत बधाई। मै हृदय से चाहता हूँ कि इसकी खूब उन्नति हो और इसके द्वारा नारी जाति का उद्धार हो।

—श्री श्रीराम भारतीय
प्रबन्ध प्रचार मत्री
आल इन्डिया सेवा समिति, इलाहबाद–३

आज हमारी जरूरत दुनिया की सभ्यता के मौजूदा ढांचे को बदलने और हिन्दुस्तान को इस नये ढाचे के योग्य बनाने की है। इस कार्य की पूर्ति बिना महिला-समाज को साथ लिये नही हो सकती। इस दृष्टि से किया हुआ प्रत्येक कार्य आज की दुनिया और हमारे देश को आगे ले जाने वाला साबित होगा। महिला-मण्डल अपने इस कार्य मे बराबर आगे बढ़ रहा है।

—श्री प्रेमनारायण माथुर
भू पू. शिक्षा मंत्री, राजस्थान, जयपुर

मैंने महिला-मण्डल के काम को देखा। उदयपुर की रचनात्मक प्रवृत्तियो मे इसका प्रमुख स्थान है। इस सस्था ने उदयपुर के महिला-समाज मे जो काम किया और जितने थोड़े समय में किया है, ऐसा बहुत कम स्थानो मे पाया जाता है।

—बैजनाथ महोदय



महिला-मण्डल का परिचय देने की अब आवश्यकता नहीं रह गई है। सस्था जिस लगन, उत्साह और परिश्रम मे काम कर रही है, वह उदयपुर के लिये ही नही वरन् सारे राजस्थान के लिये गौरव की बात है। इस गौरवशील सस्था की उन्नति मे आर्थिक सहयोग देना अपने धन का सदुपयोग करना है। आशा ही नही पूर्ण विश्वास है, राजस्थानी धनी वर्ग मुक्त-प्राण और मुक्त-हस्त से दान देकर इसे उत्तरोत्तर उन्नतिशील बनाये रखेगा।

—श्री भागीरथ कानोड़िया

It is one of the most valuable Institutions of the state It owes its origin to dr Mohan Singh mehta and mr Shrotriya and mrs Shrotriya

—F G Pearce.
(America)

महिला-मण्डल के नाम तथा उनकी प्रवृत्तियों से मेरा अपरोक्ष परिचय बहुत वर्षों से रहा है। अब इस सस्था को प्रत्यक्ष देखकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हुई। महिला-समाज के लिये इतनी उपयोगी और विविध प्रवृत्तियो मे चलने वाली सस्थाए हमारे देश में इनी-गिनी है। मैं महिला-मण्डल की सब प्रकार से उन्नति की कामना करता हूँ और इसके सेवाभावी कार्यकर्त्ताओ को बधाई देता हू।

—श्री यशपाल जैन

मैंने महिला-मण्डल का केन्द्र, इसका कार्य, उद्देश्य और योजनाएँ देखी जो बहुत सतोषजनक व प्रशसनीय पाई गईं। जिस उद्देश्य से मण्डल की स्थापना की गई है वह हमारे सामाजिक, आर्थिक व धार्मिक पुनरुत्थान का एक मात्र मार्ग है। क्योकि स्त्री-शिक्षा के बिना हमारे समाज की अपगता, अधकार व निर्बलता दूर नही हो सकती और इसके दूर किये बिना समाज-सुधार असभव है।

इस उद्देश्य को लेकर जो इन थोडे से दिनो मे महिला-मण्डल ने सफलता व व्यापकता पाई है वह सतोषजनक और आशा-जनक है। इतने से समय मे १२ केन्द्रो का स्थापित हो जाना और २५० महिलाओ का शिक्षा प्राप्त करना अवश्य ही गर्व की बात है। इसमे सन्देह नही कि इस आशातीत सफलता का श्रेय श्रीमती कमला कुमारी श्रोत्रिय व श्री दयाशकर श्रोत्रिय को है।

—दामोदरलाल शर्मा
निदेशक—शिक्षा विभाग, जैसलमेर राज्य

इतने थोडे समय मे उदयपुर मे प्रौढ महिलाओ की साक्षरता के लिये केन्द्र को कायम कर उसमे शिक्षा की जागृति करना सराहनीय है। शिक्षा प्रचार के लिये घर–घर जाकर पठन पाठन मे रुचि पैदा करना प्रशसनीय है। इसके साथ–साथ उद्योग धधो का प्रचार करना रूढ़िवादियो को मिटाना और सामाजिक तथा धार्मिक सुधार, शिक्षा का प्रचार करना, महिला-मण्डल को उन्नति देने मे विशेष सहायता करेंगे।

विधवाओ के लिये जो योजनाएं हैं उनसे उनका बडा उपकार होगा। सबसे प्रसन्नता तो यह देखकर हुई कि इतने थोडे समय मे चारो ओर लहर पैदा कर दी। मुझे आशा ही नही विश्वास है मण्डल का कार्य इसी गति से जारी रहेगा।

अमरसिंह
(राजाधिराज बनेडा)

आज हम लोग उदयपुर आये। यहाँ आकर महिला-मण्डल स्कूल की लडकियो को देखकर खुशी हुई। लडकिया भी काफी है। यहाँ की बहनें भी सेवा भाव से काफी प्रेम से अपने मण्डल की लडकियो को पढाती है और लडकियो को आगे उन्नति की भी कोशिश करती है। यह देखकर सभी को बहुत सतोष व खुशी हुई।

—श्रीमती कमला नेवटिया

महिला-मण्डल को देखकर परम सतोष हुआ। पवित्र और आवश्यक भावनाओ को लेकर इसके कार्यकर्त्ता इसे अपनी अमूल्य सेवाएं प्रदान कर रहे हैं। वे सराहनीय है। नारी-जागृति मे राजस्थान बहुत पीछे है। अत उसकी प्रगति इस तरफ शीघ्रतिशीघ्र हो, यह वाछनीय है।

—श्री रामदेव चोखानी

आपकी सस्था के माध्यम से राजस्थान की महिलाओ की प्रगति प्रशसनीय है।

—श्रीमती सरस्वतीबाई काले
सम्पादिका 'मा' पश्चिम नेमाड (म० प्र०)

महिला-मण्डल मे चार दिन रहने का सयोग मिला। राष्ट्र के निर्माण मे लगी इस सस्था की जितनी प्रशसा की जाय, कम है। महिलाओ मे और विशेष भील बालिकाओ के विकास के लिये प्रयास प्रशसनीय है। सेवा मे रत कार्यकर्त्ताओ की निष्ठा का यह फल है।

—श्री पारस जैन
बोलाराम (आ० प्र०)

प्रभु आपकी सेवा को सफल करें।

—केसरपुरी गोस्वामी, भीलवाडा

मातृ जाति की सेवा उसके जागरण एव शैक्षणिक विकास की दिशा मे इस सस्था ने जो कार्य किया है, उसके लिये वह अभिनन्दनीय है।

—झावरमल शर्मा
जसरापुर, राजस्थान

महिला-मण्डल बहुत दिनो से मातृ जाति के उत्थान के कार्य मे संलग्न है। मैं इसकी सफलता हृदय से चाहता हू।

—ईश्वरदास जालान
भू. पू. मत्री, पश्चिम बगाल राज्य



मेरी शुभकामनाएँ सदा आपके साथ है। महिला-मण्डल अपने कार्य में उत्तरोत्तर उन्नति करें।

—शान्तिप्रसाद जैन, कलकत्ता

देश के सर्वाङ्गीण विकास के लिए मातृ जाति का उत्थान और विकास आवश्यक ही नही, अनिवार्य है। इस दिशा मे यह सस्था ३४ साल में कार्य करती आ रही है, यह उसकी उपयोगिता और सफलता का प्रबल प्रमाण है।

—अब्दुलकयूब अंसारी
भू० पू० मत्री, स्वास्थ्य एव जेल, विहार राज्य

सस्था की प्रत्येक प्रवृत्ति की सफलता की कामना करता हूँ।

—डॉ कैलाश
भू० पू० शिक्षा उपमत्री, महाराष्ट्र, राज्य बम्बई

स्वतन्त्रता सग्राम मे नारियो की भूमिका हमारे इतिहास का एक नया और सुनहरा अध्याय है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद आज राष्ट्र निर्माण का कार्य हमारे सामने है।

राष्ट्र निर्माण का कार्य बिना महिलाओं के सक्रिय योगदान के पूर्ण न होगा। मुझे आशा है कि महिला-मण्डल इस ओर विशेष दृष्टिकोण रखकर महिलाओ को उनके दायित्व के प्रति सजग करने मे पूर्ण सफलता प्राप्त कर सकेगा। महिला-मण्डल की उत्तरोत्तर प्रगति तथा सफलता के लिये मै हृदय से कामना करता हूँ।

—मूलचन्द देशलहरा
भू० पू० प्रदेशाध्यक्ष, मध्यप्रदेश

मेरी मण्डल के साथ पूरी सहानुभूति है। इसकी सफलता के लिए मेरी शुभकामनाएँ स्वीकार करें।

—भक्त दर्शन
राज्यमत्री, शिक्षा, भारत सरकार, नई दिल्ली

मेरी शुभकामना सहानुभूति और सहयोग पूरा २ आप लोगों और संस्था के साथ है। सस्था के जन्मकाल से ही मैंने इसमे अपना सम्बन्ध माना है और इसकी उन्नति तथा दिक्कतो का मुझे सुख-दुख होता रहाहै। महिला-मण्डल की सफलता भी इसी मे है कि वह आज की समाज रचना में स्त्रियो की उन्नति करके उनको उचित स्थान प्राप्त करा सके।

—श्री सीताराम सेक्सरिया, कलकत्ता

मातृ जाति की सेवा के इस महान् प्रतिष्ठान को सेवा कार्य करते पूरे ३४ वर्ष हो रहे है और यह पूर्ण यौवन को प्राप्त हो रहा है। मातृ-जाति के विकास और जागरण में कार्यरत हमारे ये श्रोत्रिय दम्पति और हमारा महिला-मण्डल दिनोदिन उन्नति के पथ में अग्रसर हो यही शुभ अभिलाषा है।

श्री सूर्यरतन चाडक, कलकत्ता

भगवान से प्रार्थना है कि राजस्थान की महिलाओं में आपने पुनीत त्याग से भारतीय स्वाधीनता युद्ध को जिस प्रकार अनुप्राणित किया है उसी प्रकार की प्रेरणा भारत की रक्षा निमित भविष्य मे देते रहेगे।

—श्री रघुनाथसिंह
भू० पू० ससद सदस्य

महिला-मण्डल बहन कमलाजी तथा श्री दयाशकर श्रोत्रिय के सतत प्रयत्न का फल हैं। मेवाड जैसे पिछडे हुए प्रान्त मे नारी शिक्षा आन्दोलन का कार्य प्रशसनीय और सराहनीय है। महिला-मण्डल का कार्य अत्यन्त सुव्यवस्थित ढग से हो रहा है और जो लोग भी इसकी सहायता करेंगे उन्हे यह विश्वास रखना चाहिये कि वे एक उत्तम सस्था को सहायता प्रदान कर रहे हैं। मैं आपकी सफलता चाहता हू।

—शकरसहाय सक्सेना

उदयपुर मे महिला जागृति के लिये महिला-मण्डल जो कार्य कर रहा है वह देखकर बहुत खुशी हुई। राजपूताना मे मैंने इस तरह का काम करने वाली यह पहली सस्था देखी। मालूम हुआ सस्था का मासिक खर्च २००) है और यह सारा खर्च चन्दे से पूरा किया जाता है। मैं इनके इस काम मे सफलता चाहता हू।

—सा० देश पाडे
मत्री, राजस्थान चरखा सघ
गोविन्दगढ माभियपुर, जयपुर

सस्था का कार्य बहुत ही उत्तम तथा वैज्ञानिक ढग से चलाया जाता है। उदयपुर मे यह अपने ढग की एक ही सस्था है। इसकी प्रवृत्तियो का निरीक्षण किया गया तो पाया गया कि कार्य वास्तव मे सराहनीय है।

—रानी उर्मिलादेवी मसूदा
अध्यक्ष
राज्य समाज कल्याण सलाहकारबोर्ड, राजस्थान

आज मै सपरिवार श्रीमती कमलादेवीजी तथा श्री दयाशकरजी के निमत्रण पत्र पाने पर महिला-मण्डल के कार्यालय तथा पुस्तकालय को देखने के लिये गया। वहा की कार्य प्रणाली बहुत ही सन्तोषप्रद मालूम हुई।

अपने ढग की यह एक निराली सस्था है। मेवाड मे, जो कि राजस्थान का गौरव है, ऐसी सस्था का होना अति आवश्यक था। हमे पूर्ण विश्वास है कि मेवाड़ की महिला अपने प्राचीन गौरव को पुन प्राप्त करने मे पूर्ण सफल होगी।

हमारी हार्दिक शुभकामना है कि महिला-मण्डल का कार्य अत्यन्त सुचारु रूप से चलता रहे तथा धर्म पर आरुढ रहते हुए उन्नति पथ पर अग्रसर हो।

—सत्यनारायण नाथानी
दुद्द बाला एण्ड कम्पनी, भीलवाड़ा



Shrimati Sodhani and myself visited the Mahila Mandal and there saw the Library We had also the pleasure of seeing few centres managed under Mahila-Mandal where the grown up women receive their education We were highly impressed by noticing that Mahila Mandal strives to a great extent in imparting education in the woman kind.

Thanks to the organisers & specially to Syt Daya Shankerji and his wife Shrimati Kamala kumari Shrotriya who is taking special pains in the betterment of this institution

We pray for the betterment of this institution

—एच. पी सोढाणी

आजकल यहा स्त्री-समाज में जिस कदर जागृति एव विद्या प्रेम दृष्टिगोचर हो रहा है, वह सब इसी मण्डल के प्रयत्न का फल हैं। यह सस्था हरेक स्त्री व पुरुष की सहानुभूति व सहायता की अधिकारी है।

—कर्नल ठा० गोपालसिंह बदनौर
एम० बी० ई०

मुझे इस साल फिर महिला-मण्डल आने का सुअवसर मिला। ऐसी होनहार और अनूठी सस्था को देखने और इसके सेवाव्रती सचालको और सचालिकाओ से सम्पर्क स्थापित करने का सौभाग्य मुझे मिला। यहा जो कुछ मैंने देखा, और सुना, उसके आधार पर यह बलवती आशा करना सर्वथा समुचित ही प्रतीत होता है कि हमारे देश का भविष्य शीघ्र ही उज्ज्वल होगा।

डॉ० मुरारीशरण मागलिक

मुझे मण्डल के कामो को देख बडा आनन्द हुआ। यह सस्था प्रौढ बहिनो मे शिक्षा-प्रचार, कुरीति निवारण तथा विधवाओ की समस्या को सुलझाने का सक्रिय प्रयत्न कर रही है। नारी-जाति के सुधार के बिना देश कभी नही सुधर सकता, इस सस्था ने इसी मुख्य लक्ष्य को सामने रखा है। मुझे मण्डल की पाठशालाओ मे पढने वाली प्रौढ बहिनो को बहुत प्रसन्न और प्रगतिशील देखकर जितना हर्ष हुआ है उसका वर्णन नही कर सकती। मै इस सस्था की दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति चाहती हू और उस दिन को देखना चाहती हू, जब इस मण्डल की शाखाएं सारे राजपूताने भर मे फैल जाए। प्रभु इस पर सदा कृपा करें।

—लीलावती झँवर
अध्यक्षा अ० भा० माहेश्वरी महिला परिषद्

थोडे से समय मे जो भी कुछ जान सका उससे मालूम हुआ कि मेवाड राज्य मे यह सस्था वास्तव मे मातृ-जाति की पूरी सेवा कर रही है। यद्यपि सस्था में धनाभाव के कारण जितना कार्य सस्था के कर्णाधार करना चाहते हैं इतना नही कर सकते। फिर भी जैसी परिस्थिति मे कार्य हो रहा है वह अत्यत ही सराहनीय है।

—रामेश्वरलाल नेथानी

I visited the library of the Mahila Mandal with my wife on the 21st instant and were delighted to find that the efforts of p t. Daya shankar Shrotriya and his talented wife shrimati Kamala kumariji have already borne rich fruits At a place like Udaipur where the woman folks have been neglected for a pretty long time it is very necessary to do some thing for their regeneretion and the shrotriya deserve the utmest thanks of the pablic for what they are doing.

S C Jru
Principal, Maharana College, Udaipur

हमे महिला-मण्डल के कार्य से बडा सन्तोष हैं और हम देश के धनी, उदार और दानी सज्जनो से अनुरोध करते है कि वे इस मण्डल मे अच्छी सहायता प्रदान कर श्रोत्रिय दम्पति के उत्साह को बढावें जिससे वे अपने मन की इच्छानुसार इस मडल को सफल बना सके और स्थान स्थान पर शाखा, सभायें स्थापित करके महिला ससार मे जागृति उत्पन्न कर सकें।

—दुर्गाप्रसाद, प्रधान
हिन्दू सभा, अजमेर

यह सस्था अपने क्षेत्र मे अद्भुत कार्य कर रही है। इसका संचालन उत्तमतापूर्वक होता है। सारा काम व्यवस्थित है, इसको देखकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। यह सब धनीमानी तथा विद्वानो के सहयोग की पूर्ण अधिकारिणी है। जो नारी जागृति के इच्छुक हैं उन्हे इसकी हर तरह से सहायता करना चाहिये।

—द्वारिकालाल गुप्त
जनरल मैनेजर, राजस्थान बैंक

श्रीमती कमलाकुमारी के स्नेह, आग्रह और कार्यकुशलता ने मुझे महिला-मण्डल के वार्षिक उत्सव पर ता० २६-२-४४ को उदयपुर मे खीच ही लिया। इन दोनो आदर्श पति-पत्नी की समाज के और राष्ट्र के एक आवश्यक श्रेष्ठ और प्रधान अग के जागृत करने के लिये अविश्रान्त परिश्रम तथा कार्यकुशलता बहुत ही सराहनीय है। महिला-मण्डल का उद्देश्य है मेवाड और राजस्थान जैसे पिछडे हुए प्रान्त की महिलाओ की सर्वाङ्गीण उन्नति करना। यह सस्था अपने उद्देश्य में सफलता भी प्राप्त कर रही हैं। इस सस्था मे पढने वाली बहिनो से वातचीत करने पर उनके सर्व साधारण ज्ञान के परिचय, सभ्यता आदि से सतोप हुआ।

श्री दयाशंकरजी तथा श्रीमतीकमलाकुमारीजी को परमेश्वर शक्ति दें। महिला-मण्डल की अन करण से शुभ कामना करते हुए मै वह दिन देखने की अभिलापा करती हूँ जब मण्डल अपने सारे उद्देश्यो मे सफल हो।

—राधादेवी गोइनका

इन सब सस्थाओ मे बडे वैज्ञानिक ढग से महिलाओं को अध्ययन कराया जाता है। महिलाओं के अध्ययन के १२ केन्द्र तथा दो विद्यालय हैं। इन सब में लगभग ३०० बहिनें शिक्षा पा रही हैं। यह बहिन



कमलाकुमारीजी तथा भाई दयाशकरजी के परम पुरुषार्थ, नि स्वार्थ सेवा तथा अविश्रान्त परिश्रम का परिणाम है। भगवान से प्रार्थना है कि यह सस्था उत्तरोत्तर उन्नति करे।

—रामप्यारी शास्त्री

मैंने आज दयाशकरजी श्रोत्रिय की कृपा से महिला-मण्डल के कार्यालय का निरीक्षण किया—यद्यपि समयाभाव से मै पूर्ण रूप से कार्य प्रणाली का अध्यापन नही कर सका तथापि जितना मैंने देखा है उतना मैं कह सकना हू कि श्रोत्रियजी ने मेवाड की सेवा करने का जो व्रत लिया है वह अति सराहनीय है और आशा है कि वे अपनी धर्म पत्नी की सहायता से कदाचित वीमन्स युनिवर्सिटी से अधिक तरह सर्वांग पूर्ण स्त्री विश्वविद्यालय बनाकर ही विश्राम ग्रहण करेंगे।

—कु० प्रतापसिंह
प्रोफेसर हिन्दू विश्वविद्यालय बनारस

मेवाड समाज को लाभ इस मण्डल से हो रहा है उसके लिए हम मेवाडी भाई इनके हमेशा ऋणी रहेगें।

कमला कुमारीजी और दयाशकरजी की कामनाए सफल होवे और इस मडल के जरिये हमेशा देश को लाभ मिलता रहे ऐसी मेरी प्रबल आकाक्षा है।

—जसवन्तसिंह मेहता

I was a great privilage to see the Mahila Mandal and its splendid work-May-it powe and be to the caure of poor woman

—P B Chandwani
O W Saukar Sud

During my second visit to Udaipur after a lapse of five years I am very happy to see the institution which has opened up a new vista of life for the daughter of Mewar I wish this noble effort to over come all difficulties and to step up from success to success.

Jaihnd
—Sardugdhar das, orisa

राजपूताने भर मे ऐसी सस्था नही मिलेगी। हर शहर मे ऐसी सस्थाओ की आवश्यकता है। मैं हृदय से इस लोकोपयोगी सस्था के उत्थान की कामना करता हूँ।

—चम्पालाल बांठिया
भीनासर, बीकानेर

It was a privilege to conduct the practical examination of Mahila Mandal students Considering the books and of the pupil teachers the staff of Mahila Mandal were-to be congratulated for the patience, sympathy love they have for rheir students.



The Mahila Mandal gives training not only in teaching but in some of the more important activities.

I wish that more branches of the Mandal are opened and the public the state take greater interest in its work.

The pupil teachers have given emple proof of what they have read from the institution they are studying

Premchand lal
Principal B.T. College, Ajmer
K. N Shrivastava
(Principal, C. B. College Udaipur

उदयपुर मे महिला मडल का काम बहुत सराहनीय है और इसका श्रेय श्री श्रोत्रिय दम्पति को है। भाग्यवश इन्हे कार्यकर्त्ता भी अच्छे मिले हैं पर आर्थिक कठिनाइया इनको सदा घेरे रहती है। महिला मडल को अधिक से अधिक सहायता मिलनी चाहिये जिससे कि यह अपना कार्य और भी कुशलता पूर्वक कर सके।

—महादेवलाल
बिड़ला कालेज, पिलानी

परीक्षा लेने के कार्य के सहारे मुझे इस साल फिर महिला-मण्डल आने का सुअवसर मिला। ऐसी होनहार और अनूठी सम्था को देखने और इसके सेवाव्रती सचालको और सचालिकाओ से सपर्क स्थापित करने का सौभाग्य मुझे मिला। यह मेरे लिये प्रसन्नता का विषय हैं। सस्था के अनेक प्रयासो के बारे मे यहा जो कुछ मैने देखा और सुना उसके आधार पर यह बलवानी आशा करना सर्वथा समुचित ही प्रतीत होता है कि हमारे देश का भविष्य शीघ्र ही उज्ज्वल होगा।

—मुरारिशरण माङ्गलिक
Lecturer in Education University, Lucknow.

आज मैने महिला-मडल का अवलोकन किया। सस्था अपनी अनेक शैक्षणिक प्रवृत्तियो द्वारा राजस्थान का बडा ही हित साधन कर रही है। मैं इसकी सादगी और अपूर्व सेवा कार्यशीलता से बडा प्रभावित हुआ।

—प्रहलाद राय केड़िया

you have under taken a work that is a pleasure & admirsation to observe, it will prosper because I see that you and your staff are dedicated to this task

John all an simtls fulfright professor
- Las angels california, America



प्राचीन उदयपुर जैसे शहर के बीच पुराने मकानों में महिला-मंडल-नव जीवन का अच्छा प्रयोग कर रहा है। राजस्थान में हरिजन, भील, मीना जैसे स्त्रियो की स्थिति बहुत पिछड़ी हुई है। इनको सुधारने का भगीरथ प्रयत्न श्रोत्रिय दम्पति कर रहे हैं।

—लक्ष्मीदास म श्रीकान्त
कमिश्नर सिड्यूल, कास्ट और सिड्यूल ट्राइब्स
भारत सरकार न्यू दिल्ली

हम आपकी सफलता चाहते हैं।

—मिलोस्लाव क्रासा

We will never forget the beautiful city of Udaipur where we have met so many friends

—Checko stavakia.

Simplicity sincerity and service are the triple keynotes of the Mahila Mandal. I nave been surprised and delighted by my visit . surprised because such a venture of faith deserves to be more hirdely known, and delighted not only by the fruitful service that is evident but also by the promise of yet more service in the future.

—L Winifred Bryce.

मैने आज महिला-मण्डल का स्थान व कार्य प्रणाली देखी। कार्य बड़ी लगन व कुशलता पूर्वक सपादित किया जारहा है। इससे स्त्रियो मे जागृति व विद्या प्रेम पैदा हुआ है। यह कार्य-कर्ताओ के त्याग पूर्वक सेवा का फल है।

—लालसिंह शक्तावत
चीफ रेवेन्यू आफिसर, मेवाड राज्य

मण्डल ने विगत वर्षों मे मातृ-जाति की हर क्षेत्र में साधना पूर्वक सेवा की है यह सर्वविदित है। मण्डल अपने सर्वतोमुखी विकास पथ पर अग्रसर होता हुआ मातृजाति की उन्नति के अपने लक्ष को प्राप्त करने मे सफल हो।

—श्री फूलचन्द अग्रवाल
मत्री, राजस्थान खादी विकास मण्डल
गोविन्दगढ, मलिकपुर, जि० जयपुर

पिछले कुछ वर्षों से महिला-मण्डल ने जो अभूत पूर्व प्रगति की है उसका श्रेय एकमात्र आपको है। मेरी शुभ कामनायें आपके साथ सदा रहेगी।

—श्रीनाथसिंह
भू० पू० सम्पादक 'दीदी' इलाहबाद

आपके जीवन के त्याग व तपस्या का यह प्रदीप सदैव प्रकाशमान रहे, प्रचूर शक्ति के साथ ऐसी ही मेरी भगवान से प्रार्थना है।

—तेजसिंह कोठारी, कलकत्ता

जिस पवित्र और आवश्यक भावना को लेकर इसके कार्यकर्त्ता इसे अपनी अमूल्य सेवाये प्रदान कर रहे हैं वे सराहनीय है। इस समय नारी जागृति की परम आवश्यकता है, विशेष कर जबकि राजस्थान इस विषय मे बहुत ही पीछे है। अत उसकी इस तरह प्रणाली शीघ्रातिशीघ्र आगे बढे यह वाछनीय हैं।

—रामदेव चोखानी

राजस्थान की सुप्रसिद्ध सस्था महिला-मण्डल आर्थिक सहायता हेतु सारे राजस्थान मे सांस्कृतिक कार्यक्रम का प्रदर्शन करती हुई जोधपुर मे आई। यह सस्था बहुत पुरानी है। और नारी जागृति के कार्य मे इस सस्था का उल्लेखनीय सहयोग रहा है। विशेषकर मेवाड़ जैसे क्षेत्र मे मेरा इस संस्था से और श्रोत्रियजी से पुराना सम्बन्ध रहा है। आशा है इनका यह साहसिक प्रयोग दूसरी सार्वजनिक सस्थाओ को भी प्रेरणा देगी। ऐसे प्रयोग से सस्था का जनसम्पर्क भी बढ़ता है। मैं इस राष्ट्रीय सस्था की दिनो दिन विकास की शुभकामना करता हूँ।

—राजेन्द्रशंकर भट्ट
निदेशक, जनसम्पर्क विभाग, राजस्थान राज्य, जयपुर

सस्था की इतनी तीव्र प्रगति का श्रेय आपको ही है। मेरी शुभकामनाएँ स्वीकार करें।

—अचलराज लोढ़ा, कलकत्ता

आप दोनो महान् हैं। यह महान् यज्ञ सर्व भाति निर्विघ्न सफल हो, बस यही मेरी शुभकामना है।

—महेन्द्रसिह ठाकुर
सखन, म० प्र०

अपने जीवन का बहुत बड़ा भाग महिला-मण्डल को अर्पित कर मातृ-जाति के जागरण व उत्थान का जो विशाल कार्य किया है वह प्रशसनीय है। महिला-मण्डल अपनी प्रवृत्तियो मे दिनोदिन उन्नति करे यही मगल कामना है।

—राधाकृष्ण कानोड़िया, कलकत्ता

ऐसे शुभ और पुनीत कार्य मे किसकी सहानुभूति नही होगी ? परम पिता आपके मण्डल को उत्तरोत्तर उन्नत करे।

—श्री खेमचन्द्र चौधरी, भागलपुर



वास्तव मे मानव समाज का पुनरुत्थान करने की आधार शिला के रूप में सुव्यवस्थित, सुसचालित एव शुद्ध सस्कारो से परिपूर्ण महिला-मण्डल का अस्तित्त्व ही लडखडाते हुए मानव समाज की आशा का प्रतिष्ठान है। मानव का विकास अनन्तकाल से मातृ भावनाओ से सिंचित परम्पराओ ने किया हैं और आज भी इसी प्रकार माता ही वीरो, विद्वानो सन्तो, दार्शनिको और वैज्ञानिको आदि का सृजन, लालन-पालन एव उद्‌बोधन करती रहेगी। उदयपुर का महिला-मण्डल उक्त आदर्शो की ओर अग्रसर होता हुआ अपने अस्तित्त्व की सफलता को सिद्ध करे ऐसी मेरी हार्दिक कामना है।

—जगन्नाथसिंह मेहता,
शिक्षा सचिव (राज०)

उदयपुर महिला मण्डल की प्रवृत्तियो के लिए मेरी शुभ कामना है।

—श्रीमती इन्दुमती चिमनलाल
भू० पू० शिक्षा एव समाज कल्याण मत्री, गुजरात राज्य

मातृ जाति के उत्थान एव शैक्षणिक विकास की दिशा मे आपकी सस्था जो उपयोगी सेवा कार्य कर रही है वह सराहनीय है।

—काशीप्रसाद मोदी, जनरल मेनेजर
रुबी जनरल इन्श्योरेन्स कम्पनी लि०, कलकत्ता

समय समय पर जब हम इस बात से अवगत होते हैं कि आप द्वारा सस्थापित, पालित और पोषित महिलाओ की सर्वश्रेष्ठ सस्था महिला-मण्डल, उदयपुर दिन प्रतिदिन तरक्की कर रही है, तब तब आपकी कठोर साधना के प्रति हम नतमस्तक हो जाते हैं।

प्रजासेवक तो आपके जन कल्याणकारी प्रत्येक कार्य मे पहिले से ही सहयोग देता रहा है और आगे भी सदा देता रहेगा।

—अचलेश्वरप्रसाद शर्मा
प्रजासेवक, जोधपुर

उदयपुर महिला-मण्डल ने स्त्रीशिक्षा की दिशा मे सराहनीय काम किया है।

—श्री शिवशकर, आई ए एस

यह सब आपके अथक परिश्रम एव दृढता का फल है। मुझको ही नही परन्तु हर एक राजस्थानी को आप पर गर्व होना चाहिए।

—श्री जसवन्तसिंह मेहता
कलकत्ता



राजस्थान के सामाजिक जीवन में इस सस्था ने प्राण फूके हैं। राष्ट्र निर्माण के महायज्ञ में भावना और सदाकाक्षाओ सहित समाज कल्याण परिवार सदैव आप लोगो के मध्य उपस्थित रहेगा, यह विश्वास रखें।

—श्री महावीर अधिकारी
सपादक—'समाज कल्याण' नई दिल्ली

महिला मण्डल के इसी प्रकार उत्तरोत्तर उन्नति और विकास के लिये मेरी शुभ कामनाए स्वीकार करें।

—उमाशकर
कानपुर

मण्डल दिन-रात उन्नति करे और देश की वर्तमान परिस्थितियो मे सहायक हो, यह मेरी शुभ काममनाएं है। मैं मेरे एक परिचित लेखक से उनकी कृतिया भिजवा रहा हूँ।

—शुकदेवप्रसाद,
सुहागपुर

मण्डल का भावी जीवन और अधिक ज्योतिर्मय हो, ऐसी कामना करता हूँ।

डॉ० जी० एन० तिवारी,
रीडर हिन्दी विभाग, गोरखपुर युनिवर्सिटी

आपके द्वारा आयोजित समस्त कार्यक्रम सफल हो।

—भीष्म चौहान
भोपाल (म० प्र०)

मेरी शुभकामनाएँ आपके साथ हैं।

—विष्णुप्रभाकर
दिल्ली

आप लोगो का ध्येय और कार्य बडा ही सराहनीय है। ईश्वर करे यह उत्तरोत्तर आगे बढे।

—हरिराम गुटगुटिया, वकील
पटना

मण्डल ने अपनी प्रवृत्तियो द्वारा राष्ट्र की जो सेवा की है, उसके लिए हम सब कृतज्ञ हैं।

—डॉ० मडन मिश्र
निर्देशक, सस्कृत विद्यापीठ, दिल्ली

महिला-मण्डल उदयपुर की सर्वमुखी शैक्षिक सेवाओं से मैं अच्छी तरह परिचित हूँ। सस्था का कार्य नारी जीवन को प्रकाश देने मे पूर्णत. सफल है। सस्था और उसके उज्जवल भविष्य के लिए मेरी शुभकामनाएँ साथ हैं।

—दामोदरलाल जैपुरिया
ससद सदस्य



ऐसी संस्थाओं द्वारा महिलाओं का विकास होकर उनमें राष्ट्रीय चेतना एव ऐतिहासिक प्रवृत्ति जागृत हो सकती है।

—काका 'हाथरसी',
उत्तर प्रदेश

मैं कामना करता हूँ कि यह संस्था अपने लक्ष्य की प्राप्ति मे सफल हो।

—मोहनलाल कटोतिया,
अध्यक्ष, अ० भा० तेरापथी महासभा, नई दिल्ली

महिला-मण्डल अपने क्षेत्र मे समाज की जिस प्रकार से सेवा करता आ रहा है, इसके लिये महिला-मण्डल के संचालकगण वास्तव मे बधाई के पात्र हैं।

—फूलचन्द्र जैन
प्रधानमत्री, राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी, जयपुर (राज०)

मैं अत्यत हर्षित हूं कि आपका महिला-मण्डल दिनोंदिन प्रगति के पथ पर अग्रसर हो रहा है।

—श्री अर्जुन चोखानी
चुरू

मैं अपनी हार्दिक शुभकामना तथा सस्था की द्रुतगति से प्रगति की सद्भावना भेजता हूं। इसे स्वीकार करें।

—गौरीशकर
कन्या पाठशाला, तिमसुकिया, असम

महिला-मण्डल की उत्तरोत्तर प्रगति हो व आपके प्रयास से यह प्रतिष्ठान राजस्थान की प्रमुख शिक्षण सस्थाओ मे अग्रणी हो पाए तो मुझे बडी प्रसन्नता होगी।

—लक्ष्मीनिवास झुनझुनवाला
कलकत्ता

आपकी सस्था द्वारा महिला समाज की सेवा सराहनीय है। आपने उनके शैक्षणिक विकास मे जो कार्य किया है, वह अभूतपूर्व है। मैं सस्था की सफलता की कामना करती हूँ।

—श्रीमती ओ० जोशी
उपसचालिका प्रा० व मा० शिक्षा, उदयपुर, कोटा रेंज

महिला-मण्डल को एवं मेवाड़ को नया बल मिले। मातृ-जाति की सेवा का पथ प्रशस्त बने, यही 'कामना है।

—विद्याभूषण चितामणि
कलकत्ता

The highest form of knowledge, according, to Hindu philosophy is seeing God in the whole universe as a single entity holding the universe as his body and rendering his worship by serving his creatures. In the present day consructive service to the community and readiness to defend its freedom its democracy, its culture and institutions is necessary She must become a good citizen and above all a good human being. I hope that there ideals are followed in the school run by the Mahila-Mandal.

—**Shri M. Ananthasayanam Ayyangar, Ex Governor of Bihar**

महिला-मण्डल उदयपुर के ३४ वें स्थापना-दिवस के अवसर पर मैं अपनी शुभ-कामनाएं भेजता हू। इस सस्था ने पिछले ३४ वर्षों मे जो उपयोगी कार्य किया है। उसका विवरण मैं पढ चुका हूं और देश के अनेक नेताओ अथवा विद्वानो ने उस कार्य की मुक्त-कठ से जो प्रशसा की है, उसे भी मैंने जान लिया है। मेरे जैसे साधारण सेवक की सम्मति का भला क्या मूल्य हो सकता है।

मेरा विश्वास है महिलाएं-माताएं बहनें और बेटिया ही ससार को स्वर्ग बना सकती है। पुरुष वर्ग तो प्राय फैल हो चुका है। महिलाओ की प्रत्येक सजीव सस्था मे ऐसा वातावरण उत्पन्न करना चाहिये जिसमे अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण के विकसित होने मे भरपूर सहायता मिले।

—बनारसीदास चतुर्वेदी

महिला-मण्डल उदयपुर देश की एक ऐसी महान् नारी जागरण की सस्था है कि जिस पर हम सबको बडा गौरव है। श्रोत्रिय-दम्पति और इनके सत्प्रयत्नो का परिचय मुझे बहुत वर्षो से है। उन्होने अपनी लगन और तपस्या मे इस सस्था मे अनेक प्रवृत्तियो को चालू करके उदयपुर को राजस्थान की उन्नति का एक बडा भारी केन्द्र बना लिया है।

मैं इस स्थापना-दिवस पर इस सस्था को इसके छात्र-छात्राओ और ट्रेनिज को तथा इनके सचालक को बधाई देता हू और पुनरपि अपील करता हूँ कि इस सस्था को सबका प्रोत्साहन तथा सहयोग मिलना चाहिये।

—गोपीकृष्ण विजयवर्गीय

इस सब सफलता के पीछे श्रोत्रियजी का दृढ सकल्प एव उनके साथियो का कठोर परिश्रम है। मैं इस उपयोगी महिला शिक्षण सस्था के सम्पर्क मे हू। महिला जाग्रति के कार्य मे सस्था का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है।

—श्री हीरालाल देपुरा, राज्य मन्त्री
जनसम्पर्क एव गृह विभाग, राजस्थान

"मण्डल" के चोतीसवें स्थापना-दिवस के समारोह का आमन्त्रण प्राप्त हुआ। महिलाओ के सर्वोतमुखी विकास की दिशा मे महिला-मण्डल का एक सुन्दर योगदान रहा है। सस्था ने अपने लक्ष्य के अनु-



रूप अपनी विविध प्रवृत्तियो द्वारा वास्तव मे राष्ट्र की जीवन-ज्योति नारी के जागरण के लिये बहुत कुछ किया है। समारोह की सफलता के लिये अपनी आन्तरिक कामना के साथ।

—गो० श्री व्रज भूपणलालजी महाराज

सास्कृतिक कार्य-क्रमो के द्वारा प्रान्त भर मे आपने जहा एक ओर कला की आदर्शता का प्रसार किया है, वही दूसरी ओर महिला समाज कल्याण की उन्नति के लिये आपका यह अशभियान प्रसनीय रहा। मुझे विश्वास है, आपके कुशल निदेशन व अथक प्रयत्नो से यह सस्था निरन्तर प्रगति पथ पर अग्रसर होती रहेगी। शुभ-कामनाओ सहित।

—वृहस्पतिदेव पाठक ज० मैं० श्रीरामरेयन्स, कोटा

यह बडी प्रसन्नता और सतोष की बात है कि इसके द्वारा ३५ वर्ष तक सफलतापूर्वक देश की महिलाओ की सेवा हुई। मेवाड़ तो सदा से ही स्त्रियो की वीरता और आत्मत्याग के लिये प्रसिद्ध रहा है और मैं यही आशा कर सकता हूँ कि वहा की नारिया स्वतन्त्र भारत मे इतने ही साहस और कुशलता से कार्य करेंगी, जिस प्रकार से उन्होंने सदा से ही स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिये किया है।

मेरी शुभ कामना है कि महिला-मण्डल की उपयोगिता दिन-प्रतिदिन बढे और अधिकाधिक महिलाए इसके द्वारा दिन प्रतिदिन लाभ उठावें और अपने समाज की उन्नति मे सहायक हों।

—श्री प्रकाश
भू० पू० राज्यपाल, बम्बई

जिस उत्साह से इस सस्था की स्थापना की गई उसी उत्साह से महिला-मण्डल के कार्यकर्त्ताओं ने आज ३४ वर्ष तक बडी लगन से कार्य कर महिलाओ के शिक्षण क्षेत्र मे प्रगति की है। यह इस संस्था के चालकगणों के लिये स्पृहनीय है।

महिला-मण्डल का यह महोत्सव पूर्णतया सफल हो और उसकी दिन व दिन प्रगति होकर वह एक आदर्श सस्था सिद्ध हो, यह मेरी कामना है।

—ह० वि० पाटस्कर
भू० पू० राज्यपाल, मध्यप्रदेश

आज मैंने महिला-मण्डल का अवलोकन किया। सस्था अपनी अनेक प्रवृत्तियो द्वारा राजस्थान का बडा ही हित साधन कर रही है। मैं इसकी सादगी और अपूर्व सेवा, कार्यशीलता से बड़ा प्रभावित हुआ। परमात्मा से यही प्रार्थना है कि यही प्रार्थना है कि यह सस्था भविष्य मे और भी उन्नत हो और राजस्थान में इनी-गिनी महत्त्वशाली सस्थाओं मे सदा उसकी गिनती होती रहे।

—प्रह्लादराय केड़िया

I had an opportunity to day tō go round the Manila Mandal, Udaipur Its programme is interesting. I wish the institution very success in its efforts

—G. Gopal Krishnan
Director, State Council of Educational
Research & Training.
Andhra Pradesh, Hyderabad-4

यह सस्था महिला शिक्षा के लिये महत्वपूर्ण कार्य कर रही है। यह कार्य महिलाओ को विशेष प्रकार का प्रशिक्षण देने के लिये अधिक लाभकारी है। मुझे पूरी आशा है कि यह सस्था आगे चल कर महिलाओ के लिये बहुत ही उपयोगी सिद्ध होगी।

—अ० नदा
प्राचार्य, राज्य शिक्षा सस्थान, दिल्ली

It was a matter of great pleasure and privilege for me to come to the Mahila-Mandal (H. S. School for girls) Udaipur and go round the school Gareat missionory work is being done in this institution.

—Ghulam Rasul Azad
Director of Education,
J. & K. Govt. Shrinagar (Kashmir)





प्रान्तीय प्रतियोगिताओं की अनेक वैजयन्तियों के साथ विजेता छात्राएं और प्रशिक्षक

कुमारी चमेली



भाला-फेंक

कुमारी सुन्दर



भाला-फेंक

कुमारी अवन्ती



लम्बी व ऊंची कूद

कुमारी गंगा



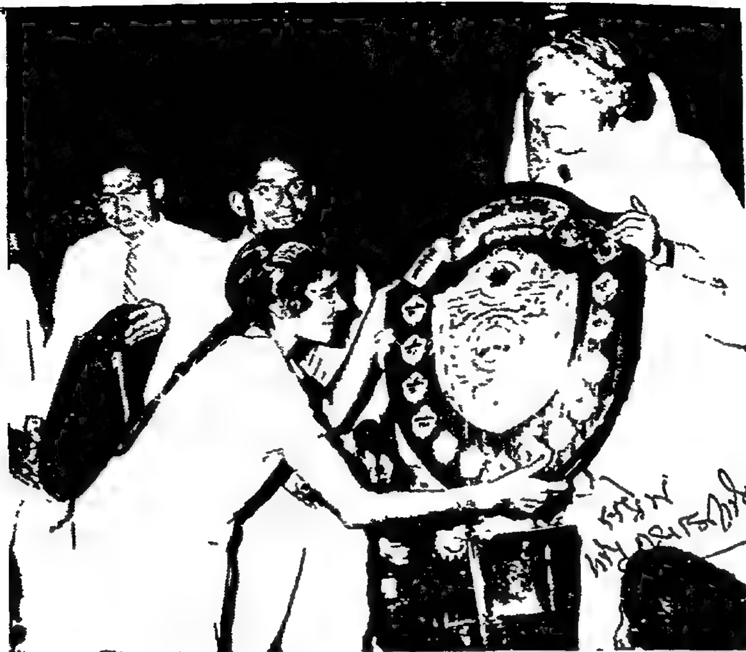
दौडे



नैतिक और आध्यात्मिक चेतना के अग्रदूत संत तुकडोजी महाराज ने मण्डल की प्रवृत्तियों को अपना आशीर्वाद दिया



राजस्थान के प्रथम मंत्रीमण्डल में मंत्री श्री रघुवरदयाल गोयल के साथ श्री दयाशंकर श्रोत्रिय



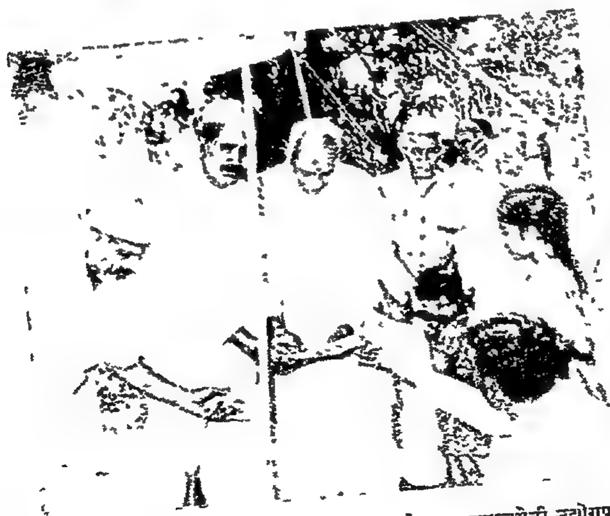
वालीवाल की कप्तान कुमारी सुन्दर को 'वैजयन्ती' भेंट करते हुए श्रीमती विजयालक्ष्मी पण्डित



राज्यपाल महोदय के साथ छात्रा कुमारी सुन्दर : भारत की सर्वश्रेष्ठ छात्रा खिलाड़ीका गौरव



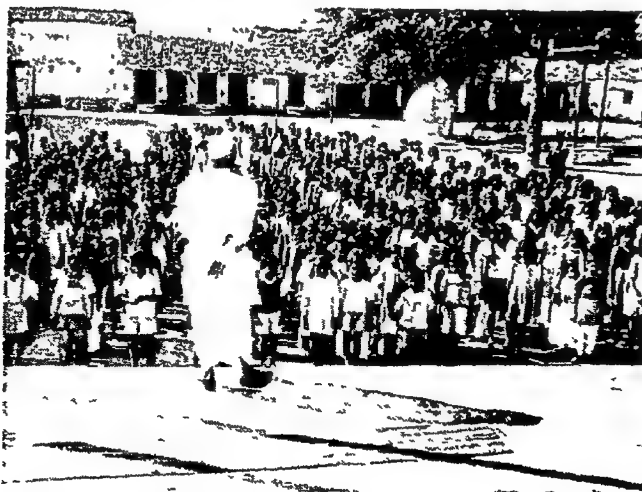
महिला मण्डल में वृक्षारोपण करते हुए दिवंगत मुख्यमंत्री श्री जयनारायण व्यास



कस्तूरबा-छात्रालय-भवन का शिलान्यास करते हुए समाजसेवी उद्योगपति
श्री भागीरथ कानोडिया



वरार-केसरी श्री ब्रजलाल वियाणी



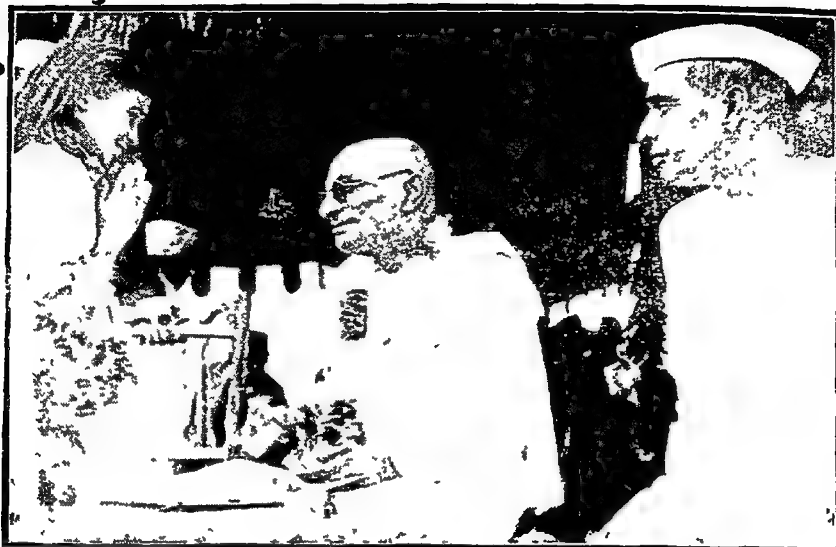
छात्र-परिवार को संबोधित करते हुए पं. दयाशंकर श्रोत्रिय



महिला-मण्डलकी रजत-जयन्ती पर आशीर्वाद देते हुए अजमेर राज्य के भूतपूर्व मुख्यमंत्री श्री हरिभाऊ उपाध्याय



प्रांतीय महिला-शिविर संस्था का आयोजन



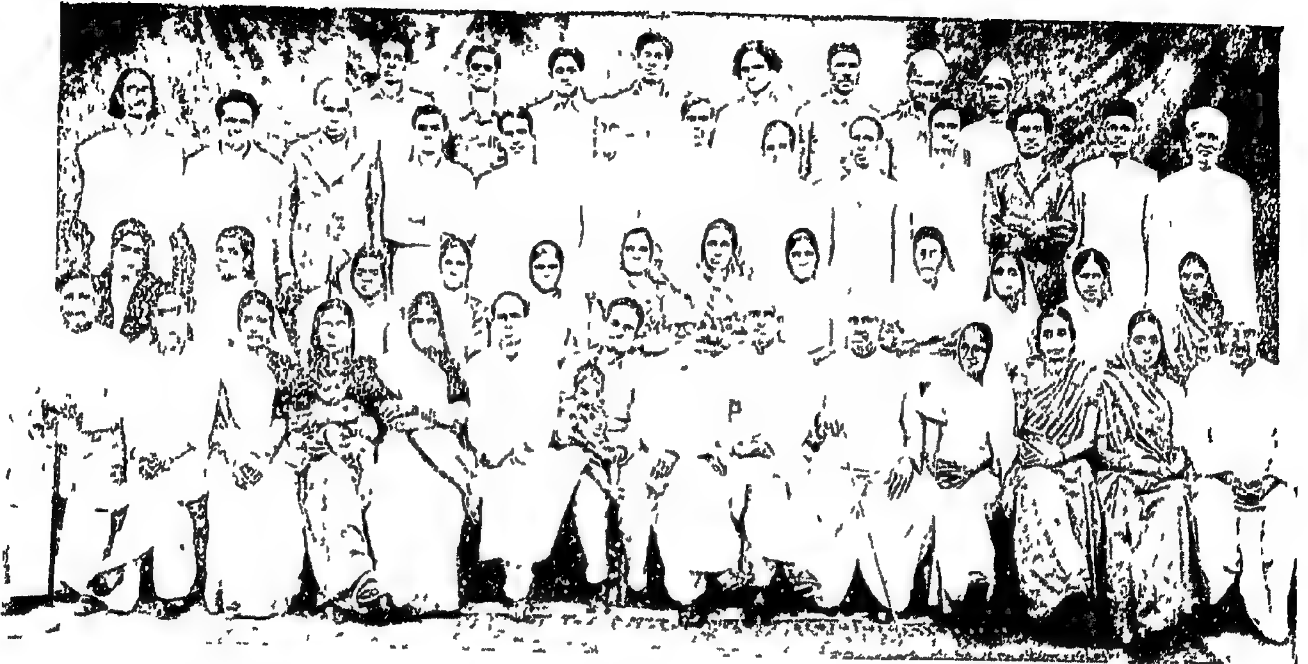
चक्रवर्ती श्री सी राजगोपालाचार्य का स्वागत - साथ में लोकनायक श्री माणिक्यलाल वर्मा



संस्था की बहिनों के साथ श्रीमती कमलादेवी चटोपाध्याय



मध्यप्रदेश के लोकप्रिय नेता श्री कन्हैयालाल खादीवाला, कार्यकर्ताओं को सम्बोधित करते हुए—



महिला-मण्डल कार्यकारिणी के सदस्यो तथा मण्डल-परिवार के साथ तत्कालीन अध्यक्ष वैद्यरत्न पं भवानीशंकर शर्मा और संचालक श्री दयाशंकर श्रोत्रिय

दयाशंकर श्रोत्रिय

एक संघर्षशील जीवन का इतिवृत्त



श्री दयाशंकर श्रोत्रिय

(एक विशिष्ट समाजसेवी के सघर्षशील और सेवा-रत जीवन का इतिवृत्त)

उनके सक्रिय जीवन के कम से कम चालीस वर्ष समाज की बहिर्मुखी सेवाओ में बीते और उनकी यह साधना आज तक चल रही है।

वे राष्ट्रीय स्वतन्त्रता-आन्दोलन के सेनानियो को अग्रिम पक्ति के प्रमुख सहयोगियो में से रहे और सामन्ती हकुमत के आदेशो पर जेल यात्राए की। उन्होने बडे खतरे उठा कर गुप्त रूप मे क्रातिकारियो के महत्वपूर्ण कार्य पूरे किये। उन्होने गाव गाव जाकर स्वतत्रता, सस्कृति और स्वाभिमान की चेतना जगाई और निर्धनता तथा अज्ञान से घिरे क्षेत्रो मे स्वास्थ्य, सम्पन्नता और खुशहाली बांटने के महत्वपूर्ण कार्यक्रम संपन्न किये। उन्होने स्वदेशी भावना और खादी का प्रचार किया, गाँधी-दर्शन का प्रसार किया और आचार्य विनोबा जैसे युगांतकारी सदेशवाहको की आकांक्षाओ की पूर्ति मे योगदान किया।

उन्होने प्रौढो और किशोरो, शहरी-ग्रामीण और आदिवासी क्षेत्रों, विशेषकर राष्ट्र के महिला-जगत के शिक्षण और सर्वतोमुखी विकास का भगीरथ प्रयत्न किया।

महिला-मण्डल के सस्थापक श्री दयाशकर श्रोत्रिय का सेवा-कार्य अनेक क्षेत्रों में फैला हुआ है। वे अनेक व्यवसायो और कार्यक्रमो में होकर गुजरे है और उन्होने राष्ट्र के हर क्षेत्र तथा समाज के हर वर्ग से अपने सीधे और आत्मीय सम्बन्ध स्थापित किये है।

राजनैतिक दल के प्रभावी सदस्य तथा जिला-सगठन के अध्यक्ष पद पर वर्षों रहकर भी वे किसी राजनैतिक महत्त्वाकाक्षा से दूर रहे। ससद या विधान सभाओ के आकर्षण ने उन्हें कभी नही बाधा। उन्होने एक सामान्य, भीड में घुले मिले समाज-सेवी के रूप में नागरिक जीवन, विशेषकर नारी-जीवन को हर दृष्टि से समर्थ बनाने का ही सकल्प लिया और एकमात्र यही ध्येय लेकर निरन्तर चलते रहे। प्रशसा, पुरस्कार और प्रमाण-पत्र जिन कार्यों पर दिये जाते है, उस कसोटी पर आज उनके पास भी बहुत कुछ हो सकता था, लेकिन इसकी उन्होने कभी कामना नही की।

अकेला 'महिला-मण्डल' ही ऐसा एकमात्र प्रमाण है जो सामाजिक जीवन को उनका ऐतिहासिक योगदान बनकर खड़ा है। इस सस्था के ३५ वर्षों के कार्यकाल की उपलब्धियां भी कम महत्त्वपूर्ण नही हैं।

महिला-मण्डल के जन्म और विकास की कहानी शिक्षाविदों और समाजवादियो के लिये एक दिलचस्प अध्ययन है। और उतना ही सघर्षमय, किन्तु सफलित जीवन रहा **श्री दयाशंकर श्रोत्रिय का—**



जन्म—

राजस्थान का प्रमुख कस्बा भीलवाड़ा उनका जन्म–स्थान बना। वे स १९६० की शरदपूर्णिमा को जूनावास छीपो के मुहल्ले मे श्री गौरीशकर श्रोत्रिय (पूर्व नाम कजोडीमल श्रोत्रिय) के घर जन्मे। उनकी माता का नाम गेन्दी बाई था, जो भीलवाडा के पश्चिम मे लगभग तीन कोष दूर स्थित 'पुर' गाव की पुत्री थी। अपने बाल्यकाल मे ही वे अपने ताऊ श्री गगाधर श्रोत्रिय के घर गोद चले गये जहा वे श्रीमती एजीबाई के दत्तक पुत्र बने।

उनके पर दादा श्री पुष्करजी श्रोत्रिय एक प्रकाण्ड ज्योतिषाचार्य की प्रतिष्ठा मे विख्यात थे। उनके पाच पुत्रो मे से तीन पुत्रो ने अपने अपने क्षेत्र मे विशेष दक्षता प्राप्त की। उनमे से एक श्री रामलाल जी, (दयाशकर श्रोत्रिय के दादा) विद्याध्ययन के लिये ११ वर्ष ज्ञान केन्द्र बनारस मे रहे और ब्राह्मणत्व के परम्परागत पाण्डित्य को प्राप्त किया।

शीघ्र ही श्री रामलालजी के पाण्डित्य के चमत्कार-प्रदर्शन का एक ऐसा अवसर हाथ आया जिसने श्रोत्रिय-परिवार के जीवन की धारा ही बदल दी।

दादा का पाण्डित्य—

मध्यभारत के सोंखेडा ठिकाने के ठाकुर के पुत्र की बरात भीलवाडा होते हुए आकोला की पुत्री को ब्याहने जा रही थी। सामन्ती ठाठ-बाट से लैस इस बरात ने भीलवाड़ा मे थोडा विश्राम किया। पास ही, नागौरियो के बाग मे पण्डित रामलाल श्रोत्रिय का सस्वर सन्ध्या वन्दन चल रहा था। उनका स्वर बडा मधुर था और वे तन्मय होकर तथा ऊँचे स्वर से मत्रोच्चारण किया करते थे। ठाकुर के कानो मे मधुर शास्त्रोक्त स्वर गूजा तो उन्होने तुरन्त पण्डितजी से भेंट की। ठाकुर सा० उनकी विद्वता से बडे प्रभावित हुए और उन्हे तुरन्त बरात के साथ ले लिया। आकोला के विवाह सस्कार मे उन्हे कुल-गुरु जैसा सम्मान दिया गया। लौटती बार भी ठाकुर सा० ने उन्हे नही छोडा। वे पण्डिजी को अपने साथ सोखेडा ही ले गये और उन्हे राज्य-पण्डित के सम्मान से मण्डित करके अपने पास रख लिया।

समय पाकर ठाकुर सा० पर पण्डितजी की प्रतिभा का प्रभाव बढता ही चला गया। राजमहलो में ही उनका आवास था। पण्डितजी भागवत की कथा करते तो ठाकुर सा० घण्टो बैठे रहते। इतना ही नहीं, भागवत पाठ की समारोहिक समाप्ति के अवसर पर ग्रन्थ और कथा-वाचक (प रामलाल श्रोत्रिय) की जब शोभा-यात्रा निकलती तो ठाकुर सा० स्वय पण्डितजी की डोली को अपना कन्धा देते।

ऐसे प्रकाण्ड पण्डित रामलालजी के दो पुत्रो मे से एक श्री कजोड़ीमलजी (गौरीशकरजी) श्री दयाशकर श्रोत्रिय के पिता थे जिनका हाल ही मे देहावसान हुआ है। वे स्वय एक अच्छे गायक थे और कविता भी करते थे। श्री दयाशकर श्रोत्रिय के दो सगे भाइयो मे एक श्री भवानीशकर का देहावसान १८ वर्ष की अल्पायु में हो गया। वे भी बनारस में पढे थे। दूसरे भाई श्री इच्छाशकर श्रोत्रिय इन दिनो मध्यप्रदेश शासन के शिक्षा विभाग मे इन्सपेक्टर ऑफ स्कूल के पद पर रहे और हाल ही मे अवकाश ग्रहण किया।



परम्परागत शिक्षण—

श्री दयाशकर श्रोत्रिय के दादा के एक भाई श्री सुखदेवजी की शिक्षा—सेवा का भी ऐतिहासिक महत्त्व रहा है। उनका जीवन भीलवाडा में निर्धन—छात्रो को ज्ञान-दान करने मे ही बीता। उनकी तथा उनके छात्रो की दिनचर्या तत्कालीन शिक्षा—सेवा का एक दिलचस्प उदाहरण प्रस्तुत करती है।

समीपवर्ती गावो के निर्धन—परिवारो के ब्राह्मण बालक प० सुखदेवजी को अपना गुरू बनाते तो गुरू का घर ही उनका छात्रावास भी बन जाता। तब इतने बडे छात्र—परिवार के भरण-पोषण की समस्या यो हल होती कि पण्डितजी उन छात्रो को भी अपने साथ भिक्षा-वृत्ति के लिये ले जाते। उसी आटे से विद्यार्थी स्वय अपना खाना बनाते और खाते, और शेष समय अध्ययन में लगाते। उन दिनो छापेखानो का इतना प्रसार नही था और अधिकाश ज्ञान गिनी-चुनी पाण्डुलिपियो में सुरक्षित था। प० सुखदेवजी छात्रो को पढाते भी और छात्र को पाडुलिपि या पुस्तक देकर उसकी नकल भी करवाते। छात्र पहले पुस्तक की नकल करता फिर पण्डितजी के समक्ष बैठकर उसकी भूलें सुधारता। इस प्रकार छात्र उस पुस्तक का समुचित ज्ञान भी प्राप्त कर लेता और उपयोग के लिये एक अतिरिक्त पुस्तक और तैयार हो जाती। कर्मकाण्ड, ज्योतिष, व्याकरण, दर्शन आदि सभी क्षैत्रो में उनकी गहरी पकड थी। उनका गंभीर प्रवचन एक तहखानानुमा शात कमरे मे होता। यो वे सदैव छात्रो के बीच बने रहते और अन्य कार्यों के साथ भी शिक्षण चलता रहता।

सोखेडा (मध्यभारत)

जैसा कि पहले बताया गया, श्री दयाशंकर श्रोत्रिय भीलवाडा मे जन्मे और लगभग तीन वर्ष की आयु के बाल्यकाल मे ही अपने ताऊ (पिता गौरीशकर श्रोत्रिय के भाई) श्री गगाधर श्रोत्रिय के घर गोद चले गये। उनके दादा राज्य-पण्डित होकर सोखेडा (मध्यभारत) मे बस चुके थे और प० गगाधर भी तब सोखेडा ही रहते थे। इस प्रकार श्री दयाशकर श्रोत्रिय ३ वर्ष ही अल्पायु मे ही भीलवाडा (राजस्थान) छोडकर सोखेड़ा (मध्यभारत) जा बसे।

सोखेडा तत्कालीन ग्वालियर राज्य का एक प्रतिष्ठित ठिकाना था जिसकी वार्षिक आमदनी लगभग २ लाख रुपया थी। इस समय तक सोखेडा के अतिरिक्त बरखेड़ी, काजूखेडा, बोरखेड़ा और राकोदा आदि के राज-परिवार और पिपलोदा स्टेट भी प० रामलालजी को अपना राज्ज पण्डित स्वीकार कर चुके थे।

श्री दयाशकर श्रोत्रिय के जीवन सस्कारो का निर्माण सोखेडा की भूमि पर ही हुआ। दादा और दादी ने उन्हे माता और पिता से भी अधिक स्नेह दिया। राज—परिवार में भी बाल—श्रोत्रिय को अपार स्नेह मिला। वे राज-परिवार से लेकर सामान्य नागरिक तक सभी के स्नेह भाजन बने। राज परिवार में मेवाड के ठिकानो से ब्याही गई ठकुरानियो ने भी उन्हे बडा स्नेह दिया। अगाध प्रेम की छाया में किलकारिया करते बालक श्रोत्रिय पर सोखेड़ा की रम्य प्रकृति का भी बड़ा जोरदार प्रभाव पड़ा। सुरम्य

नदी तट पर बसा गाव, नदी के पानी में अपना प्रतिबिम्ब डालते राज-महल, उद्यान, लम्बे और हरे खेत, फल-फूलदार वृक्ष, सोंखेड़ा के जीवन की श्रोत्रियजी को आज भी याद आती है तो वे भाव विभोर हो उठते है।

विद्याध्ययन का श्रीगणेश–

स्वय दादाजी ने ही श्री दयाशकर श्रोत्रिय के विद्याध्ययन का श्रीगणेश किया। वे उन्हे सदा अपने आत्मीय स्नेह की छाया मे रखते और हसते-बोलते ही उन्हे प्रारम्भिक पाठ भी सिखाते चलते। दिन मे वे लकडी की पाटी पर उन्हे वर्णमाला तथा हस्तलेख का अभ्यास कराते। रात को उनकी मौखिक कक्षाए चलती। शुद्ध उच्चारण तथा शुद्ध और सही लेखन पर वे सबसे अधिक ध्यान देते। शीघ्र ही गणित के पहाडे और उनके श्लोक आदि उन्हे कठस्थ हो गये और उनका अध्ययन गति पकडने लगा। दादा के पास गाव के अन्य बच्चे भी पढने आते थे लेकिन वे सब राज-परिवार या उससे समबद्ध कुलीन कहे जाने वाले घरानों के ही बालक थे। राजपूतों और जी हुजूरियो की इसी बाल–मण्डली का साथ उन्हे मिला। सामान्य परिवारो के बालको से उसका मेल उस समय नही हो पाया।

इन्ही बालको के साथ वे पढते, नहाते, घाटियो पर चढते और प्रकृति की गोद में किलकारिया, करते। दस वर्ष की आयु तक उन्हे अनेक ग्रथ कठस्थ थे, सैकडों श्लोको का वे अजस्त्र सस्वर पाठ करते थे। नित्य नया सीखने का अतीव उत्साह उनके मन में सदैव बना रहता था।

अन्त्याक्षरी-प्रतियोगिता–

उनकी स्मरण-शक्ति और वाक्–पटुता का एक उदाहरण पर्याप्त होगा।

दादाजी के निमन्त्रण पर भानपुरा (मध्य प्रदेश) के तत्कालीन जगद्गुरू शकराचार्य एक दिन सोखेडा आये। जगद्गुरू के साथ ज्ञानी पण्डितो और शिष्यो का समूह था। नदी-तट पर उन्होने निवास किया।

रात्रि के लगभग आठ-नौ बजे जगद्गुरू शकराचार्य के पण्डित-दल और दादाजी के शिष्य-समुदाय के बीच अन्त्याक्षरी-प्रतियोगिता प्रारम्भ हुई। प्रतियोगिता प्रातः ५ बजे तक चलती रही और जगद्गुरू बडे प्रभावित हुए। उस समय दादाजी के दल का प्रतिनिधित्व चार खिलाडियो ने ही किया। दादाजी, पिताजी स्वय दयाशकर जी श्रोत्रिय और उनके भाई। इस दल मे भी दयाशकरजी का योगदान सर्वाधिक महत्व-पूर्ण रहा। दादाजी और पिताजी ने उन्हे सबसे अधिक अवसर दिये लेकिन वे एक भी बार पराजित नही हुए।

सोखेड़ा-ठाकुर का तुला-दान–

सोखेड़ा के ठाकुर सा० ने एक समय तुला-दान किया और तुला-दान का सम्पूर्ण सोना (ठाकुर सा० के वजन के बराबर) प० रामलाल जी को भेंट कर दिया। लेकिन पण्डितजी ठाकुर सा० की इस दानशीलता से भी आगे बढ गये। उन्होने तुरन्त ही ब्राह्मणों को एक विशाल भोज दिया और



तुला–दान के स्वर्ण को सभी ब्राह्मणों में बाट दिया। यह त्याग और निस्पृहता की एक ऐसी चमत्कार पूर्ण घटना थी जिसका भारी प्रभाव ठाकुर सा० पर पड़ना स्वाभाविक था।

ठाकुर सा० पण्डितजी के इस नि.स्वार्थ तप से इतने प्रभावित हुए कि ५० बीघा कृषि-भूमि और एक कुआ उन्हें प्रदान किये और उन्हे आजीवन ३० रुपये माहवार वृत्ति देने की भी घोषणा कर दी।

दादाजी का ऋण—

दादाजी के सत्कर्मो का, उनके उच्चादर्शो का, उनके पाडित्य का और उनके त्यागमय जीवन का जबर्दस्त प्रभाव श्री दयाशकर श्रोत्रिय के जीवन पर पडा। श्रोत्रिय जी आज जो कुछ भी हैं, उसमे दादाजी का उत्तराधिकार सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है, इसे वे स्वय भी स्वीकार करते हैं।

लेकिन ऐसे सस्कार-दाता दादाजी के जीवन की भी एक सीमा थी। वही दादाजी श्रोत्रियजी को १३ वर्ष की आयु मे ही छोडकर स्वर्गवासी होगये।

अब सोखेडा का भार उनके पिताजी ने सभाला और वे भीलवाडा छोडकर स्थायी रूप से सोखेडा मे ही आ बसे। पिता दोनो स्थानो का कार्य देखते लेकिन सारे परिवार का स्थायी निवास सोखेड़ा मे ही हो गया।

प० दयाशकर श्रोत्रिय को दादाजी से जैसा स्नेह मिला, उसकी पूर्ति उनके पिता नही कर सके। दादाजी के समय वे श्रोत्रिय जी को कुछ कह न पाते लेकिन उनकी मृत्यु के बाद पिताजी की सख्ती धीरे धीरे बढने लगी। उनकी दिनचर्या को लेकर ही उन्हें आये दिन पिताजी की डाट सुनने को मिलती। उन दिनो श्रोत्रिय जी को पढने के लिये जावरा भी भेजा गया जहा वे रामानुजकोट मदिर मे पढते लेकिन वहा भी सस्था-सचालक उन्हे भिक्षा-वृत्ति मे ले जाते। यह कार्य भी उन्हें रुचिकर नहीं था। फिर पिताजी की डाट-फटकार ने भी उन्हे आन्दोलित किया। फल यह हुआ कि एक दिन श्रोत्रिय जी अपने भाई के साथ चुपचाप गाव छोडकर भाग छूटे और सीधे मथुरा जा पहुचे। तब उन्होंने सस्कृत मे प्रथमा श्रेणी तक ही अध्ययन पूरा किया था।

सस्कृत कॉलेज मथुरा—

सयोग था कि श्रोत्रिय जी को तुरन्त ही मथुरा के संस्कृत कॉलेज मे प्रवेश मिल गया। मथुरा में उस समय देश के अनेक राजाओ की ओर से सदाव्रत चलते थे। उन्हे यहा आकर भी सदाव्रत का ही आश्रित होना पडा। साधनहीन निर्धन छात्र और करता भी क्या? तब जिस राजा के सदाव्रत की चिट्ठी मिल पाती, वही भोजन की व्यवस्था हो जाती अन्यथा चने फाककर या रगजी के मदिर का प्रसाद प्राप्त करके पेट की आग बुझानी पडती।

प० दयाशकर श्रोत्रिय ने यही पर प्रथमा की विधिवत परीक्षा दी लेकिन परिणाम घोषित होने से पूर्व ही वे पुन सोखेडा चले आये और उनके भाई अध्ययन के लिये बनारस चले गये। मथुरा में वे करीब

१। सोल रहे। पुनः मथुरा लौटना तो वे चाहते नहीं थे लेकिन विद्याध्ययन वे अवश्य करना चाहते थे। उस समय नयी मा (जहां वे गोद गये) भीलवाडा थी जिनका स्नेह भी उन्हे खीच रहा था। अत पिताजी ने उन्हे भीलवाडा जाने की अनुमति देदी। भीलवाडा आकर उन्होने राजकीय मिडिल स्कूल मे पाचवी कक्षा मे प्रवेश लिया।

अपनी कक्षा मे श्रोत्रियजी आयु की दृष्टि से अपेक्षा कृत बडे थे। सस्कृत के पूर्व–ज्ञान ने यहां उनकी बडी सहायता की और उनकी गणना शीघ्र ही प्रतिभाशाली छात्रो मे होने लगी। वे अच्छे नम्बरों से पास होने लगे। फलस्वरूप उनके प्रति शिक्षको का लगाव भी बढने लगा।

उन्ही दिनो उदयपुर के सस्कृत-पण्डित और कवि श्री गिरिधारीलाल शास्त्री सस्कृत-शिक्षक होकर भीलवाडा–स्कूल मे आगये। शास्त्रीजी सानिध्य मे श्रोत्रियजी को बडा प्यार और प्रोत्साहन मिला। उन्ही दिनो श्रोत्रियजी ने सस्कृत मे काव्य रचना शुरू की। काव्य मे उस समय उनकी रुचि इतनी बढ चुकी थी कि उन्हे तीन चार बार पढ लेने पर ही श्लोक कठस्थ हो जाया करते थे। श्री दयाशकर श्रोत्रिय आठवी कक्षा तक भीलवाडा मे ही पढे। इसी बीच राष्ट्रीय चेतना की हवा भी उन्हें समय समय पर छूने और प्रभावित करने लगी।

जन-जागरण की लहर–

अजमेर–मेरवाडा, हाडोती और मेवाड में उन दिनो राष्ट्रीय जन-जागरण की लहर काफी तेज हो चुकी थी। भीलवाडा, एक बडा कस्बा और सगम-क्षेत्र होने के कारण भला इस प्रभाव से कैसे अछूता रहता ? स्वतत्रता-आन्दोलन के अग्रणी नेता श्री जमनालाल बजाज और विजयसिंह 'पथिक' जैसे नाम श्रोत्रिय जी के कानो मे बार बार पडने लगे थे। बीजोलिया और अजमेर तो उन दिनो स्वतत्रता सेनानियो के प्रमुख ठिकाने घोषित किये जा चुके थे।

भीलवाडा मे सर्वश्री सुगनचन्द डाणी, कनकमल अग्रवाल, नेमीचन्द नागौरी, कजोडीमल अजमेरा, चाखेटियाजी आदि कई नाम राष्ट्रीय स्वतत्रता की लहर से अनुप्राणित हो चुके थे। स्कूल के हेडमास्टर श्री मुरलीधरजी (उत्तरप्रदेश के) भी खादी पहनते थे और राष्ट्रीय प्रवृत्तियो को प्रोत्साहन देते थे। श्रोत्रियजी इन दिनो समाचार पत्रो मे काफी रुचि लेने लगे थे। तभी एक ऐसा अवसर आया कि श्रोत्रिय जी गुप्त रूप से स्वतन्त्रता-आन्दोलन की कारवाहियो के प्रमुख सहयोगी बन गये।

पथिक और बजाज से भेंट–

भीलवाड़ा के खेल मैदान मे एक दिन फुटबाल का खेल चल रहा था। बालक श्रोत्रिय फुटबाल के अच्छे खिलाडी होने से इस खेल में शामिल थे। तभी उधर से एक ऊँट निकला जिसपर एक खादीधारी तथा एक अन्य व्यक्ति बैठे थे। स्कूल-ग्राउण्ड मे वह ऊँट रुका और ऊँट पर सवार खादीधारी व्यक्ति ने खिलाड़ी बालक श्रोत्रिय को हाथ के इशारे से बुलाया। बालक भी उस समय खादी की टोपी धारण किये था। सभवत. इसीलिये विशेष तौर पर उसी बालक को बुलाया गया।



खादीधारी व्यक्ति ने पूछा—'यह खादी की टोपी क्यों पहनते हो ?'

बालक श्रोत्रिय ने उत्तर दिया—'गांधी टोपी है, इसलिये पहनता हूँ ।'

'गांधीजी को कैसे जानते हो ?'

'गांधीजी हमारे देश से अंग्रेजो को भगाने की लडाई लड रहे हैं ।'

जमनालाल बजाज का नाम सुना है ?'

'खूब सुना और पढा है । उनका चित्र भी अखबारो में देखा है । वह कांग्रेस के खजान्ची हैं ।'

'जमनालाल बजाज तुम्हे कही मिल जाय तो पहचान सकते हो ?'

'पहचान सकता हूं । उनकी शक्ल आपसे मिलती जुलती है ।'

यह उत्तर सौ प्रतिशत सही था । वह खादीधारी ऊंट सवार स्वर्गीय जमनालाल बजाज ही थे । दूसरे व्यक्ति थे उत्तरप्रदेश और राजस्थान के प्रसिद्ध क्रांतिकारी स्वर्गीय विजयसिंह 'पथिक' ।

'पथिकजी' ने भी उनकी परीक्षा ली ।

'पथिक का नाम सुना है ।'

'पथिक को कैसे जानते हो ?'

'कई बार सुना है,'

'वह अंग्रेजो को भगाने और राजाओ के जुल्मो से लडने मे लगे हुए है ।'

जमनालालजी ने तभी बताया कि प्रश्नकर्त्ता व्यक्ति ही 'पथिकजी' हैं ।

श्रोत्रिय जी ने बाल-सुलभ आश्चर्य से प्रश्न कर लिया—'यह व्यक्ति पथिकजी कैसे हो सकते हैं ? पथिकजी तो साफा बांधते हैं और दाढी-मूंछ वाले हैं ?'

पथिकजी का यही चित्र उन दिनो समाचार-पत्रो में छपता था लेकिन इस बीच वे अपनी दाढी-मूंछें साफ करवा चुके थे ।

गुरुतर कार्य—

बातचीत होते होते जमनालालजी बजाज ने श्रोत्रियजी के सामने यह प्रस्ताव रक्खा कि वे उनकी तथा आंदोलनकारियो की डाक अपने नाम प्राप्त करके उसे बीजोलिया के एक विशेष व्यक्ति को दिया करें और उससे डाक लेकर उसे डाकखाने मे छोडा करें । जमनालाल जी ने उन्हे चेतावनी दी कि यह कार्य अत्यन्त ही गुप्त तरीके से होना चाहिये और परिवार के भी किसी व्यक्ति को इसकी जानकारी नही होनी चाहिये । श्रोत्रियजी ने अपने बाल्य-काल मे ही इस गुरुतर और महत्त्वपूर्ण कार्य को संभाला और करीब १।। वर्ष तक गुप्तरूप से यह कार्य करते रहे । बीजोलिया से एक व्यक्ति डाक लेकर आता जिसे 'लेटर—बाक्स' में छोड दिया जाता और श्रोत्रियजी के नाम पर आनेवाली क्रांतिकारियो की डाक उसके हाथ बीजोलिया भेज दी जाती । खुफिया पुलिस की कडा निगरानी के भीतर भी श्रोत्रियजी की बाल्यावस्था के कारण किसी को कोई संदेह पैदा नही हुआ और यह कार्य निरापद रूप से चलता रहा ।

स्काउटिंग—

उन्ही दिनो स्काउटिंग की शुरूआत हुई। मेवाड में स्काउट आन्दोलन के प्रवर्त्तक डॉ० मोहनसिंह मेहता भीलवाडा आये। स्काउट आश्रम की स्थापना हुई। श्रोत्रियजी के साथ करीब १०–१२ नवयुवक छात्रो की टोली ने स्काउट आन्दोलन की जिम्मेदारी भी सभाल ली। भूदान आन्दोलन के कर्मठ कार्यकर्त्ता और राजस्थान गाधी निधि के मत्री श्री केसरपुरी गोस्वामी भी इसी समय श्रोत्रियजी के सपर्क मे आये। तत्पश्चात् यह सम्बन्ध आजीवन बना रहा।

श्री केसरपुरी गोस्वामी—

मेवाड की जन-चेतना मे श्री केसरपुरी गोस्वामी का भी उल्लेखनीय योगदान है। वे पहले राज्य सेवा मे थे। राज्य-सेवा छोडकर उन्होंने प्रतिज्ञा की कि केवल ५ वर्ष स्वतन्त्र व्यवसाय करने के पश्चात् वे शेष जीवन राष्ट्र-सेवा मे लगा देंगे। उन्होने पूरे पाच साल ही दुकान चलाई, फिर शेष जीवन के लिये लोक–सेवा मे कूद पडे।

इसी समय, जब श्रोत्रियजी छठी कक्षा मे थे, सरवल ठिकाने के राज-पण्डित की सुपुत्री कमलाजी, पूर्व नाम सज्जन बहिन से उनका विवाह सम्पन्न हुआ। श्रोत्रियजी के हर कार्य मे श्रीमती कमला श्रोत्रिय तभी से सगिनी बन गई और उनके सहयोग तथा जागरूक दायित्व ने श्रोत्रियजी को सदैव आगे ही बढने के लिये प्रोत्साहित किया।

अहमदाबाद—

जब श्रोत्रियजी आठवी कक्षा मे थे, तब फिर उनका मन उखड़ा और वे सोखेड़ा चले गये। पिता ने उन्हे तुरन्त कर्मकाण्ड मे उलझा दिया जो उनकी रुचि के सर्वथा विपरीत था। फल यह हुआ कि श्रोत्रियजी सोखेडा से फिर चुपचाप भागे और इस बार अहमदाबाद पहुचे। इससे पूर्व एक शादी के प्रसग मे वे अहमदाबाद जा चुके थे इसलिये पहुंचने मे कोई अड़चन नही आई। लेकिन वे केवल किराया ही लेकर भागे थे इसलिये अहमदाबाद पहुचते ही आवास और भोजन की समस्या उठ खडी हुई। उनके पास केवल पाच आने शेष थे। वे आख़िर कब तक चलते और कितनी सहायता करते?

हताश होकर श्रोत्रियजी रीची रोड के पुल पर अकेले जा बैठे और रोने लगे। तभी नन्दलाल नाम का एक दर्जी वहा आया और उनकी जानकारी लेने लगा। वह सयोग से मेवाड का ही रहने वाला था और जीवन-यापन के लिये अहमदाबाद जा बसा था। उसने श्रोत्रियजी को ढाढस बधाया और अपने साथ ले गया। तुरन्त खाना खिलाया और तीन चार रोज उन्हे अपने घर रक्खा। उसीने प्रयत्न करके राधावल्लभ सम्प्रदाय के गोस्वामीजी की सेवा मे श्रोत्रियजी को नियुक्त करवा दिया। गोस्वामीजी दो भाई थे और दो मन्दिर ही उनकी सेवा मे थे। श्रोत्रियजी को दोनो मन्दिरो की पूजा तथा दोनो गोस्वामियो की सेवा का काम सौंपा गया।



श्रोत्रियजी पिता को सूचना दिये बिना यह सेवा-कार्य करते रहे। लगभग ६ महीने के पश्चात् उन्होंने पिताजी को पहला पत्र लिखा। पिता तुरन्त उन्हे लेने आये लेकिन श्रोत्रियजी लौटने को तैयार नही हुए। सेवा-पूजा से अवकाश निकाल कर श्रोत्रियजी अहमदाबाद मे इधर उधर घूमने निकल जाते। इन निरुद्देश्य यात्राओ ने उन्हे 'गांधी आश्रम' और 'साबरमती आश्रम' तक भी पहुँचाया।

करीब छ महीने गोस्वामियो की सेवा करने के उपरान्त श्रोत्रियजी सिटी-बस में कन्डक्टर होगये। वह किसी अकबर मुहम्मद खा नामक व्यक्ति की गाडी थी। उनके कन्डक्टर बनने पर सेठ की मोटर की दैनिक आमदनी करीब ड्योढी हो गई। उनकी यह ईमानदारी देख कर सेठ बहुत प्रभावित हुआ और वह उनसे बेहद प्रसन्न रहने लगा। इसी बीच उन्होंने मोटर चलाना सीख लिया और अतत. ड्राइविंग लाइसेन्स भी प्राप्त कर लिया।

रीची-रोड के मदिर के पास, जहा श्रोत्रियजी ने पूजा का कार्य सभाला था, एक डा० कानूनगो अपना निजी चिकित्सालय चलाते थे। डा० कानूनगो राष्ट्रीय विचारो के व्यक्ति थे और अक्सर गाँधी आश्रम जाया करते थे। श्रोत्रियजी ने उनकी कार पर ड्राइवर का काम स्वीकार कर लिया।

गॉधी-आश्रम में प्रवेश-

सयोग ऐसा कि तीन महीने बाद ही डा० कानूनगो ने अपनी वह गाडी आश्रम को भेंट कर दी। श्रोत्रियजी (ड्राइवर) गाडी को आश्रम मे छोडने गये तो गाडी खडी करने के उपरात स्वय भी वही चुपचाप खडे हो गये। गाँधीजी के सचिव महादेवभाई ने जब उनसे खडे रहने का कारण पूछा तो उन्होंने उत्तर दिया—

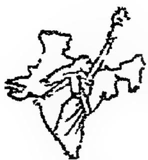
'गाडी आश्रम की हो गई है। अब मैं क्या करू ? ड्राइवर तो गाडी के साथ होता है। मुझे भी आश्रम मे ही रख लीजिये।'

महादेवभाई ने बापू से पूछा। बापू ने उन्हे सशर्त आश्रमवासी होने की आज्ञा दे दी। शर्त यही थी कि उन्हे अन्य आश्रमवासियो की भाति नियम और अनुशासन का पालन करना पडेगा और ड्राइविंग के अतिरिक्त भी आश्रम के अन्य कार्य करने होगे।

श्रोत्रियजी ने शर्तें स्वीकार करली और आश्रमवासी बनकर अहमदाबाद मे रहने लगे। उन्हें वहा मोटर के अतिरिक्त गौ-शाला का भी काम सौंपा गया। इस प्रकार श्रोत्रियजी करीब १० महीने गाधी-आश्रम मे रहे।

श्री जमनालालजी का सहयोग–

गाधी-आश्रम मे श्री जमनालालजी बजाज, महादेव भाई, अम्बालाल साराभाई, अनसूया बहिन, शकरलाल भाई बैंकर, गुलजारीलाल नन्दा, श्री वमावडा, खण्डू भाई देसाई, परीक्षित भाई मजूमदार, राजगोपालाचारी, सरदार वल्लभभाई पटेल आचार्य कृपलानी आदि अनेक नेताओ तथा गाधी आश्रम-परिवार



के वरिष्ठ सहयोगियों के दर्शन तथा भेंट का सौभाग्य श्रोत्रियजी को प्राप्त हुआ। जमनालालजी बजाज उन दिनो श्रीमती कमला श्रोत्रिय को वजीफा देने लगे थे और उनका भी अध्ययन चल रहा था।

उन्ही दिनो जमनालालजी ने अपनी सबसे बडी पुत्री की शादी गाधी-आश्रम मे ही की। अत्यन्त सादगीपूर्ण ढग से यह शादी सम्पन्न हुई और छोटासा भोज दिया गया। धनपतियो की ठाठ-बाट से भरी शादियो के उस युग मे सेठ श्री जमनालाल बजाज के घर यह सादगीपूर्ण विवाह संस्कार एक आदर्श रूप मे सामने आया।

गाधी-आश्रम में श्रोत्रियजी ने गुजराती भाषा का अच्छा ज्ञान प्राप्त किया। यो इससे पूर्व भीलवाड़ा में भी वे गुजराती के समाचार-पत्र पढने और समझने लगे थे।

नमक-सत्याग्रह—

तभी गांधीजी का नमक-सत्याग्रह शुरू हुआ और उन्होंने डाडी यात्रा का ऐतिहासिक संकल्प लिया। गाधीजी ने डाडी-यात्रा के उस अभियान में ८२ लोग लिये। श्रोत्रियजी की उस दल मे सम्मिलित होने की उत्कट इच्छा थी लेकिन उन पर आश्रम की व्यवस्था का ही भार सौंपा गया। वे गाधीजी से कुछ कह तो न सके लेकिन अभियान मे सम्मिलित न हो सकने का उन्हे बड़ा सदमा पहुँचा और प्रतिक्रिया स्वरूप उन्होने तुरन्त ही आश्रम-जीवन को त्याग दिया। अहमदाबाद से श्रोत्रिय जी पुन. भीलवाड़ा चले आये।

शिक्षक बने—

भीलवाडा लौटते ही श्रोत्रियजी ने नया कार्य शुरू करने की सोची। सयोग से भीलवाड़ा के उसी स्कूल मे, जहा उन्होंने विद्याध्ययन किया था, शिक्षक का एक स्थान रिक्त था। श्री यशवन्तसिंह मेहता उन दिनो भीलवाड़ा के कलक्टर थे। श्रोत्रियजी को स्कूल मे अध्यापक के पद पर नियुक्त कर दिया गया। श्री यशवन्तसिंह मेहता ने उन दिनो छात्रो के लिये एक छात्रावास शुरू किया तो श्रोत्रियजी को उसका सुपरिन्टेन्डेंट बना दिया गया। श्रोत्रियजी शिक्षा-सेवा मे तो लगे ही, उन्होने साथ-साथ नवयुवक छात्रो को राष्ट्रीय चेतना और सामयिक दायित्व का पाठ पढाना भी शुरू कर दिया। और अध्यापक के पद पर भी वे ६ महीने से अधिक नही रह सके। उन्होने वहां से मुक्ति लेली।

गांधीजी की हरिजन-यात्रा—

भीलवाड़ा मे उन दिनो मेवाड राज्य की 'जिनिग एण्ड प्रेसिंग फेक्ट्री' चलती थी। श्रोत्रियजी उसमे १५) रु० मासिक वेतन पर मार्का क्लर्क के पद पर नियुक्त हो गये। करीब ६ महीने बाद फेक्ट्री बन्द हो गई तो वे फिर बेकार हो गये। इन्ही दिनो गांधी जी हरिजन-यात्रा पर अजमेर आये तो श्रोत्रियजी भाग कर अजमेर गये और गाधीजी के सानिध्य का लाभ उठाया। थोडे दिनो बाद माता कस्तूरबा गाधी पुष्कर आई तो वे फिर पुष्कर चले गये। पुष्कर मे इस अवसर पर एक विराट सम्मेलन का आयोजन किया गया था। श्रोत्रियजी ने स्वयसेवको की सेवा की व्यवस्था संभाली।



स्वयंसेवक की सेवा—

श्रोत्रियजी को कस्तूरबा गांधी के ही टेन्ट की सेवा और रखवाली का दायित्व मिला। एक रात को लगभग दस बजे कस्तूरबा ने श्रोत्रियजी को बुलाया और उन्हे लगभग ४० कपडों की धुलाई की व्यवस्था का काम सौपा। कपडो पर प्रात काल ६ बजे तक इस्तरी तक हो जाय, ऐसी माग की गई। रात को दस बजे, पुष्कर जैसे अपरिचित स्थान मे, श्रोत्रियजी किस धोबी को तलाश करते ? बडी उलझन थी। आखिर श्रोत्रियजी ने स्वय ही इस कार्य को पूरा करने का निश्चय किया। साबुन की व्यवस्था करके उन्होने स्वय ही सब कपडो को धोया, अपनी निगरानी मे उन्हे सुखाया, हाथो से सिलवटें दूर कर के उनपर हाथ की ही इस्तरी की और प्रात काल ६ बजे कपडे तैयार करके कस्तूरबा जी को लौटा दिये। बा इस तत्परता से बडी प्रभावित हुई और उन्होने पूछा कि इतना सब कुछ किस प्रकार हुआ ? श्रोत्रियजी ने बता दिया कि यह सब कार्य उन स्वय ने ही किया है।

प्रात काल की प्रार्थना सभा मे उन्होंने श्रोत्रियजी के इस कार्य की बडी सराहना की। राजस्थान और मध्यप्रदेश के कार्यकर्ताओं के इस विशाल सम्मेलन की यह घटना श्रोत्रियजी के जीवन और प्रेरणा की एक अविस्मरणीय घटना बन गई। मध्यभारत के श्री मिश्रीलाल गगवाल, श्री कन्हैयालाल खादी वाला तथा राजस्थान के अनेक ख्यातिप्राप्त नेता इस सम्मेलन में उपस्थित थे।

प्यारचन्द विश्नोई—

श्रोत्रियजी की इस समय की गतिविधियो मे उनके एक साथी श्री प्यारचन्द विश्नोई का बडा सहयोग रहा। श्री विश्नोई इससे पूर्व बीजोलिया सत्याग्रह मे कार्य कर चुके थे। उन्होंने अजमेर जाकर भी एक दो सत्याग्रहो मे भाग लिया था। अत सभी प्रमुख व्यक्तियो से उनका सम्पर्क था। श्रोत्रियजी को भी इस युवक का सहयोग बडे काम का रहा। श्री विश्नोई के साथ श्रोत्रियजी की बार बार की गई अजमेर यात्राओ मे राजस्थान के अनेक विख्यात कार्यकर्ताओ से उनका सम्पर्क हुआ। श्रीयुक्त अर्जुनलाल सेठी, श्रीमती गोमतीदेवी भार्गव, श्री विजयसिंह पथिक, श्री गौरीशकर भार्गव, श्री राम नारायण चौधरी, बाबा नरसिंहदास, श्री हरिभाऊ उपाध्याय, श्री दुर्गाप्रसाद, चौधरी, श्री हरिविलासजी शारदा, श्री राजेन्द्रशकर भट्ट, श्री चादकरणजी शारदा, श्री सुन्दरलाल गर्ग, श्री बालकृष्ण गर्ग, श्री कृष्णगोपाल गर्ग, डा० अम्बालाल, श्री मुकुटबिहारीलाल भार्गव, वैद्य लक्ष्मीनारायण, श्री सुखसम्पत्तिराय भण्डारी, श्री जीतमल लूणिया, श्री ऋषिदत्त मेहता और उनका परिवार, श्री शोभालालजी और उनकी पत्नी विजया जी, श्री क्षेमानन्द राहत, श्री चन्द्रगुप्त वार्ष्णेय, स्वामी कुमारानन्द, श्री रामनिवास शर्मा, श्री नयनूराम जी और श्री लादूरामजी जोशी, श्री ज्वालाप्रसादजी, श्री रमेशचन्द्र व्यास तथा अन्य अनेक कार्य-कर्ताओ से सपर्क उनकी अजमेर यात्राओ की बडी उपलब्धि रही। अजमेर मे आये दिन आदोलन होते रहते तो श्रोत्रियजी तुरन्त भीलवाडा से अजमेर पहुँच जाते। एक बार दो दिन, दूसरी बार सात दिन के लिये जेल भी गये। पुलिस वाले उन्हे ले जाकर दूर जगलो मे छोड देते जहा से कई घन्टो बाद वे पैदल चलकर अजमेर पहुँचते। श्रोत्रियजी को ३-४ बार जगलों में छोड़ा गया।



अजमेर के यह आन्दोलन समय समय पर उठते तो रहते लेकिन इनके अतिरिक्त अन्य कोई कार्य-क्रम श्रोत्रियजी के समक्ष नही था। अत. आन्दोलनो की समाप्ति पर वे पुन. भीलवाड़ा लौट आते।

भीलवाड़ा मे वे फिर मेवाड राज्य की सेवाओ मे लग गये जब कौटन फेक्ट्री के जनरल मेनेजर ने गुलाबपुरा की फेक्ट्री मे उन्हे पुन मार्का-क्लर्क के पद पर नियुक्ति दे दी। उनके काम से प्रभावित होकर जनरल मैनेजर ने उन्हे १५ दिन बाद ही जिनिंग क्लर्क बना दिया। फिर वे प्रेसिंग क्लर्क बना दिये गये। गुलाबपुरा फेक्ट्री के मैनेजर लक्ष्मीनारायणसिंह स्वय स्काउट मास्टर भी थे अत: उन्होने श्रोत्रियजी को सहायक स्काउट मास्टर भी बना दिया।

ग्राम-सेवा—

फेक्ट्री की सेवा से बचे हुए समय मे यहा भी श्रोत्रियजी ने ग्राम-सेवा की अनेक प्रवृत्तियां शुरू की। उन्होने युवको की एक टोली सगठित की जो गावों मे जाती और नागरिको से सम्पर्क स्थापित करती। वे लोग गावो की सफाई करते, गाव वालो को सफाई के लाभ समझाते और उन्हें राष्ट्र की परिस्थितियो की जानकारी देते।

श्रोत्रियजी ने वहा एक कन्या-शाला की स्थापना की और कुशल अध्यापिका न मिलने की स्थिति मे श्रीमती कमला श्रोत्रिय को अध्यापिका बना दिया। साथ ही उन्होने वहां एक पुस्तकालय की भी स्थापना की।

गुलाबपुरा मे स्थापित यह कन्या शाला और यह सार्वजनिक पुस्तकालय अब काफी विकसित हो चुके हैं और आज भी चल रहे है।

श्रोत्रियजी जानते थे कि युवको को संगठित करके तथा उन्हे कार्यक्रम देकर ही जनसेवा में सफलता प्राप्त की जा सकती है। अत उन्होने युवक टोलिया सगठित की। उन्हे अखबार सुनाये जाते और पढने के लिये उन्हे चुनी हुई उपयोगी पुस्तकें दी जाती। उनके कैम्प आयोजित किये जाते। श्रोत्रियजी उन दिनो प्रति सप्ताह अजमेर जाते और वहा से चुनी हुई पुस्तकें युवको के लिये लाते। उनमें से अनेक पुस्तके जब्त भी की जा चुकी थी। ऐसी पुस्तकें वे स्वय भी पढते और दूसरो को भी पढाते।

गुलाबपुरा मे यात्रियो की सुविधा के लिये उन्होने एक बावडी बनवाने का निश्चय किया। कपास लेकर गाडिया आती तो उनसे थोडी-थोडी कपास इस कार्य के लिये भेंट मे प्राप्त की जाती। इसी कपास के सग्रह से तथा अन्य सहायता से उन्होने बावडी का निर्माण कार्य पूरा करवाया।

श्रोत्रियजी ने तभी वहा एक रात्रि पाठशाला भी शुरू की। वे प्रति सोमवार दल के साथ गावो मे जाते और उनकी सफाई करते। प्रतिवर्ष पुष्कर के मेले मे स्वयसेवक ले जाते जहा उनके दल को सेवा के लिये विशेष प्रशसा मिलती। श्री चादकरण शारदा और कन्हैयालाल कलियत्री जैसे कार्यकर्ता उनसे पुष्कर मेले मे स्वयसेवक लाने का विशेष अनुरोध करते। पुष्कर और अजमेर मे राजस्थान तथा मध्यभारत के कार्यकर्त्ताओ के राजनैतिक सम्मेलन होते तो श्रोत्रियजी पर व्यवस्था का विशेष दायित्व डाला जाता।



नौकरी का त्याग—

फेक्ट्री मे प्रेसिंग—क्लर्क के रूप मे श्रोत्रिय जी को ३०) तीस रुपया मासिक मिलता था जो उस समय की दृष्टि से काफी अच्छा वेतन था। लेकिन उन्हे प्रेसिंग क्लर्क की नौकरी भी छोड़नी पड़ी क्योंकि उन्होने अधिकारियो द्वारा किये जा रहे भ्रष्टाचार का भागीदार होने से इन्कार कर दिया।

फेक्ट्री पर मजदूरो का कार्य ठेके पर दिया जाता था ठेकेदार और अधिकारियो की मिली भगत मे जाली इन्द्राज का धन्धा चलता था। ठेकेदार १५० मजदूर लाता लेकिन उपस्थिति रजिस्टर मे २०० मजदूरो की हाजरी भरने की माग की जाती। मजदूरी के नाम पर वसूल किया गया यह अतिरिक्त रुपया इंजीनियर, हाजरी क्लर्क, मैनेजर और खजाची मे एक निश्चित अनुपात से बाट दिया जाता। क्लर्क का हिस्सा एक रुपये मे डेढ आने का रहता। उधर फेक्ट्री मे कम तादाद में नियुक्त मजदूरो से १० के बजाय १६–१६ घण्टे काम लिया जाता। इस प्रकार ठेकेदार को भी लाभ पहुँचाया जाता। श्रोत्रियजी राज्य कोष और मजदूरो के हित पर डाले जा रहे डाके में हिस्सेदार नही बने। उन्होंने इस फरेब का गुनहगार होने से मना कर दिया। इंजीनियर इस पर बडा बिगडा उसने इन्हे बॉयलर तक में डाल देने की धमकी दी। उस समय क्षेत्र के नौजवानो का एक बडा दल श्रोत्रियजी के साथ लग चुका था इसलिये इंजीनियर उनका कुछ बिगाड तो नही सका, लेकिन श्रोत्रियजी ने ही एक दिन फेक्ट्री की उस नौकरी को लात मार दी।

हरिजन-रात्रिशाला—

श्रोत्रियजी भीलवाडा लौटे तो तत्कालीन जनरल मैनेजर श्री रुस्तमजी ने उन्हें पदोन्नत करके सेवा में रखना चाहा लेकिन श्रोत्रियजी इसके लिये तैयार नही हुए। फिर भीलवाडा में भी उनका मन नहीं लगा और वे ब्यावर चले गये। वहा वे जैन शिक्षण-सोसायटी, ब्यावर के मन्त्री श्री मोतीलाल जी जैन से मिले, फिर बगडी गाव में हरिजनो का रात्रि—स्कूल चलाने लगे। वे दिन में नियमित स्कूल में अध्यापन करते और रात्रि को हरिजन-पाठशाला चलाते। बगडी प्रवासी राजस्थानी धनपतियो की भूमि है जिसे ५२ लखपतियो के निवास की ख्याति प्राप्त है। बगडी के ही एक-धनपति श्री अमोलकचन्द जी लोढा ने, जो मद्रास में व्यवसाय करते थे, इस पाठशाला के सचालन का आर्थिक-भार उठाया। लेकिन परम्परा-वादी ग्रामीण वातावरण में हरिजनोत्थान की इस प्रवृत्ति को आखिर प्रोत्साहन कैसे मिल सकता था ? गाँव में इस प्रवृति का विरोध बढने लगा और ६ माह बाद वह हरिजन रात्रिशाला भी बन्द कर देनी पडी।

विद्याभवन का निमन्त्रण—

श्रोत्रियजी फिर भीलवाडा लौट आये। वहा उनकी भेंट तत्कालीन मेवाडराज्य के राजस्व अधिकारी और मेवाड क्षेत्र में शिक्षा, जन सेवा तथा स्काउट-आन्दोलन के प्रमुख स्तम्भ डा० मोहनसिंह मेहता से हुई। डा० मेहता स्काउट आन्दोलन के सम्बन्ध में भीलवाड़ा आते रहते थे। डा० मेहता ने उन्हें स्वय उन्ही द्वारा



स्थापित उदयपुर की विख्यात शिक्षण-संस्था विद्याभवन में ले जाने का प्रस्ताव किया, लेकिन श्रोत्रियजी अपनी पत्नी को प्रयाग महिला विद्यापीठ में पढाना चाहते थे। डा० मेहता ने उनके इस निश्चय में भी उनकी मदद की और प्रयाग में अखिल भारतीय सेवा समिति के मत्री श्री श्रीराम भारतीय तथा मदनमोहनजी मालवीय के भतीजे पं० मूलचन्द्र मालवीय के नाम व्यक्तिगत पत्र लिखकर श्रोत्रिय जी को प्रयाग भेजा और उन्हे हर सभव सहयोग का आश्वासन दिया।

श्रोत्रियजी ने गांठ की नाम मात्र की पूजी और जेवर लेकर अपनी पत्नी के साथ भीलवाडा छोड़ दिया। अध्ययन की सुविधा को ध्यान में रखकर श्रोत्रिय-दम्पति ने अपनी एक वर्षीय एकमात्र (तब) पुत्री को भी मा के पास ही छोडा। डा० मेहता इलाहबाद मे पढे थे। वे वही प्रवक्ता बनकर भी रहे थे और अखिल भारतीय सेवा समिति के स्काउट-कमिश्नर भी रह चुके थे। मदनमोहन मालवीयजी तब अ० भा० सेवा समिति के अध्यक्ष थे और श्रीराम भारतीय मत्री थे।

अखिल भारतीय सेवा समिति—

डॉ० मेहता के पत्रो का ही फल था कि श्रोत्रियजी को भारती-भवन में सहायक पुस्तकाध्यक्ष के पद पर नियुक्ति मिल गई और कमलाजी को प्रयाग महिला विद्यापीठ मे प्रवेश मिल गया।

भारती-भवन तब भी प्रयाग का एक विशाल और विख्यात पुस्तकालय था। केवल शोधार्थियो के लिये ही उसमे ११ पृथक कमरो की व्यवस्था थी।

भारती—भवन मे कार्य करते हुए श्रोत्रियजी मालवीय-परिवार के सपर्क मे आये। अभ्युदय के सपादक श्री कृष्णकांत मालवीय और उनके पुत्र पदमकान्त मालवीय से भी इन दिनो उनका सपर्क बढ़ा। श्री मूलचन्द मालवीय के ही मकान मे वे रहते थे।

अ० भा० सेवा समिति का उन दिनो बड़ा नाम था। समिति लगभग १५० पाठशालाएँ तथा १४०—५० अखाडे चलाती थी। सेवा समिति अन्य कई प्रवृत्तिया भी चलाती थी।

सहायक पुस्तकाध्यक्ष के पद पर श्रोत्रियजी को बीस रुपया मासिक वेतन मिलने लगा। साथ साथ उन्होने नगरपालिका द्वारा सचालित प्रौढ शिक्षण की रात्रि-शाला का भी कार्य स्वीकार कर लिया जिससे उन्हे दस रुपया मासिक अतिरिक्त वेतन भी मिलने लगा। श्रीमती उमा नेहरू इस प्रौढ शिक्षण कार्यक्रम की सयोजक थी।

विविध प्रवृत्तिया—

गाधी—आश्रम छोडने के बाद प्रयाग के जीवन मे वे फिर राष्ट्रीय घटनाचक्र और काग्रेस की प्रवृत्तियो के निकट और निरतर सम्पर्क मे आने लगे। शहर मे गतिशील काग्रेस की लगभग सभी प्रवृत्तियो



मे वे खुलकर हिस्सा लेने लगे। हिन्दी साहित्य सम्मेलन के रजिस्ट्रार श्री भवानीप्रसाद गुप्ता से संपर्क हुआ तो सम्मेलन की गतिविधियो के भी निकट रहने लगे। गुप्ताजी ने ही उनकी राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन से भेंट करवाई।

श्रीमती कमला श्रोत्रिय प्रयाग महिला विद्यापीठ के छात्रावास में रहने लगी थीं। १५) रु० मासिक वृत्ति उन्हे श्री जमनालालजी बजाज की ओर से मिलती थी और १५) रु० मासिक की सहायता श्रोत्रियजी पहुँचाने लगे थे।

चौक इलाहबाद का एक प्रमुख स्थान है जिसे नगर की हलचल का सगम कहा जा सकता है। चौक मे प्रतिवर्ष एक मेला लगता था जिसमे चौक मे ही स्थित एक स्वदेशी समिति का बडा योगदान रहता था। मोहनलाल नेहरू से सपर्क स्वदेशी समिति की ही प्रवृत्तियो के माध्यम से हुआ।

कुछ समय बाद ही प० मूलचन्द मालवीय ने उन्हे दूसरे कार्य पर स्थानातरित कर दिया। मालवीय उन दिनो इलाहाबाद एग्रिकल्चर एसोसियेशन के मत्री थे। एसोसियेशन का एक बडा फार्म त्रिवेणी तट पर था। यह एसोसियेशन का कृषि प्रदर्शन-क्षेत्र था जहा उन्हें एक कुशल व्यवस्थापक की तलाश थी। डॉ० मेहता ने श्री मालवीय को लिखा भी यही था कि वे मेवाड के एक होनहार कार्यकर्त्ता को सार्वजनिक सेवा के प्रशिक्षण के लिये ही प्रयाग भेज रहे है। अत श्रोत्रियजी को उस कृषि-प्रदर्शन क्षेत्र का भार सौंप दिया। श्रोत्रियजी ने यहा निश्चित ही कृषि और बागवानी सम्बन्धी महत्त्वपूर्ण ज्ञान अर्जित किया। फुलवारी का शौक श्रोत्रियजी मे आज भी विद्यमान है। वे आज भी घण्टो महिला-मण्डल के बगीचे मे घूमा करते हैं और स्वय परिश्रम करके उसे सभाले भी रहते हैं। कृषि प्रदर्शन-क्षेत्र मे रह कर उन्होंने कृषि सम्बन्धी ज्ञान के प्रचार का कार्य भी हाथ मे लिया। वे प्रदर्शन भी आयोजित करते और ध्वनि विस्तारक यन्त्र से प्रचार भी करते।

त्रिवेणी-संगम—

माघ-मेला प्रयाग का एक हलचल-भरा प्रसग है जब लाखो यात्री त्रिवेणी-सगम पर स्नान करने आते हैं। इस अवसर पर प्रतिवर्ष, अखिल भारतीय सेवा समिति का कैम्प लगता था। तब लगभग ३० हजार स्वयसेवको की सेवाए मेले को प्रदान की जाती थी। प० मदनमोहन मालवीय माघ-मेले के समय ही हरिजनो को यज्ञोपवीत धारण करवाने का आयोजन करते थे। श्रोत्रियजी इन आयोजनो के प्रमुख स्वयसेवक बने रहते।

त्रिवेणी-तट पर अनेक विद्वान और साधु कुटियाए बनाकर रहते हैं, जिनसे भी श्रोत्रियजी का सपर्क हुआ। तट के दूसरी ओर 'झूसी' नामक स्थान मे भी अनेक साधु सन्यासी रहते थे।

दारागज, सगम के निकट की ही इलाहबाद की एक बस्ती है जहा हिन्दी के विख्यात साहित्यकार रहा करते थे। श्रोत्रियजी धीरे-धीरे उनके सपर्क मे भी आये। निरालाजी का निवास-स्थान और दिनचर्या

के अनेक सस्मरण आज भी श्रोत्रियजी की जबान पर रहते हैं। महादेवी वर्मा इससे पूर्व भी, प्रयाग महिला विद्यापीठ के माध्यम से, वे मिल चुके थे।

इलाहाबाद के ऐतिहासिक स्वराज्य भवन पर उन दिनो पुलिस का कब्जा था। बाद मे वह कांग्रेस को मिल गया तो श्री सादिकअली वहा रहने लगे। श्री सादिक अली से वर्षों बाद श्रोत्रियजी की भेंट भी यहीं हुई। इलाहबाद विश्वविद्यालय के अनेक प्रोफेसरो से भी उनका मिलना हुआ और सपर्क बढा। यह भी विश्वविद्यालय के भूतपूर्व प्रोफेसर डॉ० मोहनसिंह मेहता के सपर्कों का ही लाभ मिला। कर्मवीर श्री सुन्दरलाल, श्रीमती विजयालक्ष्मी पण्डित, डॉ० ताराचन्द, डॉ० कैलाशनाथ काटजू, मोहनलाल नेहरू, श्यामलाल नेहरू, श्रीमती उमा नेहरू, और गोविन्द मालवीय जैसे व्यक्तियों का बहुमूल्य सपर्क श्रोत्रियजी के इलाहबाद प्रवास का ही सुफल था। मालवीयजी जब किसी यात्रा पर जाते तो श्रोत्रियजी उनके सचिव रामजी (श्री राम भारतीय) के साथ रहते।

मेवाड़ विद्यार्थी संघ–

मेवाड के अनेक छात्र उन दिनो इलाहाबाद पढ़ा करते थे। उनसे श्रोत्रियजी का सम्पर्क होना स्वभाविक ही था। उन्होने कुछ सहयोगियो के साथ मिलकर वहा 'मेवाड विद्यार्थी सघ' की भी स्थापना की। इतवार को उन्होने सार्वजनिक प्रवृत्तियो तथा सम्पर्क के लिये चुन लिया था अत अनेक छात्र शनिवार को ही मिल जाते और इतवार का कार्यक्रम निश्चित कर लिया जाता आनन्द भवन के पीछे की हरिजन बस्ती मे मेवाड के इन छात्रो ने हरिजनो की एक रात्रि शाला भी चलाई। इन छात्रो मे श्री हजारीलाल मेहता, रतनमल चोरडिया और भवरलाल शर्मा (डूंगरपुर) के नाम उल्लेखनीय हैं।

२ वर्ष के इस कार्यकाल के बाद श्रोत्रियजी कृषि की एक अन्य सस्था इलाहबाद एग्रिकल्चरल इन्स्टीट्यूट मे चले आये। इससे पूर्व, कुछ दिन वे सेवा-समिति द्वारा सचालित एक चिकित्सालय मे भी रोगियो की सेवा कर चुके थे। अमरीकी मशिनरी इसका सचालन करते थे। श्रोत्रियजी ने यहा डेरी फार्म सभाला, डिपेच क्लर्क रहे और फिर सेलस सुपर वाइजर बन गये। इस समुन्नत फार्म मे कृषि के औजारो का भी निर्माण होता था और इन्जिनियरिंग की प्रवृत्तिया भी चलती थी। श्रोत्रियजी सप्ताह मे दो बार कृषि-ज्ञान के प्रचार के लिये भी समीपवर्ती हन्डिया तहसील के विभिन्न गावो मे जाते।

डेरी मे कार्य करते हुए उन्हे एक महत्त्वपूर्ण कार्य पर लगाया गया। उन्होने इलाहबाद नगर के इस सर्वेक्षण का कार्य सौपा गया कि नगर में दूध–दही और खोवे कि खपत कितनी है और वह कहा कहा से प्राप्त होता है।

श्रोत्रियजी ने नगर के समस्त चुंगीनाकों पर बैठकर लगभग चार महिने मे इस सर्वेक्षण कार्य को पूरा किया जिससे डेरी को अपने भावी स्वरूप-विकास के कार्यक्रम मे बडी मदद मिली।

चन्द्रशेखर आजाद–

सुप्रसिद्ध क्रातिकारी चन्द्रशेखर आजाद उन्हीं दिनो शहीद हुए। इलाहाबाद मे ज़ोर शोर से क्राति दिवस मनाया गया। विक्टोरिया गार्डन में अनेक क्रातिकारी एकत्रित हुए। पुलिस ने गार्डन को घेर



लिया। आजाद के २४ साथी पुलिस का घेरा तोडकर निकल भागे। अंत में अकेले आजाद रह गये। उन्होंने पेड़ की आड़ लेकर पुलिस पर फायर शुरू किये लेकिन कब तक ? अतन वे मातृभूमि की गोद में सदा के लिये लेट गये।

दूसरे दिन सारा शहर गार्डन के तीर्थ पर जुट गया। लोग बगीचे के पेड और मिट्टी को चूमते और उनकी आखें भर आती। वह दृश्य भारतीय स्वतत्रा सग्राम के इतिहास का एक जाज्वल्यमान पृष्ठ बन गया।

श्री जवाहरलाल नेहरू और श्रीमती कमला नेहरू जब जैल से छूटे तो उनके स्वागत मे समारोहो की धूम मच गई। वे सारी स्मृतिया श्रोत्रियजी के मानस मे आज तक सजीव है।

भारती-भवन मे उन्हे अनेक महत्वपूर्ण ग्रन्थो के अध्ययन का अवसर मिला। 'आज' के सपादक श्री बाबूराव विष्णु पराडकर और 'लीडर' के सम्पादक श्री चिन्तामणिजी से उनका सम्पर्क हुआ। सत्य-नारायण कविरत्न से उनकी भेंट इलाहबाद में ही हुई। श्री सादिकअली ने उन्हे काग्रेस कार्यकारिणी के लिये विशेष स्वयसेवक नियुक्त किया।

हिन्दी और सस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान तथा इलाहबाद विश्वविद्यालय के तत्कालीन उपकुलपति श्री गगानाथ झा उन दिनो गीता पर प्रवचन करते थे। जिज्ञासु श्रोताओ की भीड उमडा करती।

इलाहाबाद में दयाशकर श्रोत्रिय लगभग ४।। वर्ष रहे, इस बीच भी वे अपने सरक्षक डा० मोहनसिंह मेहता को प्रति माह अपना कार्य-विवरण भेजते रहते थे,डा० मेहता से भेंट हुई तो उसी समय उन्होने उदयपुर लौटने का प्रस्ताव किया। श्रीमती श्रोत्रिय का अध्ययन अभी पूरा नही हुआ था। इसलिये उन्हे प्रयाग महिला विद्यापीठ मे ही छोडा और श्रोत्रियजी उदयपुर लौट आये। अनेक वर्षों के सघर्षमय जीवन का अनुभव अर्जित करके उन्होने अप्रेल सन् १९३४ मे पहली बार उदयपुर की ऐतिहासिक भूमि पर अपने पाव रक्खे।

विद्याभवन मे प्रवेश–

उदयपुर मे श्रोत्रियजी को विद्याभवन की सेवाओ मे लिया गया। आपने सर्वप्रथम 'मेस' का काम सभाला। विद्याभवन के कार्यकर्ताओ को बाजार भाव पर घरो पर सामान पहुँचाया गया। उन्होने अपनी कार्य-कुशलता से मेस के मासिक व्यय मे भी भारी कमी करदी और भोजन का स्तर उठा दिया। मात्र तेरह रुपये मासिक मे खाना, नाश्ता, पाव भर दूध, फल, दो सब्जी, चावल, चपाती आदि पूरे खाने की व्यवस्था की गई। प्रयाग मे बीस घण्टे प्रतिदिन मेहनत करने और मात्र ५)रु० में गुजारा करने वाले श्रोत्रियजी पैसे के मूल्य और उसके उपयोग को भली प्रकार समझ चुके थे।

वे सन् १९३४ से सन् १९३८ तक विद्याभवन में रहे। अभिभावको और शिक्षको के पत्र 'बाल-हित' के वे व्यवस्थापक रहे। डा० कालूलाल श्रीमाली इस पत्र के सपादक थे। उन दिनो श्रोत्रियजी ने 'बाल-हित' के लिये अनेक गुजराती लेखो के अनुवाद किये। उन्होने पत्र के अनेक ग्राहक भी बनाये और उसे आत्मनिर्भर बनाने मे कठिन श्रम किया। उन्होने वहा पितृ-सघ (Parents leaghe) की स्थापना में भी योग दिया। श्री प्यारेकृष्ण कौल इस सघ के प्रथम अध्यक्ष बने। अकेले शेखावाटी की यात्रा करके ही श्रोत्रियजी ने 'बाल-हित' को ५०० ग्राहक दिये और अनेक शिक्षा-सेवियो को विद्याभवन का सहयोगी बनाया।

विद्याभवन में उन्हीं दिनो देश भर के शिक्षा-शास्त्रियो का एक कैम्प आयोजित किया गया। इस प्रकार उन्हे विख्यात शिक्षा-शास्त्रियो से सम्पर्क का अवसर प्राप्त हुआ।

श्रोत्रियजी ने प्रबन्ध मत्री के रूप मे विद्याभवन के लिये धन-सग्रह का कार्य भी किया और गाव-गाव घूमे। विद्याभवन क्षेत्र में खडे अनेक वृक्ष और एक कुआ श्रोत्रियजी ने ही खडे किये। उस समय उन्हे विद्याभवन से १०) रु० मासिक और खाना मिलता था।

डा० मेहता ने एक दिन पूछ लिया कि उन्हे विद्याभवन से कितना वेतन मिलता है? इतने कम वेतन की जानकारी मिलने पर उन्होने तुरन्त वेतन मे बढोतरी कर दी। अब उन्हे प्रतिमास ४० रुपया मेवाडी तथा ४० रुपया ब्रिटिश हकूमत का (कुल ८० रुपया) मिलने लगा। खाना और कपडा अलग से मिलने लगा। मेवाड मे उन दिनो राज्य-सरकार और ब्रिटिश हकूमत के अलग-अलग सिक्के चलते थे। मेवाडी सिक्कों का मूल्य चू कि घटता बढता रहता था इसलिये वेतन दोनो सिक्को मे मिला करता था।

विद्याभवन के कार्य-काल मे श्रोत्रियजी डा० मेहता के साथ देश भर मे धन सग्रह के लिये घूमे। डा० श्रीमाली के साथ भी उन्होने कई यात्राए की। डा० मेहता का उन दिनो भी देश भर मे सम्पर्क था और वे मेवाड के छात्रो के भविष्य-निर्माण के प्रति बडे जागरूक रहते थे। छात्रो को वे प्रोत्साहित करते, विषय आदि के चयन मे सहायता करते और जहा वे पढते वहा उनके परिचितो को पत्र लिखकर छात्रो को सरक्षण प्रदान करते।

श्रोत्रियजी का कहना है कि मेवाड़ के विकास में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण योगदान तीन व्यक्तियो का ही रहा। वे हैं—

१. सर टी. विजय राघवाचारी।
२. डा० मोहनसिंह मेहता।
३ श्री मोहनलाल सुखाडिया।

राष्ट्रीय घटनाचक्र—

विद्याभवन मे रहकर भी श्रोत्रियजी राष्ट्रीय आदोलन और घटनाचक्र के नियमित सम्पर्क मे रहे। जब भी कोई सम्मेलन होता या आन्दोलन छिड़ता, वे अजमेर पहुँच जाते।

उदयपुर मे उन दिनों प्रताप-सभा में बडी जान थी। मुगल-काल मे मेवाड की स्वाधीनता के लिये सघर्ष और बलिदान का स्वर्णिम इतिहास बनाने वाले महाराणा प्रताप की स्मृति से जुडी हुई इस सभा का मच छिपे रूप मे राष्ट्रीय गतिविधियो के ही सचालन के काम आता था। प्रताप सभा के मच पर उन दिनो देश की बडी हस्तिया आती रहती। श्रोत्रियजी उनमे काफी उत्साह दिखाते और सभा की प्रवृत्तियों के साथ जुडे रहते।



श्रोत्रियजी इन दिनो गांवो मे घूमते, नवयुवको को जागृत करते और विद्याभवन की सेवा भी मन लगाकर करते।

मिस हाइलेमन का हृदय-परिवर्तन–

विद्याभवन मे उन दिनो एक अग्रेज महिला कुमारी के एम. हाइलेमन थी जो 'बाल-मदिर' की सचालिका थी। एक समय वह था कि उसका व्यक्तिगत मासिक व्यय करीब ५००) रुपये था। धीरे-धीरे उस पर भारत के राष्ट्रीय आदोलन का ऐसा प्रभाव पडा कि वह खादी पहनने लगी और उसका व्यय ५००) से घटकर १३) मासिक रह गया। अब वह श्रोत्रियजी द्वारा सचालित मेस मे ही खाना खाने लगी।

मिस हाइलेमन गाधीजी से मिलने को बडी उत्सुक थी। श्रोत्रियजी ही इस भेंट के माध्यम बन सकते थे। अत. उसे लेकर वे दो बार वर्धा गये। बाद मे तो मिस हाइलेमन आश्रम की ही निवासिनी हो गई। बापू ने उसे सरला बहिन का नया भारतीय नाम दिया। सरला बहिन उर्फ मिस हाइलेमन ने वर्धा आश्रम मे मॉण्टेसरी-पद्धति का भारतीयकरण करके एक 'बाल-वाडी' चलाई।

विद्याभवन मे रहकर श्रोत्रियजी मे शिक्षा-सेवा की गहरी रुचि पैदा हुई। महिला-मण्डल की स्थापना मूलत विद्याभवन की ही प्रेरणा रही। 'बाल-हित' पत्र और डा० श्रीमाली के सपर्क से उन्हे बाल मनोविज्ञान के अनेक पाठ सीखने को मिले। विभिन्न देशी-विदेशी शिक्षा पद्धतियो की उन्होने ठोस जानकारी प्राप्त की।

इस समय तक श्रोत्रियजी को प्रयाग छोडे करीब १॥ वर्ष बीत चुका था। इस काल में श्रीमती कमला श्रोत्रिय का अध्ययन समाप्त हो गया और वे उदयपुर लौट आई। उन दिनो उदयपुर के बडा बाजार में स्थित 'कोल-पोल' में जहा इन दिनो प्रताप-विद्यालय चलता है, 'सार्वजनिक कन्या विद्यालय' चलता था। यही विद्यालय आगे जाकर 'राजस्थान महिला विद्यालय' के नाम से विकसित हुआ। एक बहिन कोच्चुम्म ल्लो विद्यालय के हाई स्कूल वर्ग की मुख्याध्यापिका थी। कमलाजी को इस स्कूल में 'प्रयाग महिला विद्यापीठ' के केन्द्र की इन्चार्ज नियुक्त किया गया।

महिला-मण्डल की स्थापना–

कमलाजी के उदयपुर आने के बाद श्रोत्रियजी का ध्यान महिला-शिक्षण की अनिवार्य सेवाओ की ओर गया। श्री और श्रीमती श्रोत्रिय और कन्या विद्यालय की बहिनो ने मिलकर उन दिनो महिला-समाज की सेवा के अनेक कार्य किये। अनेक महिला-सम्मेलनो के आयोजन किये गये। पर्दा प्रथा, रुढिवादिता आदि अनेक विकृतियो को दूर करने की चेतना जगाई। विद्यालय की शिक्षिकाओ को प्रोत्साहित करके उन्हे समाज की अतिरिक्त सेवाओ में लगाया गया। महिलाओ के प्रौढ-शिक्षण कार्यक्रम को हाथ में लिया गया। धीरे धीरे प्रौढ-शिक्षण के १२ केन्द्र चलने लगे। वस्तुत यह महिलाओ के प्रौढ-शिक्षण केन्द्र ही महिला-मण्डल की वास्तविक शुरुआत हैं। १० नवम्बर १९३५ कोमहिला-मण्डल की विधिवत् स्थापना की गई।

हिन्दी विद्यापीठ (राजस्थान विद्यापीठ)

मेवाड़ में शिक्षा और साहित्य के विशिष्ट सेवी श्री जनार्दनराय नागर भी उन्हीं दिनो बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से अपना अध्ययन समाप्त करके उदयपुर लौटे। तब मेवाड राज्य के तत्कालीन बन्दोबस्त अधिकारी और विख्यात साहित्य-सेवी पं० उमाशंकरजी उदयपुर मे हिन्दी साहित्य सम्मेलन की प्रथमा-मध्यमा-उत्तमा परीक्षाओ का संचालन करते थे, और छात्रो के शिक्षण की कक्षाएं चलाते थे। मेवाड मे हिन्दी प्रचार का यह एक प्राथमिक और महत्त्वपूर्ण अभियान था। उमाशंकरजी छात्रो को निःशुल्क पुस्तके देते, पढाई की निःशुल्क व्यवस्था करते, यहां तक कि उन्हें मिट्टी का तेल भी देते। उन दिनो उदयपुर मे प्रति सप्ताह कवि-सभाएं होती। श्रोत्रियजी इसमे पूर्व हिन्दी साहित्य सम्मेलन की प्रवृत्तियो के निकट सम्पर्क मे रह चुके थे अत इन साहित्यिक गतिविधियो मे भी उन्होंने बडे उत्साह से भाग लिया।

पन्द्रह-बीस साहित्यकारों और साहित्य-सेवियो ने एक दिन राष्ट्रभाषा, शिक्षण के इस कार्यक्रम को व्यवस्थित रूप देने का निश्चय किया और 'हिन्दी विद्यापीठ' (वर्तमान मे राजस्थान विद्यापीठ) की स्थापना की गई राजस्थान विद्यापीठ (पूर्व नाम हिन्दी विद्यापीठ) के संस्थापक उपकुलपति श्री जनार्दनराय नागर का भी इसमे विशेष योगदान रहा। तब हिन्दी विद्यापीठ के लिये महाराणा भूपाल महाविद्यालय के शिक्षको, उच्च कक्षाओ के छात्रो तथा वरिष्ठ कार्यकर्त्ताओ की सेवाएं ली जाती थी। प्रो० जगधारी, श्री लालचन्द रांका, प० उमाशंकरजी, श्री भैंरवलाल गौड़, श्री अर्जुनलाल मेहता, श्री जनार्दनराय नागर, डॉ० शंभूलाल शर्मा, डॉ० पुरुषोत्तमलाल मेनारिया और उदयसिंह भटनागर जैसे साहित्य-सेवी तब हिन्दी विद्यापीठ के उत्साही कार्यकर्त्ता थे।

श्रोत्रियजी हिन्दी विद्यापीठ के निर्माण और संचालन कार्य में भी एक सहयोगी के रूप मे बने रहे। श्री और श्रीमती श्रोत्रिय ने हिन्दी विद्यापीठ से परीक्षाएं भी पास की। श्रोत्रियजी को हिन्दी विद्यापीठ की होली-सुधारक समिति का भी संयोजक नियुक्त किया गया। विकसित तरीके पर होली खेलने की भावनाओं का प्रचार किया गया। कीचड़ और धूल फेंकने पर रोक लगाइ गई। गाली गलोच न करने का संदेश प्रसारित किया गया। अनेक पोस्टर छापे गये।

विद्याभवन के कार्यकाल की अन्य अनेक प्रवृत्तियो ने श्रोत्रियजी को सार्वजनिक-जीवन और सेवा-कार्यों के अनेक अनुभव दिये। स्काउटिंग का एक विशाल कैम्प उन दिनो भुवाणा में लगाया गया जिसमे ५००० स्काउटो ने भाग लिया। इस प्रवृत्ति को 'ग्राण्ड गुडटर्न' के नाम से जाना जाता है। श्रोत्रियजी के कधो पर इस कैम्प की व्यवस्था की भी अनेक जिम्मेदारिया रही।

काकरौली के द्वारकाधीश मंदिर के तत्कालीन महाराज को साहित्यिक प्रवृत्तियो मे विशेष रुचि थी। पं० उमाशंकरजी ने उनके समक्ष एक विराट कवि सम्मेलन का प्रस्ताव रक्खा। उस अवसर पर एक भव्य साहित्यिक समारोह भी आयोजित किया गया।



इन्दौर में जब हिन्दी साहित्य सम्मेलन का वार्षिक अधिवेशन हुआ तो उदयपुर से साहित्यकारों और साहित्य-सेवियो का एक पूरा डिब्बा ही ले जाया गया। इन सभी साहित्यिक प्रवृत्तियों मे श्रोत्रियजी का बहुमूल्य योगदान रहा।

प्रताप-सभा—

'प्रताप-सभा' के माध्यम से भी इस क्षेत्र और प्रात को उनकी विशिष्ट सेवाएं रही। राष्ट्रीय भावना के प्रचार-प्रसार, खादी-प्रचार, स्वदेशी भावना के विस्तार और विदेशी शासन के प्रति प्रतिरोधात्मक प्रवृत्तियो मे प्रताप-सभा निरतर सक्रिय रही। सर्वश्री शिवनारायण, दिलीपसिंह राठी, प० उमाशकर, परशुराम इन्जिनियर भवानीशकर वैद्य, बलवन्तसिंह मेहता, बशीलाल पचौली, दयाशकर श्रोत्रिय देवकिशन पारीरी, शकरसहाय सक्सेना आदि लोग इन कार्यों मे विशेष रूप से सक्रिय थे। श्री क्षेमानन्द राहत और हरिभाऊ उपाध्याय आदि वरिष्ठ कार्यकर्ता अक्सर उदयपुर आते रहते थे जिनसे सभा को मार्गदर्शन और कार्यकर्ताओ को प्रेरणा प्राप्त होती रहती थी।

देशी राज्य प्रजा परिषद्—

सन् १९३८ मे लुधियाना मे 'देशी राज्य परिषद्' का अधिवेशन आयोजित किया गया। प० जवाहरलाल नेहरू इसके अध्यक्ष थे। उस समय श्री माणिक्यलाल वर्मा अजमेर से यह प्रस्ताव साथ लेकर लुधियाना गये कि कांग्रेस से पृथक देशी राज्यो का एक अलग सगठन भी बनाया जाय ताकि देशी रियासतें दोहरी गुलामी से मुक्ति पाने के लिये अलग सघर्ष छेड सकें। लुधियाना से लौटकर उन्होंने उदयपुर मे सभी कार्यकर्ताओ से सलाह की और सगठन को बलशाली बनाने का कार्य शुरू हुआ। श्री बलवन्तसिंह मेहता, हीरालाल कोठारी, भूरेलाल बया, दयाशकर श्रोत्रिय और वैद्य भवानीशकरजी ने इसमे विशेष सहयोग दिया। तब वर्माजी ने मेवाड प्रजामण्डल की स्थापना का लक्ष्य लेकर समूचे मेवाड़ का भ्रमण किया। श्रोत्रियजी ने वर्माजी को एक साइकिल और कुछ रुपये दिये ताकि उनको यात्रा की सुविधा प्राप्त हो सके।

मेवाड़ प्रजामण्डल की स्थापना—

वर्माजी ने लगभग २ महीने मेवाड का भ्रमण किया। लौटने पर उदयपुर मे क्षेत्र के प्रतिनिधि नागरिको की एक गुप्त बैठक का आयोजन किया। श्री हीरालाल कोठारी के निवास स्थान पर बैठक हुई जिसमे करीब ५० प्रतिनिधि नागरिक एकत्रित हुए। इसी बैठक मे मेवाड प्रजामण्डल की स्थापना की गई। श्री बलवन्तसिंह मेहता-अध्यक्ष, भूरेलाल बया, उपाध्यक्ष, माणिक्यलाल वर्मा, प्रधानमन्त्री, दयाशकर श्रोत्रिय मत्री, नन्दलाल जोशी—सयुक्त मत्री तथा नरेन्द्रपालसिंह चौधरी, वैद्य भवानीशकर, रूपलाल सोमानी आदि सदस्य निर्वाचित किये गये। निश्चय किया गया कि विधान तैयार करके सदस्यता अभियान तेजी से शुरू किया जाय। विधान तैयार हुआ। तय हुआ कि विधान की एक प्रति मेवाड के तत्कालीन शासन को भेजी जाय। मेवाड़ के तत्कालीन प्रधानमत्री श्री धर्मनारायणजी को विधान की प्रति व्यक्तिगत रूप से



देने का निश्चय हुआ लेकिन कोई व्यक्ति स्वय जाने के लिये तैयार नही हुआ। तब श्रोत्रियजी ने यह कार्य अपने हाथ मे लिया और बगले पर जाकर धर्मनारायणजी को विधान की प्रति दी गई। उन्होंने श्रोत्रियजी को सलाह दी कि वे राजनीति के पचडे मे न पड़ें। इधर श्रोत्रियजी बगले से लौटे, उधर मेवाड सरकार इन प्रवृत्तियो के प्रति विशेष सतर्क हो गई।

श्रोत्रियजी तुरन्त डा० मोहनसिंह मेहता से मिले और बताया कि उनके कधो पर मेवाड-प्रजा मण्डल का भार डाला गया है। डा० मेहता विद्याभवन को राजनीतिक गतिविधियो से दूर रखना चाहते थे। अतः उन्होने पहली सलाह तो यही दी कि वे सार्वजनिक सेवा के कार्यो मे ही लगे रहे, राजनीति में न घुसें। जब श्रोत्रियजी ने प्रजामण्डल छोडना स्वीकार नही किया तो डा० मेहता ने उन्हें विद्याभवन की सेवाओ से त्यागपत्र दे देने की सलाह दी। डा० मेहता ने उन्हे एक रात का समय पुर्नविचार के लिये भी दिया। दूसरे दिन श्रोत्रियजी ने विद्याभवन की सेवाओ से त्यागपत्र दे दिया।

वर्माजी निर्वासित—

नाइयो की तलाई में एक मकान किराये पर लेकर मेवाड प्रजामण्डल का कार्यालय स्थापित किया गया। लेकिन मेवाड प्रजामण्डल की स्थापना के साथ ही मेवाड सरकार प्रजामण्डल पर पाबन्दी लगाने की सोचने लगी। प्रजा-मण्डल का कार्यालय पूरी तरह जम भी नही पाया था कि मेवाड़-मत्रीमण्डल ने प्रजामण्डल पर पाबन्दी की घोषणा करदी और वर्माजी को मेवाड से निर्वासित कर दिया। दूसरे ही दिन मेवाड़ पुलिस ने प्रजामण्डल-कार्यालय पर छापा मारकर सारा सामान उठा लिया। कार्यालय पर पुलिस का पहरा बिठा दिया गया और कार्यकर्ताओ को आने-जाने की मनाही करदी। पुलिस अधिकारी मुरादअली पर वर्माजी को मेवाड की सीमा पार करवा देने का काम सौपा गया।

वर्माजी ने मेवाड छोडते छोडते श्रोत्रियजी को कार्यालय की चाबी सभलाई और उन्हें कहा कि वे गुप्त रूप से मेवाड़ प्रजामण्डल के उद्देश्यो का प्रचार करें और जन-सगठन को सुदृढ करें। श्रोत्रियजी स्टेशन तक वर्माजी के साथ गये। मार्ग मे फतहमेमोरिल के पास कुछ लोगो ने छिपकर वर्माजी पर पुष्पहार उछाले।

वर्माजी मेवाड छोडकर अजमेर रहने लगे। लगभग १५ दिन बाद कुछ कार्यकर्त्ता उदयपुर से अजमेर गये और फिलहाल मेवाड-प्रजामण्डल का स्थानापन्न कार्यालय अजमेर के हाथीभाटा मोहल्ले में स्थापित कर दिया गया। वहा भी अजमेर राज्य की खुफिया पुलिस के लोग उनके पीछे लगे रहे लेकिन कार्य चलता रहा। उदयपुर से इस कार्यालय का गुप्त रूप से नियमित सपर्क बना रहा। उनकी डाक भी सेन्सर होने लगी लेकिन मेवाड को कार्यालय की दैनिक रिपोर्ट भेजी जाती रही।

मेवाड मे प्रजामण्डल के कार्य की अनेक अडचनो को देखकर फिर यह तय दिया गया कि प्रवासी मेवाडियो को मेवाड–प्रजामण्डल से जोड़ा जाय। प्रवासी मेवाडियो की शाखाए खोलने के इस कार्य को भी श्री माणिकलाल वर्मा और श्री दयाशंकर श्रोत्रिय ने ही चलाया। वे दोनो रतलाम, इन्दौर



खण्डवा, भुसावल, आकोला, अमरावती, नागपुर हीगनघाट, बम्बई और अहमदाबाद आदि स्थानों पर गये और प्रजामण्डल की जड़े मजबूत की। वे लोग गाव गाव जाते और एक-एक रुपया सदस्यता-शुल्क लेकर सदस्य बनाते जाते। डूंगरपुर और बासवाडा क्षेत्र को भी उन्होने मेवाड़ का ही अग माना और वहा अनेक स्थानो के दौरे करके अनेक सदस्य बनाये।

सामन्ती दमन का विरोध–

यात्राओ के इसी क्रम मे श्रोत्रियजी, श्री जमनालालजी बजाज से मिले और उन्हें मेवाड मे प्रजामण्डल पर हो रहे सामन्ती दमन की कहानी सुनाई। जमनालालजी उन्हें बापू के पास ले गये। वर्धा के प्रवासी मेवाडियो मे भी प्रजामण्डल की शाखा स्थापित की गई। बापू ने श्रोत्रियजी को और उनके प्रजामण्डल के कार्यकर्त्ताओ को आशीर्वाद दिया। उन्होने कार्यकर्त्ताओ के नाम श्रोत्रियजी के हाथ सदेश भेजा कि प्रतिबन्ध को उठाने की माग लेकर मेवाड मे सत्याग्रह शुरू किया जाय। बापू ने मेवाड के तत्कालीक शासन को भी पत्र भेजा और प्रतिबन्ध उठाने की अपील की। साथ ही यह भी लिखा कि मेवाड़ शासन से इसका कोई उत्तर प्राप्त न होने पर यह पत्र प्रकाशित कर दिया जायगा।

सत्याग्रह की शुरूआत–

शीघ्र ही मेवाड प्रजामण्डल के कार्यालय (अजमेर) में करीब ७५ लोग एकत्रित हुए और सत्याग्रह शुरू करने का निश्चय किया गया। देश भर के पत्रो मे इस समाचार को प्रकाशन मिला। श्रोत्रियजी स्वय उन दिनो 'हिन्दुस्तान' के सवाददाता थे और देश के अन्य कई पत्रो में भी सवाद भेजा करते थे। भारत, प्रताप, आज, हिन्दुस्तान, राजस्थान आदि पत्रो मे सत्याग्रह की घोषणा हो गई। अजमेर-कार्यालय (हाथीभाटा) से ही सत्याग्रह चलाने का निश्चय किया गया। तिथि की भी घोषणा कर दी गई।

भीलवाडा के कार्यकर्त्ता श्री रमेशचन्द्र व्यास को पहला सत्याग्रही घोषित करके उदयपुर भेजा गया। उन्हे फूल-मालाओ से लादकर ट्रेन मे बैठा दिया गया। सत्याग्रहियो के कार्यकर्त्ता और खुफिया पुलिस के लोग भी साथ थे। श्री व्यास को खेमली स्टेशन पर ही मेवाड की पुलिस ने उतार लिया और वे लसाडिया ले जाये गये। उसी रात्रि को श्री परशुराम अग्रवाल और श्री दयाशकर श्रोत्रिय को भी गिरफ्तार कर लिया गया।

सत्याग्रह इन गिरफ्तारियो से रुका नहीं। निश्चय हुआ कि उदयपुर की धानमण्डी में प्रतिदिन एक व्यक्ति सत्याग्रह करे। आठ व्यक्तियो की सूची सत्याग्रह के लिये स्वीकार कर ली गई और सिलसिला चल निकला। चुपचाप एक व्यक्ति मण्डी मे जाकर सत्याग्रह शुरू कर देता। वह नारे लगाता, भाषण देता और पुलिस उसे तुरन्त गिरफ्तार कर लेती। अजमेर से श्री माणिक्यलाल वर्मा भी प्रतिदिन एक सत्याग्रही भेजते रहे।

श्री दयाशकर श्रोत्रिय को सेंट्रल जेल मे रक्खा गया। उन्हे डडा बेडी भी डाली गई। पुलिस का आतक दिनो-दिन उग्र होने लगा।

श्री भवानीशंकर वैद्य व श्री भूरेलाल बया को सराड़ा जेल मे रक्खा गया। वही रमेशचन्द्र व्यास भी थे। उन्हे २४ घण्टे मे एक बार हाथ से खाना बनाने दिया जाता फिर वे कालकोठरी मे डाल दिये जाते। प्रोफेसर नारायणदास का पूरा परिवार तथा अन्य अनेक व्यक्ति सत्याग्रह करके गिरफ्तार हुए। नाथद्वारा मे भी बडी सख्या मे गिरफ्तारिया हुई जिनमे नरेन्द्रपालसिंह चौधरी, नन्दलाल जोशी, रघुनाथ पालीवाल, किशनलाल शर्मा, दानमल भाटिया, पुरुषोत्तम चौधरी, किशनलाल जाट, मनोहर कोठारी, मोहनलाल गुप्ता श्रीकृष्ण शर्मा, पुरुषोत्तम हिटलर, फतहलालजी, रगलालजी, फतहलाल बापू आदि उल्लेखनीय हैं।

सत्याग्रह मे करीब १५० व्यक्ति गिरफ्तार किये गये। कुछ को कुम्भलगढ की जेल में भी रक्खा गया। भीलवाडा मे श्री प्यारचन्द बिश्नोई, श्रीमती बिश्नोई, रामचन्द्र ब्रह्मचारी, रूपलाल सोमानी, आजाद गोयल आदि गिरफ्तार हुए जिन्हें उदयपुर भेजा था। नाथद्वारा मे श्री नरेन्द्रपालसिंह चौधरी गिरफ्तार हुए। उन्हे भी उदयपुर लाया गया।

उस समय गुप्त रूप से मेवाड़ भर मे क्रातिकारी साहित्य का वितरण किया गया। मेवाड भर मे सत्याग्रह की हलचल मच गई। प्रजामण्डल के अध्यक्ष श्री बलवन्तसिंह मेहता के अतिरिक्त सभी प्रमुख कार्यकर्त्ता गिरफ्तार कर लिये गये। मेहताजी थोडा बचकर चलते थे इसलिये उनका कोई कार्य आपत्तिजनक नही समझा गया। श्री शकरसहाय सक्सेना अजमेर से काफी सारा साहित्य लाते और चुपचाप श्रीमती कमला श्रोत्रिय के पास पहुँचा देते। रातोरात उस साहित्य का वितरण किया जाता।

यह आन्दोलन करीब चार माह चला। भीलवाडा, चित्तौड, उदयपुर, नाथद्वारा व अन्य अनेक गांवो में आन्दोलन ने काफी तेजी पकडी। श्री माणिक्यलाल वर्मा को मेवाड की सरहद पर जहाजपुर जिले के देवली गाव मे गिरफ्तार किया गया। पुलिस अधिकारी उन्हे घसीटकर मेवाड़ की सीमा में लाया, फिर उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। उन्हे जेल भेजा गया तो उन्हे पाकर जेल के सत्याग्रहियो मे उत्साह की लहर दौड़ गई।

जेल मे सत्याग्रह--

इन सत्याग्रहियो को जेल में बहुत ही निकृष्ट स्तर का खाना दिया जाता था। इस दुर्व्यवस्था के विरोध मे १२ सत्याग्रहियो ने भूख हडताल शुरू कर दी। जेल से यह समाचार अधिकारियों तक पहुँचा। जेलर पर डाट पडी और जेल का निरीक्षण तय हुआ तभी जेलर और अन्य कर्मचारियो ने असलियत छिपाने के लिये एक चाल चली। वे लोग जेल के सत्याग्रहियो को बैठाकर चुपचाप बाहर ले गये और रात भर डबोक पुलिस चौकी पर रक्खा। यह इसलिये किया गया कि रेजीडेन्ट को कैदियो के इस असतोष की जानकारी न मिल सके।

तीन माह बाद श्री शकर भारतीय व अन्य साथी जेल से छूटे तो वे फिर सत्याग्रह मे शामिल हो गये। उन्हें दूसरे दिन फिर ३ महीने की सजा सुना दी गयी।

श्री दयाशकर श्रोत्रिय को उस समय ६ महीने के कारावास का दण्ड मिला था।



अध्यक्ष की गिरफ्तारी–

सत्याग्रहियो मे तब यह असतोष फैलने लगा कि प्रजा-मण्डल के अध्यक्ष श्री बलवन्तसिंह मेहता बिलकुल तटस्थ हो गये हैं। वे लोग उन्हे सत्याग्रह के लिये आग्रह करने लगे। बाद में मेहताजी के घर की तलाशी हुई और उन्हे गिरफ्तार कर लिया गया। इस समय तक सर टी विजयराघवाचारी मेवाड़ के प्राइम मिनिस्टर हो चुके थे।

मेवाड़ का अकाल–

उसी समय अकाल की विभीषिका ने मेवाड को अपने पजों मे लपेट लिया। सर्वत्र अकाल के भयावह दृश्य नजर आने लगे और त्राहि-त्राहि मच उठी। प्रजामण्डल के सत्याग्रहियो ने तब मेवाड की सेवा करने का निश्चय किया। श्री माणिक्यलाल वर्मा ने सर टी विजयराघवाचारी को पत्र लिखकर अपनी तथा अपने कार्यकर्ताओ की सेवाए अकाल-राहत-कार्य के लिये अर्पित की। सर टी. विजयराघवाचारी ने इस प्रस्ताव को सहर्ष स्वीकार किया और सारे सत्याग्रही जेलो से रिहा कर दिये गये।

अकाल-राहत-कार्य–

प्रजामण्डल के कार्यकर्ता जेल से मुक्त होते ही अकाल-राहत-कार्यों मे लग गये। नये कार्यक्रम के मानवीय पक्ष ने सभी को अनुप्राणित किया। शासन और कार्यकर्ताओ के बीच तनाव के सम्बन्ध एक साथ तिरोहित हो गये और सब लोग कन्धे से कन्धा भिडाकर काम करने लगे।

श्रोत्रियजी और उनके साथी एक ओर मजदूरो से दुगुनी कीमत देकर लकड़िया खरीदते, फिर उन्हें बाजार भाव पर नागरिको को सप्लाई करते। जो घाटा रहता उसे जनता के आर्थिक सहयोग से पूरा करते। घास खरीदते और उसे भूखे पशुओ मे डाल देते। मजदूर को मजदूरी मिलती तो परिवार की रोटी चलती, जानवरो को भूख से नही मरने दिया जाता। गाव गाव जाकर भूखमरी और पानी के सकट का सामना किया गया। यह सेवा-कार्य करीब ६ माह चला।

जल विप्लव की विनाश-लीला–

सर टी विजयराघवाचारी के कार्य-काल मे एक समय कपासन का तलाब फूट गया। पानी की विनाश-लीला से अनेक गाव बह गये। लोगों में त्राहि–त्राहि मच उठी। प्रजामण्डल के मत्री की हैसियत से श्रोत्रियजी ने तुरन्त अपना दायित्व सभाला। उन्होने प्रजामण्डल की ओर से चने, कपडे, रुपये आदि का सग्रह किया और ५० कार्यकर्ताओ की टोली लेकर पीडित क्षेत्रो मे पहुच गये। उदयपुर से लेकर कपासन तक नागरिको ने इस कार्य मे दिल खोलकर सहयोग किया।

मेवाड रिलीफ सोसायटी–

लेकिन कुछ समय बाद ही खारी नदी की बाढ ने विनाश का ऐतिहासिक रेकार्ड कायम किया। ऐसा जल प्लावन नागरिको ने न देखा था, न सुना था। देवगढ़ से लेकर गुलाबपुरा तक सर्वत्र पानी ही पानी

नजर आने लगा। एक एक करके दस बडे तालाब टूटते चले गये। लगभग १५० गाव बरबाद हो गये। बाढ मे लाखों पशु बह गये, गांव और फेक्टरियो का निशान तक नही रहा, पशुओ की लाशें पडी पडी सडने लगी। बीमारिया फैलने लगी।

इस अवसर पर गठित नागरिक-समिति ने राहत-कार्यों की महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की। उसने समाचार-पत्रो मे बाढ का सही और विनाशकारी चित्रण प्रस्तुत किया। धनपतियो के पास सहायता के लिये अपीले भेजी। स्वय ने धन और वस्तुओ का सग्रह किया और पीडित परिवारो को राहत पहुँचाई।

अनेक लोगों और सस्थाओ ने भी इस कार्य मे बडा सहयोग किया। मारवाडी सम्मेलन बम्बई ने सहायता भेजी, मध्यभारत से मिश्रीलाल गंगवाल और सीताराम जाजू आये। श्री जुगलकिशोर बिडला ने आर्यधर्म सेवासघ खोलकर उसके कार्यकर्त्ता भेजे। मारवाडी सम्मेलन के प्रतिनिधि सेठ श्री जमनादास अड्डकिया और श्री रामेश्वर सावू ने भी बाढ प्रभावित क्षेत्र का दौरा किया और सहायता पहुचाई।

प्रजामण्डल के कार्यकर्त्ताओ के ही सहयोग से तब मेवाड रिलीफ सोसायटी की स्थापना की गई। और अकाल-राहत-कार्य उसी के माध्यम से सयोजित किया गया। अनेक लोगो को उद्योगो पर लगाया गया, उनके पुनर्वास मे सहायता पहुचाई गई। प्रजामण्डल के कार्यकर्त्ताओ ने गाँव गाँव सर्वे करके पीडितों की जरूरतो का पता लगाया और सहायता-शिविरो को सूचित करके उन तक सहायता पहुचाई।

मेवाड रिलीफ सोसायटी के अध्यक्ष डा० मोहनसिंह मेहता और कार्यकारी अध्यक्ष-उच्चन्यायालय के न्यायाधीश श्री तैयबअली निर्वाचित किये गये। मत्री पदो पर वैद्य भवानीशकर, दयाशकर श्रोत्रिय और शोभालालजी गेलडा चुने गये। कोषाध्यक्ष श्री भँवरलाल टाल्या और प्रचार-मत्री श्री जनार्दनराय नागर।

मेवाड रिलीफ सोसायटी के माध्यम से इन कार्यों पर लगभग १५ लाख रुपया व्यय किया गया। सोसायटी के पास बाद मे धन बच रहा अत सोसायटी को भविष्य के राहत कार्यो के लिये भी बनाये रखने का निश्चय किया गया।

अगस्त आदोलन—

अगस्त १९४२ मे महात्मा गाँधी ने काग्रेस कार्यकारिणी मे 'करो या मरो' का नारा दिया। ग्वाला-टैंक बम्बई मे विराट सभा का आयोजन किया गया। गाँधीजी, कस्तुरबा और महादेव भाई आदि नेताओ को वही गिरफ्तार कर लिया गया।

९ अगस्त आदोलन की तिथि घोषित की लेकिन मेवाड प्रजामण्डल ने यह आन्दोलन १३ अगस्त से शुरू किया। लगभग २०० आंदोलनकारी गिरफ्तार हुए। नौजवान छात्रो ने भी आदोलन किया और वातावरण में जान डाल दी।



गिरफ्तार, आदोलनकारियों मे से प्रमुख ३० व्यक्तियों को 'ईसवाल महल' में बन्दी बनाया गया। माणिक्यलाल वर्मा, मोतीलाल तेजावत, परशुराम अग्रवाल, प्यारचन्द विश्नोई और दयाशकर श्रोत्रिय इसी जेल के एक कमरे मे रहे। बलवन्तसिंह मेहता, भूरेलाल बया, मोहनलाल सुखाडिया, नरेन्द्रसिंह चौधरी, नन्दलाल जोशी आदि अन्य प्रमुख सत्याग्रहियो मे से थे।

जेल मे नामकरण–

उन्ही दिनो श्रीमती कमला श्रोत्रिय जेल मे श्रोत्रियजी से मिलने आई। उनकी गोद मे नया-जन्मा पुत्र था जिसका नामकरण अभी नही हुआ था। वर्माजी ने उसके नामकरण मे पहल की। उस दिन सयोग से श्री गणेशशकर विद्यार्थी का जन्म दिवस था, अत. वर्माजी ने बालक का नाम गणेशचन्द्र श्रोत्रिय रक्खा। यह श्रोत्रियजी के तीसरे पुत्र हैं।

जेल-जीवन मे भी आदोलनकारियो ने अनेक करिश्मे किये। एक बार विरोध-स्वरूप सबने सम्मिलित रूप से अपनी दाढिया बढाली। उन्हे केवल धार्मिक साहित्य ही पढने को दिया जाता तो श्रोत्रियजी ने अनेक धर्मो के प्रमुख ग्रन्थो का अध्ययन किया। लोकमान्य तिलक के गीता-रहस्य को तो उन्होने पाच बार पढा।

वैद्यराज भवानीशकरजी ने उस समय जेल-यात्रियो के परिवारो के भरण-पोषण का दायित्व सभाला। उन्हे उस समय नागरिको से भी प्रचुर सहायता मिली और उन्होंने हजारो रुपया स्वय अपने पास से भी खर्च किया। वैद्यजी कपडे, तेल, वस्त्र, राशन आदि सभी की व्यवस्था करते। उन्होने अनेक परिवारो को निश्चित राशि मे निर्वाह व्यय भी पहुचाया। श्रीमती श्रोत्रिय ने इस निर्वाह-निधि को स्वीकार नही किया। क्योकि वे स्वय अपना दायित्व उठा सकने मे सक्षम थी। श्री हीरालाल कोठारी ने भी इस धन सग्रह-अभियान मे बडा सहयोग किया।

श्रोत्रियजी को अगस्त आन्दोलन मे भी ९ माह की सजा सुनाई गई।

कार्यकर्त्ता-सम्मेलन–

राजपूताना और मध्य भारत में पुनर्जागृति के लिये कार्यकर्त्ताओ का एक विराट सम्मेलन उदयपुर मे पोरवालों के नोहरे में आयोजित किया गया। जिसमे मेवाड के अतिरिक्त बाहर से करीब २५० कार्यकर्त्ता आये। इन्दौर के नेता श्री सरवटे ने इसकी अध्यक्षता की। सम्मेलन की व्यवस्था का बडा दायित्व श्रोत्रियजी ने सभाला।

हरिजन-सेवा सघ–

हरिजन-सेवा सघ के उद्देश्यो की पूर्ति के लिये भी श्रोत्रिय-दम्पत्ति और महिला-मण्डल ने महत्त्व-पूर्ण भूमिका अदा की। उदयपुर मे उन दिनो हरिजन–सेवा सघ का कार्य बड़े पैमाने पर चलता था।



श्री मोहनलाल सुखाड़िया संघ के मंत्री थे। श्री केसरीलाल बोर्दिया और तेजसिंह मेहता भी संघ के महत्त्वपूर्ण पद संभाल चुके थे।

महिला-मण्डल द्वारा भी उस समय ५-६ हरिजन-शालाएं चलाई जाती थी। ठक्कर बापा और रामेश्वरी नेहरू से श्रोत्रियजी का सपर्क हरिजनोत्थान की प्रवृत्तियो के माध्यम से ही हुआ। वे लोग दो बार उदयपुर आये और श्रोत्रियजी को हर बार हरिजन-सेवा के लिये प्रोत्साहित किया। आदिवासी छात्राओं के अध्ययन का कार्य भी रामेश्वरी नेहरू ने ही महिला-मण्डल को सौंपा जो आज भी शानदार सफलताएं हांसिल करते हुए चल रहा है। रामेश्वरी नेहरू लगभग १३ वर्ष तक महिला-मण्डल की अध्यक्षा रहीं और उन्होंने महिला-मण्डल के विकास में भारी योगदान किया।

गुर्जरगौड़-महासम्मेलन—

समाज-सुधार का दृष्टिकोण लेकर श्रोत्रियजी ने अपनी जाति (गुर्जरगौड) मे भी सगठित अभियान शुरू किया। कोटा, रतलाम और आकोला के अ० भा० गुर्जरगौड सम्मेलनो मे उन्होंने सामयिक दृष्टिकोण अपनाने का सदेश फेंका और राष्ट्रीय हित को सर्वोच्च प्राथमिकता देने की बात कही।

अ० भा० गुर्जरगौड़ महासम्मेलन का रजत-जयती अधिवेशन श्रोत्रियजी ने उदयपुर मे ही आमन्त्रित किया। वही इसके स्वागताध्यक्ष थे। इस अवसर पर उदयपुर मे महासम्मेलन के आठ भूतपूर्व अध्यक्ष एकसाथ एकत्रित हुए। धन देकर अध्यक्ष बन जाने की परम्परा भी उदयपुर मे ही तोडी गई और सरदारशहर के श्री गौरीशंकर आचार्य को महासभा का अध्यक्ष चुना गया। अगला अधिवेशन भीलवाडा मे सम्पन्न हुआ तो वहां भी श्रोत्रियजी का योगदान उल्लेखनीय रहा।

खादी का प्रचार—

श्रोत्रियजी का एक काम समाप्त होता कि वे दूसरे काम को शुरू कर देते। अकाल की स्थिति में सुधार आते ही उन्होने खादी के प्रचार के लिये प्रदर्शनिया लगाने का कार्यक्रम बनाया। खादी के प्रचार के नाम पर उन्होने सभाए करने की आज्ञा भी प्राप्त कर ली। उन सभाओं मे श्रोत्रियजी काग्रेस का तिरगा झण्डा भी लगाया करते। एक दिन मेवाड के पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट ने झण्डा देखा तो उसे उतरवा लिया और श्रोत्रियजी को पकड लिया। शिकायत सर टी. विजयराघवाचारी तक पहुची। वहां उनसे पूछा गया कि उन्होने मेवाड़ का झण्डा न लगाकर काग्रेस का झण्डा क्यो लगाया ?

श्रोत्रियजी ने उत्तर दिया कि मेवाड के झण्डे का रंग काला है और काला रंग अशुभ होता है। फिर काग्रेस का झण्डा खादी का झण्डा है और यह खादी के प्रचार की ही प्रदर्शिनी है। हमने झण्डा अपनी दुकान के भीतर सजावट के लिये लगाया है, किसी आन्दोलन के लिये नही।

सर टी. विजयराघवाचारी ने यह दलील सुनकर झण्डा लगाने की आज्ञा दे दी। वस्तुत मेवाड़ राज्य के प्रधानमत्री होकर भी वे मन से सत्याग्रहियो के साथ थे। खादी-प्रदर्शनियो के इस मंच से



श्रोत्रियजी ने एक ओर स्वदेशी भावना का प्रचार किया, दूसरी ओर लोगो में गुलामी की जंजीरे तोड़ फेंकने की प्रेरणा जगाई। बाद मे तो श्रोत्रियजी ने सर टी विजयराघवाचारी से मिलकर मेवाड़ के अनेक गरीब छात्रो की छात्रवृत्तिया दिलवाईं। इससे पूर्व यह राशि मेवाड़ मे उच्च पदो पर आसीन दूसरे प्रान्तो के अधिकारियो द्वारा गैर मेवाड़ियों को दे दी जाती थी।

इस समय तक मेवाड़ पर यह दबाव काफी बढ चुका था कि प्रजामण्डल पर से प्रतिबन्ध हटाया जाय। अकाल राहत कार्य मे योगदान करके प्रजामण्डल के कार्यकर्त्ता मेवाड शासन की भी प्रशसा प्राप्त कर चुके थे। सर टी. विजयराघवाचारी भी कार्यकर्त्ताओ से दिली सहानुभूति रखते थे। अतः मेवाड़-शासन ने प्रजामण्डल पर लगी पाबन्दी को हटा लिया। कार्यकर्त्ताओ को सविधान की मर्यादा मे उत्तरदायी शासन की माग करने का अधिकार मिल गया। प्रजामण्डल के इस आन्दोलन की एक उल्लेखनीय विशेषता यह रही कि एक भी कार्यकर्त्ता माफी मागकर जेल से नहीं छूटा।

तब श्रोत्रियजी ने कार्यकर्त्ताओं मे यह भावना जगाई कि एक ओर स्वतन्त्र धन्धा करके पारिवारिक जिम्मेदारिया सभाली जाय, दूसरी ओर स्वतत्रता-आन्दोलन को चलाया जाय, ताकि कार्यकर्त्ता पूर्ण आत्मनिर्भर होकर कार्य करते रह सकें। श्रोत्रियजी ने सूरजपोल मे एक रेस्तरा चलाया जिसमे वे अनेक अखबार खरीदकर रखते और लोगो का जमघट लगा रहता। श्री परशुराम अग्रवाल ने दूध की दूकान चलाई। श्रोत्रियजी ने इसी बीच नवज्योति के ११ अको मे धारावाहिक रूप से अपने जेल जीवन के सस्मरण भी प्रकाशित किये।

मेवाड़ प्रजामण्डल का अधिवेशन—

सन् १९३९ मे मेवाड प्रजामण्डल का प्रथम अधिवेशन उदयपुर में आयोजित किया गया। शाहपुरा की हवेली मे यह भव्य आयोजन सम्पन्न हुआ। श्रीमती विजयलक्ष्मी पण्डित, आचार्य कृपलानी तथा श्रीमती सुचेता कृपलानी जैसे नेताओ ने अधिवेशन मे भाषण दिये। वक्ताओ ने मुकम्मिल आजादी हासिल करने के सकल्प को दोहराया। इस अधिवेशन मे प्रतिनिधि इतनी भारी सख्या मे एकत्रित हुए कि नगर की सभी धर्मशालाए मिलकर भी उन्हे व्यवस्थित रूप से नही ठहरा सकी। मेवाड़ प्रजामण्डल के मत्री के रूप मे श्रोत्रियजी का विशेष योगदान रहना ही था, सो रहा।

राज्य-कर्मचारियो का सगठन—

अधिवेशन के बाद राज्य कर्मचारियो को सगठित करने का कार्य-क्रम हाथ में लिया गया। यह कार्य भी गुप्त रूप से किया गया। श्री माणिक्यलाल वर्मा, दयाशकर श्रोत्रिय, मोहनलाल सुखाड़िया, श्री भूरेलाल बया, बलवन्तसिह मेहता, प्रेमनारायण माथुर और मथुरानाथ पचौली आदि इस कार्य मे लगे।

सगठन खड़ा करके उसे शासन से मान्यता दिलाने की माग उठाई गई। शासन ने मान्यता देना अस्वीकार कर दिया। फिर एक सत्याग्रह शुरू हुआ। ६०–७० राज्य कर्मचारी गिरफ्तार हुए। अत मे पाच व्यक्तियो की एक समझौता समिति का गठन दोनो पक्षो की सहमति से हुआ। माणिक्यलाल वर्मा, मोहनलाल सुखाड़िया, दयाशकर श्रोत्रिय और भूरेलाल बया इस समिति के सदस्य थे। समिति ने मान्यता पर

विचार करने से पूर्व सभी बन्दियों को रिहा करने की मांग की। सर टी. विजय राघवाचारी ने समिति की सिफारिश को स्वीकार करके सभी बदी सत्याग्रही राज्य-कर्मचारियों को रिहा कर दिया। तीन महीने के भीतर-भीतर सघ को मान्यता भी प्रदान करदी गई। इन कर्मचारियो ने आगे भी प्रजामण्डल की बडी मदद की।

बजट की आलोचना—

प्रजामण्डल ने उन दिनो तत्कालीन मेवाड शासन के कार्यों पर भी नजर रखना शुरू किया। उन्होने गुप्त रूप से मेवाड राज्य के बजट की प्रति प्राप्त की और उस पर पुस्तकाकार आलोचना लिखी। कार्यकर्त्ताओ को इस समय साइक्लोस्टाइल स्टेशनरी आदि रूप मे अनेक साधन भी गुप्त रूप से सरकारी कार्यकर्त्ताओ से ही प्राप्त होने लगे थे। मेवाड के राज्य कर्मचारियो का इसमें बडा सहयोग रहा। राजस्थान महिला विद्यालय भी तत्कालीन मुख्याध्यापिका सुश्री कुच्चोम्माल्ला बहिन तथा श्रीमती कमला श्रोत्रिय का भी इन गतिविधियो मे बडा योगदान रहा।

साहित्य-सम्मेलन—

उदयपुर मे राजस्थान हिन्दी साहित्य-सम्मेलन का अधिवेशन हुआ। मुनि जिनविजय इसके अध्यक्ष बने। सम्मेलन मे प्रांत भर के साहित्यकार एकत्रित हुए। उदयपुर मे यह अपने ढग का पहला व्यवस्थित कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। मेवाड प्रजामण्डल का इसकी व्यवस्था मे महत्त्वपूर्ण योगदान रहा।

थोड़े समय पश्चात् जयपुर मे अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन का अधिवेशन हुआ तो उदयपुर के कार्यकर्त्ताओ ने जयपुर जाकर अगला अधिवेशन उदयपुर मे आयोजित करने का निमत्रण दिया। फलस्वरूप अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन का अगला अधिवेशन, एक वर्ष बाद, उदयपुर मे आयोजित किया गया। श्री कन्हैयालाल माणिक्यलाल मुन्शी इसके अध्यक्ष थे और मुनि जिनविजय स्वागताध्यक्ष।

बगड़ी मे अखिल भारतीय गुर्जरगौड सम्मेलन हुआ तो श्री दयाशंकर श्रोत्रिय अखिल भारतीय गुर्जरगौड युवक सम्मेलन के अध्यक्ष बनाये गये। श्रीमती कमला श्रोत्रिय महिला सम्मेलन की अध्यक्षा बनाई गई।

दे. रा. प्रजा परिषद का अधिवेशन—

सन् १९४६ में उदयपुर मे देशी राज्य प्रजा परिषद् का पहला अधिवेशन सम्पन्न हुआ। श्री जवाहरलाल नेहरू ने इसकी अध्यक्षता स्वीकार की। शेख अब्दुल्ला, जयनारायण व्यास, कन्हैयालाल वैद्य, बलवन्तराय मेहता आदि प्रजा परिषद् के राष्ट्रीय नेता इस अधिवेशन में एकत्रित हुए। अधिवेशन की स्वागत-समिति का कार्यालय श्रोत्रियजी द्वारा सस्थापित महिला-मण्डल मे ही रक्खा गया। श्री कुंभाराम आर्य भी पुलिस की नौकरी छोड़कर सार्वजनिक क्षेत्र मे उतरे और इस अधिवेशन मे आये। श्रोत्रियजी ने इस अधिवेशन का निर्माण कार्य स्वय करवाया और प्रदर्शनी की पूरी व्यवस्था जमाई। भोजन तथा अन्य व्यवस्था



कार्यो मे भी वे रात दिन लगे रहे। यों वे स्टेज-पडाल आदि के संयोजक और स्वागत-समिति के सदस्य थे।

सभी देशी राज्यो के प्रतिनिधि बडी सख्या मे इस अधिवेशन मे एकत्रित हुए। प्रजा परिषद् के मच पर यह एक ऐतिहासिक उपस्थिति घोषित की गई। अधिवेशन मे देशी राज्यो की समस्याओ का खुलकर मथन किया गया। अध्यक्ष श्री नेहरू का जुलूस इतना भीड भरा रहा कि जलूस निकलने के बाद करीब १५० जूते सडको पर ऐसे पडे हुए मिले जो ठसाठस भीड मे नागरिको के पावो से निकल गये थे और जिन्हे दुबारा पहना नही जा सका। करीब २ लाख लोग इस अधिवेशन मे उपस्थित थे। श्रोत्रियजी ने करीब ३ माह तक रात-दिन एक करके इतने विराट आयोजन की व्यवस्था को सभाला और उसे सफलतापूर्वक सम्पन्न करवाया।

महिला-मण्डल मे श्री नेहरू–

खुले अधिवेशन मे कश्मीर के तत्कालीन 'शेरे-कश्मीर' श्री शेख अब्दुल्ला का भाषण चल रहा था। श्रोत्रियजी अनेक व्यवस्था-कार्यों में व्यस्त थे। तभी नेहरूजी ने सोचा कि इस भाषण के बीच महिला-मण्डल को देखकर श्रोत्रियजी के आग्रह को पूरा किया जाय।

उस समय जो कार्यकर्त्ता मिले, उन्ही को लेकर वे महिला-मण्डल देखने चल दिये। रात के लगभग ८॥ का समय था। श्रोत्रियजी अधिवेशन-स्थल पर ही थे और नेहरूजी की इस यात्रा के प्रति सर्वथा अनभिज्ञ थे। दुर्भाग्य से उस समय बिजली भी बिगड गई थी। फलस्वरूप महिला-मण्डल मे भी अधेरा था, लेकिन नेहरूजी को तो महिला-मण्डल देखना था, इसलिये उन्होने चौकीदार से किवाड खुलवाये और अधेरे मे ही महिला-मण्डल के सूने भवनो और बगीचे को देखने लगे। चौकीदार बिचारा कितना और क्या बता पाता? फिर भी, उसने माचिस की तीलिया जला जलाकर नेहरूजी को महिला-मण्डल की सैर कराई। महिला-मण्डल मे उन दिनो सीमेन्ट से भारतवर्ष के एक विशाल मानचित्र बना हुआ था। नेहरूजी काफी देर तक उसे देखते रहे। बाद में उन्होने विश्राम करते हुए दो सिगरेटें एक साथ जलाई और शेख साहब का लम्बा भाषण समाप्त होते होते लौटकर अधिवेशन-स्थल पर आ गये।

महाराणा का गुप्त सहयोग–

यह भारत की स्वतत्रता से लगभग एक वर्ष पूर्व का समय था। अधिवेशन की तिथियो मे मेवाड के तत्कालीन महाराणा श्री भूपालसिंहजी उदयपुर में नही रहे। उन्होने जयसमन्द मे मुकाम किया। उन्होने वहा से सदेश भेजकर नेहरूजी को जयसमन्द देखने के बहाने मिलने बुलाया, उनसे भेंट की और गुप्तरूप से अपना आर्थिक सहयोग प्रदान किया।

इस समय तक श्रोत्रियजी प्रात और देश के अनेक सम्मेलनो मे जाने लगे थे। जहा भी किसी आयोजन की घोषणा होती, श्रोत्रियजी स्वत भी वहा पहुँच जाते। धौलपुर मे श्री जुगलकिशोर चतुर्वेदी,



हाड़ौती में श्री नयनूराम व श्री अभिन्नहरि अलवर में लक्ष्मणस्वरूप त्रिपाठी व उनके साथियों का श्रोत्रियजी से सपर्क बना रहता और अनेक कार्यक्रम आयोजित होते रहते।

सीकर मे जिला राजनैतिक सम्मेलन हुआ तो कलकत्ता के श्री आनन्दीलाल पोद्दार उसके अध्यक्ष बने। कमलाजी महिला सम्मेलन की अध्यक्षा थी। जानकीदेवी बजाज ने इस सम्मेलन का उद्घाटन किया था।

बम्बई के अखिल भारतीय मारवाडी सम्मेलन तथा वर्धा के अखिल भारतीय महिला कार्यकर्त्ता सम्मेलन को भी श्रोत्रियजी का सक्रिय सहयोग मिला।

मेवाड के राजवश की समर्थक क्षत्रिय सभा भी उन दिनो सक्रिय थी। क्षत्रिय सभा और प्रजा-मण्डल के लक्ष्य परस्पर विरोधी थे। क्षत्रिय सभा राजवश और सामन्ती व्यवस्था की पक्षधार थी जबकि प्रजामण्डल स्वतत्रता प्राप्ति का आन्दोलनकर्त्ता था। प्रजामण्डल ने झण्डे को लेकर दोनों दलो में थोड़ा तनाव बढा। प्रजामण्डल ने झण्डे के मसले को लेकर जुलूस निकाला। कोतवाली घण्टाघर के पास भारी भीड़ इकट्ठी हो गई। प्रदर्शनकारी भी जोश मे थे और पुलिस भी दमन पर उतारू थी। अकस्मात ही भीड अनियन्त्रित होने लगी और पुलिस ने व्यवस्था पर काबू पाने के बजाय गोली चलादी। भीड में भगदड मच गई। गोली-काण्ड में शाति और आनन्दी नाम के दो निर्दोष युवक मारे गये। श्री गुलाबसिंह शक्तावत और श्री नन्दकुमार त्रिवेदी घायल हुए। श्री परशुराम त्रिवेदी को भी चोट आई। भगदड से घायल होने वाले भी भारी सख्या में रहे।

क्षत्रिय सभा बनाम प्रजामण्डल—

समय बदला। देश की हलचल उभरी। रजवाडो में भी दोहरी गुलामी के बन्धन काट फेंकने के प्रतीरोध ने अधिक गति पकडी। अतत. ब्रिटिश हुकूमत ने रजवाडो में लोकप्रिय शासन की स्थापना की और उदयपुर में इसी के साथ मेवाड प्रजामण्डल को पूर्ण राजनैतिक मान्यता प्राप्त हो गई।

लोकप्रिय शासन मे सर्वश्री हीरालाल कोठारी, मोहनलाल सुखाडिया और ओछडी के ठाकुर रघुवीरसिंह को लोकप्रिय मत्री पदो पर नियुक्त किया गया। एसेम्बली के चुनावों की घोषणा कर दी गई।

संयुक्त राजस्थान—

शीघ्र ही स्वतन्त्रता का सवेरा उदित हुआ। कोटा, बूंदी, शाहपुरा, किशनगढ आदि राज्यो का संघ बना, फिर उदयपुर तथा अन्य समीपवर्ती राज्यो को मिलाकर सयुक्त राजस्थान की स्थापना हुई। उदयपुर राजधानी बना और वर्माजी सयुक्त राजस्थान के पहले मुख्यमत्री बने। मेवाड़ के महाराणा राज-प्रमुख और कोटा के महाराव उप राजप्रमुख घोषित किये गये।

बाद मे राजस्थान की सभी रियासतो का विलीनीकरण करके बृहद् राजस्थान की स्थापना की गई। जयपुर बृहद् राजस्थान की राजधानी बना और श्री हीरालाल शास्त्री को मुख्यमत्री बनाया गया। अजमेर-मेरवाड़ा अभी केन्द्र शासित प्रदेश ही बना रहा।



मत्स्य राज्य की स्थापना—

अलवर, भरतपुर करौली और धोलपुर राज्यो को मिलाकर जब 'मत्स्य-प्रदेश' का गठन किया गया तो वहा के कार्यकर्त्ताओ ने श्रोत्रियजी को विशेष निमत्रण देकर आमन्त्रित किया। श्री शोभारामजी, चिरजी-लाल शर्मा और मास्टर भोलानाथ आदि मत्री बने। तब श्रोत्रियजी और उनके साथियो ने तत्कालीन मत्स्य राज्य के अनेक गावो मे सभाए की और जनता के शासन की घोषणा की, अलवर नगर के होप-सर्कस नामक स्थान पर भी अनेक सभाए की गई। महिला सम्मेलन की अध्यक्षा थी श्रीमती कमला श्रोत्रिय और उद्घाटन किया श्रीमती जानकीदेवी बजाज ने।

इसी प्रकार जोधपुर राज्य की स्थापना के समय भी श्री जयनारायण व्यास ने श्रोत्रियजी को विशेष निमत्रण भेजकर आमन्त्रित किया और उन्हे राजकीय अतिथि बनाया।

काग्रेस का जयपुर अधिवेशन—

अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी के जयपुर अधिवेशन के अध्यक्ष थे डा० पट्टाभिसीतारमैया। महिला-मण्डल ने इस अवसर पर जयपुर के लिये एकत्रित होने लगी समस्त महिला स्वय सेविकाओ को उदयपुर मे प्रशिक्षित करके जयपुर भेजा। महिला-मण्डल ने अपनी ओर से भी २०० स्वय सेविकाए जयपुर भेजी। उनकी वेशभूषा और प्रशिक्षण की व्यवस्था भी महिला-मण्डल के ही कन्धो पर थी। श्रोत्रियजी के कन्धो पर भोजन की व्यवस्था का भी कार्य था जिसे उन्होने बडी भूमिकाओं से निभाया। श्री दयाशकर श्रोत्रिय स्वागत समिति के सदस्य थे और श्रीमती श्रोत्रिय स्वागत समिति की कार्यकारणी की सदस्या तथा महिला सम्मेलन की सयोजिका थी।

ब्यावर मे देशी राज्यो मे होने वाले जुलमो का परिचय देने के लिये जो प्रदर्शनी आयोजित की गई, उसकी व्यवस्था में भी श्रोत्रियजी का भारी योगदान रहा। इस अधिवेशन में राजस्थान के अतिरिक्त अन्य अनेक देशी राज्यो के कार्यकर्त्ता भी भारी सख्या मे एकत्रित हुए।

महिला-संगठन का कार्य—

काग्रेस के जयपुर अधिवेशन की समाप्ति के उपरात राजस्थान के तत्कालीन प्रदेश काग्रेसाध्यक्ष ने इस आवश्यकता को तीव्रता से महसूस किया कि राजस्थान की महिलाओ को सगठित किया जाय। श्रोत्रिय-दम्पति को ही यह कार्य सौंपा गया। तब श्री और श्रीमती श्रोत्रिय ने तीन माह तक राजस्थान का व्यापक दौरा किया और प्रात की महिलाओ मे काग्रेस के सदेश को पहुचाया।

चुनाव संयोजक—

देश मे जब प्रथम आम चुनावो का समय आया तो राजस्थान मे काग्रेस को दक्षिणपथी ताकतो से कड़ी लड़ाई लड़नी पड़ी। उदयपुर की विधानसभायी सीट पर श्री सुखाड़िया को काग्रेस का टिकिट मिला।

महाराणा उदयपुर के कृपापात्र और प्रमुख सामन्त राव मनोहरसिंहजी बेदला एक प्रमुख प्रतिद्वन्दी उम्मीदवार के रूप मे सामने आये।

श्री सुखाड़िया ने तब श्री दयाशकर श्रोत्रिय को ही अपना चुनाव-सयोजक बनाया। श्रोत्रियजी सघर्ष की असलियत से परिचित थे। राव सा० को महाराणा का समर्थन प्राप्त था। अत श्रोत्रियजी दिन रात एक करके मेवाड़ मे काग्रेस की प्रतिष्ठा सभालने के कार्य मे जुट गये। अतत श्री सुखाडिया की विजय हुई।

जब श्री जयनारायण व्यास को किशनगढ का उपचुनाव लडवाया गया तब भी श्री सुखाडिया ने प्रथम आम चुनाव मे श्री श्रोत्रिय के कार्य के आधार पर श्रोत्रियजी को ही अपना प्रमुख सहयोगी बनाया। उस समय तीन तहसीलो का चुनाव प्रचार और व्यवस्था कार्य प्रात के तीन वरिष्ठ नेताओ को सौंपा गया। वे थे स्वय श्री मोहनलाल सुखाडिया, श्री कुभाराम आर्य और श्री मथुरादास माथुर, श्री सुखाडिया को सरवाड तहसील मिली। उन्होने अपनी ओर से सारा कार्य श्री श्रोत्रियजी को सौंप दिया। और आश्चर्यजनक परिणाम यह निकला कि अकेली सरवाड तहसील के मतो के बल पर ही श्री जयनारायण व्यास की विजय हुई।

विधायिका कमला श्रोत्रिय—

दूसरे आम चुनाव मे मेवाड के विधानसभा क्षेत्र से श्रीमती कमला श्रोत्रिय भी काग्रेस-टिकिट की उम्मीदवार बनी। मावली मे श्रोत्रिय दम्पति ने महिला—मण्डल के माध्यम से बडी सेवाऐ की थी और क्षेत्र के मतदाता उन्हे चाहते थे। महिला-मण्डल ने मावली क्षेत्र के १३३ गावो मे जमकर बहुमुखी ग्राम-सेवा की थी, जिसकी चर्चा आगे की जायगी।

अनेक टिकिटो का बटवारा होगया लेकिन कमलाजी का प्रस्ताव अनिर्णीत रहा। आखिर दिल्ली जाकर तत्कालीन काग्रेस—अध्यक्ष श्री ढेबर भाई से भेंट की गई तो उन्होने टिकिट का आश्वासन दिया। श्री जनार्दनराय भी टिकिट के उम्मीदवार थे। अतत श्रीमती कमला श्रोत्रिय को भीलवाडा से तथा श्री जनार्दनराय नागर को मावली से काग्रेस टिकिट दिया गया। कमला जी भीलवाडा से विजयी रही और विधान सभा का दायित्व सभाला।

बुनियादी तालीम का अखिल भारतीय सम्मेलन जिस समय सौराष्ट्र मे आयोजित किया गया था उस समय ढेबर भाई सौराष्ट्र राज्य के मुख्यमत्री थे। श्रोत्रियजी उस समय ढेबर भाई के परिचय मे आ चुके थे।

नगर काग्रेस के अध्यक्ष—

श्री दयाशकर श्रोत्रिय लगभग ६ वर्ष तक उदयपुर नगर काग्रेस के अध्यक्ष रह चुके हैं। अपने अध्यक्षीय कार्यकाल मे उन्होने अनेक सम्मेलन आयोजित किये और अनेक ठोस प्रवृत्तिया सयोजित की।



राजनैतिक सम्मेलनो के अलावा अखिल भारतीय इतिहास सम्मेलन, विज्ञान सम्मेलन और शिक्षा सम्मेलन भी आयोजित किये गये। शिक्षको का भी एक वृहद सम्मेलन आयोजित किया गया। टीसर्च-कान्फ्रेन्स के रूप में शिक्षक सघ का जन्म महिला–मण्डल मे ही हुआ। महिला-मण्डल में आयोजित इस प्रथम 'टीचर्स-कान्फ्रन्स की अध्यक्षता श्री हरिभाऊ उपाध्याय ने की। इस सम्मेलन मे राजस्थान के शिक्षको को व्यवस्थित रूप से सगठित करने का निश्चय किया गया।

भारत सेवक समाज—

भारत सेवक समाज की प्रवृत्तियो में भी श्रोत्रियजी सदैव सक्रिय रहे। समाज के प्रातीय अध्यक्ष थे, श्री म णिक्यलाल वर्मा। तब समाज का प्रातीय अधिवेशन नाथद्वारा में आयोजित किया किया। इसी के साथ अखिल भारतीय साधु सम्मेलन भी आयोजित किया गया। महिला–मण्डल परिवार ने इस विराट आयोजन की व्यवस्था को बडी कुशलता के साथ सभाला।

तत्पश्चात् भीलवाडा मे भी राजस्थान प्रातीय भारत सेवक समाज का अधिवेशन हुआ तो श्रोत्रियजी ने भीलवाडा जाकर उसकी व्यवस्था सभाली।

विभाजन और पुनर्वास-समस्या—

जब भारत और पाकिस्तान के नाम से हिन्दुस्तान का दो राज्यो मे विभाजन स्वीकार कर लिया गया तो साम्प्रदायिकता की आग से झुलसे हुए शरणार्थियो के झुण्ड भारत के विभिन्न प्रान्तो पर छाने लगे।

श्री मोहनलाल सुखाडिया उस समय पुनर्वास मत्री थे और उदयपुर पालिकाध्यक्ष थे डाक्टर श्री बख्तावरलालजी। श्रोत्रियजी उस समय नगर काग्रेस के अध्यक्ष थे।

श्रोत्रियजी ने शरणार्थियो के पुनर्वास-कार्य के बडी मुस्तैदी से सभाला। वे स्वयसेवकों की टोलिया लेकर हर ट्रेन पर जाते और शरणार्थियो को अपने साथ लेते। उन्हे अलग–अलग कैम्पों तक ले जाते। इस कार्य के लिये श्रोत्रियजी ने स्वय सेवको के विशेष दस्ते तैयार किये। उनके राशन, पढाई और सिलाई आदि की व्यवस्था की और साधन जुटाये। अनेक सस्थाओ को विभिन्न कैम्पो की सेवा का कार्य सौपा। महिला–मण्डल ने स्थानीय पचायतो नोहरे मे शरणार्थियो के लिये स्कूल चलाया। सिन्ध के नेता श्री जयरामदास दौलतराम और सेठ श्री जे० बी० मघाराम भी उन दिनो उदयपुर आये और राहत-कार्य देखकर सतोष प्रकट किया। जे० बी० मघाराम अपनी अतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त बिस्कुट फेक्टरी को उन दिनो उदयपुर मे स्थापित करने की सोच रहे थे। उन्हे हर सभव सहायता के आश्वासन भी मिले लेकिन बाद मे उन्होने ग्वालियर को इसके लिये उपयुक्त स्थान समझा।

गाधीजी की अपील—

करनाल मे उन दिनो केन्द्र सरकार ने ६० हजार शरणार्थियो का एक विशाल कैम्प चलाया था। मेजर जनरल नाथूसिंहजी तथा एक आई० ए० एस० अधिकारी श्री धवन इसका सचालन करते थे। तब



गांधीजी ने एक अपील प्रसारित की कि उन्हें अच्छे व्यवस्थापक स्वयं सेवकों की अविलम्ब आवश्यकता है। श्रोत्रियजी अपील देखते ही दिल्ली गये और बापू से मिले। बापू ने उस समय चार महिलाओं के एक दल को शरणार्थियों के सेवा-कार्य का प्रमुख दायित्व सौंपा था। चारों बहिनें ख्याति प्राप्त थी। वे थी श्रीमती सुचेता कृपलानी, डॉ० राजकुमारी अमृतकौर, रामेश्वरी नेहरू और डॉ० सुशीला नैयर। रामेश्वरी नेहरू ने श्रोत्रियजी को अपने दल में लिया। वे पूरे उत्साह के साथ सेवा-कार्य मे जुट गये। शरणार्थियो के दलों को मार्ग मे जा जाकर सहायता पहुँचाई जाती, उन्हे राहत केन्द्रो तक लाया जाता, अनाथ स्त्री, बच्चो को अलग कैम्पो मे लाया जाता, मां-बाप से बिछुडे बच्चो की जानकारी दर्ज करवाई जाती, बीमारो की चिकित्सा, खान-पान-वस्त्र आदि की व्यवस्था की जाती। उस समय लगभग ३० हजार कवल शरणार्थियो को वितरित किये गये। श्रीमती रामेश्वरी नेहरू श्रोत्रियजी की सेवाओं से बड़ी प्रभावित हुई और उन्हे आगे भी महत्त्वपूर्ण कार्य सौंप गये।

अनाथ स्त्रियो की सेवा--

थोडे समय पश्चात् शरणार्थियो की अनाथ स्त्रियो के कैम्प चलाने की अखिल भारतीय इन्चार्ज श्रीमती रामेश्वरी नेहरू नियुक्त की गई। उन्होने श्रोत्रियजी को एक पृथक कैम्प उदयपुर मे चलाने का दायित्व सौंपा जिसमे २५० महिलाओ को रखना था। श्रोत्रियजी ने स्थानीय गोवर्धन विलास मे इस कैम्प को लगाया। चक्रवर्ती राजगोपालाचारी ने इस प्रवृत्ति का उद्घाटन किया। तत्कालीन पुनर्वासमंत्री मोहनलाल सक्सेना ने समारोह की अध्यक्षता की।

विनोबा की उदयपुर-यात्राए

जयपुर के कांग्रेस अधिवेशन के उपरात आचार्य विनोबा पहली बार उदयपुर पधारे। श्रोत्रियजी के विशेष निमन्त्रण पर आपने यह कृपा की और सात दिन तक महिला-मण्डल मे रहे। तब उनके सचिव थे श्री दामोदर मूंदडा। माता जानकीदेवी भी उनके साथ थी। विनोबाजी उन दिनो वाहन का प्रयोग करते थे अतः रेल से ही उदयपुर आये थे। तब महिला-मण्डल मे सत विनोबा की प्रात. साय की प्रार्थना सभाओ मे करीब २॥-३ हजार व्यक्ति एकत्रित हुआ करते थे।

सत विनोबा जब दूसरी पद-यात्रा पर उदयपुर आये तो श्रोत्रियजी उस स्वागत-समिति के मत्री थे। श्रोत्रियजी ने उनके निश्चित मार्गों को साफ करवाया और उनके साथ कई दिनो तक पैदल घूमे। आचार्य विनोबा उन दिनो चौदह भाषाए सीख चुके थे और पन्द्रहवी भाषा सीख रहे थे। वे प्रात काल ३ बजे उठकर अपनी दिनचर्या शुरू कर देते थे।

उदयपुर जिले मे ही नहीं, डूंगरपुर और चित्तौड जिलो की पद-यात्रा मे भी श्रोत्रियजी उनके साथ थे। विनोबाजी के राजस्थान-प्रवेश की घड़ी मे भी वे स्वागत-स्थल पर थे। इस ससर्ग मे श्रोत्रियजी का अनेक राष्ट्रीय नेताओ से सम्पर्क हुआ। विदेशी भेंट कर्त्ताओ के सम्पर्क मे भी आये।



राजस्थान सेवा सघ–

श्रोत्रियजी ने राजस्थान सेवा सघ की सदस्यता भी ग्रहण की जिसका प्रातीय कार्यालय जयपुर मे था। श्री गोकुलभाई भट्ट, सिद्धराज ढड्ढा, गोरीशकर आचार्य, धीरेन्द्र मजूमदार, केसरपुरी गोस्वामी और मनोहरसिंह मेहता जैसे लोग उन दिनो राजस्थान सेवा सघ की प्रवृत्तियो मे सक्रिय थे। श्रीकृष्णदास जाजू सघ के कुलपति थे। सघ के किसी भी सदस्य के यहा वर्ष मे एक बार राजस्थान सेवा सघ के कार्यकर्ताओं का कैम्प आयोजित किया जाता था।

श्रोत्रियजी ने मावली तहसील के सागवा ग्राम मे इस कैम्प को आयोजित किया। प्रात भर के ७५ कार्यकर्त्ता एकत्रित हुए। श्रीकृष्णदास जाजू स्वय १ महीने के पूरे समय तक कैम्प मे रहे। कैम्प लगाने और स्वय बने रहने का उनका उद्देश्य भी यही था कि वे प्रत्येक कार्यकर्त्ता के निकट सम्पर्क में आ सकें।

कैम्प में कार्यकर्त्ताओ को पूर्ण स्वावलम्बन का प्रशिक्षण दिया जाता था। भोजन, कताई, बुनाई, सफाई आदि का सम्पूर्ण कार्य स्वय कार्यकर्त्ता करते थे। जो अपना सम्पूर्ण जीवन रचनात्मक कार्यों मे लगाने को तैयार होते, वही सघ के सदस्य हो सकते थे। कार्यकर्त्ताओ को निर्वाह व्यय भी सघ की ओर से ही मिलता था और उन्हें अपना कार्य-विवरण नियमित रूप से सघ को भेजना होता था।

राजस्थान सेवा-सघ के इस शिविर को सपन्न करने के थोडे समय पश्चात् श्रोत्रियजी दिल्ली गये और केन्द्रीय समाज-कल्याण बोर्ड की अध्यक्षा डॉ॰ दुर्गाबाई देशमुख से मिले। श्रीमती देशमुख श्रोत्रियजी की महिला कल्याण की प्रवृत्तियो से परिचित हो चुकी थी अत उनसे मिलकर वे प्रसन्न हुई और उन्होंने श्रोत्रियजी को समाज-कल्याण की एक महत्त्वपूर्ण प्रवृत्ति के सचालन का भार सौंप दिया।

मावली-प्रोजेक्ट ऐतिहासिक योगदान–

मावली (उदयपुर) तहसील के १३३ गावो की बहुमुखी और लम्बी सेवा का जो कार्य श्रीदयाशकर श्रोत्रिय और उनके महिला–मण्डल को मिला, वह उनके समाज सेवी जीवन की एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है। महिला–मण्डल की सेवा, और महिला–मण्डल के सस्थापक कार्यकर्त्ता दयाशकर श्रोत्रिय के कार्य अनुभव का यह प्रमाण था कि केन्द्रीय समाज कल्याण बोर्ड की ओर से उन्हे एक महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम के सयोजन का अवसर मिला।

ग्रामोत्थान के व्यापक कार्यक्रम के अन्तर्गत श्री श्रोत्रिय और उनके महिला–मण्डल परिवार ने करीब ८ वर्ष तक मेवाड़ के विस्तृत ग्रामीण क्षेत्र की सेवा की।

स्वास्थ्य-सेवा–

इस योजना के अनेक पहलू थे। कहा जा सकता है कि ग्रामोत्थान का कोई भी पहलू इससे छूटा हुआ नही था। महिला-मण्डल की मन्त्रिणी श्रीमती मोहनदेवी शर्मा इस कार्यक्रम की सयोजक थी। महिला-मण्डल आदिवासी छात्रावास की सुपरिन्टेन्डेन्ट श्रीमती कमला शर्मा ने प्रमुख ग्रामसेविका का दायित्व निभाया।



संस्था की ओर से इन गांवों के लिये स्थान स्थान पर आरोग्य-शिविर चलाये गये जिनमें आठ आठ हजार तक रोगी प्रतिदिन आने लगे। एलोपेथी के विशेषज्ञो के अतिरिक्त, महिला-मण्डल के प्रमुख और आजीवन सहयोगी वैद्यरत्न भवानीशंकरजी को इन शिविरो की मफलता का श्रेय जाता है। गावों के प्रमुख रोग नारू (बाला) की चिकित्सा की भी विशेष व्यवस्था की गई। वैद्यजी ने गावो को स्वास्थ्य की दृष्टि से समुन्नत बनाने का ध्येय लेकर छोटी बातो के भारी महत्त्व को समझाया और उन्हें प्रमाणित किया। जैसे उन्होने जल-शुद्धि आन्दोलन चलाया और शुद्ध जल का महत्त्व समझाया। उन्होंने दो प्रमुख रोग, (१) चर्मरोग और (२) खल्वाट (गंजापन), को सरल और चमत्कारिक नुस्खो से ठीक किया। खल्वाट रोग के निदान के लिये वे मोटरों के जले हुए तैल का प्रयोग करते थे। मारवाडी रिलीफ सोसायटी ने भी इस स्वास्थ्य-सेवा के लिये दो बार में आठ हजार रुपये की दवाईया भेजी। यह स्वास्थ्य शिविर अनेक स्थानो पर एक एक महीने के कार्य-काल के लिये चलाये जाते रहे।

शिक्षा-सेवा—

कार्यक्रम का दूसरा महत्त्वपूर्ण पहलू था शिक्षा-सेवा, प्रौढ-शिक्षण का दायित्व लेकर महिला-मण्डल के इन कार्यकर्त्ताओ ने 'Teach one-Each one' अर्थात् 'एक एक करके सबको साक्षर बना दो', का सकल्प लिया और तीन महीने मे लगभग बीस हजार लोगो को साक्षर बनाया। प्रोजेक्टर के माध्यम से ग्रामीणो मे अनेक विषयो की चेतना जगाई। भजन-गाने और उपदेश के मार्ग अपनाये गये। शिक्षाविद् डा० लबाक की पद्धति पर प्रभावी शिक्षण के अनेक प्रयोग किये गये। इस अभियान मे शिक्षा-विभाग के राजकीय शिक्षको का भी योगदान रहा। अवकाश प्राप्त शिक्षा-उपनिदेशक और लोकप्रिय शिक्षासेवी डा० शम्भूलाल शर्मा ने भी इस अभियान को अपनी महत्त्वपूर्ण सेवाए दी।

श्री दयाशकर श्रोत्रिय हर गाव और हर प्रवृत्ति का अवलोकन घूम घूमकर करते थे और सामयिक समस्याओ को हल करते हुए उन्हे आगे बढाते थे।

श्रमदान—

श्रमदान का महत्त्व समझाने और सामूहिक श्रम से स्वय सिद्धिया अर्जित करने का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए इन कार्यकर्त्ताओं ने प्रमुख सडको से जोडने वाली छोटी सडको (approach Roads) का निर्माण-कार्य हाथ मे लिया और अनेक सडकें तैयार की। सप्ताह मे एक बार गाव की सफाई का भी व्यापक कार्यक्रम सपन्न किया जाता। प्रत्येक ग्रामसेविका को तीन गावो के विविध कार्यक्रमो की देखरेख और सचालन का कार्य सौपा गया था।

गावो की आवश्यकता को राजकीय अधिकारियो तक पहुंचाकर अनेक गावो मे स्कूल, डाकघर, चिकित्सालय, तारघर आदि खुलवाये। नये कुए खुदवाये और उथले कुओं को गहरा करवाया गया।



धार्मिक-चेतना—

धार्मिक और नैतिक चेतना के अंतर्गत इस क्षेत्र के सर्वाधिक प्रसिद्ध धार्मिक स्थान पर वर्ष मे एक मेला लगाने का निश्चय किया गया। मेले के लिये डबोक के 'धूणी-माता' नामक स्थान को चुना गया। वहा एक विशिष्ट तिथि को देवी की मान्यता वाले अनेक लोग एकत्रित होते थे। दो वर्ष उस स्थान पर जाकर मेले की उपयोगियता की सभावनाओं का सर्वेक्षण किया गया। कुआ खुदवाकर पानी के अभाव को पूरा किया गया। रोशनी के लिये लैम्प लगवाये गये। तब मेले को व्यवस्थित रूप से लगवाने का कार्य शुरू हुआ। दुकानदारो को प्रोत्साहित किया गया और मेले का व्यापक प्रचार किया गया। तद्नन्तर लगभग ८ वर्ष तक इस मेले को योजनाबद्ध तरीके से सम्पन्न करवाया गया प्रति वर्ष पुलिस की गार्ड की व्यवस्था करवाई गई। पहाड पर चढने उतरने की पगडडिया ठीक की गई। औषधालय और प्याऊ की व्यवस्था की गई। सास्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किये गये।

इन दिनो भी वह मेला भव्य स्वरूप लेकर प्रतिवर्ष लगता है जिसमे मावली, गिर्वा, वल्लभनगर तथा अन्य तहसीलो की करीब ५० हजार लोग एकत्रित होते हैं और करीब ७०० दुकाने लगती हैं।

आदर्श-ग्राम—

'सागवा' को आदर्श-ग्राम के स्तर तक लाने का कार्य किया गया। योजनाबद्ध तरीके से गांव के हर पहलू को सभाला गया। सागवा मे एक विराट प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसमे अकेले राजकीय पक्ष के ही करीब ११०० लोग एकत्रित हुए। इन प्रवृत्तियो को प्रत्यक्ष देखकर महाराष्ट्र के लोक सेवी सत तुकडोजी अत्यन्त प्रभावित हुए। सत तुकडोजी उन दिनो बराबर के गाव गाव मे स्कूल खुलवाने का अभियान चला रहे थे और उन्होने महिला-मण्डल के कार्यक्रमो को बडी दिलचस्पी के साथ इनकी प्रवृत्तियो का निरीक्षण किया है।

विख्यात समाज सेवियो का पदार्पण—

राष्ट्र और प्रात के अनेक प्रसिद्ध समाज सेवियो ने गावो में जाकर इन प्रवृत्तियों का अवलोकन किया और गहरा सतोष प्रकट किया। गुरुकुल चितोड के स्वामी वृत्रानन्दजी, लोक नायक जमेश चौबे, आदर्श शिक्षक मोहनसिंह धावरिया, गाधी विधि के प्रातीय मत्री श्री केसरपुरी गोस्वामी, भीलवाडा क्षेत्र के सभी कार्यकर्त्ता श्री मनोहरसिंह मेहता, तत्कालीन मुख्य मत्री श्री मोहनलालजी सुखाडिया और श्रीमती सुखाडिया, मत्री श्री खेतसिहजी, श्री सिद्धराज डड्ढा, महारानी गायत्रीदेवीजी, श्री धीरेन्द्र मजूमदार तथा राजकीय और केन्द्रीय अनेक अधिकारियो ने इस व्यापक ग्रामोत्थान-कार्यक्रम का अवलोकन किया और सहायता पहुचाई। सार्वजनिक और राजकीय क्षेत्र के अनेक कार्यकर्ताओ ने पूरे मन और उत्साह के साथ इस अभियान को सहयोग किया।

इस वर्ष का यह सेवा-कार्य श्री दयाशकर श्रोत्रिय और महिला मण्डल के समाज-सेवा-कार्य का एक महत्त्वपूर्ण अध्याय है।

गांधी-पखवाड़ा—

श्री जवाहरलाल नेहरू के प्रधानमंत्रित्व-काल में जब देश भर मे गाँधी जानी पखवाड़ मनाया गया तो श्री दयाशकर श्रोत्रिय के सयोजन मे, स्थानीय लम्बरदार उच्च माध्यमिक विद्यालय के भवन मे १५ दिन की विशाल गांधी दर्शन-प्रदर्शनी आयोजित की गई। दिन भर प्रदर्शनी में दर्शको का ताता लगा रहता और प्रति रात्रि को सभाओ का आयोजन किया जाता। इस प्रकार नागरिको को पूज्य बापू के सिद्धातो की जानकारी सभाओं मे मिलती और उसका व्यावहारिक रूप प्रदर्शनी मे देखने को मिलता। प्रतिदिन १२ से ५ तक बडी भारी सख्या मे नागरिको ने इस प्रदर्शनी का पूरा लाभ उठाया। जनहित शिक्षा विभाग और अनेक कार्यकर्त्ताओ का भी महत्त्वपूर्ण योगदान रहा।

गाँधी दर्शन के ही सदर्भ मे एक उल्लेखनीय तथ्य यह भी है कि श्रोत्रियजी ने १६ वर्ष की आयु मे खादी पहनी और उनका तथा श्रीमती श्रोत्रिय का यह व्रत आज तक चल रहा है। उन्होंने खादी और स्वदेशी भावना का व्यापक प्रचार किया, खादी की हुण्डिया वेची, खादी-प्रदर्शनिया लगाई और यह सभी प्रवृत्तिया आज भी उनके द्वारा सचालित होती रहती है।

बिजौलिया-अधिवेशन—

श्री विजयसिंह पथिक की कर्मभूमि बिजौलिया में मेवाड़ प्रजामण्डल का चौथा अधिवेशन हुआ। श्री भूरेलाल बया उसके अध्यक्ष थे। श्री माणिक्यलाल वर्मा, श्री मोहनलाल सुखाडिया और श्री प्रेमनारायण माथुर प्रभृति प्रतिनिधि कार्यकर्त्ता तथा लगभग १५ हजार नागरिक इस अधिवेशन मे एकत्रित हुए। श्रोत्रियजी तो थे ही।

अधिवेशन की एक सार्वजनिक सभा जब अपने पूरे जोश मे थी, तभी एक व्यक्ति ने अकस्मात जोर से चिल्लाकर सभा को यह जानकारी दी कि श्री विजयसिंह 'पथिक' को उसने अभी अभी रायता गाव में देखा है। फिर क्या था ? सारी जनता उठ खडी हुई और एक भारी भीड़ रायता गाव की ओर रवाना हो गई। वक्ता, और उनके भाषण मच तक ही सीमित रह गये। लगभग एक घण्टे बाद नागरिको की एक विशाल भीड अपने लोकप्रिय नेता विजयसिंह 'पथिक' का जुलूस लेकर अधिवेशन—स्थल की ओर लौट रही थी। पथिकजी देश की स्वतन्त्रता के क्रान्तिकारी आन्दोलन मे सक्रिय थे लेकिन प्रजामण्डल के सदस्य नही थे। फिर भी नागरिको ने उन्हे जबरन मच पर प्रतिष्ठित किया और पुन. सभा शुरू होगई।

अपने नेता के साथ क्षेत्रीय जन-समुदाय का इतना व्यापक, इतना ठोस और इतना आत्मीय प्रभाव राजस्थान के क्रातिकारी आन्दोलन का एक महत्त्वपूर्ण पृष्ठ है।

संस्कृत-सेवा—

सस्कृत-पण्डितो के सरक्षण में पले और किशोर वय मे संस्कृत भाषा में काव्य-रचना तक करने वाले श्रोत्रियजी ने अपने जीवन मे सस्कृत भाषा और साहित्य के विकास की प्रवृत्तियो में भी बडे उत्साह के साथ भाग लिया। राजस्थान सस्कृत-सम्मेलन के कई अधिवेशनो मे वे सम्मिलित हुए। सम्मेलन के भीलवाड़ा



अधिवेशन की व्यवस्था को उनका महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। श्री स्वरूपनारायण पुरोहित इस अधिवेशन के अध्यक्ष थे और विख्यात सस्कृत-सेवी तथा शिक्षाविद प॰ लक्ष्मीलाल जोशी स्वागताध्यक्ष थे। श्री मोहनलाल सुखाडिया ने इसका उद्घाटन किया था।

विलुप्त साहित्य–

सस्कृत, हिन्दी और राजस्थानी के प्राचीन साहित्य की खोज एव सग्रह में भी उनका योगदान रहा प॰ लक्ष्मीलाल जोशी की प्रेरणा से वे अनेक जागीरदारो के पास गये और अनेक पाण्डुलिपिया प्राप्त की। जहा भी कुछ प्राप्त होने कि आशा बन्धती, श्रोत्रियजी वहा पहुच जाते।

प्रवासी राजस्थानियो से सपर्क–

श्रोत्रिय जी ने जहा भी, जिस समय भी और जिस प्रकार भी किसी से एक बार परिचय प्राप्त कर लिया, फिर उसे उन्होने सदैव बनाया रक्खा और दिनो दिन घनिष्ट भी किया।

पूना के अखिल भारतीय मारवाडी सम्मेलन मे उन्होने भाग लिया। श्री रामेश्वर टाँटिया उसके अध्यक्ष थे और उद्घाटन श्री मोहनलाल सुखाडिया ने किया था। इस सम्मेलन मे महिला-मण्डल के ५-६ व्यक्ति सम्मिलित हुए। महिला-सम्मेलन मे महिला-मण्डल की बहिनो ने भी भाषण दिये। कलकत्ता, बम्बई, पूना आदि स्थानो पर सम्पन्न प्रवासी राजस्थानियो की अनेक प्रवृत्तियो से वे जुडे रहे। अत स्वाभाविक ही था, कि अनेक प्रवासी राजस्थानियो ने महिला-मण्डल के विकास मे बड़ा योगदान किया और आज भी कर रहे है।

खेल-कूद--

खेल-कूद की प्रवृत्तियो मे भी उनकी सदैव रुचि बनी रही। छात्रो-छात्राओं के लिये खेल-कूद की प्रवृत्ति को वे शिक्षण का ही एक अनिवार्य अग मानकर चलते हैं। उनके अनुसार मानसिक स्वास्थ्य और शारीरिक स्वास्थ्य का घनिष्ट और अनिवार्य सम्बन्ध है। यही कारण है कि महिला-मण्डल मे खेल-कूद को सदैव उच्च प्राथमिकता दी गई और उसकी बालिकाओ ने खेल-कूद मे राजस्थान को राष्ट्रीय ख्याति पर तो पहुँचाया ही, उन्होने सफलता के अतर्राष्ट्रीय कीर्तिमान भी स्थापित किये। बगलोर, अजमेर और जयपुर आदि स्थानो पर आयोजित प्रतियोगिताओ मे महिला-मण्डल की शानदार सफलताए रही। उन्होने अपने निजी खर्चे पर भी अनेक प्रतियोगिताए आयोजित की और विजेता खिलाडियो को पुरस्कृत भी किया।

गाधी-शताब्दी समारोह–

देश भर मे गाधी शताब्दी समारोह की धूम रही। उदयपुर नगर के आयोजन की सफलता का बडा श्रेय श्री दयाशकर श्रोत्रिय को जाता है।

गाधी शताब्दी समारोह के अतर्गत वर्ष भर जो कार्यक्रम चले, उनके सयोजक का केन्द्र-स्थल 'महिला-मण्डल' ही बना रहा। मण्डल की मत्रिणी सुश्री मोहिनीदेवी शर्मा महिलाओ के कार्यक्रमो की

संयोजक रही। श्री श्रोत्रिय ने जिला स्तर पर प्रचार का कार्य हाथ मे लिया। महिला सम्मेलन आयोजित किये गये। गांव-गाव-गाधी दर्शन का प्रचार किया गया। जुलूस निकाले गये और साहित्य-वितरित किया गया।

श्रोत्रियजी ने गांव-गाव मे भारतीय सविधान की मूल प्रवृति, उद्देश्यो तथा नागरिको के मौलिक अधिकारों एव कर्त्तव्यो का भी जनता की भाषा में व्यापक प्रचार करवाया। गाव-गाव मे सूत्र-रूप मे महत्त्वपूर्ण जानकारी दीवारों पर लिखवाई गई। यह अभियान जिला-स्तर पर सयोजित किया गया।

धर्म-स्थान का जीर्णोद्धार–

धार्मिक और नैतिक आदर्शो के पुनरुत्थान तथा कलात्मक गौरव की रक्षा के लिये पुरातन अवशेषो की रक्षा का कार्य भी श्री श्रोत्रियजी के हाथो सम्पन्न हुआ।

उदयपुर के पीछोला-सागर के दूसरे तट पर स्थित सीसारमा ग्राम के श्री वैजनाथ महादेव के मदिर के जीर्णोद्धार का कार्य उनके अथक प्रयत्नो का ही फल है। वृजमोहन बिडला ने उनकी प्रार्थना को स्वीकार करके अपने जन-कल्याण ट्रस्ट से ३० हजार रुपये की स्वीकृति इसके लिये की और जीर्णोद्धार के लिये एक समिति का गठन किया गया। श्री दयाशकर श्रोत्रिय को उसका अध्यक्ष बनाया गया। श्री लालसिंह शक्तावत, वैद्य श्री भवानीशकर, श्री चतरलाल मूदडा, श्री गिरिधारीलाल शर्मा, श्री कालूलाल मेनारिया, श्री रोशनलाल नागदा और श्री बशीलाल भटनागर आदि व्यक्ति इस समिति मे लिये गये।

जीर्णोद्धार-कार्य आज भी प्रगति पर है और इस कार्य पर लगभग २५ हजार रुपया व्यय किया जा चुका है। पानी का कुण्ड गहरा करवाया गया है। कुण्ड पर पाइप लगवाया गया है और बगीचा तैयार किया गया है। खाना (भोग) बनाने के स्थान को ठीक बनवाया गया है। पुताई और सफाई का काम करवाया गया है। आज मन्दिर की रौनक ही और हो गई है। यह मन्दिर उदयपुर नगर की स्थापना के भी पूर्व का है। ऐतिहासिक दृष्टि से भी यह एक दर्शनीय स्थान है जहा वर्ष मे ३ मेले लगते हैं।

स्वास्थ्य पर संकट–

सघर्षशील जीवन की अनियमितताएं, जेल-प्रवास की यातनाएं, घुमक्कडी मे परिवर्तित जलवायु के प्रभाव आदि के फलस्वरुप श्रोत्रियजी अपने जीवनकाल मे अनेक रोगो से ग्रस्त हुए। पित्ताशय (गौलब्लेडर) का रोग उन्हे लगभग २५ वर्ष रहा। वैद्यरत्न श्री भवानीशंकरजी ने मात्र पथ्य के ही बल पर उसे वर्षों तक नियन्त्रित रक्खा। दौरा होने पर एलोपैथी के जानेमाने चिकित्सक और उदयपुर के पी. एम ओ डा शूरवीरसिहजी ने चिकित्सा दी और अतत. डा० गगवाल के हाथो सफल आपरेशन हुआ।

उन्हे हिरनिया का मर्ज भी रहा, जिसका आपरेशन डा० जे. पी. माथुर ने किया। डायबिटीज का भी उन्हे पुराना रोग है, जिसने उनकी कार्य-क्षमता और स्वास्थ्य पर काफी प्रभाव डाला है। डा० शूरवीर-सिहजी और वैद्यरत्न भवानीशकरजी के हाथो, जो उनके स्थायी चिकित्सक हैं, चिकित्सा चलती ही रहती है।



मई ७० मे उनकी दायीं आंख के मोतियाबिन्द का आपरेशन डा० कुलश्रेष्ठ ने किया । डायबिटीज से प्रभावित शरीर के कारण घाव भरने मे अपेक्षाकृत विलम्ब हुआ और वे आज भी स्वास्थ्य लाभ ही कर रहे हैं। फिर भी तत्परता से भरी उनकी दिनचर्या देखते ही बनती है। महिला-मण्डल के शिक्षण, खेलकूद एव प्रवृत्तियो का निरीक्षण एव मार्गदर्शन, आदिवासी छात्रावास एव बालवाडियो का सचालन, दानकर्ता धन-पतियो और प्रशासन से नियमित सम्पर्क एव पत्र-व्यवहार, नगर-क्षेत्र-जिले और प्रात की सार्वजनिक प्रवृत्तियो का सयोजन या सहयोग, काग्रेस के सृजनात्मक कार्यों मे योगदान, गाधी-दर्शन और भारतीय जीवन मूल्यो का प्रचार, सवैधानिक चेतना का प्रचार, देश की विख्यात शैक्षिक-सास्कृतिक सस्थाओ की यात्रा एव निरीक्षण आदि का कार्य चलता ही रहता है।

इतने सक्रिय इतने सघर्षशील और इतने उपलब्धिमूलक जीवन का इतिहास लेकर भी वे, अहकार और गौरव की भावना से शून्य, एक विनम्र और सामान्य कार्यकर्त्ता की ही भाति अपने कर्त्तव्य पथ पर अग्रसर हैं। कार्यकर्त्ता परिवार की छोटी से छोटी पक्ति के लोगो से उनका आत्मीय सम्पर्क रहता है और वे उसके सुख-दुख के भागीदार रहते हैं। चपरासी और चौकीदार तक से उनका शिष्ट और शालीन व्यवहार सस्था सचालक के रूप मे उनकी एक विशिष्टता है।

अनवरत सेवा–

महिला-मण्डल ही आज उनका स्थायी निवास-स्थान है जहा वे रातदिन सस्था के माध्यम से सेवा-कार्य मे सलग्न रहते हैं, आज नगर मे अनेक प्रवृत्तियो के नाम पर अनेक नये नामधारी लोग अपने योगदान को बढा चढा कर प्रदर्शित करने की होड मे सक्रिय हैं, जिनके बीच श्रोत्रियजी एक सामान्य कार्यकर्त्ता की भाति चुपचाप अपने ध्येय पथ पर अग्रसर हैं। आज उन्हे देखकर कोई अपरिचित व्यक्ति शायद कठिनता से यह अनुमान कर सकेगा कि उनका कर्मठ जीवन भारत की सार्वजनिक सेवा के इतिहास का एक महत्त्वपूर्ण पृष्ठ है। महात्मा गाधी और कस्तूरबा से लेकर विजयसिंह पथिक, माणिक्यलाल वर्मा और डा० मोहनसिंह मेहता तक के साथ एक विश्वस्त साथी के रूप मे सदैव जुडा रहने वाला यह कार्यकर्त्ता आज पीडित है तो मात्र यह देखकर ही कि जिस राष्ट्र मे सार्वजनिक-सेवा का इतना अविच्छिन्न और व्यापक कार्य-क्रम चला, वहा भी जन-जीवन का इतनी तेजी से नैतिक और सास्कृतिक ह्रास ही होता हुआ चला गया। वे किसको दोष दें ? कहते हैं कि सभवत हमारी सेवाओ में कोई कसर रह गई जिसका प्राय-श्चित हमे करते रहना चाहिये।

राष्ट्र और समाज की जीवन-व्यापी सेवाओ के धरातल पर आज वे बडे से बडा सम्मान, बडी से बडी मान्यता, बडे से बडा पुरस्कार पाने के अधिकारी हैं, लेकिन इस तरफ न उनका ध्यान है न ऐसी कोई आकाक्षा ही है। स्वय को सामान्य कार्यकर्त्ता मानकर चलना ही उनके जीवन की सबसे बडी विशिष्टता है।

श्रोत्रियजी आज भी थके नहीं हैं। उनका तन और उनका मन पूर्ण स्वस्थ होकर उनके साथ हैं। धन उन्होंने लाखो जुटाया लेकिन उसका उपयोग ही किया, जोडा नहीं। हर सभव साधन उन्हे आज भी उपलब्ध हैं। उनका सोचा हुआ कोई कार्य धन के अभाव मे न रूका है और न रुकेगा लेकिन सम्पत्ति और विरासत के नाम पर उनके पास खादी की पोशाकें, महिला-मण्डल का कल्पवृक्ष और सार्वजनिक सेवा का लम्बा इतिहास है, इसके सिवा कुछ भी नही। महिला-मण्डल का परिवार ही आज उनका परिवार है और राष्ट्र का भविष्य है।

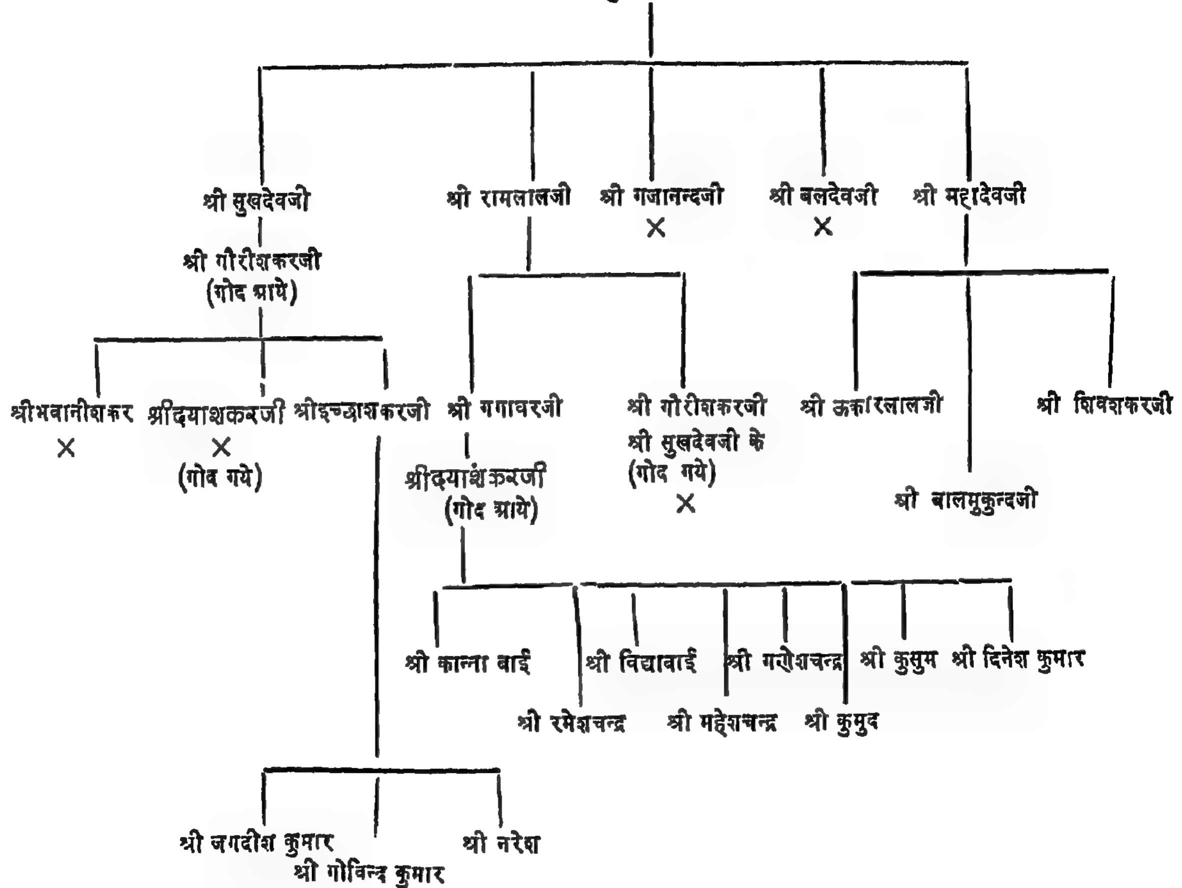
श्रोत्रियजी का भविष्य भी इस समाज, राष्ट्र और मानवता के कल्याण-यज्ञ में कुछ बहुमूल्य आहुतिया डालेगा, यह विश्वास हमे करना ही चाहिये। हम चाहते हैं कि उन्हे लम्बी और सफल आयु प्राप्त हो।

'जीवेत् शरदः शतम्'





श्री श्रोत्रिय परिवार का वंश-वृक्ष





← ● श्री दयाशकर श्रोत्रिय के पिता
पं गौरीशंकर श्रोत्रिय



← ● पुत्र और पुत्रवधू
श्री गणेशचन्द्र श्रोत्रिय
और श्रीमती कुसुम
श्रोत्रिय



श्री दयाशंकर श्रोत्रिय और श्रीमती कमला श्रोत्रिय एक पुरानी स्मृति



महिला मण्डल के विशिष्ट अतिथि, नेपाल के राणा महेन्द्र और राजरानी.



पुस्तकालय के उद्घाटनकर्ता उद्योगपति श्री मोहनलाल जालान



आचार्य विनोबा . आतिथ्य का सौभाग्य



विशाल राजस्थान के प्रथम मुख्यमन्त्री श्री हीरालाल शास्त्री तथा शिक्षामन्त्री श्री प्रेमनारायण माथुर के साथ मंडलके संचालक



श्री भूरेलाल बया, सहयोगी



संरक्षक, सेठ पूनमचन्द कमानी



संरक्षक सेठ सोहनलाल दूगड



संरक्षक, श्री हमेरलाल मुर्डिया, उदयपुर



संरक्षक, श्री पुरुषोत्तम रूंगटा, बम्बई



संरक्षक, सेठ श्री श्रीगोपाल मोहता



संरक्षक, सेठ श्री लक्ष्मीनिवास बिडला



संरक्षक, श्री गजाधर सोमाणी



संरक्षक, श्री भागीरथ कानोडिया



संरक्षक, श्री मंगतूराम जैपुरिया



संरक्षक, श्री मोहनलाल जालान





'पद्मश्री' डा० मोहनसिंह मेहता
महिला-मण्डल की प्रेरणा



श्री मोहनलाल सुखाडिया
महिला-मण्डल के अनन्य सहयोगी

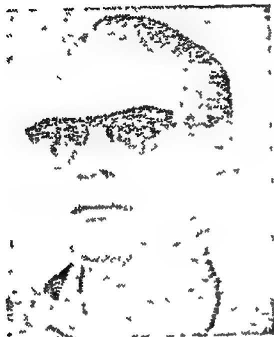


श्री वैद्यरत्न भवानीशंकर
कार्यवाहक स्वागताध्यक्ष



श्री दयाशंकर श्रोत्रिय

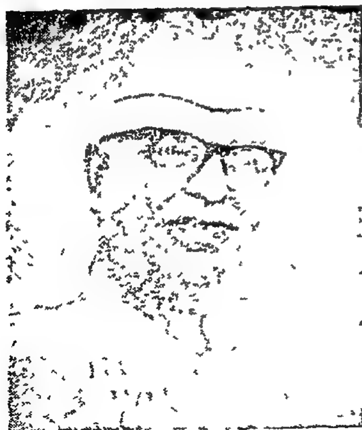
श्रोत्रियजी के पुराने साथी—



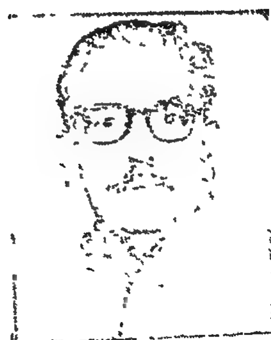
श्री पुरुषोत्तम चौधरी



श्री भैरुलाल व्यास



डा० देवीसिंहजी
स्वास्थ्य मन्त्री, मध्यप्रदेश



श्री चन्द्रशेखर शास्त्री
भीलवाड़ा

सेवा-रत श्रोत्रिय-परिवार —



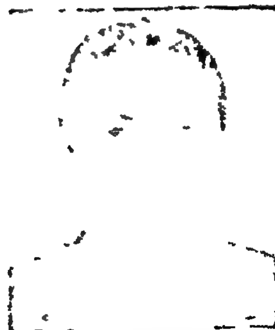
श्रीमती कमला श्रोत्रिय
महिला-मण्डल संस्थापिका



श्रीमती विद्या पानेरी (पुत्री)
उदयपुर



श्री रमेशचन्द्र श्रोत्रिय (पुत्र)
श्रम-पदाधिकारी, चित्तौड़गढ़



श्री महेशचन्द्र श्रोत्रिय
आकाशवाणी, उदयपुर



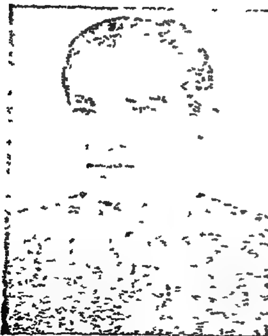
श्रोत्रिय-अभिनन्दन-ग्रन्थ के सहयोगी—



डा० कृष्णचन्द्र श्रोत्रिय
डिंगल साहित्य के विद्वान्



श्री शिवकुमार त्रिवेदी
सम्पादक-'लोकजीवन' भीलवाडा



डा० ओ० पी० कुलश्रेष्ठ
विख्यात नेत्र चिकित्सक, उदयपुर



डा० शान्ति भारद्वाज 'राकेश'
उपाचार्य मा.व. श्रमजीवी मा वि. उदयपुर





डा० पुरुषोत्तमलाल मेनारिया—

सपादक-दयाशकर श्रोत्रिय अभिनन्दन ग्रन्थ एव स्वागत मन्त्री नागरिक अभिनन्दन समिति।



श्रीमती जी० एस० राम—

प्रिंसिपल एस० टी० सी० स्कूल उदयपुर इससे पूर्व महिला-मण्डल हाई स्कूल की मुख्याध्यापिका।



डा० रुद्रदेव त्रिपाठी—

हिन्दी व सस्कृत के कवि। प्रवक्ता- लालबहादुर सस्कृत महाविद्यालय दिल्ली। ग्रन्थ के लेखक।





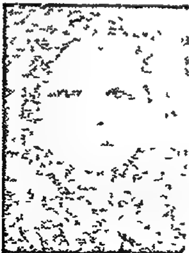
श्रीमती पुष्पा भटनागर—

एम० एस० डब्ल्यू० । मध्यप्रदेश समाज कल्याण विभाग मे शोध अधिकारी । ग्रामीण एव आदिवासी क्षेत्रो की विशेष सेवा । बाल-शिक्षण मे योगदान । महिला-मण्डल के सहयोगी और भटनागर डा० उदयसिंह भटनागर की सुपुत्री ।



डा० शान्ति मलिक—

एम० ए० बी० टी०, पी-एच० डी० । 'हिन्दी नाटको मे शिल्प विधि का विकास' पर शोध प्रबन्ध । वाद-विवाद एव अभिनय के पुरस्कार जीते। १५ वर्ष से अध्यापन । वरिष्ठ अध्यापिका राजकीय महाविद्यालय, हिसार (हरियाणा) ।



चन्द्रवति प्रभा—

लेखिका और कवियत्री । मध्यप्रदेश के शैक्षिक सांस्कृतिक जीवन मे विशेष सक्रिय । भारत की नारियो के विकासात्मक इतिहास का विशेष अध्ययन । पो० माधवगढ, जिला सतना, मध्यप्रदेश ।



श्रीमती राजनैयर--

महिला--मण्डल--परिवार से सम्बद्ध। चीनी आक्रमण के समय पति मोर्चे पर। श्रीमती नैयर श्रोत्रियजी के सरक्षण मे। कुशल और परिश्रमी शिक्षिका।



सुश्री शन्नोदेवी--

महाराजा कॉलेज से सस्कृत मे एम० ए०। सुजानगढ नगरपालिका की भूतपूर्व उपाध्यक्षा। वही हरिजन सेवक सघ की अध्यक्ष। कन्या--शिक्षा मे लम्बी सेवा। पचायत समिति की भूतपूर्व प्रधान। महिला--कल्याण केन्द्र की स्थापना।



श्रीमती के० लक्ष्मी रघुरमैया--

अनेक भाषाओ की लेखिका और समाजसेविका। संसार के नारी जागरण पर विशेष शोध मे सलग्न। ऑल इण्डिया वीमेन्स कान्फ्रेन्स की सचिव 'वीमेन्स इन्टर नेशनल लीग फोर पीस एण्ड फ्रीडम' की उपाध्यक्ष।





श्री चन्द्रसिंह नैनावटी—

प्रवक्ता— राजनीति शास्त्र उदयपुर विश्वविद्यालय। ग्रन्थ के महत्त्वपूर्ण लेखों के अनुवादक एवं लेखक। संयोजक—कार्यकर्त्ता-सम्मेलन। जागरूक और परिश्रमी समाज-सेवी।

श्री योगेशचन्द्र शर्मा—

विद्याभवन के भूतपूर्व वरिष्ठ कार्यकर्त्ता और महिला-मण्डल की प्रवृत्तियों के सहयोगी। मंत्री—सार्वजनिक शिक्षण संस्था संघ राजस्थान। इन दिनों राजस्थान विद्यापीठ में प्रशासन-सचिव।

श्री कालूलाल मेनारिया—

सक्रिय समाज-सेवी कार्यकर्त्ता।

अध्यक्ष—न्याय पंचायत सवीना। वैजनाथ महादेव जीर्णोद्धार समिति से सम्बद्ध। श्रोत्रिय-अभिनन्दन-ग्रन्थ के मुद्रक।

दयाशंकर श्रोत्रिय

संस्मरणों की छाया में



कर्मठ श्रोत्रिय दम्पति—

—श्री केसरपुरी गोस्वामी

सन् १९२७ की बात होगी कि गरमी की छुट्टियो मे एक दिन सायकाल स्काउट आश्रम भीलवाडा मे, भीलवाडा के ही एक नवयुवक आधी खादी और आधी मिल-वस्त्र की पोशाक में पडित की तरह धोती पहने, सर पर टोपी और शरीर पर कमीज जाकिट धारण किये हुए, मुझ से मिलने आये।

परिचय से मालूम हुआ कि यह हमारे भीलवाडा के प्रसिद्ध पडित श्री गौरीशकरजी श्रोत्रिय के सुपुत्र श्री दयाशकरजी श्रोत्रिय थे। इनके पिता श्री ने इन्हे अपने बडे भाई श्री गगाधरजी श्रोत्रिय के यहा बचपन से ही गोद रख दिया था। श्री गगाधरजी का बहुत पहले से ही स्वर्गवास हो चुका था। उनकी धर्मपत्नी श्रीमती एजन बाई इनकी गोद माता होने के नाते इनसे अधिक ममत्व रखती थी। इनका विवाह मध्य प्रदेश के इन्दौर राज्य के सरवण गाव के राज्य ज्योतिषी श्री प बिहारीलालजी की सुपुत्री सुश्री सज्जन-बाई से हुआ जिनका सुसराल का नाम कमलाबाई रखखा गया। कमलाबाई निपट निरक्षर थी। उस समय तक इनके कोई सतान नही थी। बातचीत से मालूम हुआ कि भीलवाडा आने से पूर्व ये तीन साल तक अहमदाबाद में वहा गुजरात के प्रसिद्ध गाधीवादी सेठ श्री कस्तूरभाई लालभाई के यहा मोटर चालक का काम करते थे। इससे सेठजी के साथ मोटर लेकर साबरमती आश्रम मे गाधीजी के पास जाना आना होता रहता था व फिर से साबरमती आश्रम मे रहे। वही से आत्म–विकास व देश–सेवा की प्रेरणा इन्हें प्राप्त हुई। और ये इसी धुन को लेकर भीलवाडा चले आये। भीलवाडा में इनके पडोसी मित्र श्री दलेल सिंहजी नैनावटी ने इन्हें कॉटन फेक्टरी भीलवाडा मे अस्थायी क्लर्क की जगह रखवा दिया था। इस स्थान पर इन्हे वर्ष मे चार माह बेकार रहना पडता था। आठ महिने में जो कुछ प्रति माह १५) २०), २५) रु० कमाते थे। उसी से अपनी माता सहित गुजर करना होता था। उन दिनो भीलवाडा मे सिवाय स्काउट सस्था के और कोई सार्वजनिक सेवा सस्था नही थी। इससे भाई दयाशकरजी स्काउट आश्रम में आये और परिचय होने के पश्चात् आश्रम मे बराबर आते रहते थे और हमारे साथ स्काउटिंग मे भाग लेते रहते थे। धीरे धीरे हम एक सूत्र मे बध गये और हमारा प्रेम परस्पर बढता गया जो आज भी सुदृढ है।

श्री दयाशकरजी ने महसूस किया कि सेवा के लिये जहा त्याग की आवश्यकता है, वहा योग्यता और क्षमता की भी आवश्यकता है। अत उन्होने हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग की परीक्षाओ की तैयारी करना प्रारभ किया और इनकी धर्मपत्नी श्रीमती कमलाजी को पढाना प्रारम्भ किया। कमलाजी इन दिनो पर्दा रखती थी। घूंघट और सास का सकोच होने के कारण रात्रि को ही पढना सभव होता था। किन्तु इसके लिये भी उपयुक्त स्थान इनके पास नही था। पैत्रिक सपति के रूप मे करीब १८ फीट लम्बा ९ फीट चौडा और ६ फीट ऊचा मिट्टी का घर और उसके बाहर छोटासा ढालिया मात्र था। दोनो ने मिलकर इसके पास ही १० फीट लम्बी ८ फीट चौडी व ५ फीट ऊचो मिट्टी की कुटिया बनाई और वही इनका सोने व पढने–पढाने का कमरा था। इन्ही दिनो इनके एक लड़की हुई। कमला बहन

दिन भर गृह कार्य में व्यस्त रहतीं और रात्रि को अपने पति देव के पास २–२।। घंटा रोज पढती। यों करते–करते कमला बहन दूसरी-तीसरी कक्षा समाप्त कर सकी। आखिर भाई दयाशकरजी को लगा कि न उनका व न कमलाजी का विकास भीलवाड़ा मे आगे हो सकता है। वो चाहते थे कि उन्हे अच्छा प्रगतिशील वातावरण मिले। कमलाजी घू घट छोडकर अपने जीवन मे परिवर्तन लावें। इसलिये कही बाहर जाने का निश्चय किया। उन दिनो उत्तर भारत मे सब से अधिक प्रगतिशील स्थान प्रयाग व बनारस माने जाते थे। शिक्षा में आगे कई सस्थाओ के व सेवाओ के केन्द्र ये स्थान थे व कई अच्छे अच्छे नेता भी वही थे। अत. प्रयाग जाने का ही इन्होने निश्चय किया।

मेवाड मे स्काउट सस्था के जन्म दाता श्रद्धेय भाई सा० श्री मोहनसिंहजी मेहता की सेवा में मैंने एक पत्र द्वारा इनकी इच्छा निवेदन की और उनसे प्रार्थना की कि वे प्रयाग मे इनकी सहायता करने के लिये किसी बडे व्यक्ति को लिखें। उन्होने वहा के कुछ लोगो के नाम पत्र लिख कर भेज दिये। इससे परिचय की एक बडी कठिनाई दूर हो गई। इनकी छोटी बच्ची व माता की पीछे देख भाल करने की जिम्मेदारी मैंने अपने ऊपर ली और मेरे मित्र एव मेरे सेवा कार्यो मे सदा सहायक भीलवाडा के मानसिंह का परिवार के भाई श्री दामोदरलालजी से निवेदन करने पर पीछे आर्थिक सहायता भी जुटा ली गई।

भाई दयाशकरजी ने कमलाजी का जो थोडा बहुत जेवर था वो बेच डाला उससे प्रयाग जाने का मार्ग व्यय तथा १०–१५ दिन निर्वाह हो सके, व पीछे अपनी माता का एक आध माह निर्वाह हो सके इतनी व्यवस्था कर डाली। दो-तीन वर्ष वहा रहना था। कमलाजी के लिये छोटी एक नोती बच्ची को घर पर छोड कर जाना बहुत ही कठिन था। सास वृद्धा थी। उसके लिये बच्ची के पालन-पोषण का काम भी कठिन था पर भाई दयाशकरजी की धुन के आगे किसी का बस नही था. जो होगा सो होगा। आत्म-विकास व देश-सेवा के लिये सब कुछ सहना होगा। ऐसा निश्चय कर ये दम्पति सन् १९३१ की जुलाई के प्रारभ मे भीलवाडा से प्रयाग के लिये रवाना हो गये।

प्रयाग मे श्रद्धेय भाई सा० मोहनसिंहजी के पत्रो से भाई श्री दयाशकरजी अ भा सेवा समिति मे श्रीरामजी भारतीय की सेवा में और इलाहबाद एग्रीकल्चरल इन्स्टीट्यूट मे डेरी विभाग मे सेल्स सुपरवाइजर रहे तथा श्री मूलचन्दजी मालवीय की देखरेख मे चलने वाले भारती-भवन पुस्तकालय मे सेवा करने के लिये रखे गये, और कमलाजी को उन्होने प्रयाग महिला विद्यापीठ मे छात्रावास मे, आगे पढने के लिये भर्ती करवा दिया। वहा कमलाजी का पर्दा छूट गया और तीनो वर्षों मे कमलाजी ने अच्छा विकास किया। प्रयाग महिला विद्यापीठ की प्रवेशिका. एव विद्याविनोदिनी एव विदुषी की परीक्षायें भी पास की। भाई दयाशकरजी ने भी हिन्दी साहित्य सम्मेलन की विशारद परीक्षा उत्तीर्ण की और दोनो के विचारो मे काफी परिवर्तन आया व प्रगति हुई। प्रयाग मे इनको कई देश के महान नेताओ व सेवको का सहज सत्सग मिला। प मदनमोहन मालवीय, उमा नेहरू (स्वर्गीय जवाहरलालजी की चाची) जिनके साथ कमलाजी ने महिला प्रौढ शिक्षा का कार्य किया। जवाहरलालजी नेहरू, बाजपेई, कैलाशनाथ काटजू, पुरूषोतमदास टडन कर्मवीर सुन्दरलाल, सग्रामलालजी अग्रवाल, पडित हृदयनाथ-कु जरू, श्रीरामजी भारतीय मोहनलाल नेहरू, मूलचन्दजी



मालवीय, माता रामेश्वरी नेहरू आदि के निकट सम्पर्क में आने का इन्हें सौभाग्य मिला। इसके इनको देश सेवा के विचार और घनीभूत हुए। वहा प्रयाग मे इनको किन-किन कठिनाइयो का सामना करना पड़ा ये तो ये ही जाने। पीछे इस बीच इनकी छोटी बच्ची का जिसे यह भीलवाडा छोडकर गये थे, अपनी लम्बी बीमारी से देहावसान हो गया। विधवा माता अकेली रह गई और जो उनके मन बहलाव व समय निकालने का खिलौना था वह भी चल बसा। माता इतनी वृद्ध होते हुए भी बडी साहसी थी अपना नित्य कर्म, सफाई, भोजन बनाना, नाज सफाई पिसाई स्वय करती थी और ईश्वर भजन मे लीन रहती थी।

सन् १९३४ मे जब इनके वापस लौटने का समय आया तब मैं विद्या भवन उदयपुर में स्टोर्स का काम करता था और कभी कभी छोटी कक्षाओ को पढा भी देता था। भाई श्रोत्रियजी वापस लौटने पर क्या करें इस पर भाई सा० से चर्चा हुई और तय हुआ कि ये आकर विद्याभवन मे छात्रावासो के भोजन व्यवस्था का कार्य सभालें। उसके अनुसार इनके लौटने पर इनको भोजन व्यवस्था का कार्य सौंपा गया।

सन् १९३५ मे कमला बहन भी अपनी पढाई समाप्त करके उदयपुर आ गई और इन्हे 'राजस्थान महिला विद्यालय' उदयपुर मे शिक्षिका का स्थान मिल गया। इस प्रकार ये दम्पति उदयपुर मे अपना सेवा कार्य करने लगा। कमलाजी विद्यालय के प्रौढ शिक्षा विभाग मे कार्य करने लग गई और थोड़े ही दिनों मे इन्होने उसमे असाधारण प्रगति कर दिखाई। इस बीच इन्हें तीन सतान भी हुई और कमलाजी अपनी घर गृहस्थी का सभी कार्य यथा विधि निपटा कर राजस्थान महिला विद्यालय मे अपना कार्य सुचारु रूप से करती रही।

सन् १९३८-३९ में देशी राज्यो में भी काग्रेस ने अलग नामो से राजनैतिक संगठन बनाने प्रारभ किये। मेवाड मे भी श्रद्धेय श्री माणिक्यलालजी वर्मा ने मेवाड प्रजा-मण्डल की स्थापना की। उदयपुर में इस सिलसिले मे धानमण्डी मे एक सार्वजनिक सभा का आयोजन किया गया, जिसका सयोजन श्री दया-शकरजी ने किया। उसी दिन कुछ नेताओ की गिरफ्तारिया हुई व इन्हे भी गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया और ६ माह की सजा सुना दी गई। इन ६ माह में कमला बहन को बहुत सी मुसीबतो का सामना करना पडा। महिला विद्यालय मे काम करते हुए, बच्चो की देखभाल रखना, उधर भीलवाडा मे अपनी वृद्धा सास की व्यवस्था, जेल मे श्री दयाशकरजी के लिये कुछ सामान आदि भेजना व उनकी चिन्ता सब इन्हे करनी पडती थी। इन सब मुसीबतो का सामना कमलाजी ने एक वीर महिला की तरह किया। उधर श्री दयाशकरजी को जेल मे जो की रोटिया, जिनमे ककर मिलाये गये और कई तरह की यातनायें अन्य सत्याग्रहियो के साथ इन्हे सहनी पडी। जो तो दयाशकरजी ही बता सकते हैं। मैं तो इतना ही जानता हू कि जेल से छूटने के बाद कई वर्षों तक इन्हे पेट के दौरे होते रहे। सप्ताह में एक या दो बार, कै होकर सिर-दर्द हो जाता। कभी कभी बुखार भी, और ये उस दिन बिना कुछ खाये पीये बिस्तर पर पडे रहते थे। अभी अभी ४ वर्ष पूर्व उनका उदयपुर मे पेट का आपरेशन हुआ और थेली मे से कई ककर निकाले गये तब उस रोग से उन्हे मुक्ति मिली।

--६ माह वाद जब पहली बार ये जेल की सजा- भोग कर बाहर आये तब इन्हें अपने निर्वाह की चिन्ता हुई। इन्होंने सूरजपोल बाजार में भीनीरेत में महादेवजी के मन्दिर के पास एक होटल चलाया। मैंने जब पहली बार होटल जाकर देखा और कुछ नमकीन वहां खाया तो मैं सोचता ही रह गया कि क्या-दयाशंकरजी को होटल चलाना चाहिये? यदि देश के इन सेवकों को होटल चलाने मे अपनी जिन्दगी लगानी पड़ी तो कैसे काम चलेगा? मैंने उसी-दिन सायंकाल को इनसे चर्चा की और कहा कि ये आपके स्वधर्म के अनुकूल नही है। होटल चलाने वाले देश में बहुत है। परन्तु सेवक कहां है। अत होटल चलाना बन्द कर दीजिये और सेवा के काम मे ही अपना जीवन लगाइये। क्या सेवा की ज.य इस पर सोचते हुए मैंने इन्हे सलाह दी कि कमलाजी महिला शिक्षा का कार्य करती रही हैं। महिल-मण्डल खोल कर उदयपुर मे महिला-सेवा का व्यापक कार्य कीजिये। आपकी व्यवस्था शक्ति, प्रचार शक्ति व कर्मठता से तथा कमलाजी के त्याग, सेवा व परिश्रम व लगन से महिला-मण्डल द्वारा महिला क्षेत्र मे बहुत बड़ी सेवा होगी। इनके मन को जँच गया। और होटल छोड़कर महिला-मण्डल की स्थापना इन्होंने पहले ही कर रखी थी, उसमें लग गये। महिला-सेवा की दृष्टि से, पर्दा निवारण प्रौढ बहिनो को पढ़ाना, समाज सुधार, विधवा सहायता आदि कार्यक्रम इन्होंने प्रारम्भ किये। कुछ दिनो बाद सन् १९४२ मे भारत छोड़ो आन्दोलन के अन्तर्गत इन्हे फिर जेल जाना पड़ा और इस बार ६ माह तक जेल मे रहना पड़ा। इस बार जेल मे इतना कष्ट नहीं हुआ जितना पहले हुआ। बल्कि बहुत आदर के साथ सत्याग्रहियो को रखा गया। जेल से जब बाहर आये तब फिर महिला-मण्डल के कार्य मे जुट गये। सन् १९४४ मे कमलाजी को भी महिला विद्यालय से मुक्त करा लिया और महिला-मण्डल के काम मे ही लगा लिया।

महिला-मण्डल के काम मे दत्त चित होकर लगे रहने पर भी भाई श्रोत्रियजी व कमलाजी कांग्रेस का कार्य करते रहते थे। वर्षों ये उसके अध्यक्ष भी रहे। सन् १९५७ मे कांग्रेस ने श्रीमती कमला बहिन को भीलवाड़ा क्षेत्र से विधायक बनाने का निर्णय लिया। भाई श्रोत्रियजी अपने दल बल सहित भीलवाड़ा आये। और कमलाजी को जीताकर ही विश्राम लिया। भीलवाड़ा से कमलाजी की जीत भारी बहुमत से हुई। कमलाजी ने विधायक के ५ वर्ष भी अच्छे ढग से निकाले। सन् १९६२ के अन्त मे विधायक का कार्यकाल समाप्त करके श्री कमलाजी अ० भा० कस्तूरबा ट्रस्ट की राजस्थान प्रदेश की प्रतिनिधि नियुक्त हुई। और तब से आज तक वह निष्ठा से प्रदेश मे कस्तूरबा ट्रस्ट का कार्य अच्छे ढंग से चला रही है। कमलाजी का विकास करने मे भाई श्रोत्रियजी ने सब कुछ किया।

इतना बडा परिवार होते हुए भी भाई श्री श्रोत्रियजी ने अपनी संतान की शिक्षा-दिक्षा की व्यवस्था उत्तम ढग से की। भाई श्रोत्रियजी आज भी महिला-मण्डल की सेवा मे लगे हुए हैं। इन्ही के त्याग व एकनिष्ठ सेवा से महिला-मण्डल देश की अच्छी संस्थाओ मे गिनी जा रही है। इनकी व्यवस्था शक्ति, प्रचार शक्ति की अच्छे-अच्छे लोग सदा सराहना करते रहे हैं। इस दम्पति का सेवा का इतिहास राजस्थान में सदा अमर रहेगा।

— मंत्री-राजस्थान प्रांतीय गांधी-निधि, भीलवाड़ा



मेरे अग्रज : मेरे राम

—श्री इच्छाशंकर श्रोत्रिय

जब मुझसे आदरणीय भाई साहब के सम्बन्ध मे कुछ लिखकर भिजवाने का आदेश हुआ तो मेरे समक्ष एक समस्या खडी हो गई। उस विराट व्यक्तित्व के महासागर से कौन सी बूंदे चुनू ? हर बूंद अपने आप मे महासागर हैं। आदरणीय भाई साहब सदैव ही मेरे पूजनीय, श्रद्धेय तथा अनुकरणीय रहे हैं। उनकी साधना ही तो हमारे वरदान हैं।

भाई साहब को देखकर मुझे एक ही स्वरूप का स्मरण होता है, और वह है मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम का। भाई साहब तो श्रीराम स्वरूप हैं, हा निश्चित हो मैं शतास भी भरत कहलाने योग्य नही। उनके असीम अक्षुण्ण और अक्षय स्नेह, दुलार और वात्सल्य मे सदैव ही डूबता तैरता रहा हू।

गिरतों को बाहें—

बात उन दिनो की है जब हम बाल्यावस्था की देहरी पार नहीं कर सके थे, और भीलवाडा रहते थे रेल्वे इन्जिन में पहले पहले ही हैड लाइट लगाने की व्यवस्था हुई थी। हैड लाइड वाला इन्जिन सभी के कौतूहल का केन्द्र बना हुआ था। भीड उमड रही थी स्टेशन पर। बीमार मैं, अपनी असमर्थता पर मन मसोसे बिस्तर पर पडा हुआ था। किसी तरह यह बात भाई साहब को ज्ञात हो गयी कि मैं इन्जिन देखने को आतुर हो रहा हू। फिर क्या था ? उन्होंने मुझे बीमार हालत में ही कन्धो पर बैठाकर स्टेशन ले जाना निश्चय कर लिया। अन्ध विश्वास और रीति-रिवाज की आड मे अभिभावको ने अनेकानेक आपत्तिया उठाई। किन्तु उन्होंने एक की भी परवाह नही की और अन्तत. वे मुझे कन्धो पर बिठाकर स्टेशन ले पहुचे। ठीक ही तो है—

कौन बडाई गये श्रृ ग पर अपना एक बोझ ढो कर।
कौन बडाई पार गये यदि अपनी एक तरी लेकर ।।
गरल-सुधा वाली यह धरती उसको शीश झुकाती है।
खुद भी चढे साथ ले, झुककर गिरतो को बाहें देकर ।।

भाई साहब की यह बाहे गिरतो के लिए सदैव ही कटिबद्ध रही हैं। उस हैड लाइट से रेल की पटरिया तथा पथ प्रकाशित हो पाये हो या नहीं, किन्तु यह निश्चित है कि मेरा जीवन-पथ इस तरह प्रकाशित हो गया कि तिमिर-बिन्दु को पथ मे कही भी रुक पाने का साहस नही हुआ।

भाई साहब अपने बाल्यकाल से ही मित, मृदु एव स्पष्टवादी ही रहे हैं। यही कारण है कि वे कभी भी किसी की मीठी आलोचना कर देने मे पीछे नही रहते। परिणाम यह होता है कि लोग प्र य बुरा मान जाते हैं, क्योंकि सत्य मे कटुता भी तो होती हैं। बात उन दिनों की है जब वे पाठशा न - विद्याध्ययन करते थे। अध्यापक के किसी एक निर्णय व नीति से वे सहमत नहीं हुए। फलस्वरूप अपने

मित्रों के बीच भाई साहब ने तथाकथित अध्यापकजी की जी भर कर आलोचना की। बात प्रधानाध्यापक तक पहुची और उनके पक्ष मे भाई साहब की पेशी हुई। छात्र वर्ग का अनुमान था कि अब वे अवश्य ही झूठ बोलेंगे और अपने द्वारा की गयी शिक्षक की आलोचना को स्वीकार नही करेंगे। क्योकि प्रधानाध्यापकजी के दण्ड बडे ही कठोर हुआ करते थे। कक्षा मे जाकर भाई साहब ने निर्भीकता से उस सारी की सारी आलोचना की पुनरावृत्ति कर दी। सत्याचरण ने दृढ कठोर एव अनुशासन प्रिय प्रधानाध्यापक को पिघला दिया, और दूसरे ही क्षण कमरे का वातावरण बदल गया। निर्दोष सत्यावलम्बित भाई साहब कमरे के बाहर सम्मान भेज दिये गये।

राम का गृह त्याग, परहित–

बात तो बरसो पुरानी है किन्तु अभी भी ताजी लगती है। किसी बात को लेकर ज्येष्ठ पुत्र और पिता मे मतभेद हो गया। मतैक्य हो ही नही पा रहा था। आवेश मे आकर पिताश्री इन्हे गृह त्याग का आदेश दे बैठे। मर्यादा-पुरुष पिता के आदेश को कब और कैसे उल्लघन करते? कुछ ही क्षणो मे 'परदेशी' बनने का निर्णय घोषित कर अपनी तैयारी करने लगे। पिताश्री को जब आदेश की गम्भीरता का ध्यान आया तो पश्चाताप हुआ। वे अपने आदेश को वापिस लेने तथा भाई साहब के अन्यत्र न जाने का आग्रह करने लगे। किन्तु भाई साहब कैसे रुक सकते थे? सेवा परोपकार और भक्ति का सकल्प पूरा जो करना था। जलते जख्म उनकी प्रतीक्षा जो कर रहे थे। तभी से सम्पूर्ण जीवन मानवता को समर्पित है इस महापुरुष का।

केवल बनाम केवट–

भाई साहब की स्मृति के कैनवास पर बने चित्रो के रग कभी फीके नही पडते। किशोरावस्था में सुखेडा (रतलाम के पास तत्कालीन एक स्टेट) मे उनके अनेक मित्र रहे। बाद मे रतलाम आने पर भी सहयोगियो और मित्रो की कमी नही हुई। आश्चर्य की बात तो यह है कि आदरणीय भाई साहब ने उनमे से एक को भी विस्मृत नही होने दिया और उनके प्रति भाई साहब का वैसा ही स्नेह और निष्ठा रही। कालान्तर में उनके कुछ मित्र राजकीय सेवा मे, कुछ अन्यत्र, कुछ राजनीति मे आ गये। उनके मित्रो मे से एक है मध्यप्रदेश शासन के स्वास्थ्य मत्री डा० देवीसिंह।

भाई साहब जब कभी भी रतलाम पधारते हैं तो देवीसिंहजी से मिलना नही भूलते। रतलाम आकर भाई साहब एक ऐसी झोपडी में भी जाते है जहा उनके एक मित्र श्री केवल रहते है। यद्यपि श्री केवल साख्यिकीय विभाग मे भृत्य है किन्तु भाई साहब उनसे मिल कर भी उतनी सन्तुष्टि का अनुभव करते है जितनी कि एक मत्री, वकील, डाक्टर या सम्पन्न मित्र से मिलकर। जब जब श्रद्धेय भाई साहब केवल से मिलते हैं, मुझे तुलसी का केवट सहज ही याद आ जाता है।

प्रातः स्मरणीय भाई साहब का सम्पूर्ण जीवन क्षमा, प्यार, कर्तव्य, निष्ठा एवम् उत्सर्ग से भरा है उनके जीवन का हर क्षण अपने आप मे एक कथा है. इतिहास मे जो अनुकरणीय है आत्मसात करने योग्य है। मुझ जैसे अकिंचन के लिये उनकी महानताओ का उल्लेख करने के लिए दुबारा भी जन्म लेना पड़े तो भी उनकी महानताओ को लिपिबद्ध कर पाने मे समर्थ न हो सकूंगा।

ऐसे राम जैसे मर्यादा पुरुष, भाई साहब को मेरा शत शत प्रणाम।

८३, ताशकन्द मार्ग, रतलाम



सान्निध्य और स्मृतियां

श्री पुरुषोतम चौधरी

मुझे आज याद आरहे हैं वे दिन, जोश और मस्ती के मस्ताने दिन। बगावत और इन्कलाब के दिन। जेल की जिन्दगी और राजनैतिक बन्दियो का आपसी प्रेम।

बात सन् १९३८-३९ की है। मैं नाथद्वारा मे उत्तरदायी शासन की माग के सिलसिले में अपने कई साथियो के साथ गिरफ्तार हुआ। और भी कई साथी थे। मुझे सेन्ट्रल जेल उदयपुर भेजा गया। वही पर पहली बार श्री दयाशकरजी श्रोत्रिय से प्रथम परिचय हुआ। एक दुबला पतला उत्साही युवक, लेकिन सदैव उत्साह की बुलदिया बाधने की अपार आत्म–शक्ति का धनी। उस समय हमे जेल में जौ की मोटी रोटियां, जो कुछ सिकी,कुछ अध सिकी,दी जाती थी। एक बार श्रोत्रियजी ने अपनी अलमारी खोली तो देखा कि उसमें रोटियो का अबार लगा है। पूछने पर पता लगा कि जेल की रोटिया उन्हे रुचती नही और हजम नहीं होती अतएव बची हुई रोटियो को वे अलमारी में डाल देते थे। हमारे लिए तो 'लक्कड हजम, पत्थर हजम' वाली बात लागू होती थी। मैने श्रोत्रियजी को एक बात सुझाई कि मुझे भी कसरत तो नियमित करनी ही पडती है, कल से मैं आपकी मान्शि कर दिया करूंगा। मेरी कसरत हो जायगी और आपका हाजमा ठीक होगा। उन्हें पहले तो रुचा नही परन्तु मेरे आग्रह पर उन्होंने मान लिया। नतीजा यह हुआ कि उन्हें भोजन हजम होने लगा और स्वास्थ्य भी सुधर गया।

यह क्रम जेल से छूटने तक चलता रहा। और उस मालिश ने हमारा सम्पर्क दृढ कर दिया।

सन् १९४२ मे पुन हम जेल मे साथ रहे। श्री श्रोत्रियजी जेल में लगातार चिन्तन और मनन किया करते थे। गाधी दर्शन के निष्णात के रूप मे मैंने उन्हें पाया। जेल जीवन मे मैंने उनसे बहुत कुछ सीखा और समझा। यह फक्कड प्रकृति के सर्वाधिक मनोविनोदी व्यक्ति रहे। कष्टो से घबराना तो वे जानते ही नही थे। उनका हर कार्य योजनाबद्ध होता था।

उनके दिमाग मे बडे-बडे प्लान थे जो भावी जीवन मे उन्होंने साकार कर दिखाए। महिला शिक्षा की योजना श्रोत्रियजी ने जेल मे बनाई थी और उसके विषय मे हमारे बीच बैठकर उन्होंने घण्टों चर्चाएं की थी। वह सारी योजना महिला-मडल के रूप में आज हमारे सामने हैं जो उनके कर्मठ व्यक्तित्व का पूरक है।

महिला-मडल के श्रोत्रियजी प्राण हैं और उनकी सेवाओ के स्वागत के अभिनन्दन ग्रन्थ का प्रकाशन सराहनीय है।

श्री श्रोत्रीयजी चिरकाल तक जीवित रहे और हमारा मार्ग निर्देश करते रहें, यही कामना है।

त्याग मूर्ति श्रोत्रियजी से मेरा पहिला साक्षात्कार

—श्री गुलाबचन्द्र मेवाड़ी

सन् १९३८ के अन्त की घटना है। मैं और श्री कनकजी मधुकर अजमेर से प्रकाशित साप्ताहिक "नवज्योति" (जो अब दैनिक के रूप मे परिवर्तित हो गई है) मे श्री रामनारायणजी चौधरी के पास सम्पादकीय विभाग मे काम करते थे। अजमेर मे मेवाड़-प्रजामण्डल की स्थापना हो चुकी थी। मेवाड़ सरकार राष्ट्रीय कार्यकर्त्ताओ पर दमन करने पर उतारू हो गई थी। प्रजामण्डल के संस्थापक श्रद्धेय स्व० लोकनायक माणिक्यलालजी वर्मा पर मेवाड की सीमा मे प्रवेश पर रोक लग गई थी। मेवाड़ की सीमा के चारो तरफ वर्माजी पर निगरानी रखने के लिये पुलिस के दस्ते तैनात कर दिये गये थे।

वर्माजी से भेट—

उन दिनो में *"नवज्योति"* मे मेवाड़ प्रजामण्डल आन्दोलन पर मेरा एक लेख प्रकाशित हुआ था। वर्मा साहब ने पढा तो मिलने के लिये मेरी तलाश करने लगे। भीलवाडा के श्री रमेशचन्द्रजी व्यास से, जो उन दिनो मे गाधीजी के असहयोग आन्दोलन का नेतृत्व करने के लिये अजमेर मे ही रहने लगे थे, मेरा परिचय हो चुका था। श्री व्यासजी ने उनके निवास स्थान पर श्रद्धेय वर्मा साहब से मेरा परिचय कराया। वे बहुत प्रसन्न हुए।

एक दिन बुलाकर वर्मा साहब ने मुझसे कहा कि मुझे छोटी सादडी ले चलो और वापस सकुशल नीमच स्टेशन पर छोड दो। मैंने स्वीकार कर लिया। अनुशासन की दृष्टि से मैंने चौधरीजी से जाने की आज्ञा प्राप्त करना उचित समझा।

नौकरी छोडी—

मुझे पहीली बार मालूम हुआ कि चौधरी और वर्माजी मे किसी कारणवश व्यक्तिगत मतभेद थे। चौधरीजी ने इन्कार कर दिया। मैने कहा मैं वर्मा साहब को वचन दे चुका हूँ। कल प्रात काल की गाडी से जाना है। उन्होने कहा कि नौकरी छोड़ कर जा सकते हो। मैने स्वीकार किया और दूसरे रोज स्टेशन चला गया। वर्मा साहब मेरी इन्तजार कर रहे थे।

दिन की ४ बजे हम नीमच स्टेशन पर उतरे। दिन मे बहुत जोरो की वर्षा हुई थी। दो घोडे किराये पर लिये और हम छोटी सादडी के लिये रवाना हो गये। नाराणी गाव मे दिन अस्त हो गया। मलावदा गाव तक पहुचते इतना अन्धेरा होगया कि रास्ता दिखना बन्द हो गया था। हम मलावदा के खाल मे फस गये। दोनो घोड़ो के पाँव जमीन मे धस गये। हमारी बहुत दुर्दशा हुई। घोड़ो का मालिक



और हम दोनों को घोडों को तोक कर बाहर निकालने के लिये कीचड में उतरना पडा। हमारे कपडे कीचड मे लथपथ हो गये। इस घटना को वर्मा साहब अन्त तक नही भूले।

खैर, किसी तरह हम रात को १० बजे करीब छोटी सादडी पहुचे। वर्मा साहब ने हुलिया बदल लिया था। उनको धर्मशाला मे ठहरा कर मैं श्री रतनलालजी सिंहल के पास गया जो यहाँ प्रजामण्डल की स्थापना करने मे पहले कार्यकर्त्ता थे। मैंने घटना क्रम से उन्हें अवगत कराया। वर्मा साहब को ठहराने की व्यवस्था बडी जटिल थी। पुलिस को पता नही लगने देना, कार्यकर्त्ताओ से मिलाना और प्रात काल अन्धेरे २ उनको सकुशल रवाना करना बहुत बडी जवाबदारी का काम था। वर्मा साहब को स्व० श्री चौथमल काण्डा के मकान मे ऊपर के डागले मे ठहराया गया जिसमे अटाला भरा था। यह मकान एकान्त मे भी पडता था। भोजन श्री मन्नालाल खण्डेलवाल के यहा कराया गया।

ग्वालियर की सीमा मे प्रवेश—

रात की १२ से ४ बजे तक वर्मा साहब कार्यकर्त्ताओ से अलग अलग मिले। मुख्य रूप से श्री जोरजी पटेल से मिले जो उस समय मेवाड सरकार द्वारा लगाये गये घरलोट टेक्स के विरुद्ध जनता की आवाज का प्रतिनिधित्व कर रहे थे। कार्यकर्त्ताओ को आशीर्वाद देकर वर्मा साहब ४ बजे उन्ही घोडो से रवाना हुए जिन पर नीमच से हम आये थे। अबकी बार हमने रास्ता बदल लिया था। फाल्न्दा-केसुन्दा होकर हम ग्वालियर की सीमा मे पहुच गये। हमारी जान मे जान आई।

हमने करीब ९ बजे बघाना मे प्रवेश किया। किराया देकर घोडो को विदा किया। सीधे रेल्वे लोको वर्कशॉप के इन्जिनीयर स्व० श्री सुखदीनजी के घर गये। श्री सुखदीनजी वर्मा साहब के प्रमुख भक्तों मे से थे। बहुत ही प्रेम से मिले। दिन भर उन्ही के यहा ठहरे। अजमेर की ट्रेन पकडने के लिये रात को हम नीमच स्टेशन पर गये। वर्मा साहब ने मुझे अजमेर ले चलने से इन्कार कर दिया। आदेश दिया कि तुम वापस छोटी सादडी जाओ और प्रजामण्डल की गतिविधि को जनता मे व्यापक बनाओ। कुछ दिन बाद तुम्हारे पास प्रजामण्डल का साहित्य, जो छप रहा है, भेजूगा। उसको जनता के हाथो में पहुचाने की तुम्हारी जवाबदारी है। जिन कार्यकर्त्ताओ मे से किसी एक के साथ भेजने के नाम बताये थे उनमे श्री दयाशकरजी श्रोत्रिय का भी नाम था। वर्मा साहब अजमेर रवाना हो गये और मैं छोटी सादडी आ गया। २४ घण्टे पुलिस के सतर्क रहते हुए वर्मा साहब की यह गुप्त यात्रा बहुत महत्त्वपूर्ण और कारगर थी।

जनता का अपूर्व जोश—

दूसरे रोज बिजली की तरह खबर फैल गई कि वर्मा साहब छोटी सादडी आकर चले गये। पुलिस के खलबली मच गई। छानबीन शुरू हुई। पुलिस को पता लगाने में देर नही लगी कि कौन वर्मा साहब को लाया, कहा ठहरे और कौन २ उनसे मिले? जाच के लिये उदयपुर से बडे २ पुलिस अधिकारी आये। पुलिस व्यवस्था बदली गई। कार्यकर्त्ताओ पर पुलिस की क्रूर दृष्टि रहने लगी। नई पुलिस के दस्तों

को देखकर जैसे लाल कपडे से बैल भडक उठते हैं, वैसे ही जनता भडक उठी । प्रजामण्डल के प्रति जनता के दिलो मे जोश की लहरे हिलोरें लेने लगी । कार्यकर्त्ताओं को सगठन गठित हो गया जिसमे श्री अमृतलाल यादव, जो नारेली आश्रम मे राजनैतिक शिक्षण प्राप्त करके लौटे थे, श्री भेरूलालजी अग्रवाल और श्री दादाभाई पुनमचन्दजी नाहर, ये दोनो सन् ३२ में गान्धीजी के असहयोग आन्दोलन मे भाग लेकर अजमेर जेल मे सजा काट चुके थे, श्री फूलचन्दजी बया और श्री झमकलालजी तेजावत जो साबरमती आश्रम मे महात्मा गाधी के पास शिक्षण प्राप्त करके लौटे थे । इनके अलावा श्री रतनलालजी सिंहल श्री घीसालालजी नागौरी श्री रतनलालजी सिंघवी, श्री रतनलालजी नलवाया, श्री जयचन्दजी रेगर और श्री सूरजमलजी अग्रवाल और लेखक आदि थे । पुलिस की डायरी मे इनके नाम चढ चुके थे । चारो तरफ प्रजामण्डल की ही चहल-पहल नजर आ रही थी । वातावरण उग्र बन चुका था । प्रजामण्डल के साहित्य की इन्तजार हो रही थी ।

श्रोत्रियजी से भेट—

दिसम्बर महीना होगा । श्री रतनलालजी सिंघवी ने मुझे बुलावा भेजा । दिन की दो बजे की बात है । मै उनके घर गया । वहा एक तरुण, प्रतिभा—सम्पन्न दुबला पतला शरीर, चौडा ललाट चेहरे पर व्यक्तित्व की चमक भगवा रग का खादी का कुर्ता पहिने नीचे से ऊपर तक शुद्ध खादी के वस्त्र धारण किये एक व्यक्ति को देखा । नमस्कार किया । उन्होने पूछा-क्या, गुलाबचन्द मेवाडी आपका ही नाम है ? मुझे वर्मा साहब ने आपके पास भेजा है । मेरा नाम दयाशकर श्रोत्रिय है । मुझे वर्मा साहब के बताये नाम की स्मृति हो आई । मैं गद्‌गद होकर उनसे मिला । प्रजामण्डल की गतिविधि के बारे मे समाचार पूछे और कागजो का एक पुलिन्दा देकर कहा कि वर्मा साहब ने यह साहित्य आपके पास भेजा है । मुख्य बात इस ओर ध्यान दिलाने को कहा है कि प्रजामण्डल का यह साहित्य बहुत कीमती है । पुलिस के हाथ मे नही पडने पावे और हर सूरत और प्रयत्न से जनता में बट जाना चाहिये । चाहे कैसी ही कुर्बानी देना पडे । मैंने स्वीकार किया । श्री रतनलाल जी सिंघवी से प्रतिज्ञा करवाई कि वे किसी के सामने जिक्र नही करेगें । श्रोत्रियजी चले गये । साहित्य गुप्त जगह मे छिपा दिया गया जहा किसी की नजर नही पडे ।

अब हमारे पास जनता मे आग भडकाने का मसाला मौजूद था । मेरी मुश्किल यह थी कि पुलिस की मेरे पर कडी निगाह थी । मैने सोचा कि पुलिस को चिढ़ाने का सिलसिला शुरू करना चाहिये । जैसे २ पुलिस चिढेगी वैसे वैसे जनता मे जोश बढेगा । लोकनाथ प्रेस नीमच से पोस्टकार्ड हाफ साइज पर हैडिंग टाईप मे 'मेवाड प्रजामण्डल जिन्दाबाद' के २०० कार्ड छपवा लाया । इन कार्डो को रात मे अलग २ मोहल्ले मे, दुकानों मे डालने शुरू किये । इस काम मे जगलात कर्मचारी मेरे मित्र श्री दुलीचन्द शर्मा ने पूरा सहयोग दिया । रोज सुबह पुलिस इन कार्डों को बीनकर ले जाती है ।

दिनांक ७—१—३९ को सायकाल मालूम हुआ कि पण्डित चौथमलजी गौड की माता का स्वर्गवास हो गया है । उनका दाह-कर्म ८ को प्रात काल होगा । स्व० पण्डित चौथमलजी यहा के प्रतिष्ठित नागरिक थे । अनुमान लगाया कि इस दाह-कर्म ५००—६०० आदमियो से कम श्मशान मे नही आवेगें ।



क्यों न इस मौके का लाभ उठाया जाय। मैं रात को श्री जयचन्दजी रैगर से मिला। उनका मकान श्मशान घाट से पीछे ही था। योजना यह बनी कि मैं रात को प्रजामण्डल का साहित्य लेकर श्री जयचन्दजी के मकान पर जाऊँ और सोऊँ भी वहा पर ही। रात को ३ बजे हम उठकर श्मशान गये और आदमियो के बैठने की कुल जगहो पर प्रजामण्डल का साहित्य रखकर उन पर पत्थर रख दिये। हम अपना काम करके रवाना हो गये। सुबह ७ से लेकर ११ बजे तक जनता ने इस साहित्य को अच्छी तरह पढा। पढने वालो मे जिला हाकिम और पुलिस के अधिकारी भी थे। मैंने भी यह साहित्य श्मशान मे पढा। किसी को पता नही चलने दिया कि श्मशान मे यह साहित्य कैसे आया ? दो बजे बाद पुलिस आई और सब साहित्य उठा कर ले गई।

—

साथी श्रोत्रियजी : पुरानी यादें

—श्री मथुरालाल बाहेती

इनके जीवन में सत्यप्रियता निर्भीकता और साहस के साथ शासन सत्ता से लोहा लेने की प्रवृत्ति, यौवनावस्था से ही पाई गई है। अपनी पढाई समाप्त करने के पश्चात् इन्होने एक जिनिंग प्रेसिंग फेक्ट्री में एक साधारण कलर्क की नौकरी की। इस पद पर काम करने वाले को साधारणतया ऐसे काम करने को बाध्य होना पडता है जिसमें कि सम्बन्धित ठेकेदार को अनुचित फायदा हो तथा सम्बन्धित अधिकारी भी उससे अनुचित फायदा उठावें। पहले के क्लर्कों में ऐसे काम करना एक आदत-सी हो गई थी। इनको यह नही जचा और जो वास्तव में सही काम था, वही किया। जैसे मजदूरो की हाजरी जो सही थी, वही उन्होंने दर्ज की। जिस समय कारखाना चलता उतना ही समय लिखते। गलत हाजरी नही करने से सम्बन्धित अधिकारी क्रोधित हो उठे। इनको अनेक धमकिया दी गई। मारने पीटने की भी नौबत आगई। समाज में पागल करार दिये जाने के प्रयत्न हुऐ। मगर यह अपनी सही प्रवृत्ति से नही डिगे। इन सब दुर्व्यवहारो को निर्भीकता से सहन करते रहे और अपनी बात पर कायम रहे। अन्त में विजय इन्ही की रही।

इनमें स्त्री शिक्षा और उनके द्वारा समाज सुधार की लगन शुरू से ही थी। समाज के आधे अंग याने स्त्री समाज को उस समय के फैले अन्धकार से प्रकाश मे लाने के कार्य मे यह हर त्याग करने को तैयार रहते थे। अपनी पत्नी को इसके लिये आगे पढवाने के लिये बाहर भेजने का प्रश्न आया। आर्थिक अवस्था बहुत खराब थी। पैसा पास नही था। इन्होने अपनी पत्नी के सारे जेवर बेच दिये और उन्हें प्रयाग भेज कर उच्च शिक्षा प्राप्त कराई। इस बीच में इनको अनेक कष्ट, शारीरिक एवं आर्थिक उठाने पडे। मगर यह बहुत प्रसन्नता से बर्दाश्त करते रहे। अन्त मे इन दोनों ने मिलकर स्त्री समाज मे सुधार के अनेक काम किये। जिसका लहलहाता वृक्ष महिला-मडल है।

जेल जीवन के साथी

—श्री जयचन्द्र रैगर

३०–३१ वर्ष हुए जब मैंने पहले-पहल श्री दयाशंकर श्रोत्रिय से उदयपुर जेल मे परिचय प्राप्त किया। उस समय वे 'मेवाड-प्रजामण्डल' के तत्वावधान मे चल रहे सामन्तवाद के विरुद्ध आन्दोलन मे सक्रिय भाग लेकर जेल में आये थे और मैं भी पूज्य स्वर्गीय माणिक्यलालजी वर्मा की प्रेरणा से विद्यार्थी जीवन मे ही उक्त आन्दोलन मे सक्रिय भाग ले जेल गया था। जेल का समय श्री श्रोत्रिय ने एक सच्चे योद्धा के रूप में बिताया। वह जिस काम मे लगे और जो काम उनके हाथ मे आया उसको उन्होने बडी खूबी और परिश्रम के साथ निबाया है। जब जरूरत पडी है तब वह किसी तरह से त्याग मे भी किसी से पीछे नही रहे हैं और आज तो वे महिला विकास के लिये महिला-मण्डल का संचालन पूर्ण लग्न और कठोर परिश्रम से कर महिला वर्ग में जागृति फूंक रहे हैं। सत्य ही आपको परम प्रिय हैं। त्याग, बलिदान, पारस्परिक प्रेम, उदारता, दृढ-निश्चय व कर्त्तव्य परायणता की भावनाए, जो मानवता के शृंगार हैं।

आपने अपना जीवन अपने सहकारियों, अपने देश, महिला वर्ग तथा मानव जाति की निष्काम सेवा में अर्पित कर दिया है। आपके ६७ वर्ष में पदार्पण करते समय और इस आयु के ५० वर्ष सघर्ष और साधनामय सम्पन्न होने पर मेरी यह हार्दिक अभिलाषा व प्रार्थना है कि वह दयालु प्रभु आपको मगलमयी चिरायु प्रदान करे, जिससे कि आप राष्ट्र निर्माता महिला-जाति को सत्य का मार्ग प्रदर्शित करें और अपने क्रियात्मक जीवन की सुन्दरता, उदारता, विशालता व प्रेम-भाव से उसे सकुचित दृष्टिकोण, पारस्परिक वैर-विरोध व पापवृत्ति से मुक्त करने का प्रयत्न करें।

श्रोत्रियजी : जैसा मैंने समझा

—श्री भूरेलाल बया

जिनसे वर्षों पुराना सम्बन्ध रहा और बंदी जीवन मे जिनका साथ रहा और जो आज भी हमारे बीच मे विद्यमान हैं एवं प्रवृत्ति-प्रधान हैं। ऐसे किसी व्यक्ति के बारे मे कुछ लिखना उतना आसान नही है। क्योकि मानव स्वभाव गुण दोष युक्त होता हैं। यदि गुणों की प्रशसा ही की जाए तो उसबे



सम्बन्धित व्यक्ति में, सूक्ष्म रूप से ही सही, अहकार का उदय होता है जो कि सार्वजनिक जीवन की दृष्टि से खतरनाक है। और ऐसे खतरे हम काफी उठा भी चुके हैं। यदि दोष दिखाए जाय तो यह अशोभनीय एव साथी के दिल को दु खाने वाला होता है, अत दोनो बाजू दिखाए बिना चित्र अधूरा रहता है।

देश भर मे उदयपुर की प्रसिद्ध सस्था महिला-मण्डल श्री दयाशकरजी श्रोत्रिय को उत्कृष्ट सेवा का प्रमाण है। किन्तु श्रोत्रियजी के मानस का जहा तक सम्बन्ध है, वह उसमे कैद न होकर, सदैव किसी न किसी अन्य महत्त्वपूर्ण सार्वजनिक प्रवृत्ति की जिम्मेदारी लेने के लिए भी सदैव तत्पर रहता है। जब जो कार्य उन्होने अपने जिम्मे लिया उसको योजनाबद्ध पूरा करने में वे जी-जान से जुट गये। उसमें उन्हे बहुत सोचने समझने या दूसरो से सलाह मशवरा करने की आवश्यकता रहती हो, ऐसा नहीं लगता। न उनके माथे पर उसका भार या घबराहट के कोई चिन्ह नजर आते हैं। जैसे यह उनकी सामान्य प्रवृत्ति हो। इसलिए उनके कार्य मे कोई मीन-मेख निकाले, यह बरदाश्त करना उनके बस की बात नही और न वे खर्चे के बारे में ही कोई हस्तक्षेप बर्दाश्त करते हैं।

भाई श्रोत्रियजी के साथ बात करने मे जो अनुभव होता है वह बहुत मूल्यवान है। उनसे किसी महत्त्वपूर्ण विषय की बात करते समय ऐसा आभास होता है जैसे वे कान से सुन ही नही रहे हैं बल्कि बात को पी रहे हैं। जैसे उनकी तीक्ष्ण दृष्टि उस बात की गहराई को परख रही है।

सामान्य तौर से देखा जाए तो उनका स्वभाव अखाडेबाज जैसा नजर आता है। इस लिहाज से वे राजनीति के भी पक्के खिलाडी माने जा सकते हैं और इन्होने कई चुनाव-दगलो का सफलतापूर्वक सचालन भी किया है। किन्तु उन्होने अपने आपको उससे बचाए रखा। वास्तविक रूप से वे रचनाकार हैं और उनका मन उसी में रमा रहता है। यही कारण है कि आर्थिक व अन्य कठिनाइयो के होते हुए भी वे हमेशा "महिला-मण्डल" की मूर्ति को सवारने मे लगे रहते हैं। महिला-मण्डल की शुरुआत श्रोत्रिय दम्पति से हुई किन्तु इसी महिला-मण्डल के कारण ही ये दो प्राण एक जीवन रह सके, पर दोनो अपने अपने कार्य क्षेत्र के स्वतन्त्र नेता है।

वास्तविकता तो यह है कि राजनीति के इस झझावात में भाई श्रोत्रियजी में योजना बनाकर उसका सचालन करने और सगठन की जो अपरिमित शक्ति है, उसका पूरा पूरा उपयोग करने का उनको मौका ही नहीं मिला।

—विश्व नागरिकगृह, उदयपुर



मूक जनसेवक : श्री दयाशंकरजी श्रोत्रिय

—श्री जुगलकिशोर चतुर्वेदी

भू पू. मेवाड राज्य के सार्वजनिक, विशेषत: शिक्षा-प्रचार, प्रसार के क्षेत्र मे श्रोत्रिय दम्पति–श्री दयाशकरजी श्रोत्रिय तथा श्रीमती कमला श्रोत्रिय का अत्युच्च स्थान रहा है। शिक्षा की दृष्टि से अत्यन्त पिछडे हुए प्रदेश मे स्त्री शिक्षा के लिये इतना प्रबल प्रयास करना उस समय बालू मे से तेल निकालने के समतुल्य समझा जाता था, फिर भी अदम्य साहस के धनी इस दम्पत्ति ने उस ओर पग बढा कर अपने अनुपम धैर्य तथा उत्कृष्ट लग्न शीलता का परिचय दिया था। आज आपके द्वारा पाला पोषा वही महिला-मण्डल केवल मेवाड प्रान्त मे ही नही, समूचे राजस्थान मे स्त्री-शिक्षा का एक अपूर्व तथा महत्व-पूर्ण केन्द्र बन गया है।

श्रोत्रिय दम्पति से मेरा परिचय कब, कहां और कैसे हुआ, इसका ठीक ठीक स्मरण नही होता, अस्तु मुझे ऐसा याद पडता है कि एक लम्बे और विकट सघर्ष के बाद गत सन् ४० मे जब भरतपुर राज्य प्रजा मण्डल ने राजकीय मान्यता प्राप्त करके राज्य की जनता में कार्य करना आरभ किया था, तब जिस किसी बाहर के रियासती कार्यकर्ता का सबसे पहले पत्र प्राप्त हुआ था, वह श्री दयाशकरजी श्रोत्रिय का ही था। उक्त पत्र किस सम्बन्ध मे अथवा किस आशय का था, इसका भी इस समय ध्यान नही है, परन्तु उसमें मेरे प्रति आत्मीयता का इतना उच्च भाव प्रदर्शित किया गया था कि मैं भी उसी समय से आपकी ओर विशेष रूप से आकर्षित हो चुका था।

तदनन्तर कुछ समय तक आपके साथ पत्राचार चलता रहा, फिर जिस समय, सम्भवत: सन् ४३ में, राजपूताना-मध्य भारत के रियासती कार्यकर्त्ताओ का एक विराट सम्मेलन उदयपुर में आयोजित हुआ था तो उस समय आपसे साक्षात्कार करने का सौभाग्य मिला था। इस पहली ही भेंट के दौरान आप मेरे साथ इस प्रकार पेश आये थे जैसे हमारा कोई दीर्घकालीन परिचय रहा हो। उस समय आपके सरल और अकृत्रिम व्यवहार से मेरे ऊपर आपके व्यक्तित्व की जो छाप पडी थी, वह अभी तक निरतर अक्षुण्ण बनी हुई है। इस अवसर पर अन्यान्य अनेक बातचीतो के अतिरिक्त आपने मुझसे अपनी सस्था महिला-मण्डल देखने का भी आग्रहपूर्वक अनुरोध किया था, जिसको मैने कृतज्ञता प्रकट करते हुए सहर्ष स्वीकार किया था।

उक्त सस्था मे मैंने शिक्षा सम्बन्धी अन्य अनेक विशेषताओ के अतिरिक्त जो गुण खासतौर पर पाया वह था वही की छात्राओ में श्रोत्रिय दम्पति के प्रति असीम अनुराग तथा अत्यधिक श्रद्धा और भक्ति के भाव। वे आप दोनों को ही माता-पिता की भाँति प्रेम करते और आज्ञापालन मे रत रहते प्रतीत होते थे।



इसके उपरान्त जब कभी भी सगठन अथवा सरकारी पद की हैसियत से मैं उदयपुर गया तो आपकी ओर से अग्रिम रूप से प्राप्त निमन्त्रण-पत्र से प्रेरित होकर आपकी सस्था मे जाता तथा आपका आतिथ्य ग्रहण करता रहा।

जब कभी आप महिला-मण्डल मे कोई उत्सव करते अथवा अधिवेशन आदि बुलाते थे तो उसकी सूचना मुझे आप अवश्य देते थे, और मैं यदि उस अवसर पर उपस्थित नही हो पाता था तो अपनी हार्दिक शुभ-कामनाएँ ही भेज देता था।

इस प्रकार श्री दयाशकरजी श्रोत्रिय का अधिकांश जीवन उक्त 'महिला-मण्डल' के विकास और उत्थान मे ही व्यतीत हुआ है, फिर भी उस समय वहाँ के राजनीतिक क्षेत्र मे भी आप सदैव सक्रिय रहते रहे थे। तत्कालीन मेवाड राज्य प्रजा मण्डल और उतरवर्ती उदयपुर जिला काग्रेस कमेटी के तत्वावधान में आप अपने क्षेत्र के जन-जागरण में भी पूरा पूरा योग देते रहे हैं। परन्तु मूल प्रवृत्ति आपकी रचनात्मक कार्यों को सम्पन्न करने की ओर ही रही हैं।

एक और विशेष गुण श्री दयाशकरजी श्रोत्रिय मे यह रहा है कि इतने दीर्घकाल तक सार्वजनिक जीवन मे रहते हुए भी आपने कभी सत्ता या शासन के लाभप्रद पद पर पहुँचने की चेष्टा नही की। उसके लिये छीना-झपटी की प्रवृत्ति वर्तमान पीढी के लोगो मे पाई जाती है। आपने उक्त प्रवृत्ति के विपरीत सदैव औरो को आगे बढाकर स्वय निष्काम भाव से जनता की सेवा करने में सतोष माना है। ऐसे निस्पृह, निष्कामी तथा निर्लोभी मूकजन सेवक का 'अभिनन्दन' किया जाना, श्री श्रोत्रियजी को नही, अपने आपको गौरवान्वित करना है।

(प्रियम्वदा सदन, अशोकनगर मार्ग, जयपुर)



बन्दी पिता का बाल पोस्टमेन

—श्री रमेशचन्द्र श्रोत्रिय

सन् ४२ के आन्दोलन की कई बातें तो आज भी इतनी स्पष्ट और ताजा लगती है जैसे उन सभी घटनाओ को कुछ ही दिन हुए हो। आन्दोलन के सिलसिले में पिताजी (श्री दयाशकर श्रोत्रिय) को विशेषतया इसवाल और उदयपुर की जेलो मे राजनैतिक कैदी के रूप मे रखा गया। जेल मे उनके साथी कई अन्य देशभक्त थे जैसे स्व० माणिक्यलालजी वर्मा, स्व० मोतीलालजी तेजावत, मा. बलवन्तसिंहजी, मोहनलालजी सुखाड़िया आदि। जेल का अपना अलग सा ही वातावरण होने के बाद भी अभूतपूर्व उत्साह था। देशभक्तो

में वतन के लिये कुर्बानी का। कभी कभी- जेलर तो इतने सख्त होते थे कि राजनैतिक कैदियो को बाहर आने की इजाजत भी नही दी जाती थी। अत. सीखचो के बाहर रिश्तेदार लोग और भीतर देशभक्त होते थे। मै उस समय चार पांच वर्ष का बालक रहा होऊंगा लेकिन उस दृश्य को अभी तक नही भूला सकता। जब हम पिताजी से मिलने जेल मे गये तो देखा कि उनके पैरो मे बेड़िया पडी थी और कैदी का अजीब सा लिबास था। कैदियो की मोटी विचित्र सी वेशभूषा। उन्हे इस प्रकार के वस्त्रो मे देखकर एक बार तो मैं पहचान भी न सका। जब पिताजी को इसवाल जेल में रखा गया तब सभी नेताओ की पत्निया इक्ट्ठी होती थी और तागों मे सप्ताह मे एक बार उनकी भी नियमित जेल यात्रा होती थी। अब तो वहा काफी बसें चलती हैं और जो आधा घण्टे में ही पहुच जाती होगी। किन्तु उस समय तागो से जाने मे कोई ३-४ घण्टे लगते थे। इसके बावजूद भी जेल के भीतर राजनैतिक कैदियो से मिलने केवल बच्चो को ही जाने दिया जाता था। मेरी उम्र के छोटे बच्चो को अन्दर जाने की स्वीकृति दे दी जाती थी। और उस समय हम बच्चो से पत्रवाहक का काम लिया जाता था। हम लोगों की जेबो मे महिलायें पत्र भर दिया करती थी। संतरी और जेलर लोगो को इन बाल पोस्टमैनो पर कुछ शक भी नही होता था। जैसे ही बालक अन्दर पहुचते, नेता लोग हमारी तलाशी लेना शुरू कर देते और हमारे बुजुर्ग राजनेता अपने अपने पत्र लेकर वापस उनके जवाब लिखकर हमारी जेबो के हवाले कर देते थे। संदेशवाहक बालको के इस कार्य का सिलसिला कई रोज चलता रहा।

त्यागमय जीवन—

देश के स्वाधीन हो जाने के बाद भी पिताजी ने समाज सेवा मे लगे रहना ही उचित समझा। कभी भी उनके दिमाग मे यह खयाल नही आया कि वे भी राज्य मे कोई पद प्राप्त करें। उन्होने कभी अपनी की गई कुर्बानियो का लाभ उठाने की चेष्टा नही की। जबकि उनके कई साथी आज भी मंत्री एवं उच्च पदो पर हैं। पिताजी ने राजनीति मे न पड़कर समाज सेवा को ही अपनाना श्रेष्ठ समझा। यदि वे चाहते तो आसानी से कोई भी राजकीय पद प्राप्त कर सकते थे। कई व्यक्ति यह ज्ञात होने पर अब भी आश्चर्य करते हैं कि श्री दयाशंकर का अपना घर का कोई मकान नही है। बनाते भी कैसे ? कोई भी सामाजिक कार्यकर्त्ता यदि निष्ठापूर्वक कार्य करें तो मकान बन पाना सम्भव भी नही। लोभ-लालच से जीवन-पर्यन्त दूर रह कर सादगीपूर्ण जीवन बिताकर महिला-मण्डल जैसी संस्था को उन्होने पनपाया। यह उनके कठोर परिश्रम और तपस्या का ही परिणाम है। काम करने की लगन, जी-जान से जुट जाने की आदत व मुसीबतो से जूझना, यह उनके व्यक्तित्व की विशेषतायें हैं। आज के युग मे बिना स्वार्थ के कार्य-रत रहना शायद ही देखने को मिले। पुरानी पीढी के लोगो मे जिस प्रकार की निष्ठा, लगन और कार्यशीलता है उसे देखते हुए ऐसा महसूस होता है कि आने वाले वर्षों मे निष्ठावान कार्यकर्ताओ का अभाव रहेगा और न कार्यकर्त्ताओ को उस श्रद्धा की नजर से ही देखा जायगा।

अभूतपूर्व संगठन शक्ति—

कई महोत्सवो पर हमे पिताजी की संगठन शक्ति की प्रतिभा के दर्शन हुए। खास कर बड़े २ अधि-वेशनों की जिम्मेदारी लेना इनकी आदत मे शुमार है। देशी राज्य लोकपरिषद का अधिवेशन कांग्रेस का



अधिवेशन, हिन्दी साहित्य सम्मेलन चुनाव अभियान आदि में महीनों पहले जुट जाते। वे आज भी इसी लगन से कार्य करते हैं। कार्यकर्त्ताओ की एक टीम सी बन गई है जिसमे सभी लगन और उत्साह से काम करते हैं। सेवा की लगन पिताजी को विरासत मे मिली है। आदरणीय मालवीयजी, श्रीरामजी भारतीय श्री माणिक्यलालजी वर्मा और मोहनसिहजी मेहता से प्रेरणा लेकर वे समाज सेवा के क्षेत्र मे अग्रणी हुए। और महान सगठन शक्ति का सबसे बडा प्रमाण यह मण्डल रूपी वट-वृक्ष सभी के समक्ष है। इसके अतिरिक्त एक और आकर्षण इनके व्यक्तित्व का है। वह है कार्यकर्त्ताओ के प्रति अपनत्व की भावना का। कार्यकर्त्ताओ का पूरा ध्यान रखना इनके स्वभाव मे है जिससे सभी सामाजिक कार्यकर्त्ता सहज ही इनसे प्रभावित हो जाते है।

यह गौरव का विषय है कि एक सामाजिक कार्यकर्त्ता के रूप मे मेरे पिता श्री का सम्मान किया जा रहा है। मैं ऐसा अनुभव करता हूँ कि यह पूरे कार्यकर्त्ता समाज को सम्मान प्रदान करना है। हम समाज मे ऐसी स्वस्थ और जनतान्त्रिक परम्पराए डाले जिससे कर्मक्षेत्र में कार्यरत कार्यकर्त्ताओ का सम्मान किया जावे और उनके द्वारा समाज सेवा के किये गये कार्यों को प्रकाश मे लाया जाय।

बिडला सीमेन्ट वर्क्स, चित्तौडगढ



मेरे कर्मठ साथी

—श्री भवरलाल तायलीया

श्री दयाशकरजी श्रोत्रिय सार्वजनिक जीवन एव सेवा सम्बन्धी कार्यों मे बडे प्राणवान एव कर्मठ व्यक्ति रहे हैं। मेरा इनसे निकटतम सम्बन्ध करीब ३५ वर्षों से रहा है। जब से वे विद्याभवन के कार्य मे हाथ बटाते थे। वे मेवाड प्रजामण्डल के कर्मठ कार्यकर्त्ता रहे। वे लगन और शारीरिक परिश्रम से ही नही, त्याग-तपस्या के साथ प्रत्येक काम मे जुटते थे। उनके उत्साह और निरतर कार्यरत रहने वाले व्यक्तित्व से हमे उस समय बडी ही दिलचस्पी थी। उस समय से अब तक वे हर सेवा कार्य बराबर करते रहे हैं।

श्रोत्रियजी का मेरे साथ बहुत ही अधिक निकटता का सम्बन्ध रहा है। मेवाड की जनता के लिए उन्होंने प्रजामण्डल के काम से जेल यातनाए भी भोगी है। वे अपने काम में सफल और अधिक निपुण व्यक्ति हैं। कमलाजी और श्रोत्रियजी के युगल दाम्पत्य के हाथो जबसे राजस्थान महिला-मण्डल की स्थापना हुई है, महिला-मण्डल ने जो प्रवृत्तिया और कार्य आरम्भ किए है, उससे नारी जगत का बहुत ही उत्थान हुआ है। महिला-मण्डल द्वारा इनके जीवन मे काफी उतार चढाव आये भी किन्तु उन्होंने उतने ही उत्साह और परिश्रम और सुझबूझ से काम को आगे बढाया।

मेवाड़ के खास कर उदयपुर के लिए उनकी यह सेवाएं अद्वुट है। इस वयोवृद्ध अवस्था मे अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट करने की जो तैयारी की जा रही है यह संस्था के साथ बहुत ही बडा उपकार है। मैं हृदय से श्रोत्रिय दम्पित के लिये अपनी शुभकामनाएं अर्पित कर रहा हूं।

—

गुदड़ी के लाल श्रोत्रियजी

—श्री रमापति आर्य

श्री दयाशंकर श्रोत्रियजी से मेरा पहला परिचय १९३५ की जुलाई में हुआ था जब मैं विद्याभवन, उदयपुर मे अध्यापक नियुक्त होकर गया था। वे उस समय विद्याभवन मे भोजनालय के व्यवस्थापक थे। उनकी पत्नी श्रीमती कमला श्रोत्रिय उन दिनो प्रयाग महिला विद्यापीठ की सरस्वती परीक्षा की तैयारी कर रही थी। अतः वे कभी-कभी साहित्य चर्चा के लिए मेरे पास आती रहती थी। इस प्रकार श्रोत्रिय दम्पति से मेरी घनिष्ठता बढने लगी।

उसके पूर्व श्रोत्रियजी ने उत्तर प्रदेश में रहकर स्वाधीनता सग्राम में जो योगदान दिया था और समाज-सेवा का जो महत्वपूर्ण कार्य किया था उससे उनके स्वार्थ त्याग एव लगन का परिचय मिल चुका था। फिर भी उदयपुर जैसी पिछडी जगह मे कोई सार्वजनिक सस्था खडी करना उनके जैसे सामान्य वित्त के व्यक्ति के लिए सर्वथा कठिन कार्य था। श्रोत्रियजी ने किसी विश्वविद्यालय से उपाधि भी नही प्राप्त की थी। अत. जब उन्होंने महिला-मण्डल की स्थापना की तो हम लोगो को यह एक खिलवाड ही जान पडा। उस समय स्वप्न मे भी अनुमान नही हुआ था कि उस छोटी सी सस्था द्वारा श्रोत्रियजी एक दिन उदयपुर राज्य में ही नहीं वरन् सम्पूर्ण राजस्थान मे एक क्रान्ति उत्पन्न कर देंगे।

अंग्रेजी राज में राजस्थान कितना पिछड़ा हुआ था यह इतिहास के ज्ञाताओ से छिपा नही है। उसमे भी मेवाड विशेष रूप से अशिक्षा और गरीबी का शिकार था। स्त्रियो की दशा बडी ही दयनीय थी। परदे की प्रथा एवं अनेक सामाजिक कुरीतियो के कारण उनका जीवन अत्यन्त दु खपूर्ण था। ऐसी दशा मे श्रोत्रिय दम्पति का मेवाड के-स्त्री समाज के उत्थान का बीड़ा उठाना कितने बडे साहस का कार्य था। परन्तु लगन और त्याग से बडे बडे दुष्कर कार्य भी सुकर हो जाते हैं। श्रोत्रियजी ने कुछ ही वर्षों मे जनता को विश्वास दिया कि जाग्रत नारी ही राष्ट्र की सबसे पुष्ट नीव है। उसकी उन्नति से ही देश की उन्नति सभव है। नारी-जागरण का जो मंत्र उन्होने फूंका वह शीघ्र ही सम्पूर्ण राजस्थान मे गूंजने लगा और उदयपुर का महिला-मण्डल अपने संकुचित क्षेत्र से निकल कर पूरे प्रदेश की सेवा करने लगा।



आज जब मैं महिला-मण्डल की विविध प्रवृत्तियों की ओर दृष्टिपात करता हूँ तो आश्चर्य-मिश्रित प्रसन्नता से हृदय गद्गद् हो जाता है। स्त्री-शिक्षा का कोई भी अग इस सस्था के कार्य क्षेत्र से बाहर नही है। बाल-मन्दिर से लेकर हायर सेकेण्डरी तक बालिकाओ एव महिलाओं की शिक्षा की व्यवस्था करके जहा उसने साक्षरता आन्दोलन को प्रगतिशील बनाया है वहीं वाचनालय, पुस्तकालय, प्रौढ-शिक्षा केन्द्र एव प्रशिक्षण केन्द्र द्वारा शिक्षा का स्तर ऊंचा करने का प्रयास किया है।

महिला-मण्डल ने स्त्री-शिक्षा का बडा व्यापक अर्थ लिया है। उसने न केवल उन्हे साक्षर बनाना अपना कर्तव्य समझा है वरन् सामाजिक कुरीतियो को दूर करके उनमें जागृति उत्पन्न करना भी आवश्यक समझा है। महिला-मण्डल ने स्त्रियो की आर्थिक दशा सुधारने के लिए उन्हें गृह-शिल्प सिखाने की पर्याप्त व्यवस्था की है। उनके स्वास्थ्य एव मनोरजन के लिए क्रीडागन, औषधालय आदि की स्थापना करके महिलाओ के जीवन मे नई ज्योति और नवीन आशा का सचार किया है। इस प्रकार महिला-मण्डल ने राजस्थान के नारी-समाज के अभ्युत्थान मे अभूतपूर्व योगदान दिया है।

इतनी बडी सस्था का व्यय सभालना कितना कठिन है इसका अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है। परन्तु श्रोत्रियजी के सामने महात्मागाधी और महामना मालवीयजी के आदर्श हैं। उन्होने उक्त दोनो 'महान् भिक्षुको' के समान ही अपनी झोली का भरोसा करके दानियो से अपेक्षित धन बरबस ले लिया। श्रोत्रियजी की वाणी मे भी मालवीयजी के समान ही जादू है जिससे उदारमना दाता तुरन्त आकृष्ट एव प्रभावित हो जाते हैं। फलत आज महिला-मण्डल के पास लाखो की सपत्ति एकत्र हो गई है और उसका कोष निरन्तर बढता ही जा रहा है। श्रोत्रियजी ने यह सिद्ध कर दिया है कि देश में दाताओ की कमी नही है वरन् दान लेने वालो का अभाव है।

इतनी बडी सस्था खडी करने वाले श्रोत्रियजी मालवीयजी के समान ही एक अकिंचन परिवार मे उत्पन्न हुए थे। परन्तु आज अपने गुणो से वे देश के एक रत्न माने जाने लगे हैं। इनको देखकर यही कहना पडता है कि श्रोत्रियजी गुदडी के लाल हैं।

ईश्वर श्रोत्रियजी को चिरायु करें जिससे वे नारी-जाति की अधिकाधिक सेवा करते हुए देश के उत्थान में सहायक हो।

शिक्षासंकाय, का. हि वि कमच्छा, वाराणसी-१



मेरे समधी : एक निष्काम कर्मयोगी

—डॉ. पंडित

बात अधिक पुरानी नही है जब मुझे श्रीमान दयाशंकरजी श्रोत्रियजी से सर्वप्रथम मिलने का अवसर प्राप्त हुआ। वैसे मुझे उनके विषय मे जानकारी पहले ही से थी, किन्तु जब मेरा (मेरी भतीजी का विवाह उनके सुपुत्र श्री गणेशचन्द्रजी के साथ करने की अनुमति हेतु) उनके आश्रम सदस्य महिला-मण्डल मे उनसे साक्षात्कार हुआ तब मैंने उन्हे व उनके वातावरण को कही अधिक देखा।

समाज व देश सेवा पर उनके प्रेरणाप्रद विचार सुनने का ही नही वरन् कार्य रूप में परिणित देखने का सुअवसर भी प्राप्त हुआ। सामाजिक कुरीति, दहेज प्रथा के विरुद्ध उनके दृढ विचारो से मुझे उनकी महानता का आभास मिला। किन्तु मानव दुर्बलता के रूप में मेरे हृदय मे एक भय था कि वे कहीं सोत्साह स्वागत एव मृदुल वचनो से ही मुझे टरका न दें। लेकिन उनका यह कथन 'मैं समाज उद्धार व कुरीतियो को दूर करने के लिये दृढप्रतिज्ञ हूँ'। दिया तले अन्धेरा वाली कहावत अब समाप्त है। श्रीमान् अब विद्युत व अणु युग है। अधेरा कहा और कैसा ?" सुनकर न केवल मेरा हृदय उनके प्रति आस्थावान हुआ वरन् श्रद्धा से गद्‌गद हो गया।

उनका निष्काम समाज सेवा में कार्यरत रहना, उनकी अद्‌भुत दृढ इच्छा शक्ति का परिचायक है। कार्य निष्ठा, अटूट सेवा भक्ति एव समाजोद्धार के कार्य, सही गाधीवादी के रूप मे उनके दैनिक कार्यों के अग हैं। इस मानस पुत्र मे विनम्रता, लोक-सेवा कर्मयोग आदि सभी सद्‌गुणो का अद्‌भुत सम्मिलन मेरे विचार मे देवी वरदान के अतिरिक्त और कुछ नही हो सकता मेरी यही कामना है कि सपूर्ण श्रोत्रिय परिवार इसी लगन से देश व समाज-सेवा मे, एक निष्काम कर्मयोगी के रूप मे रत रहे ताकि देश व समाज उन्नति के मार्ग पर, महिला-मण्डल समाज के बताए मार्ग से अग्रसर होता रहे।

रेल्वे चिकित्सालय, कामलीघाट, उदयपुर

—



एक अपराजेय संकल्प

—'वैद्यरत्न' भवानीशंकर शर्मा

उन दिनो का मेवाड आज सपनो की बात हो गई है। राज्य के गांवों और कस्बों की बात दूर, राजधानी का नगर उदयपुर तक परपरा की लीक पर शिथिलता से आगे बढ रहा है। इतिहास का शौर्य और जाति के मूल्य उसके प्रेरक अवश्य थे लेकिन गति पर कुछ अंधविश्वासों की छाया, कुछ सामंती प्रभाव का दमित अभियान। चेतना और उत्साह के स्रोत फूटने तो लगे थे, लेकिन उनकी गति सीमित।

फिर मेवाड की नारी को उसी अनुपात मे पीछे रहना ही था। एक पर्दा-प्रथा के परपरागत सस्कार, दूसरे गृह लक्ष्मी के परपरागत सम्मान से प्रभावित अज्ञान, वह भला करे तो क्या करे ? वह कुछ करे भी, तो उसे कुछ करने कौन दे ?

सामाजिक क्षेत्र मे कार्यकर्त्ताओ का भी उतना ही अकाल। सत्ताधारी की जय न बोलने का ख़तरा कौन मोल ले ? केवल बडे घरो की स्त्रिया टिफिन-बग्घी मे बाहर निकले, या फिर जैन महिलाएं धर्म-धरण के निमित्त निकलें, लेकिन भारी भरकम पर्दों मे दबी हुई।

तब श्री दयाशकर श्रोत्रिय, जिन्हें मै 'बाबूजी' कहता हू, देश के अनेक क्षेत्रो की खाक छानकर, राष्ट्रीय ख्याति के समाजसेवियो से बहुत कुछ सीखकर बापू के आश्रम की नियमित सेवा देकर और उनसे 'स्वयसेविकाए तैयार करो' का आशीर्वाद लेकर उदयपुर आये और उन्होने अपना कर्म—यज्ञ प्रारभ किया। तब विद्याभवन के इस सामान्य से कार्यकर्त्ता से किसे यह आशा थी कि यह व्यक्ति भारतीय नारी के सर्वतो-मुखी विकास के महान् दायित्व को पूरा कर सकेगा।

देखते देखते, कुछ अध्यापिकाओ की अवैतनिक सेवा से प्रारम किया महिला-शिक्षण और प्रौढ शिक्षण का यह बिरवा एक विशाल वट-वृक्ष का रूप ले गया। सम्भ्रान्त परिवारो से लेकर भीलो की झोपडियो तक इसका प्रकाश फैला। कमलाजी और बाबूजी का यह सकल्प आज कितना प्राणवान होकर खडा है ? और इससे आज किस सभावना की अपेक्षा नही की जाती। बाबूजी के उत्कट सकल्प सघर्षशील व्यक्तित्व, आत्मविश्वासी नेतृत्व का ही यह फल है। उनके अपराजेय सकल्प की यह सिद्धि आज किसके लिये अनुकरणीय नही है।

इनके व्यक्तित्व की अनेक खूबियो का मै सदैव से प्रशसक रहा हूं। जो सोच लिया उसे पूरा किये बिना इन्हे चैन नहीं। रात दिन एक करके लगे हुए हैं। सब कुछ छोडकर। वह चाहे प्रजामण्डल का आन्दोलन हो, या साक्षरता-पखवाडा हो, या गाधी-समारोह हो या महिला-मण्डल का वार्षिकोत्सव हो कार्य को पूरी लगन से सम्पन्न किये बिना इन्हे चैन नहीं। ऐसी जीवट के फलस्वरूप ही इनसे

अनेक कार्यकर्त्ताओं को सक्रिय और संकल्पित जीवन का प्रशिक्षण मिला। एक-एक बात को बारीकी से देखना, प्रत्येक को विस्तार से समझाकर- दायित्व सौंपना, कार्यकर्त्ता या कार्यकर्त्री को उसका अपेक्षित देना, और सफलता का सारा श्रेय अपने सहयोगियों में बांट देना, फिर भला कोई भी कार्य बिगड़ कैसे जाय ?

नारी-जाति के उत्थान का कार्य इनके जीवन की एक शीर्षस्थ साधना रही, लेकिन इनका सक्रिय व्यक्तित्व अन्य युग-धाराओं से भी अनासक्त नहीं रहा। यह मेवाड में प्रजामण्डल की स्थापना के एक प्रमुख स्तम्भ रहे, ग्रामीण क्षेत्रो में जाकर चेतना का अलख जगाया, नवचेतना का प्रसार मेवाड़ के अनेक गांवो मे किया, साहित्यिक-सांस्कृतिक गतिविधियों के पोषक रहे, खेलकूद मे तो इनकी सस्था की छात्राओं ने राष्ट्रीय कीर्तिमान स्थापित किये, बाढ़पीडितो की राहत पर जुट गये, रोगियो की सेवा मे लग गये, स्कूल, अस्पताल, डाकघर खुलवाने में लग गये, जाति-सुधार की प्रवृत्तियो मे जुट गये, उन्होने क्या नही किया ?

सामाजिक कार्यकर्त्ता के प्रति सम्मान का भाव इनके स्वभाव का एक विशिष्ट गुण है। व्यक्ति को समुचित गरिमा देकर ही उसे जीवट के साथ काम पर लगाया जा सकता है, इसे यह बखूबी समझते है। यही कारण रहा कि छोटे से लेकर बडा तक, हर कार्यकर्त्ता इनके साथ जुडा रहा। जिन्होंने महिला-मण्डल छोड़ दिया, वे भी आज बाबूजी के प्रशसक हैं और स्वय को इनका ऋणी मानते हैं, यह उपलब्धि कम आश्चर्यजनक नही है। अन्यथा आज कौन किसी का इतना प्रशसक रह पाता है।

पारिवारिक भावना का यही गुण आज इन्हें देश के हर क्षेत्र से जोडे हुए हैं। बचपन से लेकर आज तक के सभी साथियो की इन्हें याद है। देश भर के समाजसेवी, उद्योगपति पुरुष और महिलाएं, शिक्षाशास्त्री और राजनैतिक कार्यकर्त्ता जो इनसे एक बार परिचित हो गया वह आज भी इनके परिवार का सदस्य बना हुआ है। इतने बडे परिवार को श्रोत्रियजी इतने लम्बे काल तक कैसे सभाले रहे, और सम्बन्धो की यह दृढता कैसे बढती चली गई ? यह देखकर कम आश्चर्य नही होता। इतना व्यस्त व्यक्ति, इतने सारे रिश्तों को सभाले रखने का समय किस प्रकार निकाल पाया ?

फिर, अनेक ऊंचे ठिकानो तक, दिग्गज धनपतियो तक, शीर्षस्थ समाज सेवियो और राजनीतिज्ञो तक अपनी दमदार पहुँच रखने वाला व्यक्ति राजनीति के सदाव्रत की ओर थोड़ा भी आकर्षित हुआ, यह तथ्य क्या कम आश्चर्यजनक हैं ? वह राजनीति मे क्या नही हो सकता था ? अनेक अवसर इन्हे सहज रूप से उपलब्ध हुए, लेकिन इन्होने राजनैतिक क्षेत्र के बडे काम हाथ मे लेकर और उन्हे सफल बनाकर न उनका कोई पुरस्कार मांगा, न किसी सहज प्राप्त पुरस्कार को स्वीकार किया।

आज समय काफ़ी बदल गया है। सार्वजनिक सेवाएं भी अनेक सदेहो और आशकाओ से घिर गई हैं। कभी उच्च नजर आने वाले अनेक व्यक्ति आज नगे होकर समाज के सामने खड़े हैं।



लेकिन श्रोत्रियजी आज भी अपना विशिष्ट स्थान बनाए हुए हैं। कुछ देकर ही कुछ प्राप्त किया जा सकता है। उन्होने समाज को जीवन दिया है, इसलिये उनकी सेवाओ का सम्मान भी आज राष्ट्रीयस्तर का है। उन्हे प्रोत्साहन और सहयोग आज देश के हर हिस्से से मिलना है।

लेकिन मिलने वाला प्रोत्साहन और सहयोग श्रोत्रियजी के स्वय अपने किसी काम नही आ पाता। यह उसे अपनी वस्तु मानते भी नही। उत्तराधिकार के लिये, स्वय अपना कहने के लिये आज उनके पास 'महिला मण्डल' के सिवा कुछ नही हैं। आज बाबूजी हैं और महिला-मण्डल है। उसीके एक कोने मे टीन की छत के दो कमरे उनका निवास स्थान हैं और शेष सब कुछ महिला-मण्डल है। आज एक से दूसरे को अलग करके समझा ही नही जा सकता।

इसे अपना सौभाग्य मानूं कि मेरा इनका इतना लम्बा साथ रहा। उनके अनेक सकल्पों की क्रियान्विति मे भी मै उनके साथ रहा। आज भी, चिकित्सालय की व्यस्तता से थक कर, किसी मानसिक पीडा से तिलमिलाकर, किसी आने वाली परेशानी से कतरा कर, या कुछ घण्टो की शाँति की कामना लेकर 'महिला-मण्डल' के आश्रम मे चला जाता हू तो अगाध शाति में डूब जाता हू। वह वातावरण ही जैसे एक नये लोक मे ले जाता है।

जानता हू कि प्रत्येक कहानी की एक सीमा होती है। कल के दिन आज कहानी बन गये। आज के दिन कल की कहानी बन जायेगें। लेकिन दयाशकर श्रोत्रिय और महिला-मण्डल के जीवन की यह कहानिया मात्र सस्ता मनोरजन साबित नहीं होगी। ऐसे उदात्त सकल्प की कहानिया भविष्य को प्रभावित करती हैं और यही उनकी सिद्धि भी है। मुझे विश्वास है कि श्रोत्रियजी की यह विरासत भविष्य की पीढियों के लिये एक मूल्यवान सम्पत्ति बनकर प्रतिष्ठित होगी।

नीमकुज, उदयपुर



कर्मयोगी : श्री श्रोत्रियजी

—श्री योगेशचन्द्र शर्मा

श्री श्रोत्रियजी का मेरा परिचय उस समय से है जबकि मैं विद्याभवन में सन् ३४ में पढता था। एक विद्यार्थी के नाते भी मैंने श्री श्रोत्रियजी से काफी प्रेरणा पाई और कई बातें जीवन में उतारने का प्रयत्न किया। उनमे विशेषकर यह ध्यान देने योग्य है कि श्री श्रोत्रियजी जिस किसी भी काम को अपने हाथ में लेते हैं, उसमे पूर्णतया रम जाते हैं और उसके लिये कोई भी प्रयत्न नही छोड़ते हैं। इसी लगन तथा न चुके कारण हर काम मे उनको सफलता मिलती है। वह एक कर्मयोगी हैं।

महिला-मण्डल के प्रारंभ से मेरा सपर्क रहा है। कई वर्षों तक डॉ. मोहनसिंह मेहता के प्रतिनिधि की तरह सस्था के काम मे मैंने सहयोग दिया और उसके बाद कई बार मे सस्था की कार्यकारिणी का सदस्य तथा सयुक्त मंत्री भी रहा। चू कि मेरी पत्नी श्रीमती राधादेवी, श्रीमती कमलाजी श्रोत्रिय की प्रेरणा से महिला-मडल में प्रारंभ से ही कार्य करती रही हैं, अतएव श्री श्रोत्रिय दम्पति का हम दोनों पर ही विशेष स्नेह और आशीर्वाद रहा है।

मुझे श्री श्रोत्रियजी के साथ काग्रेस में भी काम करने का अवसर मिला। हमने न केवल प्रथम चुनाव मे साथ-साथ उदयपुर मे श्री सुखाड़ियाजी के लिये कार्य किया बल्कि दूसरे चुनाव मे भी श्रीमती कमला बहिन श्रोत्रिय के चुनाव के लिये भीलवाड़ा मे काम किया था। इसके अलावा जब वह नगर-काग्रेस के अध्यक्ष थे तब उनके मत्री की तरह भी कार्य करने का अवसर मिला। श्री श्रोत्रियजी के साथ कार्य करने मे मुझे कई बातें सीखने का अवसर मिला।

महिला-मण्डल की स्थापना करके श्री श्रोत्रियजी ने अपने जीवन की समाज-सेवा की भावना को मूर्त रूप दिया है और उसके द्वारा समाज की जो सेवा हुई, वह हम सबके लिये गौरव की बात है। यह बडी प्रसन्नता की बात है कि श्री श्रोत्रियजी की इस समाज सेवा को सम्मानित करने के लिये एक अभिनन्दन ग्रथ भेंट करने का निर्णय लिया है।

इस अवसर पर मे भी अपनी ओर से ईश्वर से प्रार्थना करना चाहूगा कि वह श्री श्रोत्रियजी को दीर्घायु करे और समाज की सेवा करने का अधिक अवसर देवें।

(राजस्थान, विद्यापिठ उदयपुर)



एक ज़िन्दगी : मातृजाति की सेवा में

—डॉ, शम्भूलाल शर्मा

सदीपन ऋषि के आश्रम से विदा होने के पूर्व स्नातको ने जो प्रेरणास्पद सदेश सुना, उसके फलस्वरूप सुदामा शिक्षा और समाज शिक्षा मे लग गये और कृष्ण ने राजनीति अपनाई। राजस्थान के नवजीवन मे कुछ विचार कर, कुछ बिना विचारे ही, अनायास और दैविक इच्छा से प्रेरित, हुआ यही कि कुछ कार्यकर्त्ता शिक्षा और समाज शिक्षा मे लगे और कुछ लोग राजनीति मे ही चले गये। कुछ कार्यकर्त्ताओ का यह ख्याल रहा कि रचनात्मक काम तो राजनीति को बलवती और फलवती बनाने का काम है। वैसे ही जैसे एक सैनिक प्रतिदिन व्यायाम और अभ्यास करता है कि उस शक्ति का प्रयोग युद्ध के समय



कर सके। जब युद्ध हो तब रचनात्मक कार्यकर्ता भी युद्ध में भाग लेगा और जेल जायगा। इस ख्याल के समर्थक अंग्रेजो के समय जगे—ग्राजादी के काल में बहुत लोग थे और सचमुच जब जग छिडता तो सस्थाओ के ताले लग जाते थे और जेलें भर जाती थी। धीरे-धीरे निरन्तर चिन्तन और अनुभव से राजनीति और रचना का फर्क समझ मे आने लगा और ब्राह्मण और क्षत्रिय का भेद स्पष्ट होने लगा। युद्ध के समय मौलिक ज्ञान स्फुरित होता है। जेलो मे कार्यकर्त्ताओ को मनन और चिन्तन का अवसर मिला। रचनात्मक काम मे दिखाई देने वाली और नही दिखाई देने वाली अनेक कठिनाइया समझ में आने लगी। अग्रेज और सामन्त से युद्ध करना आसान था लेकिन जनजीवन मे जागृति करने मे अधिक कठिनाइया थी। पडित दयाशकरजी श्रोत्रिय एक अहिंसात्मक सैनिक रहे और उस क्षत्रिय धर्म पालन मे जो कुछ कष्ट स्वभाविक ढग से इनके हिस्से मे आये, इन्होंने और इनके परिवार ने मुस्कराकर झेले। कराहना और रोना किसी ने सीखा ही नहीं। जब तक आजादी नही आई, इनके स्वधर्म का क्षत्रियत्व इनसे दूर नही हुवा। आजादी के बाद जब सेवा का मेवा बन्टा तो श्रोत्रियजी ने उसे नही चखा और इन्होने निर्णय किया कि ये रचनात्मक कार्य ही करते रहेगे।

ऐसा निर्णय श्रोत्रियजी के व्यक्तिगत जीवन के लिये बहुत शुभ रहा। निरन्तर सत्ता के लिये झगडते रहने और जनतान्त्रिक समझौतो को व्यवस्थित करने और उसमे अपने और अपने दल के स्वार्थों को सुरक्षित रखने से जो इनके व्यक्तित्व मे विकार आने की सम्भावना हो सकती थी इससे ये बच गये। इतना ही नही ये मानसिक द्वन्द्व से भी मुक्त हो गये और एक निष्ठा से रचनात्मक काम में ही लगे रहे।

रचनात्मक प्रवृत्ति श्रोत्रियजी में जन्मजात है। किशोरावस्था से लेकर अब तक इन्हें ऐसे सुयोग मिले और इन्होने उनका ऐसा उपयोग किया कि ये निरन्तर अपना विकास करते रहे। स्काउटिंग का रग इन पर बचपन से चढ गया था उसी रग मे रग कर इन्होंने विद्याभवन मे सेवा की और महात्मागाधी के भी सम्पर्क मे आये।

उसी रग मे ये ऐसे रगे कि इन्होने अपकी पत्नी कमलाजी की शिक्षा को अपना प्रमुख धर्म बनाया और कमलाजी को बौद्धिक तथा सामाजिक विकास में लगाकर ये मेवाड से प्रयाग चले गये और वहा कठोर परिश्रम करके पैसा कमाया और दोनो का निर्वाह और शिक्षण किया। मातृजाति की शिक्षा और सेवा के लिये इन्होंने कमलाजी को तैयार किया। निरन्तर स्वाध्याय, निरन्तर सेवा, समाज शिक्षण और समाज सुधार के काम मे कमलाजी को लगाकर ये उनकी सहायता मे बडे अद्भुत ढग से लग गये और उसका शुभ परिणाम दोनो के व्यक्तित्व के विकास के रूप मे होता ही गया।

श्रोत्रियजी का यह स्वभाव है कि ये जिस काम को हाथ मे लेते हैं उसे पूर्णरूपेण सम्पन्न कर उससे मुक्त होते हैं। राजस्थान के सब लोग जानते हैं कि इन्हे सौंपा हुआ काम अवश्य सफल होगा। किसी जमाने मे स्व० माणिक्यलालजी वर्मा दया-वया को अपनी दो भुजायें मानते थे और उनके भुज बल पर गाजते थे। श्रोत्रियजी यदि राजनीति मे जाते तो राजनीति को एक फक्कड़, मस्त, सच्चाई और



ईमानदारी से काम करने वाला व्यक्ति मिलता और देश को बड़ा लाभ होता। लेकिन समाज को शिक्षा के द्वारा बदलने का रचनात्मक विचार इन्हे अधिक प्रेरित करता रहा और ये राजनीति के साथ मातृजाति के कल्याण का काम कमलाजी के माध्यम से करने लग गये।

भारत मे हर अच्छे काम के लिये बापू का आशीर्वाद था। श्रोत्रियजी को विशिष्ट रूप से महिला कार्यकर्त्ता तैयार करने और मातृजाति की सेवा करने का आशीर्वाद बापू ने दिया। राष्ट्रीय स्तर के तत्कालीन सभी नेताओ की शुभ कामनाए और प्रेरणायें श्रोत्रियजी को सदा उपलब्ध रही। स्वर्गीय प० जवाहरलाल नेहरू ने श्री भूरेलालजी बया को साथ लेकर अकेले जाकर महिला-मण्डल देखा और सिर्फ चौकीदार ने ही सब कुछ घूमघाम कर दिखा दिया क्योकि श्रोत्रियजी और महिला-मण्डल के कार्यकर्त्ता देशी लोक राज्य परिषद की व्यवस्था में लगे हुवे थे। बालगगाधर खेर ने महिला-मण्डल के काम को देखा ही नही कार्यकर्त्ताओ को उद्बोधन भी किया। विनोबा भावे का तो महिला-मण्डल के चौक मे पडाव ही पड़ा और कुटिया बनाकर उन्हें उसमे रक्खा गया। राजाजी ने महिला-मण्डल के कार्यकर्त्ताओ से बातचीत की और एक विशाल समारोह की अध्यक्षता की। ऐसे पुण्यवान महापुरुषो का आशीर्वाद और स्नेह सस्था को निरन्तर मिलता रहा। श्रोत्रियजी सब कुछ छोडकर इस सस्था के सर्वतोमुखी विकास मे ही लगे रहे।

महिला-मण्डल के काम ने और कार्यकर्त्ताओ के प्रशिक्षण ने श्रोत्रियजी के व्यक्तित्व का अद्भूत विकास किया है। राजनीति, धर्म शास्त्र, समाज शास्त्र तथा शिक्षा के विषयो की श्रोत्रियजी की गहरी जानकारी है। खेल-कूद मे तो ये सस्था मे ऐसी रुचि लेते हैं कि इस सस्था की कन्याए अखिल भारतीय स्तर पर राजस्थान की शान रखती हैं। खेल दगलो मे दर्शक की तरह जाकर और प्रशिक्षण के समय स्वय उपस्थित रह कर श्रोत्रियजी खेल-कूद की प्रगति मे रुचि लेते रहे है और उससे श्रोत्रियजी की तत्सम्बन्धी अनेक जानकारिया है।

श्रोत्रियजी सर्वोदयी विचारो के होकर समाजवाद के बड़े समर्थक है। महीनो अनेक कार्यकर्त्ताओं को अपने साथ रखकर तथा आर्थिक सहायता देकर सच्ची सामाजिकता को अभिव्यजना की है। देश मे गरीबी है तो खुद भी बेहद सादगी से रहते है। टीन के मकान मे ही रहकर कई युग बिता दिये है।

श्रोत्रियजी की इस वर्ष गाठ पर मै इनके दीर्घायु और स्वस्थ और समाजोपयोगी जीवन की प्रार्थना करता हूँ। देश को इनके जैसे समाजसेवी कार्यकर्त्ताओं की बडी आवश्यकता है। जिस विशिष्ट उद्देश्य को लेकर ये जन्मे हैं, जिये है, वह बहुत कुछ पूरा हुवा है और वह पूर्ण हो, यही मेरी शुभकामना और प्रार्थना है।



श्रध्देय श्रोत्रियजी के सानिध्य में मैंने क्या देखा

—श्री उत्सवलाल शर्मा

कार्यकर्त्ताओं का चयन—

श्रोत्रियजी— "आप जाति से ब्राह्मण हैं ?"

प्रत्याशी— "जी हाँ।"

श्रोत्रियजी— 'आप समाज सेवा मे रुचि रखते हैं, कृपया बतायेंगे कि भारतीय परिवार मे नारी का क्या योगदान हैं ?''

प्रत्याशी— 'मेरी समझ मे भारतीय नारी परिवार में एक भार है क्योंकि उसका कोई आर्थिक योगदान नही है।"

श्रोत्रियजी— "तभी उसने आपको जन्म देकर अपने भार को हल्का किया है और परिवार मे आपका भार बढा दिया।"

प्रत्याशी— "नही-नही ऐसा तो नही हैं पर.... . ..... · ... ..।"

श्रोत्रियजी— "आपके घर मे सभी काम नौकर करते हैं ?"

प्रत्याशी— 'नही, सभी काम नौकर तो नही करते। माँ भी नौकरो का हाथ बटाती हैं। हालांकि आने वाले आर्थिक जमाने मे यह जरूरी नहीं है कि माँ की ममता प्रत्येक बच्चे को मिले।"

बस प्रत्याशी का इतना कहना ही था कि श्रोत्रियजी कह बैठे "मुझे नौकर नही, कार्यकर्त्ता चाहिए। आपको माता के निकट रहने का मौका नही मिला है और न आपको कष्ट के दर्शन ही हुए है। आप व्यवसायिक समाज सेवी हो सकते हैं परन्तु सवेदनशील कार्यकर्त्ता नही। आप जा सकते हैं।"

प्रत्याशी तो चला गया परन्तु श्री श्रोत्रियजी के इन शब्दो को सुनकर समिति के सदस्यो का चयन करने का तरीका ही बदल गया। उनमे से एक ने श्री श्रोत्रियजी को पूछा 'प्रत्याशी को नापने का आधार आप क्या मानते हैं ? उत्तर मे श्री श्रोत्रियजी ने कहा "भारतीय जीवन से अनभिज्ञ तो था ही। वह अमीरों का छोकरा है। उसे गुलाब बाग मे घूमने दिया जाय।"

मुझे श्रोत्रियजी के सानिध्य मे बैठकर यह देखने को मिला है कि वे कार्यकर्त्ताओ के चयन मे सूक्ष्मता से यह देखते है कि प्रत्याशी को कष्ट की कितनी अनुभूति हैं और प्रत्याशी उस कष्ट के प्रति अपने क्या विचार रखता है ? श्री श्रोत्रियजी का सदैव कहना रहा है कि कार्यकर्त्ता का जब तक कार्य के क्षेत्र में यथार्थ से तादातम न हो तो ऐसा कार्यकर्त्ता सस्था के उद्देश्यो की प्राप्ति मे सहायक सिद्ध न होकर एक समस्या ही रहेगा। अत वे हमेशा कार्यकर्त्ताओ की एक बड़ी सेना को रखने मे विश्वास नही रखते हैं और यही कारण है कि कुछ ही को छोड़कर कार्यकर्त्ता सस्था में अवकाश प्राप्त कर्मचारी की भांति जीवन यापन

नहीं कर सके । जिस कार्यकर्त्ता ने श्रोत्रियजी के जीवन को निकट से देखा, सोचा व समझा तो वह सस्था में उनका विश्वास पात्र कार्यकर्त्ता ही नही रहा परन्तु उसे जिम्मेदारी को पूरी करने की श्रोत्रियजी ने पूर्ण स्वतन्त्रता दी । फिर उन्होंने यह कभी नही चाहा कि कार्यकर्त्ता को और कसौटी पर कसा जाय । यदि सार्वजनिक जीवन में भगोडेपन की गन्ध किसी कार्यकर्त्ता मे उन्होंने देखी तो उस कार्यकर्त्ता से वे भगा जाते हैं । कर्मठता मे धैर्य अपना एक विशिष्ट स्थान रखता है और इस कसौटी पर खरे उतरने वाले कार्यकर्त्ता ही महिला-मण्डल मे टिक पाये है । सर्वतोमुखी श्री श्रोत्रियजी की पैनी दृष्टि से बचकर कोई कार्यकर्त्ता केवल जीवनयापन के लिए 'मण्डल' मे अपना आसन बिछाले ऐसा नही सो सकता । जिस कार्यकर्त्ता ने श्री श्रोत्रियजी की स्पष्टवादिता को पहचान लिया तथा उनके सहयोगी के रूप मे कार्य कर लिया तो उसे किसी अन्य कसौटी पर कसने की आवश्यकता नही रहती है । उन्होने ऐसे कई कार्यकर्त्ता, ठोक बजाकर, समाज को दिए है ।

उनकी स्पष्टवादिता—

स्पष्टता के साथ यथार्थ को प्रस्तुत करना श्रद्धेय श्रोत्रियजी की निर्भीकता तथा सामाजिकता का एक विशिष्ट गुण रहा है तुरन्त जिसे भले लोग अपने जड़ संस्कारो के कारण पसन्द भी न करें परन्तु यथार्थ को रखने मे श्री श्रोत्रियजी तनिक भी नही चूकेंगे ।

मुझे एक ऐसा अवसर याद है जब कि संस्था का समारोह महिला-मण्डल मे चल रहा था । आशातीत जनसमूह एकत्रित हुआ । बिछात की व्यवस्था करने पर भी एकत्रिक जनसमूह के लिए वह कम रही । हा, तो जब समारोह चल रहा था तब बिछात की कमी के कारण जनसमूह बिछात के इर्द-गिर्द खडा होकर समारोह का आनन्द लेने लगा परन्तु खडे रहने के कारण समारोह मे सम्मिलित होने वाले अन्य व्यक्तियो को रास्ता पाने में कठिनाई अनुभव होने लगी थी । सयोजक ने बार-बार जनता से निवेदन किया कृपया बैठ जाय ताकि समारोह की कार्यवाही शातिपूर्वक चले ।

सयोजक ने पुन. विनम्रता से निवेदन किया सस्था आपकी है । समारोह की सफलता आपकी हैं । कृपया, बैठकर कार्यक्रम को शाति से चलाने मे योगदान दें ।

जनसमूह मे से पहली आवाज आयी 'बिछात नही हैं ।" दूसरी आवाज 'बिछात करवायें, ताकि बैठ सकें । जनता इस तरह से खडी नही रह सकती । तीसरी आवाज 'आपने निमन्त्रण दिया है आप सम्मान करना नही जानते ।"

श्रद्धेय श्रोत्रियजी ने जब इस प्रकार की आवाजें सुनी तो वे तुरन्त मच पर आ पहुचे और कहना प्रारम्भ किया—"मित्रो, सस्था मेरी निजी नही, यह आपकी है । बिछात नही तो यह आपकी कमी है । यह कमी न बिछात की है और न मेरी । मैं उन महाशय से निवेदन करूंगा जो जाजम पर बैठना चाहते हैं । वे संस्था के लिये जाजम की व्यवस्था करायें । मै आभारी होऊगा कि वे आगे आएं और अपनी सदस्यता को प्रमाणित करें ।



एक मीनिट में मौन छागया। किसी ने अगवानी नहीं की। परन्तु एक दबी आवाज फिर आयी "हमे निमन्त्रण क्यो दिया गया ?" श्री श्रोत्रियजी इस बार कुछ तीखे शब्दो मे, पर प्रसन्न मुद्रा मे बोले निमन्त्रण मैंने अपनी बेटी के ब्याह का नहीं दिया और यदि मे अपनी बेटी के ब्याह का निमन्त्रण आप जैसे मेहमान को दे भी दू तो कृपया न आने पर सस्था के निमन्त्रण पर अवश्य आवें और जमीन पर बैठें। इस पर भी जो मेहमान सस्था को उपकृत नही करना चाहते हैं तो वे जा सकते हैं। देखते ही देखते इस उक्ति का इतना प्रभाव पडा कि जनसमूह जो खडा था वह बैठ गया और सस्था का कार्यक्रम चलने लगा। हमे भय था कि कही स्थिति बिगड न जाय और समारोह मे कोई गडबडी न हो जाय। क्योकि हम लोग जो जन-समूह को बैठाने का प्रयत्न कर रहे थे, उन्हे श्रोत्रियजी ने, इसके पूर्व कि जनसमूह बैठ जाय, बुला लिया था।

समारोह शानद सम्पन्न हुआ परन्तु मुझसे रहा नही गया और मैंने श्रद्धेय श्रोत्रियजी से दबी आवाज मे निवेदन किया—"बाबूजी कभी आप कहने में मर्यादा लाघ जाते हैं।" श्रोत्रियजी ने कहा—"भाई ! जडवत् सस्कारों को हटाने के लिए वैसे ही "गुरु वाक्यों' की आवश्यतता होती हैं जो तीखे हो। ताकि वे चुभन का काम कर सकें।" उन्होने आगे कहा—"हमेशा देश, काल व परिस्थिति देखकर ही व्यवहार करना चाहिए और वह मैंने किया था। मैं नही समझता कि यथार्थ को रखने मे क्यो डरा जाय ? सस्था के पास विछात नही। हमसे उस चीज की माग क्यो की जाय जो हमारे पास नही है। क्या उसे आप दे सकेंगे ?" वे फिर आगे बोले—"दर्शक ऐसे आयोजनो के अवसर पर कैसा आचरण प्रस्तुत करें यह उन्हें जानना चाहिये। समाज शिक्षा के नाते भी हमे सही परपाटी डालना चाहिए। भले जनता ऐसे समय मे सहयोग न भी करे।

श्री श्रोत्रियजी का सदैव विश्वास रहा है कि समाज मे, जहा तक अर्थ का सम्बन्ध है सब समान है और उसको ध्यान मे रखते हुए किसी के लिए विशिष्ट व्यवस्था न हो ताकि वर्ग भेद को प्रोत्साहन न मिले और यदि सामूहिक अवसरो पर बैठने के लिए विशिष्ठ व्यवस्थाए की गई तो आलोचना होगी और उनका खयाल है कि ऐसी आलोचना होनी भी चाहिए।

उपरोक्त कथनी और करनी के दर्शन मैंने जो उस समारोह की रात्रि मे किये वह एक निर्भीक एव दूरदृष्टा समाज सेवी श्री श्रोत्रियजी सस्ती सराहना के शिकार आज तक नही हुए और न हो सकेंगे। क्योकि उनका अचेतन आज भी सामाजिक दुर्बलताओं को दूर करने में कशमकश करने को तैयार है। वे इसी बल पर एक स्वाभिमानी के रूप मे अपनी सस्था का अस्तित्व बनाये हुए हैं। उन्होने कभी ऐसी आर्थिक सहायता स्वीकार नही की जो सस्था के स्वाभिमान को आघात पहुचाये। उन्होंने, प्रत्येक समय पर, दान दाता को स्पष्ट कहा—"वे उपकार नही कर रहे है परन्तु एक ब्राह्मण के द्वारा प्रेरित होकर सद्कार्य के लिए अपना योगदान दे रहे है। इसे न भूले।"

कार्यकर्त्ताओ के हमदर्द श्रोत्रियजी

सन् १९४५ के दिसम्बर की बात है जब अखिल भारतवर्षीय देशी राज्य लोक परिषद का अधि-वेशन स्व० जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता मे उदयपुर में हो रहा था। मे भी बडे दिनों की छुट्टियों मे

उदयपुर पहुंचा । क्योंकि मेरी पत्नी महिला-मण्डल में पढ रही थी । श्रद्धेय श्रोत्रियजी ने मुझे निठल्ला बैठा देखकर कहा दादा ! कुछ काम क्यो नही करते । मैंने अपनी सेवाएं उन्हे अर्पित कर दी । देशी राज्य लोक-परिषद के पंडाल विभाग के भण्डार मे मुझे लगा दिया गया । मुझे नही मालूम कि श्रद्धेय श्रोत्रियजी ने मेरे काम की जांच लुक छिपकर कैसे की ? एक दिन सायं अचानक मेरे सामने प्रश्न लाया गया कि क्यों न मैं महिला-मण्डल मे काम करू ? मैं मौन था । मे 'हा' भी करदूं तो भय था कि कही रिश्तेदारी बीच मे न आजावे । अपने आपको दूसरे दिन मैं प्रात: महिला-मण्डल के अध्यक्ष के सम्मुख पाता हूँ । श्रोत्रियजी ने उनसे मेरा परिचय करवाया यह करते हुए कि यह व्यक्ति मेरा रिश्तेदार है । कार्यकर्ता के रूप मे मैं इनको महिला-मण्डल मे लेना चाहता हूं । इस समय मण्डल के अध्यक्ष श्री लक्ष्मीलालजी जोशी थे जो मेवाड राज्य मे शिक्षा विभाग के निर्देशक थे । उन्होने सहमति दे दी । मेरा जी घबडाया कि कही मे श्रद्धेय श्रोत्रियजी की अपेक्षाओ की पूर्ति करने में सफल न हुआ तो क्या होगा ? उन्होने मुझे साहस दिया और सन् १९४६ के शैक्षणिक सत्र से मैंने अपने आपको महिला-मण्डल के कार्यकर्त्ताओं की पक्ति मे पाया । लेकिन मेरे अचेतन मे श्रद्धेय श्रोत्रियजी की एक तस्वीर बन चुकी थी और वह एक ऐसी तस्वीर है जिसने कभी अपना रग नही बदला । श्रोत्रियजी ने हमेशा कहा है कार्यकर्त्ता की तस्वीर हमेशा एक रहे ताकि जनता को उसे समझ सकने मे कठिनाई नही हो ।

महिला-मण्डल मे काम करते हुए मुझे अध्ययन हेतु समय नही निकल पाता था और उसी वक्त मुझे बी० ए० की परीक्षा मे प्रविष्ठ होना था । परीक्षा मे बैठने की अनुमति तो मुझे मिली थी परन्तु श्रोत्रियजी के ध्यान से यह बात निकल गई थी कि मुझे उसी वर्ष बी० ए० मे प्रविष्ठ होना था । एक दिन मैं यह देखता हूँ कि मेरी पत्नी ने ३ रोज से खाना नही खाया । यह बात श्रद्धेय श्रोत्रियजी के पास पहुँची । उन्होने मेरी पत्नी से पूछा 'खाना बन्द क्यो किया ?' उसने विनम्रता से उत्तर दिया कि मैं परीक्षा की तैयारी नही कर रहा था । पहले तो श्रोत्रियजी मुस्करा दिए क्योंकि मेरी पत्नी का आशय वे समझ चुके थे । इतनी बातचीत करने के बाद वे चले गए परन्तु दूसरे दिन मे क्या देखता हू कि मुझे एक मास का विशेष अवकाश स्वीकार किया गया है जिसके लिए मैंने आवेदन भी नही किया था । आदेश के अनुसार मैंने अपना चार्ज दिया, चार्ज देने के पश्चात् श्रद्धेय श्रोत्रियजी ने मुझे बुलाया और कहा—'आप उदयपुर से कहीं अन्यत्र जाय और वही रहकर अध्ययन करें । क्योंकि काम करने से न आप रुकेंगे और न मैं कार्य करने से आपको रोक सकूगा ।" मे पुलकित हो उठा उनके इन शब्दो को सुनकर । इस प्रकार कार्यकर्त्ताओ के निर्माण मे श्रद्धेय श्रोत्रियजी महिला-मण्डल के विकास की तस्वीर चित्रित करते आये हैं ।

राजनीति से दूर—

सन् १९४७ की बात है जब बंगाल मे हिन्दू-मुस्लिम वैमनस्य की ज्वाला भडक उठी थी । तबश्रोत्रियजी कार्यकर्त्ताओ के साथ सस्था के लिए धन संग्रहित कर रहे थे । इसी बीच मेवाड राज्य की विधानसभा के आम चुनाव होने वाले थे । निर्वाचन नामावली मे श्रोत्रियजी का नाम नही था । मैंने निर्वाचन सूचि मैं



उनका नाम अंकित कराने का आवेदन पत्र कलकत्ता भेजा कि वे उसे भरकर व हस्ताक्षर करके निर्धारित तिथि के पूर्व भिजवा दें।

उत्तर मे जो वाक्य श्रोत्रियजी ने लिख भेजे थे, यदि मैं उन्हे नही भूला तो वे निम्न प्रकार हैं —

नागरिक अधिकारो का मैं हामीदार हूं और सन् १९३८ तक मेवाड राज्य की राजनीति से मेरा घनिष्ट सम्पर्क रहा हैं। इस क्षेत्र में मैंने जो कुछ सेवाए की उसे मुझे यहा अंकित नही करना है। यदि मुझे रचनात्मक कार्य की ओर ही रहना हैं तो अवसरवादिता का लाभ उठाने के लिए मेरा नाम निर्वाचिन सूचि में अंकित नही कराया जाय। मेवाड मे महिला-समाज की थोडी कुछ सेवा जो मैं अपने ढग से करना चाहता हू उसम ही मुझे रहने दिया जाय। मैं अपने ख्याल का हू न कि विशिष्ट व्यक्तियों की राजनीति का। यदि मै उसमे डूब गया तो मेरी मौत हो जायेगी। आप ऐसा मानकर ही इस दिशा मे अग्रसर न हों और यही बात कमलाजी के लिए भी लागू होगी।"

उपरोक्त पक्तियो से रचनात्मक कार्य के प्रति श्रद्धेय श्रोत्रियजी की जो भावना दृष्टिगोचर होती है उससे स्पष्ट है कि वे रचनात्मक कार्यो मे निष्ठा रखने वाले एक मौलिक व्यक्तित्व हैं। उनकी यह साधना उनकी अपनी आन-बान तथा शान से आज भी जागी है। यह एकाकी तपस्वी साधना मे विश्वास रखते हुए आगे ही बढा है, पीछे कभी नहीं मुडा। यही कारण है कि आज वे अपने मार्ग को स्वय बनाते हैं और उस पर चलते हैं। वे अपनी लीक मे विश्वास रखते हैं न कि उधार ली हुई या गिरवी रखी हुई प्रेरणा में। यही दीक्षा उन्होने अपने सहयोगियो और कार्यकर्ताओ को दी है। यह चिरन्तन धारा उनके मन मे दीप्त है कि महिला कार्यकर्ताओ का निर्माण किया जाय, इसीलिये वे महिला कार्यकर्त्रियो के प्रशिक्षण मे अधिक विश्वास रखते हैं। इस दिशा मे उनके अपने अनेक प्रयोग हैं जिनको उन्होने साकार रूप दिया। रूढिग्रस्त मेवाड की महिलाओ को समाज मे लाने का जो श्रेय है वह श्री श्रोत्रियजी के अलावा दूसरे को नही हो सकता हैं। क्योकि महिला समाज सुधार का यज्ञ श्रोत्रिय दम्पत्ति ने अपने को होम कर रचा है।

राष्ट्राभिमानी –

आज़ादी के बाद श्री बृजलालजी बियाणी, अकोला से अपने प्रवास मे उदयपुर आये। उन दिनों महिला-मण्डल मे कार्यकर्त्ताओ का प्रशिक्षण शिविर चल रहा था। श्री बियाणीजी को ध्वजारोहण के लिए निमन्त्रित किया गया था। सारी तैयारी श्रद्धेय श्रोत्रियजी ने अपनी और कार्यकर्त्ताओ की निगरानी मे सम्पूर्ण करवाई। ध्वजारोहण का समय प्रात ८ बजे का था। इसके एक दिन पूर्व कार्यक्रम के प्रत्येक वर्ग का समय विभाजन स्वय ने किया तब श्रोत्रियजी को सन्तोष हुआ कि ध्वजारोहण का सारा कार्यक्रम समय पर सम्पन्न हो जायगा। दूसरे दिन श्री बियाणीजी की अगवानी के लिए श्रोत्रियजी अपने परिवार के साथ द्वार पर ७-५५ पर पहुच गये। ७ बजकर ५७ मीनिट जक श्रद्धेय बियाणीजी की प्रतीक्षा श्री श्रोत्रियजी ने की। परन्तु जब श्री बियाणीजी के पधारने मे विलम्ब होने की समावना निश्चय मे परिणित होने लगी तो श्रद्धेय श्रोत्रियजी ने कहा 'राष्ट्रध्वज किसी की प्रतीक्षा नहीं करता, उसका सम्मान सर्वोपरि है' देखते-देखते सलामी

टुकडी के मुखिया के आदेश हुए सावधान-ध्वज सलामी और राष्ट्रीयध्वज अपने दण्ड पर अपनी गरिमा के साथ उत्तोलित हो गया। राष्ट्रगान के बाद प्रशिक्षिकाए विश्राम की मुद्रा मे खडी थी कि वियाणीजी वहा पहुंचे। परन्तु वे देखते है कि राष्ट्रीयध्वज सम्मानपूर्वक समय पर चढा दिया गया था।

कार्यकर्त्ता बडे सकोच मे थे कि सम्मानीय अतिथि की अनुपस्थिति मे राष्ट्रीयध्वज का आरोहण कैसे होगा? परन्तु ८ बजे श्रोत्रियजी को कहते हुए सुना गया "राष्ट्रीयध्वज किसी की प्रतीक्षा नही करता।" उपरोक्त शब्द आज भी मेरे कानो में गूंजते है।

सी १०० बापूनगर, जयपुर



नारियां जिनकी कृतज्ञ हैं

—श्रीमती राज नैयर

प्रत्येक क्षेत्र मे हमारा देश दूसरो से आगे रहा। सभ्यता तथा सस्कृति मे इसकी समता कोई देश न कर सका। धर्म शास्त्रो मे नारी को गृहस्वामिनी के नाम से सम्मानित किया गया हैं। यहा तक कि उसके बिना कोई धार्मिक कृत्य सम्पन्न नही हो सकता था। हमारे ग्रन्थो मे तो यहा तक लिखा है—

"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता"

समय ने करवट ली और एक छोटी सी फूट के कारण यह सोने की चिडिया कहलाने वाला भारत दासता की बेडियो मे जकड़ा गया। विदेशियो द्वारा स्त्रियो पर बलात्कार होने लगे। अपने सतीत्व तथा मर्यादा को बचाने के लिए भारत मे पर्दे की प्रथा प्रचलित हो गई। स्त्री केवल बालिका के रूप मे जन्म लेकर, अन्त मे कुछ बच्चो को जन्म देकर ससार से अलविदा हो लेती थी। वह अपने घर से बाहर झाक तक नही सकती थी। चलिये अब हम 'राजस्थान के स्वर्ग उदयपुर" मे आज से बीस साल पुराने दर्पण में झाक कर देखें कि उस समय वहा की नारी कहा थी।

अन्य स्थानो की भाति वहा भी अनमोल हीरे चहारदीवारियो के अन्दर सड रहे थे। भगवान के अभिशाप से जो बहिनें विधवा हो जाती थी उन्हे तो समाज अपने थपेडो से कुचल कर मिट्टी में मिला देते थे। असहाय नारियो की ऐसी परिस्थितियो को देखकर श्रीमान् दयाशंकर श्रोत्रिय से न रहा गया और आपने भारत के इन वास्तविक हीरो को उनका उचित स्थान दिलाने का निर्णय लिया। आपने सोचा कि नारी-उत्थान से ही समाज का उत्थान और समाज के उत्थान से ही देश का कल्याण हो सकता है। आपने एक ऐसी सस्था का निर्माण किया जिसमे प्रौढ-शिक्षा का उचित प्रबन्ध था। सस्था का नाम भी कार्यों के अनुसार 'महिला-मण्डल" रखा। सस्था के खुल जाने से ही उसका आरम्भ नही हो जाता, जब तक कि



उसमें पढने वाले ही न हों। कोई भी अपनी वहू-वेटियों को शिक्षा प्राप्त करने के लिए नहीं भेजना चाहता था। कठिन समस्या सामने आई परन्तु श्रद्धेय वावूजी ने हिम्मत नही हारी। आप केवल अपने पुरुषार्थ के बल पर उदयपुर की सकीर्ण गलियो मे गये तथा उनमे जागृति की लहर उत्पन्न करने का भरसक प्रयास किया। अपने प्रयास के रूप में अपने लोगो के अपशब्द सुने। परन्तु आप तो अटल निश्चय कर चुके थे कि मुझे नारी समाज को उन्नत करना है। आप कुछ बहिनो को लाने में सफल हुए और कार्य आरभ किया। शिक्षा प्राप्ति के लिए जब यह बहिनें अपने घरो से निकलती तो लम्बा घू घट काढे हुए। सभ्यता नाम का स्पर्श भी उनके पास न था। परन्तु आपने उन विकसित फूलो को जो कि अभी डाली की शोभा थे अपने गुणों से सींचना प्रारम्भ किया। समयानुसार उन पर शिक्षा का प्रभाव हुआ। उन बहिनो ने अपने कर्तव्य को समझा और वह भी आपके साथ कन्धे से कन्धा भिडा कर काम करने को तैयार हो गई। इस सस्था से आज तक हजारो बहिनें अपना जीवन बना कर समाज क्षेत्र में उतर चुकी हैं। शिक्षा का सबसे बडा वरदान जो इन बहिनो ने पाया वह है 'स्वावलम्बन"। आज वे अपने पैरो पर खडी हैं तथा अपने अन्य सम्बन्धियो की भी समय, कुसमय सहायता करती हैं।

उदयपुर शहर के इस प्रयास से भी आपको आत्म सन्तुष्ठि न हुई और आपके पैर उन भयानक जगली ग्रामो की ओर बढे जहा से मानव का जिन्दा आना कठिन था। वह भील जो कि मानव-जीवन को खिलवाड समझते थे, क्या उनसे सम्बन्ध बनाना सरल था ? आप गाव-गाव पैदल चल कर उनमें जागृति उत्पन्न करने का प्रयास करने लगे। उन भीलो को ऐसा विश्वास दिलाया कि उनकी बालिकाएँ भी शिक्षा ग्रहण कर उन्नति कर सकती हैं। आज उन्ही भीलो के बच्चे-बच्चिया अच्छे-अच्छे डाक्टर वकील, अध्यापक तथा राजनैतिक क्षेत्रो मे भी उतर आये हैं। शारीरिक शक्ति मे तो इन बहिनो ने सोने के तमगे तक भारत सरकार द्वारा प्राप्त किए और अतर्राष्ट्रीय मच पर भी भारतीय महिलाओं को गौरव दिलाया है।

साधारण जनता का कहना है कि "आज का बच्चा कल का नेता"। परन्तु श्रद्धेय वावूजी का कहना है कि वह बच्चा तभी नेता बन सकता हैं जबकि उसकी माता शिक्षित हो। नेताओ का निर्माण माताओ पर निर्भर है। जो हजार गुरुओ की एक गुरु है। बच्चे के मस्तिष्क पर बिना कुछ बोझ डाले मा ही बहुत कुछ सकती लिखा हैं। ससार मे बहुत से महापुरुषो की महानता उनकी माताओ की देन है।

क्या आज हम ऐसा सोच लें कि देश की सब नारियां शिक्षित हो चुकी है ? नहीं। अभी तो इस कार्य को उन्नत करने के लिऐ ८५ प्रतिशत नारियां उसी अवस्था मे है जिसमे थीं। आज देश को श्रद्धेय बावूजी जैसे महापुरुषो की आवश्यकता है।

आज जब मैंने कुछ लिखने के लिऐ लेखनी उठाई तो नगर की नारी काफ़ी आगे बढ चुकी है। आज हमारी प्रधान मत्री भी श्रीमती इन्द्रा गाधी है जो कि नारी समाज के लिऐ एक उत्साह जनक उदाहरण है। आज प्रत्येक नारी के मन मे ऐसी भावना जाग्रत होनी चाहिऐ कि वह भी अपनी शिक्षा के बल पर भारत की बागडोर सम्भाल सकती है।

मैं भी लगभग ५ वर्ष तक श्रद्धेय बाबूजी के कार्यकर्ताओं के परिवार का अंग रही उनके इतना अधिक समीप रहकर ही मैं संस्था के विचारो को जान सकी।

जब मैंने पिता तुल्य स्नेह पाया—

मै पजाब की एक साधारण महिला हूँ मेरे पति केन्द्रीय कार्यालय मे कार्य करते हैं। भाग्यवश १९६० मे हमारा स्थानान्तरण उदयपुर होगया और मुझे महिला-मन्डल मे अपनी सेवाऐं अर्पित करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। केन्द्रीय कार्यालय मे आने से पहले मेरे पति वायुसेना में सार्जेन्ट के पद पर आसीन थे। १९६२ मे चीन के खून ने हरकत की और उन्नति करते हुऐ भारतीय शेरों को ललकारा। भारत का बच्चा-बच्चा स्वाधीनता की रक्षा के लिऐ खून बहाने का तैयार था, और एक शाम—

मेरे पति को तार द्वारा सूचना मिली कि लद्दाख के अग्रिम मोर्चे पर वायुसेना विभाग मे रिपोर्ट करें। देश के प्रति अपने कर्त्तव्य को निभाने के लिये वह नियत समय पर उदयपुर छोडकर चले गये मैं परदेश मे अपने छोटे २ बच्चो के साथ अकेली रह गई। मेरे परिवार के अधिकतर लोग देहली में थे। परन्तु सकट को सिर पर देखकर सबने आखे फेर ली।

उस समय स्नेह का दीपक बाबूजी के हृदय मे जागा। उन्होंने मुझे सात्वना दी-"यह तुम्हारी परीक्षा की घडी है। साहस से काम लो, हम सदा तुम्हारे साथ हैं।" उन्होने अपने शब्दो को कार्यान्वित भी कर दिखाया। मैं उन दिनों अत्यधिक परेशान और अव्यवस्थित रहती थी। तभी एक रोज—

मेरे गृह कार्य जाच का घन्टा था। समय समाप्त हो चुका था और मैं अपने विचारो मे खोई एक कौने मे बैठी रही। उधर मेरी कक्षा मे शोर इतना कि बच्चो ने स्कूल को सिर पर उठा रखा था। अचानक बाबूजी आ निकले। कक्षा मे केवल यह जानकारी करने के बाद कि इस समय क्या विषय चलना चाहिऐ आपने कक्षा लेने की ठानी। मुख्याध्यापिकाजी ने ढूंढ मचादी और मुझे वाचनालय से बुलाया गया मैंने घडी की ओर ध्यान दिया तो भौंचक्की रह गई। कक्षा में जाकर देखा तो श्रद्धेय बाबूजी कक्षा को पढा रहे हैं। मेरे पहुंचते ही बोले-"अच्छा आपकी कक्षा है।" आपने मुझे यह बताने तक का कष्ट नही किया कि मै कहा थी और क्यो कक्षा मे नही आई ?

लगभग प्रत्येक सायकाल मेरे बच्चो को बुलाकर बातचीत करना, उनके साथ बच्चा ही बन जाना आपका एक विशेष गुण रहा हैं। मेरी किसी भी कार्य में रुचि नही होती थी परन्तु ऐसे आडे समय में आपने तथा महिला-मण्डल के प्रमुख कार्यकर्त्ता ने मुझे सदा प्रसन्न रखने का प्रयत्न किया।

समय ने करवट ली देश में शान्ति का वातावरण छा गया और मेरे पति वापिस आगये। आज मै उन बीते दिनो की याद करती हूँ तो मेरा मस्तक श्रद्धा से बाबूजी के चरणो मे झुक जाता है। एक ओर गर्व से मस्तक ऊचा भी हो जाता है कि उस समय मे मैनें पिता तुल्य स्नेह पाया जबकि सब सम्बन्धियो ने मुँह मोड लिया था। आपने मेरे साथ ही नही, समाज की अन्य पीडित महिलाओ की भी इस भाति सहायता की है कि आज उन्होने जागृति की प्रेरक शिक्षा पाली है। मेरी अन्तरात्मा अन्तिम स्वास तक आप के उपकारो का ऋण न चुका पायगी।



एक प्रेरक व्यक्तित्व : श्री दयाशंकर श्रोत्रिय

—श्री शिवकुमार त्रिवेदी

हरीतिमा, पुष्प और फूलों से आच्छादित सघन कुंज सा प्रतीत होने वाला एक ऋषि-आश्रम। टीन के छाप्पर मे भी सुरुचि, सुसास्कृतिक, सादगी एव राष्ट्रीयता के वातावरण से ओतप्रोत एक कक्ष-लकडी की एक साधारण सी कुरसी पर बैठा हुआ श्वेत खादीधारी ६८ वर्ष का एक युवक-प्रौढ व्यक्तित्व। प्रात ४ बजे तेज रोशनी मे-ऊचे नम्बर का मोटा चश्मा लगाये कार्य मे रत है। महिला-मण्डल की केश बुक की चैकिंग, दिन भर मे टाईपिस्ट के लिये कार्य, सहायको को भेजे जाने वाले पत्र के प्रारूप अगली बार की सहायता-सग्रह यात्रा में मिलने वाले विशिष्ट व्यक्तियो की सूचि, अखिल भारतीय खेल-कूद की विवरण पत्रिका, राजनैतिक कार्यकर्त्ताओ को स्नेहिल पत्र, सभी कुछ दिन के ७ बजे से पूर्व ही तैयार हो जाता है। आम आदमी जब तक बिछौने मे उठता है—यह वृद्ध, तेजस्वी युवक दिन भर के कार्य भार से निवृत होकर एक मस्ती की स्नेहिल अगडाई लेते हुए अतिथि-गृह से एक दो स्नेही सज्जनो को प्रेमपूर्वक चाय केलिये आमन्त्रित कर लेता है। मण्डल के चपरासीसे लेकर बडे से बडे अतिथि के साथ एक साथ बैठकर चाय पान करना-एक नित्य नियम सा बन गया है। ऐसे श्रद्धेय व्यक्तित्व के साथ बैठकर भला कौन स्नेहाभिभूत न हो उठेगा।

श्री दयाशकर श्रोत्रिय अपने आपमें एक जीती-जागती सस्था है—सगठन है—व्यक्तित्व है। स्मरण शक्ति के क्षेत्र मे जिसका कोई मुकाबिला नही-बम्बई, कलकत्ता, दिल्ली इलाहाबाद, वाराणसी, मद्रास और बंगलोर के हजारो सहायको के नाम और पते एक क्षण मे उनकी स्मृति में ताजा हो उठते हैं राजस्थान की राजनीतिका पिछले ४० वर्ष का कोई सा भी प्रसग हो-श्री श्रोत्रिय एक इतिहास की भाति उसका सजीव चित्रण प्रस्तुत कर देते है। बडे से बडे राजनेता से लगाकर-छोटे से छोटे कार्यकर्त्ता के जीवन के सम्बन्ध मे श्री श्रोत्रिय एक 'एन्साइक्लोपीडिया' हैं। राजस्थान की स्वाधीनता संग्राम की यशोगाथा का यह निर्लिप्त चाणक्य वर्षों से टीन के छाप्पर मे ऋषि कणाद की भांति बैठा-लोकमगल मे सरत हैं। प्रात का कोई भी सार्वजनिक, शैक्षणिक, राजनैतिक या सामाजिक समारोह हो, श्रोत्रियजी उस कार्यक्रम की रूपरेखा मे तल्लीन नजर आएगे। कार्य छोटा हो या सर्वाधिक बडा-अपनी सारी शक्ति लगाकर उसे सर्वश्रेष्ठ रूप में सम्पन्न करना—यही एक मात्र उद्देश्य लेकर श्रोत्रियजी प्रत्येक कार्य का शुभारम्भ करते हैं। देशी राज्य लोक परीषद का १९४६ का उदयपुर अधिवेशन—जिसने राजस्थान में लोकतान्त्रिक चेतना का सचार किया, व्यवस्था के केन्द्र श्री श्रोत्रियजी थे। लोक नायक स्वर्गीय माणिक्यलाल वर्मा अक्सर कहा करते थे "श्रोत्रियजी राजस्थान के सरदार पटेल हैं जिनके जिम्मे कोई सा भी काम सोपकर निश्चिन्त हो सकते हैं।" प्रान्त मे जो भी विशाल समारोह होते, स्व० श्री वैद्य अमृतलालजी, ऋषिमना श्री वैद्य भवानीशकरजी तथा

श्रोत्रियजी की त्रिवेणी के बिना यह समारोह पूर्ण नहीं होता। किसी भी कार्य में तन, मन, धन से जुट जाना, चाहे वह कैसा भी क्यो न हो, कम से कम महत्त्व का क्यो न हो, श्री श्रोत्रियजी की सफलता का एक रहस्य है।

पिछले २० बरस से निरन्तर श्रोत्रियजी के सम्पर्क मे हूं—एक भारतीय पारिवारिक बुजुर्ग के रूप मे उनका शुभाशीर्वाद, स्नेह एव अनुकम्पा प्राप्ति का अधिकारी रहा हूं। समाज-सेवा के कार्य मे लगने की प्रेरणा उनसे प्राप्त हुई। राजनीति मे निष्ठापूर्वक, तन्मयतापूर्वक सरत रहने की लगन उनसे सीखने को मिली, छोटे से छोटे व्यक्ति का सम्मान करना उनसे सीखने को मिला। आत्मसम्मानपूर्वक बिना अभिमान के कार्य मे जुटे रहो, यही एक सदेश है, जो कार्यकर्त्ता श्रोत्रियजी से प्राप्त करते हैं।

१९५७ मे आम चुनावों के तूफानी दिन! श्रीमती कमलाजी श्रोत्रिय भीलवाडा निर्वाचन क्षेत्र में विधान सभा की उम्मीदवार। चुनावो मे करीब १ मास पूर्व टिकिट का अप्रत्याशित निर्णय हुआ-मुख्यमत्री श्री सुखाडियाजी निश्चित हो गये, श्री श्रोत्रियजी को चुनाव सचालन कार्य भार सौंपा। महिला-मण्डल की ५-७ कार्यकर्त्ताओ के साथ मुरली-विलास मे पडाव डाल बैठे श्रोत्रियजी। कम से कम साधनो मे ऐसा योजनाबद्ध सगठन कि लोक आश्चर्यचकित देखते रहे। पूरे क्षेत्र का ८ भागो मे विभाजन-प्रत्येक केन्द्र पर साईकिलो से भोजन पहुँचाने की व्यवस्था प्रत्येक केन्द्र का दिन मे १ वार निरीक्षण-प्रत्येक गाव के १०-२० प्रमुख लोगो की नामावली-श्रोत्रियजी की जबान पर। सवेरे ४ बजे उठकर पूरे एक महीने रात्रि तक ११ बजे कार्य करना। लेकिन कोई उद्विग्नता नही-साथियो के साथ स्नेहील व्यवहार मे कोई कमी नही, महिला-मंडल की डाक, पत्र व्यवहार और आर्थिक स्थिति के मामले मे कोई अव्यवस्था नही। आने-जाने वाले लोगो के साथ सपर्क सम्बन्ध इन चुनाव के दिनो जो बने—१४ वर्ष बीत जाने पर भी उनमे कोई अन्तर नही। मुरली विलास के चौकीदार से लेकर गाव २ के दस-बीस लोगो के सम्बन्ध मैं आज भी इस क्षेत्र के किसी भी व्यक्ति से मिलने पर श्रोत्रियजी पूरी चर्चा करते हैं। भीलवाडा नगर के निवासी होने पर भी बीच मे निरन्तर ५० वर्ष बाहर रहने के कारण श्रोत्रियजी का इस जिले मे जो सम्बन्ध थोडा कम हो गया, वह पुन: चुनाव के माध्यम मे सजीव हो उठा और ऐसा सुदृढ हो उठा कि आज भी भीलवाडा क्षेत्र के १००-५० पत्र हर मास श्रोत्रियजी के पास पहुंचते है, और वे यथासम्भव पत्र-प्रेषको की सहायता करते है उनका मार्ग दर्शन करते है, उनको उत्तर देते हैं।

भीलवाडा मे बाल्यकाल से लगाकर, उदयपुर, इलाहाबाद तक की घटनाएं श्रोत्रियजी मे अध्यवसायिता, अनशन, सघर्ष अनोखी सूझबूझ की कहानी है। एक साधारण से ब्राह्मण परिवार मे जन्म लेकर सार्वजनिक सस्था के माध्यम से आज तक करीब १ एक करोड़ रु० व्यय करने वाला यह व्यक्ति आज भी निरभिमान, सादगी, विनम्रता सी सजीव प्रतिमा है, जीवन मे जिससे एक बार भी सपर्क हो गया, वह आजीवन जुड गया, कितनी भी व्यस्तता हो, परेशानियां हो, परिचित व्यक्तियो के लिये श्रोत्रियजी की स्वाभाविक-सरलता मे सहायता की मनोवृत्ति मे कोई कमी नहीं।



मेवाड प्रजामण्डल के संस्थापक महामन्त्री श्री दयाशंकर श्रोत्रिय स्वाधीनता संग्राम में इन्हीं बार में बंदी साथियो के परिवारो की सहायता मे जुटे रहे श्रोत्रियजी की प्रेरणा से मेवाड के पचासों नौजवानो मे आज़ादी के महायज्ञ मे कूद पडने की प्रेरणा प्राप्त हुई। रातो-रात हाथ से लिखकर सैकड़ो स्थानों पर पोस्टर चिपका देना डाक इधर से उधर पहुचा देना, कार्यकर्त्ताओं के घर खाद्यान की व्यवस्था कर देना जैसे उन दिनों इनके दैनिक कार्यक्रम का एक अग सा बन गया लेकिन जैसे ही देश को आज़ादी प्राप्त हुई-सत्ता प्राप्ति की होड लगी-टिकिट लेने के लिये मेला लगने लगा-श्रोत्रियजी महिला–मडल की टीन वाली कुटिया में ही बैठे रहे। महात्मा गाधी के समक्ष लिये हुए व्रत को पूरा करने के लिये ही यह देश सेवक अपने सपूर्ण जीवन की बलि देने में तत्पर है। राजनैतिक संघर्षों और पद लिप्सा की ऊहापोह के वातावरण से कोसो दूर-यह कर्मठ सेवक अपने मिशन की पूर्ति मे दिन रात लगा रहता है। महिला–मडल जैसी विशाल सस्था का साधनहीन अवस्था में सचालन किसी बहुत बडी मिल की व्यवस्था करने से कम नहीं है। प्रतिवर्ष ६८ साल की आयु मे भी श्रोत्रियजी बम्बई कलकत्ता और दिल्ली महानगरो मे धन संग्रह हेतु जनसपर्क करते देखे जा सकते हैं। अपने कार्य में पूर्ण आस्था, विश्वास और श्रद्धा लिये श्रोत्रियजी देश के धनपतियो से मिलते हैं-गौरव एव आत्मसम्मान के साथ। कहीं दीनता, याचना और साधनहीनता की बात नहीं। देश की सेवा का कार्य है–देशवासियो से सहायता प्राप्ति का नैतिक अधिकार है–इसी कर्त्तव्य निष्ठा के साथ श्रोत्रियजी सहायकों की श्रद्धा प्राप्त करते हैं। सहायक उन्हें आर्थिक-सहयोग प्रदान करता है, श्रद्धा के साथ-एक परिवार के जन की सी भावना के साथ। दाता और गृहीता दोनो ही–जैसे धन्य हो उठते हैं।

६८ वर्ष की आयु मे भी समाज, राजनीति और शिक्षा के त्रिवेणी यज्ञ में श्रोत्रियजी नौजवान की सी स्फूर्ति, साहस, परिश्रम और सूझबूझ के साथ तन्मय हैं। श्रोत्रियजी जैसी प्रतिमा का अभिनन्दन कर, उनके सूझबूझ भरे जीवन से प्रेरणा प्राप्त कर भला कौन–धन्य न हो उठेगा।

(सपादक 'लोक जीवन' भीलवाडा)



नारी-जागरण के अग्रदूत: श्रोत्रियजी

–डा० मण्डन मिश्र

भारतीय इतिहास का दासता से पूर्ववर्ती अतीत नारी जागरण की दृष्टि से जितना गौरव पूर्ण रहा है, उसके ठीक विपरीत दासता के युग मे उतना ही अन्धकार पूर्ण रहा है। प्राचीनकाल में जब वैदिक-महिलाएं स्वय मन्त्रद्रष्टी होती थी, औपनिषदिक अध्यात्म के चिन्तन और परिप्रश्न में अपना अपूर्व

सहयोग देती थीं, सामान्य जन-जीवन से ऊपर उठकर कर्त्तव्यपालन की कठोर कसौटी पर सदा खरी उतरती थीं और सेवा-शुश्रूषा के साथ-साथ रणांगण मे रणचण्डी बनकर शत्रुदल से लोहा लेने मे कभी पीछे नहीं रहती थी। वही मुस्लिम आक्रमण के पश्चात् सारा दिन घर के काम काज मे बिताना, आत्मविकास के अवसरो से दूर रहना, सकुचित वृत्ति, व्यक्तिगत स्वतन्त्रता न होने के कारण मानसिक एव आत्मिक उन्नति के विचार से शून्य और पर्दे की ओट मे अपने आप को छिपाये रहने लगी।

इस दुखद प्रवृत्ति का अन्त करने के लिये स्वतन्त्रा आन्दोलन के साथ ही साथ नारी-जागरण का आन्दोलन भी प्रारम्भ हुआ। कतिपय प्रमुख नेताओ ने स्त्रियो के प्रति किये जाने वाले अत्याचार तथा कदाग्रह का विरोध किया, समाज में प्रचलित बुराइयां तथा कुत्सित प्रथाओ का डटकर मुकाबला किया। ब्रह्मसमाज, आर्यसमाज आदि महनीय सस्थाओ के माध्यम से नारीजागरण मे निखार लाने का प्रयास किया गया। घर की चारदीवारी मे घिरी, अर्धांगिनी के पद से उतरकर मात्र सेविकाएं बनी हुई, शिक्षा से दूर, बाल विवाह सतीप्रथा, कन्या-विक्रय आदि कुरीतियो मे जकडी हुई नारी की कठिनाई को पहचाना और अग्रेजो को शासन मे राजा राममोहनराय के दृढ विचार और प्रचार से गवर्नर-जनरल विलियम बैंटिक के काल मे १८२९ ई० मे सतीप्रथा और छोटी लडकियो की हत्या आदि जैसी कुरीतियो को रोकने के लिये कानून बनाये।

नारीनिकेतन, नारी आश्रम जैसी समाज सुधारक सस्थाओ के प्रयत्न से देश का ध्यान नारी-शिक्षा की ओर आकृष्ट हुआ। परिणाम यह हुआ कि सैंकडो पाठशालाएं और महाविद्यालय देश के भिन्न-भिन्न भागो मे बालिकाओं के लिए खुल गये और उस समय बालको और बालिकाओ की शिक्षा समान रूप से चलने लगी।

पिछले पचास-साठ वर्षों मे स्त्री सुधार की ओर पर्याप्त ध्यान दिया गया है और यह बहुत कुछ शिक्षा-बहुल नगरो मे प्रभावशाली भी हुआ। किन्तु राजस्थान इस दृष्टि से बहुत पीछे रहा। हम वहा की वीरांगनाओ के शौर्य और बलिदान की गाथा से तो परिचित है पर वहा की शैक्षणिक शिथिलता और नारी शिक्षण के नितान्त अभाव से परिचित नही थे। स्वतन्त्रता से पूर्व इस दिशा मे कुछ विद्वानो का ध्यान इस ओर गया और उन्होंने अपने जीवन का चरम और परम लक्ष्य ही नारी-शिक्षा को चुना।

ऐसी विभूतियो में मेवाड क्षेत्र की बागडोर आदरणीय श्रोत्रियजी ने संभाली और अपनी तपस्या और अटूट लगन के फलस्वरूप उदयपुर नगर मे एक "महिला-मण्डल" नामक कल्पवृक्ष का पौवा लगाया। श्रम, निष्ठा एव कर्त्तव्य परायणता के त्रिवेणीजल से सीचते संवारते हुए श्री श्रोत्रियजी ने आज सचमुच एक कुशल माल दार की भाति उसे कल्पवृक्ष के रूप मे खडा कर दिया है।

सैंकडों अनाथ बहिनो को आश्रय देकर शिक्षा की भिक्षा के लिये तरसती ग्रामीण आदिवासी बालाओ को उच्च शिक्षा से दीक्षित बनाकर विभिन्न शाखाओ मे फैले हुए मण्डल के अधीन विद्यालयो मे अध्यापनार्थ जीविका प्रदान कर प्रारम्भिक शिक्षा से लेकर उच्चतम शिक्षा तक की सुविधा देकर देश-



विदेश मे प्रतिष्ठा जमाना और राजस्थान के इतिहास में एक गौरवमय पृष्ठ जोडने का काम प० दयाशकरजी श्रोत्रिय के त्याग और तप का ही तो प्रतीक है।

स्वभाव से सरल, मिलनसार, शिक्षाशास्त्री और सेवाभावी श्रोत्रियजी से मिलकर मन गद्गद हो जाता है। उनकी कार्यप्रणाली और तत्परता देखकर निश्चेष्ट व्यक्ति मे भी प्रेरणा उछलने लगती है तथा व्यक्तित्व की विरलता और व्यवहार की निर्मलता देखकर श्रद्धा से मस्तक झुक जाता है।

ऐसे तपस्वी, कर्मनिष्ठा, उदाराशय मनस्वी का अभिनन्दन वस्तुत त्याग और तपस्या का अभिरत है। आपकी इस अभिन्दन-माला मे मेरी भी कुछ पखुडिया अर्पित करता हू तथा परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि आप दीर्घायु होकर उत्तरोतर राष्ट्र की सेवा करते रहे।

लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रीय सस्कृत विद्यापीठ, शक्तिनगर, दिल्ली-७

—

दयाशंकर श्रोत्रिय : एक स्वप्न दृष्टा

—श्री जगजीवनसिंह मसीह

इतिहास में राजस्थान वीरागनाओ और विदूषियों का देश रहा। कर्मावती की करवाल और मीरा की कलम एक ही भूमि पर चली। पर यह स्वर्णिम पृष्ठ आगे आकर धूमिल हो गया। राजनैतिक दासता और निर्धनता का नारी-समाज ही नहीं अपितु पुरुषो का समाज भी विकट स्थिति मे खडा हो गया। फलस्वरूप बहुविवाह, बाल विवाह, कन्या विक्रम, वैश्यावृत्ति एव विधवा समस्या आदि महिलाओ की हृदय विदारक स्थितियों के कारण बने। देश के अनेक प्रान्तो में १६ वी शताब्दी मे नारी सुधार हेतु नेताओ द्वारा प्रयत्न किये गये। सामाजिक कार्यकर्त्ताओं ने शारदा एक्ट एव पुर्नविवाह के प्रयत्न किये। किन्तु सामाजिक जागरण के अभाव मे यह सब प्रभावहीन ही सिद्ध हुआ।

राजनैतिक क्रान्तियां राजनैतिक परिवर्तनो के साथ एक झटके से हो जाती हैं। किन्तु सामाजिक क्रान्ति और सुधार एकान्त भाव से सामाजिक सुधार के लिये निरन्तर साधना करने वाले सत और शान्त सार्वजनिक कार्यकर्त्ताओ द्वारा ही सम्भव होते हैं।

राजस्थान में मेवाड प्रदेश अपनी मान मर्यादाओ के लिये निर्धनता से टकराता हुआ चलता रहा। फिर रूढिवादी, सामन्ती एव अन्धविश्वासो से युक्त व्यवस्था मे नारी समाज के लिये कार्य करना अत्यन्त कठिन कार्य था।

परन्तु 'जाग्रत नारी राष्ट्र की जीवन ज्योति है' इस दृढ विश्वास को लेकर श्री दयाशकर श्रोत्रिय ने कठिन एव कष्टसाध्य कार्य को एक कर्त्तव्यनिष्ठ कार्यकर्त्ता की भाति प्रारम्भ किया। उदयपुर के सार्वजनिक कार्यकर्त्ता की अग्रिम पक्ति मे श्री दयाशकरजी श्रोत्रिय का नाम प्रमुख है। उन्होंने अपने परिवार के सम्पूर्ण सदस्यो को लेकर महिला-मण्डल का शुभारम्भ किया। महिला-समाज की समस्याओ को लेकर जन जागृति का दुरूह कार्य श्री श्रोत्रियजी ने किया।

राजनैतिक प्रलोभनो से मुक्त—

सत्ता प्राप्ति हेतु कई सार्वजनिक कार्यकर्त्ता संस्था की भावना को छोडकर ऐश्वर्य और अधिकार की ओर उन्मुख हुए। किन्तु श्रोत्रियजी ने कभी भी राजनैतिक ऐश्वर्य को प्राप्त करने हेतु अपने आपको सस्था मे विलग नही किया। यह सभव है कि राजनैतिक कार्यकर्त्ता इनके प्रभाव, कार्यकुशलता एव प्रबन्ध पटुता के कारण इनका उपयोग यदा कदा कार्यसिद्धि हेतु करते रहे। यही कारण है कि कभी राजनीति का ग्रहण इनको लगता रहा परन्तु शीघ्र ही उन्होने स्वय को अपनी मूल सस्था के हित चिन्तन मे लगा दिया।

कुशल प्रबन्धक—

वे गांधी शताब्दी, सर्वोदय केन्द्रीय, समाज कल्याण विभाग, अनुसूचित एवं जन जाति सेवा संघ आदि अनेक संस्थाओ के सहकर्मी एव हित चिन्तक रहे हैं। विभिन्न सामाजिक सस्थान, उदयपुर के प्रांगण मे श्री दयाशकर जी श्रोत्रिय के सहयोग को प्राप्त करते रहे। सार्वजनिक जलूसो, सम्मेलनो, गोष्ठियो आदि को वे चाहे राजस्थान स्तर पर हो अथवा सम्पूर्ण देश के स्तर पर, श्री श्रोत्रियजी की सेवाए उपलब्ध रही हैं।

सस्था का विकासमान स्वरूप—

आज की स्थिति मे सस्था का स्वरूप विकसित अवस्था मे हैं। रात्रि महाविद्यालय, माध्यमिक विद्यालय, कन्या छात्रावास, अनेक बालमन्दिर, प्रौढ शालाए समय समय पर आयोजित विभिन्न सस्था कार्यों के प्रमुख अंग है। विशाल भवन एव प्रागण में उदयपुर की बस्ती के मध्य मे होने हुए भी निष्ठावान कार्यकर्त्ताओं के सहयोग, साधन और कर्मठ कार्यकर्त्ताओ के योग से महिला—जागरण का कार्य सम्पन्न हो रहा है।

परन्तु आज से २० वर्ष पूर्व सस्था का रूप भिन्न था। माध्यमिक विद्यालय का भवन नहीं था। पक्के कमरो मे तो रात्रि शाला, छात्रावास, और कार्यालय और केवल बांस की टाटी मे श्रोत्रियजी और उनका परिवार रहता था। किसी भी प्रकार के पक्के मकान का उपयोग वे नही करते थे। किराये के भवन मे कोई परिवर्तन सम्भव नही था। वे निरन्तर सस्था के लिये सतत परिश्रम करते रहे। अपने कार्य प्रवृत्तियो के बल पर राजस्थान से बाहर धन संग्रह हेतु कलकत्ता, बम्बई, मद्रास आदि नगरो मे जाकर धनिकों से इस कार्य के लिये दान मागा करते थे। यह क्रम आज भी चालू है। धनिकों से सहायता जुटा कर



सस्थाओं को सिंचित करने का कार्य अनवरत चल रहा है । यही नहीं, घर घर जाकर महिलाओं को साक्षर बनाने हेतु उनको शिक्षा का अवसर प्रदान कर जीवन को विकसित करने का कार्य आज भी चल रहा है ।

कई छात्रो ने रात्रि महाविद्यालय मे कार्य कर दिन में अध्ययन किया है । इस प्रकार अनेक महिलाओ ने और पुरषो ने अपने जीवन इस सस्था के प्रागण में विकसित किये हैं ।

ऐसे कार्यकर्त्ता का अभिनन्दन करना समाज का दायित्त्व है । यदि ऐसा नही करते हैं तो हम सार्वजनिक कार्यकर्त्ताओ के प्रति अकृतज्ञ होगे ।



महिलाओं की प्रगति के सूत्रधार बाबूजी

—श्रीमती जे. जे. सिह

अभाव मे ही प्राप्ति की प्रसन्नता है । क्षुधा मे ही अन्न का स्वाद है । अन्धकार में ही दीपज्योत्सना का सौदर्य है । नीरवता मे ही सगीत का माधुर्य है ।

सन् पैंतालीस का समय था । मेवाड़ महिला-शिक्षा मे बहुत ही पिछड़ा हुआ था । ग्रामीण क्षेत्रो मे महिला-शिक्षिकाओ का अत्यन्त अभाव था । महिलाओ की दशा विभिन्न परिस्थियो के कारण दयनीय थी । तब श्री श्रोत्रियजी ने "ग्राम सेविका तथा शिक्षा विशारदा" प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाने का बीड़ा उठाया । आप जैसे प्रतिभा सम्पन्न व्यक्ति को उच्चकोटि के विद्वान, शिक्षा-शास्त्रियो की मित्रता तथा सहयोग का लाभ मिलता रहा । पूज्य बापू की बेसिक शिक्षा प्रणाली के आधार तीन वर्षों की अवधि का पाठ्यक्रम शिक्षाविद् श्री प्रेमनारायणजी माथुर ने तैयार किया और माँ कस्तूरबा की पुनीत जन्म तिथि २२ फरवरी १९४५ को इस प्रशिक्षण विद्यालय का शुभारम्भ करके इसका नाम कस्तूरबा प्रशिक्षण विद्यालय रखा । स्वर्गीय डॉ० श्री प्रेमचन्दलाल, जो कि अजमेर प्रशिक्षण महाविद्यालय के उपकुलपति रह चुके थे, मै स्वय कुछ समय तक कस्तूरबा प्रशिक्षण विद्यालय का कार्य भार सभाला और इसकी शैक्षणिक गतिविधियो में योगदान दिया । राज्य शिक्षा विभाग ने इसकी मान्यता जे० टी० सी० के समकक्षमान कर अध्यापिकाओं को प्रशिक्षण हेतु महिला-मण्डल भेजा । छात्राध्यापिकाओ के दैनिक कार्यक्रम मे श्री श्रोत्रियजी व्यक्तिगत रुचि लेते थे । प्रतिदिन कुछ मात्रा मे शारीरिक श्रम अनिवार्य था । छात्राध्यापिकाए स्वावलम्बी हो, इस उद्देश्य से कस्तूरबा प्रशिक्षण विद्यालय मे कुछ उद्योगो को चलाया जाता था । निर्मित वस्तुओं की बिक्री भी होती थी, जिससे छात्राध्यापिकाओ को आर्थिक सहायता मिलती थी । इस प्रकार से कार्यानुभव का कार्यक्रम यह विद्यालय चलाता था ।

स्वतंत्रता प्राप्ति की वेला—

कस्तूरबा प्रशिक्षण विद्यालय पर्व, जयन्तियाँ, उत्सवो आदि का एक विशिष्ट स्थान था। पन्द्रह अगस्त सन् १९४७ को हमारा देश स्वतंत्र हुआ। यह दिन स्वतन्त्रता के पुजारी श्री श्रोत्रियजी के लिए महा-पर्व था। प्रातः ४ बजे महिला-मण्डल परिवार की ओर से प्रभात फेरी निकाली गई। श्री कस्तूरबा प्रशिक्षण विद्यालय की छात्राध्यापिकाए कलश सजाये हुए गाती-बजाती जुलूस की अगवानी कर रही थी। सारा वातावरण मधुर संगीत तथा उल्लास भरे नारो से गुंजायमान हो रहा था। नगरवासी सडको, द्वारो, चौराहो पर खडे सस्मित अभिवादन करते रहे। सूरजपोल चौराहे पर पहुँचने पर सूर्य भगवान की प्रभात कालीन किरणो ने जुलूस का स्वागत किया। महिलाओ के मस्तक ईश वन्दना मे झुक गए। इस समय तक नागरिक अनगिनित सख्या मे एकत्रित हो चुके थे। सभी ने उच्च एव मधुर स्वर से राष्ट्रीय गान गाकर देश की स्वतन्त्रता का स्वागत किया। जय घोष हुए।

स्वतन्त्रता के साथ ही पूज्य पिता महात्मा गांधीजी ने रामराज्य तथा सत्य और अहिंसा की कल्पना को विच्छिन्न होते देखा। देश का विभाजन हुआ। श्री श्रोत्रियजी जैसे देश भक्त, कर्त्तव्य परायण तथा सेवा भावी ने सहर्ष सिन्धी महिला शरणार्थियो के कैम्प का कार्यभार सभाला। महिला शरणार्थियो के लिए आवास, भोजन, वस्त्र, आदि की व्यवस्था महिला-मण्डल तथा अन्य स्थानो पर कराना था। प्रातः ४ बजे व्यवस्था के छोटे कक्ष की बत्तिया जलती थी और मध्य रात्रि तक व्यवस्था हेतु वे कार्य में जुटे हुए दिखाई देते थे।

विभिन्न सस्थाओ का अवलोकन—

महिला-मडल शैक्षणिक गतिविधियो मे प्रगति करे, इस उद्देश्य से श्री श्रोत्रियजी ने देश की विभिन्न सस्थाओ को देखा तथा कार्य पर विचार-विमर्श सम्बधित विद्वानो के साथ किये। सस्था मे कम से कम साधनो के रहते हुए भी महिला-मण्डल मे विभिन्न शैक्षणिक प्रवृत्तियो को चलाने की व्यवस्था की गई। श्री श्रोत्रियजी ने कस्तूरबा प्रशिक्षण विद्यालय मे चल रहे कार्यानुभव को बडे पैमाने पर चलाया जिससे शरणार्थियो की सामाजिक समस्याओ को हल कर सके।

विभिन्न प्रवृत्तिया—

श्री श्रोत्रियजी ने शाला सगम के रूप मे सभी प्रवृत्तियो को कस्तूरबा प्रशिक्षण विद्यालय का सहयोग आपसी आदान-प्रदान तथा सरक्षण देने की व्यवस्था जुटा रखी थी। शैक्षणिक गोष्ठियां, अभिनवम प्रशिक्षण तथा सेमिनार आदि की व्यवस्था भी समय २ पर की जाती थी। शिक्षित महिलाओ से सपर्क स्थापित रखने तथा उनको परिस्थितियो का ज्ञान देने हेतु उदयपुर नगर में पुस्तकालय तथा वाचनालय की व्यवस्था की गई। गृहस्थ महिलाओ के लिए गश्ती पुस्तकालय की भी व्यवस्था कराना श्री श्रोत्रियजी का महिला उत्थान की ओर एक सफल कदम था। महिलाओं के लिए तीन घन्टों की शालाओ के रूप मे उदयपुर नगर मे बारह केन्द्र चलते थे। साधारण पढी लिखी अध्यापिकाएं इन केन्द्रो को चलाती थी। इन केन्द्रो की शिक्षित महिलाएं आज विभिन्न क्षेत्रो मे कार्य कर रही हैं।



महिलाओ मे अज्ञान, अन्धविश्वास तथा कुरीतियों से पीडित होकर श्री श्रोत्रियजी ने प्रौढ शिक्षा तथा साक्षरता आन्दोलन समय २ पर चलाये । । श्री श्रोत्रियजी के साथ-पर्दा प्रथा निवारणार्थ एक अभियान लाडनू ग्राम जिला नागौर मे आयोजित किया गया । यह वह स्थान था जहा की जनता पर्दा प्रथा के पक्ष मे थी । किन्तु व्यक्तिगत महिलाओ से सपर्क तथा विचार-विमर्श करने पर दूसरे ही दिन जनता का पूर्ण सहयोग मिल गया । कुछ प्रतिष्ठित महिलाओ ने पर्दा प्रथा का विरोध करते हुए उसी दिन से पर्दा करना छोड दिया । साथ ही इस कार्य को अग्रसर करने की शपथ ली ।

बाल मंदिर—

महिलाओ के साथ २ बच्चों के लिए बाल मन्दिर चलाये । श्री श्रोत्रियजी का बच्चों के प्रति ममता तथा स्नेह का प्रतिक है । सेवा और त्याग के साथ श्री श्रोत्रियजी की श्रम के प्रति निष्ठा है । कठिन से कठिन कार्य का भार वहन करने की अभिलाषा है । जटिल कार्य को भी आसानी से कर गुजरने का साहस है । बहुत थक जाने पर प्राय श्रोत्रियजी इन नन्हे मुन्नो के बीच मे बैठ कर मनोरजन करते हुए दिखाई देते हैं । कस्तूरबा प्रशिक्षण विद्यालय द्वारा प्रशिक्षित अध्यापिकाए राज्य शिक्षण शालाओ तथा विभिन्न क्षेत्रो मे अपनी २ सेवाए कर रही है । उनमे से कुछ सस्था के प्रमुख पदो को सुशोभित करती हुई श्री श्रोत्रियजी को सहयोग देने मे व्यस्त हैं । इन सेविकाओ ने दीक्षान्त समारोह पर मशालें हाथों मे लेकर सेवा, त्याग तथा नारी जागृति की शपथ ली है । "जागृत नारी राष्ट्र की जीवन ज्योति है" यह सदेश ही इनके पथ की दीप शिखा है ।

सन् १९४८ में सेवाग्राम वर्धा मे राष्ट्रभाषा सम्बन्धी एक विचार गोष्ठी में भाग लेने के लिए श्री श्रोत्रियजी के साथ कुछ महिलाए वर्धा गई । सेवाग्राम की महान् विभूतियो का सम्पर्क, दिनचर्या, शैक्षणिक लक्ष्य आदि के सस्मरण आज तक हमारे स्मृति पटल पर अकित हैं ।

Lives of great men,
All remind us
We can make our lives sublime, and departing leave behind us, Foot prints on the sands of time.

बापू और बा का आशीर्वाद

श्रोत्रियजी ने हमारे देश के पूज्य पिता महात्मा गाँधी और माँ कस्तूरबा का आशीर्वाद उनके चरणो मे बैठकर लिया है । प्रमुख शिक्षाशास्त्रियो राजनीतिज्ञो तथा समाज सुधारको के सहयोग से शिक्षा के अर्थ तथा उद्देश्यो पर ध्यान तथा मनन किया है । अत आपकी सुचारु व्यवस्था, मार्गदर्शन, तथा निरन्तर प्रेरणा स्वरूप महिला-मण्डल राजस्थान की एक प्रगतिशील सस्था के रूप मे विद्यमान है ।

अन्त मे यदि यह कहा जाय कि श्री श्रोत्रियजी के इष्टदेव सत्य, शिवम्, सुन्दरम् का साकार रूप इस नारी शिक्षण सस्था महिला-मण्डल में निहित है तो अत्युक्ति नही होगी ।

श्री दयाशंकर श्रोत्रिय-एक निष्काम कर्मयोगी

—श्री उदय जैन कानोड़

खद्दरधारी छोटा कद, झूमती हुई चाल, स्वस्थ शरीर बार-बार अपनी दो अगुलियो को ओठ के ऊपरी भाग पर फिराने वाला मानव उदयपुर और बाहर बार बार इष्टिगत होता है।

इस मानव ने अपनी जवानी की ग्रहस्थ जीवन की धधकती आग मे से एक चिनगारी ऐसे उठाई, जिस पर आज दुनिया की आख लगी हुई है। यह चिनगारी महिला-समाज का उत्थान करने मे परिणित हो गई।

इस मानव और इसकी मानवी के मुख्य रूप से नारी समाज के उत्थान का कार्य पूरे जोर से किया। पिछडे मेवाड के जमाने मे ऐसे कार्यों को चलाना एक हिम्मत का खेल था। स्त्री-समाज में शिक्षा और चरित्र्य का प्रसार करना आज सहज है लेकिन ३० वर्ष पूर्व यह कार्य करना बहुत कठिन था।

महिला-मण्डल मे छात्रावास, शिशुगृह और उद्योगप्रवृत्तियों को चलाकर श्री श्रोत्रियजी ने नारी-समाज की उन्नति की सही मशाल जलाई है। प्रगति चरण बढते हुए आज बडा रूप ले चुके हैं। इस में पिछडी आदिवासी कन्याए भी लाभान्वित हो रही हैं। यह सर्वोत्तम कार्य है। श्री दयाशकर श्रोत्रिय एक कर्मठ कार्यकर्त्ता, प्रचारक, अर्थ सग्राहक और समाज सेवी मानव है। जो निरतर कार्य को गति दे रहा है। हमने इनको जानने का प्रयास नहीं किया अपितु सन् १६४२ से इस मानव से परिचित हैं और १६५०-५१ ई० मे शास्त्री सरकार राजस्थान मे राज्य कर रही थी अधिक सम्पर्क रहा। प्रचार, प्रोपेगेण्डा और दूर-दूर की यात्रा इस मानव के लिए खेल मात्र रहे। यात्रा मे और अर्थ सग्रह तथा राजनीति क्षेत्र में सदैव स्त्री-समाज को साथ मे रखा। 'यथाह्येकेन चक्रेण न रथस्य गति र्भवेत" एक पहिये से जैसे रथ नही चल सकता, उसी तरह बिना नारी-समाज को साथ लिये मानव-समाज उन्नत नही बन सकता। इनके जीवन का एक मूल मत्र है। जिसे सदा, सब समय, सभी क्षेत्रो मे प्रसारित किया है।

अपने साथियो और कार्यकर्त्ताओ मे हिलमिल जाने वाला यह मानव सभी का प्रिय पात्र रहा है। गुस्सा इन्हे बहुत कम आता है। सेवा, बस सेवा। कार्य, बस कार्य। यही एक धुन सदा सवार रहती है।

इनका राजनैतिक जीवन भी नारी-शिक्षा प्रसार के साथ चलता आरहा है। बराबर राजनीति मे भाग लेते आरहे हैं। इनके पुरुषार्थ की जितनी कद्र कर सकें, उतनी कम है। इनका जीवन सदा सादा और नियमित रहा है। ये निर्व्यसनी और निरामिष भोजी हैं और घर तथा बाहर मानव समाज के हितैषी की तरह कार्य करते दिखाई देते हैं।



मेरा योगदान: श्रोत्रियजी का योगदान

—सुन्दरलाल शर्मा

मेरी बचपन से ही समाज-सेवा की भावना रही है। और इसीलिए मैं जाति मे कार्य करता रहा हूँ। मैं समाज सेवा के दूसरे कार्य भी करना चाहता था लेकिन कुटुम्ब की कुछ बाधाए उपस्थित होने से मैं उसमे सक्रिय भाग नही ले सका। सौभाग्य था कि सन् १९४० ई० मे उदयपुर मे अखिल भारतीय गुर्जरगौड महासभा का अधिवेशन आमन्त्रित किया गया। उस समय मुझे श्री श्रोत्रियजी के साथ एक लेखक के रूप मे कार्य करने का अवसर प्राप्त हुआ। मैं श्री श्रोत्रियजी से परिचित नही था और न उनकी कार्यगति को ही जानता था। मुझे कई लोगो ने कहा कि श्री श्रोत्रियजी के साथ काफी तेजी से चलने की जरूरत है। मैंने यह सोचकर कि जो होगा सो देखा जायगा, कार्य करना प्रारम्भ किया। कई बार मैं और श्री श्रोत्रियजी काफी रात्रि तक जागकर महासभा का कार्य करते। श्री श्रोत्रियजी मेरे साथ बराबर दिलचस्पी दिखाते रहे। कई बार मेरी त्रुटियो को उन्होंने सुलझाया और मेरा मार्गदर्शन किया।

जब मैं पिलानी सन् १९४३ ई० मे पढने जाने लगा उस समय मैंने श्री श्रोत्रियजी से कहा कि पिलानी मे न तो मेरा बिडलाजी से परिचय है और न वहां के आचार्यजी से। उदयपुर मे बी० ए० की कक्षाए नही हैं इसलिए पिलानी भेजने की व्यवस्था की जाय। श्री श्रोत्रियजी ने उस समय भी श्री घनश्यामदासजी बिडला एव एस डी पाडे को पत्र लिखा और उसके कारण बिडला कॉलेज पिलानी मे मेरा दाखिल हुआ। सन् १९६१ ई० मे, जब मैं स्थानीय गुर्जरगौड जाति का अध्यक्ष था, अखिल भारतीय गुर्जरगौड ब्राह्मण महासभा का अधिवेशन आमन्त्रित किया गया और उस समय मुझे स्वागत समिति का मन्त्री चुना गया।

मैंने श्री श्रोत्रियजी के साथ अनेक काम किये। मैं उनके अथक परिश्रम को देखकर दग हो जाता था कि वे कितनी तल्लीनता से महिला-मण्डल के कार्यो को कर रहे हैं। श्री श्रोत्रियजी के अथक परिश्रम के फलस्वरूप ही अखिल भारतीय गुर्जरगौड ब्राह्मण महासभा का रजत जयन्ती समारोह उदयपुर मे हो सका।

मेरी पुत्री चन्द्रकला का एम० एस० सी० में बडोदा मे एडमिशन करना तय किया गया। एडमिशन पाना काफी कठिन था। श्री श्रोत्रियजी ने यह समझकर कि एडमिशन कराना ही है, श्रीमती हसा मेहता को एक विशेष पत्र लिखकर निवेदन किया कि किसी भी प्रकार से एडमिशन होना ही चाहिए। और उसका एडमिशन हुआ।

यही नहीं, इस प्रकार कई बार मेरे जीवन में ऐसी कई घटनाए आई। मैंने जब भी श्री श्रोत्रियजी से निवेदन किया, उन्होंने बडा सहयोग दिया और हर बार मेरे काम को पूरा करने का प्रयास किया और

कभी टालने की कोशिश नहीं की। यह उन्हीं का प्रेम है कि मैं महिला-मण्डल में गत ६ वर्ष से मर्यमंत्री के पद पर कार्य कर रहा हूं। यह उन्हीं की कृपा है कि मैं समाज का कार्य कर रहा हूं और उदयपुर बार एसोसिएशन के अध्यक्ष पद पर भी कार्य कर रहा हूँ।

श्री श्रोत्रियजी के साथ रहने से मुझे जो अनुभव हुए हैं, वे अविस्मरणीय हैं। मैं उनको कदापि नहीं भूल सकता हूँ।

अध्यक्ष, बार एसोसिएशन, उदयपुर



राजस्थान की जागृत महिला उनकी सेवाओं का परिणाम है

—श्रीमती राधादेवी गोयनका

मुझे विशेष हर्ष है कि निःस्वार्थ तपस्वी, समाजसेवी श्री दयाशंकर श्रोत्रिय के सम्मान का सकल्प करने वाले राजस्थान के मंत्री और नेतागण, साहित्यकार और कलाकार, शिक्षण-यज्ञ और श्रेष्ठ कार्यकर्तागण अपने कर्त्तव्य और उत्तरदायित्व के प्रति जागृत और प्रयत्नशील हैं।

वे एक ऐसे अभिनन्दन ग्रन्थ की रचना कर रहे हैं जिसमें अधिकारी व्यक्तियों के द्वारा देश और विदेश की महिला समाज की सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक और आर्थिक प्रगति पर प्रकाश डाला जावेगा। यह ग्रन्थ समस्त विश्व की जागृत महिलाओं के लिये और सभी के लिये एक वृहद कोष की भांति उपयोगी होगा। इस महान प्रयास के लिये श्री दयाशंकर श्रोत्रिय अभिनन्दन ग्रन्थ समिति मेरी हार्दिक बधाई स्वीकार करें।

कुछ वर्ष पहले मैं उदयपुर आई थी तब श्री श्रोत्रियजी से मिलने का अवसर प्राप्त हुआ। उनकी कार्यकुशलता, कर्मठता अपने कार्यों के प्रति सच्ची लगन, नम्रता और निःस्वार्थ सेवाभाव को देखकर मुझे अतीव आनन्द हुआ। उनके द्वारा संस्थापित और संचालित महिला-मण्डल को देखने का सौभाग्य भी प्राप्त हुआ। इस मंडल के द्वारा महिला उन्नति के लिये होने वाले विविध प्रकार के कार्यक्षेत्रों को देखकर मुझे अत्यधिक आनन्द हुआ और आश्चर्य हुआ कि जागृत व सुशिक्षित करने अनेक, प्रकार के कलाकौशल्य सिखाने और समाज सेवा के लिये प्रवृत करने में श्री श्रोत्रियजी ने कितना भगीरथ प्रयत्न किया है।

दूरदर्शी श्री श्रोत्रियजी इस बात को अच्छी तरह जानते हैं कि नारी समाज की प्रेरणा शक्ति पुरुषों को कर्त्तव्य का पाठ पढ़ाने वाली और मार्गदर्शिका होती हैं। देश की नारी जब तक अशिक्षित और सुषुप्त रहेगी, साहित्य, कलाकौशल, गृहविज्ञान, संतानपालन, समाजसेवा और नारी कर्त्तव्य के प्रति उदासीन रहेगी तब तक समाज और राष्ट्र कभी उन्नत नहीं हो सकता। इसीलिये उन्होंने राजस्थान की सुषुप्त नारी शक्ति को जगाने के लिये शंख फूंका था।



समय चक्र की गति मे उत्थान और पतन चलता ही रहता है। प्राचीन-मध्यकालीन राजस्थानी महिलाए कर्त्तव्यनिष्ठ और सतीत्व की जाजवल्यप्रकाश स्तम थी। उन वीरनारियों की देशभक्ति, त्याग और बलिदानो से सारा डिंगल साहित्य विश्व साहित्य मे अपना अमूल्य स्थान रखता है।

राजस्थान में होने वाले सतत सघर्षों, आक्रमणो तथा पराधीनता की स्थिति मे वहा की महिलाओ को घर की चहारदिवारी और परदे मे बद रहना पडा। सारे ही देश मे अशिक्षा और दारिद्रय का अधकार छाया हुआ था। ऐसी स्थिति मे समाज पर कुरीतियो और अधविश्वास ने प्रभाव जमा रखा था। पुरुषो की अपेक्षा स्त्रियो पर अज्ञान अंधकार के परत अधिक गहरे थे। फिर समय ने करवट बदली। राजा राममोहनराय, स्वामी दयानन्द सरस्वती, महात्मा गांधीजी आदि अनेक महान विभूतियों का आविर्भाव हुआ जिन्होंने समस्त देश की नारी समाज को जागृत करने के लिये महान प्रयत्न किये। इसी प्रकार इतिहास के स्वर्णाक्षरो मे श्री श्रोत्रियजी का नाम भी नारी समाज की जागृति और उन्नति के अग्रदूतो में अमर रहेगा।

यह बात सत्य है कि पिता की अपेक्षा माता का सुरक्षित, सुसस्कृत, सुचरित्रवान होना अधिक आवश्यक है। एक सुशिक्षित और कर्मठ माता अपने बच्चों को कभी भी अशिक्षित और अयोग्य नही रहने दे सकती है।

विश्व के आधार राष्ट्र होते हैं, राष्ट्र के आधार समाज होते हैं, समाज के आधार परिवार होते हैं और परिवारो की आधार शिलाएं माताएं होती हैं। जैसी माता होगी वैसे बच्चे निर्माण होगे। जैसे बच्चे होंगे वैसे नागरिक बनेंगे। जैसे नागरिक होगे वैसा समाज राष्ट्र और विश्व बनेगा। इसलिये प्रबुद्ध और विचारक ज्ञानी नेताओ ने नारी जागरण को विशेष आवश्यक समझा। श्री श्रोत्रियजी का स्थान भी नारी जागरण के प्रयासकों में श्रेष्ठ और ऊंचा है। राजस्थान की महिलाए ही नहीं समस्त भारत की महिलाए आपकी सेवाओ के प्रति हमेशा कृतज्ञ रहेंगी।

श्रद्धेय श्री श्रोत्रियजी के सम्मानार्थ इस पवित्र पर्व पर मैं आपकी पवित्र सेवाओ के लिए कृतज्ञापूर्वक आपका हार्दिक अभिनन्दन करती हू और मेरी परम पिता परमात्मा से प्रार्थना है कि श्रद्धेय श्री श्रोत्रियजी को १२५ वर्ष की सवाशतायु दें और उनके द्वारा नारी उत्थान के सर्वांगीण महान कार्य सफलतापूर्वक होते रहे।

सावतराम बगला, अकोला (विदर्भ)

—

व्यक्तित्व और कृतित्व के धनी : श्री श्रोत्रिय

—श्री अश्विनी कुमार चित्तौडा

मेवाड की वीर प्रसूता भूमि मे पैदा होकर प्रतिभाशील व्यक्तित्व से जन जागरण हेतु अपना जीवन समर्पित करने वाले देश के कर्मठ सेवियो मे श्री दयाशकरजी श्रोत्रिय का भी एक नाम है जिसे सदैव स्मरण रखना होगा। साधारण से गृह मे पला और बड़ा हुआ लाल अपने अथक प्रयत्नो एव सदा प्रसन्न मुद्रा में

प्रगति पथ की ओर अग्रसर होने वाला यह व्यक्ति आज यद्यपि वृद्ध हैं तथापि युवक की अपेक्षा अधिक कार्य करता है। राजस्थान का कोई क्षेत्र हो चाहे वह राजनीति का, महिला-जागरण का, समाज की प्रगति का, अपनी स्वेच्छा से सेवा करने वाला यह व्यक्तित्व सदैव तैयार रहता है। जब देश मे स्थान स्थान पर स्वाधीनता सघर्ष की आधी फैली हुई थी उस समय मेवाड कैसे अछूता रह सकता था। श्री श्रोत्रियजी एक सेनानी की भाति कर्म क्षेत्र मे उतरे और स्वाधीनता सघर्ष मे अपना पूरा योग दिया। उन्हे जेल की यात्राएं भी भुगतनी पड़ी। जब उदयपुर मे मेवाड प्रजा मण्डल की स्थापना हुई और श्री माणिक्यलालजी वर्मा तथा अन्य साथी आवाज बुलद कर रहे थे। तो भला श्री श्रोत्रियजी कैसे पीछे रहते। इस मण्डल को प्रारम्भ से ही इनका पूरा योग रहा। मुझे याद है जब देशी राज्य लोक परिषद का अधिवेशन उदयपुर मे हुआ। उस समय देश के शीर्षस्थ नेता वहां आये हुए थे। श्री वर्मा ने अथक परिश्रम कर इसे उदयपुर मे आयोजित किया। श्री श्रोत्रियजी भी रात दिन उसमे जुट गये। चाहे स्वय सेवको का दल हो, चाहे कार्यकर्त्ताओ का समूह, चाहे नेताओ का जमघट, श्री श्रोत्रियजी कही न कही कार्य करते हुए अपने सुमधुर स्वर से कुछ कहते हुए दिखाई देते। अधिवेशन की सफलता का श्रेय तत्कालीन कार्यकर्त्ताओ की ही लगन एव निष्ठा का फल था। चाहे बिहार मे भूकम्प से जनता पीडित हो, चाहे बाढ से पीडित व्यक्ति हो, वहा पर भी सेवा के लिए श्री श्रोत्रियजी गये और अपनी सेवाएं अर्पित की। स्वतन्त्रता से पूर्व का समय आज सा सरल समय नहीं था। उस समय कार्य करना कठिन था। अपने स्वयं के शारीरिक आराम की चिन्ता न कर कार्य करने की प्रवृत्ति कुछ ही लोगो मे होती है। ऐसे व्यक्तियो में श्री श्रोत्रिय का नाम भी जोड़ा जाता है।

मेवाड़ नारी जागरण की दृष्टि से बहुत पिछडा क्षेत्र रहा है। उस कमी की पूर्ति हेतु महिला-मडल की स्थापना उदयपुर के लिए वरदान बनी। यद्यपि आज महिला-मण्डल का अब स्वय का भवन है। किन्तु प्रारम्भ में जिन आर्थिक कठिनाईयो का सामना करना पडा यह तो स्वय श्री श्रोत्रियजी तथा साथी ही कर सकते थे। किन्तु अपने मार्ग से तनिक भी विचलित नही हुए। आज भी एक कुटिया मे यह कर्मठ सेवी प्रात: से रात्रि तक निरन्तर सेवा मे तल्लीन रहता है। आदिवासी महिलाओ के लिए शैक्षणिक जागृति एव आत्म निर्भरता की पहल करने का श्रेय भी श्रोत्रियजी को ही है। श्री श्रोत्रियजी बच्चो मे बच्चो जैसे और वृद्धो मे युवको की तरह त्वरा से कार्य करते हुए लक्षित होते हैं। सामाजिक उत्थान समारोहो मे, अन्य समारोहो मे भी वे सदैव अपना योग देते रहते है। वास्तव में राजस्थान में श्रोत्रियजी जैसा व्यक्तित्व जो निडर होकर और सतत किसी भी राजनैतिक पद की लिप्सा से दूर कम ही दिखाई देता है ऐसे अवसर भी आये किन्तु वे दूर रहे। उन्हे उनकी महिला-मण्डल के एक प्रकोष्ठ मे बनी कुटिया प्यारी है। और जागृति की किरण सदा फैलती रहे यही उनकी अभिलाषा है।





सुहृद्वर माननीय श्री दयाशंकर श्रोत्रिय महोदया नामाभिनन्दनात्मका मंगलाशिष:

—प. चन्द्रशेखर शास्त्री

श्री धी सद्वर्ष निरते भ्रान्ते लोके मनीषिण ।
ज्ञान प्रचार सलग्ना लभ्यन्ते के चिदेव हि ॥१॥
ददतीह धन किन्तु ज्ञान मिच्छति मानसम् ।
मनोयोगेनयज्जात न तज्जात धनै कूचित् ॥२॥
या कृता दृढभावेन प्रतिज्ञा भवता पुरा ।
साद्य साफल्य मायाता किमन्यत्तपरु फलम् ॥३॥
शजात दृष्ठमेवैतत् शमस्तीत्यपि दृश्यते ।
शभविष्यति, यत्रास्ते शचिन्तानिरत कृती ॥४॥
कया वृत्या यथा धृत्या यया शक्त्याधियाऽपिच ।
महिलामण्डलोत्थाने जीवन सुसमर्पितम् ॥५॥
रमन्ते देवतास्तत्र यत्र नारी प्रपूजनम् ।
श्रुतिमात्रामिद वाक्यम् भवद्भि सार्थक कृतम् ॥६॥
श्रोत्रिय श्रुति ज्ञानेन जायतेऽत्र महत्तम ।
जन्मनैव महाभागा भवन्त सन्ति श्रोत्रिया ॥७॥
त्रिधा विभक्त गीताया भक्तिश्च ज्ञान कर्मणी ।
तत्त्रय त्वयि दृष्टमेव वैशिष्ट्यमान्युत्तान ॥८॥
यदा यत्र यथा कार्ये हस्त निक्षेपण कृतम् ।
सामाजिके शैक्षिकेवा साफल्य तत्र निश्चितम् ॥९॥
ज्ञान धैर्य मन शक्ति भवतायमिवर्धताम् ।
स्वस्था अदीना जीवेयु श्रीमन्त शरद शतम् ॥१०॥
आत्मीय मगलाकाक्षा आत्मीयायैव प्रस्तुता ।
आत्म मार्गेण सयातु परमात्म पराम्बुजे ॥११॥

राजस्थान संस्कृत विद्यापीठ, भीलवाड़ा

त्यागमूर्ति पं० दयाशंकर श्रोत्रिय

—श्री चंपालाल एस.चास्टदे

ईश्वर की अपार अनुकम्पा से सतपुरूषो के जीवन मे ही अभिनन्दन के अवसर आते हैं। वैसे तो पूरा राजस्थान श्रोत्रियजी के सेवा कार्य से परिचित है किन्तु मै स्वय को भी भाग्यवान मानता हूँ कि उनके सहवास मे कुछ दिन उदयपुर मे रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

मैने आपको अति निकट से देखा है तथा आपके विचारो से पूर्णतया वाकिफ हूँ। वाकई आपका त्याग तथा मेवाड की स्त्री जाति के उद्धार के प्रति आपका श्रम अवर्णनीय है।

इतिहास मे मेवाड की महिलाओ का त्याग तथा आत्मबलिदान हमेशा भारतीयो के लिये गौरव का विषय रहा है। उसी प्रथा को चलाते हुवे श्रोत्रियजी ने भी वर्तमान परिस्थितियो मे "स्त्री–शिक्षण" को ध्येय समझकर अपना जीवन "महिला–मण्डल" सस्था की सेवा मे लगा दिया है। इस वक्त मै यह भी नही भूल सकता कि आपकी श्रीमती कमलादेवीजी भी इस कार्य मे आपका पूरा-पूरा हाथ बटाती रही और आपको यशोमन्दिर तक पहुँचाने मे पूर्ण सहकार देती रही।

महाराष्ट्र मे स्व० श्रीमान गोपाल गणेश आगरकर तथा स्व० श्री कर्वेजी ने स्त्री-शिक्षण का जो कार्य किया है, उसकी मिसाल श्रोत्रियजी ने मेवाड मे कार्यरत रहकर अवश्यमेव कायम की है। मेरा सेवा के प्रति हमेशा विश्वास रहा है वह केवल आप जैसे ही तपोमूर्तिय का आदर्श देखकर दृढ है। श्रोत्रियजी के इस सुवर्ण अभिनन्दन अवसर पर मै समाजसेवी और त्यागमूर्ति श्रोत्रियजी के अभिनन्दन का अभिनन्दन करता हूँ और उनकी दीर्घायु की कामना करता हूँ।

(४८० बुधवार पेठ, लक्ष्मी चेम्बर्स, पूना-२)

—

क्रांतिकारी देश भक्त और समाज सेवक श्री दयाशंकर श्रोत्रिय

—श्री अचलेश्वरप्रसाद शर्मा

श्री दयाशकरजी श्रोत्रिय को मै ३५ वर्ष से जानता हूँ। जब मेवाड़ की जनता प्रजामडल के नेतृत्व में सामन्तवाद के विरुद्ध प्रबल सघर्ष कर रही थी तब वे अपने पूरे परिवार सहित सत्याग्रह सग्राम मे



कूद पडे । उन्होंने सामन्ती जेलो मे नारकीय यातनायें सहकर भी सदियों से दबी कुचली जनता को जिस प्रकार शानदार नेतृत्व प्रदान किया, वह स्वाधीनता सग्राम के इतिहासो मे स्वर्ण अक्षरो से लिखा जाता रहेगा और आने वाली पीढियो को आगे बढ़ने की स्फूर्ति प्रदान करता रहेगा ।

जब स्वाधीनता सग्राम समाप्त हुआ तो सामाजिक क्रान्ति के अग्रदूत श्री श्रोत्रियजी एक महान समाज सुधारक और शिक्षा शास्त्री के रूप मे हमारे सामने आये । उन्होने विशुद्ध 'जन सहयोग" के आधार पर मेवाड मे सामाजिक क्रान्ति की । उन्होने अनेक प्रकार के अन्धविश्वासो और रूढियो के विरुद्ध प्रबल अभियान चलाने के लिये 'मनसा, वाचा, कर्मणा' की लोकोक्ति के अनुसार अपने सम्पूर्ण जीवन को राष्ट्र के अर्पित कर दिया । गाव २ मे उन्होने अपने तपस्वी साथियो के साथ पैदल घूम २ कर अन्धविश्वासो के विरुद्ध "सिंहनाद" किया । और युग २ से शोषित और पीडित मानव समूहो मे नयी आशा और विश्वास की दिव्य ज्योति मुखरित की । उन्होने विधवाओ और गरीब महिलाओ को शिक्षित बनाया और शिक्षिकाओ और समाज सेविकाओ के रूप मे उनका पुनर्वास किया । उन्होंने बालिकाओ के लिये अनेक विद्यालय खोले । हमे गर्व है कि अनेक प्रकार की विषम विपदाओ के बावजूद आज भी वे एक महान साधक की भाति अपने द्वारा सस्थापित और सचालित 'महिला-मण्डल' की ' विजयपताका" आन, बान और शान के साथ फहरा रहे हैं । मैं उनके जन्मोत्सव के भव्य समारोह के अवसर पर उनकी दीर्घ आयु की और अच्छे स्वास्थ्य की कामना करता हू । मेरी हार्दिक अभिलाषा है कि उन्होने स्वेच्छा से समाज सेवा का जो दायित्व सभाला है, उसमे वे सदैव सफल होते रहे और भारतीय समाज उनसे अधिकाधिक लाभान्वित होता रहे ।

दिनेश भवन, सरदारपुरा, जोधपुर



जन सेवा को समर्पित : श्रोत्रिय दम्पति

—श्री बलवन्तसिंह महता

श्रोत्रिय दम्पति हमारे प्रदेश ही नही, अपितु देश के उन इने-गिने कर्मठ सेवाभावी दम्पतियो में हैं जिन्होने अपना सारा जीवन नारी-जाति की सेवा मे समर्पित कर दिया है ।

भारतीय इतिहास मे राजस्थान की अपने नरपुङ्गवो के कारण जो गौरव गरिमा और ख्याति रही है, महिला जगत मे उसकी गरिमा और ख्याति उससे कम नही रही ।

यहाँ की प्रसूता वीरो और वीरांगनाओं ने जीवन के हर क्षेत्र में जो अपने अनुपम जौहर दिखाये, वे संसार के इतिहास मे अनुपम और अनूठे हैं। किन्तु कालचक्र मे राजस्थान के पिछड जाने के कारण यहाँ का महिला वर्ग अपेक्षाकृत काफी पीछे रह गया। उसी पिछडे वर्ग को उठाने का बीडा इस दम्पति ने उठाया और उसे सफल कर दिखाया और अपने सेवा-क्षेत्र को नगर से आरम्भ कर आदिवासियो के द्वारा वनों और पहाड़ों तक फैलाया।

जिन लोगो ने हमारी सभ्यता और सस्कृति की रक्षा की और अपने बलिदान के द्वारा हमारे स्वाभिमान और स्वातन्त्र्य को बनाये रखा वे ही लोग शताब्दियो तक हमारे शोषण और उपेक्षा के पात्र बने रहे जिसकी फलश्रुति यह रही कि आज वे ही लोग सभ्यता की सबसे नीचे की सीढी पर अब तक अवस्थित पाये जाते हैं। इतिहास मे कई युद्ध प्रिय वीर जातिया पायी भी जाती है जो सदियो तक लडती रही है किन्तु राजस्थान के आदिवासी ही एक ऐसी जाति रही है जिनकी स्त्रियां ही सम्पूर्णरूप से बराबर युद्धो मे भाग लेती रही है और देश की रक्षा मे सहयोग देती रही। वे ही महिलाये आज भारतीय समाज मे सबसे पिछडी हुई है। श्रोत्रियजी ने उनके उत्थान के कार्य को लेकर सारे राजस्थान को उपकृत किया है, जिसके लिये वे बधाई के पात्र एव अभिनन्दनीय है।

राजनैतिक क्षेत्र मे भी उनकी काफी सेवाएं रही है। वे प्रजामण्डल आन्दोलन के प्रारम्भ से ही सहयोगी और कृष्ण मन्दिर के तीर्थ यात्री रहे हैं और राजनैतिक क्षेत्र मे उनका योगदान बराबर मिलता रहा है। मैं उनके राजनैतिक साथी होने के नाते हृदय से उनके दीर्घायु और जीवन की सफलता की कामना करता हुआ मेरी परमात्मा से प्रार्थना है कि उन्हे शतायु करें और उनके द्वारा महिला जगत की अधिक से अधिक सेवा होती रहे।

रैन बसेरा, उदयपुर





जेल की डायरी जो आज सस्मरण बन गई –

मेवाड़ी सींकचों के पीछे–

—श्री दयाशकर श्रोत्रिय

मेवाड मे चारो ओर दमन का दौर दौरा था या यो कह देने मे अत्युक्ति न होगी कि पुलिस राज्य था। जिधर देखिये उधर पुलिस के आदमियो का जाल बिछा हुआ नजर आता था। चन्द मुट्ठीभर खद्दरधारी भी कभी ईधर उधर नजर आ जाते थे। आने जाने वालो पर पूरी निगाह रखी जाती थी। रेलो और मोटरों मे सफर करनेवालों और अन्य मुसाफिरो को इधर चित्तोड ही से और उधर फुलाद जकशन पर ही कई प्रकार के प्रश्न पूछे जाते थे, सामान देखा जाता था और यदि यात्री कही खद्दरधारी हुआ तो वही रोक लिया जाता था। उदयपुर आने जाने वाली कुछ ट्रेनो पर सुपरिन्टेन्डेन्ट स्वय दल-बल सहित पहुच जाया करते थे और ट्रेन टाइम पर तार बाबुओ को, 'खद्दरधारी आ रहा है' 'अमुक को खेमली ही रोका जाय, 'अमुक को उदयपुर आने दो' इत्यादि तार लेते देते ही सुना जाता था। जनता और पुलिस दोनो उत्सुक दिखाई देते।

मेवाड़ी सींकचों के पीछे

—श्री दयाशंकर श्रोत्रिय

मेवाड प्रजामण्डल द्वारा छेडे गये आन्दोलन के एक प्रमुख सेनानी रहे प्रजामण्डल के तत्कालीन सयुक्त मत्री श्री दयाशकर श्रोत्रिय। वह जेल-यात्री बने। जेल से मुक्ति के बाद उन्होने जेल जीवन के जो सस्मरण लिखे वे सितम्बर–अक्टूबर १९३९ को नवज्योति अजमेर मे अनेक धारावाहिक किश्तो मे प्रकाशित हुए। श्री दयाशकर श्रोत्रिय के यह सस्मरण मेवाड की जेलो, कैदियो की मनस्थितियो और जेल अधिकारियो की मनोवृत्तियो का यथार्थ चित्र प्रस्तुत करते है।

इस लेखमाला के पुनर्प्रकाशन के लिये हम नवज्योति, अजमेर के कृतज्ञ हैं—

सत्याग्रह की घोषणा–

उपरोक्त दौडधूप का कारण यह था कि मेवाड की हकूमत ने मेवाड प्रजामडल को गैर कानूनी घोषित करके उसके मत्री को निर्वासित कर दिया था और अनेक काले कानून बनाकर मेवाड के प्रजा के नागरिक अधिकारो पर कुठाराघात किया था। इस अन्याय से मेवाड के नागरिक तिलमिला उठे और हरक्षण कोशीश करने पर भी जब सरकार के रवैये मे जरा भी परिवर्तन नही हुआ तो सत्याग्रह करने की घोषणा करदी गई। सत्याग्रह करने की ऐतिहासिक तारीख- ४ अक्टूबर मेवाड़वासियो को सदा स्मरण रहेगा।



४ अक्टूबर को राजधानी की ही नहीं, मेवाड़ की जनता में भी एक उत्सुकता थी और दिल में एक प्रश्न था कि होगा क्या ? इधर शाम की ट्रेन से सूचना आई कि सत्याग्रह के पहले सिपाही श्री रमेशचन्द्रजी जेल मे सत्याग्रह करते गिरफ्तार किये गये और एक वर्ष कठिन परिश्रम की सजा देकर खेमली स्टेशन से थाना डबोक होते हुए जिला लसाडिया मे बन्दी बना दिये गये। प्रजामडल के उपसभापति श्री भूरेलालजी बया तो पहले ही मेहमान बना लिये गये थे।

५ अक्टूबर को सरे आम मडी मे प्रात. काल १० बजे भाषण देकर श्री अम्बालालजी जोशी ने सत्याग्रह किया। उनकी गिरफ्तारी के हाल भी सुने, क्योकि उस दिन मैं मडी मे नही गया था। उसी शाम को लगभग ६॥–७ बजे सादा पोशाक मे और बिना वारन्ट अम्बालालजी पालीवाल नामक सब इन्सपेक्टर मेरे पास आये और कोतवाली चलने को कहा। मैने उन्हे धैर्य से बैठने को कहा और अपनी दुर्बल किन्तु बहादुर पत्नी को घर के प्रबन्ध के सम्बन्ध मे कुछ आवश्यक सूचनाए देकर बच्चो से हसते खेलते विदाई ली और अपने को सब इन्सपेक्टर के सिपुर्द कर दिया।

पुलिस की बेशर्मी–

मेरी खुशी का ठिकाना न रहा जब मैने कोतवाली मे मेरे जाने से पूर्व श्री अम्बालालजी जोशी, परशुरामजी अग्रवाल और स्वामी मोहनरामजी स्नेही को बैठे पाया। हम सब दफ्तर वाले कमरे मे दूर दूर कुर्सियो पर बैठे थे और पुलिस के हथकडो पर एक दूसरे का मुह देखकर प्रसन्न हो रहे थे। इतने मे अम्बालालजी को हथकडी डालकर पिजरे मे बन्द करने लेजाया गया और हम तीनो के बयान लिये गये। बयान लेते समय माता, पिता, भाई, काका, मामा, फूफा, बीवी स्वसुर, सास आदि के नाम ठाम पूछे गये। अन्त मे सब इन्सपेक्टर श्री माणकलाल सरावगी ने हमे कहा कि–'आप तीनो को मेवाड सरकार ने दो दो वर्ष के लिये मेहमान बना लिया है।' हमारे पास इन महाशय को इस कृपा के लिये धन्यवाद देने के सिवाय और कुछ न था। प्रसन्नतापूर्वक यही सस्ती भेंट उन्हे देकर बैठना चाहते थे कि हमारी तलाशी ली जाने लगी। तलाशी क्या थी, बेशर्मी का नगा प्रदर्शन था। एक एक कर सब कपडे यहा तक की धोतीया भी निकलवाई गई। इसके बाद रात मे भूखे पेट ही सोना पडा।

गंगाराम से परिचय—

एक घटना यहा ऐसी घटी, जिससे मेवाड के 'गगाराम' से हमारा परिचय हो गया। किन्तु इसके पूर्व यह बताना आवश्यक होगा कि श्री परशरामजी अग्रवाल के मकान की तलाशी लेने के लिये सीनियर आफिसर पुलिस और चार सब इन्सपेक्टर पुलिस बदल बल गये और मकान से श्री सुभाष बाबू के भाषण की नकल, एक डायरी और वह केमरा, जिससे परशरामजी ने सत्याग्रहियो का फोटो लिया था, उठा लाये। तलाशी मे कोई आपत्तिजनक सामान प्राप्त नही हुआ, पर सुभाष बाबू के भाषण की हाथ से की हुई नकल पाकर ही नासमझ पुलिस कर्मचारी प्रसन्न हो रहे थे। वे श्री परशराम को हमारे पास से उठा ले गये और 'गगाराम' से पिटाई करने की धमकी देते हुए फोटो की प्लेटे मागी। श्री परशराम ने फोटोग्राफर का पता बता दिया जिसको कि उन्होने प्लेटे धोने को दी थी। हा मै पाठको को 'गगाराम' का परिचय कराना भूले जा रहा हूँ। मेवाड़ सरकार के कर्मचारियो ने एक हाथ लम्बा चमड़े का जूता बनवा रखा था और यही



मेवाड़ का 'गंगाराम' था। चाहे कोई दोषी हो या निर्दोष, जिस पर उनका रोष होता उसकी इसीसे खबर ली जाती थी। एक आदमी की हमारे सामने ही 'गंगाराम' से पूजा की गई। बिचारे की धोती में पेशाब आ गया। वह कोतवाली क्या थी, साक्षात नरक था क्योंकि खटमल, मच्छर आदि की इतनी बहुतायत थी कि नींद हराम हो गई थी। तिसपर कभी किसी के रोने चिल्लाने की, कभी पिटाई से कराहने का शोरगुल खोपड़ी फाड़े डालता था। रात में पेशाब करने की इच्छा प्रकट की तो एक छोटे से कुल्हड़ की ओर इशारा किया गया। पर जब मैंने इस तरह हाजतरफा करने में असमर्थता जाहिर की तो मुझे आम सड़क पर लेजाया गया। मुझे पेशाब तो करना ही था, पर अन्त में सिर ठोक लेना पड़ा क्योंकि जिन पुलिस का कर्त्तव्य सड़क पर गन्दगी को रोकना था उसीने मुझे सड़क पर गन्दगी करने को प्रेरित किया था।

इसी तरह रातभर हमने नई दुनियां में गुजारी। उम्मीद की सुबह स्नान करेंगे और खाना खायेंगे पर जब एक एक करके ग्यारह बजे गये और हमें सिटी मजिस्ट्रेटी में चलने को कहा गया तो रही सही उम्मीद भी काफ़ूर हो गई। मार्ग में सुपरिन्टेन्डेन्ट का मकान था। हम वहां लेजाये गये। वे शकल सूरत में अस्वस्थ और सभ्य नजर आ रहे थे। बीमारी के कारण गले में दो चार मतरे हुए डोरे भी बंधे हुए थे। उन्होंने नकली क्रोध के भाव बताते हुए मुझसे प्रश्न पूछा 'क्योंबे तू कहां रहता है ?' मैंने हंसकर नम्रता से किन्तु निर्भीकता पूर्वक उत्तर दिया। हम चारों से जब इसी प्रकार के प्रश्न हो चुके तो कमरे में कुछ क्षण के लिये सन्नाटे का साम्राज्य स्थापित हुआ। शान्ति भंग करते हुए सुपरिन्टेन्डेन्ट पुलिस ने हमारे साथ वाले सब इन्सपेक्टर से पूछा 'क्योंजी ! इन बदमाशों के हथकड़ी क्यों नहीं डाली गई ?' बिचारे सब इन्स-पेक्टर ने मौन रहने में ही खैर समझी और हम सब सिटी मजिस्ट्रेटी के लिये रवाना हुए।

पुलिस का सफेद झूठ-

अदालत दर्शकों से खचाखच भरी हुई थी। मजिस्ट्रेट ने सर्वप्रथम हमारा ही केस लिया। हमने शिकायत की कि हमको २४ घन्टे से भूखा रखा गया है। मजिस्ट्रेट महोदय ने पुलिस के इस निन्दनीय व्यवहार पर रोष प्रकट किया और हमें भोजन करने का हुक्म दिया। हमने पहले मुकदमे की कार्यवाही खतम कर लेने की विनय की। मुकदमा चलना प्रारम्भ हुआ। मेरे आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब सब इन्सपेक्टर जमादार और एक के बाद एक खुफिया मेरे सामने यह बयान देने आये कि अम्बालालजी जोशी के साथ साथ दयाशंकरजी श्रोत्रिय, परशरामजी और मोहनरायजी स्वामी भी सत्याग्रह कर रहे थे नारे लगा रहे थे लोगों को एकत्रित कर रहे थे और भाषण दे रहे थे। मैं पुलिस के अत्याचार सुनता और देखता था पर सत्य को असत्य और असत्य को सत्य का जामा निर्भयतापूर्वक पहिनाते देखने का मेरे लिये यह पहला मौका था। मेरे मन में जेल का कोई डर नहीं था, पर मुझे जो दुख उस समय न्यायालय में न्याय और सत्य की हिंसा होते देखकर हुआ वह मैं शब्दों में प्रकट नहीं कर सकता क्योंकि जिस रोज मैं धानमंडी में गया तक नहीं वहां पुलिस के ९ व्यक्तियों ने रूप, रंग, पोशाक आदि बताकर सिद्ध कर दिया कि मैं सत्याग्रह करने में शामिल था।



कलई खुली–

साथियो के साथ साथ मैंने भी अपने बयान दिये कि जो बातें पुलिस के गवाहो ने लिखाई वे एकदम असत्य हैं। मै उस दिन सत्याग्रह मे शरीक होना तो दूर रहा, धानमण्डी मे गया तक नही। उस समय मे जहाँ था वहा तीन गवाह भी बता दिये। पुलिस की ओर से जो गवाह बनाकर लाये गये थे, उनका जिरह मे भन्डाफोड़ कर दिया। उदाहरण के लिये जिस जगह सत्याग्रह हुआ था, पुलिस के गवाह वह न बताकर साधारण रूप से मडी लिखा रहे थे। जिरह होने पर स्थान की गलती का उत्तम उदाहरण उस फोटू ने दिया जिसे श्री परशरामजी ने खीचा था। पर वहाँ तो केवल न्याय का अभिनय किया जा रहा था। उस दिन हमारा मुकदमा समय की कमी के कारण आगामी दिन के लिये स्थगित कर दिया गया।

मुकदमे के बाद हम चारो ने मजिस्ट्रेटी ही में पूरे ३१ घटे के बाद पूडी के दर्शन किये। हमारे आग्रह पर हमें जेल भेज दिया गया, हालाकि न्यायधीश और पुलिस वाले वापस कोतवाली ही मे भेजना चाहते थे।

ज्योही हम जेल पहुचे कि हमारी तलाशी हुई। जेल के बाहर के उत्तरी मार्ग की एक छोटी सी दो बेरको वाली जेल हमारे लिये निश्चित हुई। हमे लोहे के लम्बे लम्बे फाटको वाली बेरको मे दाखिल करा दिया गया। हम इस समय तक एक नये ससार मे विचर रहे थे। हमारे चारो ओर ऊँची २ मटमैली व सफेद दीवारे थी। बाहरी दुनिया से हम दूर थे। हमारे देखने को सिर्फ सामने वाली दीवाल पर तीन खिड़किया थी। हम चारो मे से जेल आने का किसी को अफसोस न था, बल्कि हम खूब खुश थे। सहसा द्वार खुलने की आवाज ने हमे चोकन्ना कर दिया और देखते–देखते एक सत्री के साथ ६ कैदियो ने खडखडाहट के साथ प्रवेश किया। वे हम लोगो के लिये बिस्तर, जल और रोशनी के लिये चिमनी लेकर आये थे। यद्यपि अन्य कैदियो को हम से अलग रहने और बात न करने की हिदायत थी, किन्तु उनकी कानाफूसी ने स्वभावतः मेरा ध्यान उनकी ओर आकर्षित कर दिया।

पथिकजी की स्मृति—

तभी एक लम्बी सजावले वृद्ध कैदी को मैंने यह कहते सुना कि 'पथिकजी' महात्मा (बिजोलिया किसान सत्याग्रह के नेता श्री विजयसिहजी पथिक) भी कई वर्ष पूर्व इसी बैरक मे रखे गये थे और वह छोटी जेल उन्हीं के लिये बनी थी। उन सब कैदियो के मुख पर हमारे प्रति श्रद्धा और सहानुभूति के भाव प्रकट हो रहे थे। पास वाले कैदी ने दूसरो को कहा कि–' ये सब भी महात्मा गाधीजी के चेले है और मेवाड के गरीबो के भले के लिये ही जेल आये हैं। इन्होने चोरी थोडे ही की है।" इस पर उन कैदियो ने आश्चर्य प्रकट किया और जब देखा कि सतरी दूसरी ओर देख रहा है तो मुझे चुपके से अभिवादन कर चल दिये। रात्रि होने को थी। अतः हमारी बैरक बन्द करदी गई। जब मेरे साथियो को मैंने यह जाहिर किया कि इस स्थान में पथिकजी कैद रह चुके हैं। तो वे खुशी के मारे फूले न समाये और इस राष्ट्रीय तीर्थ का दर्शन कर अपने को धन्य समझा। मित्रो के आग्रह पर रात्रि की प्रार्थना कराने का सौभाग्य मुझे मिला और



"वैष्णव-जन" वाला भजन हमने बडे प्रेम से गाया। आज की रात्रि हमारे लिये बडी ही सुखप्रद साबित हुई और प्रात काल हमारे लिये तेजी और ताजगी लिये हुए आया। हमने आनन्द मनाते हुऐ प्रार्थना की। बैरकें खुली, फाटकें खुली और हम भी प्रात कालीन कार्य से निश्चित हुए। देखते क्या हैं छोटे से लेकर बडे कर्मचारियो और कैदियो मे भगदड मची हुई है। सफाई हो रही हैं। क्लर्क लोग अपने२ साफे और कालर ठीक कर रहे हैं। दरियाफत करने पर ज्ञात हुआ कि जेल सुपरिन्टेन्डेन्ट आयेंगे। हम अपने आखिरी फाटक के सीखचो मे से यह बहारी नजारा देख रहे थे कि उधर कार का भोपू बजा और इधर जेल दफ्तर का स्टॉफ दौडती आई हुई कार का स्वागत करने दौड पडा।

बीमारी या खुराक ?

सुपरिन्टेन्डेन्ट ने बडी जेल मे प्रवेश किया और हम वापस अपने स्थान पर आ बैठे। वहा के निरीक्षण के बाद वे हमारी ओर भी आये और प्रश्न किया कि आपको यह सत्याग्रह की बीमारी कैसे लगी ? उत्तर मे हमने उनसे निवेदन किया कि महोदय जिसे आप बीमारी बताते हैं हम उसे अपनी खुराक समझते हैं। उस दिन हमे गेहू के आटे की तीन २ रोटिया और दाल का पानी खिला-पिला कर दूसरे कैदियो के साथ अदालत के लिये रवाना कर दिया गया।

पिछले दिन की तरह अदालत दर्शको से आज भी भरी थी। मेरे साथी यह विश्वास किये हुए थे कि मै और स्वामी मोहनरायजी स्नेही छोड दिये जावेंगे। क्योंकि हम दोनो तो उस स्थान पर उपस्थित भी नही थे, जहा सत्याग्रह हुआ था। मुकद्दमा चला और साथियो के बयान हुए। उन्होंने मेरे अनुपस्थित होने के बयान दिये, अन्त मे मजिस्ट्रेट ने इस आशय की तजवीज सुनाई कि अभियुक्त अम्बालाल ने कानून भग करना स्वीकार किया अत नौ माह सख्त कैद। परशराम ने सत्याग्रही का फोटू लेना स्वीकार किया। केमरा जब्त और नौ माह सख्त कैद। अभियुक्त दयाशकर अपना अपराध स्वीकार नही करता है इसलिये छ मास सादी सजा और अभियुक्त मोहनराय यद्यपि अपराध स्वीकार नही करता हैं पर इसकी नियत साफ है अत मुक्त किया जाता है। हमने मजिस्ट्रेट को धन्यवाद दिया। उन्होने फैसले की नकल लेकर आगे अपील करने के लिये प्रश्न किया। हमने विचार कि जहा न्याय की इस प्रकार हत्या होती हो वहा अपील करना व्यर्थ है प्रकट किया। हम 'वन्दे मातरम्' के जयघोष के साथ उठ खडे हुए और जन्म में पहली बार किन्तु हसते हुए सिपाही के साथ ही हथकडी मे हाथ डालकर नारे लगाते हुए राजमहल के मार्ग से जेल पहुँच गये। मेवाड राज्य के राजमहलों और कचहरी में यह सर्वप्रथम अवसर था कि महात्मा गाधी, जवाहरलाल नेहरू आदि नेताओ का जयघोष हुआ।

पत्नी की सराहनीय दृढता—

'मेरी पत्नी' दिखाई पडी। थोडी देर मे मुझे मिलने के लिये बाहर बुलाया गया और नीचे धूल में बैठकर मिलने को कहा गया। किन्तु हमने इस प्रकार मिलने से इन्कार किया और खडे २ ही परस्पर अभिवादन किया। जिस स्त्री ने हसते खेलते अपने पति को जेल के लिये विदा किया हो वह उसे बन्दी दशा में देखकर क्या रोती चिल्लाती ? वह दृढ रही। उसकी दृढता ने मुझे अपने कर्त्तव्य का ज्ञान कराया। मै विरक्त की



तरह चट्टान सा खड़ा रहा। कमलाजी ने एक एक करके भोजन, पठन-पाठन, मशक्कत, पत्र व्यवहार आदि के विषय मे प्रश्न कर डाले। अनशन से उन्हे भय और चिन्ता जरूर हुई, किन्तु उन्होने हतोत्साह करने वाली कोई बात नही कही। इस प्रकार हमारी जेल की पहली मुलाकात खतम हुई। चि० कान्ता और रमेश मेरे पास रहने का हठ करके रोने लग गये थे, किन्तु मै सतरी के साथ अपनी एकान्त दुनिया मे फिर लौट आया। बच्चे सजल नेत्रो से मेरी ओर देखते रहे।

जैसी कि जेल अधिकारियो की नीति होती है, उन्होने मेरे साथियो को मेरे अनशन तोडने की झूठी खबर पहुचाई। उनको कभी बेंते लगाने का भय बताया जाता तो कभी सुविधायें देने का झूठा आश्वासन, इधर जेल डॉक्टर नली द्वारा जबरदस्ती पेट मे खाना-पहुचाने का जिक्र करता। मेरे साथी दम मे आगये और भोजन कर लिया। मेरे पास भी अधिकारी आये और भोजन करने को कहा। मैं जेल नीति से जरा परिचित था, अत: दृढ रहा। एक दिन बाद शाम को जेलर आये और कहने लगे कि आपको पढने लिखने के लिये राजनैतिक के अलावा सब साहित्य मिला करेगा। चिट्ठी-पत्र भी जब चाहे, लिख सकेंगे। महाराणा साहब ने आज्ञा दे दी है कि आपसे चक्की की मशक्कत न ली जाय। खाने मे रेत की शिकायत नही आवेगी। आप तो स्पेशल कैदी है। साधारण कैदी तो अन्दर रहते हैं। मैने उन्हे आगामी दिन विचार करके उत्तर देने को कहा। दूसरे दिन डाक्टर के सम्मुख जेलर ने फिर अपने वचन दुहराये। अत. भोजन के समय थोडा दूध लेकर मैने ५ दिन का अनशन समाप्त किया। इसके बाद चार-पाच दिन तो हमे भोजन जरा ठीक मिला, पर बाद मे वही रफतार बेढगी शुरू हो गई।

भीलवाडा और नाथद्वारा मे लाठीचार्ज–

मै अपने जेल जीवन के दिन गुजार रहा था कि नाथद्वारा मे सेना द्वारा लाठीचार्ज होने और ७५ नागरिको के गिरफ्तार किये जाने की खबर मिली। मुझे चिन्ता हुई। बाद मे भीलवाडा के नागरिको पर लाठी चार्ज होने का सन्देश भी सुना और एक एक करके सत्याग्रही गिरफतार होकर हमारे पास सेन्ट्रल जेल मे आने लगे। जेले भर चली। अत लसाडिया, कुम्भलगढ, सराडा और महकमह गिराई की जेलो मे भी कई सत्याग्रही रखे गये। मेवाड जैसी पिछडी हुई रियासत मे भी सैकडो की सख्या मे नवयुवको ने अपने नागरिक अधिकारो के लिये घर के आनन्द को त्याग कर जेल यातनाओ का स्वागत किया। यह मेरे लिये प्रसन्नता का विषय था। शिक्षक, एडवोकेट, व्यापारी आदि सभी वर्गो के लोगो ने देश की पुकार का उत्तर दिया।

जेल के नजारे—

मुझे जेल मे चर्खा कातने को दिया गया था। मैं बैठता और मजे से चक्र घुमाता रहता। एकान्त में शेख ने मेरी बडी मदद की। मेरा कार्य नियमित रूप से चलता था। गिलहरियो से खिलवाड करता और आने जाने वाले कैदियो की कतारें देखता और खुश होता था। मेरे सामने जेल की फाटक थी। वहाँ पर आने जाने वाले कैदियों की तलाशी होती। टोपियाँ, जूते, धोती की लाँग और बेड़ियों के नीचे दबे चमडे



के पट्टे-खुलवाकर सन्तरी देखते। जेल के बाहर चक्की खाने मे चक्की चलाने को प्रात काल ७ बजे सौ सौ कैदियो का जाना, तन्दूर पर रोटिया बनाने वालो का रोटियाँ तकसीम करना और पानी के हौज पर सबके स्नान करने के नजारे मे बैठे २ देखता। मैं भी इस नगरी का नागरिक था। उस नगरी मे कुम्हार मटके बनाता, लुहार लुहारी का काम करता, धोबी जेल अपराधियो के कपडे धोता, सुथार लकडी का काम करता, हरिजन कैदी टट्टिया साफ करते, नाई बाल बनाता, रगरेज रगाई का काम करता और मोच जूते बनाने में सलग्न था। मैं भी बेडियो की खनखनाहट मे बैठा सोचा करता कि जेल अधिकारी मुझसे दफ्तर में लिखाई पढाई का काम लिया करें तो अच्छा हो, पर मैं राजनैतिक कैदी जो ठहरा। मुझे जेल के हालात और वहा की खराबीयाँ जानने से वचित ही रखा जाता था। फाटक में घुसते ही चार कैदी सुबह ६ बजे और दोपहर में २ बजे जब भी साग बनने की बारी होती तो लम्बे चौडे लकडे के पाटिये पर बडे २ छुरो से साग काटने का काम किया करते, जिसकी खटाखट की ध्वनि कर्णप्रिय लगती। मेरा खयाल है कि मैंने जेल जीवन में अपने सब साथियो से अधिक पढा है। मै छ घटे प्रतिदिन इस काम में लगाता था। मैं जेल में पढकर ही जीवित रह सका, क्योकि पढना ही मेरा आधार था।

मेरे अन्दर के साथी चाहते थे कि मैं भी उनके साथ रहने को अन्दर भेज दिया जाऊ पर यह जेल अधिकारियो पर निर्भर था। मेरे साथियो को पानी भरवाने लाया जाता और मुझे भी अपनी कोठरी से पानी भरने लेजाया जाता। तब हम कुछ बातें आपस में कर लेते थे। कभी २ हम स्नान करते हुए भी मिल लेते, क्योकि स्नान का स्थान एक ही था और साथी मेरे सामने होकर निकलते थे। मेरा कमरा ७-८ फीट चौडा और १२-१३ फीट लम्बा था। इससे मुझे यह आशा न थी कि मेरे दूसरे साथी मेरे पास रहेगे। पर मैं एक दिन देखता क्या हू कि श्री परशराम अग्रवाल अम्बालाल जोशी और मोहनराय अपनी टाटपटी और कम्बल लिये मेरे पास आ रहे थे। अन्दर कुछ खटपट होने के कारण ही जेल अधिकारियो ने उन्हे मेरे पास बदल दिया था। शाम को ६ बजे से ही हमें उस कोठरी में बन्द कर दिया जाता और टट्टी-पेशाब के लिये हमे ताला खुलवाकर बाहर निकलना पडता। कमरे के बाहर खुले सिर हमें निकलने की मनाही थी, बाहर खडे २ दतौन तक नही कर सकते थे। लोटा साफ नही कर सकते थे और पानी नही डाल सकते थे। बात यह थी कि जेल दफतर के बाहर ही जेलर प्राय खडे रहा करते और वे थे जाति से राजपूत, अत वे इन कार्यों को अपने सामने होने देना अपना अपमान समझते थे। बडी जेल के साधारण वन्दियो को तो झुककर सलामी देनी पडती और जेलर के सामने देखने तक की मनाही थी। हमारे साथियो मे से कभी किसी को और कभी किसी को जेलर प्रतिदिन बुलवाते और माफी मागने के लिये दबाव डालते। किसी को नौकरी का, किसी को जागीर का और किसी को और कोई आश्वासन देते। यह क्रम कई दिन तक जारी रहा। घर से कोई कुटुम्बी मिलने आता तो उससे भी माफी मगवाने में सहायता ली जाती। आने वाले से सारा भेद जानने की कोशीश की जाती। मिलाई के समय केवल साधारण बातचीत करने दी जाती और यदि जेल की खराबी या कुव्यवहार की बात चलती तो शीघ्र ही मिलाई बन्द हो जाती। कुटुम्बियो के अलावा अन्य मित्रो और स्नेहियों का आना बन्द कर दिया था। मिलाई के समय अधिकारी खड़े रहते और विशेष बात नोट भी करते जाते थे। एक दिन का जिक्र है कि मेरे एक साथी ने मुलाकात

के समय कर्मचारियो को छकाने के लिये यह कह दिया कि मकान पर कागजात की एक सन्दूक रखी है, वह अमुक आदमी के घर पर पहुचा दी जावे। बस फिर क्या था। कर्मचारी पुलिस में दौड गये। कागज की सन्दूक के लिये दो तीन जगह तलाशी हुई पर वहा आपत्ति जनक सामग्री होती तो मिलती।

ठण्ड का प्रकोप और मत्यु का साया—

सर्दी के दिन थे। बिछाने के लिये टाटपट्टी और ओढने के लिये जेल ही मे बने हुए बहुत ही पतले २ कम्बल मिले थे। मै कमजोर तो था ही। ठण्ड ने मेरी खूब खबर ली। मेरे पेट मे दर्द शुरु हुआ। रात मे रबर की थैली से पेट को सेंक दिया जाता। डाक्टर कहते हिपेटिक कालिट और सुपरिन्टेंडेन्ट जेल कहते गोलस्टोन। इसी उधेडबुन में मेरा दर्द बढता गया। सप्ताह मे एक बार पेट के दर्द का दौरा होता रहता। जेल मे ७५० कैदी थे। मैं जिससे बात करता वही सर्दी की शिकायत करता। कई कैदियो को निमोनिया ने घेर लिया। सप्ताह मे एक आध मौत का शिकार होता ही रहता था। मैं अपना दुख भूल गया और कैदियों के भाग्य पर अफसोस करने लगा। किन्तु जेल अधिकारी निश्चिन्त थे। कैदियो की मृत्यु उनके लिये स्वाभाविक बात हो गई थी। जेल के सन्तरी प्रायः कैदी की मौत को चूहे की मौत और कैदी के भागने को शेर का भागना समझते। जेल के अन्दर कोई मरता या असाध्य बीमार होता तो रात्रि मे भीतर के सन्तरी डाक्टर को लाने के लिये बाहर के सन्तरी को पुकारते किन्तु सर्दी मे डाक्टर के घर जाने मे आनाकानी करते और देर लगा देते। जेल के दरवाजे खुलते और डाक्टर को आने मे २–२॥ घण्टे अवश्य लग जाते। मैं प्रतिदिन प्रात. काल बीमार कैदी के स्वास्थ्य के बारे मे पूछने को उत्सुक रहता। मेरे कमरे के पास ही चीलघर नाम का कमरा था, जिसमे मृतक कैदी लाया जाता। जिस दिन कैदी की मृत्यु होती उस दिन मे अनमना सा और विचार मग्न रहता।

एक दिन की दर्दनाक घटना अब भी मुझे याद है कि रात मे एक कैदी को बीमारी की पुकार आई। बाहरी सन्तरी डाक्टर को बुलाने गये। दुर्भाग्यवश डाक्टर गायब था। प्रात काल पता लगा कि कैदी मर गया। मनुष्य जीवन का मूल्य जेल मे कितना आका जाता है। पाठक इस उदाहरण से स्वय जान लें।

एक कुर्ता ११२ जुएँ—

मै अन्त मे सर्दी से व्याकुल हो गया। सुपरिन्टेन्डेन्ट जेल से, जो कि एक अंग्रेज थे, मैंने अधिक कम्बल देने के लिये कहा तो उत्तर मिला—'यहा क्या होटल है ?' मैंने कहा—'मैं चाहे घर मे चाहे स्कूल मे और चाहे जेल मे रहूँ, मनुष्य की तरह रहना चाहता हूं।' पर वहां मेवाड की जेल थी और वे थे मेवाड के अधिकारी। मैं समझता हूँ मेवाड की जेलें अपराधी के सुधारने के स्थान नहीं बल्कि उनको घुला २ कर मारने के नारकीय स्थान हैं। सुपरिन्टेन्डेन्ट जेल से कम्बल मागने के कारण जेलर भी क्रुद्ध हो गये। क्योकि उन्होने इसे शायद अपनी शिकायत समझी। उन्होने अन्दर के कैदियो के फटे कम्बल मगवा कर सबको एक २ बांट दिया। थोड़ी सर्दी दूर हुई और हमने अपने को धन्य समझा। पर हमारे आश्चर्य



का ठिकाना न रहा, जब हमारे शरीर पर अनेकों जुए चलने लगी। हमारी स्थिति ठीक वैसी ही हो गई कि हैजे से बची जान तो तान ने घेरा।' मेरे एक एम ए, एल- एल बी साथी ने केवल अपने कुर्त्ते को सरसरी तौर पर देखकर ११२ जुएं बटोर ली। जब अधिकारियो के पास ११२ जुओ का तोहफा गया तो शायद उन्हे बडा सन्तोष हुआ होगा।

अज्ञात स्थान की ओर—

स्नान करने या पानी भरने को ही हम बाहर निकाले जाते थे। उस समय हमको थोडा बहुत घूमने को मिल जाता। जब तक मैं बाहर रहा, अन्दर के साथियो को दिन रात कमरे मे ही बन्द रखा जाता था। उनके सामने एक नई लम्बी बैरक बनवाई जा रही थी और जेल अधिकारियो को यह भय था कि कही वे मजदूरो या स्त्रियो बातचीत न करले। बैरक बनने में लगभग तीन-चार माह लगे होगें। इस अर्से मे मेरे साथियो को दिन रात अन्दर बन्द रहने के कारण सिर दर्द और कब्ज की शिकायत रही। सूर्य के दर्शन दिन मे सिर्फ एक घण्टे, दस बजे के करीब, होते थे। मेरे साथी प्रकृति की देन हवा और धूप के लिये तरसा करते। जी चाहता था कि इन बडी २ दीवारों और बाहर के गगन चुम्बी पेड़ो से परे भी कभी घूमने को मिला करे तो कितना अच्छा हो। किन्तु जब कभी जेल अधिकारियो से इसके लिये प्रार्थना की जाती तो वह अस्वीकृत होती। एक दिन प्रात काल हम ठण्ड से सिकुड रहे थे कि एक मोटर लारी आने की आहट आई। सन्तरी हमारी ओर आता हुआ दिखाई दिया। साथियो ने सन्तरी के विषय मे कई कल्पनाए की। हममे से शायद १२ व्यक्तियो की तलबी हुई और हम पुलिस के सिपुर्द कर दिये गये। पूछने पर भी नही बताया गया कि हम क्यो और कहा ले जाये जा रहे हैं। ओढने को भी कुछ नही लेने दिया गया और यहां तक हुआ कि हमारा एक साथी शौचादि से निवृत्त होना चाहता था, पर तत्काल मोटर मे बैठा दिया गया। मोटर चली और रल्वे स्टेशन तक हमे यह कल्पना होती रही कि शायद हमे रेल्वे ट्रेन द्वारा कही बाहर के लिये परिवर्तन कर रहे हैं। पर जब मोटर स्टेशन पर न रुक कर सर्रर्र करती हुई आगे बढ गई तो हमारे आश्चर्य का ठिकाना न रहा। मेरे एक साथी कहते थे कि आज जगल में अच्छी सी पिटाई होगी। कड़ाके की सर्दी, प्रात काल की ठण्डी बयार, मोटर की सवारी, और फिर जेल की ड्रेस, जो सरदी रोकने मे बिल्कुल असमर्थ थी।हमारे दात बोलने लग गये। कुछ को जुकाम हो गया और दो साथी तो ज्वर ले १५ दिन व्याकुल रहे। शहर से १०–१२ मील दूर जगल मे जहा एक साधारण बगला बना हुआ था और जहा पास ही पुलिस थाना डबोक लिखा हुआ था, मोटर लारी जाकर रुकी। हमे बाग मे बिठा दिया गया। शहरी कोलाहल से मुक्त जगल की आनन्द विभोर कर देने वाली पवन ने हमे मस्त बना दिया। आज हम कई महीने बाद खुले मे निकाले गये थे। पास मे ही पुरानी रेजीडेन्सी के खण्डहर और हरी भरी पर्वत माला खड़ी दिखाई दे रही थी। कुए से पानी खीचकर सबने स्नान किया, भोजन किया और थोडे सोये कि पुलिस कार सी० आई० डी० सुपरिन्टेन्डेन्ट, शहर कोतवाल, रेल्वे सब इन्सपेक्टर और सी० आई० डी० को लिये हुए आ धमकी। हमारे बयान लिये गये, सम्बन्धियो के नाम, पते, पेशा आदि सब हाल पूछा गया। बाद में पुलिस वाले खा पीकर रवाना हुए। हमे भी शाम को ६ बजे लारी में बिठा वापस जेल में दाखिल कर

दिया गया। हमारी इस यात्रा का रहस्य क्या था, हम न जान सके। जेल के सन्तरियो ने बताया कि जैल देखने एक बडे साहब आये थे। इसलिये शायद आपको हटाया गया था। ऐसी ही एक समस्या एक दिन फिर उपस्थित हुई। हमे जेल अधिकारियो ने बाग मे घूमने भेज दिया। इन्होंने पहले कभी ऐसी कृपा नही की थी, इसलिये थोडा आश्चर्य हुआ। किन्तु बाद में मालूम हुआ कि मुसाहिब आला जेल देखने तशरीफ लाये थे इसलिये हमें यह सौभाग्य प्राप्त हुआ था।

वास्तविक निरीक्षण का आधार–

अधिकारी हर समय इसी प्रयत्न मे रहते हुए नजर आते कि कोई जेल की खराबी ज्ञात न करले। जो दर्शक आते उन्हे वे दरियो, निवार, गलीचे कपडे आदि बनते हुए दिखाकर प्रभावित कर देते और उत्तम प्रबन्ध का प्रशसा पत्र प्राप्त कर लेते। पर जेल दर्शक को चाहिये कि वह टट्टियां सफाई, रोगियो का भोजन, तन्दूर पर बनती हुई भोजन सामग्री, ईंधन की लकडी सूखी है या गीली, चक्की खाने मे पिसाई के लिये दिये गये अनाज का तोल, नाज भडार में नाज की किस्म, दिये जाने वाले भोजन का नाप, तौल, कैदियो से काम लेने के घटे सर्दी से बचने के कपडे जुएं, खटमल और मच्छरो से बचने के उपाय, आजन्म कैद की मियाद, जन्म कैदी का भोजन, बेडी पहिने सोते हुए कैदी की दुर्दशा, गदे जल मे स्नान की व्यवस्था, कैदियों मे कर्मचारियो का निजी काम लेना, मिलाई, चिट्ठी-पत्री आदि के नियम, सर्दी से कैदियो की मृत्यु-सख्या, जेल पुस्तकालय और जेल पाठशाला यदि हो तो उसकी व्यवस्था, कैदियो को दी जाने वाली सब्जी, बैरको मे बन्द होने पर रात्रि मे टट्टी-पेशाब की व्यवस्था, पहिनने के कपडे घूमने फिरने की असुविधा, आटे में चक्कियो की आई रेत, जनाना जेल की व्यवस्था, स्त्री कैदी की तलाशी पुरुष लेता है या स्त्री इत्यादि अनेक बातें देखने के पश्चात ही निरीक्षण बुक मे अपनी सम्मति लिखनी चाहिये।

मैंने ऊपर लिखा है कि कैदी मिलाई के दिन की बडी प्रतीक्षा करते हैं। जेल जीवन मे मिलाई के दिन ही बाहरी दुनियाँ के हालचाल, सगे सम्बन्धियो के दर्शन और कभी आनेवालो से खाने–पीने को चीजे मिल जाती है। मैं और मेरे साथी भी मिलाई के दिन को कैदियो का त्योहार मानने लगे। मिलने वालो का मेला लग जाता था। हम मे से दो ही व्यक्ति ऐसे थे जिनका घर उदयपुर मे था। अत हमारे सम्बन्धी खाने पीने की चीजे ले आया करते थे और हम आपस मे बांटकर खालिया करते थे। एक दिन का जिक्र है कि जब कमलाजी मिलने आई तो जेल अधिकारियो ने यह शर्त लगादी कि उनके द्वारा लाये हुए खाने का केवल मैं ही और वह भी उन्ही के सामने उपयोग करूँगा। मुझे यह गवारा न हुआ। उस दिन के बाद जब तक मै जेल मे रहा, मैने घर का खाना स्वीकार नही किया।

कैदियो के गुप्त कोष—

जेल के अन्य कैदी बीड़ी, मिर्चे, गुड और गांजा वगैरह की काफी चोरियां किया करते हैं। भगी से गांजा और सतरियों से बीड़ी, गुड़ और मिर्च मगवाते मैने देखा और सुना हैं। जेल मे यह आम अफवाह



है कि पैसा खर्च करने वाला कैदी सब-वस्तुऐ मगवा कर खा पी सकता है। कैदी-लोग छिपाकर रुपये पैसे भी जेल मे रखते हैं। एक कैदी ने, जो कि प्राय हमारे यहाँ काम काज के लिये आता जाता था, अपने पास पाच रुपये बताये। वह कहने लगा कि यदि हम एक रुपये का गुड मगवावें तो दस आने का हमे मिल जाता है। बीडी पीने वाले कैदियो को जेल मे दिन रात मे दो बीडी मिला करती थी पर वह कैदी २५ बीडी नित्य पीता था। पैसे वाले बीमार कैदी की जेल अस्पताल मे अच्छी सेवा सुश्रुषा होने, उस पर सतरियों, जमादारो और अन्य कर्मचारियो के खुश रहने, पेटभर भोजन मिलने, मशकत में रियायत कर देने आदि बातो का भी हाल मालूम हुआ। उसने यह भी बताया कि बडे से लगाकर छोटे कर्मचारी तक का आटा मुफत मे चक्की खाने मे पीसता हैं, धोबी सब कपड़े धोता हैं, मोची बूट पालिश आदि करता है। एक हरफूल नाम के सतरी ने भीतर कैदियो मे बीडी, गुड, मिर्च, गाँजा और नकद दाम पहुँचाने का काम कुछ साथी सतरियो की मदद से चला रखा था। उसने उस कार्य मे काफी ख्याति और प्रसिद्धी पाली थी। भीतर सामान पहुँचाने मे वह सिद्धहस्त था। जेलर की उसपर दृष्टी थी। एक दिन हमारे सामने वह भीतर प्रवेश पाते वक्त बीडी का बडल ले जाते पकडा गया। अन्त मे उसे नौकरी से हाथ धोना पडा। सतरी कागज पेंसिल रखते है। कैदी से चिट्ठी लिखाकर उसके घर से रुपये ले आते हैं। एक कैदी के घर से दो कम्बल और कानून की पुस्तकें एक सतरी ले आया। जेलर ने इस मामले की जाच की पर दिये हुए माल का पता न लग सका।

जेल मे साधारण कैदियो मे कई धार्मिक पुस्तकें पढने वाले एक कैदी को, जो हमें कभी कभी रोटियां देने आया करता, सपूर्ण गीता कठस्थ थी। उससे कभी २ ज्ञान चर्चा हो जाया करती थी।

बाल-कैदी—

मैंने देखा कि जेल में छोटी उम्र के लडके भी काफी सख्या मे आते हैं किन्तु उनके सुधार की ओर जरा भी ध्यान नही दिया जाता। वहाँ पढने लिखने का कोई प्रबन्ध नही हैं। यदि इस दिशा में थोडा भी ध्यान दिया जाय और पुस्तकालय तथा वाचनालय खोल दिया जाय तो सत्साहित्य के प्रभाव से कैदी का सुप्त मानस जागृत हो सकता हैं और वह अच्छा नागरिक बनकर बाहर निकल सकता है। मैंने देखा कि एक कैदी दस वर्ष की सजा काटकर मुक्त हुआ और दस दिन बाद ही चोरी के अपराध मे छ महीने की सजा लेकर वापस आ गया। जेल से छूटने के बाद उसके लिये न कही टिकने का स्थान था और न पेट पालने का कोई आधार ही। अत उसे चोरी करने के लिये बाध्य होना पडा।

मैंने जांच की तो मुझे मालूम हुआ कि मोटे तौर पर एक चौथाई कैदी ही वस्तुत अपराधी थे। शेष झूठे आरोपो मे अथवा रिश्वत न दे सकने के कारण फाद दिये गये थे। इनमे ऐसे लोग भी थे जो कत्ल जैसे सगीन जुर्म मे दस दस, पन्द्रह २ वर्ष की सजा लेकर आये थे। एक वृद्ध दढियल कैदी से मेरा परिचय हो गया था, वह तीसरी मर्तबा जेल मे आया था और उसके सगे सम्बन्धी सब मृत्यु पा चुके थे। पहली मर्तबा बिलकुल निरपराध होते हुए भी उसे दस वर्ष की सजा भुगतनी पड़ी। जब वह जेल में आया तो बीडी



नहीं पीता था। किन्तु वह अधिक समय तक साथी कैदियों के असर से अछूता न रह सका और बीड़ी ही नही गांजा पीना भी सीख गया। चोरी द्वारा प्राप्त मिर्च, गुड़, तम्बाकू आदि में उसका भी हिस्सा रहने लगा। वह जेल से निकला तब पक्का मुजरिम बनकर निकला।

जेल मे दाल साग मे मिर्ची कम ही डाली जाती है, अतः लोग मिर्ची के लिये तरसा करते हैं। तन्दूर पर खाना बनाने वाले कैदी छिपा कर अन्य कैदियो को मिर्ची बेच भी दिया करते हैं। हमारे लिये जो कैदी खाना लाता था, वह प्रायः ऐसा किया करता। एक दिन जमादार ने चोरी करते देख लिया और बेचारे को एक सप्ताह चक्की पीसने की सख्त सजा मिल गई।

बाहर जिन चिजो को हम बेकार समझ कर फेंक दिया करते थे उनका भी जेल मे हमारे लिये विशेष महत्त्व हो गया। बची हुई रोटियो को हमने कभी नही फेंका क्योकि जेल मे खुराक पूरी नही मिलती थी और बहुत से साथी भूखे रहते थे। नहाने के साबुन का छोटे से छोटा टुकड़ा भी हम सभाल कर रखते सतरे के छिलको को भी बेकार न जाने देते।

मा की ममता—

एक दिन माताजी मुझसे मिलने आई। पहले तो संतरी ने उन्हे डाट लिया, किन्तु बाद में अधिकारियो ने मिलने की इजाजत दे दी। मुझे जेल की पोशाक और बेडिया पहने देखकर वह रोने लगी। मैंने बहुत कुछ समझाया किन्तु सब बेकार सिद्ध हुआ। आखिर माताजी लौट गई पर उनके स्नेह और ममता ने मन मे उथल पुथल मचादी। उसी दिन एक वृद्धा अपने बेटे से, जो जन्म कैदी था, मिलने आई। शायद दस वर्ष बाद वह पहली दफा आई थी। बेटा अपनी मां को पहचान न सका। मा अपने बेटे को देखकर फूट फूट कर रोने लगी। उसने कहा कि मेरा बेटा निरपराध था और थानेदार ने दोसो रुपया देने पर छोड़देने का वचन दिया था, किन्तु में गरीब दुखिया रुपया कहां से लाती? मा की वह निसहायता मेरी आखो के आगे अब भी वैसी ताजा बनी हुई है।

साधारण कैदी हम सत्याग्रहियों को महात्मा या महात्मा गांधी के चेले कहकर पुकारा करते थे। उन्होंने जहां तक बना हमे आराम पहुँचाने की कोशीश की। उनकी सहानुभूति और सहृदयता से मैं दब सा गया। जब मुझे वे महात्मा कहकर पुकारते तो मै शर्म के मारे सिर नीचा कर लेता। क्योंकि मैं जानता था कि मुझमें कितनी कमजोरिया है। मुझे आत्म चिन्तन का मौका मिला। और जहा पहले सामने वाले व्यक्ति को उसकी परिस्थिति का खयाल किये बिना ही आडे हाथो लेने से न चूकता था, वहा अब सयम और उदारता से काम लेने लगा।

एक दिन मैं विचार मग्न बैठा था कि सिराही के जेल मे बेडी पहने कैदी के बावडी मे गिर जाने की खबर मिली। हमे खयाल हुआ कि कही हमारे सत्याग्रही अंध कवि श्री मंगलालजी स्वर्णकार तो इस दुर्घटना के शिकार नही हुए, क्योकि वे अन्धे थे। फिर भी शायद मेवाड़ की हकूमत को उनके



भाग जाने का डर था इसलिये उनके पैरों में डडेदार वेडियां डालदी गई थीं। बाद में मालूम हुआ कि मरनेवाला कोई साधारण कैदी था। हमे इस बात पर बड़ा क्षोभ हुआ कि मेवाड़ मे मनुष्य जीवन की कितनी उपेक्षा की जाती है।

प्रार्थना भी अपराध—

एक दिन हम प्रार्थना कर रहे थे कि सतरियों के जमादार ने हमें बीच में ही रोकना चाहा। डॉव लगा देने तक की धमकी दी। हमारे साथियो ने सोचा कि हिन्दू धर्म रक्षक महाराणा की जेलो में क्या प्रार्थना करना भी अपराध है? दूसरे दिन इसकी जेल अधिकारी से शिकायत की गई। उन्होंने इस पर दुःख प्रकट किया और जमादार को बुलाकर प्रार्थना मे बाधा न डालने की हिदायत करदी किन्तु उसी शाम को जमादार से मालूम हुआ कि उसने जेल अधिकारी के कहने से ही प्रार्थना में बाधा डाली थी और आगे के लिये भी जोर से प्रार्थना न करने देने के लिये हिदायत दी है। हमको जेल अधिकारियो की दुरगी नीतियों पर बडा आश्चर्य हुआ।

आखिर हमारे लिये जेल के भीतर नई वैरक बनकर तैयार हो गई और हम चारों अपने अन्य साथियो के पास भेज दिये गये। वैरक मे रात को ताला लगा दिया जाता, उसी में टट्टी, पेशाब करने की व्यवस्था थ.। अत बदबू के मारे मुझे सिरदर्द रहने लगा। ऊपर ठण्डे टिन और नीचे पत्थर, सरदी के दिनों में जहर से लगते थे। वैरक के आगे जो फाटक था, उसमे दिन में भी ताला रहता। हमे फाटक के भीतर से बाहर देखने की मनाही थी। एक दिन फाटक के पास चले जाने पर हमारे साथी मि० असावा को जेल अधिकारियो का कोप भाजन बनना पडा। उनके साथ तो वैसे भी काफी सख्ती का वर्ताव किया गया। वे एम ए, एल एल बी थे किन्तु उनकी शिक्षा का कोई लिहाज नहीं किया गया। उनके पैरो में डडेदार वेडिया डाली गई और साधारण कैदियो जैसा भोजन दिया गया।

जेल कर्मचारी उसी दिन सफाई पर जोर देते। जिस दिन जेल सुपरिन्टेन्डेन्ट हमे देखने आते, इसलिये बदबू से बचने के लिये टट्टियो की सफाई भी हमने ही करने का निश्चय किया। अन्य कार्यों का भी हमने आपस मे बटवारा कर लिया और सभी अपना काम तत्परता से करते। शाम के समय हर रोज एक बन्दर जेल की ऊची दीवारो पर आकर बैठता था। हमारे एक साथी कहा करते थे कि बन्दर पूर्व जन्म मे कैदी रहा होगा और यही उसकी मृत्यु हुई होगी, इसलिये प्रतिदिन वह यहा आकर बैठता है। जहां हमारी वैरक बनी थी वहाँ पहले लकडखाना था। वहा पहले हमने फासी के तख्ते भी देखे थे। अब मेवाड़ मे फासी की सजा नहीं दी जाती। एक दिन एक मामूली कैदी ने 'प्रजामण्डल की जय' के नारे लगाये किन्तु बिचारे को जेल कर्मचारियो ने डडे की वर्षा से चुप कर दिया।

वर्माजी को जेल—

हम लोगो के बीच नये सत्याग्रहियो का आना बराबर जारी रहा। कुछ कैदियो की गिराही की जेल से अदला बदली भी होती रहती थी। इससे हमें बाहरी दुनिया की

गतिविधि मालूम होती रहती थी। मेरे सहपाठी श्री प्यारचन्दजी बिश्नोई के आने पर मुझे विशेष प्रसन्नता हुई। हम मे कुछ भाई ऐसे भी थे जो अपनी सजा समाप्त कर छूटे और फिर सत्याग्रह कर वापस हमसे आ मिले। इतना ही नही, कुछ नये सत्याग्रही भी अपने साथ लाये। सत्याग्रहियो में एक हरिजन भाई भी था। वह केवल हमारे साथ एक रात रह पाया। बाद मे जेल अधिकारियो ने उसे दूसरे स्थान पर रख दिया। सभवत माफी मगवाने के लिये उसे कई जगह बदला गया। एक दिन पुलिस की लारी फाटक पर आ लगी। हमने देखा कि भाई माणिक्यलालजी वर्मा आ रहे हैं। उनको हमसे अलग ही रखा गया। यद्यपि हम उनसे वर्तालाप न कर सकते थे पर परस्पर अभिवादन तो हो ही जाता था। वे अस्वस्थ थे। उनसे मिलने पर पता लगा कि उनका अपहरण ब्रिटिश हद से हुआ और मेवाड़ पुलिस ने इस समय उसके साथ काफी मारपीट की।

जेल मे त्यौहार—

दीवाली और होली के त्यौहारों पर प्रत्येक कैदी को लगभग एक तोला घी और चार-पांच तोला गुड मिलता है यद्यपि यह गुड मिट्टी मिला हुआ और बहुत खराब होता है किन्तु कैदी इसे पाकर ही अपने को भाग्यशाली समझते हैं। दीवाली के अवसर पर मैंने यह न्यामत लौटा दी थी और होली पर भी हमारा वैसा ही करने का निश्चय था पर जेल वालो ने शायद खास तौर पर अच्छा गुड मगवाकर हमारे लिये भेजा। किन्तु इससे भी हमारे कई साथियो को सन्तोष न हुआ। होली के दिन जेल के प्राय. सभी छोटे बडे कर्मचारी मदिरा पान करते हैं और कैदियों के साथ होली खेलते हैं। कैदियो को नाच गान की भी सुविधा मिल जाती है। दो चार कैदी स्वाग बनाकर अधिकारियों का मनोरंजन करते हैं।

मैं यह लिख चुका हूं कि स्त्री कैदियो के लिये स्त्री वार्डन नियुक्त नही है। स्त्रिया जब जेल मे आती हैं तो उनकी तलाशी भी पुरुष ही लेते हैं। एक दिन मैंने देखा कि एक सिपाही ने तलाशी लेते समय एक स्त्री कैदी के साथ बड़ा अश्लील मजाक किया था पर उस स्त्री ने उसी समय उस वार्डन को बुरी तरह डाट दिया। इस प्रकार की घटनाएं यहा आये दिन होती ही रहती हैं।

एक दिन कुछ बहनो ने, जो मुझसे मिलने आई थी, अधिकारियो से जेल देखने की इच्छा प्रकट की, किन्तु उन्होने यह कह कर कि स्त्रियो को जेल दिखाने का नियम नही है, टाल दिया, किन्तु उसी शाम को मैंने देखा कि एक गुजराती अधिकारी की स्त्री कार मे बैठकर आई और जेल के क्लर्क ने बड़ी तत्परता के साथ उन्हे सारी जेल दिखाई। इस भेदभाव पर अफसोस हुए बिना न रहा।

जेल मे कैदियों को कुछ पद भी दिये जाते हैं। एक तो सी. एन. डबल्यू. होता है। इसे बैरक के भीतर रात को पहरा देना पडता है। इसे महीने मे दो दिन की छूट मिलती है। इसके ऊपर सी ओ. होता है। यह कैदियों के काम की देखभाल करता है और महीने मे चार दिन की छूट मिलती है। है। सी. डबल्यू. सबसे बडा पद है जो किसी कैदी को मिलता है। इसको छ दिन की छूट मिलती है। जेल अधिकारी इन पदो का प्रलोभन देकर कैदियो मे फूट डालकर शासन करने की नीति काम मे लाते हैं। मेरा नाम भी जेल अधिकारियो ने सी ओ. मे लिख दिया। मैंने इसका विरोध किया, किन्तु इसके बावजूद मेरा



नाम नहीं काटा गया। सी. ओ. को महीने में एक बार थोड़ा घी और गुड मिलता है। वह भी मैंने कभी स्वीकर नही किया।

मैं सत्य को नही छिपाना चाहता। मुझे साथी सत्याग्रहियो में पारस्परिक मनमुटाव और ईर्ष्या द्वेष की भावना देखकर बडा असन्तोष हुआ। हमारे विचारो मे भी काफी मतभेद था। मैंने महसूस किया कि पूरी तैयारी और ट्रेनिंग के बाद ही सत्याग्रहियो को जेल आना चाहिये। किन्तु साथियो के साथ चौबीसो घण्टे रहने के कारण विभिन्न प्रवृत्तियो के अध्ययन करने का मुझे अच्छा अवसर मिला। साथ रहने और वाद-विवाद करने से कई साथियो के विचार सुलझाने मे भी मदद मिली। जो साथी बीडी पीते थे, जब वे बीडी छोडने मे असमर्थ रहे तो मुझे बडी ग्लानि महसूस हुई किन्तु मुझे यह स्वीकार करना चाहिये कि सभी साथियो का मेरे प्रति प्रेमभाव बना रहा और मुझे ऐसा अवसर याद नही पड़ता कि मैंने कभी किसी का दिल दुखाया हो।

हमे जेल मे कभी कोई समाचार पत्र पढने को नही दिया जाता था। यदि राज्य प्रशसा की कोई बात होती तो जेल अधिकारियो द्वारा वह हमें अवश्य मालूम हो जाती। हमें वाइसराय के भाषण की छपी प्रति पढने को दी गई थी उसमे रियासत के सुप्रबन्ध की तारीफ की गई थी किन्तु यह उस समय जब कि नागरिक अधिकारो की रक्षा के लिये मेवाड़ के अनेक युवक जेलों मे पडे सड रहे थे। राजनैतिक अधिकारियो द्वारा इस प्रकार की प्रशसा करना एक आम रिवाज हो गया है। जेल सुपरिन्टेन्डेन्ट ने हमारे बहुत आग्रह करने पर हमे 'टाइम्स ऑफ इन्डिया' देना प्रारम्भ किया। यह पत्र प्राय. बीस या चौबीस पृष्ठ का निकलता है पर हमारे पास उसके आठ या छ पृष्ठ आ पाते। राजपूताना और भारत के समाचार उसमे से पहले ही निकाल लिये जाते अत हमारे लिये वह वैसा ही सिद्ध होता जैसा कि रक्त मास बना शरीर हुआ करता है। इसे पढने मे हमारी कोई रुचि नही होती। किन्तु हमारे बहुत से साथी उसे केवल इसीलिये पढते कि उनका अग्रेजी भाषा का अभ्यास कम न हो।

मेरा पेट का दर्द दिनो दिन बढता गया। मैं जो घी खाता कै होकर निकलता। जेल के डाक्टर ने, जो एक हसमुख और मिलनसार युवक थे, अनेक औषधियाँ आजमाई और अन्त मे उत्तर दे दिया कि इससे अच्छी औषधि उनके पास नही है। उन्होने एक्सरे कराने की राय दी जिसका जेल में प्रबन्ध होना कठिन था। अत जेल अधिकारियो ने मुझे बीमारी के कारण सजा की अवधि समाप्त होने से पहले ही छोड देने का विचार किया।

सशर्त रिहाई मजूर नहीं—

यद्यपि बीमारी के कारण मेरा शरीर कोरा ढाँचा रह गया था, फिर भी साथियो से बिछुडना बुरा मालूम हुआ। मुझे छोडने की सब तैयारिया हो गई। मेरा जेल का जेवर 'बेड़ी' भी उतरवा लिया गया किन्तु एन वक्त पर जेल अधिकारियो ने मुझसे यह शर्त लिखवाना चाहा कि मैं अपने इलाज के अलावा और कोई काम नही करूगा। मैंने सोचा कि किसी शर्त पर बिदा होने के बजाय जेल मे मर जाना ज्यादा

श्रेयस्कर होगा और शर्त लिखकर छूटने से दृढता पूर्वक इन्कार कर दिया। इस प्रकार बीमारी के कारण समय से पूर्व रिहा होने का प्रकरण समाप्त हुआ और मैं बैरक को लौट आया। मुझे ज्वर बना रहता था। अतः डाक्टर ने एक के बाद एक कई इंजेक्शन लगाये। मेरी बीमारी के समय दो साथियो, श्री पुरुषोत्तमलालजी चौधरी और शंकरलालजी पालीवाल ने जिस हार्दिकता का परिचय दिया और प्रेमपूर्वक सेवा की उसका उल्लेख न करना कृतघ्नता होगी।

हमारा भोजन एक महाराज बनाकर लाता था, किन्तु हमारे दो साथी अपना भोजन स्वय पकाते थे। जेल अधिकारियो ने उनकी धार्मिक भावना का लिहाज करके यह सुविधा उन्हे दे दी थी। यदि वे ब्रिटिश जेल मे होते तो उन्हे यह सुविधा शायद ही मिल पाती। उनके लिये जो कोयले आते, उनसे हम रात को हाथ सेका करते। आग के सहारे हमारी मजलिस जमती और कहानियो, कविताओ आदि द्वारा अपना खूब मनोरंजन करते।

ठीक हमारे बैरक के पीछे बेत लगाने का स्थान था। एक लकडी की तख्ती पर कैदी को बिठा दिया जाता और नगे बदन पर गीली बेंते लगाई जाती थी। बेंतो की मार और कैदी की चीत्कार जब कभी सुनाई देती तो हम बैचेन हो उठते। यह पाशविक सजा हमें कलक स्वरूप प्रतीत हुई। एक दिन हमारे सामने से एक कैदी को बेंत की सजा देने के लिये लेजाया गया, उसे आटा पीसने का काम दिया गया था। बेंत लगाने के बाद वह बैठ नही सकता था फिर भी दूसरे दिन उसे मशक्कत करने के लिये मजबूर किया गया।

रिहा होकर पुलिस के चंगुल में—

मेरी सजा समाप्त होने मे अब अधिक दिन नही रहे थे। ज्यों २ रिहाई का दिन निकट आता जाता था त्यो त्यो बाहर की दुनिया देखने की उत्सुकता बलवती होती जाती थी। वैसे मेरी सजा के कुछ दिन और शेष थे, किन्तु मुझे नेक चलन समझा गया और कुछ दिन पूर्व ही रिहा कर दिया गया। २० मार्च १९३९ को हमने नित्य की भाति सम्मिलित प्रार्थना की और मै साथियो से विदा हुआ। घर के कपडे पहन कर जब मै दफ्तर मे पहुंचा तो मित्रो की भीड खडी थी। कमलाजी बच्चो सहित मौजूद थी। जेल अधिकारियो के पास पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट का यह फरमान आया हुआ था कि मुझे जेल से सीधा पुलिस मे भेजा जाय। मै जेल के संतरी के साथ जेल की ऊची २ दीवारों से बाहर निकला, जो लोग मेरा स्वागत करने आये थे वे भी मेरे साथ हो लिये। मुझे शहर के बाजार नये लग रहे थे और मैंने अनुभव किया कि ६ महीने के भीतर ही दुनियाँ कितनी बदल गई है। जब मै सुपरिन्टेन्डेन्ट पुलिस के दफ्तर मे पहुंचा तो पहला प्रश्न उन्होंने यह किया कि मुझे पुष्पमालाएँ किसने पहनाई? यद्यपि ये मालाएँ मुझे जेलर के सामने ही पहना दी गई थी, किन्तु गरीब संतरी को उसके लिये फटकारा गया। सुपरिन्टेन्डेन्ट पुलिस ने मुझे राजनैतिक कार्यों मे भाग न लेने के लिये जमानत देने का इकरार लिखने को कहा। मुझे आश्चर्य हुआ कि सजा पूरी होने के बाद भी मेरे पीछे अभी यह अडगा बाकी है। मैंने कोई शर्त लिखने से इन्कार कर दिया। अतः मुझे कोतवाली मे भेज दिया गया।



यहा मैं मालाओ के बोझ से हलका होकर कोतवाल साहब के सौजन्य से एक कमरे में विश्राम करने लगा किन्तु वहा इतना शोरगुल था कि चैन से बैठना मुश्किल हो गया। मुझे ज्वर तो था ही। सिर दर्द और बढ गया। दूसरे दिन पेट के दर्द का दौरा भी हो गया। मित्रगण मेरी बीमारी से चिन्तित हो रहे थे। मैं थोडा बहुत सोता और वही बरामदे मे घूम लेता। वहा सिपाहियो और खुफिया लोगो की गतिविधि जानने का अच्छा अवसर मिला। प्रात काल प्रत्येक हलके से कुशल क्षेम पूछने आने वालो का ताता लग जाता। मैं चुपचाप यह दृश्य देखता रहता। मैंने देखा कि पुलिस कर्मचारियो को दिन मे कई तरह को पौशाकें बदलने, पान खाने, आंखो के इशारे से बात करने, गरज कर बोलने, गाली गलोच करने, दूसरे व्यक्तियो को मूर्ख समझने और हकूमत के मद में अपने को सर्वेसर्वा समझने का राज रोग होता है। जिन इन्सपेक्टरो ने सत्याग्रहियो को जूतो और डण्डो से बेहाल कर दिया था, उनको मैंने पचरगा लेहरिया बाधे छैले के बीच मे हाथ मे छोटा सा कलई की श्याम वाला डण्डा लिये चैन को बशी बजाते देखा। मैं कैदी नही था फिर भी मुझे अखबार पढने को नही दिये गये। वैसे यहा मेरे साथ कोई सख्ती नही हुई। मैंने यह भी महसूस किया कि सत्याग्रह के समय पुलिस कर्मचारियो का जैसा असभ्य व्यवहार था वह बदल गया है। मेरी सजा पूरी हो जाने के बाद दो दिन वैसे ही कोतवाली मे बैठा रहा। पर जिम्मेदार अधिकारियों ने मेरी कोई खबर नही ली। मैंने कोतवाल से कहा कि या तो मुझे रिहा किया जाय या वापस जेल भेज दिया जाय। मैंने मन्त्रियो को लिखित आवेदन पत्र देने की इच्छा प्रकट की किन्तु कोई सुनवाई नही हुई। इस व्यवहार पर मुझे बडा असन्तोष हुआ। वहाँ न दलील न वकील और न अपील की गुजायश थी। अन्त में मैंने पुलिस वालो को कह दिया कि यदि मुझे इस प्रकार गैर कानूनी तौर पर रोक रखा जायगा तो उसके विरोध स्वरूप मुझे अनशन करना पडेगा।

जेल के छूटने के समय जो मित्र मुझे लेने आये थे और जिन्होने उस समय फोटो आदि लिये थे उनमे से कई को पुलिस ने बडा परेशान किया, डराया, धमकाया और एक दो को पाच छ घण्टे हिरासत मे भी रखा। मुझे पुलिस की इन कार्यवाहियो पर बडा क्षोभ हुआ। मेरा ज्वर अधिक बढ गया। मेरी स्थिति ठीक ऐसी हो गई कि आकाश से उतरा तो खजूर पर लटक गया।

आखिर कोतवालजी ने मुझे मजिस्ट्रेट के घर पर चलने को कहा जिन्होने कि मुझे सजा दी थी। मैं इच्छा न होते हुए भी उनके पास गया और अपनी सारी दास्तान कह सुनाई। मैंने उन्हे साफ कह दिया कि मैं इकरार न लिखूगा। मैंने शिकायत की कि पुलिस ने चार दिन से मुझे गैर कानूनी तौर पर अपनी हिरासत मे बिठाकर परेशान कर रखा है। मजिस्ट्रेट महोदय ने शान्तिपूर्वक मेरी सारी बात सुनी और कहा कि वे मेरी स्थिति मुसाहिब आला के सामने रख देंगें। मै कोतवाली वापस लौट आया। इस मुलाकात के चार घण्टे बाद मुसाहिब आला के पास से मेरी रिहाई की तहरीर आई और आखिर मे मै मुक्त कर दिया गया।

(नवज्योति साप्ताहिक के ३० अक्टूम्बर, १९३९ के अको मे धारावाहिक प्रकाशन
श्री रामनारायण चौधरी के विशेष सौजन्य से प्राप्त)

लोक सेवक श्री श्रोत्रियजी

—श्री मुरलीमनोहरशरण

प्राचीन काल मे शासक राजतंत्र का संचालन तो करते थे, किन्तु समाज की ज्ञान-विज्ञानमयी शिक्षा का दायित्व ऋषि महर्षियो पर था। उनके स्वतन्त्र आश्रम होते थे और वे पूर्ण निर्भयतापूर्वक समाज के बाल युवा किशोरो को शिक्षित दीक्षित करते। सम्पूर्ण शिक्षा को स्वतन्त्र चिन्तनपूर्वक प्राप्त कर भारतीय युवक समाज-सेवा और अन्य लौकिक कार्यों मे प्रवृत्त होता। शासक इस मध्य शिक्षा कार्य मे हस्तक्षेप नहीं करता। यहां तक कि राज्य के मन्त्रिमण्डलो मे शिक्षा मन्त्री और शिक्षा निदेशक के पद नाम मात्र को भी नही होते। केवल अर्थ तन्त्र के सम्यक संचालन हेतु भिन्न २ आश्रमो से सम्बन्धित स्वतन्त्र भूमि प्रबन्ध होता और वही आधार था आश्रमो के स्वतत्र सचालन का। तभी इस देश ने भरत, चाणक्य और अशोक जैसी विश्व प्रतापी प्रतिभावो को जन्म दिया।

आज के सन्दर्भों मे राज्य और केन्द्रीय शिक्षा मन्त्री गण और उससे पूर्व मुसलमान तथा अंग्रेज शासक हमारी शिक्षा-दीक्षा पर छाये रहे और सच पूछिये तो एक गौ अपने बधिक को जिस कातर दृष्टि से अवलोकिक करती है वही दृष्टि हमारी सस्कृति परक शिक्षा-दीक्षा मुसलमानो, अंग्रेजो और वर्तमान शिक्षा मन्त्रियो को बधिक भाव से कातरायमान दृष्टिपूर्वक प्राणान्तकालीन श्वास प्रश्वास पूर्वक ग्रहण कर रही है।

इन पृष्ठ भूमियो मे मध्य स्वदेश एव स्व संस्कृति को कही आशा एवं जीवन के प्रतीक कुछ नक्षत्र दृष्टिगत होते हैं तो उन नक्षत्रो मे निर्भयता पूर्वक सार्वजनिक सस्थानो को सचालित करने वाले और अपने जीवन स्नेह से सेवा-रूपी प्रकाश को आलोकित करने वाले नक्षत्रो मे एक नक्षत्र महिला-मण्डल के सचालक सस्थापक श्री दयाशकरजी श्रोत्रिय भी हैं। पूर्ण कुटियो से भी कम साधन शून्य यो कहिये लोह पत्र कुटीर मे सेवा सौरभ के आनन्द मे निमग्न, सुख-सुविधा विहीन जीवन को परमात्मा का मगलमय अनुग्रह समझने वाले, लोक सेवको की शृ खला के स्वर्ण पिण्ड, आर्यो के मूल प्रतीक वचन 'चरैवेति चरैवेति' के अनुपालन में जीवन की अपरान्ह सध्या समर्पित कर देने मे मुग्ध वदन श्री श्रोत्रियजी लोक सेवक नही तो क्या राज सेवक है।

वेदना और अभावो मे जीवन को व्यतीत करना उतना ही कठिन है जितना कहना सरल। आज अपने अभावों, कठिनाइयो और त्याग की महिमा का वर्णन करने वालो की सख्या अपरिमेय है तो इस प्रकार का जीवन व्यतीत करने वालो की संख्या परिमित ही नही क्वचित–दृष्टिपाथेय है, वहां हम नारि जगत की सेवा मे, शिक्षा-विज्ञान की उपासना मे, भारतीय लोक जीवन की श्रद्धापूर्ण उपासना में, स्वतन्त्र किन्तु



राष्ट्रीय अनुशासन के सौमयाग में, मुख्य यजमान के आसनाधिष्ठित श्री दयाशंकरजी श्रोत्रिय को आज विवेकशील दृष्टियो में निर्द्वन्द्व दृष्टियो मे निस्वार्थ, आकाक्षाओ में एक निर्भीक लोक सेवक का सम्मान प्राप्त है, एव लोक सग्रह तथा लोकाभिमान से विरक्त एक भारतीय कण्व का शीर्षक अर्पित है, यह कहें तो क्या यह अतिशयोक्ति होगी ? नहीं। सम्पूर्ण जीवन को इस प्रकार महान लोक सेवा कुण्ड में समिधावन भस्मि भूत होने की आवरण विहीन आकाक्षा वाले श्री श्रोत्रियजी लोक वन्दनीय हैं, लोक पूज्य है। इसलिये भी कि राजनीति की मदिरा का स्पर्श भी जिन्हे असाध्य रहा हो अतएव जो मत्त न हो सके, निश्चय ही हम उनके प्रति आदर भाव प्रकट करें तथा अपनी पवित्र भूमि में ऐसे नक्षत्रों के प्रकाश की कामना परमात्मा से करते रहे। हम उनके शेष जीवन को सुखमय देखना चाहे आनन्दमय देखना चाहे, उनके प्रति समाज अपनी श्रद्धा भावना समर्पित करे तो यह अपने भारतीयो की विरासत में प्राप्त गुण गरिमा ही होगी। सहज कृतज्ञता के दो चार सुमन ही सदा लोक सेवक स्वीकार करते रहे हैं और नयी पीढी के युवाजन कुछ सुमन श्रोत्रियजी को हृदय से अर्पित करदें—बस यही अभिनन्दन यज्ञ की मन्त्र पुष्पान्जलि होगी।

मनस्वी सेवार्थी गणपति सुख न च दुख।

स्थल आश्रम, उदयपुर



श्री श्रोत्रियजी—एक प्रेरक व्यक्तित्व

—डॉ. पुरुशोत्तमलाल मेनारिया
एम. ए., (पी-एच.डी.), साहित्यरत्न

जिन्होंने सम्पन्न परिवार में जन्म लेकर भी सम्पन्न होने का प्रयत्न नहीं किया, विद्वद्वंश-परम्परा का वाहक होते हुए भी विद्वता का अहंम् नही किया, स्वाधीनता-संग्राम मे निरन्तर कष्ट सहन करते हुये भी स्वाधीनता का लाभ निजी रूप मे नही लिया, राजनीतिक सत्ता के अधिकारी होते हुये भी सदैव सत्ता से दूर रहे और दूसरो से सेवा प्राप्त करने के अधिकारी होते हुये भी आज तक दूसरों की सेवा मे ही सलग्न हैं—ऐसे हैं श्री श्रोत्रियजी। स्वभाव से सरल होते हुये भी अनुशासन मे कठोर, कार्य में परिश्रमी, हालचाल में मस्त, विचारो मे फक्कड़, विरोधी के सामने अक्खड, हृदय से स्वच्छ, व्यवस्था मे कुशल और बुद्धि से प्रखर बाबूजी पहली ही भेंट में किसी व्यक्ति को प्रभावित करने की शक्ति रखते हैं।

बाबूजी बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं। राजनीति, समाज-सेवा और महिला-शिक्षण का त्रिसूत्री कार्यक्रम आपके जीवन का मुख्य आधार रहा है। तीनो ही क्षेत्रो में आपने अपनी लगन, कष्ट-सहिष्णुता, योग्यता और सूझबूझ से आशातीत सफलता प्राप्त की है। आपने एक मुख्य कार्यकर्त्ता और मेवाड़-प्रजामण्डल के अधिकारी के रूप मे सक्रिय भाग लेते हुए स्वाधीनता के प्रत्यूष काल मे राजस्थान की राजनीति को स्वाधीनता की सीढी पर लाकर छोड दिया। बाढ हो अथवा अकाल, अथवा बिहार के भूकम्प पीड़ितों की सेवा करनी हो, श्री श्रोत्रियजी सदैव अग्रणी रहे। अछूतो द्धार के काम से कभी मुंह नहीं मोडा और अन्त में प्रमुख कार्य अपनाया महिला-शिक्षण का।

महात्मा गांधी का आशीर्वाद प्राप्त कर श्री श्रोत्रियजी ने महिला-मंडल की स्थापना की। छोटे से पौधे के रूप मे प्रकट हो कर इस सस्था ने अब एक विशाल बरगद का रूप धारण कर लिया है। देश के लगभग सभी शिक्षा—शास्त्रियों, समाज सेवियो और नेताओ ने प्रत्यक्ष मे महिला-मण्डल के कार्य का निरीक्षण कर सन्तोष व्यक्त किया है। इस सस्था के विकास मे श्री दयाशकरजी श्रोत्रिय और श्रीमती कमलादेवीजी श्रोत्रिय ने अपनी सम्पूर्ण शक्ति लगाई है। इन्ही की प्रेरणा और प्रयत्न से सैकडो सेवाभावी स्त्री-पुरुषो ने अपना जीवनदान दिया है। उदयपुर के सर्वथा विपरीत वातावरण में भी यह सस्था स्थापित हुई और विकसित हुई, जिसके पीछे श्री श्रोत्रियजी की अटूट साधना है। यदि यह सस्था उदयपुर को छोड़कर अन्य किसी स्थान पर स्थापित होती और ऐसे कार्यकर्त्ता मिलते तो यह संसार की एक प्रसिद्ध महिला-शिक्षण सस्था होती। अच्छे कामो मे सहयोग कम और विरोध अधिक मिलता है। ये श्रोत्रियजी ही हैं, जिन्होने विरोध का निरन्तर सामना करते हुये इस सस्था को जीवित ही नही रक्खा, इसका विकास भी करते रहे हैं।



श्री श्रोत्रियजी का परिचय सेवाभावी कार्यकर्त्ताओ के लिये प्रेरणा का असीम स्रोत है। आपका जन्म भीलवाडा जैसे छोटे से कस्बे मे हुआ। आपकी वश-परम्परा मे अनेक पडित, कमकाण्डी और ज्योतिषी हुए। भीलवाडा मे इनके निवास पर दूर-दूर से विद्यार्थी ७०-८० की सख्या मे आते और निरन्तर कई वर्ष इनके यहा रहते हुए व्याकरण, साहित्य और ज्योतिष आदि अनेक विषयो का अध्ययन करते रहते थे। इनका घर अपने समय का गुरुकुल था। नगर के सेठ-साहूकारो एव अधिकारियो का पूरा सहयोग रहता। समस्त विद्यार्थियो का अध्ययन और भोजन सुचारु रूप से चलता रहता। श्री श्रोत्रियजी पाच वर्ष की अवस्था तक भीलवाडा मे इसी वातावरण मे रहे। विद्या और परिश्रम के सस्कार इसी काल में आरोपित हुये। सिद्धान्त-कौमुदी और अमरकोश जैसे आधार ग्रन्थो का समवेतस्वर भी इस अवस्था में इनमे समाया। श्री श्रोत्रियजी के दादाजी मालवा, मध्यप्रदेश के सोखेड़ा ठिकाने मे चले गये तो श्री श्रोत्रियजी और इनके बडे भाई भी सोखेडा आगये। सोखेडा राजपरिवार मे श्रोत्रिय-परिवार को पूरी प्रतिष्ठा प्राप्त हुई। सोखेडा आगमन की घटना इस प्रकार हुई कि सोखेडा के ठाकुर केशरीसिंहजी के पुत्र लालसिंहजी का विवाह अमरगढ मे हुआ। इसी अवसर पर आकोला के जागीरदार की लडकी का विवाह भी लालसिंह के साथ हो गया। सोखेडा के ठाकुर केशरीसिंहजी का सम्पर्क भीलवाडा मे श्रोत्रियजी के दादाजी से हुआ। दोनो एक दूसरे से प्रभावित हुये। एक और श्रोत्रिय-परिवार की विद्वता और विद्यादान की महिमा तो दूसरी ओर सोखेडा-ठाकुर की गौरवगरिमा और विनम्रता। ठाकुर के आग्रह से दादाजी का गुरुकुल सोखेडा मे स्थापित हुआ। सोखेडा सस्कृत-विद्या, पूजा-भावना और दानपुण्य का केन्द्र हो गया। दूर दक्षिण के पडित भी सोखेडा आने लगे।

सोखेडा दो नदियो के सगम पर बसा हुआ सुरम्य स्थान है। रोजड़ी नदी के किनारे भव्य भवन मे रहना, श्लोक कण्ठस्थ करना, खाना और खेलना ही श्री श्रोत्रियजी का बाल्यकाल का नित्यक्रम बन-गया। खेलो मे मुख्य खेल होता राम-रावण युद्ध का। श्रोत्रियजी राम बनते। इनका एक साथी रावण और अन्य साथी वानर या राक्षस। अपनी रुचि और स्वभाव के अनुसार बालक अपनी-अपनी भूमिकायें पूरी करते।

दादाजी श्री रामलालजी श्रोत्रिय अपने समय के प्रसिद्ध कथावाचक और विद्वान होते हुये विद्वानो का आदर करने वाले व्यक्ति थे। सोखेडा से लगे हुये पच्चीस गावो से भेंट-पूजा आती। प्रचुर मात्रा में रुपये नारियल, कपडे आते। गायों की सख्या निरन्तर बढती रहती। कई खेत, घास के बीड़ और आम के वृक्ष भी भेंट मिलते रहते। किन्तु दादाजी ऐसे त्यागी कि जितना मिलता ब्राह्मणो मे बाटते रहते। स्वय पदयात्रा करते हुये चारो ओर सद्भावना का प्रचार करते। स्थान-स्थान पर यज्ञ और कथावार्तादि का आयोजन करते। कथा पूर्ण होने पर स्वय ठाकुर श्रोत्रियजी की पालकी के कन्धा लगाते।

ठाकुर केशरीसिंहजी के देहावसान पर अर्जुनसिंहजी ठाकुर हुए। अर्जुनसिंहजी के कोई सन्तान नही थी इसलिए सभी ठकुरानियो का श्री दयाशकरजी पर विशेष स्नेह रहता। श्री दयाशकरजी महलो में राज-कुमार की तरह खेलते, कई स्त्री-पुरुष इनकी सेवामें रहते, घोडे की सवारी करते। अपने घर जाने पर विद्याध्ययन करते और अन्य विद्यार्थियो के साथ अन्त्याक्षरी मे भाग लेते।



सोखेडा का उक्त क्रम पन्द्रह वर्ष की अवस्था तक ही चला। दादाजी के देहान्त पर श्री श्रोत्रियजी मथुरा आ गये यहां अन्न क्षेत्र में भोजन करते। स्नान ध्यान के बाद भोजन की परिक्रमा मिलती। मथुरा में मेवाड़ के मन्दिरो की व्यवस्था पं० नन्दलालजी करते थे। नन्दलालजी दयाशकरजी का पूरा ध्यान रखते। यहा दयाशकरजी के साथ इनके भाई भवानीशकरजी भी रहते। दोनो भाई प्राचीन परिपाटी से सस्कृत अध्ययन करते।

थोडे समय बाद श्री दयाशकरजी पुन: सोखेडा लौट आये। यहाँ पिताजी के साथ कथावार्ता का क्रम चलता। गाव-गाव भ्रमण और कथावाचन। पिता-पुत्र दोनो स्वयपाकी, अत: स्वय भोजन बनाना पड़ता था। प्रत्येक गाव मे दस दिन कथा चलती। प्रति हल दो रुपये तथा जनाने और मरदाने वेष भेंट होते भोजन मे अफीम के डोडो की शाक प्राय: रहती। श्री श्रोत्रियजी के मामा और इनके पुत्र जावरा स्टेट मे रामानुजकोट के अधिकारी थे। जावरा मे नवाब के कुत्तो एव कुत्तियो का विवाह भी धूमधाम से होता।

थोडे समय बाद श्री श्रोत्रियजी को अपना अध्ययन प्रारम्भ करने के लिए पुन भीलवाडा आना पडा। इसी समय स्काउटिंग चालू हुई थी। पहले दरियावसिंहजी फिर केशरपुरीजी स्काउट-अध्यापक रहे। भीलवाडा मे स्काउट-आश्रम की स्थापना हुई। देश प्रेम और समाज सुधार के कई नाटक अभिनीत हुये। जनता मे जागृति की लहर फैलने लगी। कजोड़ीमलजी अजमेरा के यहा गुजराती समाचार पत्र आता था। श्री श्रोत्रियजी पढते रहते तथा देश की हलचल और ससार की गति-विधियो से परिचित रहते।

भीलवाडा के तत्कालीन विद्यार्थियो मे प्रमुख श्री लक्ष्मीलालजी जोशी, बलवन्तसिहजी मेहता, मथुरालालजी बाहेती और डा० कृष्णचन्द्रजी श्रोत्रिय थे परीक्षा-केन्द्र अजमेर मे होने से अजमेर की यात्राए भी होती। श्री श्रोत्रिय जी ने इसी समय भीलवाडा और समीप के सागानेर के बीच बहने वाली नदी के किनारे बैठकर श्री केशरपुरीजी के साथ आजीवन देश सेवा करने की प्रतिज्ञा की। इसी समय श्रोत्रियजी के बडे भाई सस्कृत अध्ययन के लिए मथुरा छोडकर बनारस चले गये और श्री श्रोत्रियजी का विवाह कमलादेवीजी के साथ हुआ।

सयोग से श्री जमनालालजी बजाज और विजयसिहजी पथिक ऊट पर एक साथ बैठकर किसान-आन्दोलन के सम्बन्ध मे भीलवाडा आये। दोनो की बातचीत श्री श्रोत्रियजी से हुई। गोपनीय रूप से डाक पहुचाने का काम श्री श्रोत्रियजी को सौंपा गया। आन्दोलन के सबन्ध मे अजमेर जाना होता तो राजस्थान के अन्य नेताओ से भी बातचीत होती। श्री श्रोत्रियजी इन दिनो गाधी टोपी निडर होकर पहनते थे।

श्री यशवन्तसिहजी मेहता भीलवाडा मे अधिकारी हुये तो डा० मोहनसिहजी मेहता से भी सम्पर्क हुआ। रमेशचन्द्रजी व्यास इस समय श्रोत्रियजी के साथ ही रहकर पढते थे।

अहमदाबाद के आकर्षण से श्री श्रोत्रियजी भीलवाड़ा अधिक समय नही रह सके। साबरमती आश्रम मे गाधीजी और अन्य नेताओ से सम्पर्क हुआ। अहमदाबाद मे मेवाड़ी पगड़ी बाधते। सरदारगढ (मेवाड) के एक सेठजी ने अहमदाबाद मे मन्दिर की सेवा-पूजा का काम सौपा तो यह भी करते रहे।



अहमदाबाद में इस समय खान साहब अकबर मोहम्मदजी की बसें चलती थी। श्री श्रोत्रियजी बसों के साथ कन्डक्टर हो गये। रात को ड्राईवर सो जाते तो स्वयं मोटर चलाते और चुपचाप वापस लाकर खड़ी कर देते। श्री श्रोत्रियजी दूसरे कन्डक्टरो की अपेक्षा सवाई रकम सेठजी को सौंपते। एक बार सेठजी को मोटर में बैठाकर घुमाया तो सेठजी ने इन्हें ड्राईवरी का लाइसेन्स दिलवा दिया। अब श्रोत्रियजी बसें स्वयं चलाने लगे।

डा० कानूगो को अपनी कार के लिये ड्राइवर की आवश्यकता हुई तो श्रोत्रियजी इनकी कार चलाने पर लग गये। डा० कानूगो ने अपनी कार साबरमती आश्रम मे भेंट कर दी। श्री श्रोत्रियजी भी आश्रम मे भेंट हो गये। आश्रम वासियो मे रहते और प्रमुख व्यक्तियो को कार मे रेल्वे स्टेशन लेने एव छोडने जाते। आश्रम मे ही जमनालालजी बजाज, कमला बहिन नेवटिया, हीरालाल शास्त्री, अम्बालाल साराभाई खड्डूभाई आदि अनेक व्यक्तियो से श्रोत्रियजी का विशेष सम्पर्क हुआ।

अनुसूया बहिन इस समय अहमदाबाद मे 'मजूर महाजन सघ' का सचालन करती थी। गुलजारी-लाल नन्दा इसी सस्था मे थे। इनसे भी मिलना होता रहता। अपने समय मे यह देश का सबसे बडा मजदूर संगठन था। नमक सत्याग्रह के दाण्डी कूच मे गाधीजी ने लगभग अस्सी व्यक्तियो को ही साथ लिया। दूसरों को छुट्टी मिल गई और इस प्रकार श्री श्रोत्रियजी को पुन उदयपुर आना पड़ा।

भीलवाडा मे इस समय माधवसिंहजी मेहता, जिला-हाकिम थे। यहा की काटनफैक्ट्री में दलेलसिंह जी नेनावटी कामदार थे। इस फैक्ट्री मे उम्मीदवारी करते हुये श्री श्रोत्रियजी १५) रु० माहवार मे 'मार्कक्लर्क' बन गये। लाला अमृतलालजी फैक्ट्री के जनरल मैनेजर थे। इन दिनो कमलाजी का भी पीहर से आना हो गया। सार्वजनिक कार्य करते रहते, समाचार पत्र मगवाना और पढना होता रहता। स्काउट रैली मे पुन उदयपुर आना हुआ। कमलाजी ने गुलाबपुरा मे कन्या पाठशाला चलाई। कस्तूरचन्दजी माहर मुनीम, बावडी-कपास-बिक्री सम्बन्धी फन्ड से आर्थिक प्रबन्ध करते। श्री श्रोत्रियजी भीलवाडा फैक्ट्री मे मार्का क्लर्क से 'जिनीग' और 'प्रेसिंग' क्लर्क बने।

अजमेर मे विदेशी वस्त्र बहिष्कार आन्दोलन में भाग लिया तो हरिभाऊजी उपाध्याय, राम-नारायणजी, डॉ० अम्बालालजी, जीतमलजी लूणिया, गोमतीदेवी भार्गव, गोरीशकर भार्गव एव प्यारचन्दजी विश्नोई आदि से विशेष सम्पर्क हुआ। यही पर गाधीजी हरिजन सुधार-यात्रा में आये तो श्री श्रोत्रियजी स्वय सेवक बने। कस्तूरबा ने पुष्कर मे रात के दस बजे कपडे धोने का काम सोपा तो श्री श्रोत्रियजी ने स्वय साबुन खरीदकर कपडे धोये और प्रात काल तक सुखाकर तह कर दिये तो कस्तूरबा बहुत प्रसन्न हुई। ब्यावर मे ऋषीदत्त मेहता, रामनिवास शर्मा, स्वामी कुमारानन्द, बाबा नरसिंहदास आदि से सम्पर्क हुआ। इन्ही दिनो वैद्य लक्ष्मीनारायणजी, रामनारायणजी चोधरी और शोभालालजी गुप्त से भी मिलना हुआ।

श्री श्रोत्रिय दम्पति का निवास गुलाबपुरा मे था तब वहा के पोस्टमास्टर दौलतरामजी थे। अजमेर से तार द्वारा गुप्त समाचार आते और डाक से आन्दोलन सम्बन्धी साहित्य आता। चन्दनसिंहजी भडकतिया

बड़ी रुचि से यह साहित्य पढते। गुलाबपुरा मे डॉ० मोहनसिंह मेहता भी आते रहते। डॉ० मेहता ने श्री श्रोत्रिय दम्पत्ति को अध्ययन के लिए इलाहाबाद भेजा। जमनालाल श्री बजाज को पत्र लिखकर खर्च का तथा श्री हृदयनाथ कु जरू को लिखकर अध्ययन और निवास का प्रवन्ध भी डॉ० मेहता ने किया।

इलाहाबाद मे श्रीराम भारतीय, मूलचन्द्र मालवीय, और कृष्णकान्त मालवीय से सम्पर्क रहता। सेवा-समिति की रसायनशाला मे काम करते और 'सेवा' नाम की पत्रिका मे सहयोग देते।

श्रीमती कमलादेवीजी महिला विद्यापीठ के छात्रावास में रहती। रमादेवी टण्डन के बाद महादेवी वर्मा ने प्रयाग महिला विद्यापीठ का काम संभाल लिया था। इलाहाबाद मे प० जवाहरलालजी नेहरू, कमलाजी नेहरू, कैलाशनाथ काटजू और सादिकअलीजी आदि के सम्पर्क मे आने का अवसर मिला। इलाहाबाद मे इन्ही दिनो उदयपुर के हजारीलालजी मेहता, प्रतापसिंह मेहता और डू गरपुर के श्री भवरलालजी शर्मा भी रहते थे। प्रति रविवार श्रोत्रियजी सहित ये लोग मिलते।

कुम्भ मेले मे स्वय सेवक के रूप मे और इलाहवाद एग्रीकल्चर इन्स्टीट्यूट मे भी कार्यकर्त्ता के रूप मे कार्य किया। इसी इन्स्टीट्यूट मे गौशाला, दूध-वितरण, फल-सरक्षण, खेती आदि का अनुभव प्राप्त किया। श्री श्रोत्रियजी का इलाहाबाद मे कविवर निरालाजी से भी सम्पर्क हुआ। डॉ० ताराचन्दजी और म्युनिसिपल सग्रहालय के अध्यक्ष वृजलाल व्यास से मिलना होता तो इतिहास और मूर्तियो के सम्बन्ध मे चर्चा होती। दामोदरलालजी शर्मा, नवरतनमलजी बोर्दिया और नन्दलालजी मेहता भी इन दिनो इलाहाबाद मे ही थे। इन साथियो से निरन्तर विचार-विमर्श चलता और योजनायें बनती।

मेवाड प्रजा-मण्डल की स्थापना का निश्चय हुआ तो श्रोत्रिय परिवार उदयपुर आ गया। श्रोत्रियजी ने अपने विविध अनुभवो, कठोर साधनाओ और वश-परम्परागत सस्कारो का लाभ मेवाड प्रजा-मण्डल और महिला-मण्डल को देते हुए अपनी सेवाओ को अनुकरणीय बना दिया है। विविध वातावरण मे अनेक ठोकरें खाने पर भी यह विशेष व्यक्तित्व गिरा नही वरन् तीव्र गति से आगे बढा है और साथ वालो को भी बढाया है। वास्तव मे श्री श्रोत्रियजी का जीवन परिचय कार्य क्षेत्र मे निरन्तर प्रगति करने की महान् प्रेरणा देता है।

३९, नाहटा भवन, जोधपुर





संस्मरण पत्र

नर्बदादेवी पालीवाल
सहायक अध्यापिका

मैं महिला मण्डल उदयपुर की भूतपूर्व सदस्या होने के नाते आपकी सेवामें सस्मरण पत्र प्रेषित करती हुई हृदयोद्‌गार व्यक्त करती हू कि आपका हृदय विशाल सागर के समकक्ष हैं। जिससे कई प्राणियो की जीवन गति को सचार होता है। प्राणियो की करूणाकार को सुनकर आपका हृदय दया से प्लावित हो जाता है।

एक दिन की बात है जब मैंने महिला मण्डल मे कार्य का शुभ आरम्भ किया ही था कि एक निस्सहाय अबला की करूण पुकार मेरे कर्णपटो मे गू जी, उसकी करूण पुकार रोटी रोजी के सम्बन्ध मे थी। उस महिला के बच्चे भूख से तडप रहे थे। वह प्रवेशिका परीक्षा मे प्रवेश पा रही थी। मैं उस महिला को आपकी सेवा मे लाई तथा श्रीमान् श्रोत्रियजी से उसके करूण क्रन्दन की पुकार पहुचाने मे माध्यम बनी। महिला-मण्डल के कार्य मे अनभिज्ञ होने पर भी मेरी प्रार्थना पर ध्यान आकर्षित करते हुए आपने उस महिला को यथेष्ट स्थान प्रदान किया। फलस्वरूप उस अबला को ही नही अपितु उसके नन्हे बालको को आपने विकराल समस्याओ से बचा कर जीवन दान दिया। उस महिला ने अपनी कर्मठता तथा अपने पसीने से घर रूपी बगीचे को सीच कर नन्हें पौधे रूपी बालकों मे आंधी रूपी सघर्षों का सामना करने की क्षमता प्रदान की। आपकी करूण वाणी ने महिला को जीवन के थपेडो को सहन करने की शक्ति प्रदान की। महिला को स्वर्ण अवसर, जो कि आपके द्वारा दिया गया, फलस्वरूप उसने स्नातक की उपाधि प्राप्त की।

श्रोत्रियजी की कार्य करने को क्षमता —एक दिन हमारा केम्प सालेरा लगाया गया। गाव की सफाई के उद्देश्य को लेकर साथी लोग तम्बूओ में ठहरे। पास ही खाई बनाकर शौचालय तैयार किया गया। दूसरे दिन हम गाव की सफाई करने निकले। मकानो के पास गोबर, कचरा उठाते हिचकिचाहट हुई। लौट कर क्या देखते है कि बाबूजी एक झाडू लेकर शौचालय साफ कर रहे हैं। दूसरे दिन से हम सभी साथी आपकी प्रेरणा से दुगने उत्साह से गाव की सफाई के कार्य मे जुट गये। यह आपकी कार्य करवाने की क्षमता है कि आप छोटे से छोटा कार्य बिना हिचकिचाहट के कर सकते हैं तथा दूसरो को प्रेरणा प्रदान कर सकते हैं।

आपके कर कमलो द्वारा पराग रूपी महिला-मण्डल को सुगन्धित पुष्प मे परिवर्तित कर महिला-मण्डल मे नव यौवन का सचार किया। जिसकी मधुर सौरभ से जन समूह आलोकित हो उठा। आपकी मधुर वाणी, सतत् परिश्रम, व्यवहार कुशलता तथा विद्वता ने इस सस्था को उच्च शिखर पर अग्रसर करने मे महान योगदान दिया। इस सस्था ने आदर्श सस्था की उपाधि प्राप्त की। आपके कार्य कलापो तथा विद्वता ने महिला-मण्डल की भूमिका मे चार चाँद लगाये। सदियो से पिछडी हुई अवस्थाओ मे नव जागरण की किरणें प्रस्फुटित हुई।

आपके ज्ञान रूपी प्रकाश ने सारे महिला-मण्डल को नही अपितु सारे उदयपुर क्षेत्र को प्रकाशित किया। मैं आशा करती हू कि अपकी मधुर स्मृति तथा आपके पद चिन्ह महिला-मण्डल को भविष्य मे प्रज्वलित करते रहेंगे।

नई हवेली न० २ प्राईमरी स्कूल, नाथद्वारा (राजस्थान)

श्रोत्रिय दम्पति को अभिनन्दन

जगन्नाथसिंह चौहान जगदीश

महिला–मण्डल में पढी, महिला जब मेवाड़ ।
हृदय से परदा हटा, ऊँची कीदी नाड़ ।।
मानव आया मानता, तिरिया को पद आन ।
महिला–मण्डल से बनी, महिला तो मतिमान ।।
मण्डल–अनुमोदन किया, नारी है शशि दूज ।
नर जो नारायण बने, नारी का पग पूज ।।
मेवाड़ी महिलान की, दुनियां पीछे दौड़ ।
शक्ति शील शकर करी, लगा दिनोदिन होड ।।
मण्डल ग्रन्थागार मे, पुस्तक तीस हजार ।
नाना–भांति के मिले, पढने को अखबार ।।
मदन मोहन मालवीय, जमनालाल वजाज ।
गाधी – आशीर्वाद से, जीवित मण्डल आज ।।
शकरजी करते रहो वामा हित की वात ।
विजय लक्ष्मी साथ तो, विजय लक्ष्मी हाथ ।।
श्रोत्रिय-दम्पति ने लिया, महिला-मण्डल भार ।
सदा–सर्वदा–सर्वथा, सत कारे संसार ।।

अवला को सवला दिखाके जगती तल मे
सफलता पाई 'जगदीश' वडे ठाट की ।
सदर मे कदर कराई कामिनी की खूब
हाट–वाट चलने मे तेज तरराट की ।
घू घट को खोल डोलने मे शरमाती जाती
बिल्कुल वोलने मे चरपट चराट की ।
परिश्रम करी दिन–रात दयाशकर ने
सोई हुई महिला जगाई मेद पाट की ।।

अभिनन्दन के योग्य हैं. श्रोत्रि तो सौ वार ।
उदयपुर उज्ज्वल कियो, करि अवला उपकार ।।
अनुदिन उपक्रम करि रख्यो, मण्डन को आबाद ।
इसलिए 'जगदीश' की, दम्पति को नित दाद ।।

भीण्डर (राज.)



कर्मठ समाज सेवी श्री दयाशंकर श्रोत्रिय



मनस्वी कार्यार्थी गणयति न दुःख न च सुख के सिद्धान्त की सत्यता को श्री दयाशकरजी अक्षरश सत्य कर दिखाया। अपनी कर्मरायता, साहस एवम् लगन से जो सेवायें समाज की मुख्य-तया नारी जाति की आपने की, उन्ही से प्रेरित होकर आपका नागरिक अभिनन्दन किया जा रहा है। इस सन्दर्भ मे यदि यह कह दू कि इस शुभ कार्य को वर्षों पूर्व कर लेना चाहिये था तो अतिश्योक्ती न होगी।

मैं श्रोत्रिय दम्पति को गत ३५ वर्षों से जानता हू। मेवाड राज्य के समय उदयपुर मे आयुर्वेद विद्यालय स्थापित करने के प्रयास मे कालेज के प्रिंसिपल की हैसियत से भवन के लिये इधर-उधर भटकते रहने के पश्चात् वर्तमान महिला-मडल का भवन देखने का अवसर मिला। भवन की जीर्णावस्था देखकर मैंने समझा कि इसे काम मे लाने योग्य बनाने के लिये हजारो रुपये चाहिये जिसकी व्यवस्था करना मेरे बस की बात नही थी। परन्तु उसी भवन को इस तपस्वी ने अपने अधिकार में कर लिया, झाड-पोंछ कर ठीक किया और भी क्या क्या परिवर्तन किया भवन को देखने से स्पष्ट हो जाता है। यह काम किसी साधारण व्यक्ति के बस का नही था वरन् असाधारण पुरुषार्थ वाले समर्थ व्यक्ति ही कर सकते हैं। ऐसे व्यक्ति विरले ही मिलते हैं जो प० मदनमोहन मालवीय के पदचिन्हो पर चल-कर सस्थाओ के निर्माण मे स्वयम् को आदर्श साधक के रूप मे प्रस्तुत करदें। श्री श्रोत्रियजी को मैं उन व्यक्तियो मे मानता हू जो सस्था के निर्माण के लिये सहायतार्थ प्रत्येक व्यक्ति के द्वार खटखटाने मे अपना गौरव समझते हैं।

जिस प्रकार बट का एक छोटा सा बीज अपने भीतर विशाल वट वृक्ष को सजोये रहता है और समय आने पर उसे प्रकाश में लाकर जीवमात्र को सुख देने के लिये अर्पण कर देता है ठीक उसी प्रकार श्री श्रोत्रियजी ने इस विशाल महिला-मडल को प्रकाश मे लाकर जनता जनार्दन की सेवा कर रहे है महिला मडल न केवल राजस्थान वरन् सारे देश मे अपनी दुन्दुभी बजा रहा है। यह बात भुलाई नही जा सकती कि उदयपुर (बल्कि पूरे मेवाड राज्य) मे परदा प्रथा तथा अन्ध कुत्सित अन्धविश्वास मेवाड राज्य के सगीन और दूसरी ओर से धर्म के नाम पर जनता को सन्मार्ग से हटाने वाले पाखडियो के षडयन्त्र। इन दो पाटो की तनिक भी चिन्ता न करते हुए श्री दयाशकरजी मैदान में कूद पडे, नारी जाति के उत्थान के लिये, समाज का नवनिर्माण करने के लिये इन्होने अपना कार्यक्षेत्र उदयपुर की जनता तक ही सीमित न रखा परन्तु दूसरे जिलो मे तथा अनेक ग्रामो मे चल वाचनालय तथा चल पुस्तकालय की व्यवस्था कर वहा की



जनता की सेवा की। भारत वर्ष के अन्य प्रदेशो की यात्रा की तरह शेखावाटी के अनेक बार की यात्राओं का सस्मरण मुझे है कि श्री दयाशकरजी सस्था को सुदृढ बनाने तथा उसे आर्थिक सकट से बचाने के लिये कितने प्रयत्नशील रहे है। आपके दृढ प्रयत्न के फलस्वरूप ही अनेको सकटो से घिरे रहने पर भी यह सस्था भारत की प्रमुख सस्थाओ मे से एक हैं।

उठते-बैठते यहा तक की बीमारी की दशा मे भी आपको महिला-मडल की चिन्ता बनी रहती है। अभी हाल ही मे आपका गालब्लेड का आपरेशन हुआ, खून चढाया गया, डाक्टरो ने बोलने को मना कर दिया परन्तु आपको चैन नही मिला बिना अपने मडल के खिलाडियो से बात किये, तथा उन्हे सात्वना दिये। इसी तत्परता का परिणाम है कि महिला-मडल की छात्राओ ने खेल-कूद मे समस्त भारत में अपने नाम का डका बजाया, नये कीर्तिमान स्थापित करके। फ्रास के विरुद्ध हुये वालीबाल मैच मे इस मडल की दो छात्राओ ने खिलाड़ी के रूप मे भारत का प्रतिनिधित्व किया।

मन्त्रियो का, श्रेष्ठियो का तो आये दिन अभिनन्दन होता ही रहता है परन्तु एक समाजसेवी का अभिनन्दन करने का दृढ सकल्प करने वाले श्रद्धा के पात्र हैं मैं उन सभी के प्रति आभार प्रदर्शन करता हू। जिन्होने महात्मा गाधी के इस सच्चे अनुयायी, निस्वार्थी समाज सेवी तथा समाज व्रती का अभिनन्दन करने की योजना बनाई। श्री श्रोत्रियजी की कार्य दक्षता के सम्बन्ध मे मैं अधिक न लिखकर इतना ही लिखना पर्याप्त समझता हूँ। कि श्री दयाशकरजी श्रोत्रिय न केवल समाज सुधारक वरन् देश सुधारक हैं जिन्हें पद अथवा धन की लालसा नही, यदि लालसा है तो केवल एक नारी जाति का उत्थान और इसके माध्यम में यशश्री भारतवर्ष का निर्माण।

मैं इस शुभ अवसर पर श्रोत्रियजी को अभिनन्दन पुष्पाजलि अर्पित करते हुये अपने आप को गौरव-शाली मानता हूँ।

—राजवैद्य प्रेमशंकर शर्मा



श्रीमान् अर्जुनसिंहजी भाटी



'अर्जुनजी बाबूजी" का जन्म आश्विन शुक्ला तृतीया, संवत् १९५१ मे एक मध्यवित्त परिवार में हुआ। पिता श्री शिवसिंहजी तात्कालीन सामाजिक मान्यताओं से अलग विचार रखते थे जिसका प्रभाव बालक अर्जुन पर पड़ा तो सही पर १२ वर्ष की छोटी आयु मे ही पितृवियोग होने के कारण निस्पृहता और मूलभूत सामाजिक समानता के बीज अंकुरित होने मे जो बहुमूल्य समय लग गया, उसका आज भी इन्हे खेद है।

पितृशोक की पीडा लिये हुए शिक्षा के लिये बम्बई चले गये और प्रसिद्ध मारवाडी विद्यालय मे अध्ययन करते हुए रियासती जीवन की संकीर्णता और असमानता से उन्मुक्त विशाल सर्वजन हिताय और सर्वजन सुलभ समाज के दर्शन कर भावी भारत का स्वप्न अस्पष्ट सा कल्पना मे उभरा जिसे स्पष्ट और साकार करने मे शेष जीवन का उत्सर्ग भी श्रेयस्कर लगने लगा।

भारत की राजनैतिक और सांस्कृतिक क्रांति की दिशाओं मे हो रहे परिवर्तनो के केन्द्र महानगरी बम्बई मे लोकमान्य तिलक के निर्देशानुसार "विदेश छाप वाले स्कूलो के बहिष्कार स्वरूप" पुन. उदयपुर लौटे।

अशिक्षा को ही आर्थिक जडता और सामाजिक चेतना के अभाव का मूल मान कर अब शिक्षा को ही इन्होंने जन-जागृति का साधन बनाना ठान कर १ जनवरी १९२२ ई० के दिन बेदला ग्राम में एक शिक्षण संस्था व रात्रिशाला स्थापित की और निरंतर ११ वर्षों तक एकाग्रचित हो इसकी सेवा करते रहे।

महामना मालवीयजी द्वारा प्रचारित "सेवा समिति बॉय स्काउट' अभियान को युवकों के राष्ट्रीय भावनापूर्ण चारित्रिक विकास का सम्बल मान कर सन् १९२६ ई० में सेवा समिति की स्थापना में योग दिया और ३३ वर्ष तक व्यवस्थापक के पद पर कार्य करते रहे।

तत्कालीन अंग्रेज प्रभु शक्ति के रूप "बेडॅन पॉवेल" स्काउटिंग की ही रूप रेखा पर "देश, नरेश (अंग्रेज सत्ता और यूनियन जेक) और महेश" के स्थान पर "देश और महेश" के प्रति निष्ठा का व्रत उस समय मानो सत्ता के विरोध का एक स्वरूप और स्वयं को अधिकारियो का रोष भाजन बनाने का साधन था।



सत्ता द्वारा प्रबल विरोध और अधिकारियो द्वारा तिरस्कार के झंझावात मे भी सेवा समिति निरतर प्रगति करती रही और सेवा को व्यापक रूप देने की दिशा में सेवा समिति के साथियो द्वारा विद्याभवन, उदयपुर की स्थापना में श्री अर्जुनसिंह ने महत्वपूर्ण योग दिया।

विख्यात शिक्षाविद, समाज सेवी, प्रमुख बालचर और राजनीति-निष्णात तथा कुशल प्रशासक श्रीमान् डा० मोहनसिंहजी महता श्री अर्जुनसिंह की कार्यकुशलता, लगन और निष्ठा से अत्यन्त प्रभावित रहे और इन्ही के उत्साह वर्धन से, "योग. कर्मसु कौशलम्" (कर्मों में कुशलता ही योग है।) का मूलमन्त्र लेकर सन् १९३३ ई० मे बालाश्रम स्कूल की स्थापना की जो आज भी चल रहा है। आज के बहुजन प्रिय किंडर गार्टन और माटेस्सरी पद्धतियो तथा सांस्कृतिक कार्यों को तब शिक्षा का माध्यम बनाना कौतुहल जनित सदेह और ईर्ष्या का विषय रहा था।

भगिनी संस्थायें बालाश्रम और स्काउट आश्रम उस युग के मेवाड़ की शैक्षणिक और सामाजिक कार्य की आड मे राजनैतिक जागृति का अग्रणी तथा रगमच रही हैं।

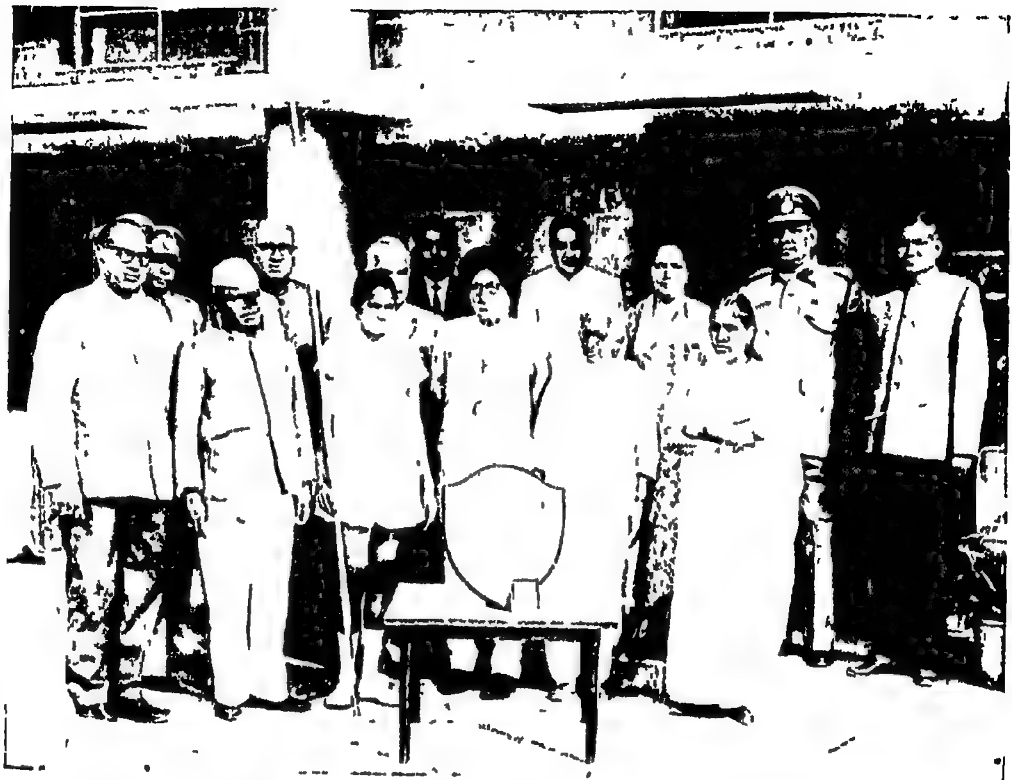
मेवाड़ के लगभग सभी निष्ठावान् जागरूक, कर्मठ, सामाजिक कार्यकर्त्ता, राजनीतिज्ञ और प्रशासक जो आज राजस्थान के चोटी के सरकारी और गैर सरकारी पदो पर आसीन है और पद निवृत्त हो गये हैं किसी न किसी रूप मे इन दोनो सस्थाओ से भी सम्बन्धित रहे हैं।

प्रसिद्ध समाज सेवी श्रीमान् दयाशकरजी श्रोत्रिय के उत्साह, लगन, दृढ–चरित्र और निष्ठा से उस समय का मेवाडी जनमानस अत्यत ही प्रभावित था और सेवा समिति की स्थापना के बाद श्री अर्जुनसिंह से उनका निकट सपर्क तो त्रिवेणी मे गगा–यमुना का मेल था, जो समय पाकर दृढतर होता गया।

आज ३० वर्षों से श्री अर्जुनसिंह महिला–मण्डल परिवार के गिने-चुने सदस्यो मे से एक हैं जिन्होंने महिला-मण्डल रूपी वट वृक्ष को सीचा और पल्लवित देखकर आह्लाद का अनुभव किया है।

श्री अर्जुनसिंह की आयु ६९ वर्ष पार कर रही है और गठिया रोग से ग्रसित होते हुए भी समय के साथ द्रुत-गति से बढ़ने वाले महिला-मण्डल रूपी वट वृक्ष का अवलोकन करते नही थकते हैं और भगवान का धन्यवाद करते नही थकते है कि, "मै तो अपने दृढप्रतिज्ञ और तपस्वी साथी श्री दयाशकरजी के दर्शन करने आया हूं।"

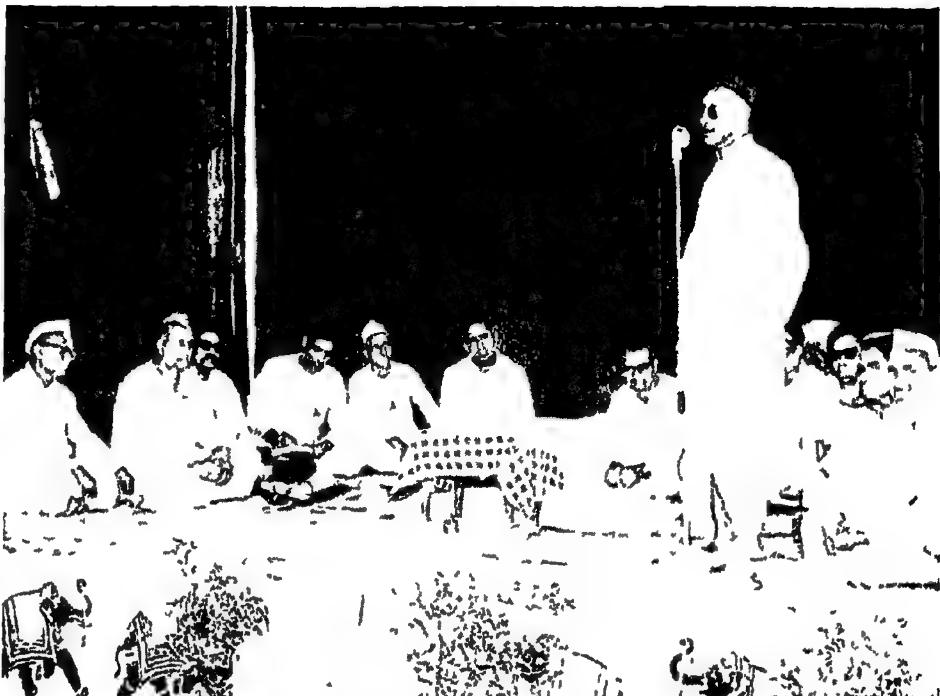
ईश्वर श्री अर्जुनसिंह को सुस्वास्थ्य तथा चिरायु प्रदान करे।



राजस्थान के राज्यपाल सरदार हुकुमसिंह ने कुमारी सुन्दर को भारत की सर्वश्रेष्ठ गिलाउी छात्रा का पुरस्कार प्रदान किया।



केन्द्रीय समाज कल्याण बोर्ड की अध्यक्षा श्रीमती मासूमा बेगम तथा राजस्थान समाज कल्याण बोर्ड की अध्यक्षा रानी उर्मिलादेवी मसूदा के साथ महिला मंडल की मंत्री श्रीमती मोहनदेवी शर्मा.



महिला–मंडल की एक संगोष्ठी को संबोधित करते हुए ज्योतिषाचार्य 'पद्मश्री' पं. सूर्यनारायण व्यास, उज्जैन



महिला–मण्डल के अतिथि राज्य के शिक्षामंत्री श्री शिवचरण माथुर के साथ
प दयाशंकर श्रोत्रिय



वर्षों पूर्व की कार्यकर्ता-परिषद्, महिला-मण्डल, उदयपुर



केन्द्रीय समाज कल्याण बोर्ड की अध्यक्षा श्रीमती दुर्गाबाई देशमुख, जो महिला-मण्डल की प्रशंसिका बन गईं



महिला–मडल परिवार मे अपनी भजन–मडली के साथ भावपूर्ण सस्वर आराधना मे
परमसंत श्री तुकडोजी महाराज



ग्रामीण बच्चों को पौष्टिक आहार : महिला मण्डल के दुग्ध-वितरण-केन्द्र पर पंक्तिबद्ध बालक



कार्यकर्ताओं के प्रेरणा-स्रोत श्री कृष्णदास जाजू



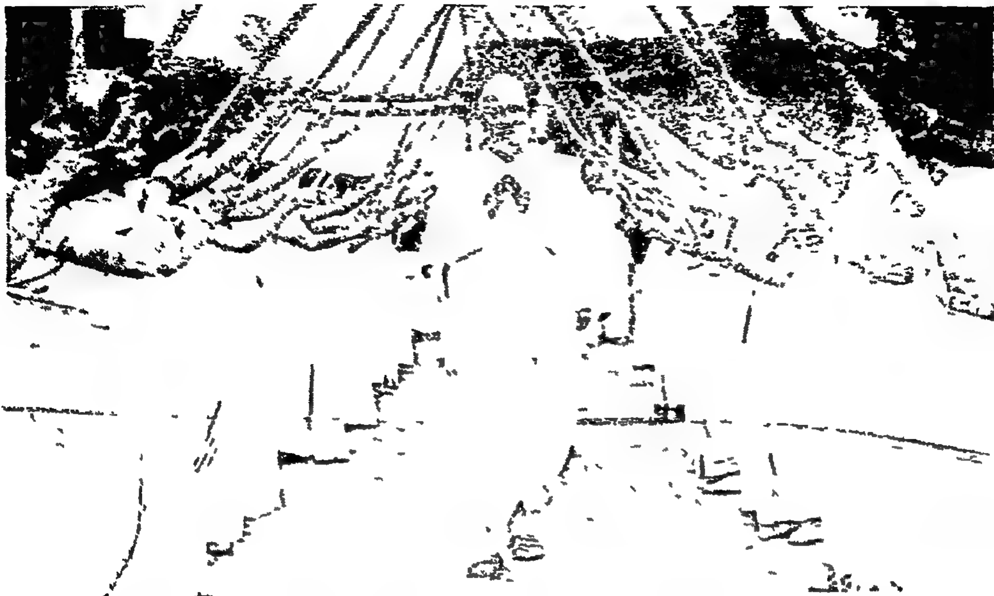
श्री श्रोत्रिय से पुष्पहार स्वीकार करते हुए, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अध्यक्ष डॉ डी एस कोठारी



महिला-मंडल की अध्यक्षा श्रीमती रामेश्वरी नेहरू



बाल-क्रीडा के दर्शक महापंडित राहुल सांकृत्यायन



श्री गोकुलभाई भट्ट का स्वागत करते हुए महिला मंडलकी स्वयं सेविकाएं



महिला-मंडल के प्रारम्भिक अभियान की सहयोगी नारियां, जिनका प्रयास आज इस रूपमें फलीभूत हुआ



महिला-मंडल की ग्राम-विकास-प्रवृत्तियोंके साक्षी, तत्कालीन मुख्यमंत्री
श्री जयनारायण व्यास



माता कस्तूरबा गांधी : जो महिला मंडल की प्रवृत्तियों में जीवित हैं।



श्रीमती रतन शास्त्री वार्षिकोत्सव की अध्यक्षा



श्रीमती जानकीदेवी बजाज के साथ महिला-मंडल को गति देने वाली बहिनें : एक पुरानी स्मृति



सरक्षक 'पद्मश्री' डॉ मोहनसिंह मेहता श्रीगणेश की प्रेरणा



श्रीमती इन्दिरा गांधी का महिला-मण्डलमें स्वागत करते हुए मण्डल की अध्यक्षा श्रीमती इन्दुबाला सुखाड़िया

महिला-मण्डल

सतत सेवा के ३५ वर्ष



महिला मण्डल : नारी-जागरण और जन-सेवा

नारी सामाजिक जीवन का महत्त्वपूर्ण आधार है। वह परिवार रूपी शरीर की रीढ़ है। व्यक्ति और समाज के सर्वतोमुखी चैतन्य और विकास के लिये अनिवार्य है कि राष्ट्र के महिला-समाज को भी पुरुष-वर्ग के ही समानान्तर प्रगति-पथ पर आगे बढ़ाया जाय।

अत तत्कालीन पराधीन देश भारत के महिला-समाज के जागरण का संकल्प लेकर, और मेवाड़ को अपनी प्रारंभिक कर्मभूमि बनाकर श्री दयाशंकर श्रोत्रिय, श्रीमती कमला श्रोत्रिय तथा अन्य प्रगतिशील समाज-सेवी स्त्री-पुरुषो के एक छोटे से परिवार ने गत १० नवम्बर को 'महिला-मण्डल' की स्थापना की।

तत्कालीन समाज—

भारतीय संस्कृति के इस परावश-काल का एक पीड़ाजनक तथ्य यह भी रहा कि परम्परावादी धर्म गुरुओ और रूढ़िवादी समाज-सुधारको के प्रभाव स्वरूप भारतीय नारी कभी सामाजिक मंच पर प्रतिष्ठित नही हो सकी। या तो वह भोग्या बनी रही, या फिर परिवार के परकोटों में घिरी रहकर सम्पूर्ण युग-प्रवाह की वह मात्र दर्शक ही बनी रही।

स्वतन्त्रता-प्राप्ति की चेतना और नव जागरण की अगड़ाई ने इस राष्ट्र की रूढियों की जजीरों को झकझोड़ा अवश्य और स्वतन्त्रता-आन्दोलन मे नारियो की भी भूमिका महत्त्वपूर्ण रही, लेकिन सामन्ती शासन की दोहरी-गुलामी मे त्रस्त देशी रियासतो का नारी-समाज उस दौड मे भी अपेक्षाकृत पीछे ही रहा। मेवाड चूंकि दिल्ली सल्तनत के साथ एक लम्बे युद्ध में खड़ा रहा, इसलिये मेवाड़ी जीवन मे दरिद्रता और महिलाओ के पिछड़ेपन की असलियत और भी हृदय-विदारक कही जा सकती है।

'महिला-मण्डल' के स्थापना-काल में मेवाड़ अपेक्षाकृत अत्यधिक पिछड़ा हुआ प्रदेश था। उदयपुर यो राज्य को राजधानी थी लेकिन इस नगर को तब एक बडे कस्बे से अधिक शहर का महत्त्व प्राप्त नहीं था। मेवाड-हकूमत मे चपरासी की मासिक वृत्ति ५) मासिक थी। पाच रुपये से सात रुपये तक मासिक पर सिपाही लिये जाते थे, जिन्हें केवल चार आना वार्षिक वेतन-वृद्धि स्वीकृत की जाती थी। आर्थिक स्थिति तो इतनी जर्जर थी कि सिपाहियों को 'फटी पगरखी-टूटी म्यान' जैसी उक्तियो से चिढाया जाता था।

महिलाओ का तो सडको पर निकलना तक घोर आपत्तिजनक समझा जाता था। खुले मुंह कोई स्त्री दिखाई नही पड़ती थी। पचायती नोहरे में १०–१५ जैन औरतें एक साथ एकत्रित होकर जाती थीं



तो जैन महिलाओ के उस समूह के सिरों पर एक लम्बा चौडा कपडा डाल दिया जाता था, जिसे नौकरानियां सभालकर चलती थी। महिलाओ के लिये जूते पहनना आपत्तिजनक था। सूरजपोल मे कोई स्त्री जूते पहन कर नही जा सकती थी। भारी परदो से दबी हुई औरतें जब सड़को पर चलती थी तो कुतो पर उनके पैर पड जाते थे।

रात्रि को तोप चलते ही शहर की चहारदीवारी के सभी दरवाजे प्रात काल तक के लिये बन्द हो जाते थे और सारा शहर एक टापू की तरह शहरकोट से घिर जाता था।

अतर्जातीय विवाह और हरिजनो द्वारा जैसे समाज-सुधारो की चर्चाओ से भी नागरिक चौंकते थे। चिकित्सालय में १-२ ईसाई नर्सें नई नई आई थी लेकिन लेडी डाक्टर कोई नहीं थी। उत्तर प्रदेश और महाराष्ट्र के तीन चार परिवारो की महिलाएं अपेक्षाकृत अधिक खुला घूमती थी जिन्हे मेवाड की महिलाए आश्चर्य के साथ देखा करती थी। तागो तक पर पर्दे लगाने की प्रथा थी।

लडकियो को दस-ग्यारह वर्ष की आयु तक पढाया जाता था। फिर उनकी शादियाँ कर दी जाती थी। बहुत कम परिवार लडकियो को पढाने में विश्वास करते थे। तत्कालीन राय सा० केसरीसिंहजी पचौली (बैरिस्टर मथुरानाथजी पचौली के पिता) के परिवार की लडकिया जिस तागे मे पढने आती थीं उस पर मोटा और भारी परदा पडा रहता था। लडकियो को सस्कृत की शिक्षा दिलवाना अधिक उपयोगी समझा जाता था और अध्यापन के लिये बूढे पण्डितो की तलाश रहती थी।

राजनैतिक दृष्टी से भी स्थिति काफी निराशाजनक थी राजा या हकूमत की खिलाफत पाप गिना जाता था। लोग बिजोलिया-आन्दोलन जैसे स्वतन्त्रता-सघर्ष से चौंके हुए जरूर थे लेकिन समाचार पत्र तक पढने मे डरते थे। कुछ ही लोग अखबार मगवाते थे। मेवाड सरकार का पत्र जो (गजट भी था और समाचार पत्र भी) 'सज्जन कीर्ति सुधाकर' काफी प्रचलित था लेकिन अन्य पत्रो का प्रवेश नगण्य सा था। कुछ उत्साही लोग कानपुर का 'प्रताप' मंगवाते थे। जिसके सपादक श्री गणेश शकर विद्यार्थी थे। बाद में 'प्रताप' का भी मेवाड-प्रवेश इसलिये रोक दिया गया कि उसमे बिजोलिया सत्याग्रह के समाचार काफी महत्त्व प्राप्त करते थे। अग्रेज लोगो की पसन्द के अग्रेजी समाचार-पत्र कुछ बड़े अधिकारियो के पास आते थे। 'माधुरी', 'सरस्वती', 'चाद' 'विशाल भारत' जैसे मासिक पत्र प० उमाशकर जी के यहा आते थे जिन्हें कुछ उत्साही नौजवान माग मागकर पढते थे।

संस्थाए—

सस्थाओ के नाम पर पहला नाम 'प्रताप-सभा' का लिया जा सकता है जो मूलत. शैक्षणिक सस्था नही थी। महाराणा प्रताप की स्मृति के साथ जुडी हुई इस सस्था पर मेवाड-शासन की टेढी नजर भी नही थी, यद्यपि आगे जाकर कार्यकर्त्ताओ ने इस मन्च का उपयोग भी जन जागरण की प्रवृत्तियो के सचालन मे किया।



श्री सोहनलाल पंचौली उन दिनों दिल्ली दरवाजे के भीतर काकरोली की वाड़ी में छोटी सी सस्कृत पाठशालाला चलाते थे, जिसे 'ब्रह्मचर्य-आश्रम' के नाम से पुकारा जाता था। यह पाठशाला 'मुष्ठि-फण्ड' से चलाई जाती थी। सस्था की ओर से करीब १००० घरो मे मटके रख दिये गये थे जिनमे गृहणिया एक मुट्ठी अनाज प्रतिदिन डालती थी, जिसे सस्था कार्यकर्त्ताओ द्वारा एकत्रित कर लिया जाता था। मटके उन दिनो एक आने के २४ मिलते थे। उत्तरप्रदेश, बगाल और बिहार के कुछ स्थानीय परिवार इस सस्था को सहयोग करते थे और इसकी सचालन समिति मे थे। आगे जाकर इस सस्था के लिये सारे मेवाड़ से भी चन्दा एकत्रित किया गया। इस पाठशाला मे सस्कृत की शिक्षा दी जाती थी। जब मेवाड के तत्कालीन महाराणा फतहसिहजी ने तुला-दान किया तो वह सोना भी सस्कृत शिक्षा के निमित इस पाठशाला को दान कर दिया गया। तब मेवाड मे जातिगत प्रतिस्पर्धा भी थी और शासन का प्रभावशाली वर्ग ब्राह्मण बालकों को मात्र सस्कृत शिक्षा तक ही सीमित रखने के पक्ष मे था ताकि वे लोग आगे जाकर शासन मे उच्च पदो के लिये प्रतियोगी न बन सकें। आज का सस्कृत-महाविद्यालय उसी सस्कृत पाठशाला का विकसित रूप है।

सस्थाओ के इस क्रम मे तीसरा स्थान 'सार्वजनिक कन्या विद्यालय' का है और चौथा स्थान विद्याभवन का।

विद्याभवन की सेवा करते समय ही श्री दयाशकर श्रोत्रिय के मन मे 'महिला-शिक्षण' के लिये पृथक सस्था खडी करने का सकल्प जागरित हुआ। वस्तुत 'महिला-मण्डल' की स्थापना मे भी विद्याभवन' के सस्थापक डॉ० मोहनसिंह मेहता का प्रमुख हाथ रहा। डॉ० मेहता ही श्रोत्रियजी के सरक्षक बने रहे और उन्होंने ही श्रोत्रियजी को इलाहाबाद भेजकर सार्वजनिक सेवा का विधिवत प्रशिक्षण दिलवाया।

उदयपुर मे महिला-शिक्षण की शुरूआत की दृष्टि से एक और महत्वपूर्ण प्रवृत्ति का उल्लेख आवश्यक है जिसका श्रेय एक महाराष्ट्रियन बहिन को है। इस बहिन के पति तत्कालीन राजस्व अधिकारी मिस्टर ट्रेंच के पास कार्य करते थे।

इस महाराष्ट्रियन बहिन ने भडभूजा घाटी में लडकियो का एक नि.शुल्क स्कूल चलाया। उन्हे मेवाड के लोग 'लगोटा गुराणी जी' के नाम से पुकारते थे और उनका बडा सम्मान करते थे। उनकी मराठी पहनावे की धोती के ही कारण उन्हे 'लगोटा-गुराणी' कहा जाता था। इस शिक्षा-सेवी महिला को उनके पति ने भी इस कार्य के लिये काफी प्रोत्साहित किया। पतिदेव स्वय स्कूल मे पानी भरकर जाया करते थे। जब इस बहिन को प्रसव हुआ तो पति ने उन्हें केवल सात दिन का ही विश्राम लेने दिया। आठवें दिन उन्होंने पुन स्कूल सभाल लिया और लडकियो को शिक्षा देने लगी।

उपरोक्त प्रवृत्तियो की पृष्ठभूमि पर 'महिला-मण्डल' का जन्म हुआ और नारी-जागरण का एक महत्त्वपूर्ण अनुष्ठान प्रारभ हुआ।

श्री बजाज की उदयपुर-यात्रा—

सन् १९३५ के आसपास विख्यात जनसेवी सेठ जमनालाल बजाज उदयपुर आये और विद्याभवन का कार्य देखा। वे तत्कालीन मेवाड़ शासन के अधिकारियो से भी मिले। उसी समय वह श्री और श्रीमती



श्रोत्रिय से मिले। श्रीमती कमला श्रोत्रिय के अध्ययन-काल में श्री बजाज ने उनकी नियमित आर्थिक सहायता की थी और वे चाहते थे कि कमलाजी किसी महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम को हाथ मे लें। उस समय श्री सीताराम सेक्सरिया और श्री भागीरथ कानोडियां भी उनके साथ थे। तब श्री बजाज श्रोत्रिय-परिवार को अपने साथ नीमच ले गये। नीमच में श्री बजाज के एक धनपति मित्र थे श्री नथमल चोरडिया। उन्होंने कन्या-शिक्षण के लिये १॥ लाख रुपये के एक ट्रस्ट की स्थापना की थी और इस कार्य के लिये उन्हें किसी उपयुक्त कार्यकर्त्ता को तलाश थी। श्री बजाज श्रोत्रिय-परिवार को इसी कार्य पर लगाना चाहते थे। श्री बजाज भी उसी ट्रस्ट के एक ट्रस्टी थे जो १॥ लाख से विकसित होते होते ५ लाख तक जा पहुंचा था।

श्रोत्रियजी ने अपने कार्यक्रम की विशद रूपरेखा ट्रस्टियो के समक्ष रक्खी लेकिन एक कार्य पर उनमें सहमति नही हो सकी। श्री श्रोत्रिय चाहते थे कि कन्या-शाला मे हरिजन-कन्याओ को भी प्रवेश दिया जाय। श्री बजाज इसके समर्थक थे लेकिन अन्य ट्रस्टियो को यह नापसद था। फलस्वरूप श्रोत्रियजी ने वह कार्य अस्वीकार कर दिया और पुन उदयपुर लौट आये। बाद मे श्री बजाज ने भी उसका ट्रस्टी रहना अस्वीकार कर दिया।

चर्खा-द्वादशी—

नीमच से लौटते ही श्रोत्रियजी ने गांधी -दर्शन के प्रचार के उद्देश्य से 'चर्खा-द्वादसी का १२ दिवसीय आयोजन किया और एक परदा-विरोधी भव्य जुलूस निकाला। सार्वजनिक सभा की अध्यक्षता श्री भेरूलाल गेलड़ा ने की। इसी सभा मे महिलाओ की जागृति का सकल्प लेकर नारी-शिक्षण की सस्था चलाने की घोषणा श्री दयाशकर श्रोत्रिय ने की और भाव—रूप मे यही 'महिला—मण्डल' की स्थापना हुई।

श्री श्रोत्रिय उन दिनो विद्याभवन की सेवाओ मे थे और श्रीमती श्रोत्रिय 'प्रयाग महिला विद्यापीठ' से शिक्षण समाप्त करके उदयपुर के 'राजस्थान—महिला विद्यालय' मे अध्यापन—कार्य करने लगी थी। अत प्रारम्भिक स्तर पर महिला—विद्यालय की कुछ अध्यापिका बहिनो को रात्रि-शालाओ की सेवा के लिये तैयार किया गया और महिला मण्डल के अतर्गत महिला-शिक्षण की प्रारम्भिक प्रवृत्ति चल निकली। अध्ययन और अध्यापन, दोनो कार्य नि शुल्क किये जाते थे।

११वार्ड ११ संस्थाएं—

धीरे धीरे अध्यापिकाओ मे भी इस सेवा—कार्य के प्रति रुचि बढने लगी और एक दिन वह आया जब उदयपुर के ११ वार्डों मे ११ रात्रि-शालाए चल निकली। रात्रि-शालाओ का समय प्रारभ मे एक घण्टा प्रतिदिन रहा जो बढते बढते २॥ घण्टे प्रतिदिन तक पहुंच गया। यह वह समय था जब महिलाए बड़े प्रयत्नो के उपरान्त घू घट निकाल कर शालाओ मे आती थी और महिलाए महिलाओ का भी पर्दा करती थी। इन शालाओ के लिये मकान और रोशनी की व्यवस्था मकान-मालिक करते थे और



अध्यापिकाएं निःशुल्क पढाती थी। इस प्रवृत्ति का प्रारम में विरोध भी काफी हुआ। आम प्रचार यह किया जाता था कि 'यह लोग औरतो को बिगाडेंगे', इसलिये बडा साहस करने वाली महिलाए ही इन शालाओ मे आ पाती थीं।

श्री कानोडिया का योगदान–

महिला-मण्डल के जन्म-काल मे ही कन्या-शालाओं की यह सफलता आश्चर्यजनक थी। तब श्री श्रोत्रियजी ने इस प्रवृत्ति की प्रगति की हस्तलिखित रिपोर्ट तैयार करके श्री भागीरथ कानोड़िया को भेजी। श्री कानोडिया इससे प्रभावित हुए और उन्होने एक हजार रुपया सस्था को सहायतार्थ भेजा।

प्रारम मे यह कार्य श्रोत्रिय-दम्पत्ति का एक शौक था, लेकिन श्री कानोड़िया से प्रोत्साहन-राशि प्राप्त होते ही योजना का महत्त्व और उसके प्रति कार्यकर्ताओ का दायित्व भी और अधिक गहराई के साथ मे समझ मे आया।

महिला-मण्डल की स्थापना के प्रथम वर्ष मे मण्डल की अध्यक्षा बनी श्रीमती विजयालक्ष्मी नागर दूसरे वर्ष के निर्वाचन मे डा० मोहनसिंह मेहता को इसका अध्यक्ष बनाया गया। यों डा० मेहता स्थापना से लेकर आज तक महिला-मण्डल के सरक्षक के रूप मे ही सम्मानित रहे और उसी स्तर का उनका योगदान भी रहा। श्रोत्रिय-दम्पत्ति के भी वे मार्गदर्शक ही बने रहे।

श्री भागीरथ कानोडिया की १०००) रु० की प्रथम सहायता से ही महिला मण्डल को व्यवस्थित रूप दिया गया। तब महिला-मण्डल की ११ रात्रि–शालाए चलने लगी थीं। अत इस राशि से ११ श्याम-पट (ब्लेक बोर्ड), ११ लालटेन, पुस्तकें, ११ सन्दूकें और ११ ताले खरीदे गये और महिला-मण्डल के निजी सामानो की पहली सूची बनी। पैसा मिला तो अध्यापिकाओ को भी घर पर नौकर रखने के लिये सहायता स्वरूप पाच रुपया मासिक दिया गया। अध्यापिकाओं को घर की व्यवस्था मे नौकर से राहत मिली तो वे अधिक उत्साह से पढाने लगी। फिर पाच रुपये मासिक की यह सहायता बढाकर ७) रु० फिर १०) रु० फिर १५) रु० और सन् १९४२ तक ३०) रु० मासिक तक करदी गई। जबकि उस समय राजकीय शिक्षकों को केवल १५) रुपया मासिक वेतन मिला करता था।

प्रथमवर्ष उपलब्धिया–

महिला–मण्डल ने अपनी स्थापना-तिथि से लेकर सस्था के प्रथम वर्ष की प्रगति की जो सक्षिप्त रिपोर्ट उस समय प्रकाशित की, उसकी उपलब्धिया भी कम सराहनीय नही हैं।

१. स्त्री-शिक्षा, विधवा–सहायता और रूढि–निवारण–कार्य को महिला-मण्डल का मूलभूत कार्यक्रम घोषित किया गया।

२. प्रौढ महिलाओ की साधारण शिक्षा के लिये मण्डल की शिक्षा-समिति ने १० पाठशालाए चालू कीं।



प्रथम वर्ष मे १५० से २०० महिलाओं ने इन शालाओं का लाभ लिया ।

३. २४ फरवरी १९४१ को 'महिला पुस्तकालय और वाचनालय' का उद्घाटन हुआ । प्रथम वर्ष में ही ११८१ चुनी हुई पुस्तकें पुस्तकालय मे प्राप्त की गई और नवम्बर १९४१ तक २१११ स्त्री-पुरुषों ने घरो पर लेजाकर इन पुस्तकों का लाभ उठाया ।

४. प्रथम वर्ष में दैनिक साप्ताहिक और मासिक कुल ६० पत्र-पत्रिकाएं वाचनालय मे आने लगे जिनमें अधिकांश पत्र विभिन्न व्यक्तियो के वैयक्तिक योगदान स्वरूप प्राप्त होते थे । वाचनालय और पुस्तकालय से १७२९१ स्त्री-पुरुषो ने लाभ उठाया ।

५. साक्षरता-आन्दोलन की एक पचवर्षीय योजना चालू की गई । सरकारी और गैर सरकारी सस्थाओं की २१० अध्यापिकाओ और छात्राओ ने ग्रीष्मावकाश मे कम से कम ५-५ बहिनो को साक्षर करने की प्रतिज्ञा की ।

६. महिलाओ मे ५०० रुपये की वर्णमाला की पुस्तकें नि.शुल्क वितरित की गई ।

७. विधवा और निराश्रित बहिनो की सहायतार्थ नये उद्योग धन्धे प्रारम्भ करवाने की योजना लेकर प्रथम वर्ष में ही डेढ गाठ अर्थात ६०० पौण्ड सूत कतवाया गया जिसके लिये उन्हे दुगुनी से लेकर तिगुनी तक मजदूरी दी गई । बहिनो के चर्खे भी मण्डल की ओर से दिये गये । कुछ बहिनो को सभ्रान्त गृहस्थो के यहां काम-काज पर लगाया गया ।

८. रूढि निवारण-कार्यक्रम के अतर्गत चार विज्ञप्तियां प्रकाशित करवाकर प्रचारित की गई ।

९. सार्वजनिक स्वास्थ्य विभाग के सहयोग से २२ मोहल्लो मे मेजिक-लालटेन से समाज-सुधार और स्वास्थ्य सम्बन्धी कार्यक्रम आयोजित किये गये ।

१०. चार बड़े महिला-सम्मेलन, कई मोहल्ला दिवस, हेलमेल दिवस, और 'सत्य हरिश्चन्द्र नाटक' के आयोजन किये गये ।

११. १३३ महिलाओ से सामाजिक रूढियां त्याग ने की प्रतिज्ञा करवाई गई ।

१२. मलेरिया की रोकथाम के लिये कुनैन की १२००, गोलिया वितरित की गई ।

१३. पहले वर्ष मे ही सहायता स्वरूप १५४७॥-॥ प्राप्त हुए । उनमे से १२००॥)॥। खर्च हुए और ३४७।)॥। की राशि बचाकर अगले वर्ष की प्रवृत्तिया सचालित की जाने लगी ।

बिड़लाजी का योगदान—

महिला-मण्डल की स्थापना और कार्यकाल के प्रथम वर्ष की प्रवृत्तियो तथा उपलब्धियो का यह विवरण इस सस्था के लक्ष्य और कार्यक्रम को समझने के महत्त्वपूर्ण आधार प्रस्तुत करता है।

महिला-मण्डल का यह सौभाग्य भी रहा कि अपने अभियान के प्रारंभिक वर्षों मे ही इसे अनेक



विख्यात जन नेताओं, शिक्षा शास्त्रियों और शिक्षा-सेवियो का मार्गदर्शन तथा सहयोग प्राप्त हुआ। श्रीमती रामेश्वरी नेहरू ने तो कार्यनिरीक्षण के उपरान्त इसे राष्ट्र का उपयोगी और आवश्यक कार्य बताया और सेठ घनश्यामदास बिडला से २५० रु० मासिक की सहायता एक वर्ष के लिये दिलवाई।

सहयोगी और प्रशसक—

उस समय महिला-मण्डल का निरीक्षण करने वालो और प्रशमको मे अ० भा० महिला सम्मेलन की अध्यक्षा श्रीमती विजयालक्ष्मी पण्डित, आचार्य कृपलानी और श्रीमती सुचेता कृपलानी, हरिजन सेवक-सघ की उपाध्यक्षा श्रीमती रामेश्वरी नेहरू, हरिजन सेवक सघ के प्रधान मत्री श्री अ वि. ठक्कर बापा, मुनि श्री जिन विजयजी, श्रीमान् सेठ रामगोपालजी मोहता, मेवाड के दीवान राय बहादुर, श्री टी विजय-राघवाचार्य, राजाधिराज सा० बनेडा, अ. भा मारवाडी सम्मेलन के प्रधान मत्री श्री रामेश्वरलाल नोपाणी, शिक्षाविद् श्री शकरसहाय सक्सेना, जैसलमेर के शिक्षाविभाग के निदेशक श्री दामोदरलालजी शर्मा, प्रेम-नारायणजी माथुर, साहित्यकार श्री जैनेन्द्रकुमारजी आदि के नाम उल्लेखनीय है।

स्थापना-काल से प्रारभ के दो वर्षों में ही महिला मण्डल ने अनेक क्षेत्रो में तेजी से काम शुरू कर दिया। सन् १६४१ मे उसने मृत्यु भोज और पर्दा-प्रथा जैसी कुरीतियों पर पृथक सदेश-पत्र प्रसारित किये जिनमे इनके विनाशकारी प्रभावो की चर्चा की गई और नई चेतना के लिये महिलाओं का आह्वान् किया गया।

पुन विकास—

प्रारभिक कार्यों की सिद्धियो और निरतर बढते आरहे सहयोग से प्रभावित होकर 'महिला-मण्डल' ने अपनी प्रवृत्तियो का विस्तार भी शुरू किया। सन् १६४२ के आसपास तक उसके २३ केन्द्र चलने लगे और निम्न क्षेत्रो मे प्रवृत्तिया चलाकर सम्पूर्ण शहर को ही अपनी प्रवृत्तियो के क्षेत्र मे समेट लिया।

उपरोक्त २३ केन्द्र निम्न स्थानो पर चले—

१. मालदास स्ट्रीट, २. बाठेश्वर महादेव ३. सिलावट वाडी, ४. गड्या देवरा
५ महिला-जेल ६. तीजका चौक ७. नाव घाट ८. सोना सेहरी
६. चादपोल १० पोरवालो का नोहरा ११. जगदीश चौक १२. इलाजी का नीम
१३ ड्योढी वाले मेहताओ की गली १४. गौतम गली १५. ब्रह्मपुरी
१६ गणगौर घाट १७ गाछीवाडा १८ बावेलो की सेहरी १६. रावजी का हाटा
२०. सूर्यपोल २१ अम्बामाता २२. नाडा खाड़ा और २३ फतह मेमोरियल के पीछे।

अतिम तीन केन्द्र हरिजन महिलाओ और बालिकाओ के लिये थे। नावघाट पर ढोलनियो के लिये और महिला-जेल मे महिला कैदियो के लिये केन्द्र चलाये गये थे।



मिडिल-स्कूल—

सामान्यतया यह शिक्षण तृतीय कक्षा तक होता था। आगे जाकर यह परिस्थिति महसूस की गई कि तीसरी कक्षा से भी आगे पढ़ने वाली महिलाओं के लिये क्या व्यवस्था की जाय? फलस्वरूप पोरवालों के नोहरे मे चौथी कक्षा खोली गई जिसने क्रमश: एक मिडिल स्कूल का रूप ले लिया।

तभी ऐसी आवश्यकता महसूस की गई कि इन केन्द्रो में एक से अधिक पालिया (शिफ्ट) चलाई जाय। जैन महिलाओ के लिये रात्रि को पढाना धर्म-विरुद्ध। अत. उनके लिये दिन मे शिक्षण की व्यवस्था की गई। इस प्रकार कुछ केन्द्र रात के साथ-साथ दिन मे भी चलने लगे।

इन केन्द्रो की शिक्षिकाओ के प्रारंभिक वर्ग मे श्रीमती विजयालक्ष्मी नागर, शीतलदेवी अग्रवाल, हगामीदेवी गौड़, कृष्णा दवे, फूलकुवर अग्रवाल, कृष्णा व्यास, नारायणीदेवी पालीवाल, कमला राका, राधाबाई शर्मा, नारायणी देवी वैरागी और केसरदेवी वर्मा के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं।

प्रारम्भिक चरण मे ऐसी महिलाएं कम मिली जो शिक्षित भी हो और नारी-सेवा के लिये समय भी निकाल सकें। इसलिये कुछ उत्साही छात्रा-महिलाओ को युद्ध-स्तर पर शिक्षित किया गया और फिर उन्ही को इन केन्द्रो के अध्यापन का कार्य भी सौप दिया गया। इस प्रकार महिला-मण्डल के रात्रि-केन्द्रो में शिक्षा ग्रहण करके, महिला-मण्डल के ही केन्द्रो पर अध्यापन कार्य करने वाली अनेक महिलाए सामने आई। इन महिलाओ को तीन वर्ष मे सात वर्ष का पाठ्यक्रम पढाकर 'ग्राम सेविका' और 'शिक्षा-विशारद' के प्रमाण-पत्र दिये गये थे और महिला-मण्डल के कन्डेन्स कोर्स की शुरुआत यही से कर दी गई थी। ऐसी महिलाओ मे श्रीमती चद्रकला चद्रमुखी, रूपकुवर गोस्वामी, मोहनदेवी शर्मा, सज्जनदेवी जैन, सुमन भारतीय, सीतादेवी शर्मा, सोहनदेवी जैन, रामप्यारी गौड, कमला शर्मा, नानीदेवी, बसन्तीदेवी शर्मा, गणेशबाई गोस्वामी, भगवती-देवी तिवारी, कमला अग्रवाल, श्यामा अग्रवाल, सोहनदेवी वरडिया, मोहनदेवी गौड़, लक्ष्मीदेवी वर्मा, सुन्दर-देवी वर्मा, सावित्री तिवाडी, मोहनदेवी वैरागी, वनिताबाई राव सुधा मुरड़िया, पद्मा भण्डारी कमला-भण्डारी, वनिताबाई भट्टमेवाडा, गिरधरबाई भट्टमेवाड़ा, गीता तिवाड़ी, अन्नपूर्णा, देवकुवर पालीवाल, चपादेवी सुखवाल, प्रेमादेवी जैन, कृष्णा मेनारिया, कमला बापना और शाता अग्रवाल के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं।

श्रोत्रिय-दम्पति का नया क़दम—

अब महिला-मण्डल अपना काफी विस्तार पा चुका था और उसे व्यवस्थित रूप देना परमावश्यक बन गया था। श्री और श्रीमती श्रोत्रिय अपनी पृथक सेवाओ मे लगे रहकर भी इस सस्था का इतना स्वरूप-विकास कर चुके थे लेकिन अब कुशल व्यवस्था दिये बिना इन प्रवृत्तियो का सचालन कठिन बनता जा रहा था।



एक दिन श्रोत्रियजी डा० मोहनसिंह मेहता के पास गये और उनसे महिला-मण्डल का अध्यक्ष-पद स्वीकृत करने का प्रस्ताव रक्खा। डा० मेहता को इससे पूर्व भी महिला-मण्डल की प्रगति की नियमित जानकारी दी जाती रही थी और वे इस सकल्प के प्राण-प्रतिष्ठापको में से थे।

डा० मेहता ने इसी शर्त पर अध्यक्ष-पद मजूर किया कि श्री दयाशकर श्रोत्रिय तथा श्रीमती कमला श्रोत्रिय अब महिला-मण्डल को अपना पूरा समय दें। यो कमलाजी प्रारम्भ से ही महिला-मण्डल की अवैतनिक प्रधान मन्त्रिणी का कार्य कर रही थी।

इस प्रकार एक ओर डा० मोहनसिंह मेहता महिला-मण्डल के अध्यक्ष बने, दूसरी ओर श्री और श्रीमती श्रोत्रिय ने अन्य सब कुछ छोडकर अपना जीवन महिला-मण्डल को अर्पित कर दिया।

जागृत नारी राष्ट्र की जीवन-ज्योति–

डा० मोहनसिंह मेहता की अध्यक्षता का कार्य-काल 'महिला-मण्डल' को व्यवस्था देने की दृष्टि से सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण रहा। उन्होने महत्त्वपूर्ण प्रस्ताव पारित करवाकर मण्डल-कार्यालय को व्यवस्थित किया। रोकड और आय-व्यय पत्रक भरे जाने लगे। ऑडिटर, अर्थमत्री आदि पदो पर नियुक्तिया की गई। 'मिनिट-बुक' लिखी जाने लगी। कार्यकर्त्ताओ के सेवा-नियम बनाये गये जिसके फलस्वरूप उन्हें भविष्य की सुरक्षा प्रदान की गई। श्री मन्नालालजी अग्रवाल (इन्जनियर) के सूरजपोल भीतर वाले मकान मे महिला-मण्डल का प्रधान कार्यालय लगाया गया।

'जागृत-नारी राष्ट्र की जीवन-ज्योति है', यह ध्येय-वाक्य स्वय डा० मेहता की ही देन है और आज भी महिला-मण्डल का प्रकाश-स्तम्भ बनकर खडा है। यह वह समय था जब ३ रुपये की पूजी से शुरू की गई यह सस्था ३० हजार रुपये तक के वार्षिक बजट को पारित करने लगी थी। डा० मेहता ने महिला-मण्डल को यह कार्यक्रम भी दिया कि सम्पूर्ण मेवाड-क्षेत्र मे इसकी प्रवृत्तियो का विकास किया जाय।

पुस्तकालय की विधिवत् स्थापना–

डॉ० मेहता के कार्यकाल मे ही 'महिला-मण्डल-पुस्तकालय' की विधिवत् स्थापना की गई। पुस्तकालय के उद्घाटन-समारोह के निमित्त १००० निमन्त्रण-पत्र बाटे गये और ६२५ सज्जन पधारे। वे सभी लोग एक-एक ग्रन्थ पुस्तकालय के लिये लेकर आये और यही पुस्तकालय का प्रथम स्वरूप बना। इस अवसर पर पुस्तकालय-सप्ताह का भी आयोजन किया गया जिसमे घर घर से पुस्तक-दान मागा गया।

पुस्तकालय के साथ ही वाचनालय की प्रवृत्ति को भी शुरू कर दिया गया। तब उत्साही कार्यकर्त्ता २०–२२ स्थानो से समाचार-पत्र और पत्रिकाए मागकर लाते और दिन में वाचनालय चलाया जाता। वाचनलाय के सचालन मे श्री ोमराज गडौलिया का सराहनीय योगदान रहा। श्री गडौलिया पहले बन्दोवस्त विभाग की सरकारी सेवाओ मे थे। बाद मे वे पत्रो को गुप्त सवाद भेजने के आरोप मे नौकरी से निकाल

को अपना परिवार समझे रहे और संस्था ने भी अपनी हर नई प्रवृत्ति की शुरूआत या हर नये कार्य-क्रम का शुभारंभ श्री सुखाड़िया की ही साक्षी मे किया।

दम्पति सम्मेलन—

सुखाड़िया दम्पति की प्रेरणा से महिला-मण्डल एक और महत्वपूर्ण प्रवृत्ति की ओर अग्रसर हुआ, और वह था दम्पति सम्मेलन।

महिला-कल्याण मे संलग्न इस संस्था ने महसूस किया कि महिला-कार्यक्रमो को गति देने तथा अधिक स्वस्थ और अनुकूल वातावरण पैदा करने के लिये 'दम्पति-सम्मेलन' के आयोजन किये जायं। यह भी महसूस किया गया कि इस प्रकार पुरुष भी महिला-मण्डल के कार्यक्रम का परिचय प्राप्त कर सकेंगे और महिलाओ को इससे प्रोत्साहन मिलेगा। साथही महिला-मण्डल के संदेश का विस्तार भी होगा।

महिला-मण्डल के प्रथम 'दम्पत्ति सम्मेलन' के आयोजन मे भी श्री व श्रीमती सुखाड़िया का सक्रिय और महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। इस सम्मेलन मे करीब ७५ जोडे एकत्र हुए और प्रतिमाह ऐसे आयोजन करने का निश्चय किया गया। इन आयोजनो मे अनेक जोडे एकत्रित होते, सामयिक और राष्ट्रीय समस्याओ पर मिल बैठकर चर्चाएं होती, सामूहिक भोजन होता जिसका व्यय (दो रुपया प्रति व्यक्ति) भी सभी लोग उठाते। यह कार्यक्रम लगभग २॥-३ वर्ष चला।

कुछ त्यागें, कुछ सीखें—

विचारो की चेतना जागृत करने के लिये महिला-मण्डल का अभियान किसी न किसी रूप मे सदैव चलता रहा। वह शिक्षण कार्य के अतिरिक्त समाज की विभिन्न समस्याओ को भी हाथ में लेता और सामाजिक कुरितियो पर विभिन्न विज्ञप्तियां छपवाकर बन्टवाता। डॉ० शम्भूलाल शर्मा और श्री जनार्दन-राय नागर का भी इस अभियान मे लम्बे समय तक महत्त्वपूर्ण योगदान रहा।

'महिला-मण्डल' ने अपने सदस्यता अभियान मे भी ग्राह्य और त्याज्य कार्यों की एक तालिका प्रकाशित की और सदस्यता के साथ एक अनिवार्य शर्त रक्खी कि प्रत्येक सदस्य सलग्न त्याज्य कार्यों मे से कम से कम एक कार्य छोडे, और अपेक्षित दायित्वो मे से कम से कम एक दायित्व ग्रहण करें।

'महिला-मण्डल' के मूल कार्यक्रम की भावना को समझाने के लिये आवश्यक है कि यहा उनका उल्लेख किया जाय। सूचियां निम्न प्रकार है—

अ—(जो त्यागना है)

१. अनमेल विवाह (बाल एव वृद्ध विवाह) तथा बहु विवाह को मैं हानिकारक मानकर उसमे सम्मिलित नहीं होऊंगी।



२ कन्या-विक्रय और वर-विक्रय समाज के लिये घातक हैं अत मैं इनमें सहयोग नहीं दूंगी।
३. भारी दहेज न दूंगी, न लूंगी।
४ विवाह के अवसर पर अपव्यय नही होने दूंगी।
५ विधवाओ पर होने वाले अत्याचारो की मैं निन्दा करती हूँ। मैं जहा तक होगा, विधवाओं की मदद करूंगी।
६ बाल-विवाह और वैश्याओ के नृत्य मे भाग नहीं लूंगी।
७ पर्दा करने वाली बहू के विवाह में सम्मिलित नही होऊंगी।
८ खुद पर्दा नही करूंगी।
९ अश्लील गाने नही गाऊंगी।
१०. मृत्यु-भोज में शामिल नहीं रहूँगी।
११ बहुओं और सास के साथ सद्व्यवहार करूंगी।

ब-(जिन्हे अपनाना है)
१. शुद्ध स्वदेशी कपडे पहनूंगी।
२. घर और पडौस को साफ सुथरा रखूंगी।
३. बालबच्चो को साफ रखूंगी।
४. नारी के समान अधिकार और प्रतिष्ठा के लिये पूर्ण प्रयत्न करूंगी।
५. स्वय पढूंगी और कुटुम्ब के बालक-बालिकाओ को शिक्षित बनाऊंगी।
६. प्रतिदिन कुछ अपढ बहिनो को कुछ साहित्य पढकर सुनाऊंगी।
७ बालक-बालिकाओ की शिक्षा-दीक्षा मे किसी भी प्रकार का भेदभाव नहीं रखूंगी।
८ वीर व साहसी बनूंगी।
९. नियमित चर्खा चलाऊंगी।
१०. राष्ट्र-विरोधी कार्यों मे सहयोग नही दूंगी।
११. अन्य धर्मों की निन्दा नही करूंगी। उनके प्रति सहनशील रहूँगी।
१२ स्वास्थ्य के लिये उपयुक्त व्यायाम करूंगी।

विविध कार्यक्रम—

महिलाओ और बालिकाओ को मनोरजन के साथ-साथ उपयोगी पाठ सिखाने के लिये भी अनेक कार्यक्रम हाथ में लिये गये। महिलाओ के लिये तैराकी प्रतियोगिताओ के आयोजन किये गये और विजयी तैराक महिलाओ या छात्राओ को पुरस्कृत भी किया गया। सावन-भादो और सुखी-सोमवारो के आयोजनो को उपयोगी आधार दिये गये। उदयपुर के सुरम्य वातावरण मे इन आयोजनो को आशातीत सफलता मिली। स्काउटिंग की प्रवृत्ति शुरू की गई जिसने कम समय मे ही काफी गति पकडी। डा० मोहनसिंह मेहता, लक्ष्मीलाल जोशी और डा० शम्भूलाल शर्मा जैसे सहयोगियो की छाया मे स्काउटिंग का विकास होता



ही था। डा० मेहता तो स्काउटिंग के राष्ट्रीय-स्तर के नेता रहे और राजस्थान में उन्होंने स्काउटिंग का योजनाबद्ध विकास किया।

खेल-कूद की प्रवृत्तियों को श्री दयाशंकर श्रोत्रिय ने प्रारम्भ से ही शिक्षा का एक महत्त्वपूर्ण और अनिवार्य अंग समझा अत. महिला-मण्डल खेल-कूद की प्रवृत्तियो का एक स्थायी क्षेत्र बना रहा। उसी निरंतरता का यह परिणाम निकला कि आदिवासी क्षेत्रो की भील छात्राओं ने खेल-कूद के राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय रेकार्ड स्थापित किये और राजस्थान की महिलाओ के लिये गौरव का पृष्ठ जोड़ा।

हाईस्कूल व जे टी. सी.—

महिला-मण्डल ने अब प्रगति के अगले सोपान पर कदम बढ़ाया और महिला-मण्डल के मिडिल स्कूल को 'हाई-स्कूल-स्तर' तक पदोन्नत कर दिया गया। छात्राओं की संख्या क्रमश. बढ़ती ही चली गई।

राज्य-सरकार भी महिला-मण्डल के निकट और निरन्तर संपर्क में आती रही और उसने महिला-मण्डल के कार्यक्रम के महत्त्व को स्वीकार किया। फलस्वरूप राज्य के सहयोग से महिला-मण्डल में महिलाओ के लिये जे. टी. सी. का प्रशिक्षण प्रारम्भ कर दिया गया। आगे जाकर इस प्रशिक्षण को एस० टी० सी० का रूप दे दिया गया।

फल यह हुआ कि कालान्तर में जब शिक्षण कार्य के लिये शिक्षित महिलाओं की आवश्यकता हुई तो महिला-मण्डल मे शिक्षण प्राप्त कर रही इन महिलाओ के समक्ष व्यवसाय के क्षेत्र भी स्वत: खुल कर सामने आ गये। महिला-मण्डल की इन प्रवृत्तियो की सर्वाधिक उल्लेखनीय सफलता यह रही कि सस्था द्वारा प्रशिक्षित करीब ९० प्रतिशत महिलाओ को राजकीय सेवाओ मे ले लिया गया। जे० टी० सी० पाठ्यक्रम मे करीब २० महिलाओ के प्रवेश की व्यवस्था थी जिनमे १० स्थान सरकार के लिये सुरक्षित थे। सरकार ने इन दोनो पाठ्यक्रमो को अपनी मान्यता प्रदान की।

ग्राम-यात्राएं—

महिलाओ मे नये जागरण का यह सदेश गांवो तक भी पहुँचे, इस उद्देश्य के साथ महिला-मण्डल ने गावो की यात्रा के भी अनेक कार्यक्रम सम्पन्न किये। डॉ० मेहता ने भी महिला-मण्डल को यह कार्यक्रम दे दिया था कि वह सारे मेवाड को अपना कार्यक्षेत्र बनावे।

महिला-मण्डल—दलो द्वारा इन ग्राम यात्रियों मे गांवो में जाकर विभिन्न कार्यक्रम हाथ मे लिये गये। घरों और मोहल्लो की सफाई की जाती। बच्चो को नहलाया जाता और सफाई का महत्व समझाया जाता। गांव की औरतो को शादियो मे जाने के लिये प्रगतिशील गाने सिखाये जाते। कुछ गाने छपवाकर भी बटवाये गये। कुछ समूह-गान महिलाओं मे प्रचलित किये गये। उन्हे प्रौढ़ शिक्षण के लिये तैयार किया जाता और अध्यापन की व्यवस्था की जाती।



प्रौढ शिक्षण के लिये ५० बहिनों का एक कैम्प गांव में लगाया जाता और १५ दिन में ग्रामीण महिलाओ को हस्ताक्षर करना सिखा दिया जाता। वहा प्रौढ-शिक्षण के क्षेत्र में अनेक महत्त्वपूर्ण प्रयोग भी किये गये। जैसे अनेक शब्द विभिन्न रगो मे इधर उधर लिख दिये जाते फिर उनसे विशिष्ट शब्द की तलाश करवाई जाती। पनघट के मार्ग की दीवारो पर सरल भाषा मे अनेक उपयोगी सूत्र लिखे गये ताकि महिलाए आते जाते उन्हें देखें और उन पर मनन करें। दीवानिओ मे रग भरे जाते, फिर उन विविध रगों मे उनके नाम लिखवाये जाते।

महिलाओ को 'रघुपति–राघव–राजा–राम' आदि के आदर्श सकीर्तन सिखाये गये। स्लाइडों के माध्यम से भी उन्हें अक्षर ज्ञान करवाया गया। उस समय महिला-मण्डल द्वारा प्रौढ महिलाओ के लिये वर्णमाला की भी पुस्तकें तैयार की गई। गाव के लोगो को दातुन करने की आदत डलवाई गई, समय का महत्त्व समझाया गया, अपना भविष्य स्वय बनाने की सद्प्रेरणा भरी गई।

ग्राम-यात्राओ का क्रम भी महिला-मण्डल की स्थापना से लेकर आज तक चलता आया है और आज भी चल रहा है। इतना ही नहीं, केन्द्रीय समाजकल्याण बोर्ड की ओर से स्वीकृत, ग्राम विकास के सामूहिक कार्यक्रम को भी महिला-मण्डल ने मावली तहसील के १३३ गावो मे करीब ८ वर्षों तक शानदार सफलता के साथ चलाया है और योजना के निर्माताओ एव सचालको को पूर्ण सन्तुष्ट किया हैं।

मेवाड़-शासन का योगदान–

महिला-मण्डल की निरन्तर विकासशील प्रवृत्तियो ने अतत तत्कालीन मेवाड़-शासन का भी ध्यान आकर्षित किया। विशेषकर प्रौढ-शिक्षण कार्यक्रम की सराहना की गई। महाराणाओं के शासन-काल के अतिम दिनो मे तत्कालीन प्रधानमत्री श्री टी० विजय राघवाचारी ने मण्डल के प्रौढ़-शिक्षण कार्यक्रम को आठ सौ रुपये की प्रारभिक सहायता प्रदान की। सरकार की ओर से जब शिक्षण-केन्द्रों का निरी-क्षण किया गया तो सन्तोषजनक कार्य के पुरस्कार स्वरूप ८००) रु० की मासिक सहायता प्रारभ कर दी गई।

विधवा-सहायता–विभाग की प्रवृत्तियो के उद्घाटन के लिये उदार धनपति श्री बसन्तलाल मुरारका को आमन्त्रित किया गया। उनके साथ उनकी पत्नी श्रीमती रमादेवी मुरारका भी पधारीं। इस कार्यक्रम की अतिथियो ने काफी सराहना की।

प्रवासी राजस्थानियों का योगदान—

श्री दयाशकर श्रोत्रिय अपने पूर्व कार्य-काल मे अनेक प्रवासी राजस्थानियों के सपर्क मे आ चुके थे। प्रजा-मण्डल के कार्यक्रम, विद्याभवन के धन-सग्रह-अभियान, प्रयाग मे सार्वजनिक जीवन के प्रशिक्षण तथा गाधी-आश्रम में रहकर उन्होने अनेक धनपतियो से सपर्क प्राप्त कर लिया था। सभी उनकी उत्कट सेवा भावना और कुछ करने की लगन को जान चुके थे। अत श्रोत्रियजी ने उन सभी परिचितों को

महिला-मण्डल परिवार में सम्मिलित करना प्रारंभ कर दिया। एक बार स्थापित किये गये सम्बन्ध को निरन्तर निभाते चले जाने और उन्हे अपने कार्यक्रम के निकट सम्पर्क मे रखने की तत्परता श्रोत्रियजी ने सदैव बरती। फल यह हुआ कि श्रोत्रियजी के आग्रह से अनेक प्रवासी राजस्थानियो ने उदयपुर-यात्रा की और महिला-मण्डल की प्रवृत्तियो को निकट से देखा। सर्व श्री वृजलाल वियाणी, भागीरथ कानोडिया, जमनालाल बजाज, सीताराम सेकसरिया, श्रीनिवास बगडका, जमनादास अड्किया और रामेश्वर साबू जैसी सार्वजनिक जीवन की प्रेरक प्रतिभाओ के भी वे निरंतर सपर्क मे रहे। श्रीमती पार्वती डीडवानिया, श्रीमती रमादेवी गोयनका, श्रीमती रमादेवी मुरारका, श्रीमती सरस्वती देवी मोहता, श्रीमती रतन शास्त्री, श्रीमती रामप्यारी शास्त्री आदि विख्यात महिलाएं भी महिला-मण्डल मे आती रही। उनके प्रवचनो से मण्डल-परिवार को पर्याप्त मार्गदर्शन और प्रोत्साहन मिला।

श्रीगोपाल मोहता का योगदान—

एक सयोग यह उपस्थित हुआ कि धनपति श्री श्रीगोपल मोहता ने उदयपुर को अपना व्यवसाय-क्षेत्र बनाया और वे उदयपुर तथा मेवाड की सार्वजनिक सेवा के प्रवल सहायक स्तम्भ बने। उदयपुर की अनेक सस्थाओ को उनका योगदान रहा जिनमे राजस्थान विद्यापीठ का उल्लेख भी आवश्यक है। मोहता जी नगर की संस्थाओ को २०००) रु० मासिक सहायता प्रदान करने लगे। महिला-मण्डल को इस राशि में से २००) रु० मासिक सहायता प्राप्त होने लगी और कार्यक्रम को और बल मिला।

श्री मोहता का एक बडा योगदान यह भी रहता कि महिला-मण्डल के विशिष्ट अतिथियो को वे अपने साथ ठहराते, अपनी गाडी अथितियों की सेवा मे सौंप देते और उनके साथ महिला-मण्डल मे भी पधारे। अनेक बार तो उन्होंने अतिथियो का सारा खर्च वहन किया।

बापू की प्रेरणा . गाधी-परिवार का संपर्क—

महिला-मण्डल की स्थापना को और श्री दयाशकर श्रोत्रिय के सेवा-कार्यक्रम को वस्तुत महात्मा गांधी की ही प्रेरणा का सुफल माना जाना चाहिये। बापू के सानिघ्य मे ही श्रोत्रियजी को यह प्रेरणा हुई कि राजस्थान को कार्यक्षेत्र बनाकर सेवा-कार्य शुरू किया जाय। श्रोत्रियजी ने आश्रम छोडने के बाद से महिला-मण्डल की स्थापना के पूर्ण तक वस्तुतः हर परिस्थिति मे अपने को कार्यकर्त्ता के रूप मे ही प्रशिक्षित किया। श्रोत्रियजी को महिला-मण्डल के लिये बापू का यही आशीर्वाद प्राप्त हुआ—

"राजस्थान को बढाओ,
स्वयं सेविकाए तैयार करो,
ऐसे शुभ कार्य मे मेरा आशीर्वाद है।"

आगे जाकर गाधीजी के परिवार से भी महिला-मण्डल का सपर्क बढा। मेवाड के तत्कालीन ऑर्गना-इजिंग स्काउट मास्टर श्री शकरलाल अग्रवाल की शादी गाधीजी की पोती से हुई थी। गाधीजी की सचिव मन्नू बेन गाधी श्रीमती अग्रवाल की ही छोटी बहिन थी इसलिये वे प्रतिवर्ष अपनी बडी बहिन से मिलने उदयपुर आती। अपनी हर यात्रा मे वे महिला-मण्डल मे भी अवश्य आती। वे बापू को मण्डल की प्रवृतियो का परिचय देती और उनके प्रेरक सदेश श्रोत्रियजी को भेजती रहती।



कस्तूरबा की स्मृति—

श्रीमती कस्तूरबा गाधी का एक दिन अकस्मात निधन हो गया। देश पर बिजली सी टूट पडी। महिला–मण्डल ने निश्चय किया कि उदयपुर मे 'बा की स्मृति को प्रतिष्ठापित किया जाय। फलस्वरूप निम्न दो सस्थाओ का जन्म हुआ—

१ कस्तूरबा छात्रावास।

२ कस्तूरबा ट्रेनिंग विद्यालय।

ग्रामसेविकाए तैयार करने और 'शिक्षाविशारदा' के पाठ्यक्रमों को अतिम रूप देकर गाधीजी से यह अनुमति प्राप्त की गई कि इन्हे बा के नाम पर सचालित किया जाय। बापू ने सहर्ष अपनी स्वीकृति प्रदान कर दी। और डॉ० जीवराज मेहता की पत्नी श्रीमती हसा मेहता को उद्घाटन के लिये स्वय बापू ने ही भेजा।

छात्रावास के माध्यम से महिलाओ को प्रशिक्षण के लिये अधिकतम समय मिलने लगा और उनके निवास की व्यवस्था भी हो गई। चार घण्टे की पढाई चलती और चार घण्टे उन्हे व्यवहारिक कार्यों की शिक्षा दी जाती। प्रार्थना, बागवानी, उद्योग, गृह-कार्य, समाज-सपर्क, नवचेतना की जानकारी आदि के उपयोगी कार्यों मे महिलाओ को लगाया गया।

ग्राम-सेवा कार्यक्रम के अतर्गत महिला–मण्डल ने अनेक बहिनें प्रशिक्षित की। पहले प्रशिक्षित दल की ही तीन बहिनो ने आजीवन ग्राम-सेवा का व्रत लिया। वे हैं—

१. श्रीमती मोहनीदेवी शर्मा।

२. " सुमन भारतीय।

३. " सज्जनदेवी जैन।

आगे जाकर तो महिलाओ का एक बड़ा परिवार इस अभियान में सम्मिलित हो गया।

प्रमुख सहयोगी कार्यकर्ता—

उस समय महिला-मण्डल के सक्रिय परिवार मे निम्न व्यक्तियो का योगदान उल्लेखनीय रहा—

सर्व श्री डा० मोहनसिंह मेहता, विजयालक्ष्मी नागर, कमला श्रोत्रिय, वैद्यरत्न भवानीशकरजी, हगामीबाई गौड, शीतलदेवी, प० उमाशकर त्रिवेदी, जनार्दनराय नागर, कमला राका, केसरबहिन वर्मा, नारायणीदेवी वैरागी, कृष्णा दवे, नारायणलाल वर्मा, डॉ० शभूलाल शर्मा, डॉ० शकरदयाल सक्सेना, कमललाल दशोरा, लालचन्द राका, श्रीमती विद्याबाई, लक्ष्मीलालजी जोशी, भैरूलाल गेलडा, बलवन्तसिंह मेहता, मोहनलाल सुखाडिया, रामबहिन, मोहनबहिन, डॉ० लाल, मदनलाल गर्ग, श्यामलाल भटनागर, उत्सवलाल शर्मा, बद्रीप्रसाद जोशी, जगन्नाथ उपाध्याय, रामसिंह चौहान, रमेशचन्द्र भटनागर, केसरीलाल श्रीमाली आदि।



महिला-मण्डल के रात्रि विद्यालय मे इस समय तक निम्न शिक्षा-सेवियो की सेवाएं उल्लेखनीय रही —

सर्व श्री कन्हैयालाल ओझा, बसन्तीलाल सरूपरिया, मदनलाल धुप्पड, ओंकारलाल बोहरा, त्रिलोकचन्द जैन, हीरालाल बम्ब बसन्तीलाल भण्डारी और यमुनालाल वैद्य आदि।

तब मण्डल कार्यकर्त्ताओं को इस अभियान मे भी लगाया गया कि वे दस-दस व्यक्तियो से मिलकर सस्था के लिये धन, सेवा या पुस्तको के रूप मे सहयोग अर्जित करें।

श्री ठक्कर बापा और रामेश्वरी नेहरू—

लगभग १६४५ मे श्रोत्रियजी श्री ठक्कर बापा और श्रीमती रामेश्वरी नेहरू के सम्पर्क मे आये। यही ठक्कर बाबा की दूसरी मेवाड-यात्रा थी। उन्होंने महिला-मण्डल की प्रवृत्तियो को निकट से देखा तो अत्यधिक प्रभावित हुए। रामेश्वरी नेहरू ने तो आगे जाकर मण्डल की अध्यक्षा बनना भी स्वीकार किया और निधन पर्यन्त सस्था की सहयोगिनी एव प्रशंसिका बनी रही। ठक्कर बापा जब उदयपुर से लौटे तो उन्होंने सेठ घनश्यामदास बिडला से महिला-मण्डल की प्रवृत्तियो की सराहना की और उन्हे इनका सहयोगी बनने को कहा। बिडलाजी तब संस्था को ५००) पाच सौ रुपया प्रतिमास भेजने लगे।

इस सहायता के साथ-साथ बिडलाजी ने महिला-मण्डल को निर्देश भी दिये कि (१) राशि के ५ प्रतिशत से अधिक प्रचार पर खर्च न किया जाय। (२) और मासिक विवरण तथा आय-व्यय का ब्यौरा उन्हें भेजा जाय। आय-व्यय और विवरण के प्रचार-प्रसार के सम्बन्ध मे यो श्री श्रोत्रिय प्रारम्भ से ही नियमित रहे और सामान्य विज्ञप्तियो मे भी आय-व्यय सम्बन्धी सूचनाए प्रसारित की जाती रही, लेकिन अब इस ओर अधिक ध्यान दिया जाने लगा, फलस्वरूप सस्था के हिसाब को और अधिक व्यवस्थित रूप दिया जा सका।

बिडलाजी का सहयोग प्राप्त होने लगा तब जाकर यह स्थिति बनी कि श्री और श्रीमती श्रोत्रिय को भी महिला-मण्डल से आर्थिक सहयोग मिलने लगा। कार्यकारिणी के एक निर्णय के अनुसार श्रीदयाशंकर श्रोत्रिय और श्रीमती कमला श्रोत्रिय को १००) १००) प्रतिमाह 'ऑनरेरियम' दिया जाने लगा। कमलाजी को घरेलू काम के लिये एक सेविका की व्यवस्था की गई और महिला-मण्डल की अन्य कार्यकर्त्रियो के लिये भी सेवा-नियम यात्रा-नियम आदि घोषित किये गये।

महिला-मण्डल—प्रशासन और कार्यकर्त्ता के बीच किसी भी प्रकार का विवाद उत्पन्न होने की स्थिति मे यह व्यवस्था भी घोषित कर दी गई कि दोनो पक्षो के प्रतिनिधि व सस्था के अध्यक्ष मिलकर इस विवाद का जो हल ढूंढेंगे, वह दोनो पक्षो को मान्य होगा।

बाल-शिक्षण—

श्रीमती रामेश्वरी नेहरू ने श्रोत्रिय—दम्पति को एक महत्त्वपूर्ण और दूरगामी सुझाव यह दिया कि प्रौढ-शिक्षण-कार्यक्रम के साथ बाल-शिक्षण—कार्यक्रम को भी पर्याप्त महत्त्व दिया जाय। सस्था का



जो सपर्क महिलाओं के साथ रहता है, उनके साथ बच्चे अनिवार्य रूप से जुडे ही होते हैं। जब उन बच्चों की भी शिक्षा-दीक्षा का दायित्त्व महिला-मण्डल सभाल लेगा, तो वे महिलाए अधिक तत्परता और आत्मीयता के साथ कार्यों एव शिक्षण–प्रशिक्षण मे रुचि ले सकेंगी ।

डॉ० मोहनसिंह मेहता और श्री लक्ष्मीलाल जोशी ने भी इस सुझाव को माना और माताओं के साथ आने वाले बच्चो की शिक्षा-दीक्षा एव साज-सभाल का दायित्व हाथ मे लिया गया। वही कार्यक्रम विकसित होकर आज नगर के पाच केन्द्रो पर बाल-मदिरों के रूप मे चल रहा है।

महिला-मण्डल की आर्थिक स्थिति के अनुरूप ही इस नये कार्यक्रम को धीरे धीरे विकसित किया गया। प्रारभ में बच्चो के लिये केवल एक चपरासिन की व्यवस्था की गई जो उन्हे नहलाती, धुलाती और किसी प्रकार बहलाये रखती। आगे जाकर एक अध्यापिका की नियुक्ति की गई जो उन्हे खिलौनो से खेल खिलाती और कुछ सीखने के लिये उन्हें प्रोत्साहित करती। तीसरे स्तर पर अपेक्षाकृत उच्च शिक्षित अध्यापिका को नियुक्त किया गया और तब नियमित और व्यवस्थित बाल-मदिर चल निकला।

उन दिनो उदयपुर मे एक स्काउट कमिश्नर थे श्री बारपुते। बच्चो से उन्हें बडा लगाव था। श्री बारपुते भी इस प्रवृत्ति मे रुचि लेने लगे। वे प्रतिदिन चार घण्टे बाल-मन्दिर को देने लगे।

अब बाल-मन्दिर को साधन-सज्जित बनाने का कार्य भी शुरु हुआ। मिट्टी के हौज तथा रेत के हौज तैयार करवाये गये। दीवारो पर सीमेन्ट लगवाकर श्याम-पट (ब्लेक बोर्ड) तैयार करवाये गये। रेत के हौज पर एक बडी छतरी का निर्माण किया गया। बाल-मन्दिर के क्रमश विकास का एक उदाहरण यह है कि प्राथमिक स्थिति पर मात्र पाच रुपये मासिक पर अध्यापिका से जो कार्य लिया गया, उसी कार्य के लिये आज अध्यापिका को ३५०) साढे तीन सौ रुपया मासिक दिया जा रहा है।

श्री बारपुते ने बाल-मन्दिर की प्रवृत्ति में रुचि लेते हुए-स्वय भी चार बहिनो को प्रशिक्षित किया। उनमें लक्ष्मीदेवी वर्मा, और नानीदेवी राव के नाम उल्लेखनीय हैं। श्रीमती नानीदेवी राव तो आज भी महिला-मण्डल का महत्त्वपूर्ण दायित्त्व सम्भाले हैं।

कन्या-शिक्षण—

महिला-शिक्षण और बाल-शिक्षण की प्रवृत्तियो के सफलतापूर्वक संचालित हो जाने के उपरान्त यह सहज ही आवश्यक था कि कन्या-शिक्षण की प्रवृत्ति के भी उसी अनुपात में व्यवस्थित किया जाता। अत बाल-मन्दिरो की कक्षाएं धीरे-धीरे खोली जाने लगी और वर्षानुक्रम से अतत उच्च विद्यालय, फिर महिला उच्चतर विद्यालय खडा हो गया।

उद्योग, सिलाई, कताई, बुनाई आदि के प्रशिक्षण की विशेष व्यवस्था की गई। छात्रावास की बहिनों के लिये खादी अनिवार्य कर दी गई, और वस्त्रो की व्यवस्था महिला-मण्डल की ओर से की जाने लगी। सस्था के अनेक कार्यकर्ता प्रारम्भ से ही खादी पहनते थे।

कस्तूरबा-छात्रालय—

कस्तूरबा छात्रालय में ३ वर्ष के अध्यापन का पाठ्यक्रम रखा गया। प्रतिवर्ष दीक्षान्त समारोह का आयोजन किया जाता जिसमे श्री हीरालाल शास्त्री, श्रीमती रामेश्वरी नेहरू और डॉ० सपूर्णानन्द जैसे मनीषियो ने दीक्षान्त-प्रवचन दिये। इस अवसर पर छात्राए रगीन डडो पर मशाले जलाकर नवज्योति का आह्वान करती और ग्राम-सेवा, राष्ट्र-सेवा और मानव-सेवा की प्रतिज्ञाए दोहराती। ग्राम-सेवा का तो उन्हे विशेष प्रशिक्षण मिलता ही था।

राज्य--शासन ने भी कस्तूरबा विद्यालय के पाठ्यक्रम को स्वीकार किया लेकिन उसे जे० टी० सी० नाम दिया अत यह पाठ्यक्रम फिर जे० टी० सी० के नाम से पढाया जाने लगा। फल यह हुआ कि विद्यालय की प्रशिक्षित महिलाओ और कन्याओ के लिये राज्य-सेवा का पथ प्रशस्त होगया। महिला-मंडल पुस्तकालय प्रारम्भ में केवल रात्रि को चलता था लेकिन अब दिन को उसे सार्वजनिक रूप मे भी खोला जाने लगा।

इस समय तक ग्राम सेवा के अतर्गत महिला-मण्डल का विशेष ध्यान ग्राम-सेविकाए तैयार करने मे लगा रहा। अब इस आवश्यकता को महसूस किया गया कि ग्राम-यात्राओ का नियमित और विशद कार्यक्रम हाथ मे लिया जाय। रामेश्वरी नेहरू उस समय महिला-मण्डल की अध्यक्षा थी और श्री शकरसहाय सक्सेना कार्यवाहक अध्यक्ष थे।

ग्रामीण-स्तर विस्तृत कार्यक्रम को हाथ मे लेते ही महिला-मण्डल का युद्ध-स्तर पर विकास हुआ और वह शीघ्र ही महिला-शिक्षण मे एक राष्ट्रीय ख्याति की संस्था गिनी जाने लगी।

गांवों मे नई क्रान्ति—

महिला-मण्डल ने निश्चय किया कि अब ग्रामीण—क्षेत्रो में ग्राम-सेवा—कार्यक्रम का विस्तार किया जाय। तत्कालीन कार्यवाहक अध्यक्ष श्री शकरदयाल सक्सेना इस मत के थे कि कम शिक्षित बहिनो को गावो मे नही भेजा जाय। फलतः कुछ कुशल, प्रशिक्षित और सेवाभावी महिलाओ का चयन महिला-मंडल परिवार मे से ही किया गया। श्रीमती मोहनदेवी शर्मा को लदानी और श्रीमती कमला शर्मा को सालेरा गावों मे भेजा गया। यह दोनो गाव उदयपुर से निकटस्थ मावली तहसील-क्षेत्र मे हैं। मावली एक तो उदयपुर से नजदीक और आवागमन के साधनो की दृष्टि से सुविधाजनक था, फिर श्री दयाशकर श्रोत्रिय प्रजामण्डल-आन्दोलन के दौरान मावली तहसील के लगभग सभी गावों के काफी निकट सम्पर्क मे आ चुके थे, अत मावली तहसील-क्षेत्र को ही सर्वाधिक उपयुक्त समझा गया।

सूअर-मारो-आन्दोलन—

मालवी क्षेत्र के किसान उन दिनो सूअरो से बडे दुखी थे। जगली सूअर किसानो की खडी फसलें देखते-देखते बरबाद कर देते थे लेकिन मेवाड़-सरकार का आदेश था कि शासन की स्वीकृति के बिना

सूअरों का शिकार न किया जाय। किसान बडे दुखी थे। तब श्री माणिक्यलाल वर्मा, श्री मोहनलाल सुखाडिया, भूरेलाल बया और श्री बलवन्तसिंह मेहता के साथ श्रोत्रियजी ने तब प्रजामण्डल के मच से उस क्षेत्र में 'सूअर-मार-आन्दोलन' का सचालन किया। खेमली के पास 'खेराडी मगरी' नामक स्थान पर क्षेत्र के किसानो का एक विराट सम्मेलन आयोजित किया गया जहा किसानो ने यह निर्णय लिया कि 'गांधीजी की जय' बोलते हुए सूअर मारे जाय और मेवाड के शासन की अवहेलना की जाय।

शीघ्र ही दूसरा सम्मेलन नाहरमगरा मे किया गया और वहा भी उसी सकल्प को दोहराया गया।

महाराणा साहब ने सर-टी. विजय राघवाचारी से सलाह करके मावली-क्षेत्र मे प्रजामण्डल के द्वारा चलाये गये इस आन्दोलन के दमन के लिये कर्नल डॉन्ट को भेजा। श्री श्रोत्रिय व अन्य कार्यकर्त्ता उस समय किसानो के साथ खडे रहे। अतत उन्हें सूअरो से मुक्ति दिलाई।

एक यह पृष्ठभूमि भी थी जिसके कारण सारे क्षेत्र में श्रोत्रियजी अत्यधिक लोकप्रिय थे और वहां महिला-मण्डल के कार्यक्रम की सफलता का पूरा विश्वास था।

पाच-केन्द्र—

प्रारम्भ मे दो बहिनें दो गावो में भेजी गईं। आगे जाकर सागवा, बीजणवास, सालेरा, घासा और लदाणी नामक पाच गावो में पाच केन्द्र चलने लगे।

महिला-मण्डल की ग्राम-सेविका बहिनें गावो मे औषधियां बाटतीं, गभीर रोगियों को प्रमुख चिकित्सालय तक पहुँचाने मे सहायता करती, दिन मे बच्चो को पढाती और रात को महिलाओं को पढाती। वैद्यराज भवानीशकरजी ने इन बहिनो को ४०–४० ऐसी दवाओ की व्यवस्था कर दी जो सामान्यत. सभी रोगो के निदान मे सहायक थी।

महिला-मण्डल का उदयपुर स्थित परिवार महीने मे एक बार इन गावो में अपना केम्प लगाया करता। उस अवसर पर कार्यक्रमो मे बडा उत्साह रहता और सार्वजनिक समारोह व जलसे भी आयोजित किये जाते।

राजस्थान सेवा-संघ—

श्री और श्रीमती श्रोत्रियजी इस समय तक भी मात्र १००)–१००) मासिक प्राप्त करने की स्थिति मे थे। अधिक लेने के अवसर उनके पास थे लेकिन सस्था इस स्थिति में नही थी।

रामेश्वरी नेहरू ने इस वेतन को अपर्याप्त माना और श्रोत्रिय-दम्पति को 'राजस्थान-सेवा सघ' के सदस्य परिवार मे सम्मिलित कर दिया। राजस्थान–सेवा–सघ जीवनदानी जन-सेवको की एक सस्था थी। उसके सदस्यो को २००) रुपया प्रतिमास सघ की ओर से मिलता था। इसके अतिरिक्त वे कहीं से कुछ भी वेतन या पारिश्रमिक नही ले सकते थे और उनका कार्य मात्र जन-सेवा करना था।



श्री श्रीकृष्णदास जाजू उस समय सेवा संघ के कुलपति थे और श्री सिद्धराज ढड्ढा मंत्री थे। विख्यात अर्थशास्त्री जाजूजी का महात्मा गांधी भी बड़ा सम्मान करते थे। श्री जाजू अखिल भारतीय चरखा सघ के अध्यक्ष भी रहे। स्वतन्त्र-भारत के प्रथम मन्त्रिमण्डल मे उन्हे अर्थमत्री बनाने का प्रस्ताव था जिसे वे अस्वीकार कर चुके थे।

'राजस्थान सेवा-सघ' प्रति वर्ष ऐसे शिविर का आयोजन करता था जहा सब सदस्य मिलें और अपने कुलपति तथा मार्गदर्शकों से समाज सेवा कार्य का प्रशिक्षण प्राप्त कर सकें। श्रोत्रियजी ने सागवा ग्राम मे सेवा-सघ के ऐसे केम्प को भी आयोजित किया।

रूढियो से संघर्ष—

गावो मे कार्य तो शुरू हुआ लेकिन गिने चुने ऐसे लोग फिर भी उन गांवो मे थे जो इन कार्यक्रमो के विरोधी थे। विशेषकर एक गाव के मुखिया ने तो इन कार्यक्रमो का डटकर विरोध किया। प्रचार किया गया कि यह लोग हमारी औरतो को बिगाडने आये हैं। वे सह-शिक्षा के भी विरोधी थे और उस पचायत घर मे औरतों को जाने तक से मना कर दिया जहा उनके कार्यक्रम आयोजित किये जाते थे। अछूत जातियो के लोगों को भी मना कर दिया गया और गाँव मे आतक सा पैदा किया गया।

स्थिति यहां तक भी आई कि सागवा मे तो महिला-मण्डल की सेविकाओ को डराकर भगा देने के इरादे से केन्द्र-स्थल के सामने एक नगे साधू की धूनी जमा दी गई। लेकिन इस परिस्थिति का सामना किया गया और साधू को ही अपमानित होकर और पिटकर वहा से भागना पडा।

मावली-प्रोजेक्ट : केन्द्रीय शासन का योगदान—

यहां आकर महिला-मण्डल को सामूहिक ग्राम-विकास कार्यक्रम चलाने का एक महत्त्वपूर्ण और दीर्घकालीन अवसर प्राप्त हुआ। पचवर्षीय योजनाओ की क्रियान्विति के फलस्वरूप केन्द्रीय समाज कल्याण बोर्ड ने अनेक कार्यक्रम व्यापक स्तर पर शुरू किये।

श्रीमती दुर्गाबाई उन दिनों केन्द्रीय बोर्ड की अध्यक्षा थी। श्रीमती देशमुख और बोर्ड के सदस्यों को श्रीमती रामेश्वरी नेहरू के सहयोग से महिला-मण्डल की योजनाओ और कार्यक्रम का विस्तृत ब्योरा प्रस्तुत किया गया। श्रीमती देशमुख ने राजस्थान, फिर उसके मेवाड जैसे पिछडे और आदिवासी क्षेत्र मे महिला-मण्डल के कार्यक्रमो को बेहद पसन्द किया। फलस्वरूप महिला-मण्डल और केन्द्रीय समाज कल्याण बोर्ड का सम्बन्ध स्थापित होगया। यह सहयोग निरन्तर आठ वर्ष तक चला और सम्बन्ध दिनोदिन घनिष्ठ होते चले गये।

श्रीमती देशमुख के द्वारा महिला-मण्डल को समाज कल्याण बोर्ड का सहयोग मिलना शुरू हुआ। बोर्ड ने महिला-मण्डल को बालमदिरो के लिये आवश्यक और अधुनातन उपकरण जुटाने के लिये २५०००) रु० प्रदान किया, जिसके फलस्वरूप एक ही बार मे बालमदिरो को अधुनातन सम्पन्नता प्रदान की गई।



महिला-मण्डल के कस्तुरबा विद्यालय को 'कन्डेन्स कोर्स' के रूप में परिवर्तित किया गया जिसे केन्द्रीय समाज कल्याण बोर्ड की की मान्यता प्रदान की गई। फलस्वरूप विद्यालय का महत्त्व, उपयोगिता और साधन सुविधाओ मे वृद्धि हुई।

बोर्ड ने मावली क्षेत्र के सामूहिक ग्राम-विकास कार्यक्रम के लिये एक बडा 'प्रोजेक्ट' स्वीकृत किया जिसके फलस्वरूप महिला-मण्डल ने मावली तहसील के १३३ गावो के क्षेत्र मे अपना कार्यक्रम सचालित किया।

प्रोजेक्ट के अतर्गत इन गावो मे अनेक कार्यक्रम सम्पन्न किये गये। एक जीप, नर्स, दवाइयां, उद्योग-शिक्षिका, ग्रामसेविका, ड्राइवर, सचालक और मुख्य-सेविका की सुविधाए बोर्ड की ओर से प्राप्त हुई।

गाव-गाव मे औषधी-वितरण के कार्यक्रम चलाये, कुशल चिकित्सक गावो में जाते, रोगियों को देखते और उन्हे दवाईया देते। स्वास्थ्य-सम्बन्धी आवश्यक नियमो की चेतना जगाई गई। घर, पड़ौस, गाव और शरीर के स्वच्छ एव स्वस्थ रहने का महत्त्व समझाया गया।

बाल-शिक्षण-कार्यक्रम के अतर्गत गाव के बच्चो की पढाई की व्यवस्था की गई। महिलाओं के लिये प्रौढ शिक्षा कार्यक्रम चलाये गये। सिलाई-कार्य सिखाने की व्यवस्था की गई, अन्य उद्योगो का प्रशिक्षण भी शुरू किया गया। समाज-सुधार के व्यवस्थित कार्यक्रम को प्रत्येक गाव में सचालित किया गया, सामयिक समस्याओ के निदान के लिये राजकीय सहायता का पथ प्रशस्त किया गया। अभाव अभियोग के आवेदन-पत्र मण्डल की सेविकाओ ने तैयार किये और ग्रामीण नागरिकों के माध्यम से उन्हें सम्बन्धित अधिकारियो तक पहुँचाया गया।

मावली क्षेत्र मे वैद्यरत्न श्री भवानशकरजी की प्रेरणा से 'जल-शुद्धि-आन्दोलन' चलाया गया। गावों के चर्मरोग और खल्वाट रोग (गजापन) जैसे रोगो को दूर करने के लिये व्यापक अभियान छेडा गया। रोगो का निदान बताया गया, चिकित्सा की गई और नागरिको को उन रोगो की रोकथाम के लिये भी आवश्यक निर्देश दिये गये।

साक्षरता-आन्दोलन के अतर्गत तीन माह के ही अल्प-काल में बीस हजार लोगों को शिक्षित किया गया। आदर्श वाक्य दीवारो पर विविध रगो मे लिखे जाते तथा पर्चे छपवाकर बटवाये जाते। प्रौढशालाओ के उपकरण, जैसे स्लेट-पेंसिलें और पुस्तकें आदि मुफ्त दी गई।

आयुर्वेद के विभिन्न शिविरो के आयोजन किये गये जिनमे वैद्यरत्न भवानीशकरजी का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा।

'सालेरा' को आदर्श गाव बनाने का निश्चय क्रियान्वित किया गया। सडको और मोहल्लों का नामकरण किया गया। चौक आदि स्थानों का भी नामकरण किया गया। सड़कों को व्यवस्थित रूप दिया गया। डाकघर, रोशनी, तार-घर आदि की व्यवस्था करवाई गई।



श्रमदान से सफाई व सडक निर्माण के कार्य सम्पन्न किये गये। 'फेयर वेदर रोड्स' तैयार की गई। गांव से महिला-मण्डल केन्द्र तक जाने वाले मार्ग को भी साफ-सुथरा रूप दिया गया। गाव के प्राइमरी स्कूल को मिडिल स्तर तक पदोन्नत करवाया गया।

इन विभिन्न गावो के भ्रमण और कार्यक्रमों के लिये महिला-मण्डल के एक विशेष दस्ते का भी गठन किया गया। जीप में सवार यह दल जिस गाव मे भी पहुचता वहा सर्व प्रथम जीप मे टगे घण्टे को बजाकर सारे गाव को सूचना देदी जाती और दस्ते के लोग अपना अपना दायित्व पूरा करने मे जुट जाते। चिकित्सक स्वास्थ्य-परीक्षा और रोग-निदान के लिये निकल पडते। सगीत मास्टर सगीत का कार्यक्रम प्रारभ कर देते जिसके माध्यम से मनोरंजन के साथ-साथ उपयोगी शिक्षा दी जाती। बच्चो को मीठी गोलिया बाटकर एकत्रित किया जाता फिर उनसे सम्पर्क प्रारम्भ कर दिया जाता। ध्येय-वाक्यो के कटे हुए टीन के टुकडे तैयार रहते जिनसे गाव की दीवारों पर सदेश अंकित किये जाते। एक लिपिक बैठकर गाव वालो के आवेदन-पत्र लिखता जिन्हे विभिन्न सम्बन्धित अधिकारियो तक पहुचाया जाता।

एक महिने मे एक बार यह दल सात दिन की यात्राए करता और विभिन्न गांवो मे प्रातः ६ बजे से रात्रि के १० बजे तक यह कार्यक्रम चलता। माताओ, पुरुषो और बच्चो-समाज की इन तीनो धाराओ से एक साथ किन्तु पृथक दलो मे सपर्क किया जाता और उन्हे एक निश्चित और सकल्पित ध्येय पर आगे बढने के लिये प्रोत्साहित किया जाता। महिलाओ को यह तक शिक्षा दी जाती कि घर की सफाई कैसे की जाय और खाना किस प्रकार बनाया जाय। सफाई का महत्त्व समझाया जाता। पशुओ की सभाल और स्वास्थ्य सम्बन्धी उपदेश दिये जाते। बच्चो को खेलकूद मे लगाया जाता। उन्हे शुद्ध और सुन्दर हस्त-लेख के प्रति सचेत किया जाता। किसानो को कृषि की उपयोगी बातें बताई जाती और उन्हें राज्य-सरकार के सहायता कार्यक्रमो की जानकारी दी जाती। कृषि प्रदर्शनियो के आयोजन किये जाते। प्रतियोगिताएं आयोजित करके अच्छे उत्पादन, स्वस्थ बालक और स्वस्थ पशुओ को पुरस्कृत किया जाता।

महिला-मण्डल ने अपना एक विशेष अधिवेशन इस ग्रामीण समाज के बीच ही किया। इस अवसर पर महिला-मण्डल ने एक विशेष ग्रामोत्थान-अभियान चलाकर धन सग्रह किया। एकत्रित राशि के बराबर की राशि राज्य सरकार से प्राप्त की गई। इस राशि से स्कूल, पचायत भवन, कुए आदि तैयार करवाये गये।

सम्बन्धित राज्याधिकारियो और मत्रियो को समय-समय पर इन गावो की यात्रा के लिये आमन्त्रित किया गया और राज्य के विभिन्न विभागो की सहायता एव सहयोग इन गावो तक पहुचाया गया। सरकारी चिकित्सको निर्माण विभाग के इन्जनियरो, शिक्षको आदि का भरपूर सहयोग प्राप्त हुआ। खेमली से शृ गी ऋषि तक का मार्ग निर्माण विभाग के तत्कालीन एक्जीक्यूटिव इन्जनियर श्री जगदम्बालाल माथुर के सहयोग से तैयार किया गया।

ब्लोक के पास 'धूणीमाता' नामक स्थान पर प्रतिवर्ष एक मेला लगाने की योजना क्रियान्वित की गई। इसके लिये दुकानदारो को गाड़ी भाड़ा तक देकर उन्हे मेले के प्रति आकर्षित किया गया।



मेला-स्थल पर पानी, रोशनी, सफाई, चिकित्सा, पुलिस आदि की व्यवस्था करवाई गई। वहा अनेक प्रदर्शनिया प्रतियोगिताए और सास्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किये गये।

इस मावली क्षेत्र ग्रामोत्थान-अभियान की सयोजिका श्रीमती मोहनदेवी शर्मा और मुख्य सेविका श्रीमती कमला शर्मा नियुक्त की गई। यह दोनों बहिनें प्रारम्भ से आज तक महिला-मण्डल की महत्त्वपूर्ण सदस्याएं रही और आज भी मण्डल परिवार के बडे दायित्व सभाले हुए हैं। अन्य बहिनो में नानीदेवी राव, सावित्री तिवारी, बसतीबाई शर्मा, सुशीला दशोरा, बसन्तीबाई दशोरा और कचन अग्रवाल की सेवाए उल्लेखनीय रही।

१३३ के लगभग गाँवो मे इस व्यापक अभियान को चलाने के लिये महिला-मण्डल ने कुछ गावों के पृथक वर्ग बनाकर निम्न गावो मे उनके सचालन केन्द्र चलाये—

१. सागवा	२. खेमली	३. आसणा
४ सालेरा	५ नाहरामगरा	६ डबोक
७ मेडता	८ नादवेल (१)	९. नादवेल (२)
१० बीजणवास	११ चदेसरा	१२ नहुआ
१३ सरवडो का गुढा	१४. गंदौली	१५ लदाणी
१६. मावली	१७ सालेरा	१८ साकरोदा
१९. थादला	२० मावली	२१. वासणी
२२. बोहेडा	२३ घासा	२४ मालकियावास
२५ खेड़ी	२६ हीरावतों की भागल	२६. छोटा पलाणा
२८ बडा पलाणा आदि।		

'महिला-मण्डल' के जीवनकाल का यह एक ऐतिहासिक प्रसग है जिसमें मण्डल की स्वय सेविकाओं को ग्राम-सेवा के महत्त्वपूर्ण अवसर प्राप्त हुए और इन गावो मे एक नई क्रान्ति का सूत्रपात हुआ। यह कार्यक्रम विशेष उपलब्धिमूलक इसलिये भी रहा कि लगभग आठ वर्षों तक महिला-मण्डल इस कार्यक्रम को चला सकी, जिसका विशेष श्रेय केन्द्रीय समाज कल्याण बोर्ड की सहायता और राज्य के विभिन्न अधिकारियो के सहयोग को जाता है।

बाद मे यह कार्यक्रम सरकार ने एक अन्य समिति को स्थानातरित कर दिया और अतत. राज्य सरकार ने स्वय इस कार्यक्रम को अपने हाथ मे ले लिया। यह एक दु खद तथ्य है कि बाद मे कार्यक्रम को न पर्याप्त विकास मिल सका, न वह पूर्व सचालित कार्यक्रमो को ही समान गति के साथ सचालित कर सका।

फिर भी महिला-मण्डल के सस्थापक श्री दयाशकर श्रोत्रिय का कथन है कि यह 'प्रोजेक्ट' महिला मण्डल के और स्वय उनके जीवन का एक अविस्मरणीय अध्याय है और उन्हें इस कार्य की उपलब्धियो से बड़ा सतोष है।



- महिला-मण्डल " एक बहिर्मुखी व्यक्तित्व–

महिला-मण्डल का उदयपुर स्थित प्रमुख केन्द्र भी इस बीच निरन्तर विकासशील रहा। इस बीच उदयपुर मे अनेक शिक्षण-सस्थाओं की स्थापना हो चुकी थी और शिक्षा के लिये अनुकूल वातावरण बन चुका था।

महिला-मण्डल ने विभिन्न मोहल्लों में जो १२ केन्द्र चलाये थे वे आज ५ व्यवस्थित केन्द्रो के रूप में चल रहे हैं। इन्ही के साथ माण्टेसरी पद्धति के ५ बालमन्दिर और प्राइमरी स्कूल सचालित हैं। उद्योग-शिक्षण के अतर्गत सिलाई के केन्द्र भी व्यवस्थित रूप से चल रहे हैं। प्रौढ-शिक्षण का कार्य आज भी चल रहा है।

महिला-मण्डल हायर सेकेन्डरी, १५ वर्ष 'हाई-स्कूल' के रूप मे रहकर अब कला के साथ-साथ विज्ञान में भी छात्राओ को प्रशिक्षित करने लगा है।

पुस्तकालय–

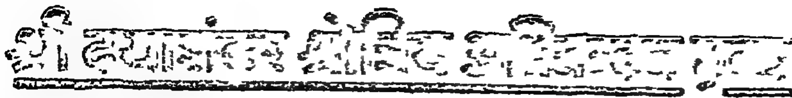
पुस्तकालय का विकास भी महिला-मण्डल का एक निरन्तर गतिशील कार्यक्रम रहा है। पुस्तक-दान–अभियान चलते ही रहे। पुस्तकालय के लिये प्रतिवर्ष व्यापक बजट स्वीकृत किया जाता रहा। फलस्वरूप आज लगभग ३० हजार पुस्तकें महिला-मण्डल पुस्तकालय मे उपलब्ध हैं। हिन्दी और अग्रेजी के अतिरिक्त संस्कृत, उर्दू, सिन्धी, मराठी, गुजराती, बगला आदि विभिन्न भारतीय भाषाओ के ग्रन्थ भी उपलब्ध हैं। वाचनालय मे भी विविध भाषाओ के पाठक आते है जिनके लिये विभिन्न भाषाओ की १५० पत्र-पत्रिकाएं मगवाई जाती हैं। पुराने से-पुराने रेकार्ड आज इस पुस्तकालय मे उपलब्ध है। महत्त्व-पूर्ण पत्रों की फायलें भी तैयार करवाई जाती हैं और समय के बाद अनुपयोगी पत्रों को ही रद्दी मे बेचा जाता है।

'पुस्तकालय–विज्ञान' पर प्रकाशित एक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ में 'महिला-मण्डल-पुस्तकालय' के पुस्तक दान अभियान की विशेष सराहना की गई है और इसे पुस्तकालय-विकास का एक महत्त्वपूर्ण प्रयोग कहा गया है। अनेक बार यह आन्दोलन चलाये गये और एक बार मे पाच–पाच हजार तक पुस्तकें एकत्रित की गई।

आज भी महिला-मण्डल के दो गश्ती-पुस्तकालय (Mobile Libraries) चल रहे हैं और नगर के करीब ८०० व्यक्ति पुस्तकालय एव वाचनालय का लाभ उठाते हैं। महिला-मण्डल की छात्राओ एव अध्यापिकाओ की सख्या इनसे अलग हैं।

कस्तूरबा–छात्रावास

कस्तूरबा छात्रावास के अब दो विभाग चल रहे है। प्रारम्भ मे केवल प्रौढ़ बहिनो को भी छात्रा-वास की सुविधा थी। बाद मे उन्हें बच्चों के साथ भी सुविधाएं प्रदान की गई। देश के विभिन्न भागो से




आई महिलाओं ने यहां प्रवेश लिया। उन्हें मकान के अतिरिक्त रोशनी, खाना व पानी की भी व्यवस्था की गई। कुछ बहिनो से २५ रुपये मासिक व्यय लिया जाता है लेकिन साधनहीन बहिनो को नि शुल्क प्रवेश की सुविधा भी है।

बाद मे इस छात्रावास का एक कक्ष आदिवासी परिवारों की छात्राओं के लिये खोला गया जो आज काफी विकसित रूप ले चुका है। आज ८५ आदिवासी छात्राए और १५ प्रौढ महिलाए 'छात्रावास' का लाभ ले रही हैं।

छात्रावास को अब दो पृथक वर्गों से विभाजित कर दिया गया है।

आदिवासी छात्राओ के छात्रालय को 'श्री रामकुमार भुवालका कस्तूरबा आदिवासी छात्रालय' का नाम दिया गया है। श्री भुवालका ने इस छात्रालय के लिये ५० हजार रुपये की राशि प्रदान की।

साहित्य-महाविद्यालय को कई वर्षों के उपरान्त बन्द करना पडा क्योकि राज्य सरकार ने प्रयाग महिला विद्यापीठ की मान्यता बन्द कर दी जिसके फलस्वरूप महिलाओ की उस पाठ्यक्रम में कोई रुचि नही रही।

वैकल्पिक रूप में इस साहित्य-महाविद्यालय को महिलाओ के रात्रि कालेज का रूप दिया गया जो करीब दो वर्ष चला लेकिन छात्राओ को प्राइवेट परीक्षा मे बैठने की सुविधा होने से यह चल नहीं सका और अतत बन्द कर देना पडा।

आज बाल मन्दिर से लेकर उच्चतर माध्यमिक स्तर तक के अध्ययन की सपूर्ण सुविधाए महिला मण्डल मे उपलब्ध हैं।

खेल-कूद—

खेलकूद के क्षेत्र मे महिला-मण्डल की छात्राओं ने अन्तर्राष्ट्रीय कीर्तिमान स्थापित किये हैं। श्रोत्रियजी को खेलकूद मे प्रारम्भ से ही काफी रुचि रही, इसलिये उन्होंने इस प्रवृत्ति को कभी शिथिल नही पडने दिया जिसके श्रेष्ठ परिणाम निकले।

महिला-मण्डल की छात्राए खेलकूद के क्षेत्र मे राजस्थान मे तो सर्वप्रथम हैं ही, राष्ट्री-स्तर पर भी उन्होंने अनेक खेलो मे कीर्तिमान स्थापित किये हैं। उन्होने अनेक राष्ट्रीय कीर्तिमानो को तोडा भी है।

श्रीलका, बर्मा और भारत की 'स्कूल-मीट्स' में महिला-मण्डल की भील छात्रा कुमारी सुन्दर ने कप्तानी की है। कूदें, दौडें और भाला फेंक आदि मे महिला-मण्डल की कन्याए सदैव आगे ही रही। जेवेलियन और डिस्कस मे कुमारी चमेली और कुमारी सुन्दर, हर्डल्स में कुमारी गगा, ऊची व लम्बी कूद मे कुमारी अवन्तिका ने सराहनीय कीर्तिमान स्थापित किये हैं।

वालीवाल की राष्ट्रीय छात्रा-प्रतियोगिता मे महिला-मण्डल की छात्राओं ने दूसरे स्थान पर विजयश्री प्राप्त की। राष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ी और खेलो के शौकिन आज इन छात्राओ तथा महिला-मण्डल



के नाम और उनके प्रदर्शन से भली भांति परिचित हैं। अनेक प्रमुख पत्रो मे इन विजेता छात्राओ के चित्र और प्रशसाएं प्रकाशित हुई।

अन्य प्रवृत्तियां–

महिला-मण्डल में हर स्तर पर स्वस्थ लोकतंत्रीय जीवन की भावना को पनपाने के प्रयत्न प्रारम्भ से ही किये जाते रहे हैं। भाईचारा और सेवा-भावना इस सस्था के आदर्श वाक्य हैं। प्रत्येक विभाग मे चुनाव-पद्धति से छात्रा-सभाओ का गठन किया जाता है, फिर केन्द्रीय छात्रा-सभा का गठन होता है। स्कूल का आतरिक सचालन, अनुशासन, कैम्प तथा अपराध आदि के मामलो में छात्राओ की पचायतों के अधिकार सौंपे गये है। छात्रा-ससद का विधिवत् उद्‌घाटन कराया जाता है। छात्रा परिवार द्वारा निर्धन छात्राओ को भी सहायता पहुंचाई जाती है। निर्धन-छात्र–कोष से निर्धन छात्राओ को पुस्तकें व अन्य साधनों की सहायता पहुंचाई जाती है।

नृत्य, सगीत, लोक सगीत, नाटक तथा 'मौक संसद' आदि के विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किये, जाते हैं। कलाकारो, कवियों, विचारकों, समाज सुधारको और राष्ट्रीय नेताओ के प्रवचन एवं प्रदर्शन आयोजित किये जाते हैं।

प्रशासनिक मामलो पर विभागीय अध्यक्षो की एक अलग समिति है जो प्रशासन देखती है और समस्याओं का निबटारा करती है।

पत्रिका एवं चित्रकला प्रदर्शनी–

महिला-मण्डल ५ बार अखिल भारतीय पत्र-प्रदर्शनी आयोजित कर चुका है जिसमे १००० से १२०० तक विभिन्न भाषाओ के पत्र प्रदर्शित किये गये हैं।

महिला-मण्डल ने राजस्थान के सृजनशील प्रमुख कलाकारों की भी एक भव्य प्रदर्शनी आयोजित की। इसमे पिलानी के सेवारत श्री गौराग बाबू, महिला-मण्डल के श्री सान्याल और विद्याभवन के श्री गोवर्धन जोशी के अनेक चित्र प्रदर्शित किये गये। इस अवसर पर चित्रकारो के सक्षिप्त-जीवनवृत्त और उनकी साधना को प्रकाशित करने वाली पुस्तिका का भी प्रकाशन किया गया।

अनेक शिविर–

महिला-मण्डल ने अपने ३६ वर्ष के कार्यकाल में अनेक शिविरों के आयोजन किये।

जयपुर के कांग्रेस अधिवेशन से पूर्व राजस्थान की स्वयसेविकाओ का शिविर महिला-मण्डल मे ही सम्पन्न हुआ जो एक माह तक चला। इसमें सपूर्ण राजस्थान की ३५ महिलाओ ने भाग लिया।

सेवा–दल कि अखिल भारतीय रैली मे मण्डल की छात्राए भोपाल गई और परेड मे प्रथम स्थान प्राप्त किया। सास्कृतिक कार्यक्रमो मे भी उनका स्थान द्वितीय रहा।



छात्राएं जयपुर, उदयपुर, विजयनगर और सांगानेर के सेवा-दल-शिविरों में उच्च प्रशिक्षण के लिये गईं और उल्लेखनीय सफलताएं प्राप्त की।

हाई-स्कूल की छात्राओं का १ माह का ग्राम-सेवा-शिविर एकलिंगपुरा में आयोजित किया गया। श्री वत्सवलाल शर्मा इस शिविर के संयोजक थे।

जोधपुर, आबू और विद्याभवन उदयपुर के स्काउट-कैम्पों मे मण्डल की छात्राओं ने भाग लिया।

एन० सी० सी० महिला-मण्डल की छात्राओं की नियमित प्रवृत्ति रही। शूटिंग-प्रतियोगिता में महिला-मण्डल राजस्थान में तो प्रथम रहा ही, उसकी छात्राओं, कुमारी भगवती और कुमारी गुलाब ने अखिल भारतीय प्रतियोगिताओं के भी प्रथम पुरस्कार जीते। लक्ष्य भेद की प्रतियोगिताओं में महिला-मण्डल की भील-छात्राएं कभी पीछे नहीं रहीं। संस्था के स्तर पर उनकी इन कलाओं के विकास के हर सम्भव अवसर प्रदान किये गये।

गांधी-शताब्दी-समारोह–

गांधी-शताब्दी समारोह के राष्ट्रव्यापी आयोजन मे महिला-मण्डल ने भी प्रवृत्तियों का एक महत्त्वपूर्ण पृष्ठ जोड़ा। २ से ४ अक्टूबर तक त्रिदिवसीय आयोजनों मे कविता-प्रतियोगिता, कवि-गोष्ठी, ललित-कला-प्रतियोगिता, निबन्ध-प्रतियोगिता तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किये गये।

महिलाओं और बच्चों के लिये शिविर आयोजित किये गये जिनमें उन्हें राष्ट्र और मानवता के प्रति दायित्वों का मार्गदर्शन किया गया। समारोह की महिला-प्रवृत्तियों का प्रमुख केन्द्र 'महिला-मण्डल ही बना। गांधी-स्मारक-ट्रस्ट की ओर से आयोजित समारोहों में भी संस्था का योगदान रहा।

अनेक-शिविर–

चित्तौड़गढ़ पर रानी पद्मिनी के ऐतिहासिक महलों में 'महिला-मण्डल' ने एक महीने के एक शिविर का आयोजन किया। श्री सत्यदेव परिव्राजक ने शिविर का उद्घाटन किया। दीक्षान्त भाषण राजस्थान के राज्यपाल डॉ. सम्पूर्णानन्द जी ने दिया।

एक और शिविर, जिसकी अवधि भी एक माह की थी, राजस्थान में आयोजित किया गया। मि० थारपुते के संचालन में यहां 'गर्ल्स गाइड्स' को प्रशिक्षित किया गया। इस शिविर में राज्य के शिक्षा-विभाग ने भी अपनी अध्यापिकाएं भेजीं। तत्कालीन शिक्षा-निदेशक श्री लक्ष्मीलालजी जोशी ने इस शिविर की उपलब्धियों पर संतोष प्रकट किया।

कामलीगाट मे भी अध्यापिकाओं के एक पन्द्रह दिवसीय शिविर का आयोजन किया गया। सालेरा (मावली तहसील) मे एक महीने का शिविर आयोजित किया गया। महिला-मण्डल ने

अपना वार्षिकोत्सव भी उस अवसर पर सालेरा में ही मनाया। इस अवसर पर ग्रामीणों को नई चेतना की जानकारी देने के लिये एक विशाल प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया।

जयपुर जिले मे गोनेर स्थान पर एक विशाल शिविर राज्य के शिक्षा विभाग की ओर से आयोजित किया गया। प्रौढ-शिक्षण के लिये अधिकारियो को प्रशिक्षित करने को इस शिविर मे अखिल भारतीय प्रौढ-शिक्षण सघ के मत्री श्री शालिग्राम पथिक को विशेष रूप से आमत्रित किया गया। महिला-मण्डल की ५ बहिनो को इस शिविर मे भेजा गया।

खेल-कूद, व्यायाम आदि के प्रशिक्षण के लिये भी महिला-मण्डल ने तीन वर्ष तक प्रतिवर्ष अपनी अध्यापिकाओ को हनुमान-व्यायामशाला अमरावती भेजा। अमरावती के १०० व्यायामशास्त्रियो को प्रदर्शन के लिये उदयपुर भी आमंत्रित किया गया। उनके प्रदर्शन एवं व्यय की व्यवस्था महिला-मण्डल ने की। उनके आने जाने का मार्ग-व्यय भी वहन किया। और उनके लिये धन-सग्रह भी किया। इन व्यायाम-शास्त्रियो को राजस्थान की यात्रा भी करवाई गई। उनका एक प्रदर्शन उदयपुर के राजमहल के सामने के विशाल प्रागण मे भी करवाया गया।

'मानव-भारती' के मसूरी व दिल्ली केन्द्रों मे माण्टेसरी-पद्धति के प्रशिक्षण के लिये भी महिला-मण्डल ने अपनी अध्यापिकाएं भेजी।

मॉण्टेसरी-अल्पकालीन-प्रशिक्षण—

मेडम मॉण्टेसरी के प्रमुख शिष्य और 'कोस्मिक एजुकेशन सोसायटी' के निदेशक प्रो० भावरे के मार्गदर्शन मे महिला-मण्डल उदयपुर मे भी माण्टेसरी शिक्षण का तीन माह का एक अल्पकालीन प्रशिक्षण-शिविर आयोजित किया गया। इसमे सस्था और नगर की अनेक शिक्षिकाओ एवं छात्राओ ने भाग लिया। इन प्रशिक्षित महिलाओ से आगे जाकर नगर की बाल-शिक्षण-प्रवृत्तियो का स्तर उन्नत हुआ।

इस प्रशिक्षण मे ५० स्त्री पुरुषो ने भाग लिया। सत्रान्त समारोह मे राजस्थान विधानसभा के तत्कालीन अध्यक्ष श्री रामनिवास मिर्धा ने दीक्षान्त भाषण दिया।

महिला-मण्डल से एस० टी० सी०, जे० टी० सी०, बी० एड० आदि के प्रशिक्षण के लिये भी प्रति-वर्ष बहिनो को भेजा जाता है।

शिक्षा-विभाग की विचार-गोष्ठियों में भी महिला-मण्डल का योगदान सदैव रहा है।

अनेक यात्राएं—

महिला-मण्डल-परिवार ने अपनी शैक्षणिक यात्राएं भी अनेक की हैं। कलकत्ता, बम्बई, पूना, वृन्दावन, दिल्ली, जयपुर, चण्डीगढ, शिमला, कालका, मथुरा, अजमेर, चित्तौड़ बेंगलोर, मद्रास, पटना, हैदराबाद, भोपाल, केरल, जोधपुर, बीकानेर, कोटा, आगरा, कटक, कोट्टायम, बनारस, कानपुर, नागपुर,



इलाहाबाद, इन्दौर, कोल्हापुर आदि नगरों की यात्राए सम्पन्न की जा चुकी हैं और महिला-मण्डल का सदेश पहुचाया जा चुका है।

महिला-मण्डल-सदेश

सस्था की ओर से 'महिला-मण्डल-सदेश' नामक एक मासिक पत्र भी प्रकाशित किया गया जो कुछ महीनो तक ही निकल सका। यो विद्यालय-पत्रिका, सस्था-विवरण-पत्रिका, अवसरोचित प्रचार-साहित्य, आय-व्यय पत्रक और वार्षिक-प्रगति-विवरण प्रतिवर्ष प्रकाशित होते रहते हैं जिन्हे देश भर मे फैले हुए सस्था के हितैषियो और सहायको को नियमित रूप से पहुचाया जाता है। महिला-मण्डल का प्रत्येक सहयोगी सस्था की प्रगति के नवीनतम लेखे-जोखे से परिचित रक्खा जाता है और इस सम्बन्ध मे श्रोत्रियजी द्वारा विशेष सतर्कता और तत्परता बरती जाती है।

अनेक विशिष्ट अतिथि–

महिला-मण्डल के अनेक विशेष समारोहों एवं प्रवृत्तियों में उद्घाटन या अध्यक्षता या विशिष्ट मार्गदर्शन के लिये जिन अनेक महानुभावों ने इस लम्बे कार्यकाल में पदार्पण किया, उनमें से कुछ के नाम यहा प्रस्तुत हैं—

१. श्री चक्रवती राजगोपालाचारी
२. „ यू एन ढेबर
३. „ बसन्तलाल मुरारका
४ श्रीमती हसा मेहता
५ श्री भागीरथ कानोडिया
६. श्रीमती कमला चटोपाध्याय
७ सत विनोबा
८ श्री बृजलाल बियाणी
९ श्रीमती राधादेवी गोयनका
१०. श्री गोकुलभाई भट्ट
११. „ जयनारायण व्यास
१२ श्रीमती मदालसा अग्रवाल
१३ डॉ कालूलाल श्रीमाली
१४. श्रीमती गोमतीदेवी भार्गव
१५. „ मासूमा बेगम
१६. „ मथाई
१७. श्रीमती दुर्गाबाई देशमुख
१८. श्री सिद्धराज ढड्ढा
१९. „ कन्हैयालाल खादीवाला
२०. „ मोहनलाल सक्सेना
२१. „ बलवन्त सावलेराम देशपांडे
२२. „ कृष्णदास जाजू
२३. „ सत तुकडोजी
२४. श्रीमती जानकीदेवी बजाज
२५. श्री जैनेन्द्रकुमार
२६. „ ठक्कर बापा
२७. „ काशीनाथ त्रिवेदी
२८. „ स्वामी वृत्तानन्द
२९. श्रीमती इन्दिरा गांधी
३०. मणिबहिन गांधी
३१. डॉ. सम्पूर्णानन्द
३२ श्री सत्यदेव परिव्राजक
३३. „ मोहनलाल सुखाड़िया
३४. श्रीमती इन्दुबाला सुखाड़िया



३५. श्री हीरालाल कोठारी
३६. „ हीरालाल देवपुरा
३७. „ मोहनलाल जालान
३८. „ नाथूराम मिर्धा
३९. „ रामनिवास मिर्धा
४०. „ निरंजननाथ आचार्य
४१. „ माणिक्यलाल वर्मा
४२. „ डा. जी एस. महाजनी
४३. श्रीमती महाजनी
४४. श्री हीरालाल शास्त्री
४५. श्रीमती रतन शास्त्री
४६. श्री प्रेमनारायण माथुर
४७. „ शंकर सहाय सक्सेना
४८. महाराणा श्री भगवतसिंहजी
४९. श्री शिवचरण माथुर
५०. भोगीलाल पड्या
५१. श्री हरिभाऊ उपाध्याय
५२. श्री रामनारायण चौधरी
५३. श्री श्रीराम भारतीय
५४. श्रीमती प्रभा-मिश्रा
५५. श्रीमती सुमित्रासिंह
५६. राव नारायणसिंह मसूदा
५७. रानी उर्मिलादेवी मसूदा
५८. श्री केसरीलाल बोर्दिया
५९ डॉ मोहनसिंह मेहता
६०. श्री रघुवरदयाल गोयल
६१. „ मदनमोहन वर्मा
६२. डॉ. बी. एन. शर्मा
६३. श्री हमेरलाल मुरडिया
६४. श्रीमती रामेश्वरी नेहरू
६५. श्री जनार्दनराय नागर
६६. „ भीमसेन
६७. वैद्यरत्न भवानीशंकर शर्मा
६८. श्री नाथूलाल जैन
६९ „ बलवन्तसिंह मेहता
७०. „ भूरेलाल बया
७१. „ पी. पी सिंघल
७२. „ तेजसिंह मेहता
७३. „ हरिदेव जोशी
७४. „ पी. डी. माथुर
७५. महाराज शिवदानसिंहजी
७६. श्री भगवतसिंह मेहता
७७. श्री गोपाल मोहता
७८. श्रीमती रंगास्वामी
७९. राजकुमारी अमृतकौर

कुछ और विशिष्ट प्रवृत्तियां : सिंहावलोकन–

१. महिला-मण्डल द्वारा अपने पुस्तकालय की स्थापना के बाद दूसरा 'पुस्तक-दान-आन्दोलन' सन् १९४३ में चलाया गया। विद्वानों के घर-घर जाकर भारी संख्या में पुस्तकें प्राप्त की गई। इस आन्दोलन में करीब ५००० पुस्तकों की वृद्धि हुई।

२. फ़रवरी १९६८ में 'जागृत महिला' पत्रिका का प्रथम अंक 'कस्तूरबा-स्मृति-अंक' निकाला गया। इसके प्रबन्ध संपादक थे श्री शलभ और श्री उत्सवलाल शर्मा।

३. अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद् के राजस्थान प्रांतीय कार्यालय की संयोजिका श्रीमती कमला श्रोत्रिय नियुक्त हुईं। उन्होंने अप्रेल सन् १९६७ में राजस्थान व्यापी महिला-दिवस का आयोजन किया।



प्रांतीय स्तर पर आयोजित इस सम्मेलन में निम्न प्रस्ताव अनेक स्थानों पर पारित किये गये।

(अ) बालिग मताधिकार के अनुसार देश के प्रत्येक राज्य मे निर्वाचित सरकारो का गठन हो।

(ब) महिलाओ और पुरुषो को समान अधिकार दिये जाय।

(स) राजस्थान की सभी रियासतो का एकीकरण हो।

(द) सामन्ती जुल्मो की निन्दा की गई और पीडितो के प्रति सहानुभूति प्रकट की गई।

४. स्कूल-छात्र-सघ के गठन मे पहल करते हुए 'महिला-मण्डल' में छात्राओं के प्रथम मंत्रिमण्डल का गठन सन् १९४७ के शैक्षिक-सत्र मे किया गया।

५ २१–२२ और २३ फरवरी १९४७ को 'कस्तूरबा–स्मारक–समारोह' का भव्य आयोजन किया गया। इसके अध्यक्ष थे तत्कालीन पालिकाध्यक्ष श्री हीरालाल कोठारी।

६. अप्रेल सन् १९४५ में साक्षरता-दिवस के अध्यक्ष थे श्री माणिक्यलाल वर्मा और पुस्तकालय-दिवस-समारोह की अध्यक्षता की श्री भगवतसिंह मेहता ने।

७ सन् १९४५ में महिला-मण्डल में शिशु-गृह की स्थापना की गई जहा माताओं के साथ आने वाले छोटे बच्चो की सभाल, सफाई खेल और शिक्षण की व्यवस्था की गई।

८ सन् १९४५ मे महिला-मण्डल का वार्षिक व्यय ३५०००) रु० था।

९ कस्तूरबा ट्रेनिंग विद्यालय के प्रथम वर्ष के सत्रान्त-समारोह की अध्यक्षता की श्रीमती रगास्वामी एम० ए० ने।

१० फरवरी सन् १९४५ मे चतुर्थ वार्षिक समारोह की अध्यक्षता की श्रीमती हसा बहिन मेहता ने। प्रौढ़ शिक्षा परिषद् की अध्यक्षा श्रीमती पुष्पा बहिन विशिष्ट अतिथि थी। तब 'महिला-उद्योगशाला' का उद्घाटन किया श्री बसतलाल मुरारका ने और अध्यक्षता की सेठ श्री श्रीगोपाल मोहता ने।

११ सन् १९४९ मे महिला-मण्डल के नवें वार्षिकोत्सव पर महिला-सम्मेलन का उद्घाटन किया श्रीमती रतन शास्त्री ने और अध्यक्षा थी श्रीमती सरस्वतीदेवी मोहता। कला-प्रदर्शन-समारोह की अध्यक्षता की राज्य के तत्कालीन वितरण मत्री श्री रघुवरदयाल गोयल ने।

प्रमुख समारोह की अध्यक्षा थी तत्कालीन स्वास्थ्य मत्री सुश्री राजकुमारी अमृतकौर।

१२. २० फरवरी १९५० को 'गाधी स्मृति दिवस' के अवसर पर महिला-मण्डल औषधालय की स्थापना की गई। औषधालय की स्थापना और सचालन का श्रेय वैद्यरत्न श्री भवानीशकर शर्मा का रहा।

१३ राजस्थान प्रातीय कांग्रेस के महिला विभाग की सयोजिका के रूप में श्रीमती कमला श्रोत्रिय ने कांग्रेस के जयपुर-अधिवेशन के लिये उदयपुर में स्वय-सेविकाओ का प्रातीय प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया। दीक्षान्त भाषण किया सत विनोबा ने।

महिला विभाग की ओर से एक 'राजपूताना महिला-सम्मेलन' का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षा थी श्रीमती गोमतीदेवी भार्गव और उद्घाटन किया श्रीमती जानकीदेवी बजाज ने। स्वागताध्यक्ष थी श्रीमती नारायणीदेवी वर्मा और सयोजिका थी श्रीमती कमला श्रोत्रिय।

१४. 'शरणार्थी महिलाश्रम' का उद्घाटन-सन् १९४९ में किया तत्कालीन पुनर्वास मंत्री श्री मोहनलाल सक्सेना ने। यह कैम्प गोवर्धन विलास मे चलाया गया और तत्कालीन गवर्नर जनरल श्री सी. राजगोपालाचारी ने इसकी उपलब्धियो की सराहना की। आश्रम की कार्य समिति के अध्यक्ष थे श्री माणिक्यलाल वर्मा।

१५. महिला-मण्डल के १० वें वर्ष की समाप्ति पर महिला-मण्डल ने जयशकर 'प्रसाद' के नाटक 'ध्रुवस्वामिनी' का अभिनय किया। नाट्य-मच के क्षेत्र मे यह प्रदर्शन विशिष्ट और ऐतिहासिक गिना गया।

१६ सन् १९४८ मे कार्यकर्त्रियो के प्रशिक्षण के लिये एक माह का 'राजपूताना कार्यकर्त्री और स्वयसेविका शिक्षण-शिविर आयोजित किया गया। संयोजिका थी श्रीमती कमला श्रोत्रिय।

१७. ३१ जुलाई १९४७ को श्री गोकुलभाई भट्ट का, उनकी विशिष्ठ सेवाओ के लिये महिला-मण्डल में अभिनन्दन किया गया।

१८. २२ फरवरी १९४८ को चतुर्थ 'कस्तूरबा-स्मृति दिवस' पर बा के आदर्श जीवन का परिचायक पोस्टर भारी सख्या में छपवाकर बटवाया गया।

१९. महिला-मण्डल के १४ वें वार्षिकोत्सव के अवसर पर आयोजित शिक्षक-सम्मेलन के संयोजक थे श्री शेष चोरडिया।

२०. सन् १९५४ मे बीजणवास मे कृषि स्वास्थ्य प्रदर्शनी एव विभिन्न प्रतियोगिताए आयोजित की गई। २३-२४ सितम्बर को विराट किसान-मेला आयोजित किया गया जिसका उद्घाटन किया तत्कालीन माल मत्री श्री मोहनलाल सुखाडिया ने।

२१. १ मई १९५३ को नृत्य-सगीत समारोह मे प्रसाद, बच्चन, महादेवी के साहित्यिक सरस गीतो का संगीत कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। प्रमुख समारोह मे आशीर्वाद मिला तत्कालीन मुख्यमन्त्री श्री जयनारायण व्यास का।

२२ प्रदेश-कांग्रेस-प्रतिनिधियों के उदयपुर सम्मेलन के अवसर पर २६ सितम्बर १९५२ को नृत्य-कला प्रदर्शन का आयोजन प्रतिनिधियो के सम्मान मे महिला-मण्डल मे किया गया।

२३. १५ दिसम्बर १९५१ को नगर की प्रमुख महिलाओ की एक सभा करके उन्हे अकाल-पीडितों के प्रति उनके दायित्व के लियें सचेत किया गया। सयोजिका थी श्रीमती नानीदेवी राव।

२४ १४ मई १९५२ को शिक्षक-सम्मेलन मे शिक्षण-पद्धति, नवीन पाठ्यक्रम, परीक्षा-प्रणाली और वैज्ञानिक शिक्षण जैसे विषयो पर महत्त्वपूर्ण चर्चाएं हुईं। सयोजक थे श्री त्रिलोकचन्द जैन।

२५. २८ दिसम्बर से ६ जनवरी '५८ तक नाहर मंगरा मे एक रोगी-सेवा-शिविर' का आयोजन किया गया। प० भवानीशकर जी की देख रेख मे ५०००) रु० की दवाईया वितरित की गईं।

२६ नाहर मगरा के महिला-शिविर में स्त्री-शिक्षा, श्रमदान, स्त्री-पुरुषो के कर्त्तव्य-अधिकार, ग्राम विकास, भूदान, कृषि-समस्याएं, रोगी-सेवा, स्वावलम्बन, छूआछूत, पर्दा-प्रथा, समाजवाद, सर्वोदय,



स्वदेशी भावना, स्वराज्य, कुटीर उद्योग आदि विषयों पर भाषणमाला आयोजित की गई।

२७ सन् १६५६ मे खेमली-स्टेशन के पास आसणा ग्राम मे विराट किसान सम्मेलन आयोजित किया गया। तभी खेमली मण्डी कमेटी का निर्माण हुआ। उद्घाटन किया तत्कालीन मुख्यमन्त्री श्री मोहनलाल सुखाडिया ने।

२८ मावली तहसील के व्यापक ग्रामोत्थान कार्यक्रम की केवल १ माह की उपलब्धिया रही—

(क) मावली क्षेत्र के १३३ गावो की सेवा की गई।

(ख) आरोग्य-शिविरो मे ३२ चिकित्सको ने स्वास्थ्य-सेवा की।

(ग) ७१३६ रोगी प्रविष्ट हुए जिन्हें ७०००) रु० की दवाइँया वितरित की गई।

(घ) १६ गावो का रोग-सर्वे किया गया।

(ङ) ७५०० व्यक्तियो को दूध वितरित किया गया।

(च) २५००० व्यक्तियो ने मद्य-निषेध के प्रतिज्ञा-पत्र भरे।

(छ) २५००० व्यक्तियो को साक्षर किया गया।

(ज) १४० गाव मे पानी की सुविधाए प्रदान की गईं और रोगो का नाश किया गया।

२६ ६ से १० नवम्बर १६५५ तक मावली तहसील मे विराट किसान-मेला व प्रदर्शनी आयोजित की गई। इसी अवसर पर महिला-मण्डल के १८ वें वर्ष का शुभारम्भ किया श्री मोहनलाल सुखाडिया ने।

इस अवसर पर श्रीमती कमला बेनीवाल, भोगीलाल पड्या, गोकुलभाई भट्ट, बद्रीप्रसाद गुप्त, निरजननाथ आचार्य, जनार्दनराय नागर, बालगोविन्द तिवारी और रामगोपाल गुप्ता की उपस्थिति भी उल्लेखनीय रही।

३० १३ मई १६६६ से एक वर्ष तक महिला-मण्डल ने भारतीय सविधान-प्रचार-आन्दोलन चलाया। चार पृष्ठ की एक विज्ञप्ति मे सविधान की आवश्यक जानकारी सकलित करके बटवाई गई। राष्ट्र-गीत, राष्ट्र-ध्वज और सविधान के मूलभूत मुद्दो की जानकारी दी गई। गाव-गाव में दीवारो पर ध्येय वाक्य लगाये गये। इस कार्य मे विशेष योगदान रहा तत्कालीन शिक्षा-उपनिदेशक डॉ शम्भू-लाल शर्मा का।

३१ महिला-मण्डल की सहायतार्थ 'तारा कल्प पीठ उदयपुर' की ओर से श्री बुद्धदेव चटोपाध्याय और उनके दल ने १४ मई १६६८ को भव्य सास्कृतिक कार्यक्रम का प्रदर्शन किया।

३२ सन् १६६७ में श्री मगन पथिक और श्रीमती चारुलता पथिक की देख-रेख मे अमरीकी शाति सेना के ३० स्वयसेवको का दल कृषि-कार्यों के अध्ययन हेतु उदयपुर आया। २६ अगस्त को उनके सम्मान मे एक सास्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया गया।

३३ महिला-मण्डल की ओर से अपने सहयोगियो, हितैषियो और मार्गदर्शको प्रतिवर्ष को राखी भेजकर सस्था के प्रति उनके स्नेह की रक्षा की माग की जाती है। राखी के साथ भेजने वाले सदेश की कुछ पंक्तियां निम्न प्रकार हैं—

"भाई बहिनों का यह उत्सव,
परम प्रेम की है झांकी ।
भैया पर है भार बहिन का,
याद दिलाती है राखी ।"

३४. महिला-मण्डल के रजत जयंती समारोह के अवसर पर आयोजित कार्यकर्त्ता सम्मेलन का उद्घाटन किया मुख्यमंत्री श्री मोहनलाल सुखाड़िया ने । महिला-मण्डल के भावी कार्यक्रमों पर चिन्तन के अतिरिक्त सम्मेलन में समाज के गिरते मूल्य और शिक्षक कार्यकर्त्ता का दायित्व, सार्वजनिक कार्यकर्त्ताओं की स्थिति, रचनात्मक क्षेत्र की समस्याएं, समाज-संस्थाएं और सरकार-आदि विषयों पर गंभीर विचार-विमर्श हुआ ।

एक गतिशील संस्थान-

महिला-मण्डल आज भी एक निरन्तर गतिशील संस्थान के रूप में सेवा-रत है । ८० कार्यकर्त्ताओं, जिनमें अधिकांश बहिनें हैं, का यह बड़ा परिवार आज भी अपनी विभिन्न प्रवृत्तियों के माध्यम से निरन्तर सक्रिय है । अनेक बहिनें महिला-मण्डल को ही अपने जीवन का लक्ष्य मानकर सेवाओं में सक्रिय हैं ।

श्री दयाशंकर श्रोत्रिय ने तो सार्वजनिक-सेवा का व्रत लेकर ही देश भर के सेवा-कार्यों का घूम-घूमकर अनुभव प्राप्त किया था, इसलिये उनका शेष जीवन तो महिला-मण्डल को समर्पित है ही । वे आज भी एक उत्साही नौजवान का हौसला लेकर प्रवृत्तियों के संचालन एवं मार्गदर्शन तथा समयोपयुक्त नयी योजनाओं की क्रियान्विति में जुटे रहते हैं । वैद्यरत्न श्री भवानीशंकरजी का अटूट सहयोग और डॉ० मोहनसिंह मेहता का अखण्ड आशीर्वाद उन्हें आज प्राप्त है । श्री मोहनलाल सुखाड़िया और श्रीमती इन्दुबाला सुखाड़िया आज भी श्रोत्रियजी के इस असीम फलदायी संस्थान के प्रमुख आधार-स्तम्भ बने हुए हैं । श्रीमती सुखाड़िया ही आज महिला-मण्डल की अध्यक्षा हैं । श्रीमती कमला श्रोत्रिय ने अब भीलवाड़ा जिले के शाहपुरा क्षेत्र को अपना कार्य-क्षेत्र बना लिया है । भीलवाड़ा से श्रोत्रिय-परिवार के लम्बे और घनिष्ठ सम्बन्ध हैं । भीलवाड़ा ही श्रोत्रियजी की जन्मभूमि है, इसलिये इस क्षेत्र की सेवा भी श्रोत्रिय परिवार ने सदैव अपना बड़ा दायित्व समझा है ।

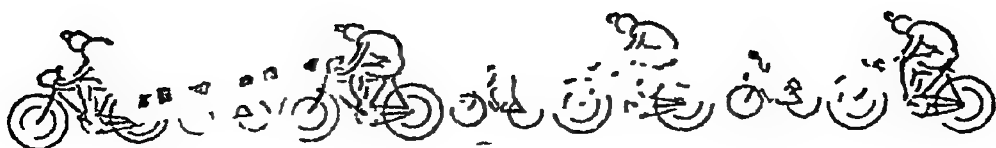
समय की मार से आज अनेक सार्वजनिक शिक्षण संस्थाओं की स्थिति चरमराने लगी है । राजकीय-सहयोग की सीमाएं दिनों दिन संकुचित होती जा रही हैं, दूसरी ओर जन-सहयोग की भावना और आर्थिक सहयोग में भी कमी पड़ती जा रही है । लेकिन महिला-मण्डल की स्थिति थोड़ी भिन्न है । इस संस्था ने राष्ट्र की नारी को लक्ष्य-बिन्दु बनाकर जिन क्रांतिकारी सेवाओं का सूत्रपात किया, और उसमें जो सिद्धियां अर्जित की, उनकी मान्यता और सम्मान आज भी अक्षुण्ण है । देश के जिन महान जन-सेवकों, शिक्षाविदों और धनपतियों से महिला-मण्डल और श्रोत्रियजी के सम्बन्ध एक बार स्थापित



हुए वे आज भी अपनी उन्हीं स्थितियों पर खड़े हैं। महिला-मण्डल का प्रचार-विभाग उनसे निरन्तर सम्पर्क बनाये रहता है और उन्हें संस्था की प्रगति तथा समस्याओं की निरन्तर जानकारी देता रहता है। फलस्वरूप महिला-मण्डल की धन-संग्रह-टोली जब भी अपनी यात्रा पर निकलती है तो उसे पर्याप्त प्रोत्साहन और सहयोग प्राप्त होता है।

जन सहयोग के अनुपात में आज भी महिला-मण्डल की आवश्यकताएं अधिक हैं। यह स्वाभाविक भी है क्योंकि राष्ट्रीय स्तर पर आज भी समस्याओं की कमी नहीं है। प्रत्येक कार्य एक विशाल और व्यापक कार्यक्रम मांगता है, लेकिन महिला-मण्डल का संकल्प आज भी अगाढ और अडिग है। बाधाओं को पार करते हुए मंजिल की ओर बढ़ते रहना ही जीवन है।

हमारी कामना है कि जन-कल्याण में सदैव संलग्न 'महिला-मण्डल' का यह कारवां निरन्तर चलता रहे, उसे नित्य नई सिद्धियां मिलें, उसे संकल्पित कार्यकर्ता, भाई बहिनों की सेवाएं प्राप्त होती रहें और इसके संस्थापक श्री दयाशंकर श्रोत्रिय, उनकी वरिष्ठ समाज-सेविका पत्नी श्रीमती कमला श्रोत्रिय और मण्डल-परिवार को दीर्घजीवन तथा जन-सेवा के व्यापक अवसर प्राप्त हों।



महिला-मण्डल, उदयपुर के संरक्षक

१.	श्रीमती विजया लक्ष्मीजी	उदयपुर
२.	श्रीमती कमलाजी श्रोत्रिय	उदयपुर
३.	श्री सेठ घनश्यामदासजी बिडला	कलकत्ता
४.	" सेठ भागीरथजी कानोडिया	कलकत्ता
५	डॉ० मोहनसिंहजी मेहता	उदयपुर
६.	श्री लक्ष्मीलालजी जोशी	जयपुर
७.	" महाराणा भगवतसिंहजी	उदयपुर
८.	" सेठ लक्ष्मीनिवासजी बिड़ला	कलकत्ता
९.	" सेठ मोहनलालजी जालान	कलकत्ता
१०.	" शंकरसहायजी सक्सेना	जयपुर
११.	" सेठ सत्यनारायणजी नाथानी	भीलवाडा
१२.	" रुक्मानन्दजी खेमका	दिल्ली
१३.	" वैद्य भवानीशंकरजी	उदयपुर
१४.	" सेठ दामोदरलालजी मानसिंहका	भीलवाडा
१५.	" सेठ मँगतूरामजी जयपुरिया	कलकत्ता
१६.	" सेठ रंगनाथजी बाँगड़	कलकत्ता



१७	श्री सेठ शान्तिप्रसादजी जैन	नई दिल्ली
१८	" सेठ गजाधरजी सोमाणी	बम्बई
१९	" सेठ पुरुषोत्तमजी रूंगटा	बम्बई
२०.	" सेठ बृजमोहनजी बिड़ला	कलकत्ता
२१.	" सेठ रामकुमारजी अग्रवाल	कलकत्ता
२२.	" सेठ रामकुमारजी भुवालका	कलकत्ता
२३	" मोहनलालजी सुखाडिया	जयपुर
२४	" हमीरलालजी मुंडिया	उदयपुर
२५	" सेठ सोहनलालजी जाजोदिया	बम्बई
२६	" सेठ भँवरसिंहजी मोतीलालजी भँडारी	इन्दौर
२७	" सेठ पूनमचन्दजी भाई कमानी	बम्बई
२८	" सेठ किरीट भाई	रामगन्ज मन्डी
२९.	" सेठ एस० के० सोमैय्या	बम्बई
३०	" जी० डी० थिरानी	कलकत्ता
३१	श्रीमती इन्दुबालाजी सुखाडिया	जयपुर
३१.	" डॉ० शम्भूलालजी शर्मा	काकरोली

महिला-मण्डल उदयपुर की कार्यकारिणी

१९३५ से १९७० तक

अध्यक्ष, कार्यवाहक अध्यक्ष और उपाध्यक्ष—

१.	डॉ० मोहनसिंहजी मेहता	उदयपुर
२.	श्री लक्ष्मीलालजी जोशी	"
३	श्रीमती विजयलक्ष्मीजी नागर	"
४.	" कमलाजी श्रोत्रिय	"
५	श्री शंकरसहायजी सक्सेना	"
६.	" वैद्य भवानीशंकरजी	"
७.	श्रीमती रामेश्वरी देवीजी नेहरू	दिल्ली
८.	श्री हमीरलालजी मुर्डिया	उदयपुर
९.	श्रीमती इन्दुबालाजी सुखाड़िया	"
१०.	डॉ० शम्भूलालजी शर्मा	"
११.	" लालसिंहजी शक्तावत	"
१२.	मोहनलालजी सुखाड़िया	"
१३.	श्रीमती रूपकुंवरबाई मेहता	"



व्यवस्थापक और मन्त्री—

१ श्री दयाशंकरजी श्रोत्रिय उदयपुर

मन्त्री—

१ श्रीमती कमलाजी श्रोत्रिय उदयपुर
२ ,, नारायणदेवीजी ,,
३. ,, सुशीलाजी अग्रवाल ,,
४ ,, मोहनदेवीजी शर्मा ,,
५. ,, कान्ताजी भटनागर ,,
६ चम्पा बहिनजी श्रीवास्तव ,,
७ ,, चन्द्रकला बहिनजी ,,
८. , विद्यादेवीजी पानेरी ,,

अर्थ-मन्त्री—

१. श्री गणेशलालजी मेहता उदयपुर
२ ,, सेठ बन्शीलाल चौधरी ,,
३. ,, रोशनलालजी सामर, एडवोकेट ,,
४ ,, कालूलालजी खोदावत ,,
५. ,, सुन्दरलालजी शर्मा, एडवोकेट ,,

आय-व्यय निरिक्षक—

१ श्री गोट्टूलालजी निगटवाड़िया उदयपुर
२ ,, बिर्दीलालजी मेठी मैनेजर राजस्थान बैंक ,,
३. मेसर्स मिश्री लोढा एण्ड कम्पनी, चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट कलकत्ता
४. , सम्पत्तिलालजी बोहरा एण्ड कम्पनी उदयपुर
५ ,, बोहरा, भण्डारी एण्ड कम्पनी ,,
६. , बी० एन० शर्मा एण्ड कम्पनी

सदस्य-गण—

१.	श्रीमती कृष्णाजी दवे	उदयपुर
२.	,, ठा० विद्यादेवीजी	,,
३.	,, डा० रूद्राणी अम्माजी	,,
४.	,, मिस मिर्च	,,
५.	श्रीमती फूलकुँवर अग्रवाल	,,
६.	,, कमला कुमारीजी सोडानी	,,
७.	,, केसरदेवीजी वर्मा	,,
८.	,, चन्द्रमुखीदेवीजी	,,
९.	श्री नारायणलालजी वर्मा	,,
१०.	,, भैंरवलालजी गेलडा	,,
११.	श्रीमती कमला कुमारीजी राँका	,,
१२.	,, कृष्णादेवीजी व्यास	,,
१३.	,, कुन्जम्मालू बाईजी	,,
१४.	,, राधादेवीजी शर्मा	,,
१५.	श्री योगेशचन्द्र शर्मा	,,
१६.	,, यशवन्तसिंहजी मेहता	,,
१७.	,, बलवन्तसिंहजी मेहता	,,
१८.	श्रीमती श्रीराम बहिनजी	
१९.	,, सुमनदेवीजी भारतीय	,,
२०.	श्री मोहनलालजी वासवानी, एडवोकेट	,,
२१.	पद्मश्री देवीलालजी सामर	,,
२२.	श्रीमती डा० कंचन बहिनजी अग्रवाल	,,
२३.	,, नानीदेवीजी राव	,,
२४.	,, कमला बहिनजी शर्मा	,,
२५.	,, शकुन्तलादेवीजी शर्मा	,,
२६.	श्री कन्हैयालालजी खादीवाला	इन्दौर
२७.	,, बृजलालजी बियानी	आकोला
२८.	,, सेठ दामोदरलाजी मानसिंहका	भीलवाड़ा
२९.	,, सेठ मुरलीधरजी मानसिंहका	खण्डवा
३०.	,, जयदेवजी सिंहानिया, एडवोकेट	बम्बई
३१.	,, इस्माइलअलीजी बोहरा, एडवोकेट	उदयपुर
३२.	,, गुलजारीलालजी माथुर	,,



३३.	श्रीमती रामप्यारी देवीजी शास्त्री	कोटा
३४.	श्री सेठ रामकुमारजी अग्रवाल	कलकत्ता
३५	„ सेठ शिवकुमारजी भुवालका	बम्बई
३६	श्रीमती रानी उर्मिलाजी	मसूदा
३७	„ रानी लक्ष्मीकुमारीजी	रावतसर
३८.	श्री लालचन्दजी रांका	उदयपुर
३९	श्रीमती शीतलदेवीजी अग्रवाल	„
४०.	श्री सत्यप्रसन्नसिंहजी भण्डारी	„
४१	श्रीमती प्रीतम बहिनजी दीवान	„
४२.	„ टी. महादेवनजी	„
४३	„ जयलक्ष्मीजी द्रविड	„
४४.	„ केसरीलालजी बोर्दिया	„
४५.	„ बसन्तीलालजी सरूपरिया, एडवोकेट	„
४६.	„ मोहनलालजी सोनी	„
४७	श्रीमती विमलादेवीजी कोठारी	„
४८.	„ वैद्य दुर्गादेवीजी व्यास	„
४९	„ कुमुदकलाजी भण्डारी	„
५०	„ सुशीलाजी शर्मा	„
५१.	„ हगामीबाई गौड	„
५२.	श्री बाबू शुगनचन्दजी अग्रवाल	„
५३	„ गोपालसिंहजी मेहता	„
५४.	„ परसरामजी अग्रवाल	„
५५	„ नाथूलालजी अग्रवाल	„
५६	„ भूरालालजी बया	„
५७	श्रीमती भगीरथीदेवीजी मेनन	„
५८	„ गार्गीय बहिनजी सोलंकी	कलकत्ता
५९	श्री दुर्गाप्रसादजी गुप्ता	उदयपुर
६०.	„ सूरजमलजी जैन	„
६१.	श्रीमती सुलक्षाजी चोपडा	
६२.	„ सुशीलाजी दशोत्तर	„
६३	श्री बद्रीप्रसादजी जोशी	„
६४	„ मन्नालालजी सनाढ्य	„
६५.	„ सिराज महमदजी	„



६६.	श्री अर्जुनसिंहजी वर्मा	उदयपुर
६७.	,, बन्सीलालजी भटनागर	,,
६८.	,, कजोड़ीमलजी अग्रवाल	,,
६९.	, भँवरलालजी सिंगटवाड़िया	,,
७०.	,, दुर्गाशंकरजी दुर्गावत	,,
७१.	,, उत्सवलालजी शर्मा	,,
७२.	,, त्रिलोकचन्दजी जैन	,,
७३.	,, विश्वनाथजी व्यास	,
७४.	,, गजानन्दजी वैद्य	बम्बई
७५.	,, बजरंगलालजी उपाध्याय	,,
७६.	,, राधाकृष्णजी लाहोटी	,,
७७.	,, मंगतूरामजी जालान	कलकत्ता
७८.	,, काशीप्रसादजी मोदी	,,
७९.	,, यशवन्तसिंहजी लोढा	,,
८०.	,, जीवनसिंहजी मेहता	
८१.	,, हिम्मतसिंहजी जैन	,
८२.	,, जगन्नाथजी जालान	,,





महिला-मण्डल उदयपुर के कार्यकर्त्ताओं की सूचि

संस्था के आरम्भ से ग्रन्थ के प्रकाशन तक

क्र०स	नाम कार्यकर्ता	योग्यता	पद
१.	श्री अम्बालालजी	—	खजान्ची
२.	श्रीमती अमरकौर बहिन	एम ए, बी-एड	प्र अ. हाई स्कूल
३.	„ अनुसूया बहिन	मेट्रिक	स अ.
४.	„ आनन्दी बहिन भटनागर	मेट्रिक	„
५.	श्री ओंकारलाल बोहरा	एम. ए, सा. रत्न	„
६.	„ अर्जुनलालजी	मैट्रिक	पुस्तकालय
७	श्रीमती आशालता भटनागर	एम ए.	स अ
८.	„ अम्बाबाई		„
९	ओमप्रकाशजी पालीवाल	हायर सेकेण्डरी	स अध्यापक
१०.	श्रीमती अनीता कन्धारी	„ „ एस. टी. सी.	सा. अध्यापिका
११	श्री अनूपसिंहजी राजपूत	„ „	
१२.	श्रीमती ईश्वरीजी	हायर सेकेण्डरी, एस टी. सी	स. अध्यापिका
१३	इमामुद्दीनजी		संगीत अध्यापक
१४.	श्रीमती इन्दु मिश्रा	एम. ए.	स. अध्यापिका
१५	श्री उत्सवलालजी शर्मा	सा. रत्न एम ए.	प्रचार मंत्री और प्रधानाचार्य, हाई स्कूल
१६.	श्रीमती ऊषा कुमारी तनेजा	हा. से.	सा.
१७	प उमाशंकरजी द्विवेदी	सा र.	
१८.	श्रीमती ऊषा शर्मा	बी ए, बी-एड.	स अध्यापिका
१९.	„ उमा शर्मा	बी. ए.	„ „
२०.	उमा बड़िया	„	„ „
२१.	„ ऊषा वर्मा	„	„ „
२२.	श्री उदयलालजी गर्ग	मिडिल	स. अ लदानी स्कूल
२३	डा उदयसिंहजी भटनागर	एम. ए, पी-एच. डी.	साहित्य महाविद्यालय प्रधानाचार्य
२४	श्रीमती एलिस बहिन	बी. टी, बी-एड.	प्रधानाचार्य, मदनपोल केन्द्र
२५	„ एली अम्माजी	हायर सेकेण्डरी	स अध्यापिका क्राफ्ट



२६ श्री कुन्जबिहारीलालजी वैष्णव		स. अध्यापक
२७. „ कन्हैयालालजी मेहता	बी ए.	प्रचार विभाग
२८. „ कैलाशचन्द्रजी शर्मा	सा. र., एम. ए.	स. अध्यापक
२९. श्रीमती कमलादेवीजी अग्रवाल	एम ए, बी टी.	स अध्यापिका
३०. „ कमलाबाई भटनागर	प्रभाकर	स० अ०
३१. " कमला कुमारीजी श्रोत्रिय		सन्चालिका, अध्यक्षा और निरीक्षिका प्रौढ–शिक्षण
३२. " कमलाकुमारीजी बापणा	विदुषी एम. ए., बी-एड.	स. अ.
३३. श्री कन्हैयालालजी शर्मा	मेट्रिक	टाईपिस्ट
३४. " कन्हैयालाल	"	स. अ.
३५. श्रीमती कुरेशी फारूक	बी. एस-सी.	स. अ. गणित
३६. " कान्ता बहिन	बी. ए.	" "
३७. " कन्चन देवीजी अग्रवाल	इन्टर	" "
३८. " कैलाश बहिन व्यास	विशारद	स. अ. बाल मन्दिर सो. की. घाटी
३९. " कौशल्याकुमारीजी सोनेजा	पी. यु. सी., साईन्स	स. अ हा. से.
४०. श्री केशरसिंहजी सांरगदिवोत	बी. ए.	"
४१. " कल्याणसिंहजी		सा. अ. सगीत अध्यापक
४२. श्रीमती कमला बहिन गोनेरिया	बी. ए.	स. अध्यापिका
४३. " कमलादेवी शर्मा	विदुषी जे. टी. सी.	गृह व्यवस्थापिका
४४. " कमलाबाई राजपूत		
४५. " केशरदेवीजी बोल्या	मेट्रिक	स अ
४६. श्री केशरीलालजी श्रीमाली		क्राप्ट टीचर
४७. श्रीमती कमला बहिन उपाध्याय	विद्या-विनोदिनी, जे. टी. सी.	स. अध्यापिका
४८. " कामिनी बहिन झोटा	बी. एस-सी. (होम साईन्स)	स. अध्यापिका
४९. " कमला बहिन नलवाया	मेट्रिक	"
५०. " कृष्णा बहिन दवे	बी. ए.	"
५१. " कमला भण्डारी	मेट्रिक	"
५२. श्री कुशलसिंहजी	बी ए.	"
५३. श्रीमती कुसुमकुमारीजी	हा. से.	"
५३. " शकुन्तला बहिनजी बापणा	मेट्रिक	"
५५. " कलादेवी शर्मा	"	
५६. " कमलादेवी		"
५७. " कमलादेवी सिंघवी	टी. डी. सी.	



५८. श्री कन्हैयालालजी दायमा	एम. ए.	सहायक अध्यापक
५९ श्रीमती कान्ताजी चौधरी	एम ए, बी-एड.	"
६०. श्री किशनलालजी नागदा		
६१. श्रीमती कलावती ज्ञानी	पी. यु. सी.	"
६२ श्री कैलाशबिहारीजी वाजपेयी	एम. ए, बी-एड.	स. अध्यापक अंग्रेजी)
६३ " स्यालीलालजी सिंघवी	बी. ए.	स. अध्यापक
६४. श्रीमती खुमाणी बाई		
६५ श्री गजानन्दजी व्यास	सिलाई डिप्लोमा	सिलाई अध्यापक
६६ ,, गोपीलालजी शर्मा	हायर सेकेन्डरी	सहायक अध्यापक
६७ श्रीमती गणेशबाई गोस्वामी	जे. टी सी.	,, अध्यापिका
६८ ,, गोपीबाई	"	" "
६९. ,, गुलाबदेवी शर्मा	"	" "
७०. श्री गोविन्दशंकरजी	एम. ए.	,, अध्यापक
७१. ,, गहरीलालजी बोर्दिया	लन्दन रिटर्न	इन्चार्ज, हेन्डीक्राफ्ट व सिलाई विभाग
७२ श्रीमती गोदावरी बहिन पालीवाल-मेट्रिक		सहायक अध्यापिका
७३ श्री गंगानाथजी शर्मा		व्यायाम शिक्षक
७४. श्रीमती गंगादेवीजी	विदुषी	सहायक अध्यापिका
७५ ,, गुलाबबाई		
७६. ,, गुलाबदेवीजी नलवाया	विद्या-विनोदिनी	सहायक अध्यापिका
७७. ,, गीत बहिन अग्रवाल	मिडिल	"
७८. ,, गोपीदेवीजी		
७९ श्री गोविन्दसिंहजी भटनागर	बी० ए०., सीटी०	इन्चार्ज, कन्डेन्स्डकोर्स
८० श्रीमती गिरधारीबाई भटमेवाडा	विद्या-विनोदिनी	सहायक अध्यापिका
८१. श्री गणेशलालजी दशोरा		संस्कृत अध्यापक
८२ ,, गोपाललालजी		टाईपिस्ट
८३. ,, गिरधारीलालजी		तबलामास्टर
८४. ,, गंगाधरजी गोकलानी	एम० ए०	सहायक अध्यापक
८५ श्रीमती गीताबाई राजपूत		
८६ श्री गिरधरप्रकाशजी डांगी	हा० से०, एस० टी० सी०	सहायक अध्यापक
८७ , गोपीलालजी पालीवाल	बी० ए०	"
८८. श्रीमती गीताबहिनजी तिवारी	विद्या-विनोदिनी, जे० टी० सी०	,,
८९ ,, चन्द्रकलादेवीजी	साहित्य रत्न, सरस्वती	प्रधानाचार्या, प्राथमिकशाला
९०. ,, चम्पादेवीजी सुखवाल	विद्या-विनोदिनी	सहायक अध्यापिका

९१. श्री चाँदमलजी दोषी	एम. एससी.	सहायक अध्यापक
९२. „ चन्द्रगधर्वजी	सगीत विशारद	सगीत अध्यापक
९३. श्रीमती चुन्नीबाई राजपूत		
९४. „ चम्पाबाई राजपूत		
९५. श्री चन्द्रमोहनजी हाडा	एम. ए. बीएड.	सहायक अध्यापक
९६. श्रीमती चन्द्रमुखी बहिनजी	विदुषी	सहायक अध्यापिका और निरीक्षिका
९७ श्री चौथमलजी बापणा	बी ए.	सहायक अध्यापक
९८. „ चन्द्राजी शर्मा	पी. यू सी.	
९९ श्रीमती चन्द्राजी मटवानी	टी. डी. सी.	अध्यापिका
१००. श्री चेनशकरजी दोषी	हायर सेकेण्डरी	सहायक अध्यापक
१०१. „ चन्द्राजी जैन	मेट्रिक	„
१०२. „ चतुर्भुजजी सनाढ्य	एम ए., बी-एड	,
१०३. श्रीमती चित्राबाई		
१०४. श्री छोगालालजी शर्मा	मेट्रिक	लेखक
१०५. श्रीमती छायादेवी कपूर	एम. ए; बी. एड	सहायक अध्यापिका
१०६. „ जीवनलता तलेसरा	सेकेण्डरी एस. टी. सी.	„
१०७. „ जगदीशदेवीजी अग्रवाल	मेट्रिक	„
१०८. श्री जगन्ननाथजी उपाध्याय	साहित्यरत्न, टी. सी. सी.	सगीत अध्यापक
१०९. „ जगन्नाथजी गवर्व		
११०. „ जुगलकिशोरजी	इन्टर	सहायक अध्यापक, साहित्य महाविद्यालय
१११. श्रीमती जमनाबाई राजपूत		
२१२. श्री जेबुन्निसा सिन्धी	विद्याविनोदिनी	सिलाई अध्यापिका
११३. „ जेबुन्निसाजी	मेट्रिक	सहायक अध्यापिका
११४. श्री जमनालालजी डाणी		लेखक
११५. „ जमनालालजी बाहेती	एम. ए.	सहायक अध्यापक
११६. „ जिनेन्द्रकुमारजी	बी. ए.	„
११७. „ जानमोहम्मदजी खान	एम. एस-सी.	„
११८. „ जीवनसिंहजी नलवाया		खजान्ची
११९. „ जालमचन्दजी कोठारी		लेखापाल
१२०. „ जगदीशलालजी	बी. ए.	सहायक अध्यापक
१२१. श्रीमती जमनाबाई		
१२२. श्री जगदीशचन्द्रजी ओझा	इन्टर	लेखक
१२३ „ जेठवानीजी	एम. ए. बी-एड	सहायक अध्यापक



१२४	श्री जगदीशचन्द्रजी वर्मा		तबलामास्टर
१२५	श्रीमती जुबेदा खातून कुरेशी	बी. ए.	सहायकअध्यापिका
१२६.	श्रीमती झकारदेवीजी	मेट्रिक	,,
१२७	,, मिसेज डी० आस्टीन	मोन्टेसरी ट्रेन्ट	मुख्याध्यापिका बालमन्दिर
१२८.	श्री डायालालजी पाचाल	एस. टी. सी	सहायक अध्यापक
१२९	श्रीमती तारादेवीजी अग्रवाल	मेट्रिक	सहायक अध्यापिका
१३०,	,, तेजकुमारीजी शर्मा	मेट्रिक	,,
१३१.	,, ताराकुमारीजी टांक	बी ए.	,,
१३२	,, तेजकुमारीजी भंडारी	हाईस्कूल	,,
१३३	श्री तोलारामजी		
१३४.	,, तोलारामजी मेनारिया	मिडिल	
१३५	,, तुलसीरामजी शर्मा	एस. टी सी	स. अ.
१३६.	,, तनसुखलाल जी जैन	हायर सेकेण्डरी	सहायक अध्यापक
१३७.	श्रीमती देवकुंवरजी पालीवाल	विद्याविनोदनी	सहायक अध्यापिका
१३८	श्री दलेलसिंहजी नेनावटी	—	लेखापल
१३९	,, दयाशंकरजी श्रोत्रिय	साहित्य रत्न	मंत्री और व्यवस्थापक
१४०	,, देवकीनन्दनजी शर्मा	—	कृषि शिक्षक
१४१.	श्रीमती देऊबाई		
१४२.	,, दुर्लभदेवीजी सिरोया	बी. एस सी. (होम)	सहायक अध्यापिका
१४३.	,, दुर्गादेवीजी व्यास	मेट्रिक	,,
१४४.	,, देवयानी भटनागर	हायर सेकेन्डरी	,,
१४५.	श्री देवगन्धर्वजी		सगीत अध्यापक
१४६.	,, दयानन्दजी गधर्व		संगीत अध्यापक
१४७.	,, दिनेशचन्द्रजी भट्ट	बी. ए.	लेखक
१४८.	श्रीमती द्रोपदीबाई	—	—
१४९	,, दुलारीजी माथुर	बी. ए, बी-एड.	सहायक अध्यापिका
१५०.	श्री नानालालजी धनावत	—	अकाउन्टेन्ट
१५१.	श्रीमती नानीबाई राव	विद्याविनोदिनी	व्यायाम शिक्षिका
१५२.	श्री नर्वदाशंकरजी व्यास	—	प्रचारक
१५३	,, नन्दकुमारजी तिवारी	एम. ए.	प्रधानाचार्य हा से. स्कूल
१५४	,, नारायणसिंहजी	बी. एस-सी.	सहायक अध्यापक (गणित)
१५५.	,, नरेन्द्रजी व्यास	एम ए.	सा मा वि वि.
१५६.	,, नरेन्द्रसिंहजी भाटी	एम. ए., बी-एड.	व. अध्यापक



१५७.	श्री नारायणलालजी गौड़	मेट्रिक	लेखक
१५८	श्रीमती निर्मलाकुमारीजी बोर्दिया	मेट्रिक, एस टी सी.	सहायक अध्यापिका
१५९.	श्री नानालालजी बोर्दिया	इन्चार्ज	अध्यापक उद्योग विभाग
१६०.	श्रीमती नारायणीदेवीजी गौड़		इन्चार्ज, गश्ती पुस्तकालय
१६१.	,, नर्वदाजी यादव		निरीक्षिका और सहायक अध्यापिका
१६२.	श्री नन्दकिशोरजी	एम ए.	साहित्य महाविद्यालय
१६३	श्रीमती नर्वदाबहिनजी पालीवाल	मेट्रिक, एस. टी. सी.	सहायक अध्यापिका
१६४.	श्री नर्वदाशंकरजी दवे		लेखापाल
१६५	,, निरंजनकुमारजी पालीवाल	बी ए, बी–एड	सहायक अध्यापक
१६६	श्रीमती निर्मलादेवीजी जेठवानी	एम. ए. बी–एड.	सहायक अध्यापिका
१६७.	,, परमेश्वरीदेवीजी	बी. ए; बी–टी.	सहायक ,,
१६८.	,, प्रीतम बहिनजी	मेट्रिक	प्राधानाचार्या, बालमंदिर
१६९.	,, पुष्करकुमारजी	,,	टाईपिस्ट
१७०.	,, पार्वतीदेवीजी बोर्दिया	मॉन्टेसरी ट्रेन्ड	सहायक अध्यापिका, बालमंदिर
१७१.	,, प्रीतमदेवीजी सिरोया	विद्याविनोदिनी	,
१७२.	श्री परमानन्दजी त्रिपाठी	बी. ए.	सहायक अध्यापक
१७३.	श्रीमती प्रतिभा बहिनजी खडेलवाल	एम. ए; बी-टी.	प्रधानाचार्या. हा. सेकेन्डरी स्कूल
१७४.	श्री प्रेमनारायणजी त्रिवेदी	एम. ए.	सहायक अध्यापक
१७५.	श्रीमती प्रतिभादेवी भटनागर	बी. ए.	सहायक अध्यापिका
१७६.	" पुष्पादेवीजी अग्रवाल	बी. ए.	,,
१७७.	" पुष्पाजी बिलोची	मेट्रिक	,
१७८.	" पुष्पाकुमारीजी बंसल	बी. ए.	,
१७९.	" पार्वतीदेवीजी	हायर सेकेन्डरी	,,
१८०.	" प्रेमलताजी चतुर्वेदी	बी. ए.	,,
१८१.	श्री प्रकाशचन्द्रजी जोशी	हाईस्कूल	,,
१८२.	" प्रहलादसिंहजी	मेट्रिक	सहायक पुस्तकाध्यक्ष
१८३.	श्रीमती प्रेमदेवीजी जैन	विद्याविनोदिनी ट्रेन्ड	सहायक अध्यापिका
१८४.	श्री फतहलालजी	मेट्रिक	टाईपिस्ट
१८५	" बी. जी. बारपूते	बी. ए. ट्रेन्ड	प्रधानाचार्य, बालमन्दिर
१८६.	" बसन्तकुमारजी	साहित्य रत्न	अध्यापक
१८७.	" बख्तावरसिंहजी झाला		
१८८	श्रीमती बख्तावरबाई		सहायक अध्यापिका
१८९	डॉ. बंशीलालजी	एम. बी. बी. एस.	स्वास्थ्य निरीक्षक



१६१	श्रीमती वसतिवाई शर्मा	विदुषी	सहायक अध्यापिका
१६१.	श्री वशीलालजी टेलर	इन्टर	चित्रकला अध्यापक
१६२	श्रीमती वतूलवानू बोहरा	हायर सेकेन्डरी	सहायक अध्यापिका
१६३	श्री वसन्तलालजी भण्डारी	बी. ए	सहायक अध्यापक
१६४	श्रीमती वसन्तीवाई		
१६५	श्री वसन्तीलालजी कोठारी	एम. टी सी.	विज्ञान प्रयोगशाला सहायक
१६६	" वद्रीलालजी तोतला	बी. ए.	सहायक अध्यापक
१६७	" बालकृष्णजी नायक	सगीत तृतीयवर्ग	सगीत अध्यापक
१६८	" भवरलालजी बाफणा		स्टोर किपर
१६६.	" भगवतीलालजी दशोरा	बी ए	सहायक
२००.	" भैरवशकरजी शर्मा		सहायक अध्यापक
२०१.	" भेरूलालजी पाएरी		
२०२	" भेरुलालजी पालीवाल		
२०३	श्रीमती भगवतीदेवीजी भट्ट	विदुषी	सहायक अध्यापिका
२०४	श्री भगवतीलालजी हिंगड	मेट्रिक	खजान्ची
२०५	" भवरलालजी	बी ए.	चित्रकला अध्यापक
२०६	" भगवानलालजी पुजावत		
२०७	भवरलालजी भटनागर		टाइपिस्ट
२०८	श्रीमती भगवतीदेवीजी शर्मा	विद्याविनोदिनी	सहायक अध्यापिका
२०६	श्री भुरीलालजी बारवर	टी डी सी	
२१०.	श्रीमती भवरबाई शर्मा		
२११	,, भारतीकुमारी मठ्ठा	वी एस सी.	सहायक अध्यापिका
२१२	श्री भालचन्द्रजी भाटे	सगीत रत्न	सगीत अध्यापक
२१३.	,, भोलारामजी डागी		
२१४	,, भीमराजजी घडोल्या		पुस्तकाध्यक्ष
२१५	श्रीमती माधुरीकुमारीजी माथुर	एम ए.	सहयाक अध्यापिका
२१६	,, मोहनदेवीजी शर्मा	साहित्य रत्न	गृहव्यस्यापिका व निरीक्षिका
२१७.	श्री मागीलालजी लुहाडिया		सहायक अध्यापक
२१८	श्रीमती मेथ्पुज		हस्तकौशल अध्यापिका
२१६	श्री मदनसिंहजी कुमावत	मेट्रिक	सहायक अध्यापक
२२०	,, मोहनलालजी शर्मा		चित्रकला अध्यापक
२२१	श्रीमती मायावहिनजी अग्रवाल	मेट्रिक	सहायक अध्यापिका
२२२	,, मायाकुमारीजी सक्सेना	बी. ए, बी–एड	"

२२३. श्री मिश्रीलालजी कुमावत		संगीत अध्यापक
२२४. ,, मांगीलालजी भण्डारी		सहायक
२२५. श्रीमती मेमुना ताज	हायर सेकेण्डरी	सहायक अध्यापिका
२२६. श्री मदनलालजी धुप्पड़	बी. ए., एल. एल. बी.	,, अध्यापक
२२७. ,, मोडीलालजी	उद्योगभूषण	उद्योग विभाग
२२८. ,, मदनलालजी गर्ग	एम. ए., बी-एड.	अनुदेशक
२२९. ,, मोहनलालजी माहुर	बी. ए.	टाइपिस्ट
२३०. ,, महेशचन्द्रजी श्रोत्रिय	बी ए.	सहायक अध्यापक
२३१. श्रीमती मुमताज बेगम	हायर सेकेण्डरी	सहायक अध्यापिका
२३२. ,, मोहनदेवीजी भण्डारी	मेट्रिक	,, ,,
२३३. ,, महेन्द्रकुमारीजी भण्डारी	इन्टर	,,
२३४. श्री मदनलालजी ओसवाल	बी. ए.	,, अध्यापक
२३५. श्रीमती मंगलागौरी शर्मा	माटेसरी ट्रेन्ड	,, अध्यापिका
२३६. श्री मुकुन्दवल्लभजी	एम. ए.	सहायक अध्यापक
२३७. ,, मांगीलाल	—	—
२३८. श्रीमती मेमाबाई	—	—
२३९. ,, मोहनबाई	—	—
२४०. ,, मनोहरबाई	—	—
२४१. श्री मदनलाल बारबर	हायर सेकन्डरी	—
२४२. श्रीमती मन्जु माहरी	बी. ए.	पुस्तकालय सहायक
२४३. श्री मोहनलालजी शर्मा	मिडिल	—
२४४. ,, मोड़ीरामजी डागी	—	—
२४५. ,, मोहम्मद हुसेनजी	मिडिल	—
२४६. ,, मोहनलालजी मेनारिया	मिडिल	
२४७. ,, मदनसिंहजी राव	हायर सेकेण्डरी S.T.C.	सहायक अध्यापक
२४८. ,, मनमोहनस्वरूपजी माथुर	एम. ए.	,, ,,
२४९. श्रीमती मोनी सान्याल	बी. ए.	चित्रकला इन्चार्ज
२५०. श्री यमुनालालजी वैद्य	आयुर्वेदाचार्य	स्वास्थ्य चिकित्सक
२५१. श्रीमती यशवन्तकुंवरजी पजावी	इन्टर	सहायक अध्यापिका
२५२. ,, यशोदा देवीजी नागपाल	विद्याविनोदिनी	सहायक अध्यापिका
२५३. श्री योगेशचन्द्रजी गुप्त	बी. ए.	सहायक अध्यापक
२५४. ,, योगेशचन्द्रजी दोत्या	इन्टर	तबला मास्टर



२५५	श्रीमती यशोदाबाई		
२५६.	श्री युद्धवीरसिंहजी	बी ए.	सहायक अध्यापक
२५७	श्रीमती यशवन्तकुमारीजी तवर	टी. डी. सी.	" "
२५८.	श्री रामचन्द्रजी मिश्र	इन्टर	" "
२५९.	श्रीमती रामबहिनजी	एम ए., बी-टी.	आचार्या, कस्तूरबा ट्रेनिंग विद्यालय
२६०.	" राधाबाई शर्मा	विदुषी, जे. टी. सी'	सहायक अध्यापिका
२६१.	" रमादेवीजी	—	"
२६२	" रामप्यारी बाई गौड़	शिक्षा विशारदा	सहायक अध्यापिका
२६३	श्री रोशनलालजी शाह	मेट्रिक	खजान्ची
२६४	" रमणलालजी	बी ए.	सहायक अध्यापक
२६५	" रामगोपालजी शर्मा	मेट्रिक	संस्कृत अध्यापक
२६६.	" रामनारायणजी		संगीत अध्यापक
२६७	" राधेश्यामजी	बी. काम.	सहायक अध्यापक
२६८.	" रतनलालजी सुखवाल	एम. ए	पुस्तकाध्यक्ष
२६९	" रतनलालजी	"	सहायक अध्यापक
२७०.	" रंगलालजी मुन्शी	मेट्रीक, क्राफ्ट ट्रेन्ड	सहायक अध्यापक
२७१.	" रतनलालजी बड़िया	एम ए	व्यायाम शिक्षक
२७२	श्रीमती राज नैयर	इन्टर	सहायक अध्यापिका
२७३	श्री रमेशचन्द्रजी भटनागर	एम. ए	सहायक अध्यापक
२७४	श्रीमती राजकुमारीजी	एम. ए.	चित्रकला अध्यापिका
२७५	श्री रामहर्षप्रसादजी गुप्ता	एम. ए	पुस्तकाध्यक्ष
२७६	, रामनारायणजी शर्मा	सोखेड़ावाले	सहायक अध्यापक
२७७	श्रीमती रेणुकाजी मेहरोत्रा	एम. ए,	सहायक अध्यापिका
२७८	श्री रामेश्वरप्रसादजी वैष्णव	बी. एस. सी.	सहायक अध्यापक
२७९	, रमेशचन्द्रजी व्यास	पी यू सी.	"
२८०	,, रूपलालजी डांगी		
२८१	, राधाकृष्णजी पालीवाल	हायर सेकेन्डरी	संगीत अध्यापक
२८२	श्रीमती राजकुमारीजी खिमेसरा	एम. ए	सहायक अध्यापिका
२८३.	,, राजेन्द्रकुमारीजी पोरवाल	पी यू सी	"
२८४	श्री रामचन्द्रजी शर्मा	साहित्य रत्न	सहायक अध्यापक
२८५.	श्रीमती राजेन्द्रमहिन्द्रा	बी एस. सी (होम)	" अध्यापिका
२८६.	श्री रतनलालजी बडगूजर	बी. ए, बी-एड	" अध्यापक
२८७	" लक्ष्मीशंकरजी शर्मा	—	टाइपिस्ट

२८८.	श्रीमती लक्ष्मीदेवीजी वर्मा	मेट्रिक	सहायक अध्यापिका
२८९.	,, लक्ष्मीदेवीजी सक्सेना	विदुषी	,,
२९०.	श्री लक्ष्मीलालजी भंडारी	मेट्रिक	कार्यालय मन्त्री
२९१.	,, लक्ष्मीलालजी पालीवाल	एम ए.	सहायक अध्यापक
२९२.	,, लक्ष्मीनारायणजी	—	लेखक
२९३.	श्रीमती ललितादेवीजी कावडिया	बी. ए, बी.-एड.	प्रधानाचार्या, प्रा. स्कूल
२९४.	श्री लक्ष्मीलालजी मेनारिया	—	—
२९५.	,, लक्ष्मीशंकरजी	बी. ए, बी-टी.	आचार्य, साहित्य महाविद्यालय
२९६.	श्रीमती लीलादेवीजी नागर	विद्याविनोदिनी	सहायक अध्यापिका
२९७.	,, लाडकुमारीजी लोढा	बी. ए. बी-एड,	,,
२९८.	श्री डॉ० लाल	एम. ए., पी. एच-डी.	आचार्य, श्री कस्तूरबा ट्रे. वि.
२९९.	,, लक्ष्मीलालजी तिवारी	—	लेखक
३००.	,, लोकेन्द्रसिंहजी	बी. ए	लेखक
३०१.	श्रीमती लक्ष्मीबाई राजपूत	—	—
३०२.	,, लीलादेवी ओझा	हाईस्कूल	सहायक अध्यापिका
३०३.	श्री लक्ष्मणसिंहजी चौहान	एस. टी. सी.	सहायक अध्यापक
३०४.	,, विद्याधरजी शर्मा	—	संगीत अध्यापक
३०५.	श्रीमती विजयाकुमारीजी तेनावटी	मेट्रिक	सहायक अध्यापिका
३०६.	,, विद्यावतीदेवीजी	—	,,
३०७.	,, विमलाजी शर्मा	विद्याविनोदनी	,,
३०८.	,, वनितादेवीजी राव	शिक्षा विशारदा	,,
३०९.	,, विमला बहिन कोठारी	एम. ए., बी-एड.	प्रधानाचार्या हा. से स्कूल
३१०.	,, विमलादेवीजी अग्रवाल	विद्याविनोदिनी	सहायक अध्यापिका
३११.	,, विमला बहिनजी	मिडिल	अध्यापिका
३१२.	श्री विश्वनाथजी व्यास	एम. ए., साहित्यरत्न	प्राधानाचार्य हा से.
३१३.	,, विभूतिनारायणजी शर्मा	हाईस्कूल	सहायक अध्यापक
३१४.	श्रीमती विद्यादेवीजी पाणेरी	एम. ए.	वरिष्ठ अध्यापिका (हिन्दी)
३१५.	,, वीरबाला दोषी	हायर सेकेन्डरी	सहायक अध्यापिका
३१६.	श्री वृद्धिशंकरजी दशोरा	हा. से., एस. टी. सी.	,, अध्यापक
३१७.	श्रीमती विद्याबसन्तानि	बी. ए, बी-एड.	सहायक अध्यापिका
३१८.	श्री वृद्धिशंकरजी जोशी	सेकेण्डरी, एस. टी. सी.	,, अध्यापक
३१९.	श्रीमती विद्यावतीजी अरोड़ा	,,	,, अध्यापिका
३२०.	श्री बी. एन. उपाध्याय	एम. ए.	,, अध्यापक



३२१.	श्री शेषमलजी जैन	मैट्रिक	कार्यालय मंत्री
३२२	,, शान्तिलालजी जैन	—	टाइपिस्ट
३२३	श्रीमती शान्तादेवीजी त्रिवेदी	विदुषी	सहायक अध्यापिका
३२४	श्री श्यामलालजी भटनागर	एम. ए, बी-एड	सहायक अध्यापक
३२५	श्रीमती शान्ताबहिनजी बाकलीवाल	मैट्रिक ट्रेन्ड	गृहव्यवस्थापिका
३२६	श्री प्रो० शलभजी	साहित्य रत्न, एम. ए.	चित्रकला एव हिन्दी अध्यापक
३२७	श्रीमती शान्ताबाई चोबे	जे टी सी.	सहायक अध्यापिका
३२८.	,, शीतलादेवीजी अग्रवाल	विदुषी	,, ,,
३२९.	,, शारदादेवीजी	विशारद	,, ,,
३३०	,, शकुन्तलादेवीजी लोढा	हाईस्कूल	,, ,,
३३१	श्री शेषजी चोर्डिया	विशारद, मान्टेसरी ट्रेन्ड	इन्चार्ज बाल-मन्दिर
३३२	श्रीमती शान्ताकुमारीजी मीणा	मैट्रिक	सहायक अध्यापिका
३३३.	,, शकुन्तलाजी बापना	,,	,, ,,
३३४.	श्री शोभालालजी कलयत्री		लेखक
३३५	श्रीमती शान्तादेवीजी अग्रवाल	विद्या-विनोदिनी	सहायक अध्यापिका
३३६	श्री श्यामलालजी व्यास		पुस्तकाध्यक्ष
३३७	श्रीमती शीतलदेवीजी सक्सेना		सहायक अध्यापिका
३३८.	,, श्यामा बहिनजी अग्रवाल	बी. ए, बी-एड.	,, ,,
३३९	श्री शंकरजी भारतीय	,,	लेखक
३४०	श्रीमती शकुन्तलाकुमारीजी बापणा	मैट्रिक	सहायक अध्यापिका
३४१.	,, शकुन्तलाकुमारीजी पगारिया	,,	,, ,,
३४२	श्री श्यामलालजी शर्मा	बी. ए.	सहायक अध्यापक
३४३.	,, शम्भूवल्लभजी दवे	हायरसेकेण्डरी	लेखक
३४४.	श्रीमती शान्तिबाई	—	सहायक अध्यापिका
३४५	श्री कृष्णजी पारीक		,, अध्यापक
३४६.	,, सोहनलालजी शर्मा		,, ,,
३४७.	श्रीमती सुशीलादेवीजी माथुर	इन्टरमिजियेट	,, अध्यापिका
३४८.	,, सरलादेवीजी माथुर	विशारद	,, ,,
३४९	,, सुशीलाजी शर्मा	सरस्वती	,, ,,
३५०	,, सुरक्षादेवीजी भारद्वाज	—	,, ,,
३५१	,, सुमनदेवीजी भारतीय	शिक्षा विशारदा विदुषी	,, ,,
३५२	,, सज्जनदेवीजी जैन	जे टी सी.	सहायक अध्यापिका
३५३.	,, सरोजकुमारीजी सक्सेना		अध्यापिका

३५४. श्रीमती सुशीलाजी जिन्दल	हायर सेकेन्डरी	सहायक अध्यापिका
३५५. „ सत्यवतीजी मिश्रा	एम. ए.	„ „
३५६. „ सुन्दरदेवीजी वर्मा	मेट्रिक	प्रधानाचार्या बालमन्दिर
३५७. „ सुन्दरबाई		गश्तीपुस्तकालय
३५८. „ सरलाकुमारीजी बड़िया	एम. ए.	सहायक अध्यापिका
३५९ „ सर्यू बहिन शर्मा	एस. टी. सी.	„
३६० „ सरजूबाई शर्मा	—	—
३६१ „ सायरबाई साधू	—	—
३६२ „ सुशीलादेवीजी शर्मा	मिडिल	सहायक अध्यापिका
३६३. श्री सन्हैयालालजी ओझा	एम. ए, सा. रत्न	सहायक अध्यापक
३६४. श्रीमती सज्जनबहिनजी अग्रवाल	मेट्रिक	सहायक अध्यापिका
३६५. „ सावित्री बहनजी तिवारी	विशारद	„
३६६. „ सीतादेवीजी अग्रवाल	हायर सेकेन्डरी	„
३६७ „ सुधाबहिनजी मुड़िया	विद्या-विनोदिनी	„
३६८ „ सोहनदेवीजी जैन	—	—
३६९ „ सोहनबहिनजी बड़िया	—	—
३७०. „ सन्तोषकुमारीजी	नोनमेट्रिक	„
३७१. „ सुलोचनाजी सलरेजा	हायर सेकेन्डरी	„
३७२. „ सुशीलाकुमारीजी	„	„
३७३. „ सीताकुमारीजी अग्रवाल	„	„
३७४. „ सज्जनबाई राजपूत	—	—
३७५. श्री सुन्दरलालजी कुम्हार	मिडिल	—
३७६. „ सुरेशकुमारजी गुप्ता	बी. एस-सी.	सहायक अध्यापक
३७७. श्रीमती सरोजनी सूद	एम. ए., बी-एड	„
३७८. „ सरोजनीजी गोयल	एम. ए., बी-एड.	„
३७९. श्री सुखमालजी जैन	बी एस. सी.	„
३८०. श्रीमती सुरक्षाजी शर्मा	एम ए	वरिष्ठ अध्यापिका (हिंदी)
३८१. „ सरलाजी मितल	एम. ए , बी-एड.	—
३८२. श्री सतीशचन्द्रजी सक्सेना	एम. ए., बी-एड.	„
३८३. श्रीमती सूर्यकान्ताजी शर्मा	एस, टी. सी.	„
३८४. „ स्नेहलताजी श्रीवास्तव	एम. ए.	„
३८५. श्री सदाशंकरजी झा	बी. ए., बी-टी.	सुपरवाईजर
३८६. „ हीरालालजी सुखवाल	एम. ए.	सहायक अध्यापक



३८७	श्री हीरालालजी वम्ब	एम ए. विशारद	आचार्य, साहित्य महाविद्यालय
३८८	श्रीमती हगामीबाई गौड	साहित्य रत्न	प्रधानाचार्या, साहित्य महाविद्यालय
३८९	,, हमीदा बानू	मेट्रिक	,,
३९०	श्री हर्षलालजी नन्दवाना	एम. ए., बी-एड.	साहित्य महाविद्यालय
३९१	श्रीमती हरप्यारीबाई	—	—
३९२	श्री हेमेन्द्रजी दशोरा	मेट्रिक	टाइपिस्ट
३९३	श्रीमती हुसेना बानू बोहरा	हाईस्कूल	सहायक अध्यापिका
३९४	,, हसा देवी अग्रवाल	हाईस्कूल	,,
३९५	,, हेमलताजी कावड़िया	बी. ए चित्र०	सहायक अध्यापिका
३९६	श्री हरकलालजी जैन	हायर सेकेन्डरी	,, अध्यापक
३९७	,, हरिसिंहजी असवानी	एम ए.	,, ,,
३९८	,, त्रिलोकचन्दजी जैन	एम ए.	प्रधानाचार्य, हाईस्कूल
३९९	,, हिम्मतसिंहजी लोढा	इन्टर	कार्यालय मंत्री





महिला-मण्डल की मुख्य प्रवृत्तियां

— —

१. हायर सेकेन्डरी स्कूल।
२ बुनियादी प्राथमिक शालाएँ पाच।
३. श्री भुवालका कस्तूरबा कन्या छात्रावास।
४. महिला रात्रि कॉलेज। (पी. यू. सी और टी. डी. सी.)
५. प्रौढ शिक्षण केन्द्र (विभिन्न मोहल्लो मे)।
६. सार्वजनिक पुस्तकालय।
७. सार्वजनिक वाचनालय।
८. गश्ती पुस्तकालय।
९. सिलाई शिक्षण का डिप्लोमा कोर्स।
१०. सिलाई शिक्षण के ३ केन्द्र।
११. मॉटेसरी पद्धति पर ५ बाल-मन्दिर।
१२. क्रीड़ांगण।
१३: साक्षरता आन्दोलन।
१४. मावली तहसील मे ग्राम सेवा केन्द्र।
१५. औषध वितरण।
१६. उद्योगशालाए।
१७. प्रशिक्षण शिविर।
१८. द्विवर्षीय सक्षिप्त पाठ्यक्रम प्रशिक्षण केन्द्र।
(केन्द्रीय समाज कल्याण बोर्ड की सहायता से)
१९. अपनी दुकान। छात्र-छात्राओ द्वारा आरम्भ की गई।
पुस्तकें, पाठ्य सामग्री पोशाक आदि छात्रोपयोगी सामान।
२०. हस्तलिखित मासिक और साप्ताहिक पत्र-पत्रादि और
उच्चतर माध्यमिक विद्यालय द्वारा प्रकाशित किरण पत्रिका।





श्रीमती मोहनदेवी शर्मा—

जन्म १ जनवरी १९२९। प्राथमिक शिक्षा सलूम्बर में। सलूम्बर मे अध्यापन कार्य। शिक्षा के विकास हेतु सन् १९४३ मे महिला-मण्डल मे आई। छात्रावास मे रहकर विशारद, फिर साहित्यरत्न पास किया। शिक्षण केन्द्र मे निरीक्षिका रही। लगन और सेवा मे रुचि के फलस्वरूप महिला-मण्डल की सहायक मत्री बनी और अब सस्था के प्रधान मत्री का दायित्व सभाले हैं। सस्था के इतिहास का बडा भाग इनके योगदान का ऋणी है। सस्था सेवा मे देश भर का भ्रमण। अतरग प्रशासन का बडा दायित्व सभाले हैं।



श्रीमती कमला देवी शर्मा—

बागोर (भीलवाडा) में जन्म २४ सितम्बर १९३९। प्रारभिक शिक्षा बीगोद मे। महिला-मण्डल से ही मिडिल, फिर जे टी सी प्रशिक्षण। 'विदुषी' व नर्सरी' के प्रशिक्षण लिये। १९४८ से महिला-मण्डल के शिक्षक-परिवार मे। महिला-मण्डल के बृहत्तर ग्राम-विकास कार्य-क्रम की मुख्य ग्राम सेविका। बाल-शिक्षण में योगदान। देशी राज्य लोक परिषद् व अन्य विराट आयोजनो की कुशल स्वयसेविका। इन दिनो महिला-मण्डल आदिवासी छात्रावास की व्यवस्थापिका। सस्था-सेवा हेतु देश भर का भ्रमण।



श्रीमती नानी देवी राव—

उदयपुर में जन्म १२ दिसम्बर सन् १९२६। महिला-मण्डल से 'विद्याविनोदिनी' व 'जे टी सी' का प्रशिक्षण। १९५६ मे अमरावती से व्यायाम विशारद। सन् १९४५ से महिला-मण्डल में। मण्डल के मावली क्षेत्रीय ग्रामोत्थान कार्यक्रम की विशिष्ट सेविका। प्रौढ शिक्षा, एन सी सी, ए सी सी का दायित्व। आदिवासी छात्राओ के प्रशिक्षण का विशेष दायित्व। १९५६ से व्यायाम शिक्षिका। छात्राओ की खेल-कूद की सफलताओ मे प्रमुख सहयोगी।



श्रीमती विमला कोठारी—

उदयपुर मे जन्म २७ जनवरी १९३७। हिन्दी साहित्य मे एम. ए. तथा बी एड.। १९६० मे महिला-मण्डल हायर सेकेण्डरी में सहायक अध्यापिका बनकर आई। १९६१ से ६३ तक दिगम्बर जैन सेकेन्डरी स्कूल में प्रधानाध्यापिका। परिश्रमी और सेवाभावी। महिला-मण्डल की अनेक प्रवृत्तियो में विशिष्ट सहयोग। संस्था सेवा में सलग्न।



श्री नर्बदाशंकर दवे —

झाड़ौली (सिरोही) में संवत् १९७८ मे जन्म। शिक्षा बम्बई में। श्री गोकुल भाई भट्ट के सानिध्य में आरंभ से ही रचनात्मक क्षेत्र में। 'सिरोही-सदेश' के सह संपादक रहे। प्रजामण्डल के उत्साही कार्यकर्त्ता, भारत सेवक समाज व युवक संगठनों से सम्बद्ध रहे। झाड़ौली ग्राम पचायत के निर्विरोध सरपंच व पिंडवाड़ा कृषि उत्पादन समिति के निर्विरोध अध्यक्ष चुने गये। तहसील कांग्रेस के सयुक्त मंत्री भी रहे। भारत सेवक समाज की प्रवृत्तियो के विचार शील भागीदार। सन् १९६४ से महिला-मण्डल के लेखापाल।



श्रीमती चन्द्रकला शर्मा—

उदयपुर मे जन्म स. १९७८। शिक्षा उदयपुर के राजस्थान महिला विद्यालय मे। सन् १९३८ मे विद्या विनोदिनी, फिर विदुषी आनर्स। श्रीमती कमला श्रोत्रिय का मार्गदर्शन। १० वर्ष राजस्थान महिला विद्यालय की सेवा एक वर्ष मे तीन परीक्षाएं, सरस्वती-साहित्यरत्न व मैट्रिक की परीक्षाएं दी। कुछ समय राजस्थान विद्यापीठ की सेवा मे। महिला-मण्डल के जन्म से ही सहयोगी। अन्य अनेक परीक्षएं पास। मावली क्षेत्र में ग्राम-सेवा। दस वर्ष से कार्यकारिणी की सदस्या।



श्री विद्यानिवास उपाध्याय—

जगन्नाथपुर (उ० प्र०) में कृषक-परिवार मे जन्म। क्रांतिकारी वातावरण में मैट्रिक से आगे अध्ययन अवरुद्ध। ४२ के आन्दोलन से प्रेरित। एक दिन घर से गायब होकर आजाद हिन्द सेना के लेफ्टिनेन्ट बने और सिंगापुर की 'पर्ल हिल प्रिजन' में बन्दी रहे। आगे जाकर विश्वविद्यालय से एम ए.। महिला-मण्डल हायर सेकेन्डरी के सहायक अध्यापक।



श्री गजानन्द व्यास—

गोगुन्दा (उदयपुर) में जन्म सन् १९२१। ज्योतिषी एव धर्मपरायण पिता के पुत्र। बाल्यकाल से सिलाई में रुचि। १५ वर्ष की आयु में स्वतत्र सिलाई कार्य। मेवाड़ के प्रजामण्डल आन्दोलन के कार्यकर्त्ता और देशी राज्य प्रजा परिषद के सदस्य रहे। गत २५ वर्षों से महिला-मण्डल के सिलाई विभाग के अध्यक्ष।

सुश्री सुशीला जिंदल—

उदयपुर मे जन्म सन् १९४६। प्रारंभिक शिक्षा राजस्थान महिला-विद्यालय में फिर महिला-मण्डल मे। १९६१ मे हायर सेकेन्डरी पास। मीरा कन्या विद्यालय के उपरात महिला-मण्डल बुनियादी शाला की शिक्षिका। बेसिक-प्रशिक्षण प्राप्त। लघु कहानी लेखिका। व्यवसायी पिता भी कवि और साहित्य प्रेमी।



श्रीमती निर्मला बोर्दिया—

शाहपुरा (राजस्थान) में जन्म सन् १९४२। प्राथमिक शिक्षा शाहपुरा मे व उच्च शिक्षा बनेड़ा। मे कन्या विद्यालय शाहपुरा मे अध्यापिका रही। विवाहोपरान्त उदयपुर मे १९६१ से। बी. एस. टी सी. पास। महिला-मण्डल की प्राथमिक शाला मदनपोल मे अध्यापिका।



श्रीमती सुन्दरदेवी वर्मा—

उदयपुर मे जन्म सन् १९३४। आठवी कक्षा तक राजस्थान महिला-विद्यालय मे। महिला-मण्डल के प्रौढ शिक्षण केन्द्र मे शिक्षा कार्य। बाद में कुछ दिन राज० महिला-विद्यालय मे अध्यापिका। १९४७ मे हाईस्कूल पास करके श्रोत्रिय-दम्पति के निकट सपर्क मे। सन् १९५६ से मण्डल-परिवार मे। सम्प्रति सस्था की प्राथमिक शाला सोलकियो की घाटी की मुख्याध्यापिका।

श्रीमती मुमताज बेगम —

जन्म सन् १९४५। पिता के देहावसान से सघर्ष का जीवन। श्रोत्रिय-दम्पति ने पर्दा व रूढियो से मुक्त किया। १९६२ मे महिला-मण्डल से हायर-सेकेन्ड्री। मौण्टेसरी प्रशिक्षण। सन् १९६५ से महिला-मण्डल प्राथमिक शाला की अध्यापिका।





श्रीमती विद्या पाएरो—

एम. ए, बी एड । वरिष्ठ अध्यापिका हिन्दी । सार्वजनिक जीवन में सक्रिय । साहित्यिक सास्कृतिक प्रवृत्तियो मे रूचि । महिला-मण्डल की महत्व-पूर्ण सेवाओ के उपरान्त अब 'सेन्ट्रल स्कूल उदयपुर' मे ।



श्री रामचन्द्र विजयवर्गीय—

विभिन्न व्यवसायो और सेवाओं के उपरात सहकारी बैंक मदसौर की शाखा के सेक्रेट्री रहे । लगभग २ वर्ष राजस्थान विद्यापीठ में । सन् ६३ से महिला-मण्डल के कोषपाल ।



सुश्री एलिस जोसवोन—

आपने महिला-मण्डल से ही हायर सैकन्ड्री की परीक्षा पास की तदुपरान्त आपने महिला-मण्डल द्वारा सचालित प्राथमिक शाला, मदनपोल मे सहायक अध्यापिका व प्रधानाध्यापिका के पद पर कार्य किया । योग्यता मे निरन्तर वृद्धि करती रही । शैक्षणिक योग्यता बी-ए०, बी० एड० है ।



श्रीमती जीवनलता तलेसरा—

उदयपुर में जन्म सन् १९४०। सेकेन्डरी स्तर तक शिक्षित एव अध्यापन में प्रशिक्षित। विवाह के सात वर्ष पश्चात् पुन पढ़ाई शुरू की जिसकी प्रेरणा महिला-मण्डल से मिली। ३ वर्ष से महिला-मण्डल परिवार में शिक्षिका।



ललिता कावड़िया—

उदयपुर में जन्म सन् १९४५। शिक्षा राजकीय विद्यालय में। अध्यापन में प्रारम से ही विशेष रुचि। सन् १९६६ से महिला-मण्डल के संपर्क में। सन् ७० में बी० एड० की दीक्षा प्राप्त की। साहित्य, खेल-कूद व चित्रकला में रुचि।



श्री वासुदेव शर्मा—

महिला-मण्डल के आय-व्यय निरीक्षक। सार्वजनिक प्रवृत्तियो मे विशेष योगदान। व्यावसायिक और शैक्षिक क्षेत्रो मे समान रुप से लोकप्रिय।





श्रीमती प्रीतम दीवान—

क्वेटा (बिलोचिस्तान) में १९२७ में जन्म। बिलोचिस्तान में ही आठवी तक शिक्षा। सन् ४५ में परिचय व ४६ में हाई स्कूल। प्रथम श्रेणी की छात्रा रहीं। विभाजन के फलस्वरूप उदयपुर में महिला-मण्डल से बेसिक-शिक्षण व मोण्टेसरी की परीक्षाए पास की। इन दिनो बाल मदिर सूर्यपोल की प्रधानाध्यापिका।

श्रीमती जेबुन्निसा सिन्धी—

भीलवाड़ा में जन्म सन् १९३३। पर्दा-प्रथा के कारण प्रारंभिक शिक्षा घर में। शादी के दो वर्ष बाद पति का स्थायी विछोह। माता-पिता भी चल बसे। श्रोत्रियजी की प्रेरणा से अध्ययन का श्री गणेश। प्रयाग महिला-विद्यापीठ के केन्द्र से विद्याविनोदिनी व सिलाई व कशीदे का डिप्लोमा। महिला-मण्डल बाल मदिर सोलकियों की घाटी में सिलाई अध्यापिका।



श्रीमती विमला अग्रवाल—

चित्तौडगढ (ननिहाल) में जन्म सन् १९४१। विवाह के समय महिला-मण्डल में नवी कक्षा की छात्रा। सिलाई, चित्रकला व बाल शिक्षण का विशेष प्रशिक्षण प्राप्त। गत १४ वर्ष से महिला-मण्डल के मदनपोल स्थित बाल मदिर में अध्यापन।



श्रीमती सरला मित्तल–

एम. ए., बी एड. । वरिष्ठ अध्यापिका हिन्दी । महिला शिक्षा सदन हटूण्डी मे ४ वर्ष की सेवा । अग्रवाल महिला-मण्डल अजमेर की भूतपूर्व मंत्री । कार्यकर्त्ता परिषद् की मंत्री और छात्रा परिषद का सलाहकार ।



सुश्री सरोजिनी गोयल–

नागरिक शास्त्र की अध्यापिका, एम ए, बी. एड । सांस्कृतिक कार्यक्रमो मे रुचि । छात्रा संघ की उप सलाहकार ।



सुश्री विजया दीवान–

गृह विज्ञान की अध्यापिका । एम. ए समाज शास्त्र व बी एस. सी. गृह विज्ञान । कढाई, बुनाई, पाक शास्त्र व समाज सेवा मे रुचि ।



सुश्री दुलारी माथुर—

हिन्दी की सहायकाध्यापिका। बी. ए, बी एड। गर्ल्स गाइड मे विशेष योगदान।



श्री हिम्मतसिंह लोढ़ा—

मेवाड़ राज्य की सेवाओ के अनुभवी कार्यकर्त्ता। मेवाड राज्य मे विदेश व राजनीति विभाग का कार्य। आई जी पी कार्यालय के भूतपूर्व सुपरिन्टेडेन्ट। लगन शील कार्यकर्त्ता।



श्री रतनलाल सुखवाल—

एम ए., अर्थ शास्त्र। भूगर्भ व खान विभाग में सग्रहालय सहायक का कार्य किया। खेलो, वाह्य प्रवृत्तियो आदि मे सस्था की ६ वर्ष तक सेवा। इन दिनो 'उदयपुर सीमेन्ट वर्क्स' में।





श्रीमती राधा देवी शर्मा—

उदयपुर में जन्म सन् १९२४। १९४० से महिला-मण्डल के प्रौढ़ शिक्षण कार्य से शुरूआत। विदुषी, जे. टी. सी व मौण्टेसरी-डिप्लोमा पास। इन दिनो महिला-मण्डल की चादपोल स्थित प्राथमिक शाला की मुख्याध्यापिका तीस वर्षों से महिला-मण्डल के अनवरत सेवा कार्यों की विशिष्ट स्वयंसेविका।

श्रीमती मगला गोरी शर्मा–

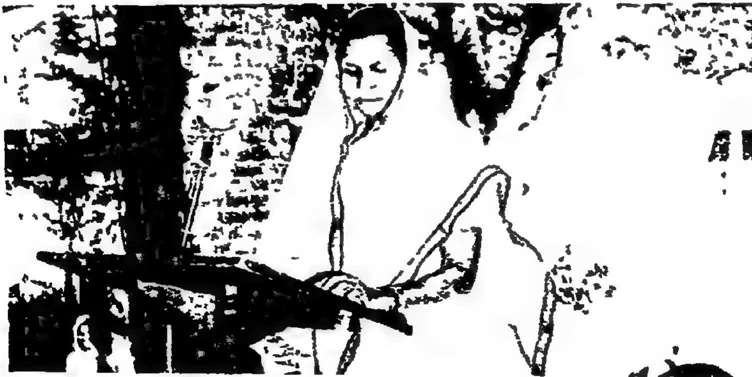
प्रतापगढ (राजस्थान) में जन्म सन् १९४१। जन्मस्थान पर मिडिल तक शिक्षा। सन् ६४ मे महिला-मण्डल मे प्रवेश। सेकेन्डरी पास करने पर अध्यापन। गत ५ वर्षों से बालमदिर सूर्यपोल मे। माण्टेसरी प्रशिक्षण प्राप्त। संस्कारो मे महिला-मण्डल के वातावरण का प्रभाव।

श्री कल्याणसिंह राजावत–

कोटा मे जन्म सन् १९१९। प्रारम्भिक शिक्षा कोटा में। पहलवान पिता के कसरती पुत्र। फिर संगीत मे रुचि। संगीत मे इन्टर पास करके ९ वर्ष तक राजस्थान विद्यापीठ के सगीत कला केन्द्र मे अध्यापन। विद्याभवन रामगिरी बेसिक स्कूल मे सगीत अध्यापक। सन् १९६० से महिला-मण्डल प्राथमिक शाला के सगीत अध्यापक।



ट्यूनिशिया में भारतीय कला प्रदर्शन का पुरस्कार लेकर लौटे 'पद्मश्री' देवीलाल सामर को पुष्पहार अर्पित करके प्रसन्न मुद्रामें मण्डल के का अध्यक्ष डॉ शंभूलाल शर्मा.



मण्डल-परिवार में उद्बोधन दे रही हैं श्रीमती मदालसा नारायण



सालेरा (उदयपुर) ग्राम के महिला सम्मेलन की एक झाकी



श्री सिध्दराज ढड्ढा और श्री शोभारामजी : कार्यकर्त्ताओं के बीच



महिला-मण्डल उच्चतर माध्यमिक विद्यालय : एक समूह-चित्र



प्राथमिक शाला, सोलंकियों की घाटी   उत्थान-काल की स्मृति



सिलाई–शिक्षण : आत्मनिर्भरता का संकल्प



महिला–मण्डल में बालिका से पुष्पहार स्वीकार करते हुए राजस्थान विधानसभाध्यक्ष श्री निरंजननाथ आचार्य



भारत के प्रथम गवर्नर जनरल श्री सी. राजगोपालाचारी तथा राज्यके तत्कालीन पुनर्वास मंत्री श्री मोहनलाल सुखाडिया का स्वागत करती हुई श्रीमती कमला श्रोत्रिय : पुरुषार्थी महिला आश्रम के उद्घाटन का प्रसंग

नारी-कल्याण में संलग्न
कुछ ख्याति प्राप्त संस्थान



महिला सेवा मंडल, वर्धा

सन् १९२४ मे स्व० श्री जमनालालजी बजाज की प्रेरणा से महिला सेवा मण्डल की स्थापना हुई। स्व० सेठ सूरजमलजी रुइया की लडकियो श्री शान्ताबाई रानीवाला, स्व० रत्नीबाई कारुडिया, स्व० मणिबाई मुरारका, इन तीनो ने अपने स्तरी धन मे से रुपये पौने तीन लाख दान दिए। बहनो मे राष्ट्रीय शिक्षा द्वारा आत्मश्रद्धा जागृत करना तथा उनमे समाज और देश सेवा की योग्यता पैदा करना मण्डल का उद्देश्य रहा है।

उन दिनो स्वराज्य आन्दोलन चल रहा था। जेल जाने वाले सत्याग्रहियो के परिवार की शिक्षा-दीक्षा के लिए सन् १९३३ मे महिला-मडल ने वर्धा मे महिलाश्रम की स्थापना की। सत्याग्रह आश्रम साबरमती को छोडने का सकल्प होने के कारण पू० बापूजी जेल से छूटकर यही आश्रम मे आकर रहे। साबरमती आश्रम की सारी छात्राएँ भी यहाँ आई। पू० विनोबाजी अपने आश्रम का स्थान महिलाश्रम को सौंपकर नालवाडी रहने गए। आज निम्न कार्य चल रहे हैं—

बुनियादी विभाग—

इस विभाग मे ६ वर्ष से १४ वर्ष तक के विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करते हैं। प्रथम चार कक्षाएँ हिन्दी तथा मराठी माध्यम से शहर में चलती हैं। वहाँ करीब ३५० लडके-लडकिया हैं।

उत्तर बुनियादी विभाग—

इस विभाग मे बुनियादी ८ वी कक्षा उत्तीर्ण विद्यार्थी प्रवेश पाते हैं। तीन वर्ष का पाठ्यक्रम है। इसकी पढाई का स्तर मैट्रिक से अधिक ही है। इस विभाग मे सिलाई, कताई, बुनाई समेत सपूर्ण वस्त्रविद्या मूलोद्योग के रूप मे सिखाई जाती है। इसके प्रमाणपत्र को महाराष्ट्र सरकार ने नौकरी तथा डिप्लोमा कोर्सेस के लिए मैट्रिक के समकक्ष माना है। महाविद्यालयीय शिक्षा के लिए गुजरात विद्यापीठ, काशी विद्यापीठ और भारत सरकार द्वारा चलाए गए ग्रामीण महाविद्यालयो मे प्रवेश हैं। वहाँ से तीन वर्षों में ग्रेज्युएट बन सकते हैं।

मैट्रिक तथा हायर सेकडरी—

बहनो को मेडिकल कॉलेज तथा अन्य विश्व विद्यालयीय शिक्षा का रास्ता बन्द न हो इस दृष्टि से १० वी मैट्रिक और हायर सेकडरी की परीक्षा दिलवाने की व्यवस्था भी इस वर्ष से सस्था ने की है।

प्रशिक्षण विभाग—

भूतपूर्व मध्यप्रदेश सरकार के अनुरोध पर बुनियादी प्रशिक्षण महाविद्यालय सन् १९५४ मे शुरू हुआ। परीक्षा सस्था खुद लेती है। सस्था का प्रमाण-पत्र शासन द्वारा मान्य है। पाठ्यक्रम दो वर्ष का है।

बाल-मन्दिर–

आरम्भ से ही यहा बाल-मन्दिर चलता आ रहा है। अब यह शहर मे चल रहा है। इसका स्वतन्त्र भवन बना है। और इसकी सचालन समिति भी स्वतन्त्र बना दी गई है।

कला-विभाग–

बहनो मे सुरुचि का विकास करने की दृष्टि से सगीत, चित्रकला तथा सिलाई के स्वतन्त्र वर्ग चलाये जाते है।

खादी उत्पादन विभाग–

सन् १९६० में ग्राम सेवा मण्डल का खादी विभाग महिला-मण्डल के अन्तर्गत आया। इस विभाग के द्वारा बहनो को रोजगारी मिल सके और वे अपने पैरो पर खडी हो सके, इस दृष्टि से जिले में ६–७ कताई केन्द्र चलाये जा रहे हैं। साथ ही घरेलू उद्योग द्वारा बहनो से पापड, मसाले आदि बनाकर रोजगारी देने का कार्य भी हो रहा है। वर्धा, पुलगाव, हिंगणघाट और आर्वी मे खादी ग्रामोद्योग भण्डार चल रहे हैं।

दैनिक-जीवन–

आत्म निर्भरता, श्रमनिष्ठा, संयम, सादगी और समाज सेवा की वृत्ति का विकास हो इस, दृष्टि से यहा के दैनदिन जीवन क्रम की योजना बनाई गई है। सुबह शाम की प्रार्थना, कताई, सफाई, रसोई एव गृह कार्यों मे स्वावलबन, यहा के दैनदिन जीवन के प्रधान अग है।

कॉलेज-छात्रावास–

महिलाश्रम के आसपास आर्टस, कॉमर्स तथा साइन्स कॉलेज हैं। इन कॉलेजो मे पढने वाली बहनो को भी आश्रम के सस्कारो का लाभ मिले, इस दृष्टि से इस वर्ष सस्था मे यह प्रवृत्ति शुरू की गई है।

ग्राम-निर्माण-कार्य–

ग्रामदान की दृष्टि से वर्धा का विशेष महत्त्व है। अब तक जिले मे ८५ के उपर ग्रामदान हो चुके है। इस जिले के वर्धा-विकास-खण्ड के ग्राम निर्माण का कार्य सस्था ने उठा लिया है। तीन ग्रामदानी गावो मे ग्राम निर्माण का कार्य शुरू हो चुका है।

आरम्भ से ही देश सेवा–

सस्था शुरू से ही देश की आवश्यकतानुसार कार्य करती रही है। स्वराज्य आन्दोलन के समय यहा की अधिकाश बहनें और कार्यकर्त्ता जेल मे रहे। फल स्वरूप १९४२ मे संस्था कुछ समय के लिए बन्द रही। भूदान आन्दोलन में सक्रिय हिस्सा बराबर लेती रही है। भविष्य मे भी सस्था देश की परिस्थिति के अनुसार अपने को उपयोगी बनाती रहेगी।

हमारा सौभाग्य है कि प्रचलित शिक्षा पद्धति से स्वतन्त्र शिक्षाक्रम होते हुए भी भारत के हर कोने



से बहनें सस्कार ग्रहण करने आयी हैं। अब तक देश भर की कुल १११८ बहनें शिक्षा पा कर गयी हैं। इनमें नेपाल की भी ५५ बहनें हैं।

यहा से शिक्षा प्राप्त अधिकाश बहनें अपने-अपने क्षेत्र में कार्य कर रही है।

नयी योजनाएँ–

प्रौढ बहनो की दृष्टि से सोशलवेलफेअर विभाग से कडेन्स कोर्स तथा कम्यूनिटी डेवलपमेट विभाग से असोसिएट वुमेन्स कोर्स लेने की बातचीत हो रही है।

आमद-खर्च–

आश्रम का सालाना चालू खर्च लगभग ७५ हजार रु० का है। इसमें से ४५ हजार महाराष्ट्र सरकार से प्रशिक्षण विभाग आदि के लिए मिलते हैं। करीब २० हजार रु० की कमी रहती है। सस्था के लिए स्वतन्त्र छात्रालय अभी तक नही बना सके हैं। पुराने मकानो को ही छात्रावास के रूप मे इस्तेमाल किया जा रहा है। १०० बहनो के एक छात्रावास की जरूरत है। सोचा है कि एक लाख रु० छात्रावास के लिए और दो लाख रु चालू खर्च की घाटा-पूर्ति के लिए इकट्ठा किए जाय। इस प्रकार व्यवस्था हो जाती है तो फिलहाल सस्था का काम सुचारु-रूप से चल सकेगा। आश्रम को दिया गया दान इनकम टैक्स से मुक्त है। श्रीमती जानकी देवी बजाज सस्था की अध्यक्षा और श्रीमती रमा रुईया मत्री पद की सेवाए दे रही हैं।

—

वनस्थली विद्यापीठ, वनस्थली (राजस्थान)

वनस्थली विद्यापीठ स्त्री-शिक्षा का अखिल भारतीय केन्द्र है, जिसका उद्देश्य अपने शिक्षण-कार्य के द्वारा पूर्व और पश्चिम की आध्यात्मिक विरासत और वैज्ञानिक उपलब्धियो में समन्वय के लिए प्रयत्न करना है। इसी उद्देश्य से विद्यापीठ मे एक बाल-मन्दिर, एक प्राथमिक विद्यालय, एक उच्च माध्यमिक प्रयोगिक विद्यालय (सस्कृत अथवा मिडिल विभाग सहित) और एक स्नातकोत्तर ज्ञान-विज्ञान महाविद्यालय (सगीत, चित्रकला, शारीरिक शिक्षा तथा हस्तकला के विशेष प्रशिक्षण सहित) चलता है। इनके अलावा एम एड व शोध के स्तर का एक शिक्षा महाविद्यालय और एक वेद-विद्यालय है। कक्षा ८ के अन्त मे विद्यापीठ की अपनी 'सस्कृता' परीक्षा होती है। हायर सेकण्डरी की राजस्थान बोर्ड की और बी ए., बी एस सी., एम. ए तथा बी एड एम एड. की राजस्थान विश्वविद्यालय (जयपुर) की परीक्षाए होती हैं। राजस्थान विश्वविद्यालय की पी एच, डी की डिग्री के लिए सस्कृत, हिन्दी, इतिहास, भाषा विज्ञान, अग्रेजी, शिक्षा-शास्त्र व सगीत विषयो मे अनुसधान कार्य करने की व्यवस्था भी है। एक शिक्षा अध्ययन एव अनुसधान केन्द्र है। विद्यापीठ द्वारा नाना प्रकार की शैक्षणिक प्रवृत्तियाँ चलती हैं। विद्यापीठ शारीरिक शिक्षा व हस्तकला प्रशिक्षण के लिए अपने स्वय के प्रमाण-पत्र देता है और कुछ और पाठ्यक्रमो के लिए भी अपने

प्रमाण-पत्र देने का विचार है। विद्यापीठ के पुस्तकालय में कुल ६२,००० पुस्तकें हैं और वाचनालय मे ४८० पत्र-पत्रिकाएं आती हैं। विद्यापीठ के लिए विश्वविद्यालय अनुदान कानून के अन्तर्गत विश्वविद्यालय-स्तर प्राप्त करते का प्रयत्न चल रहा है।

पंचमुखी शिक्षा—

विद्यापीठ में सर्वाङ्ग सम्पूर्ण शिक्षा देने की दृष्टि से जो शिक्षा योजना चलती है, उसे पचमुखी शिक्षा का नाम दिया गया है। इसका आयोजन विद्यापीठ की छात्राओं को सामन्यतया नागरिकता के कर्त्तव्यो का समुचित पालन करने के योग्य बनाने और विशेषतया घर तथा घर के बाहर के समाज मे स्त्रियो पर आने वाले विशेष दायित्वो के लिए तैयार करने की दृष्टि से किया गया है। विद्यापीठ की इस पचमुखी शिक्षा के निम्नलिखित पाच अग हैं।

शारीरिक शिक्षा—

१ शारीरिक शिक्षा—इसके अन्तर्गत विभिन्न प्रकार की ड्रिलें, कई तरह के यौगिक आसन, नाना प्रकार के आधुनिक और पुराने खेल, स्पोर्ट्स, साइकिल चलाना व घुड़सवारी शामिल है। इसके अलावा पोलो, तैरना, पानी मे किये जाने वाले खेल व नाव चलाना सिखाने की व्यवस्था भी शामिल है। एन० सी० सी०, फ्लाईंग, बन्दूक चलाना सिखाने की भी व्यवस्था है। गर्मी की छुट्टी मे शारीरिक शिक्षा के विशेष प्रशिक्षण की व्यवस्था यथासभव की जाती है।

२ व्यावहारिक शिक्षा—इसके अन्तर्गत भोजन बनाना व उससे सम्बन्धीत नाना प्रकार के काम, कलई करना, रगना, मीना, कशीदा, दर्जी का काम, खिलौने बनाना चमड़े का काम, पेपियरमेशी और क्लेमाडलिंग शामिल हैं।

३. कला विषयक शिक्षा—इसमे चित्रकला, गायन, सितार, तबला व नृत्य (भारत नाट्यम्, मणिपुरी, कत्थक) शामिल हैं। गर्मी की छुट्टियो मे प्रतिवर्ष फ्रेस्को और चित्रकला शिक्षक के प्रशिक्षण शिविर भी आयोजित किये जाते हैं।

४. नैतिक शिक्षा—इसमे दैनिक प्रार्थना और प्रार्थना के बाद होने वाली साप्ताहिक चर्चाएं तथा दैनिक जीवन मे नैतिक व्यवहार पर आवश्यक ध्यान देना शामिल है।

५. बौद्धिक शिक्षा—इसमे विभिन्न विषयो की शिक्षा का समावेश होता। विद्यापीठ में हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, इतिहास एव शिक्षा शास्त्र मे रिसर्च हिन्दी सस्कृत, अंग्रेजी, अर्थशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, इतिहास, सगीत (गायन) सगीत (वादन) चित्रकला एव समाजशास्त्र मे एम. ए, लगभग सभी, सभी विषयो मे तीन वर्षीय बी. ए., भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, जन्तु विज्ञान, शरीर विज्ञान, गणित व अर्थशास्त्र मे तीन वर्षीय बी एस. सी. तथा एम. एड व बी. एड. की व्यवस्था है। राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर द्वारा मान्य जर्मन, फ्रेन्च व रुसी भाषाओं के डिप्लोमा तथा सर्टिफिकेट कोर्स की कक्षाएं भी चलती है।



विद्यापीठ मे भारतीय भाषाओ में हिन्दी और सस्कृत के अतिरिक्त कुछ अन्य भारतीय भाषाओं के शिक्षण की व्यवस्था है व कई और की शिक्षण की व्यवस्था करने की योजना है।

विद्यापीठ की शिक्षा की विशेषताएँ—

सार रूप मे विद्यापीठ की शिक्षा की निम्न विशेषताए' गिनायी जा सकती है—

१. सर्वाङ्गीण प्रगतिशील शिक्षा।
२ भारतीय सस्कृति और आचार-विचार की पृष्ठभूमि मे व्यक्तिगत स्वतत्रता, सामाजिक उत्तरदायित्व और मर्यादा का समन्वय।
३. सरल और सादा जीवन।
४. छात्राओ और कार्यकर्ताओ द्वारा आदतन खादी पहिनना।
५ अपना निजी और घरेलू कार्य स्वय करने की वृद्धि रखना ताकि घरेलू सहायको की कम से कम आवश्यकता पडे, यथा सभी छात्राए' अपने कमरो की सफाई स्वय करती है, अपने बर्तन स्वय साफ करती है और एक हद तक अपने कपडे भी स्वय धोती है।
६ छात्राओ द्वारा यथासभव सामाजिक और सामुदायिक कार्य।
७. बिना किसी भेदभाव के छात्रावास मे सामुदायिक जीवन।

सस्थापक श्री हीरालाल शास्त्री, श्रीमतीरतन शास्त्री और प्रेमनारायण माथुर जैसे शिक्षा सेवियो एव शिक्षा शास्त्रियो की सेवाए विद्यापीठ को प्राप्त हैं, जिनके सानिध्य मे सस्था आज महिला शिक्षण के अतर्राष्ट्रीय केन्द्र की प्रतिष्ठा प्राप्त कर चुकी है।

—

आर्य कन्या महाविद्यालय, बड़ौदा

आर्य कन्या महाविद्यालय की स्थापना चार बालिकाओ से इटोला में स्वामी धर्मानन्दजी के पिता द्वारा दी गई जमीन पर दि० ८-१-१९२५ मे हुई थी। सस्था १९२९ मे ता० २१ सितम्बर को बड़ौदा मे लाई गई।

बड़ौदा में इस समय इस सस्था के अतर्गत निम्न लिखित विभाग सचालित हो रहे हैं।

प्राथमिक विभाग,
माध्यमिक विभाग,
महाविद्यालय विभाग,
आर्य कन्या शुद्ध आयुर्वेद महाविद्यालय,
आर्य कन्या व्यायाम महाविद्यालय, इटोला।



संस्था की स्नातिका श्रेणी तक का शिक्षणक्रम तेरह वर्ष का है। इसमे दस वर्ष विशारदा के लिये तथा इसके बाद तीन वर्ष स्नातिका होने के लिये लगते है "भारती समलकृता" तथा "व्यायामाचार्या" की उपाधि दी जाती है।

—

आर्य कन्या महाविद्यालय, बड़ौदा

आर्य कन्या महाविद्यालय की स्थापना चार बालिकाओ से इटोला मे स्वामी धर्मानन्दजी के पिता द्वारा दी गई जमीन पर दि ८-१-१९२५ मे हुई थी। संस्था १९२६ मे ता. २१ सितम्बर को बड़ौदा में लाई गई।

बडौदा मे इस समय इस सस्था के अन्तर्गत निम्नलिखित विभाग सचालन हो रहे हैं।
प्राथमिक विभाग, माध्यमिक विभाग महाविद्यालय, आर्य कन्या शुद्ध आयुर्वेद महाविद्यालय
आर्य कन्या व्यायाम महाविद्यालय, इटोला।

संस्था की स्नातिका श्रेणी तक का शिक्षण क्रम तेरह वर्ष का है। इसमे दस वर्ष विशारदा के लिये तथा इसके बाद तीन वर्ष स्नातिका होने के लिये लगते है 'भारती समलकृता' तथा 'व्यायामचार्य' की उपाधि दी जाती है।

आर्य कन्या शुद्ध आयुर्वेद महाविद्यालय सरकार मान्य सस्था है, जिसका शिक्षणक्रम साढे पाँच वर्ष का है। इसको उत्तीर्ण करने पर 'आयुर्वेदाचार्य' की उपाधि दी जाती है, जिसको गुजरात सरकार ने एम. बी. बी एस. के समकक्ष माना हैं। इस महाविद्यालय मे सस्कृत के साथ एस एम. सी उत्तीर्ण कन्याए प्रविष्ट हो सकती है।

इस सस्था के अन्तर्गत इस समय २४ बिस्तरो वाला एक अस्पताल और औषधालय है।
सारे भारतवर्ष में सरकार मान्य यही एक मात्र शुद्ध आयुर्वेद कन्या महाविद्यालय है।

इसी प्रकार मैट्रिक उत्तीर्ण अथवा हमारी सस्था की 'व्यायामाचार्या' आर्य कन्या व्यायाम महाविद्यालय मे प्रविष्ट हो सकती है। इसका एक वर्ष का कोर्स है। यहां माध्यमिक शालाओ के लिये पी. टी. टीचर्स तैयार किये जाते हैं। एस एस सी. के कोर्स का भी प्रबन्ध हैं। जिसको एस एस. सी. उत्तीर्ण करना हो व विशारदा (१० वी श्रेणी) के बाद एक वर्ष मे एस. एम. सी. का कोर्स कर सकती हैं। प्राथमिक और माध्यमिक श्रेणियों मे सस्कृत, नीति शिक्षा और हिन्दी का अपना विशेष कोर्स रखा है।

सस्था मे आश्रम मे रहने वाली कन्याए ही प्रविष्ट हो सकती है। शिक्षण का माध्यम हिन्दी और गुजराती है।



अंग्रेजी भाषा का शिक्षण सब के लिये अनिवार्य है। हमारे शिक्षण क्रम में संस्कृत प्रथम भाषा है। दूसरा स्थान है हिन्दी का, उसके बाद गुजराती और फिर अंग्रेजी ऐच्छिक विषय है।

संस्था आश्रम को प्रयोगशाला मानकर घरेलू ज्ञान, जो एक कन्या के लिए आवश्यक है, क्रियात्मक रूप मे देती हैं। यहा एक वयस्क कन्या भोजन बना सकती है, वह परोसती है रोगी की शुश्रुषा करती है अपना आगन स्वच्छ बुहारती है, सभी बडी कन्याए छोटी कन्याओ को सहचरी रूप मे स्वीकार कर, उनका सब कार्य करती है।

संस्था मे ललित कला, जैसे नृत्य, सगीत, चित्रकला आदि को स्थान है। घरेलू उद्योग मे सिलाई, बुनना कातना, पिरोना आदि सिखाया जाता है। कन्याए नित्य प्रात व्यायाम करती हैं। प्रतिदिन ईश-वदना, प्रार्थना को स्थान दिया जाता है। यहा सदाचार नीति और ब्रह्मचर्य के सिद्धान्तो पर बल दिया जाता है। कन्या उत्तम गृहिणी बन सके, इसका समुचित प्रबन्ध है।

शिक्षण के क्षेत्र मे ठोस कार्य--

संस्था की सम्पत्ति इस समय पद्रह लाख की है और स्थिर कोष में सात लाख रुपये जमा हैं। लगभग ३०,००० रुपयो के शेअर भी है। जिसके व्याज से गरीब कन्याओं को छात्रवृत्ति दी जाती है। इटोला व्यायाम महाविद्यालय की सपत्ति मकान, जमीन, आदि की कीमत लगभग तीन लाख की है।

बडौदा में आत्माराम पथ पर पच्चीस बीघा जमीन मे कन्याओ के छात्रावास, सरस्वती मन्दिर, प्रार्थना मदिर, व्यायामशाला, ओपन ऐर थियेटर, आयुर्वेदिक कॉलेज, अस्पताल, औषधालय, कर्मचारियो के निवास स्थान तथा अतिथि गृह के विशाल भवन बने है।

संस्था ने दो बार बडी सख्या मे छात्राओ को साथ लेकर अफ्रिका की यात्रा की है और वहां विभिन्न स्थान पर व्यायाम तथा सास्कृतिक कार्यक्रमो का प्रदर्शन कर के भारतीय सस्कृति की अमिट छाप छोडी है। अफ्रिका के १९३४ के प्रथम प्रवास मे संस्था को दो लाख और १९४८ के द्वितीय प्रवास मे दस लाख छत्तीस हजार रुपये का दान मिला था। ऐसा ही एक प्रवास सन १९३८ मे हमने बर्मा का किया था, जिसके द्वारा चालीस हजार रूपये प्राप्त हुए थे।

संस्था ने भारत वर्ष के सब प्रमुख प्रान्तो मे दौरा करके संस्था सचालन के लिए लाखो रुपये एकत्रित किये हैं। इसमे उल्लेखनीय दान सेठ श्री नानजीभाई कालीदास मेहता का रुपये एक लाख का है।

इस समय सब राज्यो की तथा अफ्रिका, मोरेश्यस आदि की चार सौ कन्याए हैं। आयुर्वेद कॉलेज मे और व्यायाम महाविद्यालय मे ६० कन्याएँ है।

संस्था मे राष्ट्रीय ऐक्य का अभूतपूर्व दृश्य देखने को मिलेगा यहां हिन्दू, जैन बौद्ध, सिख, पारसी, ख्रिस्ती, खोजा, मुसलमान और अफ्रिका की नीग्रो लड़किया भी पढ चुकी हैं। हरिजन और आदिवासी कन्याओ को भी संस्था लाभ देती हैं।

संस्था का रजत जयंती समारोह डा० राजेन्द्रप्रसादजी की अध्यक्षता में हुआ था। उन्होने उस समय सस्था के कार्य को भव्यअजलि देते हुए ये ऐतिहासिक वाक्य कहे थे।

आपकी सस्था को पच्चीस वर्ष का जो अनुभव हुआ है वह ऐसा अनुभव है, जिसके बल पर हम सोच सकते है और देख सकते है कि हमे आयन्दा क्या करना चाहिये। मै आपके ऐसे प्रयोगो को ऊँचा स्थान देता हू।

भारत सरकार के शिक्षा मन्त्री डा० श्रीमालीजी ने संस्था मे दीक्षात भाषरण देते हुए कहा था कि तीस वर्ष हुए इस सस्था को चलाते हुए, मुझे अफसोस है कि अभी तक सरकार की ओर से उन्हे सहायता नही दी गई। मेरा यह ख्याल है कि सरकार को सहायता करनी चाहिये।

अब भी हमारी 'स्नातिका' श्रेणीयां सरकारी मान्यता के अभाव मे खाली हो रही है और हमारा प्रयोग छात्राओ एव अभिभावकों के सरकार द्वारा मान्य परीक्षाओ के मोह के कारण समाप्त होने की परिस्थिति पर जा रहा है।

सस्था की उल्लेखनीय तेजस्वी छात्राओं की नामावली इस प्रकार है।

श्रीमती तारकेश्वरी सिन्हा, डा० ज्ञानवती दरबार, श्रीमती सीता युद्धवीर, श्रीमती शान्ता पटेल, श्रीमती यशोदा वहन परमार, श्रीमती सविता बहन नानजीभाई महेता, श्रीमती रश्मि बहन जगड, श्रीमती प्रभावती बहन जोरावरसिंहजी, श्रीमती सरला बहन शारदा, श्रीमती शान्ता बहन अग्रवाल, श्रीमती मानुबहन कोटेचा, जीजा (अफ्रिका), और कु० श्री. प्रतिभा बहन पडित।

हमारी सस्था की उज्जवल कुलपुत्री और स्नातिका सविता बहन के पिता सेठ श्री नानजीभाई कालिदास मेहता ने रुपया पचास लाख का ट्रस्ट बनाकर हमारी बडौदा सस्था के अनुरूप ही पोरबन्दर में आर्य कन्या गुरुकुल की स्थापना की, जिसमे आज आठ सौ कन्याएँ आश्रम जीवन मे रहकर शिक्षण और सस्कार प्राप्त कर रही है। इसके अन्तर्गत गुजारात युनिवर्सिटी से सम्बन्धित आर्टस कालेज का भी आरम्भ कर दिया गया है।



बिड़ला बालिका विद्यापीठ, पिलानी

पिलानी स्थित बिडला बालिका विद्यापीठ बालिकाओ की एक ऐसी अनूठी सस्था है, जिसने नारी जगत मे जागरण का शख फूका है। दिल्ली मे गणतन्त्र दिवस परेड मे गत ग्यारह वर्षों से भाग लेते हुए यहाँ का प्रसिद्ध बालिका-बैंड समस्त देश की जनता की प्रशस्ति प्राप्त करता रहा है। स्त्री शिक्षा के क्षेत्र में राजस्थान मे इसका विशिष्ट स्थान है। न केवल शिक्षा के प्रांगण मे, अपितु अन्य पाठ्येतर गतिविधियो



में भी अपनी उत्कृष्ट उपलब्धियों के कारण यहा की बालिकाओ ने ख्याति प्राप्त की है। इसी वर्ष ४-५ अप्रेल को कोलम्बो मे आयोजित भारत-लका खेलकूद प्रतियोगिता' मे यहा की सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी कुमारी सुजाता शर्मा को ऊची कूद के रजत पदक प्राप्त हुआ। सम्पूर्ण भारत से तीन बालिकाओ ने खेलो का प्रतिनिधित्व किया था—उनमे एक कु० सुजाता शर्मा थी राष्ट्र-स्तरीय खेलो मे यहा की अन्य बालिकाएं भी प्रतिवर्ष अनेक स्वर्णपदक एव रजत पदक प्राप्त करती रही हैं।

दिल्ली मे आयोजित संयुक्त राष्ट्र सघ के अखिल भारतीय स्कूलो के वार्षिक उत्सव मे भी दलो की दो बालिकाओ ने शास्त्रीय नृत्य अनुवाचन आदि मे प्रथम एव द्वितीय स्थान प्राप्त किए। राज्य स्तर एव अखिल भारतीय वादविवाद प्रतियोगिताओ मे भी यहा की बालिकाए प्रथम एव द्वितीय स्थान प्राप्त करती रही हैं। तीन वर्ष पूर्व राजस्थान बोर्ड मे सर्वश्रेष्ठ परीक्षा फल रहने के कारण इस सस्था को शील्ड प्राप्त हुई थी। गत दो वर्ष से यह केन्द्रीय बोर्ड से सम्बद्ध हो गया है। यहा हायर सैकण्डरी परीक्षा के विभिन्न वर्गों कला, विज्ञान, गृह-विज्ञान का शिक्षण अनुभवी एव कुशल अध्यापिकाओ द्वारा दिया जाता है। गृह-विज्ञान कक्ष यहा बालिकाओ मे काफी लोकप्रिय है।

इस वर्ग मे बालिकाओ को गृह-सज्जा, पौष्टिक विज्ञान, तन्तु-विज्ञान, सिलाई, कटाई, प्राथमिक सहायता, गृह-परिचर्या एव बागवानी की शिक्षा दी जाती है। समय-समय पर विशिष्ट अभ्यागतो के भोज आदि आयोजन करके इन बालिकाओं को गृह-सचालन का पर्याप्त अभ्यास हो जाता है।

२८ वर्षो के अल्पकाल मे इस सस्था ने आशातीत उन्नति की है। यहा इस समय देश भर की लगभग ५५० छात्राएं हैं, जिनमे २८७ छात्रावास मे रहती हैं। आधुनिक समस्त सुविधाओ से पूर्ण एव विशाल एव सुनियोजित छात्रावास यहा स्कूल क्षेत्र मे ही है। प्रधान वार्डन के सरक्षण मे विभिन्न सदनो की सचालिकाएं 'हाउस मदर' एव 'मेट्रन' है, जो हर समय बालिकाओ की निगरानी मे सलग्न रहती है।

शहर के दूषित वातावरण से दूर, प्रकृति की नैसर्गिक सुषमा के मध्य स्थित इस पिलानी नगरी के 'विद्या-विहार' शिक्षा-क्षेत्र मे शिक्षा का एक अनूठा वातावरण रहता है, जहा छात्राओ को विद्यार्थी जीवन मे शिक्षा के साथ साथ चारित्रिक गठन के महत्वपूर्ण सिद्धान्तो का स्वत ही पालन करना होता है। एक दूसरे की भाषा, एव सस्कृति का आदान प्रदान करते हुए सभी बालिकाए एक आश्रय मे सामूहिक रूप से प्राचीन आदर्शों के साथ साथ प्रगतिशील विचारो को समन्वित करके नारी शिक्षा का साकार प्रमाण प्रस्तुत करती हैं। श्री छागलाजी के शब्दो में "भारत के विभिन्न कन्या विद्यालयो मे से यह एक है, जो राष्ट्रीय एकता की भावना का ज्वलत प्रमाण है।"

—

प्रयाग महिला विद्यापीठ, इलाहाबाद

सन् १६२२ मे महिला शिक्षा को प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से, राष्ट्रीय आन्दोलन के प्रभाव में, राष्ट्रीय जीवन की उन्नति को ध्यान में रखते हुए, प्रयाग महिला विद्यापीठ की स्थापना हुई थी। भारतीय महिलाओ की पारिवारिक परिस्थितिया तथा पर्दा प्रथा आदि को ध्यान में रखते हुए विद्यापीठ ने महिला जगत मे शिक्षा के प्रचार तथा प्रसार मे अभूतपूर्व सेवायें समर्पित की है। इस प्रकार का कार्य करने वाली इस देश मे यह सबसे प्राचीन सस्थाओ मे से एक है। इसे राष्ट्रपिता बापू के आशीर्वाद प्राप्त हुए, इसके साथ राष्ट्रपति स्वर्गीय डा० राजेन्द्रप्रसादजी, प जवाहरलाल नेहरू आदि राष्ट्र के महान् पुरुषो के नाम जुडे हैं। यही नही आन्दोलन के समय जब लोग जेल मे होते थे तो नेताओ तथा कार्यकर्त्ताओ की महिलाये तथा बालिकायें इसी के विद्यालय विभाग महिला विद्यापीठ महाविद्यालय की देख रेख मे यही आकर रहती थी। सन् २२ से ६७ तक मे कई लाख भारतीय महिलाओ ने इसकी परीक्षाये दी और आज वे देश कोने २ मे विभिन्न पदो पर सेवा कर रही है। राष्ट्रभाषा प्रचार कार्य मे स्त्री समाज मे इससे अधिक सेवा किसी सस्था ने नही की।

प्रयाग महिला विद्यापीठ ने भारतीय महिलाओ की पारिवारिक तथा सामाजिक परिस्थितियो को ध्यान मे रखकर ही प्रान्तीय या भारतीय राष्ट्रभाषा के माध्यम से, खण्ड प्रणाली के मार्ग द्वारा प्रारम्भ से लेकर उच्चतम शिक्षा तक दिलाने की व्यवस्था की थी। राष्ट्रीय आन्दोलन के युग मे इसके परीक्षा केन्द्र मनीला, अण्डमन, नीकोबार, जजीबार आदि स्थानो मे भारतीय प्रवासियो के परिवारो के हितार्थ थे। देश मे तो कोई प्रान्त ऐसा नही था जहां इसके केन्द्र न रहे हो।

इलाहाबाद मे इस सस्था का मुख्य कार्यालय है जिसका अपना निजी भवन (१०६ वर्ष पुराना) नया १५३ विवेकानन्द मार्ग पर स्थित हैं। प० जवाहरलाल नेहरूजी के कर कमलो द्वारा इस भवन का सन् १६२८ मे शिलायान्स हुआ था। इसके अतिरिक्त इसके पास अपना एक निजी छात्रावास सहित महाविद्यालय है जो कि १ एलगिन रोड पर स्थित है।

विद्यापीठ द्वारा महिलाओ के लिए निम्न परीक्षाये सचालित होती है —

१. प्रवेशिका परीक्षा (८ वी) २. विद्याविनोदिनी (१० वी) ३. विदुषी साधारण (इण्टर), ४. विदुषी (आनर्स) (बी. ए), तथा सरस्वती परीक्षा (एम. ए.)।

दूसरी सस्था से पाचवी सख्या तक की परीक्षाओ को मान्यता बिहार सरकार द्वारा नौकरी के लिये प्राप्त है। मगध विश्वविद्यालय, बिहार तथा राची विश्वविद्यालय, बिहार विद्यापीठ की विद्याविनोदिनी परीक्षा को मैट्रिक कक्षा के समकक्ष की मान्यता देते है। राची विश्वविद्यालय विदुषी (साधारण) परीक्षा को इण्टर परीक्षा के समकक्ष की मान्यता प्रदान करता है। सरस्वती परीक्षा उत्तीर्ण को कुछ विश्वविद्यालय अपने बी. ए. तथा एम. ए. की कक्षा मे सम्मिलित होने की मान्यता प्रदान करते है।



सावित्री कन्या महाविद्यालय एवम् उच्च माध्यमिक विद्यालय, अजमेर

स्थापना—

प्रो० लालजी श्रीवास्तव सन् १६१३ में उत्तरप्रदेश से गवर्नमेन्ट कॉलेज अजमेर में प्रोफेसर बन कर आये। उन्होंने तथा उनकी सुयोग्य पत्नी श्रीमती रामप्यारी चन्द्रिका ने कन्याओं की शिक्षा हेतु ४ फरवरी १६१४ को दो प्राथमिक कक्षाएं स्वय के रहने के दो कमरो मे २ अध्यापिकाओं एव ५० विद्यार्थियो के साथ आरम्भ की। बाद में सावित्री पाठशाला केशर गज, कायस्थ मोहल्ला घी मन्डी (नया बाजार) एव बाबू मोहल्ला मे किराये के मकानो मे चलाई गई।

विद्यालय की उन्नति और वर्तमान स्थिति का श्रेय स्वर्गीय श्री ज्योतिस्वरूपजी गुप्ता के अथक परिश्रम और त्याग को ही है, जिन्होने १६३६ से १६६६ तक लगन व निस्वार्थ भाव से कार्य किया।

प्राथमिक शाला—

सन् १६३१ मे जब यह माध्यमिक शाला बनी तब तक इसकी प्रगति धीमी रही। उस समय १४० विद्यार्थी थे और वार्षिक व्यय २६२५) रु० था। १६२५ मे निष्ठावान दम्पत्ति श्रीनगर रोड पर एक जमीन प्राप्त करने मे सफल हुए और आकृति का दुमजिला भवन विद्यालय हेतु सन् १६३२ मे बन कर पूर्ण हुआ।

हाई स्कूल—

जुलाई १६३२ मे इस विद्यालय को हाईस्कूल परीक्षा के लिए मान्यता प्राप्त हुई। उस समय १६१ विद्यार्थी थे परन्तु धीरे धीरे सख्या मे वृद्धि होती गई और यह अनुभव किया गया कि यदि विद्यालय को विकसित किया गया तो यह भवन अपर्याप्त रहेगा।

इन्टरमीजियेट—

अधिक जमीन प्राप्त करने तथा विकास हेतु उपयुक्त क्षेत्र सहित एक आधुनिक भवन का निर्माण करने हेतु प्रयत्न किए गये। ऐतिहासिक स्थान आनासागर और दौलतबाग के बहुत निकट ही सिविल लाइन्स के एक सुन्दर स्थान पर ८००० वर्ग गज भूमि प्राप्त की गई। सन् १६४१ मे भव्य भवन का निर्माण कार्य आरम्भ हुआ जिसका मुख्य भाग १६४३ तक पूर्ण हुआ। जुलाई १६४३ मे हाईस्कूल वर्तमान भवन मे आ गया और तब से ही इस विद्यालय को इन्टरमीजियेट परीक्षा के लिए मान्यता प्राप्त हुई।



बी० ए० एवं एम० ए० इस विद्यालय को सन् १९५१ में स्नातक (कला) और सन् १९६२ में स्नातक (विज्ञान) की कक्षा की मान्यता प्राप्त हुई। जुलाई १९६१ से छात्रावास मे छात्राओ ने रहना आरम्भ कर दिया और सन् १९६२ मे कालेज विभाग वर्तमान भवन में आ गया।

सन् १९६८ मे इस विद्यालय को एम० ए० (इतिहास) एव १९६० मे एम० ए० (अर्थशास्त्र) की मान्यता प्रदान की गई।

अब इस विद्यालय मे नर्सरी कक्षा से लेकर बी० एस-सी० और एम० ए० तक की सभी कक्षाएँ चलाई जाती हैं। यहा २४०० छात्राएं हैं।

विद्यालय का क्षेत्र ३१६०० वर्ग गज (६½ एकड) है। केवल भवन का वास्तविक मूल्य १०,००,००० रु० तथा इसकी जमीन एव भवन का वर्तमानकालीन मूल्य ३० लाख रु० से अधिक है।

आज सुसज्जित और विशाल कॉलेज भवन मे एडीटोरियम, पुस्तकालय विभाग, विज्ञान विभाग और कक्षाओ के २० व ५ अन्य छोटे कमरे हैं।

ऐतिहासिक व दर्शनिय तारागढ पहाडी के सामने विद्यालय प्रांगण के ६३४५ वर्ग गज के क्षेत्र मे छात्रावास स्थित है। सावित्री कन्या महाविद्यालय आज शिक्षा की सभी सरणियो मे नारी जाति की महत्त्वपूर्ण सेवाए कर रहा है और उसकी उपलब्धिया अनेक है।





कस्तूरबा प्रशिक्षण विद्यालय की स्नातिकाएं—व्यायाम प्रशिक्षण के समापन समारोहमें अध्यक्षा श्रीमती मनुबेन गांधी के साथ



महिला मंडलका शैक्षणिक यात्रा का छात्रा–परिवार देशकी प्रथम महिला प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गाधी के साथ



मंच पर आसीन मंडल की अतिथि श्रीमती इन्दिरा गांधी साथमे अध्यक्ष श्रीमती इन्दुबाला सुखाडिया
स्वागत कर रही हैं संयुक्त मंत्री श्रीमती विद्या पाणेरी



श्री श्रोत्रिय के साथ चर्चा करते हुए तत्कालीन केन्द्रीय उपमंत्री श्री ए के चन्दा साथ में हे तत्कालीन
शिक्षा–सचिव श्री सत्यप्रसन्नसिंह भंडारी



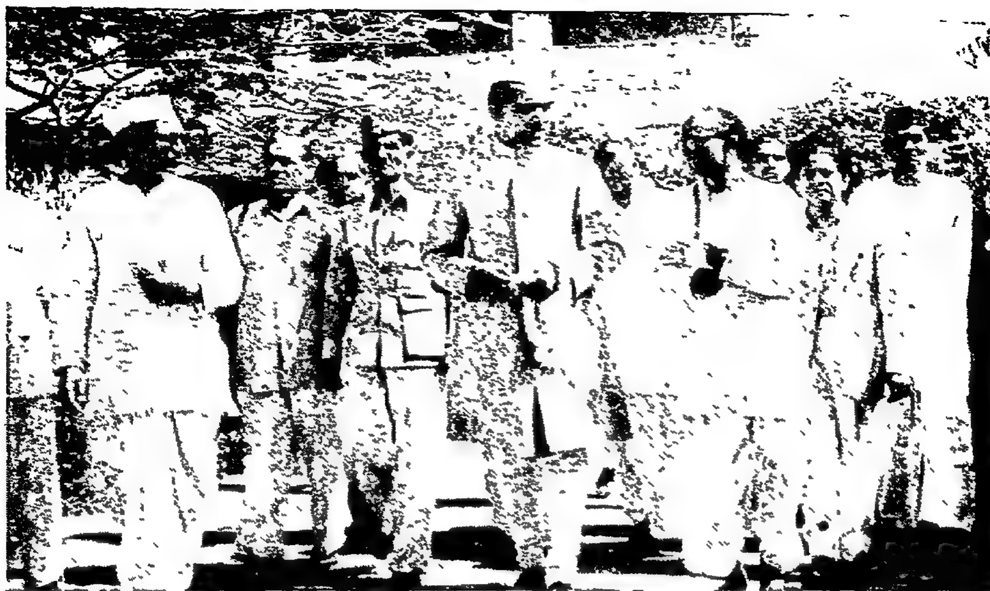
महिला-मंडल की छात्राओं द्वारा, भारतीय-संसद की कार्यवाही का प्रदर्शन, निर्देशक थे श्री महेश श्रोत्रिय.



मोण्टेसरी प्रशिक्षण के समापन समारोहमे राजस्थान विधानसभा के तत्कालीन अध्यक्ष श्री रामनिवास मिर्धा शिक्षामंत्री श्री बृजसुंदर शर्मा और शिक्षा उपमंत्री श्री निरंजननाथ आचार्य



कार्यकर्त्ता सम्मेलन मे (मंच पर आसीन) अध्यक्ष श्री मोहनलाल सुखाडिया एवं विशिष्ट अतिथि डा कालूलाल श्रीमाली विचार व्यक्त कर रहे हैं राजस्थान विद्यापीठ के उपकुलपति श्री जनार्दनराय नागर



महिला मण्डल के प्रागण मे, काय कर्ताओं के साथ, राजस्थान के तत्कालीन शिक्षामन्त्री श्री टीकाराम पालीवाल



घासाग्राम (तहसील मावली) के साक्षरता–प्रचार, मद्य–निषेध और जल-शुद्धि आन्दोलनका उदघाटन किया (मंच पर आसीन) श्री मोहनलाल सुखाडिया



श्रोत्रिय दम्पति के साथ, पारिवारिक क्षणो मे सस्था के विशिष्ट सहयोगी वैद्यरत्न
प भवानीशकर शर्मा



कस्तूरबा ट्रेनिंग विद्यालय : एक समूह चित्र



पर्दा–विरोधी जुलूस : श्रीमती राधादेवी गोयनका का नेतृत्त्व

भारतीय-नारी

अतीत वर्तमान और भविष्य



भारतीय नारी : युग युग में और आज

—मुनिश्री नगराजजी डी० लिट०

महर्षि मनु ने कहा—"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता" जहा स्त्रियो की प्रतिष्ठा है, वहा देवो का निवास है। स्त्रियो के विषय में यह सर्वोत्तम उक्ति है। इसी उक्ति के आधार पर बताया जाता है, भारतीय सस्कृति मे नारी का स्थान बहुत ऊचा है। किसी अपेक्षा विशेष से यह सत्य भी होगा, पर कुल मिलाकर देखें तो क्या भारत मे, क्या विश्व मे नारी पुरुष की अपेक्षा बहुत ही पिछड़ी दशा में रही है। समाज का नियन्ता पुरुष रहा है और उसने नारी को सदैव संकीर्ण सीमाओ मे बाघा है। इसमे पुरुष का नारी के प्रति दौर्मनस्य था ऐसा नही, पर स्वय का व समाज का हित उसको इसी मे लगा। यह एक प्रकार का दृष्टि-दोष था। नारी के व्यक्तिगत हितो को इसमे सर्वथा गौण कर दिया गया था। समाज हित जो उसमे समझा गया था, वस्तुत वह भी उसमे था नही। पुरुष जिसे अपना हित समझता था, वह भी उसका व्यक्तिगत स्वार्थ ही था। उसने सारे सामाजिक नियमन स्त्री पर डाले और स्वय उनसे मुक्त रहा। इसके उदाहरण है– स्त्री एक ही पति करे। पुरुष चाहे तो सहस्त्रो पत्निया भी कर सकता है। पति की चिता पर स्त्री आत्म-दाह करे, सती हो जावे। पुरुष स्त्री के पीछे ऐसा तो करेगा ही नही, पर उसके पीछे विधुर भी नही रहेगा। उसके घर को फिर से कोई नवोढा सुशोभित करेगी। सदाचार समाज मे आवश्यक है, पर घू घट उसके लिए स्त्री ही लगायेगी, पुरुष नहीं, ये नियमन ही पुरुष ने स्वय पर किये होते तो उसे अनुभव होता, ये कितने कठोर और कितने अव्यवहार्य है। उसने नारी की सीमाओ को इस प्रकार से सोचा ही नही कि ये ही सीमायें यदि मेरे लिए हो तो ?

नारी इनको व इस प्रकार के अन्य नियमो को शताब्दियो तक निभाती रही। आज भी वैसी ही अनेक रूढियो से वह चिपटी बैठी है। वह स्वय भी उन्हे छोडना नही चाहती। इसका कारण है, उसका चैतन्य मूर्छित हो चला है। उसे स्वत्व का मान भी नही हो पा रहा है। जिन शृ खलाओ से वह बाधी गई है और उनकी उपयोगिता जैसे उसे समझाई गई है, वह उसके अणु-अणु मे रम गई है। उसने उसे ही अपना अजर-अमर स्वरूप मान लिया है।

शिक्षा के क्षेत्र मे भी पुरुष ने स्त्री को अपने साथ नही रखा। पुरुष मे विद्या का, बुद्धि का विकास होता चला। नारी जहा की तहा रही। योग्यता के अभाव मे वह और उपेक्षित होती गई। वाणिज्य को स्त्री क्या समझे, राजनीति को स्त्री क्या समझे, यह कह कर पुरुष ने उसको घर की चाहरदीवारी तक ही सीमित कर दिया। पति अपनी आय व सम्पत्ति भी पत्नी को नही बताता। यह कहकर कि उसके पेट मे बात पचेगी नहीं। गृह, समाज, व्यापार आदि मे स्त्रियो का परामर्श हास्यास्पद बना दिया गया। समाज

मे यह मान्यता वन गई की स्त्रियो के परामर्श पर चलने वाला परिवार, समाज या राज नष्ट ही हो जायेगा। पुरुष ने नही सोचा नारी इतनी अयोग्य या अक्षम क्यो है तथा वह योग्य या सक्षम कैसे वन सकती है ? ऐसा होना प्रकृतिगत मानकर वह उससे वैसे ही वर्तता रहा। परिणाम हुआ नारी अक्षम वनती गई और उसी आधार पर उसकी अधिकाधिक उपेक्षा करता गया। उपेक्षा और अक्षमता की एक शृ खला वन गई। उपेक्षा से अक्षमता और अक्षमता से उपेक्षा। इस चक्रव्यूह मे नारी शताब्दियो और सहस्त्राब्दियो तक फसी रही।

आध्यात्मिक क्षेत्र में भी हेय मानी गई:–

इस प्रकार नारी सामाजिक जीवन मे तो उपेक्षित थी ही, आध्यात्मिक जगत मे भी वह हेय वताई जाती रही। ऋषियो ने, महर्षियो ने, सतो ने, साधको ने पुरुष के पतन का हेतु स्त्रियो को ही वताया। उसे कूट–कपट की खान कहा, पुरुष को नरक कुण्ड मे डाल देने वाली कहा। और न जाने उसे क्या क्या कहा। वस्तुस्थिति यह थी कि विकार हेतु पुरुष के लिए स्त्री थी और स्त्री के लिए पुरुष था। पता नही स्त्री ने ही पुरुष को कैसे डुवोया ? अधिक यथार्थ तो यह रहा है कि पुरुष ही नारी को पथभ्रष्ट करने मे अगुआ रहे हैं। पुरुष स्त्रियो को वलात् उठाकर ले भागे, ये उदाहरण तो इतिहास के पृष्ठो पर व धर्म-ग्रन्थो मे अनगिन मिलेंगे, पर स्त्री पुरुषो पर वलात्कार करती न देखी गई है, न सुनी गई है।

ऋषि–महर्षि और साधु–मुनि विरक्त वृत्ति मे थे। अन्य पुरुषो को भी वे विरक्त देखना चाहते थे। उनकी निरकुश काम वृत्ति को सीमित करने के लिए उन्होने स्त्री की गर्हा की, पर समाज ने यही समझा–ज्ञानी पुरुषो ने कहा है; अत स्त्री ही ऐसी है, पुरुष ऐसा नही।

अध्यात्म की अन्य अनेक दिशाओ मे भी नारी तर्जित ही रही। नारी होना भी पाप माना गया। किसी ने कहा—यह मोक्ष की अधिकारिणी नही है। किसी ने कहा सन्यास और दीक्षा की अधिकारिणी नही है। अध्यात्म मे और शिक्षा मे स्त्री के पिछडेपन का कितना सवल उदाहरण है कि वैदिक, वौद्ध, जैन परम्परा के असीम वाङमय मे एक भी ऐसा आधारभूत ग्रन्थ नही है जो किसी विदुषी साधिका के द्वारा लिखा गया हो।

भारती का या ऐसे कुछ एक अन्य नाम लेकर समस्त नारी समाज को शिक्षा के क्षेत्र मे समुन्नत वताया जाता है। शताब्दियो और सहस्त्राब्दियो के इतिहास मे दो-चार नामो का मिल जाना नारी समाज की शिक्षित दशा का मान-दण्ड नही वन जाता। उन नामो का उपयोग तो केवल इसी सदर्भ मे सगत हो सकता है कि अविद्या के उस युग मे भी ऐसी हो सकती हैं तो आज के विद्या वहुल युग मे नारी समाज अशिक्षित व अपढ रहे, यह लज्जा की वात है।

वुद्ध व महावीर के युग में–:

नारी युग-युग के अकन मे इतनी पिछडती गई कि उसे पर्याप्त रूप से उठा लेना किसी एक ही



युगपुरुष के वश की बात नही रही । नारी के प्रति अनेक कुण्ठित लोक-धारणायें प्रचलित हो गई थी । किसी भी क्षेत्र मे उसे आगे लाने मे सामाजिक विरोध से लोहा लेना पडता था । बुद्ध के सामने प्रश्न आया, सघ मे पुरुषो की तरह स्त्रियो को भी दीक्षित किया जाय । बुद्ध इस पक्ष मे नहीं थे । स्त्रियो को भिक्षु-सघ मे लेना उन्हे सामाजिक दृष्टि से व सघीय दृष्टि से उचित नही लगता था । बुद्ध की मौसी मा प्रजापति गौतमा ने आग्रह लिया । वह अनेक शाक्य स्त्रियो के साथ भिक्षुणी का वेश धारण कर बुद्ध के सम्मुख आ गई । निडरता पूर्वक उसने बुद्ध से कहा— "यह आपका कैसा धर्म-सघ है, जिसमे स्त्रियो को आत्म-साधना का अधिकार नही है ।" बुद्ध के अग्रणी शिष्य आनन्द ने भी गौतमी की दीक्षा का आग्रह लिया । बुद्ध ने कहा— यह कैसा लगेगा कि शाक्य कुल की स्त्रिया विभिन्न कुलो मे भिक्षार्थ भ्रमण करेंगी ?

आनन्द—भन्ते ! जिस गौतमी ने मातृ अभाव मे आपका लालन-पालन किया, उसे आप सघ मे प्रविष्ट होने की अनुज्ञा न दे, यह भी तो कैसा लगेगा ?

बुद्ध—आवुष आनन्द ! मै तुम्हारे आग्रह पर गौतमी को उपसम्पदा (दीक्षा) की आनुज्ञा देता हू, पर साथ-साथ यह भी घोषणा करता हू कि मेरा धर्म-सघ मेरे पश्चात् जितने समय तक चलता, अब उससे आधे समय तक चलेगा । क्योकि सघ मे स्त्रियो का प्रवेश हो गया है ।

इस घटना प्रसग से पता चलता है, नारी विषयक हीन भावनायें पुरुष के मस्तिष्क मे कहा तक घर किए हुई थी । युगपुरुष भी उसके अपवाद नही थे । बुद्ध ने इसी प्रसग मे इतना और जोडा— नव दीक्षित भिक्षु चिर दीक्षित भिक्षु को नमस्कार करता है, पर भिक्षुणी चिर दीक्षिता होगी वह भी नवदीक्षित भिक्षु को ही नमस्कार करेगी । गौतमी ने दीक्षा-प्रसग पर तो मूक भाव से बुद्ध की इस आज्ञा को शिरोधार्य किया, पर कुछ ही दिनो पश्चात् प्रश्न उठाया— "भन्ते ! ऐसा क्यो कि चिर दीक्षिता भिक्षुणी नव दीक्षित भिक्षु को नमस्कार करे ? नव दीक्षित भिक्षु यदि चिर दीक्षिता भिक्षुणी को नमस्कार करे तो क्या हानि ?"

"गौतमी । इत्तर धर्म सघो मे भी ऐसा नही होता कि पुरुष स्त्री को अर्थात भिक्षु भिक्षुणी को नमस्कार करे । अपना धर्म–सघ तो उन सबसे श्रेष्ठ है, इसमे तो ऐसा हो ही कैसे सकता है ।"

गौतमी का यह प्रश्न अब तक ढायी हजार वर्षो के बाद भी निरुत्तर खडा है । स्त्री पुरुष की श्रेष्ठता को चुनौती नही दे सकी, न पुरुष ने ही इस विषय मे अपना औचित्य बदला । बौद्ध और जैन, दोनो धर्म सघो मे अब तक यही परम्परा चल रही है ।

जैन परम्परा मे सदा से ही स्त्री और पुरुष दोनो समान रूप से दीक्षित होते रहे है । महावीर के सामने प्रश्न आया—क्या भिक्षु की तरह भिक्षुणी भी आचार्य के गुरुतर पद पर आरूढ हो सकती है ? समाधान रहा, सघ मे एक भी भिक्षु इस योग्य हो, तब तक भिक्षु ही आचार्य बनेगा, भिक्षुणी नही । योग्य

भिक्षु के अभाव मे भी वही भिक्षुणी आचार्य पद पर आरूढ़ हो सकती है, जिसकी दीक्षा पर्याय कम से कम साठ वर्ष को हो चली हो जब कि भिक्षु तरुण भी आचार्य पद पर आसीन हो सकता है। प्रस्तुत विधान भी यही बात व्यक्त करता है—श्रेष्ठता से, योग्यता से, क्षमता से नारी को बहुत न्यून समझा जाता रहा है। पर कहा जा सकता है, महावीर और बुद्ध के युग मे नारी जहां थी, वहां से बहुत कुछ आगे बढी।

बुद्ध की पत्नी यशोदा अवगुंठन नही रखती थी। राजकुल की वृद्ध महिलाये उसे ऐसा करने के लिए विवश करती तो वह कहती—ऐसा क्यो आवश्यक है, मेरी समझ मे नही आता। अत. अवगुंठन नही रखूगी। गौतमी और यशोदा सभवत. इतिहास की प्रथम महिलायें होगी, जिन्होने नारी जाति के पक्ष मे प्रश्न खडे किए।

लगता है, नारी के प्रति रहा हीनता और उपेक्षा का भाव गोस्वामी तुलसीदास के समय तक तो बना ही रहा। उन्होने स्वय जो नारी को तर्जना के योग्य कहा, इससे उस युग तक की सामाजिक धारणायें ही प्रतिबिंबित होती है। तुलसीदासजी के पश्चात् भी बहुत समय तक भारतीय सस्कारो मे वही धारणायें पनपती रही। लोक धारणायें थी— एक घर मे दो कलमे नही चलतीं अर्थात् पत्नी का पढना पति के लिए शुभ नही है। स्त्री के मानस में इतना भय भर दिया जाये तो उसके पढने का प्रश्न ही समाप्त हो जाता है। बिना शिक्षा के अन्य विकास स्वय कुण्ठित रह ही जाते है।

नये युग में कारायें कटीं :

नया युग आया। विज्ञान ने उक्त प्रकार के अन्ध-विश्वासो को कोशो दूर ढकेल दिया। सामाजिक व राजनैतिक क्षेत्र मे ज्यो ही समानता और व्यक्ति स्वातन्त्र्य के विचार उभरे, नारी की बहुत सारी कारायें एक साथ कटी। शिक्षा, साहित्य, राजनीति और सार्वजनिक क्षेत्रो के द्वार प्रथम बार नारी के लिए खुले। युग–युग से सामाजिक घुटन मे रही नारी मुक्त श्वास का वातावरण मिलते ही अप्रत्याशित रूप से आगे बढ गई। आज वह प्रधानमत्री के पद पर भी देखी जाती है और अन्य शीर्षस्थ पदो पर भी। सार्वजनिक क्षेत्र मे भी वह पुरुष से पीछे नही है। उसने चन्द दिनो में यह प्रमाणित कर दिया कि अक्षमता और अयोग्यता परिस्थितिजन्य थी न की नैसर्गिक।

युगीन चेतना ·

इस स्वाधीनता के लिए नारी ने कोई विप्लव नही किया था। युग की करवट के साथ पुरुष का चिन्तन ही उदार और विकसित हुआ। उसने ही सोचा समाज का एक अग इस प्रकार पक्षाघात से पीडित रहे, यह किसी भी स्थिति मे श्रेयस्कर नही है। वह नारी के साथ न्याय भी नही है। पुरुष की युगीन चेतना ने श्रमिक को अवसर दिया, किसान को अवसर दिया, अछूत को अवसर दिया, इसी प्रकार नारी को भी अपने पैरो पर खडा होने का एव अपनी सुषुप्त शक्तियो को विकसित करने का अवसर दिया।

हेय और उपादेय का मानदण्ड

वर्तमान युग ने भारतीय नारी को सक्रांति रेखा पर खडा कर दिया है। एक ओर उसके सामने



सीता, सावित्री आदि के शील व सेवा के आदर्श है। एक ओर उसके सामने अपने समानाधिकार के उपयोग का प्रश्न है। दूसरे शब्दो मे–एक ओर संस्कृति का प्रश्न है तथा एक ओर आधुनिक प्रगति का प्रश्न है। वर्तमान मे संस्कृति विकृति-मिश्रित हो रही है। उसके नाम पर नाना अन्धविश्वास, नाना रूढिया चल रही है। नारी को अपनी हस-मनीषा से संस्कृति और विकृति का पृथक्करण करना होगा। प्रगति भी आज अन्धानुकरण से पीडित है। उसे भी अपने विवेक से स्वस्थ दशा मे लाना होगा। इस प्रकार प्राचीन व अर्वाचीन की समन्वित रूप रेखा पर भारतीय नारी का नया दर्शन खडा होगा। भारतीय नारी को अपनी बद्धमूल धारणा का विसर्जन कर देना होगा कि प्राचीन है, वही श्रेष्ठ है। जो पूर्व पुरुषो ने कहा है, वही श्रेष्ठ है। प्राचीन मे भी श्रेष्ठ-अश्रेष्ठ दोनो रहे हैं। राम था, उसी युग मे रावण था। सीता थी, उसी युग मे सूर्पणखा थी। कृष्ण था उसी युग मे कस और युधिष्ठर था, उसी युग मे दुर्योधन। पूर्व पुरुषो ने जो कहा अपनी समझ मे अपने देश काल मे कहा। आज नारी को अपनी समझ से अपने देश काल मे सोचना है। बुद्ध ने अपने शिष्यो से कहा—भिक्षुओ। तुम इसलिए किसी बात को स्वीकार न करो कि वह तथागत (बुद्ध) की कही हुई है। तुम वही बात स्वीकार करो, जिसके लिए तुम्हारा विवेक तुम्हे प्रेरित करता है। अस्तु, हेय या उपादेय का मानदण्ड नवीनता या प्राचीनता नही, मनुष्य का प्रबुद्ध विवेक ही उसका अन्तिम मानदन्ड है। भारतीय नारी पूर्व पुरुषो की बात को विवेक पूर्वक स्वीकार करे तो वह नवीन युग के सृष्टाओ का भी आख मूद कर अनुसरण न करे, भले ही वे डार्विन, मार्क्स या फ्रायड हो।

विभिन्न कार्य क्षेत्र :

क्रमागत भारतीय समाज व्यवस्था का स्वरूप रहा है— नारी घर को सभाले। भोजन पानी की व्यवस्था करे। बच्चो की सार सम्भाल करे। शेष सब कुछ पुरुष करे। इस व्यवस्था मे स्त्री के पल्ले बहुत ही सीमित दायित्व रहता है। सीमित दायित्व में नारी का विकास भी सीमित ही रह जाता है। वर्तमान युग का मानदण्ड बन गया है, स्त्री पुरुष के सभी प्रकार के दायित्व में हाथ बटाये और उसे बल दे। शिक्षा, साहित्य, राजनीति, वाणिज्य और सार्वजनिक क्षेत्र में पुरुष जितना ही दायित्व वह अपना समझे। प्रश्न आता है, इससे गृह–व्यवस्था भग हो जायेगी। पारिवारिक जीवन अस्त-व्यस्त हो जायेगा। यह प्रश्न यथार्थ नही है। गृह-कार्य का सामजस्य बिठा कर भी महिला अन्य किसी भी क्षेत्र में सुगमता से कार्य कर सकती है। एक वकील अपनी वकालत भी चलाता है, सार्वजनिक क्षेत्र में व राजनीति में भी सुगमता से कार्य करता है। देखा जाता है, वह अपने दोनो क्षेत्रो में शीर्षस्थ स्थिति तक पहुँचता है। अन्य अनेक लोग बडे-बडे विभिन्न दायित्व एक साथ सभालते है। नारी के लिए ही ऐसा क्यो सोचा जाये कि वह अन्य क्षेत्रो मे आई तो घर चौपट हो जायेगा।

आर्थिक दायित्व :

भारत मे ऐसी परम्परा भी व्यापक रूप मे रही है कि परिवार मे एक कमाये और दस व्यक्ति बैठे-बैठे खाये। धनिको, उद्योगपतियो एव बडी नौकरी वालो के ऐसा निभता भी रहा है। युग समाजीकरण

की ओर बढ़ रहा है। कानून और व्यवस्थायें निम्न वर्ग के रूप में जा रही हैं। अधिक मुनाफा और अधिक संग्रह विभिन्न प्रकार से रोके जा रहे हैं। इस स्थिति मे चन्द उद्योगपतियों को छोड कर कोटि-कोटि मध्यम वर्गीय लोगो के लिए तो यह असंभव ही होता जा रहा है कि एक कमाये और परिवार के अन्य दस बैठे-बैठे खायें। अस्तु नारी के लिए चिन्तनीय विषय इतना ही है कि किस प्रकार की आजीविका या व्यवसाय को अपनाये, जिससे उसके गृह-दायित्व एवं आचरण पर कोई आंच न आये।

कला और सामाजिक श्लाघ्यता :

अभिनेता और अभिनेत्री, ये दो शब्द समाज मे बहुचर्चित हो चले हैं। युवक और युवतियां इस ओर कटिबद्ध हो रहे हैं। माता-पिता के चाहे-अनचाहे वे इस ओर बढ़े ही जा रहे हैं। भारत मे जब चलचित्रो का निर्माण शुरू हुआ, तब निर्माताओ को अभिनय के लिए युवतियां सुगमता से मिलती ही नही थी। समाज मे इस कार्य को अश्रेष्ठ माना जाता था, अत लड़कियाँ इस ओर आने का साहस ही नही करती। अब अभिनेत्रियो की बाढ सी आ गई है। इस प्रकार के व्यवसाय देश में पहले भी किसी रूप मे चलते थे। पर समाज मे वे उच्चता की भावना से नही देखे जाते। अब इस पहलू को चारो ओर से उभार मिल रहा है। प्रशासन उन्हे सम्मानित करता है। समाज कुछ-कुछ ऊँची निगाहो से देखने लगा है। साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओ ने भी उनके लिए स्वतंत्र पृष्ठ खोल दिये हैं। व्यवसायिक लोगो के विज्ञापन का निरूपम प्रतीक अभिनेत्री ही बन गई हैं। अभिनेता और अभिनेत्रियो के साक्षात मात्र के लिए लाखो लोग एकत्रित हो जाते हैं। समाज मे सभी प्रकार के व्यवसाय चलते हैं। श्रेष्ठता की छाप उस पर जब लगाई जाये, तब यह अवश्य सोचना चाहिए, यह हमारी संस्कृति के अनुरूप है या नहीं। किसी युवती का किसी पुरुष के साथ सार्वजनिक रूप से अभिनय करना श्लाघ्य नही है। समाज मे उसे प्रतिष्ठित करने का तात्पर्य है—समाज की युवतियां सामूहिक रूप से इस ओर प्रवृत्त हों। यह संस्कृति के लिए एक बडा धक्का होता है। ऐसे व्यवसायो मे कला का सम्बन्ध अवश्य है, पर उन कलाओ का समाज मे सीमित महत्व ही रहना चाहिए जो जीवन को श्रेय की ओर प्रेरित करने वाली न हो। कलाकारो के लिये भी यह चिन्तन का विषय है, उनकी कला का समाज के लिए रचनात्मक उपयोग क्या हो ? मनोविनोद तक ही सीमित रहने वाली कलायें असामान्य नही होती।

सौन्दर्य प्रतियोगिता :

सौन्दर्य प्रतियोगिता का ढर्रा भी देश में बल पकड़ रहा है। प्रतिवर्ष एक भारत सुन्दरी व एक विश्व सुन्दरी सामने आती है। सौन्दर्य प्रतियोगिता एक पश्चिमी प्रवाह है उसका सृजनात्मक पक्ष कोई है ही नही। फिर भी युवतियो के लिए यह एक गड्डरी-प्रवाह बन रहा है। उसका कारण है, पत्र-पत्रिकाओ के द्वारा इसको महत्व दिया जाना। भारत सुन्दरी या विश्व सुन्दरी चुने जाते ही एक अनजाना व्यक्तित्व पत्र-पत्रिकाओ के मुख पृष्ठ पर आ जाता है। एक 'नोबल प्राइज' पाने वाले को जितनी ख्याति नही मिलती, उतनी एक विश्व सुन्दरी को मिल जाती है। कार्य की उपयोगिता और निरूपयोगिता के अंकन मे कोई अन्तर न हो तो समझना चाहिए, समाज का बौद्धिक स्तर बहुत न्यून है। यही स्थिति सौन्दर्य प्रतियोगिता के सम्बन्ध से समाज मे बन रही है।



सौन्दर्य प्रतियोगिता के निर्णायक पुरुष होते हैं। उनके निर्णय का प्रकार भारतीय सभ्यता से बहुत ही परे का होता है। 'भारत सुन्दरी' और 'विश्व सुन्दरी' ये नाम भी यथार्थ नही हैं। प्रतियोगिता में भाग लेने वाली कुछ एक महिलाओ में जो सर्वाधिक सुन्दर है, उसे भारत में या विश्व में सबसे सुन्दर ख्यात कर देना कैसे यथार्थ हो सकता है? अस्तु, सौन्दर्य प्रतियोगिता का बढता हुआ प्रवाह पश्चिम के अन्धानुकरण का एक ज्वलन्त उदाहरण मान जा सकता है।

पर्दा-प्रथा

इसी प्रकार भारत में प्रचलित पर्दा-प्रथा सस्कृति के नाम पर होने वाली विकृति की उपासना का ज्वलन्त उदाहरण है। युग के पैने प्रहारो ने पर्दा-प्रथा की जडे खोखली कर दी हैं, फिर भी अन्ध विश्वासो का यह जर्जर वृक्ष धडाम से गिर नहीं गया है। कहा जाता है, यह प्रथा यवन युग की देन है। हो सकता है, यवन युग में इसने विशेष बल पकडा हो, पर इसके विरल पद-चिन्ह तो बहुत प्राचीन काल में भी देखे जाते हैं। महाकवि कालिदास ने अपने विख्यात नाटक 'अभिज्ञान शाकुन्तलम्' में अयोध्या नरेश दुष्यन्त की पत्नी व भरत की माता शकुन्तला के अवगु ठित होने का वर्णन किया है। महाकवि माघ ने अपने 'शिशु-पाल वध' काव्य में श्रीकृष्ण की रानियो के अवगु ठन बताया है। बुद्ध की पत्नी यशोदा ने जो घू घट न रखने का आग्रह लिया, उससे भी घू घट-प्रथा की प्राचीनता ही सिद्ध होती है। प्रश्न प्राचीनता का नही, उपयोगिता का है। प्राचीन काल में वह चाहे सदा से ही क्यो न रही हो, आज हमें इसकी कोई उपयोगिता नही लग रही है तो वह त्याज्य ही है। उसे भारतीय सस्कृति या भारतीय सभ्यता का अग मानकर पुष्ट करते रहना नितान्त हास्यास्पद ही है।

आकर्षक वेशभूषा

नारी समाज में सौन्दर्य प्रसाधनो का उपयोग पहले भी था, प्रकारातर से आज भी है। बहुमूल्य और जगमगाते आभूषणो से, रग-रगीली साडियो से उसकी मजूषायें पहले भी भरी मिलती थी, आज भी भरी मिलती है। पहले स्त्रियो की तरह पुरुष भी चाकचिक्य के समीप था। वह भी रगरगीले वस्त्रो व बहुमूल्य और विविध आभूषणो में सजा रहता था। आधुनिक सभ्यता ने उसको बदल दिया। आभूषण तो उसके शरीर से हट ही गये, वेशभूषा भी एक मान्य स्तर पर आने लगी है। आज बाजार जितना साडियो पर चलता है, उतना धोती और पैंटो पर नही चलता। घर में भी देखें तो पुरुष और स्त्री के व्यक्तिगत व्यय और सग्रह में बहुत अन्तर मिलेगा। नारी को इस दिशा में पुरुष की तरह ही सुधार लाने की अपेक्षा है। भारतीय सस्कृति के अनुसार नारी के लिए शील ही श्रृंगार है। इस आदर्श को वह जीवन में चरितार्थ क्यो नही करती। स्त्री और पुरुष के बीच एक-दूसरे का आकर्षण समान है तो साज सज्जा का अनहोना भार केवल नारी ही अपने सर क्यों ले लेती है। उसे भी अपने वेशभूषा के स्तर को पुरुष की तरह सयत और सादा बनाना चाहिए।

आधुनिक वातावरण मे नारी पहले से भी अधिक कृत्रिम होती जा रही है। लिपस्टिक, पावडर,

विचित्र केश–विन्यास कृत्रिमता के सजीव उदाहरण हैं। अनावरण की मानो प्रतियोगिता चल पडी है। सभ्यता के नाम पर नग्नता बढ़ रही है। आवरण और अनावरण की जैसे कोई रेखा ही नही रही है। एक समय पुरुष धोती में या कुर्ते में, कोट, बुसर्ट और पैंट में आवृत रहता है। सिर पर भी कुछ लोग टोपी या पगडी रख लेते हैं। स्त्रियो का आवरण मुख से गया, सिर से गया और अब पेट व पीठ से भी जा रहा है। यह निम्नता की प्रगति अश्लाघ्य है। नारी को स्वय प्रबुद्ध होकर अपनी वेशभूषा की सयत रेखायें स्थिर करनी चाहिए। उसके पक्ष में जनमत जागृत करना चाहिए ताकि सीमातीत अनावरण सामाजिक मान्यता न पा सके। अस्तु, कुल मिलाकर यही कहा जा सकता है, नारी प्रगति पाये पर सत्य, सयम और सदाचार की पृष्ठभूमि पर।

प्रेषक
मुहरसिंह जैन

[अणुव्रत सभागार, ८८ मेरिन ड्राइव]
बम्बई–२



हिन्दू समाज में नारी की स्थिति : समाजशास्त्रीय विवेचन

—डा० रामनाथ शर्मा

सामाजिक सगठन मे स्त्रियो की स्थिति समाज की दशा की परिचायक है। जिस समाज मे स्त्रियो की दशा जितनी ही अधिक गिरी हुई होगी, उनकी स्थिति जितनी ही नीची होगी, वह समाज उतना ही अवनत माना जायेगा। समाज सामाजिक सम्बन्धो का ताना बाना है। इन सामाजिक सम्बन्धो मे स्त्री-पुरुष के सम्बन्ध सबसे अधिक व्यापक, गहरे और स्थायी होते हैं। माता, पत्नी, प्रिया, मित्र, बहिन आदि विविध रूपो मे स्त्री समाज मे महत्वपूर्ण कार्य करती है। व्यक्ति के समाजिकरण मे उसके स्त्री से सम्बन्ध का बडा महत्व है। महान् व्यक्तियो पर उनकी माताओ का प्रभाव सर्वविदित है। पत्नी के व्यक्तित्व का पति के व्यक्तित्व पर अवश्य प्रभाव पडता है। प्रिया के रूप मे स्त्री ने समाज के इतिहासो को बदल दिया है। राजस्थान के इतिहास मे बहिन की राखी ने वह कार्य किया, जो कि अन्य कोई भी तत्व नही कर सकता था।

सामाजिक सगठन एक गतिशील प्रक्रिया है। उसमे भी हिन्दू सामाजिक संगठन विशेष रूप से गतिशील रहा है। इसी गतिशीलता मे उसके जीवन का रहस्य है। इसी गतिशीलता के कारण वह सब तरह के परिवर्तनो के बीच मे भी जीवित रहा। अत हिन्दू सामाजिक सगठन मे स्त्रियो की स्थिति सदैव एक सी नहीं रही। स्त्रियो की स्थिति का अध्ययन एक गतिशील प्रक्रिया का अध्ययन है जिसमे कभी उन्नति है कभी अवनति, कभी आरोहण है, कभी अवरोहण, इस अध्ययन मे जहा उनकी अवनति के कारण ज्ञात होगे वहा उनकी उन्नति के उपायो पर भी प्रकाश पडेगा।

समाज मे स्त्रियो की स्थिति के सम्बन्ध मे आधुनिक पश्चिमी विचारो का आधार समानता का सिद्धान्त है। स्त्रिया सभी क्षेत्रो मे पुरुषो के समान अधिकार प्राप्त किये हुये हैं। शिक्षा, नौकरी, चुनाव, पद, उत्तराधिकार, सभी मे वे पुरुष के समान मानी जाती हैं। स्त्रियो की सामाजिक स्थिति के विषय मे प्राचीन भारतीयो का भी यही विचार था। वैदिक युग मे लडको को लडकियो के बराबर समझा जाता था। कुछ लोग तो पण्डिता या विदुषी कन्या प्राप्त करने के लिये यज्ञ आदि करते थे। पर्दे की प्रथा नहीं थी। पुरुषो के समान ही स्त्रिया भी उच्च शिक्षा ग्रहण करती थी और उपनयन के बाद विवाह तक ब्रह्मचर्य का जीवन व्यतीत करती थी। उनको सभी विषयो मे पुरुष के समान अधिकार प्राप्त थे।



आधुनिक काल मे पाश्चात्य देशो मे स्त्रियो की शिक्षा पुरुष के समान आवश्यक मानी जाती है और वे लेखक, वैज्ञानिक, शिक्षक, कलाकार आदि के रूप मे ज्ञान–विज्ञान मे पुरुषो के समान योग्यता दिखाती है। प्राचीन भारत मे भी स्त्रिया उच्च शिक्षा प्राप्त करके ज्ञान-विज्ञान का भण्डार बढाती थी। ऋग्वेद मे अनेको सूक्तो की ऋषि, गोधा, घोषा, विश्ववारा अपाला, उपनिसद्, निषप्तृ तथा रोमशा आदि स्त्रिया ही थी। असानुक्रमणी मे लोपामुद्रा, शाश्वती तथा सूर्यासावित्री आदि अनेक ऋषिकाओ का उल्लेख है। बृहदारण्यक उपनिषद के अनुसार गार्गी वाचक्नवी ने महाराज जनक के दरबार मे याज्ञवलक्य ऋषि से ब्रह्मविद्या के विषय मे ऐसे-ऐसे प्रश्न किये कि उनको यह कह कर पीछा छुडाना पडा कि तुम ऐसे विषय मे प्रश्न पूछ रही हो जिसके बारे मे बहुत प्रश्न न करने चाहिये। महाभारत और पुराणो मे सिद्धा, शिवा, शाण्डिली, श्रीमती, श्रुतावती, सुलभा, धारिणी, मैना, वेदवती आदि अनेक विदुषी स्त्रियो का उल्लेख किया गया है। जब शकराचार्य ने मण्डन मिश्र को शास्त्रार्थ मे हरा दिया तब उनकी पत्नी भारती ने शकराचार्य से शास्त्रार्थ किया। सस्कृत साहित्य स्त्रियो द्वारा रचित काव्य रचनाओ से भरा पडा है, जिनमे विजयांका, शीला, विज्जा, मारुला, मोरिका आदि के नाम अधिक उल्लेखनीय हैं। सूक्ति मुक्तावली मे राजशेखर ने इनकी विस्तृत सूची दी है।

आधुनिक पाश्चात्य विचार धारा में पत्नी को Better Half कहा गया है। प्राचीन भारत में भी उसे अर्द्धांगिनी कहा जाता था। महाभारत मे कहा गया है "अर्धभार्या मनुष्यस्य" अर्थात् पत्नी मनुष्य का आधा भाग है। ऐतरेय ब्राह्मण मे पत्नी को पति का साथी कहा गया है। (सखा ह जाया)। ऋग्वेद मे पत्नी को पति के घर मे रानी की तरह रहने का आशीर्वाद दिया गया है। ऋग्वेद तथा अथर्ववेद मे पति पत्नी के लिये सामूहिक रूप से 'दम्पत्ति" शब्द ऋग्वेद के समय स्त्रियो की ऊँची स्थिति का बोधक है। दम्पत्ति का शाब्दिक अर्थ है घर का स्वामी (दम+पति)। इस प्रकार पति पत्नी का घर पर बराबर का स्वामित्व माना जाता था।

आधुनिक पाश्चात्य विचारधारा मे परिवार मे पति पत्नी के परस्पर सहयोग पर बडा जोर दिया गया है। उनके कार्यो के क्षेत्र बँटे हुए नही हैं बल्कि वे एक दूसरे के कार्यो मे हाथ बँटाते और अधिकतर कार्य सहयोग से साथ–साथ करते हैं। ऋग्वेद मे दम्पत्ति के एक साथ मिलकर कार्य करने का उल्लेख है। पति पत्नी दोनो एक मन होकर सोमरस निकालते थे, उसे शुद्ध करते थे, साथ यज्ञ करते थे, देवताओ को हवि देते तथा उनकी स्तुति करते थे और साथ ही साथ सुखोपभोग की क्रियाये करते थे। महाभारत मे पत्नी को धर्म, अर्थ और काम का मूल कहा गया है। उसे दुःख सागर पार करने का सहारा बतलाया गया है। प्राचीन भारत मे पत्नी के बिना कोई भी यज्ञ पूर्ण नही हो सकता था। पत्नी रहित व्यक्ति को यज्ञ करने का अधिकार नही था। अश्वमेध यज्ञ करते समय रामचन्द्रजी ने सीता की अनुपस्थिति मे उसकी सोने की प्रतिमा रखकर यज्ञ पूर्ण किया था।

उपरोक्त उदाहरणो से यह स्पष्ट है कि समाज मे स्त्रियो की स्थिति के विषय मे आधुनिक पाश्चात्य विचारधारा के मूल सिद्धान्त प्राचीन भारतीय आदर्शो मे पाए जाते है। प्राचीन भारतीय समाज की नारी आधुनिक नारी के समान उन्नत थी।



जहा तक अधिकारो और जागृती का प्रश्न है, प्राचीन भारतीय नारी और आधुनिक पाश्चात्य नारी की स्थिति मे अन्तर बहुत कम था परन्तु आदर्शो मे प्राचीन भारतीय नारी मे और आधुनिक पाश्चात्य नारी में भारी भेद है। प्राचीन भारतीय नारी का आदर्श पूजा के योग्य बनना था। तभी मनु ने कहा है "यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता" अर्थात् जहाँ नारियों की पूजा होती है वहा देवता वास करते है। प्राचीन भारतीय और आधुनिक पाश्चात्य नारी आदर्शो के मुख्य भेद निम्नलिखित हैं —

(१) प्राचीन भारतीय नारी आध्यात्मवादी थी। आधुनिक पाश्चात्य नारी भौतिकवादी है। प्राचीन भारत मे नारी का लक्ष्य ज्ञान-विज्ञान द्वारा अपने को ऊचा उठाना था। आधुनिक पाश्चात्य नारी का लक्ष्य शिक्षा आदि प्राप्त करके अधिक से अधिक सुखोपभोग करना है।

(२) प्राचीन भारतीयो का दाम्पत्य जीवन धर्म और आध्यात्म से ओत-प्रोत था। विवाह एक धार्मिक सस्कार माना जाता था। आधुनिक पाश्चात्य नारी के जीवन मे विवाह एक सामाजिक समझौता मात्र है, जिसे किसी भी छोटे बडे कारण से अथवा एक व्यक्ति से ऊब जाने से तोडा जा सकता है।

(३) प्राचीन भारतीय विदुषियो के लिए ज्ञान एक परम साध्य था। आधुनिक पाश्चात्य नारी के लिये ज्ञान और शिक्षा तथा विवाह सभी कुछ जीवन के ऐन्द्रिक सुखो का भोग करने के लिये हैं।

(४) प्राचीन भारत मे तलाक पर प्रतिबन्ध न होते हुए भी उसके अवसर बहुत ही कम आते थे। आज पाश्चात्य देशो मे तलाको की सख्या बढती जाती है।

(५) प्राचीन भारतीय पति पत्नी कर्त्तव्य पालन को प्रधानता देते थे। वे अधिकारो के लिये सघर्ष नही करते थे क्योकि उनके जीवन का आदर्श दाम्पत्य प्रीति और त्याग था। आज की पाश्चात्य नारी अपने अधिकारो पर जोर देती है। इसके जीवन मे प्रेम का अर्थ रोमान्स अथवा साथीपन मात्र है। उसके जीवन का मूल मन्त्र त्याग नही बल्कि भोग है।

(६) प्राचीन भारतीय नारी ने पुरुष से किसी प्रकार कम न होते हुए भी कभी उससे प्रतियोगिता नही करनी चाही। आज की पाश्चात्य नारी जीवन के प्रत्येक क्षेत्र मे पुरुष की प्रतिद्वन्द्वी है। उसमे आग है, रोशनी नही। इस विषय मे आधुनिक भारतीय नारी पश्चिम का अनुकरण करने में बहुत कुछ खो देगी। उसको प्राचीन भारतीय नारी से ही प्रकाश मिल सकता है।

मध्ययुग मे हिन्दू समाज मे स्त्रियो की सामाजिक दशा बहुत गिर गई। स्मृतिकारो ने छोटी आयु मे विवाह के नियम बनाये जिससे बाल–विवाह की प्रथा प्रचलित हुई और साथ ही विधवाओ की सख्या बढने लगी। विधवाओ के लिये भी कठोर नियम बनाये गये। स्त्री पुरुष की समानता का प्राचीन आदर्श समाप्त हो गया और स्त्रिया पुरुष की दासी मान ली गई। बौद्ध और मुसलमानो के काल मे यह दशा और भी गिर गई। मुसलमानो के काल में पर्दा प्रथा, सत्ती प्रथा और जौहर प्रथा का प्रचार हुआ।

भारत मे अधिकाश नारियो के लिये मध्ययुग की यह अवस्था अब भी वैसी ही है। यह तो नही

कहा जा सकता कि भारत मे स्त्रियो का जितना शोषण हुआ उतना अन्य कही नही हुआ परन्तु यह माना जायेगा कि भारत मे स्त्रियो का भयकर शोषण हुआ और मध्ययुग से आज तक उन पर बडे–बडे अमानुषिक अत्याचार किये गये । कन्या के जन्म पर बहुत से हिन्दू लोग आज भी शोक मनाते हैं । साधारणतया प्रत्येक परिवार मे कन्या के उत्पन्न होने पर उतनी प्रसन्नता नही होती जितनी की पुत्र के उत्पन्न होने पर मनाई जाती है । अधिकतर भोजन, वस्त्र, शिक्षा आदि मे लडकियो को लडको के समान महत्व नही दिया जाता । विवाह के योग्य होने पर उनकी सहमति लिये बिना ही उनका विवाह कर दिया जाता है । पति के घर मे उसकी दशा और भी खराब हो जाती है । पति, सास, ससुर, ननद, देवर आदि सभी बहू को सबकी आज्ञा मानने वाली और चुपचाप दिन भर काम करने वाली दासी समझते हैं । उससे यह आशा की जाती है कि वह सबसे पहले उठे, सबके बाद सोये, सबसे अधिक काम करे, सबसे कम और बचा कुचा भोजन करे, सबसे अधिक डाट सहे और मुँह खोलने पर पति की मार खाये । यदि पति उसको छोड दे अथवा दूसरा विवाह करले या मर जाये तो उसके सिर पर आफतो का पहाड टूट पडता है । सब उसे कुलच्छनी कहते है, उससे घृणा करते हैं और कोई उसे शुभ काम मे पास नही फटकने देता । विधवा को पति की सम्पत्ति मे कोई अधिकार नही मिलता ना ही कोई उससे विवाह करता है ।

हिन्दू जीवन के सिद्धान्त पुरुषो ने बनाये थे । उन्होने समाज मे पुरुष की श्रेष्ठता स्थापित की और नारी को समान अधिकार से वंचित रखा । अशिक्षित और दुर्बल नारी ने वधू, विधवा, दासी और स्त्री के रूप मे सदियो तक पुरुष के अत्याचार सहे । कुछ पुरुष दार्शनिको ने उसको नरक का द्वार तक कह डाला मानो कि पुरुष बिल्कुल शुद्ध और महान् हैं । पुरुष ने स्त्री को अपनी वासनाओ का खिलौना बनाकर भी सारा दोष उसी के सर पर मढ दिया । विधवा को विवाह की अनुमति नही दी और घर के ही पुरुषो ने लुकछिप कर उसके यौवन का उपभोग करना चाहा । उसके हजार आनाकानी करने पर भी उसकी एक न चली । परन्तु जब यह पाप छिप न सका तो उसी पुरुष ने सारा दोष विधवा पर डाल कर उसको घर से निकाल दिया । असहाय, निर्बल, जवान विधवा वैश्या बनने पर मजबूर हो गई । यह हजारों विधवाओ की कहानी हैं । वैश्या के यौवन को भोगने के लिये हजारों पुरुषो ने उसके आगे कुत्ते की तरह दुम हिलाई, रात के अन्धेरे मे उसके पैर पकडे और खुशामदें की, उसकी गालिया सुनी और दिन के उजाले में उन्ही पुरुषो ने उसको समाज का कोढ, सभ्यता का अभिशाप और पाप की नालिया कहा । पत्नी के रूप में स्त्री को पति को मोल ली हुई दासी के समान दिन रात उसकी और उसके परिवार को सेवा करनी पड़ी । थोडी सी भी भूल हो जाने पर उसको मार तक सहनी पडी । पुरुष तुलसीदास ने लिखा–

" ढोल गंवार शूद्र पशु नारी । ये सब ताड़न के अधिकारी । "

गोस्वामीजी ने चाहे ये शब्द किसी भी अभिप्राय से लिखे हो, परन्तु उनके भक्त पुरुषो ने उनके रचनो का सदियो तक अक्षरश पालन किया है और अब भी कर रहे हैं । पुरुप स्मृतिकारो ने पति के जीवित रहते स्त्री को दासी के समान उसकी सेवा करने और उसके मर जाने पर ब्रह्मचर्य जीवन व्यतीत करने का आदेश दिया । पुरुष ने सती की प्रशसा करके स्त्रियो को बहकाया और त्याग की मूर्ति भोली



स्त्रिया पति की चिता पर चढकर उससे स्वर्ग मे मिलने की चेष्टा करने लगी। पुरुष कितने भी विवाह करले लेकिन स्त्री को बोलने अथवा प्रतिकार करने की अनुमति नहीं थी। स्त्री के गर्भ से उत्पन्न पुरुषों ने ही उसको हेय समझकर शिशु रूप मे ही उसका गला घोट दिया या विष देकर मार डाला, जवान होने पर उसको रुपया लेकर बेच दिया, उसको दास बनाकर रक्खा पति के साथ सती होने पर मजबूर किया और किसी प्रकार का कोई अधिकार नही दिया।

परन्तु अब पुरुष के इस सदियो पुराने षडयन्त्र का भण्डा फूट चुका है। स्वतन्त्रता के इस युग में स्त्रियो ने भी पुरुष के अत्याचारो के विरुद्ध विद्रोह किया है। उसने धर्म के ठेकेदार, समाज के कर्ता-धर्ता पुरुषो के विचारो को चुनौती दी है। भारतीय शिक्षित नारी ने हिन्दू जीवन के सिद्धान्तो का पुन परीक्षण किया है। उसने जाना है कि वह पुरुष से किसी भी प्रकार कम नही है। अत हिन्दू जीवन में जहा कहीं उसको पुरुष से हेय माना गया वहा उसने विद्रोह किया है। उसने बालिका वध, सती, विधवा विवाह निषेध, पर्दा, बाल-विवाह, अनमेल विवाह, पुरुषो द्वारा बहु विवाह, स्त्रियो को सम्पत्ति आदि में समानाधिकार न देना, स्त्रियो को शिक्षा की कमी और उनको अबला, भोग्या आदि समझने के विचारो और सिद्धान्तो के मूल में छिपे पुरुष के स्वार्थ और षडयन्त्र को समझा है। उसने हिन्दू धर्म में लक्ष्मी को विष्णु भगवान के पैर दबाते दिखाये जाने की धार्मिक पोल को पहचाना है।

स्त्रियो द्वारा हिन्दू पारिवारिक, धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक अथवा जीवन के अन्य पक्षो से सम्बन्धित सिद्धान्तो का पुनःपरीक्षण हिन्दू समाज के लिये महानतम चुनौती है। समाज को इन सिद्धान्तो में परिष्कार तथा परिवर्तन करके स्त्रियो को सब कही समानाधिकार देने पडेंगे। अब स्त्री को धर्मशास्त्रो के वचनो मे मूर्ख नही बनाया जा सकता क्योकि धर्म शास्त्र भी आखिर पुरुष ने ही रचे है। अब उनको स्मृतिकारो और दार्शनिक महात्माओ के वाक्यो से धोखे में नही रक्खा जा सकता क्योकि ये सब पुरुष थे और स्त्रियो की भावनाओ, प्रतिभाओ और त्याग को सही रूप में नही समझ सकते थे।

हिन्दू समाज को स्त्रियो की यह चुनौती किसी अबला की दबी आवाज नही है बल्कि एक वास्तविक चुनौती है जो कि उनको जीवन के सभी क्षेत्रो मे समानता मिले बिना कभी भी समाप्त न होगी। यह चुनौती कोरी जबानी चुनौती नही है। यह अधिकारो के युद्ध की घोषणा है। युद्ध प्रारम्भ हो चुका है और स्त्री बराबर जीत रही है क्योकि उसने सत्य का पक्ष लेकर झण्डा उठाया है, क्योकि उसमे साहस है, बल है, शिक्षा है, आजादी के लिये आग्रह है।

अस्तु, भारत मे अब सभी क्षेत्रो में स्त्री को समान अधिकार मिलते जा रहे हैं। बाल-विवाह बन्द हो गये हैं, हिन्दू मैरिज एक्ट से तलाक और सिविल मैरिज की अनुमति मिल चुकी है। हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम से उनको सम्पत्ति में समान अधिकार मिल चुके हैं। हिन्दू विधवा पुनर्विवाह अधिनियम से विधवा विवाह वैध घोषित कर दिया गया है। सती प्रथा कानूनी अपराध बन चुकी है। इधर सरकार ने वैश्यावृत्ति को भी कानून द्वारा समाप्त कर दिया है। दहेज के विरुद्ध कानून बनाने के लिये जोर-शोर

से प्रयास हो रहा है। स्त्रियो मे सब प्रकार की उच्च शिक्षा बढ रही है। वे सरकार में बडे से बडा पद प्राप्त कर सकती है। राजनैतिक क्षेत्र में उनके अधिकार पुरुषो के समान हो गये है। एक स्त्री (स्वर्गीय सरोजनी नायडू) बहुत दिनो तक उत्तर प्रदेश की गवर्नर रही। एक स्त्री (पद्मजा नायडू) बगाल की गवर्नर रही। एक स्त्री (इन्द्रा गांधी) देश की सबसे बडी राजनैतिक पार्टी काग्रेस की गत अध्यक्षा थी और वर्तमान प्रधान मत्री है। एक स्त्री (विजय लक्ष्मी पण्डित) इगलैण्ड में राजदूत रही। एक स्त्री (श्रीमती लक्ष्मी मेनन) केन्द्रीय सरकार में उप विदेश मत्री हैं। एक स्त्री (श्रीमती वायोलेट अलवा) केन्द्रीय सरकार मे उप गृहमत्री हैं। एक स्त्री (श्रीमती हसा मेहता) एक प्रसिद्ध विश्वविद्यालय की उपकुलपति हैं। भूत पूर्व स्वास्थ्य मत्राणी स्वर्गीय राजकुमारी अमृतकौर की सेवाओ से सभी परिचित है। साहित्यकारो में महादेवी वर्मा, सुभद्रा कुमारी चौहान, खिलाडियो में इगलिश चैनल तैरने वाली आरती साहा, राजनीतिज्ञो मे श्रीमती अरूणा आसफ अली और श्रीमती कृपलानी तथा श्रीमती इन्दिरा आदि उल्लेखनीय हैं। सभी प्रकार की नौकरिया यहां तक कि सेना तथा वायुयान चालन और पुलिस तथा इन्जीनियरिंग में भी स्त्रियां प्रवेश करने लगी हैं। वह दिन दूर नही जबकि जीवन के सभी क्षेत्र में स्त्रिया पुरुष के समकक्ष आ जायेंगी और भारत में सामाजिक क्रांति की प्रक्रिया का एक चरण पूर्ण होगा।

[मेरठ कॉलेज, मेरठ]





नारी की चौदह विद्याएं और चौंसठ कलाएं

—कुसुम महता "प्रियदर्शिनी"

हमारे देश मे अति-प्राचीन काल से स्त्रियो के लिए चौदह विद्याए और चौसठ कलाए जानना आवश्यक माना गया है। चौदह विद्याए चतुराई की बातो से और चौसठ कलाए हस्त क्रियाए अथवा शिल्प से सम्बन्ध रखती है। जो स्त्री इन विद्याओ और कलाओ मे दक्षा हो उसे ही सर्व गुण सम्पन्न स्त्री कहा जाता है। अब इनका जानना तो दूर रहा, इनके नामो से भी कोई परिचित नहीं है। खोज मे जो जानकारी प्राप्त हुई है उनके विषय के सम्बन्ध मे भी मतभेद है।

कोई चार वेद, चार दर्शन और छ वेदागो अर्थात् ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद, शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छद और ज्योतिष, मीमासा, न्याय, धर्मशास्त्र और पुराण को चौदह विद्या मानता है तथा कोई मीमासा, न्याय, धर्मशास्त्र और पुराण को इनमे नही गिनते। इनके स्थान पर आयुर्वेद, धनुर्वेद, गान्धर्ववेद और स्थापत्य को मानते है। एक अन्य मत मे निम्न पद्य मे इन विद्याओ की चर्चा की है—

१ राग, २ रसायन, ३ तिरपगति, ४ नटविद्या, ५ वैद्य ग।
६ तुरग चढन, ७ व्याकृति पढन, ८ जानन ज्योतिष अग ॥
९ धनुष बाण, १० रथ हाकिबो, ११ चोरी, १२ ब्रह्मज्ञान।
१३ जल तैरन, १४ धीरज धरन, चौदह विद्या जान ॥

चाहे इनके विषयो मे थोडा बहुत अन्तर या मतभेद हो परन्तु नि सदेह ये है सभी महत्वपूर्ण विद्याए।

क्षेमेन्द्र कवि ने स्त्रियो के लिए निम्न चौसठ कलाओ को उपयोगी एव व्यवहारिक माना है— (१) गान—गीत गाना (२) वाद्य—बाजा बजाना (३) नृत्य—नाचना (४) नाट्य—नाटक करना (५) आलेख्य—चित्रकारी करना (६) विशेष कच्छद—बेंदी इत्यादि बनाना (७) तण्डुल कुसुमाव लिविकार—बिना टूटे हुए अर्थात् अक्षत चावलो को लेकर घर के भीतर तथा आगन मे बेल, फूल इत्यादि बनाना (८) पुष्पास्तरण—फूलो की सेज बनाना (९) दशनवसनाग राग—दात रगना, वस्त्र रग कर पहनना, अग पर सुगन्धि आदि लगाना (१०) मणिभूमि निर्माण—ग्रीष्म ऋतु मे शरीर ठडा होने के लिये मरकत मणि आदि से आगन पूरना (११) इन्द्रजाल—कौतुक दिखाना (१२) उदक वाद्य—जलतरग

आदि बजाना (१३) उदकाघात—जल में तैरना (१४) चित्रांगयोग—पति की इच्छा रतिरग की हो, परन्तु अपनी न हो तो इन्द्रियो की शिथिलता दर्शाना (१५) माल्य ग्रथन—माला या हार बनाना (१६) शेखरापीडयोजन—केशो मे गूंथने व टाकने के लिए वेणी व पुष्प गुन्छ बनाना (१७) नेपथ्य योग—वेश बदलना (१८) कर्ण पत्र भंग—कानो में पहनने के लिए हाथी दाँत, शख, माणिक तथा अन्य वस्तुओ के पुष्प व बुन्दे इत्यादि बनाना (१९) गधादि युक्त—अग में सुगधि आदि लगाना (२०) भूषण उक्ति—आभूषणो को यथास्थान शोभायुक्त पहनना (२१) कौचुमारा श्वयोग—कृत्रिम सौन्दर्य दर्शाना जिसमे पति को अत्यन्त मोह उत्पन्न हो (२२) हस्तलाघव—काम करने की हथौटी (२३) विचित्र शाक लक्ष्य योग—अनेक प्रकार के शाक बनाने की क्रिया और दक्षता (२४) समस्या—काव्य रचना करना (२५) पान-करसरागासव योग—पीने के पेय, चटनी, आसव आदि बनाना (२६) सूचीवान कर्म सीना पिरोना (२७) सूत्र क्रीडा—भरत कला जैसे रग लिपना (२८) प्रहेलिका—पहेली व गूढ अर्थ पूछना (२९) प्रतिमाला—तत्काल उत्तर देने मे दक्षता (३०) दुर्वचन—वाक् चातुर्य (३१) पुस्तक वाचन—पुस्तक इस प्रकार पढना की श्रोताओं को रुचिकर लगे (३२) नाटकाख्यायिकादर्शन—नाटक व कहानी जानना (३३) पट्टिकावेत्रवाणविकल्प—कुर्सी इत्यादि बुनना (३४) तक्षकमणि वा तर्ककर्म—एक मे से दूसरे को खीचना, जैसे प्रसव समय बालक को (३५) तक्षण—घर के सामान को शोभायुक्त सजाना (३६) वास्तु विद्या—घर के पदार्थों की व्यवस्था व रक्षा (३७) धातुवाद—धातु की प्रकृति व स्वभाव को पहचानना, जिससे धोखा न खाए (३८) रूप्यतत्त्वपरीक्षा—सोना चादी का खरा-खोटा जानना (३९) मणिराग ज्ञान—मणियो व नगो को रख कर अधिक शोभायमान बनाना तथा उनकी पहचान का ज्ञान (४०) आकर ज्ञान—हीरे के नीचे उगली रखकर देखने मे जो उगली की रेखा दिख पडे तब तो झूठा वरना सच्चा (४१) वृक्षायुर्वेद—गृहवाटिका का ज्ञान (४२) मेष, कुक्कुट, लावक युद्ध विधि—मुर्गा, तीतर, बटेर इत्यादि की लडाई की बाते जानना (४३) शुकसारिकालापन—तोता, मैना आदि को पाल कर पढाना (४४) उत्सादन—पति के पाव दबाना (४५) केशमार्जन—बालो मे सुगधि का लेपन (४६) अक्षरमुष्टि का कथन—थोडे मे शब्दो मे अधिक अर्थ प्रकट करने की चतुराई (४७) म्लेच्छ भाषा—विदेशी भाषाए जानना (४८) देश भाषा—देश के विभिन्न राज्यो की भाषाओ का ज्ञान (४९) धारणमातृका—धारणा शक्ति को बढाना (५०) पुष्पशकटिका—पति को पुष्प के माध्यम से मोहित करना (५१) यंत्रमातृका—यत्रो का उपयोग जानना (५२) सवाद्य कर्म—मिलकर गीत-गान मे निपुणता प्राप्त करना (५३) मानस काव्य—मन मे सोचा हुआ दोहा आदि बतला देना (५४) कोष छन्दो विज्ञान—कोष और छन्द का ज्ञान होना (५५) क्रिया विकल्प—सिद्ध किये हुए पदार्थ की पहचान करना (५६) छलितयोग—छल की युक्तियो को जानना जिससे ठगाया नही जाए (५७) वस्तुगोपन—गुप्त या गडी वस्तु को पहचानना (५८) द्यूत—



शतरंज आदि जुए के खेल के दाव पेच जानना (५९) आकर्षक्रीडा—कसरत आदि के दाव पेच जानना, शारीरिक प्रदर्शन से पति को प्रसन्न करना (६०) बालक्रीडन—खेल ही खेल मे बालको को उनके कर्तव्यो का ज्ञान कराना (६१) वैनायिकी विद्या—बाजीगरो की चालाकी आदि जानना (६२) वैजयिकी विद्या—विजय प्राप्त करने की विद्या (६३) व्यायाम की विद्या तथा (६४) विद्याज्ञान—सामान्य चतुराई।

सभी काल-युग एव परिस्थितियो मे स्त्रियो द्वारा इन चौदह विद्याओ एव चौसठ कलाओ का अपनाया जाना उनके स्वय के लिए उपयोगी है। समय की गति एव समाज के परिवर्तित प्रचलित स्वरूप के अनुसार इनमे सामयिक परिवर्तन किया जा सकता है। अवश्य ही यह सभव नही है कि प्रत्येक स्त्री इन सभी विद्याओ और कलाओ मे पारगत हो, किन्तु इनमे से अधिकाधिक का ज्ञान प्राप्त करना तथा उनमे निपुणता प्राप्त करना उसका लक्ष्य होना चाहिऐ। अपने परिवार के सुख, समृद्धि व सौजन्य के लिए इन विद्याओ एव कलाओ के बारे मे छोटी अवस्था में ही बालिकाओ को शिक्षा दी जानी चाहिये। आधुनिक स्त्री शिक्षा के अन्तर्गत भी पाठ्यक्रम में इनका समावेश किया जाना आवश्यक है जिसमे कि बालिका अपने भावी जीवन कोसपूर्ण और सुखी बना सके।

1037, स्टेशन रोड,
जयपुर (राजस्थान)

भारतीय नारी : संस्कृत साहित्य के आलोक में

—डॉ० रुद्रदेव त्रिपाठी

भारतीय-प्रज्ञा ने जब अपनी पहली किरण भू पर उतारी तब आज तक का इतिहास साक्षी है कि–हम सदा नारी के प्रति नतमस्तक रहे हैं, कृतज्ञ रहे है, उसकी छाया मे पले हैं, बढे हैं और समुन्नत हुए हैं। सस्कृत-साहित्य इन बातो की पुष्टि ही नही करता अपितु भूले-बिसरे भारतीय मानव को प्रतिक्षण शिक्षण भी देता रहा है। इस शिक्षा का चरम उत्कर्ष हमे महाभारत के निम्न पद्य मे दिखाई देता है—

नास्ति मातृसमा छाया नास्ति मातृसमा गति।
नास्ति मातृसम त्राणं नास्ति मातृसम. प्रिय ॥

—शान्तिपर्व २५८ अ

प्रजा का सवर्धन करने वाली माता दुर्वह उत्तरदायित्व निभाती हुई हमारे पूरे जीवन मे ओतप्रोत रहती है और वह अपनी थाती को पद पद पर प्रेरित करती रहती है, इसीलिये उसके प्रति महनीयता का भाव सस्कृत के विद्वानो ने व्यक्त करते हुए कहा है कि– नास्ति मातृसमो गुरु ।

● नारी के विविध रूप—

गर्भ मे सन्तान को धारण करने के कारण "धात्री", जन्म देने के कारण 'जननी', अङ्गसवर्धन मे सहयोगिनी होने से 'अम्बा', गृह की व्यवस्था करने से गृहिणी, पति के शुभ कार्यो मे हाथ बटाने के कारण 'पत्नी तथा शुश्रूषा मे लगी रहने के कारण 'शुश्रू' कहलाने वाली नारी के सस्कृत-साहित्य मे इतने अधिक नाम रूप व्यक्त हुए है कि जिनका सकलन एक स्वतन्त्र ग्रन्थ का विषय है। महाकवि कालिदास ने इसी दृष्टि से एक स्थान पर कहा है कि–गृहिणी सचिव सखी मिथ प्रियशिष्या ललिते कलाविधा। (रघुवश) इसमे नारी को जीवन का सर्वस्व बतलाया है। और तभी तो नारी भी नर का अनुकरण मे 'श्रुतेरिवार्थं स्मृति' के समान सदा रही है। कन्या, वधू पतिव्रता पत्नी, माता और दारा का तत्व सस्कृत-साहित्य समझाता है, वह अन्यत्र कहा सुलभ हो सकता है ?

● नारी देवी के रूप में—

प्रकृति हो या पृथ्वी, ऊषा हो या चाँदनी, दुर्गा, उमा, पार्वती, सावित्री, सरस्वती, गायत्री, गङ्गा, लक्ष्मी, अदिति, देवपत्नियाँ, यक्षिणी, नागकन्याएँ तथा अन्य अनेकानेक उपास्य देवियाँ नारी के देवीत्व और आराध्य तत्व की अनुपम सम्पत्ति है। हमारा उपासना-काण्ड एक ओर अणु-अणु मे नारी सत्ता को स्फूर्तिमान् अभिव्यक्त करता है तो दूसरी ओर ज्ञान काण्ड भी उससे अछूता नही रहता। तैत्तिरीय उपनिषद



की यह आज्ञा– मातृदेवो भव' क्या कभी भुलाई जा सकती है ? 'दुर्गासप्तशती' मे भगवती की स्तुति करते हुए देवताओ ने कहा था कि—

विद्या समस्तास्तव देवि भेदा,
स्त्रिय समस्ता सकला जगत्सु ।
त्वयैकया पूरितमम्बयैतत्
का ते स्तुति स्तव्यपरापरोक्ति ॥११॥६॥

इसमे समस्त नारियो को भगवती का रूप भेद माना है । इस नारी-निरूपण की परम्परा मे ही हमारी प्रेरणादायिनी लोकोत्तर चरित्र-सम्पन्ना वे नारियाँ भी आजाती है, जिनके आख्यानो से पुराणो की गोद भरी हुई है ।

● नारी की भूमिका मे आगत का स्वागत—

इतना ही नही, संस्कृत-साहित्य की विशाल परिधि मे अनेक स्थानो पर नारी की भूमिका मे अवतरित होने वाले सभी जड और चेतन का सादर स्वागत हुआ है, जिसमे पशु पक्षी और पौधे भी हमारे सम्मान के कारण बने हुए हैं । इतना ही क्यो ? जब हमारी चेतना मे स्फूर्ति आई और कुछ कहना चाहा तो जो पुम्प्रकृतिक उसका भी स्त्री प्रकृतिक स्वरूप खोज निकाला अथवा अपनी आस्था के अनुरूप नाम रूप दे दिया । आज का बहुप्रचलित 'भारतमाता' का मातृत्व भी इसी कोटि मे आता है । मातृसत्ता के आराधक भारतीय ने विश्व को इस ओर आवर्जित ही नही किया है अपितु उसे ऐसा करने के लिये बाध्य कर दिया है । इसकी पुष्टि मे आचार्य शकर की सौन्दर्यलहरी मे वर्णित– शिव शक्त्या युक्तो यदि भवति शक्तम्भिप्रभुवने, न चेदेव देवो न खलु कुशल स्पन्दितुमपि'– यदि शिव शक्ति 'इकार' मे युक्त है तो वह सर्वविध क्रियाओ मे सक्षम रहता है अन्यथा वह शिव न रह कर शव ही हो जाता है, जो स्वय शक्तिहीन होने के कारण स्पन्दन मे भी सफल नही होता । यह है नारी का वास्तविक महत्त्व !

● वैदिक काल मे नारी—

वैदिक वाङमय मे नारी को ब्रह्मवादिनी मन्त्र द्रष्ट्री, मेधाविनी और वीरसू के रूप मे वर्णित किया है । वैदिक रमणियाँ शिक्षा के क्षेत्र मे किसी से पीछे नही रही हैं । उनकी इस अध्ययनशीलता का ही यह प्रभाव था कि 'अयज्ञियो वा एप योऽपत्नीक' अर्थात् जो अपत्नीक है वह यज्ञ करने का अधिकारी नही है' इस प्रकार शतपथ ब्राह्मण ने स्पष्ट उद्घोष किया है । और वे उपनयन संस्कार सम्पन्न होकर निरन्तर विद्या–व्यासङ्ग मे लीन रहती थी । वेद मन्त्रो को देखने वाली नारियो में रोमशा, लोपामुद्रा, अपाला, विश्ववारा, घोषा, कद्र, वौलोमी, सिक्ता, उर्वशी और सावित्री जैसी तेइस ऋषिकाओ के नाम आते हैं । ब्रह्मचारिणी कन्याओ का वर्णन भी अथर्ववेद ११/१६ मे दर्शनीय है—

ब्रह्मचर्येण कन्या युवान विन्दते पतिम् ।

वैदिक काल की स्त्रियो का वैदुष्य विदेहराज जनक की राजसभा मे दार्शनिक प्रश्न करने वाली

गार्गी को जब याज्ञवल्क्य ने यह कहा था कि ऐसे दार्शनिक प्रश्नो की अपेक्षा तुम अपने सुखी जीवन आदि के सम्बन्ध मे जानकारी प्राप्त करो—तब बडे गर्व के साथ उसने कहा था कि—येनाह नामृत स्याम् किं तेनाह कुर्याम—जिससे मैं अमृत नही बनू, उसे जान कर क्या करूंगी ?" और इसी प्रकार पलने मे सोते हुए बालक को ब्रह्मज्ञान की लोरियाँ गाकर शान्त करने वाली ऋषिपत्नियो के आख्यना भी इस शृंखला की स्वर्णमयी कडियाँ हैं।

● वैदिक वीर रमणियाँ—

वैदिक रमणियो के रुधिर मे बिजली की कौंध थी; उनके इङ्गित मे उत्पत्ति और प्रलय इन दोनो का अखाडा था और उनकी कोख मे जमदग्नि जैसे महर्षि खेले थे। स्वयवरो मे अपने पति का स्वय वरण करने वाली वैदिक कन्याएँ ही शब्द ब्रह्म के यथार्थ पुजारी के साथ जीवनयात्रा चलाया करती थी और इनके इशारो पर न्यायलय के अधिकरण छूट जाते थे। वैदिक समाज मे नारियो की बहुत प्रतिष्ठा थी। तभी तो वे मुक्त कण्ठ से उद्घोष करती थी कि—

उदसौ सूर्यो अगादुदय मामको भग ।
अह तद् विद्वला पतिमभ्यसाक्षि विषासहिः ।।
अह केतुरह मूर्धाहमुग्रा दिवाचनी ।
ममेदनु ऋतू पति सेहानाया उपाचरेत ।।
मम पुत्राः शत्रुहणोऽथो मे दुहिता विराट् ।
उताहमस्मि सजया पत्यो मे श्लोक उत्तम ।।
येनेन्द्रो हविषा कृत्व्य भवद् द्यु म्युत्तम ।
इद तदक्रि देवा असपत्ना किला भुवन् ।।

अर्थात्—यह देखो सूर्य उदित हुआ और इधर मेरा भाग्य चमका। इस बात को मैं जानती हू और इसीलिये पति पर मेरा अपना अधिकार है।

मैं केतु हू, भूर्वा हूं, मैं दारुण पच हू, मेरा पति मेरी शक्ति के अनुसार कार्य करेगा।

मेरे पुत्र शत्रुहन्ता हैं, मेरी पुत्री विराट् है। मैं स्वय सजय हू। पति के लिये मेरा ही श्लोक उत्तम है।

जिस दृष्टि को देकर इन्द्र उत्तम आजस्वी बना था उसे मैं कर चुकी हू। इसलिये मैं सपत्नी रहित हू।

उस काल मे बहुपत्नी प्रथा प्रचलित थी और इसी से छुटकारा पाने के लिये वैदिक नारियाँ प्रसगवश अपना वर्चस्व पति पर जमाये रहती थी। और इस विजय पर वे सगर्व कहा करती थी कि—



असपत्ना सपत्नघ्नी जयन्त्यभिभूवरी ।
आवृक्षमन्यासां वर्चो राधो अस्थेयसामिव ।।
समजैषमिमा अहं सपत्नीरभिभूवरी ।
यथाहमस्य वीरस्य विराजानि जनस्य च ।।
ऋग्वेद १०।१५०

मैं असपत्न हूं, सपत्नियों की मौत हूं और दूसरियों पर मेरी धाक है। मैंने दूसरियों के तेज को इस प्रकार खण्डित कर दिया है जैसे चंचल वृत्तियों का धन बह जाता है।

मैंने सपत्नियों को जीत लिया है और अब मैं इस वीर एवं इन जनों पर चमकूंगी।

वीरसू नारियां ही पेशल भोग–विलास को पहचान सकती हैं, इन्हीं गृहमेव नारियों की गोद में अभिमन्यु जैसे नृमण–शूर खेले थे। प्यार क्या होता है इसे ये ही जानती थीं और बाजी लग जाने पर जान पर खेल जाना किसे कहते हैं इसे भी वे ही अच्छी तरह से समझ सकती थीं। समय पड़ने पर ये वीर नारियां राष्ट्र की बागडोर सम्हालने में भी नहीं हिचकती थीं। उनकी सदा यही कामना रहती थी कि–

तन्नस्तुरीपमध पोषयित्नु देव त्वष्टुर्विरराण स्यस्व ।
यतो वीरः कर्मण्यो सुदक्षो युक्तग्रावा जायते देवकामः ।

अर्थात् –हे देव ! खोल दो उस पोषक बिजली भरे द्रव तत्त्व को, जिससे कि हमें वीर, कर्मण्य, देवताओं के प्रेमी, सोमपीथी, सुदक्ष पुत्र की प्राप्ति होवे।

यह भावना जीवन में स्वतन्त्रता की सांस लेने वाली तथा मस्तिष्क में आत्माभिमान की लीक खींचने पर ही सम्भव है।

● उत्तरकाल की नारियां—

संस्कृत साहित्य में नारियों के इन रूपों का वर्णन स्वच्छन्द रूप से हुआ है वहीं स्वयं महिलाओं ने भी अपने आदर्शपूर्ण वैदुष्य से संस्कृत साहित्य को आलोकित किया है। उनमें कर्णाट देशीय महारानी 'विजयङ्का' सर्वमूर्धन्य हैं, जो साक्षात् सरस्वती रूप थी। महाकवि दण्डी ने जब सरस्वती को श्वेतवर्णा कह कर वन्दन किया तो उसने सगर्व कह दिया कि—

नीलोत्पलदलश्यामां विजिकां मामजानता ।
वृथैव दण्डिना प्रोक्तं सर्वशुक्ला सरस्वती ।।

इसके अतिरिक्त कम्पराज महिषी महारानी गङ्गादेवी हुई हैं, जिसने 'मधुराविजय' नामक एक सुन्दर काव्य की रचना की है। अच्युतराय महाराजा की पत्नी देवी तिरुमलाम्बा ने 'वरदाम्बिका परिणय चम्पू' की रचना की है।

इसी प्रकार विकटनितम्बा, शीलाभट्टारिका, प्रियवदा, विद्या, गौरी, कुटला, मधुरवाणी, मारुला, मोरिका, पद्मावती, शीता, सरस्वती, इन्दुलेखा, भावकदेवी आदि अनेक कवयित्रियो के नामोल्लेख सहित उद्धरण प्राप्त होते हैं। आज भी कुछ कवयित्रियाँ और विदुषी नारियो के वैदुष्यपूर्ण लेखादि यत्र-तत्र दृष्टिगोचर होते रहते है। अत यह हमारे भारतीय गौरव के अनुरूप ही है।

ऐसी आदर्श ललनाओ के प्रति हमारा प्रणाम है—

धन्य कन्यात्वमाप्य प्रथिमनि पथि प्रीतिपूर्वं चरन्त्यो
हृद्या विद्या अधीत्य श्रुतिविषयगुणानात्मसात्कर्तुकामा. ।
लोक शोकप्रहीण निजकृतिततिभि सविधाय प्रकामं
रामा रामाभिरामा नतिविषयगता. कस्य नो भारतेऽस्मिन् ।।

(व्याख्याता–सस्कृत विद्यापीठ, दिल्ली)



नारी एक : रूप अनेक

—डॉ० पी आर रुक्माजी राव 'अमर'

आदि पौराणिक, वैदिक काल से ही भारतीय नारी के गौरव–गरिमा की विमल गाथा व पावन धारा अबाध गति से प्रवाहित होती चली आ रही है। वह भारतीय जन–मानस को स्पंदित करते हुए प्रेरणा का स्त्रोत बनकर युग–युगान्तर तक बहते ही चली जाएगी। भारतीय सन्नारी का गुणगान करते करते कविकुल शिरोमणियो की लेखनी भी थकने का नाम नही लेती। नारी जगत्–जननी है, स्वाभिमानिनी है, धर्म-चारिणी है, जीवन संगिनी है, भगिनी है, साथिन है, सहगामिनी है, सहचरी है, जीवन-तरिनी है, स्नेह-सलिला है, गुल-शील सम्पन्ना है, सुशीला है, लज्जालु है, दयालु है, दया की मूर्ति है, जीवन की स्फूर्ति है, कोमालङ्गी है, वीरागना भी '' ''' वह चाहे तो जगदम्बा दुर्गा भी बन सकती है, चाहे तो जोगन-भक्तन भी बन सकती है। वह जग-जीवन की सजीवनी, जीवन-दायिनी है। वेद-पुराणो के रचयिता उसकी महिमा का गुण-कीर्तन करते अघाते नही। वह सती-साध्वी है।

सीता ने तपती ज्वाला मे जलकर अपने पातिव्रत-धर्म की पवित्रता का ज्वलंत प्रमाण ससार के सम्मुख उपस्थित किया। सती सावित्री ने अपने पति सत्यवान् को काल के गाल से बचाकर आयु की रेखा को बदलने का प्रमाण प्रस्तुत किया। सती अनुसूया ने अपने पातिव्रत्य के प्रभाव से ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर को गोदी मे खेलाया, झूले मे झुलाया।

'नारी लज्जा भूषणम्' कहा गया है। नारी के लिए लज्जा ही आभूषण है। निर्लज्ज स्त्री नारी कहलाने के योग्य नही। स्त्री का पर्यायवाची शब्द ही नारी है। एक स्थान पर एक कलाकार ने भारतीय नारी का कितना भव्य चित्र अकित किया है, देखिये—"दुर्गा की शक्ति, पार्वती की तपस्या और सीता की प्रीति '' सावित्री की प्रतीति ही नही, दमयती का धीरज जिसमे है, वही तो भारतीय नारी है जिसके पास शकुन्तला सी दुर्द्धर्ष सहिष्णुता है।"

सत, त्रेता एव द्वापर युग मे नारी सती, साध्वी, मर्यादा की मूर्ति बनी रही। राम–विवाह का मगलमय अवसर है। विवाह मण्डप मे सीता एव राम बैठे हुए है। सीता घूँघट काढे बैठी हैं। विवाह के पश्चात् विधियाँ हो रही है किन्तु सीता के मन मे राम को देखने की अनायास,बरबस इच्छा जागृत हो उठी। हो भी क्यो नही ? प्रीति पुरातन जो ठहरी। राम की मनोहारी छवि को निरखे, साथ ही मर्यादा की सीमा का उल्लघन भी न हो —

"निज पानि-मनि महु देखि
प्रतिमूरति स्वरूप-निधान की।
चालति न भुजवलि विलोकति
विरह-वस भई जानकी ॥"

द्वापर युग की नारी के शील-सौन्दर्य तथा मर्यादा का कैसा अद्‌भुत चित्र उपस्थित किया गया है। द्रौपदी-चीरहरण का अवसर है। नारी के स्वाभिमान एव मर्यादा की रक्षा के लिए नयन मूदकर श्री कृष्ण से विनती की। द्रौपदी की पुकार सुनकर द्वारकाधीश सहायता के लिए पधारे। इधर दुशासन चीर खीचते-खीचते हार कर बेहोश होकर गिर पडा। द्रौपदी की साडी का आरपार वह न पा सका—

"सुनि के पुकार धायो द्वारिका से जदुराई
बाढन दुकूल खीचे भुजबल हारी है,
सारी बीच नारी है कि नारी बीच सारी है
कि सारी ही की नारी है कि नारी ही की सारी है।"

प्राचीनकाल से अर्वाचीन काल तक पहुँचते-पहुँचते भारतीय नारी के रूप, दशा व स्थिति में एक महान परिवर्तन उपस्थित हो गया। धार्मिक, सामाजिक, एव सास्कृतिक परिवेश मे नारी का जो सम्मानपूर्ण स्थान रहा, उसे उपेक्षा की भावना ने ले लिया। पुरुष चतुराई से अपनी शक्ति, सत्ता, अधिकार आदि को जताकर स्त्री को दबा कर अपने अधीन रखने में सफल सिद्ध हुआ। बारम्बार उसके कानो मे फुसफुसाया गया कि तुम अबला हो, सबला नही हो। तुम नि सदेह सुन्दर हो, सुकोमल हो साथ ही निर्बल भी हो। तुम्हे तो पुरुष के सहारे की जरूरत है। एक नही अनेक पुरुषो ने यही क्रम अपनाया तो नारी ने लाचार होकर अपने सारे हथियार फेंककर और घुटने टेक कर अपने आश्रय-दाताओ की वाणी मे घोषित किया:—

"यह आज समझ तो पायी हूँ
मै दुर्बलता मे नारी हूँ,
अवयव की सुन्दर कोमलता
लेकर मै सबसे हारी हूँ।"

स्वार्थी पुरुष ने नारी को सुन्दर कोमलाङ्गी, चन्द्रवदना, मृगनयनी कह कर उसकी प्रशसा की तो बस वह फूल कर कुप्पा हो गई। वह उसकी चिकनी-चुपडी बातो की चपेट मे आगई। वह पुरुष के फैलाये माया-जाल मे फस गई। पुरुष ने सुन्दर-रूपराशि पर मुग्ध होने का भाव प्रकट किया तो स्त्री अपना सर्वस्व उसके चरणो मे समर्पण करने के लिए तत्पर हो उठी। विश्वास-रूप महा-तरु छाया मे विश्राम करने के लिए उद्यत हो उठी।

"नारी! तुम केवल श्रद्धा हो
विश्वास रजत-नग-पग-तल मे,
पीयूष स्त्रोत-सी बहा करो
जीवन के सुन्दर समतल मे।"

जगत के मान-मर्यादा की प्रतिमूर्ति, विश्व-रानी, सुन्दरी नारी को पुरुष अपना सर्वस्व दान मे



समर्पित कर देना चाहता है। जबकि नारी ने मानवता के विकास एव समाज कल्याण के निमित्त पुरुष को आत्म-समर्पण कर दिया —

"आज ले लो चेतना का
यह समर्पण दान !
विश्व रानी ! सुन्दरी नारी !
जगत की मान !"

गर्भवती नारी का, मातृत्व के बोझ से दबने-झुकने वाली स्त्री का कैसा मनोरम रूप निम्न लिखित पंक्तियो मे प्रकट हुआ है —

"केतकी गर्भ-सा पीला मुँह,
आखो मे आलस भरा स्नेह,
कुछ कृशता नई लजीली थी,
कपित लतिका-सी लिए देह।

मातृत्व बोझ से झुके हुए
बन्ध रहे पयोधर पीन आज,
कोमल काले ऊनो की नव
पट्टिका बनाती रुचिर साज।"

नारी हृदय मातृत्व को पाकर ही परिपूर्ण नारीत्व का चित्र व रूप उपस्थित कर सकता है। समाज मे मातृत्व से युक्त नारी गौरवान्वित होती है। वास्तव मे सच्ची माता वही है जिसके हृदय में सदा-सर्वदा प्रेम की प्राञ्जल एव धवल धारा, स्नेह सरसता की स्नेहिल स्त्रोतस्विनी, माया-ममता की सुमधुर तरगिनी प्रवाहित होती ही रहेगी। जननी-जन्मदात्री माता के स्थान को इस ससार मे कोई भी ले नहीं सकता.—

"हे माता अत्यन्त अपरिमित तेरी महिमा,
अतुलनीय है पुत्र-प्रेम की तेरी गरिमा।
धन्य ! धन्य ! तू धन्य ! महा-मुद-मगलकारी,
जग-जननी के तुल्य वद्य है विपदा हारी ॥
चाहे सारा नीर नीर-निधि का चुक जावे,
चाहे अपना अत अनत गगन दिखलावे।
पर इसमें सदेह नही है कुछ भी माता !
तेरा सुत-वात्सल्य कभी भी अत न पाता ॥

यो तो प्रधानत नारी के दो ही रूप को स्वीकारा है कुछ आलोचको ने जिनमें एक उर्वशी है, दूसरी लक्ष्मी । ऊर्वशी हमारे भावना लोक की नगरी के रूप-राशि की निधि नारी है तो दूसरी भौतिक जगत की सम्राज्ञी लक्ष्मी है । किन्तु विश्व कवि रवीन्द्र ने तीसरे प्रकार की नारी-मूर्ति का कैसा अद्भूत चित्र अकित किया है । ऐसी नारी का चित्र विधाता की सृष्टि मे भी दुर्लभ है । इसको पुरुष (कवि) ने अपने अतर से गढा है जो आधी मानवी है तो आधी कल्पना —

"शुधू विधातार सृष्टि नह तुमि नारी,
पुरुष गडेछे तोरे सौन्दर्य सचारी,
आपन अतर हते ।
अर्धेक मानवी तुमि, अर्धेक कल्पना ।"

कवियो ने नारी को विविध रूपो मे चित्रित करने का प्रयास किया है । वह विचित्रा तथा बहुरूपिणी बन गई है । कही वह दानवी है तो कही देवी भी है । कही मानवी रूप मे प्रकट होती है तो कहीं हमारे अश्रुहास की सहचरी है । कही अपने दिव्य रूप मे हमारी पूजा की अधिकारिणी भी बन जाती है । मानवी रूप में वह कही बालिका है, कही पत्नी है, कही माँ है, कही सेविका, कही भिखारिणी है, कही दासी है तो कही वेश्या भी है.—

"देख हरिण नयना को मग मे
रस का सागर उमड पडा ।
आँखे चार हुईं पल मे
रति हुई, देखता रहा खडा ।"

नारी प्रतिमा को एक ही सूत्र मे बाधने का कैसा अनुपम प्रयास किया गया है देखिये —

"देवि ! माँ ! सहचारी ! प्राण !"

और एक चित्र लखिये । अखिल स्पन्दनो की रागरानी की कहानी सुनिये ·

"तुम्ही त्याग की, भोग की तृप्ति तृष्णा"
अखिल स्पन्दनो कि तुम्ही राग रानी ।
कहो तो कहू, मैं तुम्हारी कहानी,
सुनो तो कहू आज अपनी कहानी,

और इसी पुण्य-सलिला भारत-भूमि ने सीता, सावित्री दमयंती, द्रौपदी, रूक्मिनी, गार्गी, गाधारी, मण्डोधरी जैसी विदुषी, साक्षर नीतिकुशल, तर्क-शास्त्र मे निपुण, कर्तव्य परायणा, सेवापरायणा नारियो को जन्म दिया ।

"दमयती की यही जन्म वसुधा है प्यारी ।
हुई रूक्मिनी यही और गार्गी गाँधारी ।।
जनक सुता की कथा विश्वविश्रुत है न्यारी ।
और कहाँ है हुई जगत मे ऐसी नारी ।।



कालान्तर मे यहाँ की स्त्रियाँ निरक्षरता व अविद्या के गर्त मे गिर गई। पुरुषो को मुँह-मांगी मुराद मिल गई। फिर तो और क्या ? पुरुष अब स्त्री को गवारिन, अनपढ, अनाडी आदि-इत्यादि उपाधियो से विभूषित करने लगा। उसे अपनी चरणदासी मात्र बनाकर रखना शुरू किया। वह पुरुष के हाथो की कठपुतली बनकर रह गई। स्त्री की कोमल छवि वासना के व्यापार मे उपहार की वस्तु बनकर रह गई। और उसके प्रेम का मोल रत्नो के, हीरो के हारो से आका जाने लगा।

"कोमल छवि का मोल वासना ही के उपहारो मे–
और प्रेम का मोल रत्न के हीरो के हारो मे–
करता है ससार यही है, उसकी रीत निराली
अधकार का तारो से विक्रय करती निशिकाली।"

भारतीय नारी पुरुष के सशक्त पजो मे फसकर, जकडकर वह कैसे इतनी आसानी से बचकर, छूटकर, निकलकर भाग सकती है ? वह जो कुटिल खल-कामी ठहरा आखिर। अपने स्वार्थ की परिधि से निकल भागना उस पुरुष के लिए, उस पापी के लिए सभव साध्य कार्य है ? नारी को घेराव करने के विचार से उसने कहा –

"Frailty is thy nature, O woman!"

अर्थात्–'दुर्बलता तेरा स्वाभाव है, ऐ नारी!' भारतीय भाषा मे इसे 'भीरू' व 'कायरता' की सज्ञा दी गई है। भीरुता मे दुर्बलता, सकोच एव फिसलन का समावेश सहज ही हो जाता है। भारतीय नारी जीवन के मार्ग पर फिसल कर गिर पडी और पुरुष की पकड में जकड गई।

"नारी जीवन का चित्र यही
क्या ? विकल रग भर देती हो,
अस्फुट रेखा की सीमा मे
आकार कला को देती हो।"

कला को आकार देने वाली देवी, माया-ममता की मूर्ति की प्रतिमा कुटिल पुरुष की करतूतो के कारण निरपराध नारी नियति-वचिता, आश्रय-रहित एव पददलिता बन कर रह गई। छाया की निष्ठुर माया मे भारतीय नारी का प्रतिबिम्ब आँक लीजिये —

"नियति-वचिता, आश्रय–रहिता,
जर्जरता पद-दलिता-सी-
धूल-धूसरित मुक्त-कुतला,
किसके चरणो की दासी ?"



नारी अपना स्वतन्त्र अस्तित्व खोकर पति के चरणो में सर्वस्व समर्पण कर दासी बन कर रहने के लिए वह तैयार हो गई। ऐसी भोली ललनाओ की मधुर मुस्कान कितने शीघ्र ही रूदन मे परिवर्तित होकर रह जाती है।

"नारी जीवन हाय ! तेरी यही कहानी,
आँचल मे है दूध और आँखो मे पानी।

आजकल के व्यस्त जन-समुदाय के पास इतना समय, इतनी सहनशीलता, इतनी सहृदयता है कहाँ जो दो-चार मिनट बैठकर, रुककर नारी की दुख-दर्द भरी राम कहानी सुने। हर किसीको अपनी-अपनी पडी रहती है। एक दूसरे की पूछे कौन ? आँचल का दूध सूख भी नही पाया, जीवन को अच्छी तरह आँखो भर देखा भी नही कि अचानक बिजली टूटी, वज्राघात हुआ, बस हृदय के महासागर मे विपाद की रेखाएँ खिच गई, लहरें उमड आने लगी और जलप्लावन ने निरीह नारी की बसी-बसायी बगिया को उजाड कर रख दिया। हाय री ! किस्मत की मारी, लाचार नारी तू अब इस निठुर समाज मे दर-दर की ठोकरें खाने के लिए मात्र बची रही।

"वह इष्टदेव के मदिर की पूजा-सी
वह दीप-शिखा-सी शान्त, भाव मे लीन,
वह क्रूर काल-ताडव की स्मृति-रेखा-सी,
वह टूटे तरु की छुटी लता-सी दीन
दलित भारत की ही विधवा है।"

प्राचीनकाल मे भारतीय समाज मे सधवा नारी का आदर-सम्मान होता आ रहा था। सामाजिक कार्यों मे तीज-त्योहार व सास्कृतिक उत्सवो पर नारी को समुचित आदर-सम्मान प्राप्त था। यह परिपाटी आज भी ज्यो की त्यो जारी है। विधवा जीवन नरकतुल्य माना जाता है। उसे नितप्रति लाञ्छन एव तीक्ष्ण बाणो का शिकार बनना पडता है। सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, पूजा, विवाह आदि शुभ-अवसरो पर विधवा का बहिष्कार होता है। दीप-शिखा के समान विधवा नारी को आह किये बिना समाज के अन्याय, अत्याचार, लाञ्छन, उपेक्षा तथा तिरस्कार इत्यादि को चुपचाप सहना ही पडता है। घर-की चहारदीवारी मे बद रह रहकर, दम घुट-घुटकर वह अपने आपको निर्बल, निराश्रय एव असहाय महसूस करने लगी तो इसमे आश्चर्य ही क्या ? युद्ध क्षेत्र मे पति की वीरगति का समाचार सुनकर एक राजस्थानी नारी अपनी मनोकामना किस प्रकार प्रकट कर रही है देखिये

"अरे शशि के हे निठुर प्रकाश !
मुझे भी ले किरणो से खीच
स्वर्ग मे प्रियतमॉक के बीच
मुझे बिठला दे आज सहास।"

पति की मृत्यु के पश्चात पतिव्रता नारी के लिए सारा ससार निस्सार असार लगता है। इस पार्थिव-जगत के जीवन का मार्ग अधकारमय व कटकमय प्रतीत होने लगता है। जीवन के सारे प्राणवान



स्त्रोत सूखकर रह जाते हैं। निर्दोष होकर समाज की करारी चोटों को सहे भी तो वह क्यों सहे ? ऐसी प्राणातक पीडा को सहने के लिए मात्र वह क्यो कर जीवित रहे ? उसके लिए मृत्यु का आलिंगन क्यों न प्रियतर लगे ? मरण श्रेयस्कर क्योकर न हो ? इसीलिए राजस्थानी स्त्रियाँ 'जौहर-व्रत' का पालन किया करती थी—

"न मन मे हो किंचित भी भय
धर्म पर हो नूतन वलिदान,
उच्च पातिव्रत पर हो ध्यान,
आज जौहर का हो अभिनय ।
"अग्नि की लपटो ही के साथ,
बैठ कर चारु चिता की गोद
पहुच जावें हम सजनि ! समोद,
जहाँ होंगे निज प्यारे नाथ ।"

राष्ट्रीय जागरण के साथ ही साथ भारतीय नारी जीवन के प्राँगण मे भी नवल प्रभात की किरणें किलकिलाने लगी । कायरता शर्मीली-लजीली वन कर घू घट मे अपना मुँह छुपाने लगी । नारी का वह असली रूप—दुर्गा की वह शक्ति,दमयती का वह धीरज भारतीय नारी के हृत्तल मे फिर एक बार हिलोरें लेने लगा । वह दुर्गा व रणचण्डी के रूप में जन-जीवन के रङ्गमच पर प्रकट हुई । अब वह पहले की-सी अवला न रही, वह फिर सवला वन बैठी । महाशक्ति का अवतार धारण कर वह वीराङ्गना वन गई । ऐसी ही आजादी की मतवाली वीराङ्गना का एक उदाहरण उद्धृत है —

"खूब लडी मरदानी
वह तो झाँसी वाली रानी थी ।"

असंख्य नारियो ने चडी रानी का रूप धारण कर शत्रुओ के छक्के छुडा दिये । युद्ध भूमि को बैरियो के रक्त से रंजित कर दिया । किन्तु यह विजली, यह दामिनी क्षण-भर कौंध कर रह गई । फिर भारत के आकाश पटल पर गुलामी का घटाटोप छा गया । कियत समय के लिए मधुमास आया भी तो भारतीय जन-जीवन का परिहास करने । सच्चा और असली बसन्त कब आएगा—इसका उत्तर निम्न-लिखित पक्तियो में कितना सुन्दर वन पडा है —

'जव सव वन्धन कट जायेंगे
परवशता की होली होगी ।
अनुराग-अवीर विखेर रही
माँ-वहिनो की झोली होगी ।"

वसन्त आता है, अन्त होने के लिए, मधुमास आता है वापस लौटने के लिए, मधुर-हास अश्रु विखरने के लिए, सुख आता है जाने के लिए किन्तु दु ख आता है वहुत समय तक, दीर्घकाल तक टिकने के

लिए, रुकने के लिए ही। सुख पर दुख की घनघोर घटा तथा कालिमा की भयातुर छाया घिर आती है तो आशा-आकांक्षाओ के महल ढहकर रह जाते है:—

तिरती है समीर सागर पर
अस्थिर सुख पर दुख की छाया,
जग के दग्ध हृदय पर
निर्दय विप्लव की प्लावित माया।"

पुरुष कितना निष्ठुर है वह नारी का सारा सुख छीनकर उसे दुख—दर्द, पीडा का साम्राज्य दे डालता है। पुरुष को संबोधित कर नारी क्या कह रही है सुनिये —

'तुमको पीड़ा मे ढूंढा
तुम मे ढूंढूंगी पीडा।"

नारी के जीवनाकाश मे विरह का जलजात छा जाता है तो नीर भरी बदली बनकर बरसने के सिवाय उसके जीवन मे शेष क्या रहता है ? नारी अपने सहज अभिमान के स्वभाव को कैसे त्याग सकती है ?

"सजनि मधुर निजत्व दे
कैसे मिलूं अभिमानिनी मैं ?"

स्वतन्त्रता सग्राम के पश्चात भारतीय नारी जीवन मे भी एक नवलस्फूर्ति, एक प्रकार की नवीन जागृति प्रादुर्भूत होती दृष्टि गोचर होने लगी। शिक्षा, समाज सेवा, शासन विधान, राष्ट्रीय नूतन—निर्माण, ललित-कला, साहित्य एव सस्कृति के क्षेत्रो मे नारी समूह सक्रिय रूप से सम्मिलित होने के लिए उद्यत हुआ। अब राष्ट्र के नव—निर्माण के कार्यो मे नारी का योगदान वाछनीय प्रतीत होने लगा। आजादी के साथ ही नारी-जाति के लिए समाज के हर बद द्वार फिर एक बार खोल दिये गये। स्वतन्त्र देश की नारी अब स्वतत्र होकर विचरने लगी। अपने अतीत के खोये गौरव को पुन प्राप्त करने के लिए नारी समाज उद्यत हो उठा। निम्न लिखित पक्तियो मे नारीत्व के पूर्णता की मनोकामना प्रकट है —

"देखता अभिषेक भोले मगलो का;
पूर्णता —— नारीत्व की।"

नारी पूर्वकाल से ही सृजन की जन्मदात्री जो ठहरी, एतदर्थ इस क्षेत्र मे पुरुष के कैसे पीछे रह सकती है जबकि जीवन का मार्ग आलोकित हो चुका है।

"अकुर जाए सुबह का गीत उसमे
और वर्जित
क्षितिज सीमा से उतर
झांके—
सृजन का सूर्य
उसको नाम देना तुम।"



जैसे कोई सफल चित्रकार अपने चित्र पर स्वय मुग्ध हो जाता है, जैसे कोई कवि अपनी ही सुन्दर कविता पर मोहित हो जाता है, जैसे कोई सगीतकार अपनी ही किसी मधुर धुन पर मत्र-मुग्ध हो जाता है, जैसे कोई मूर्तिकार अपनी ही किसी भव्य मूर्ति को लखकर विभोर हो उठता है उसी प्रकार नारी दर्पण मे अपने सौन्दर्य को स्वय निहार कर उस पर मुग्ध होने लगी —

"लाल रग सुहाग का
भाने लगा है बहुत,
दिन भर ढूढती रहती हू
साँझ का सिन्दूरी आँचल।
लाल-लाल साडी मे अग लपेटे
लगती हू स्वय को प्यारी
काँच की चूडियो से झाँकती
साँवली कलाई
लगता है निखर
हो गई है गोरी एकदम।"

जैसे-जैसे ज्ञान का विस्तार हुआ, समाज-सेवा की भावना भी जागृत हुई साथ ही नारी जिम्मेदारियाँ बढने लगी तो उसके कार्य क्षेत्र की परिधि भी बढने लगी—वह बेचारी उलझन मे पड गई —

"जैसे चलने की तैयारी—
पूरी होते ही, किसी गृहस्थिन की
चाबी का गुच्छा गुम जाय........"

नौकरो की छुट्टी पर घर की हालत और मालकिन की मुसीबत का चित्र उपस्थित है—देखिये —

"लो, आज फिर छुट्टी कर गई
जनवरी की धूप!
अनधोया, अनपुँछा चौका-बर्तन,
जूठे पडे हैं सब के सब—
घर, गलियाँ- आँगन।
सूरज ने जिंदगी का लिहाफ खीचा
उफ! इस सर्दी मे उठ
अगीठी जलाना
इन मुये नौकरो ने की है
सच कैसी मुसीबत!"

विज्ञान वरदान भी है और अभिशाप भी। सुख सुविधाओं की सामग्री को उपयोग में लाने के कार्य मे नारी क्यो कर पुरुषो से पिछडी रहे —

"तुम्हारे पुकारने से
स्वप्न सब भङ्ग हुए
चेतना अचानक चौक उठी
एकाएक जैसे बल्ब फ्यूज हो
और छा जाय कमरे मे अंधेरा।"

और एक चित्र देखिये :—

आज रात को क्या सूझी
तुम्हारे सिगरेट के धुएँ-सी
झीनी-झीनी सुरमई
साडी पहन ली।
धु द की हल्की झालर
टाँक ली फाल पर।"

जीवन, सृष्टि, सभ्यता को लेकर नारी-हृदय व मस्तिष्क मे उत्पन्न द्व द्व का अद्भूत चित्र निम्नलिखित पक्तियो मे अकित हुआ है:—

जीवन क्या मृत्यु का ईंधन ?
सृष्टि क्या सृष्टा का विलास ? इतिहास क्या बर्बरता जाया ?
मुक्ति केवल युक्ति का निर्यास ? परम्परा उर्णनाभि माया ?
शासन क्या शासितो का हत्यारा ? वैभव क्या अभाव पीडक ?
गौरव क्या शैरव का भूषण ? धर्म केवल कोक-शास्त्र के गीत ?
यौवन क्या जघन्य फसाद ? सभ्यता क्या अश्लील व्यजना ?
सत्य क्या सचमुच मिथ्या की छलना ? यह जमी क्या करोडपतियो की क्रीता ?
नि स्व का जन्म क्या केवल कूर्म होना, अन्न-वस्त्र के बिना परिश्रम करना ?
जीवित रहना क्या गोष्ठीगत स्वार्थ ? इससे तो मृत्यु शुभ है, श्रेयस्कर है ?
द्व द्व-सरीसृप का होगा नाश, पहले खुदेगी विश्व की कब्र ?"

आधुनिक नारी की मनोभावना एव नवीनतम प्रसाधनो से अलकृत होकर चिर यौवना बनी रहने की अभिलाषा व आग्रह निम्नलिखित पक्तियो मे प्रस्फुटित है:—

आधुनिक नारी चिर यौवना की
भावना से ग्रस्त
कमनीय मुद्राओ मे
मूर्धाभिषिक्त होकर
पारदर्शी वस्त्रो मे
नवीनतम प्रसाधनों से अलकृत

भारत में नारी शिक्षा

—श्रीमती आशारानी व्होरा

स्वामी विवेकानन्द के अनुसार शिक्षा जानकारी या डिग्री के लिये नही, जीवन निर्माण के लिए जरूरी है। इससे व्यक्ति के भीतर के सर्वोत्तम का विकास होता है

महात्मा गांधी ने भी साक्षरता के बजाए जीवन निर्माण की शिक्षा पर जोर देते हुए कहा कि जिस मा की छत्रछाया मे जीवन निर्माण की यह शिक्षा मिलती है, उसे ही अज्ञानता के अधकार मे रखना सरासर अन्याय है।

लेकिन यह सच है कि सदियो तक नारी को इस अन्याय का शिकार होना पडा। उसके भीतर का सर्वोत्तम दबा घुटा सिसकता रहा, जिसमें अधिकाश ने भीतर ही दम तोड दिया।

आज भारत की महिला शिक्षा की विशेष कमेटी का नारा है– 'एक लडके की शिक्षा एक व्यक्ति की शिक्षा है जब कि एक लडकी की शिक्षा एक पूरे परिवार की शिक्षा है।' नारी को देवी, लक्ष्मी और परिवार की धुरी मानने वाला भारतीय समाज क्या इस नारे के अर्थ या भाव से पूर्व अपरिचित था? नही। अनुसूया, गार्गी, मैत्रेयी, तिलोत्तमा तथा शास्त्रार्थ मे महान पडितो को हराने वाली सस्कृत की अन्य विदुषिया इसका खण्डन करती है। मध्यकाल के सामती शासन के प्रभाव से उत्पन्न पुरुष नीतिकारो की अहमन्यता और दासता की मिली-जुली कुंठा ने अपने से दुर्बल नारी को अनेकानेक नैतिक बधनो की बेडियो से जकड अज्ञानता के अन्धेरे कारागार मे डाल दिया और सारा भारतीय समाज धीरे-धीरे उस अन्धकार के साए तले आ गया। पुरुष समाज भी दड पा गया।

कई सदियो तक इस अज्ञानता का साम्राज्य रहा। आखिर दडित पुरुष समाज मे से ही किन्ही मे यह चेतना जागी कि इस तरह तो हम अधिक घाटे मे रहेगे। इसलिए आश्चर्य नही यदि १९ वी शताब्दी मे ब्रिटेन से लेकर भारत तक महिला शिक्षा की आवश्यकता अनुभव करते हुए पुरुषो ने ही सर्वप्रथम इसके पक्ष मे आवाज उठाई। चेतना अधिकाश पुरुषो मे थी पर साहस तो कोई-कोई ही कर पाता है। तत्कालीन धारणाओ के अनुसार स्त्री को शिक्षा देने का अर्थ उससे पत्नीत्व और मातृत्व छीनना और सारी समाज व्यवस्था का अस्त-व्यस्त हो जाना था। शिक्षित पुरुषो के भी बहुमत ने इसका विरोध किया, अल्पमत ने समर्थन। पर विरोध हर परिवर्तन काल मे होता है और एक कल्याणकारी हथियार भी सिद्ध होता है, इस रूप मे कि इससे जिज्ञासा उठती है और दूर-दूर तक फैल कर अन्त मे उन हृदयो को भी आलोकित कर जाती है जो स्वय को अन्धेरे मे रख कर देर तक धोखा खाते रहते हैं। विरोध से विवाद उत्पन्न हुआ और उसमें से छन कर आई एक बात कि महिलाओ को शिक्षा देने मे जो खतरे हैं, लाभ उनसे कई गुणा अधिक है।



१६ वी सदी के प्रारम्भ मे बगाल के बारे में श्री विलियम एडम की रिपोर्ट तथा तीसरे दशक में श्री जरविस की रिपोर्ट से ज्ञात हुआ कि कुछ समृद्ध परिवारों तथा मुस्लिम परिवारो की लडकियो की घरेलू स्तर पर शिक्षा के अलावा तब लडकियो के लिए स्कूली शिक्षा की कोई व्यवस्था न थी। इस दिशा में पहला प्रयत्न किया राजा राममोहनराय ने। उन्होने बाल विवाह और स्त्रियो को शिक्षा से वञ्चित रखने के विरुद्ध जोरदार आवाज उठाई। स्त्रिया पुरुष के मुकाबले बुद्धि व प्रतिभा मे हीन है—इस तत्कालिक धारणा का भी उन्होंने कडा विरोध किया। सीधे लोगों पर असर होते न देख उन्होंने जब शास्त्रो का हवाला देकर उदाहरण उनके सामने रखे तो लोगो की आखें कुछ खुली।

ब्रिटिश अधिकारियो मे से कुछ लोगो ने भी इस दिशा मे विशेष प्रयत्न किए। इनमे एक प्रमुख नाम है गवर्नर जनरल की कार्यकारिणी के कानूनी सदस्य श्री बेथुने। सन् १८४८ से १८५१ के बीच श्री जे ई डी बेथुने शिक्षा काउसल के अध्यक्ष भी रहे। श्री बेथुने ने अनुभव किया कि इसाई मिशनरियो द्वारा स्थापित स्कूलो मे ईसाइयत की जो धार्मिक शिक्षा दी जाती है, उस कारण से हिन्दू परिवार कभी भी अपनी लडकियो को वहा नही भेजेंगे इसलिए उनके लिए अलग स्कूलो की व्यवस्था होनी चाहिए। और उन्होंने स्वय के खर्च से मई १८४९ मे कलकत्ता मे लडकियो के पहले कॉलेज की स्थापना कर डाली। बेथुने कॉलेज में वे सब सुविधाए जुटाई गई जो उस समय इग्लैंड की लडकियों को उनके स्कूलो में प्राप्त थी। भारत में स्थापित लडको के लिए अनेक कॉलेजो से वह अच्छा माना गया। नई रोशनी की लडकियो ने उसमें प्रवेश पाया और युवको द्वारा उसे भरपूर समर्थन मिला। इस प्रकार श्री राजा राममोहनराय तथा श्री बेथुने के सम्मिलित प्रयत्नो ने भारत में महिला शिक्षा की पुर्नस्थापना कर भारतीय समाज में उसे मान्यता दिलाई।

बगाल से इस महिला शिक्षा आदोलन की शुरुआत के बाद बम्बई में महादेव गोविंद रानाडे ने तथा उत्तर पश्चिम भारत में स्वामी दयानन्द ने अपने शिक्षा आदोलनो में महिला शिक्षा को प्रमुख स्थान दिया। प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री श्री ईश्वर चन्द विद्यासागर द्वारा बेथुने कॉलेज की सफलताओ और उसके बाद माध्यमिक व प्राथमिक नियमित स्कूलो की स्थापना के लिये किये गए विशेष प्रयत्नो से इस दिशा मे और प्रगति हुई। पडिता रमा बाई, रामाबाई रानाडे, डॉ० कर्वे, महात्मा गाधी का योगदान भी स्त्री शिक्षा की उन्नति मे अपना उल्लेखनीय स्थान रखता है। समय-समय पर पारित सुधार कानूनो (१८२९ के सतीप्रथा निरोध अधिनियम तथा १८५६ के विधवा विवाह मान्यता अधिनियम आदि) का प्रभाव भी स्त्री शिक्षा पर पडना स्वाभाविक था क्योंकि स्वतन्त्रता व अधिकार ही शिक्षा प्राप्ति के मुख्य साधन हैं।

लेकिन इन सब प्रयत्नो के बावजूद प्रगति बहुत धीमी रही—कारण स्त्रियो की सामाजिक स्थिति के बारे मे तात्कालिक अधविश्वासो से भरा एक लम्बा इतिहास। यह कुहरा धीरे-धीरे ही छट सकता था, जो सामाजिक सुधारो व वैधानिक अधिकारो द्वारा ही सभव था। प्रयत्न जारी रहे पर प्रगति धीमी रही। १९२१ तक लगभग यही स्थिति रही। इस बीच 'सर्वेंटस आफ पीपुल्स इडियन सोसायटी' तथा ऐसी दूसरी सस्थाओ द्वारा प्रौढशिक्षा के रात्रि-स्कूल भी चलाए गए। १९२१ मे प्रातीय शिक्षा मन्त्रियो द्वारा बगाल,

मद्रास, पजाब मे नाईट स्कूलो की एक अच्छी सख्या स्थापित हुई पर आर्थिक व दूसरे कारणो से १६२७ मे अधिकाश स्कूल वन्द हो गए। फिर १६३७ मे जाकर प्रातीय सरकारो ने प्रौढ शिक्षा को समाज शिक्षा का रूप दिया। १६४१ मे लगभग सभी प्रातो मे लडकियो के लिए स्कूल खुल गए किन्तु उस समय तक भी कुल १२ प्रतिशत साक्षरता मे स्त्रियो का साक्षर प्रतिशत केवल ३ था। सबसे पहला नम्बर था केरल का, जहा ४६ प्रतिशत साक्षरता थी। दूसरा नम्बर दिल्ली का था। शेष मे से कुछ प्रातो (राजस्थान और विंध्य प्रदेश मे १ से २ प्रतिशत तक ही) की दशा तो बहुत ही निराशाजनक थी। सन् १६५१ मे स्वतत्र भारत का सविधान लागू हो जाने के बाद भी कुल २५ प्रतिशत साक्षरता मे महिला साक्षरता केवल ६. ३ प्रतिशत ही थी। वास्तविक प्रगति उसके बाद ही प्रारम्भ होती है क्योकि स्त्रियो के समान वैधानिक अधिकारो का सूत्रपात यही से हुआ। हमारे स्वतन्त्र भारत के विधान मे जाति, रग, लिंग आदि भेदभाव समाप्त कर दिए जाने, श्री नेहरू, कांग्रेस, समाज कल्याण बोर्ड जैसी सस्थाओ, लोकसभा, राज्यसभा व विधान सभा परिषदो मे चुन कर गई महिला विधायको तथा दूसरी नेत्रियो के सम्मिलित प्रयत्नो से आज महिला शिक्षा के प्रति समाज के दृष्टिकोण मे आमूलचूल परिवर्तन आ गया है। समान विकास व समान अवसरो के अधिकारो के कारण आज कोई भी महिला किसी भी प्रकार की शिक्षा के अयोग्य नही ठहराई जा सकती।

१६५६ के सेंट्रल एडवायजरी बोर्ड आफ एज्यूकेशन की सिफारिश के अनुसार केन्द्र ने राज्यो को आदेश दिया कि महिला शिक्षा की प्रगति के लिए आवश्यक सभी कदम उठाए जाए। विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रो की ओर पूरा ध्यान दिया जाय क्योकि प्रगति के आकडे केवल शहरी क्षेत्रो में ही बढ रहे थे। महिलाओ को अध्यापन की ओर आकर्षित करने के लिए न्यूनतम योग्यता और अधिकतम आयु सीमाए निश्चित की गईं, नि शुल्क प्रशिक्षण व छात्रवृतियो की सुविधाए दी गईं। धडाधड स्कूल, कॉलेज, तकनीकी प्रशिक्षण केन्द्र, कल्याण केन्द्र खुलने लगे। आज से पचास वर्ष पूर्व भारतीय गावो में लडको तक लिए के स्कूल न थे, अब लडकियो के लिए भी स्कूल खुलने लगे। इस प्रकार आज स्त्री शिक्षा न केवल हमारी योजनाओ का अग है, तीसरी योजना के प्रारम्भ में उसे विशेष महत्व भी प्रदान किया गया है।

पहली और दूसरी पचवर्षीय योजनाओ के दौरान हुई शिक्षा क्षेत्र की उल्लेखनीय प्रगति के बावजूद यह पाया गया कि लडकियो की शिक्षा मे पर्याप्त उन्नति तो हुई पर उसी अनुपात से लडको के शिक्षा सम्बन्धी आकडो मे वृद्धि होने से शिक्षित लडकियो व लडको की सख्या का अन्तर घटने के बजाए और बढ गया। यह अन्तर तो आगे भी रहेगा, मिटाया नही जा सकता। पर एक विशेष कार्यक्रम अपना कर इस खाई को कम अवश्य किया जा सकता है। इसी उद्देश्य से तीसरी योजनाओ के प्रारम्भ मे नारी शिक्षा के लिए एक विशेष राष्ट्रीय कमेटी बना कर विशेष लक्ष्य निर्धारित किया गया।

महिला शिक्षा की इस विशेष कमेटी के कार्य है प्राइमरी, माध्यमिक, उच्च माध्यमिक, तकनीकी, विभिन्न स्तरो पर लडकियो की शिक्षा के विशेष कार्यक्रम तैयार करना, इस बारे मे सरकार को सलाह देना, योजना की प्रगति की समय-समय पर जाच कर मार्ग मे आने वाली कठिनाइयो के निराकरण के



के सुझाव प्रस्तुत करना, समूची योजना को सफल बनाने के लिए केन्द्र, राज्य, जिला, पचायत स्तर तक नारी शिक्षा समितियो का गठन करना आदि। सभी राज्यों मे ऐसी महिला शिक्षा सलाहकार समितियो का गठन कर लिया गया है और प्रति वर्ष की प्रगति रिपोर्टों-कठिनाइयो, सुझावों व नई मांगों के साथ प्रस्तुत की जा रही है। महिला शिक्षा की राष्ट्रीय परिषद के सुझाव पर प्रत्येक राज्य मे सयुक्त अथवा सहायक शिक्षा निर्देशक के पदो पर महिलाओ की नियुक्तिया की जा रही है। राज्यो को दिए जाने वाले शिक्षा-अनुदानो मे महिला शिक्षा के विशेष कार्यक्रमो के लिए विशेष सहायता दी गई है। निर्धारित राशि से अधिक व्यय हो जाने पर घाटा पूर्ति का आश्वासन भी केन्द्र की ओर से दिया गया है।

तीसरी योजना मे सामान्य शिक्षा के कुल ४०८ करोड के बजट में से १७५ करोड रुपया केवल लडकियो की शिक्षा पर व्यय करने का अनुमान रखा गया था। इसमें से ७५ प्रतिशत व्यय का जिम्मा केन्द्रीय शासन ने लिया था। लक्ष्य था २०४ लाख विद्यार्थी प्राथमिक स्कूलो मे नए भरती किए जाएगे जिनमें से १०३ लाख लडकिया होगी। यह सख्या मिला कर पूर्व स्कूली लडकियों की सख्या से तिगुनी होगी। ग्रामीण क्षेत्रों मे लडकियो के लिए अलग स्कूल खोलने की व्यवस्था जरूरी समझी गई क्योकि सहशिक्षा ग्रामीण स्वीकार नहीं करते। लडकियो के लिए ग्रामीण व शहरी विभिन्न स्तरो पर विशेष पाठ्यक्रम भी सुझाए गए हैं—इस दिशा मे अभी और प्रयोगात्मक कार्य चल रहा है। ग्रामीण क्षेत्रो में जाने वाली अध्यापिकाओ के लिए विशेष व्यवसायिक व व्यवहारिक प्रशिक्षण, प्रौढ़ महिलाओ के लिए अल्पकालीन शिक्षण पाठ्यक्रम, छात्राओ के लिए होस्टल, गरीब छात्राओ के लिए शिक्षण सामग्री, वस्त्र, दोपहर का भोजन, छात्रवृत्तियो आदि की व्यवस्था, अध्यापिकाओ के लिए क्वार्टस, प्रशिक्षण छात्रवृतिया, ग्रामीण क्षेत्र भत्ता आदि जुटाने की व्यवस्था की जा रही है।

किन्तु मुख्य समस्या साधनो की नही, न ही योजना को लागू करने की व्यवस्था सम्बन्धी है, स्त्री शिक्षा मे सबसे बडी बाधा है, हमारा सामाजिक पिछडापन व रूढिवाद। सरकार और महिला सस्थाए तब तक कुछ नहीं कर सकते, जब तक कि लोकमत इसके अनुकूल न हो। लोकमत-विशेष रूप से ग्रामीण लोकमत को स्त्री शिक्षा के लिए तैयार करने के लिए तीसरी योजना मे प्रचार साधनो पर ही ११ करोड व्यय करने का प्रावधान रखा गया। फिर भी योग्य कार्य कर्त्रियो के अभाव मे लक्ष्यो की पूर्ति सभव नहीं दिखाई देती। वास्तव मे ईसाई मिशनरियो व धर्म प्रचारको जैसी आस्था व लग्न के साथ स्त्री शिक्षा प्रचारको और इस दिशा मे कार्य करने वाले नि स्वार्थ सेवियो की आवश्यकता है। सामाजिक व महिला सगठन मिल कर इस कार्य को उठा सकते है। प्रयत्न जारी हैं। सफलता कितनी मिलती है? यह समय ही बताएगा। पर ग्रामीण क्षेत्रो मे नारी जागरण की स्थिति को देखते हुए स्थिति निराशाजनक नहीं कही जा सकती।

नवम्बर १९६३ मे पहली बार राज्यो के शिक्षा मन्त्रियो के सम्मेलन मे 'नारी शिक्षा' के विशेष कार्यक्रमों पर विचार किया गया। 'अखिल भारतीय महिला सम्मेलन' ने भी लडके, लडकियो की शिक्षित सख्या के भारी अन्तर को मिटाने के लिए विभिन्न पहलुओ से विचार कर अनेक सुझाव प्रस्तुत किए। इसके पूर्व अगस्त ६३ मे 'नारी शिक्षा की राष्ट्रीय समिति' की अध्यक्षा श्रीमती रक्षा सरन ने 'स्टाकहोम'

मे आयोजित पिछडे देशो मे शिक्षा योजनाओ सबधी अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन मे भाग लेकर भारत की ओर से लडके-लड़कियो की शिक्षा मे अन्तर मिटाने के लिए समान अवसर व सुविधाए प्रदान करने सम्वन्धी पेपर पढा और अन्य देशो के तत्सबधी अनुभव प्राप्त किए। योजना के तीसरे वर्ष मे दो महत्वपूर्ण कमेटिया भी नियुक्त की गई–पहली श्री भक्तवत्सलम्, मुख्य मत्री मद्रास राज्य की अध्यक्षता मे यह जानने के लिए कि महिला शिक्षा में जन सहयोग, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रो मे जन सहयोग की क्या स्थिति है ? और अभाव के क्या कारण हैं। दूसरी श्रीमती रक्षा सरन की अध्यक्षता मे चौथी योजना का कार्यक्रम निर्धारित करने के लिए।

सन् ६३–६४ वर्ष के अत तक नई भरती सख्या मे प्रगति इस प्रकार थी —

	सन् ६१–६२		सन् ६२–६३		सन् ६३–६४	
प्राइमरी	कुल स०/लडकियो की स०		कुल स०/लडकियो की स०		कुल स०/लडकियो की स०	
आयु वर्ग ६-११	३८६.८/१३० ८	(लाख)	४२० ६/१४४ १	(लाख)	४५२.१/१६०.४	(लाख)
मिडिल						
आयुवर्ग ११-१४	७४ ५/१८ ४	(लाख)	८३ ३/२१.६	(लाख)	६२ २/२४ ५	(लाख)
सेकेंडरी						
आयुवर्ग १४-१७	३३ ५/६ ४	(लाख)	३८ ६/७ ५	(लख)	४३ ३/८.६	(लाख)

निश्चय ही लडकियो की सख्या में वृद्धि के बावजूद जहा तक खाई को पाटने का प्रश्न है स्थिति निहायत असतोष जनक थी जिसके लिए तीसरी योजना के अतिम दो वर्षों मे अनेक सुझाव प्रस्तुत करने के साथ चौथी योजना के कार्यक्रम में निम्न बातो पर वल दिया जा रहा है।

सामान्य कार्यक्रम-

१ देश के सभी क्षेत्रो मे और सुदूर देहातो मे भी सभी स्तरो पर स्कूल खोलना। प्राइमरी स्कूल तो अवश्य ही। प्राइमरी स्तर पर सहशिक्षा को बढावा देना।

२. महिला अध्यापको की नियुक्ति की व्यवस्था।

३. महिला अध्यापको की वडे पैमाने पर ट्रेनिंग की व्यस्था।

विशेष कार्यक्रम

(क) अध्यापको के लिए :

१ निवास की व्यवस्था।

२ पिछडे क्षेत्रो, पहाडी क्षेत्रो व ग्रामीण क्षेत्रो में जाने वाली अध्यापिकाओ के लिए विशेष भत्ते की व्यवस्था।



३ इन अध्यापिकाओ के बच्चो की नगरो में पढाई के लिए होस्टल व्यवस्था, नि शुल्क या कम-खर्च पर ।

४ शीघ्र प्रशिक्षण के लिए सक्षिप्त पाठ्यक्रम ।

५ शिशुओ के लिए स्कूलो में ही नर्सरी विभाग ।

६ प्रशिक्षण अवधि में स्टाइफड देने की उदार व्यवस्था ।

(ख) छात्राओ के लिए —

१ उपस्थिति के अधिक आकडो पर पुरस्कार व छात्रवृतिया ।

२ ग्रामीण क्षेत्रो में लडकियो के होस्टलो का निर्माण ।

३ नि शुल्क शिक्षा । गरीब छात्राओं को अन्य सुविधाए भी ।

४ हर स्कूल में एक योग्य प्रौढ महिला की 'स्कूल-माँ' के रूप में नियुक्ति ।

५ पार्ट-टाइम शिक्षा की व्यवस्था ।

६ छूटी शिक्षा को आगे बढाने की सुविधाए ।

(ग) छात्राओ व अध्यापिकाओ के लिए —

१ नि शुल्क या अन्य सुविधाए दे कर यातायात व्यवस्था ।

२ लडकियो की शिक्षा के पक्ष में जनमत निर्माण ।

३ स्वास्थ्य व सफाई की विशेष व्यवस्था ।

चौथी योजना मे नई भरती सख्या मे ५० प्रतिशत वृद्धि का अनुमान लगाया गया है । इसलिए तीसरी योजना मे ४०८ करोड के कुल शिक्षा बजट में जो १७५ करोड लडकियो की शिक्षा के लिए (विशेष व सामान्य कार्यक्रम मिला कर) रखा गया था, उसे चौथी योजना मे बढा कर ६७२ करोड के कुल बजट मे से १३० करोड रुपया केवल लडकियो की शिक्षा के लिए सुझाए गए 'विशेष कार्यक्रम' के लिए निर्धारित करने की माग महिला शिक्षा कमेटी की ओर से प्रस्तुत की गई है । साथ ही एक विशेष मीटिंग मे प्रस्ताव पास कर के सरकार से माग की गई है कि सकटकालीन स्थिति मे शिक्षामद मे कटौती करने पर भी नारी शिक्षा के विशेष कार्यक्रम के मद मे कटौती न की जाए क्योकि इस पर किया गया खर्च देश की सकट की स्थितियो मे सहायक होगा ।

'अखिल भारतीय महिला सम्मेलन' ने भी नारी शिक्षा के लिए आयोजित जनवरी ६४ के एक सेमीनार में विचार विमर्श करके जो सुझाव प्रस्तुत किए थे, उन में से मुख्य हैं—घर घर प्रचार करने के लिए साधनो की व्यवस्था, दोपहर के भोजन, पुस्तकें, कपडों की व्यवस्था-विशेष रूप से पिछडे क्षेत्रो में, पचायतों का सहयोग अध्यापिकाओ को आकर्षित करने के लिए सुविधाए, अधिक ट्रेनिंग सेंटर, समाजकल्याण बोर्ड द्वारा चलाए जा रहे सक्षिप्त पाठ्यक्रमो का ग्रामीण क्षेत्रो में विस्तार, अधिक सख्या में व्यवसायिक व



तकनीकी प्रशिक्षण के लिए जूनियर व सीनियर पोलीटेकनिकस खोलना, कला–दस्तकारी के जूनियर व सीनियर केंद्रो का विस्तार, प्रौढ शिक्षा का विस्तार, ऋण छात्रवृतिया, स्टाइफड, होस्टल आदि की सुविधाएं प्रदान करना ।

महिलाओ के लिए पार्ट टाइम ट्रेनिंग व रोजगार की सुविधाए जुटाने के लिए भी अनुसंधान कार्य चल रहा है । देश की बदली हुई परिस्थितियो में महिलाओ के लिए नए-नए कार्य क्षेत्रो में प्रशिक्षण की सुविधाएं जुटाई जा रही हैं । आज लगभग सभी क्षेत्रो में महिलाए प्रशिक्षित या अप्रशिक्षित रूप में अपनी प्रतिभाओ का प्रभावपूर्ण प्रदर्शन कर रही है । वे जज हैं, इजीनियर हैं, पायलेट है, डाक्टर ही नही पशु-चिकित्सक और कृषि-स्नातक भी है । व्यपार व्यवसाय मे, प्रशासन में, समाज सेवा मे, राजनीति में सभी जगह उनका प्रतिष्ठित स्थान है । यह सारी उन्नति शिक्षा में उन्नति के कारण ही है जो आगे चल कर उन्हे समाज मे और भी सम्मानपूर्ण स्थान दिलाएगी । पर इस सब के बीच एक कमी अभी खटक रही है । शिक्षा अधिकारियो तथा महिला शिक्षा की राष्ट्रीय परिषद् को इस ओर भी विशेष ध्यान देना चाहिए कि प्रत्येक लडकी को अपना कैरियर चुनने के लिए उसके रुझान, शक्तियों व क्षमताओ अनुसार सलाह देने के लिए हर मिडिल व सेकेण्ड्री स्कूल मे सलाहकार ब्यूरो हो ताकि अधाधु व बी ए., एम ए. करके अपनी शिक्षा व क्षमताओ को व्यर्थ करने के बजाए वे उन क्षेत्रो में प्रशिक्षण के लिए जा सकें जिनमें वे फिट होकर देश की और अपनी आवश्यकताओ की पूर्ति कर सकें । कोई लडकी नौकरी करे या न करे, पर हर लडकी की शिक्षा में समय पर आत्मनिर्भर बनने लायक एक दिशा हो। वह दिशा प्राइमरी, माध्यमिक व उच्च शिक्षा-सभी स्तरो पर हो सकती है । अवसर और निरर्थक सघर्ष पर उन्हें न छोड कर उचित निर्देशन दिया जाए तथा प्रतिभाओ की खोज करके देश के विकास मे उनका उपयोग किया जाए । शिक्षा की उन्नति सही अर्थों में तभी हो सकती है जब वह शिक्षार्थी, समाज व देश, सभी के लिए सार्थक हो ।

[जे ३/३४ए, राजौरी गार्डन, नई दिल्ली-२७]



स्त्री शिक्षा का विकास किस दिशा में हो ?

—श्रीमती हंसा मेहता,

शिक्षा को सामाजिक और आर्थिक क्रान्ति लाने वाला सर्वाधिक प्रभावशाली अस्त्र माना जाता है। हमारा ग्रामीण समाज गतिरूद्ध एवं रूढिवादी रह जाने का मुख्य कारण यही है कि उस क्षेत्र मे अधिकाश महिलाएँ शिक्षित नही हैं। सन् १९६१ की जनगणना के अनुसार केवल १३% स्त्रिया पढी लिखी थीं अर्थात् ८७%स्त्रिया जिनमे अधिकतर ग्रामीण क्षेत्रो की हैं, पढने लिखने मे असमर्थ हैं। पिछले नौ वर्षों में पढी-लिखी स्त्रियो का प्रतिशत कुछ तो बढा है परन्तु अधिक नहीं। इस प्रकार शहरो मे स्त्री–शिक्षा मे प्रगति हुई है परन्तु ग्रामीण क्षेत्रो मे वह वही है जहा पहले थी और जब तक विशेष प्रयत्न न किये जाएँ वह वही बनी रहेगी।

प्रश्न यह है कि कौन सी बातें स्त्री शिक्षा के मार्ग मे बाधक हैं ? 'विचार करने पर लगता है कि अपने कठोर अन्ध विश्वास एव कुप्रथाओं वाला समाज ही स्त्री–शिक्षा की इस दुर्दशा के लिये उत्तरदायी है। समाज मे स्त्रियो की गिरी हुई स्थिति ने उनके पिछडने में और भी योग दिया है। हमारे प्रगतिशील सविधान के बावजूद स्त्रियो को आज भी समाज मे पुरुषो के बराबर स्थान प्राप्त नहीं है। माता–पिता भी पुत्र और पुत्री मे अन्तर मानते हैं। पुत्र को अधिक महत्व दिया जाता है क्योकि वह परिवार के लिये जीविकोपार्जन करता है और भविष्य का आधार होता है जबकि पुत्रियो के विवाह हो जाने पर वे दूसरे परिवार की हो जाती हैं। इसीलिये माता पिता कन्याओ की शिक्षा पर व्यय करने में रुचि नही लेते। विवाह होने तक लडकी अपने घर में गृहकार्य में मा की सहायता के लिये अथवा छोटे बच्चों की देख भाल के लिये रहती है। गाव मे लडके, लडकियाँ एक ही विद्यालय में पढते हैं। विद्यार्थियो की सख्या कम होने के कारण उनके लिये अलग-अलग विद्यालय खोलना अपव्यय है। परन्तु एक आयु सीमा के बाद माता-पिता अपनी लडकियो को लडको के सम्पर्क मे आने देना पसन्द नही करते और इसलिये वे बहुधा इस आयु पर अपनी लडकियो को स्कूल से हटा लेते हैं। स्थानीय अधिकारी लडकियो के लिये अलग स्कूल खोलना भी चाहें तो पढाने वालो की समस्या सामने आती है। माता-पिता लडकियो के स्कूल में पुरुष-अध्यापको को पसन्द नही करते। तो महिला अध्यापिकाएँ कहाँ से आएँ ? शहरी महीलाएँ सुविधाओ की कमी के कारण गावों मे जाने मे अनिच्छा प्रगट करती हैं— उन्हे गावो मे रहने के लिये ठीक जगह नही मिलती और अकेले रहने से वे डरती हैं। इन कठिनाइयो पर विचार किया गया था— उन्हे दूर करने के सुझाव आए थे। एक सुझाव था कि गाव मे विद्यालय के पास ही अध्यापिकाओ के लिये क्वार्टर्स बनाए जाएँ। एक दूसरा सुझाव था कि यदि पति-पत्नी दोनो ही शिक्षक हो तो उन्हे एक ही गाव के स्कूल मे रखा जाए। और भी सुझाव आए परन्तु पता नही कि उनमे से कितने' को व्यवहार मे लाया गया। यदि अध्यापिकाओ की आवश्यकता

है तो अधिक लडकियो को उच्च शिक्षा मिलनी चाहिये। भारत सरकार कन्याओ के विवाह की आयु पद्रह वर्ष से वढाकर अठारह वर्ष करने का विचार कर रही है। सम्भवत यह कदम माध्यमिक विद्यालयो मे छात्राओ की सख्या वृद्धि मे सहायक हो।

शिक्षा से सामाजिक परिवर्तन लाने के लिये हमे विचार करना पड़ेगा कि उसके लिये कैसी शिक्षा हो ? यदि हम चाहते हैं कि समाज सजग एव प्रगतिशील हो तो यह कहने की आवश्यकता नही कि पुरुष और स्त्री दोनो को ही उचित प्रकार की शिक्षा उपलव्ध होनी चाहिए। आधुनिक शिक्षा के विरूद्ध शिकायत है कि इससे जो सामाजिक परिवर्तन आए है, वे सभी अच्छे नहीं हैं। यह शिक्षा राष्ट्रीय भावना के विरूद्ध हैं और जीवन मे आध्यात्मिकता का लोप कर भौतिकता पर जोर देती है। यह खेतो और कारखानो मे हाथ से काम करने की वजाय व्हाइट कॉलर जॉव को प्राथमिकता देती है। प्राय पूछा जाता है कि किसान का वेटा अपने पूर्वजो के कृषि कार्य को छोड कर क्लर्क क्यो वनता है ? यदि विश्वविद्यालयो से निकले सभी स्नातक क्लर्क का काम करना चाहे तो उन सवको काम मिलना सम्भव नही और इससे शिक्षितो मे वेरोजगारी वढेगी। इसी सन्दर्भ ये यह प्रश्न भी उठता है कि क्या विश्वविद्यालयी शिक्षा विद्यार्थियो को व्यावसायिक प्रशिक्षण देने के लिये हैं अथवा मानसिक प्रशिक्षण के लिये। यदि आधुनिक शिक्षा के विरूद्ध शिकायतें वास्तविक हैं तो स्वतत्र राष्ट्र की आवश्यकताओ को ध्यान मे रख कर आधुनिक शिक्षा को एक नई दिशा देनी पडेगी। एक प्रश्न यह भी उठता है कि क्या लडकियो की शिक्षा वही हो जो लडको के लिये है या भिन्न हो। कुछ वर्ष पहले लडके, लडकियों के पाठ्यक्रम मे भिन्नता पर विचार करने के लिये एक समिति वनाई गई थी। वह समिति इस निर्णय पर पहुची थी कि सामान्य शिक्षण मे लडके और लडकियो के लिये कोई भिन्नता नही हो सकती और न ही व्यावसायिक विषयो जैसे चिकित्सा, विधि, शिक्षण आदि मे हो सकती है। आवश्यकता इस वात की है कि शिक्षण उन विषयो में प्रदान किया जाए जो स्त्रियो के लिये अपेक्षाकृत उपयोगी और इच्छानुकूल हो, जैसे गृह विज्ञान है। यद्यपि वहुत सी स्त्रियाँ घर सुधारने मे ही रह जाती हैं। यदि इन गृह-निर्माता स्त्रियो को उचित प्रकार की शिक्षा दी जाए तो सामाजिक जीवन मे अपेक्षित परिवर्तन लाया जा सकता है।

गृह विज्ञान विषय को पहले वहुत गलत समझा गया। इसके लिये मान्यता थी कि यह खाना पकाने, कपडे धोने और गृहस्थी के कार्य मे प्रशिक्षण का विषय है। अब लोग समझने लगे हैं कि यह उससे कुछ अधिक है। इसका अर्थ है, उचित प्रकार के पौष्टिक भोजन का ज्ञान; इसका अर्थ है, वच्चो के सही ढग से पालन-पोषण और वाल-मनोविज्ञान का ज्ञान, इसका अर्थ है घर को सुन्दर वनाने का ज्ञान और साथ ही आय के अनुसार आर्थिक व्यवस्था; इसका अर्थ है अच्छे पारिवारिक सम्वन्ध और नियोजन। सक्षेप मे इसका अर्थ है घर को मध्य रख कर ऐसे विषयो की शिक्षा देना जिससे घर सुख और सौन्दर्य से भर जाए। गृह विज्ञान विषय लेने वाले, गृह-सुधार के अतिरिक्त यदि चाहे तो डाइटिशियन, केटरर, वाल-अध्यापक, गृह सज्जा इत्यादि के कार्य कर सकते है। गृह-विज्ञान में विकास के लिये वहुत क्षेत्र हैं। अधिकाधिक महिलाओ को यह अपनाना चाहिये। इसके ज्ञान से घरो मे क्रान्ति आएगी और फिर घरो से समाज में।

[पेट्रन, आल इण्डिया वीमेन्स कान्फ्रेन्स,]
७३, भारती नगर, नई दिल्ली



लोक कल्याण और नारी

—श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी

भारत की भावना-शक्ति मातृ-तत्त्व के प्रति जितनी अधिक विनम्र रही है, उतनी विश्व के किसी खण्ड में नही रही। यही वह देश हैं जहाँ युगो से 'मातृदेवो भव' का उपदेश दिया जाता रहा है। नारी शक्ति के प्रति इतनी आदरणीयता का मूल केवल उसका जननी होना ही नही है, अपितु उसके द्वारा जन्म के पश्चात् प्रथम गृह के रूप में शिक्षा देकर पूरे जीवन के लिये एक सुदृढ नीव तैयार करना है। कोई माता कदापि यह नही चाहती कि उसके आँचल से निकला हुआ दूध केवल रक्त-मास के सग्रह का साधन मात्र रहे। वह तो यह चाहती है कि उसके दूध की प्रत्येक बूँद वालक का स्वर्णिम-जीवन तैयार करे और वह वालक जगती के आँगन में जितने अच्छे-से-अच्छे कर्म हो सकते हैं करे। उसके दूध को लजाने का कभी अवसर न आये।

उपर्युक्त कामनाओ के आलोक में माता वालक को जव पहली वार जन्मघुट्टी पिलाती है तभी से शिक्षासूत्र देना आरम्भ कर देती है। मदालसा के द्वारा पलने में झुलाते समय शुद्धोऽसि बुद्धोऽसि निरञ्जनोऽसि इत्यादि रूप मे दिया जाने वाला ज्ञानोपदेश क्या विश्व के किसी अन्य भाग में किसी माता ने दिया है? अथवा पत्नी के रूप में आकर भी पति और एक सन्यासी के शास्त्रार्थ में मध्यस्थता प्राप्त कर निष्पक्ष निर्णय देने वाली भारती देवी का स्मरण हमारे मस्तक को वलात् विनत नही कर देता है क्या?

नारी का उदात्त कृतित्व—

नारी के कृतित्व को यदि हम शास्त्रीय आलोक में परखते हैं तो वह दो रूपो में निखरा हुआ प्रतीत होता है। इनमें पहला पक्ष है—पौराणिक और दूसरा है—ऐतिहासिक। पौराणिक पक्ष में वैदिक काल से ही देव और मानव कोटि श्रेष्ठ महिलाओ का दर्शन होता है, जिनमें लोपामुद्रा, अपाला, रोमशा, सूर्या आदि ऋग्वेद के सूक्तो की रचना करने वाली पण्डिताएँ और गार्गी, मैत्रेयी आदि औपनिषदिक ऋषिकाएँ हैं।

माता को अद्वितीय गौरव का प्रतीक मानते हुए पृथिवी को तथा अनेक प्राकृतिक वस्तुओं को देवी मानकर पूजा करने की प्रवृत्ति निश्चय ही नारी के लोकमङ्गल रूप का ही पूजन है। भारतीय धारणा के अनुसार भौतिक सुख की सर्वोच्च सीमा है-प्रिय स्त्री का साहचर्य। वृहदारण्यक उपनिषद् में प्राज्ञ आत्मा के साथ तादात्म्य होने पर कितना और किस प्रकार का सुख मिलता है—मिल सकता है, इसकी कल्पना कराने के लिये प्रिय स्त्री के साहचर्य-सुख की उपमा दी गई है—तद्वा अस्यैतदतिच्छन्दा अपहतपाप्मभयं रूपम्। तद्यथा प्रियया स्त्रिया सम्परिष्वक्तो न वाह्यं किञ्चन वेद नान्तरं तद्वा अस्यैतदाप्त काम मात्मकाममकाम (४ ३ २१) काम रूप शोकान्तरम्॥ वैदिक सस्कृति की उन्नायिकाओ मे सीता, द्रौपदी, गान्धारी आदि रानियो का चरित्र भी चिरस्मरणीय है।

ऐतिहासिक पक्ष मे हम शासनकर्त्री महिलाओ को ले सकते हैं। जैमिनीय अश्वमेध के अनुसार प्रमीला नामक महारानी ने राष्ट्र का शासन किया था। उसने अर्जुन से युद्ध किया और उसके पराजित न होने पर उसने उससे सन्धि की और विवाह कर लिया। इतिहास-प्रसिद्ध राज्य श्री का चरित अतिशय

उदात्त है। सिन्धु के राजा दाहर की पत्नी का आदर्श परम उज्जवल है। अरब आक्रमणकारियो से युद्ध करते हुए दाहर मारा गया। तब रानी उनसे युद्ध करने लगी। अन्त मे जब भोजन समाप्त हो गया तो अन्य स्त्रियो के साथ उसने चिता-मरण स्वीकार किया।

कल्हण ने सूर्यमती रानी के बारे मे लिखा है— देश मे निरुपद्रव व्यवस्था संचालन करने का उस देवी को अद्वितीय श्रेय था। वह स्वयं राजकार्य मे उद्यत रहती थी। इसी प्रकार कल्हण ने राजतरंगिणी मे एक रट्टा नामक महारानी का वर्णन किया है। उसमे कहा गया है कि—

सुबहवीभि : प्रतिष्ठाभिर्जीर्णोध्दारश्च धीरया।
तया चित्रं चतुरया यंर्गुदिष्टया विलङ्घिता॥
अद्यापि विक्षरत्क्षीरार्णवकान्तिच्छटा च्छलात्।
यो भातीव सुधासूति सितश्वेताश्मनिर्गत:॥

इत्यादि विवरण के अनुसार मन्दिरो का निर्माण का, उनका जर्णोद्धार आदि भी रानियो के कृतित्व को सिद्ध करता है। इसी प्रकार सुगन्धा, रत्नदेवी आदि के शासनो का वर्णन भी बडा महत्व पूर्ण है।

महमूद गजनवी ने जब भारत पर आक्रमण किया था तब उससे समाज और राष्ट्र की रक्षा करने के लिये अपेक्षित धन का कोश बनाने के लिये स्त्रियो ने अपने शरीर से अलकार उतार दिये थे।

स्त्रियो के उपर्युक्त उदात्त पक्ष को देखते हुए ही मनीषियो ने नियम बनाया कि केवल अपनी ही नही, अपितु नारीमात्र की रक्षा के लिये मनुष्य को सदा तत्पर रहना चाहिये।

यथात्मनस्तथाऽन्येषां दारा रक्ष्या विपश्चिता॥
(वा० रामयण अरण्य ५०/)

ऐसे कल्याणकारी नारी के सम्बन्ध मे विचार रहते हुए भी बहुधा प्राचीन-अर्वाचीन ग्रन्थो मे नारी की निन्दा क्यो की गई है? यह प्रश्न सहज ही उठ खड़ा होता है किन्तु इसका समाधान यह है कि— यह निन्दा उन सती-साध्वी स्त्रियो के लिये नही है, जो माता, गृहिणी या भगिनी के रूप मे किसी कुटुम्ब को समलकृत करती हैं। ऐसी कुल-स्त्रियाँ तो सदैव वन्दनीय रही है और रहेगी।

अहिल्या द्रौपदी कुन्ती सीता मन्दोदरी तथा।
पञ्चकं ना स्मरेनित्यं महापातक नाशनम्॥

इस प्रकार नारी के नामस्मरण मे भी महापातक के नाश का सामर्थ्य अवश्य ही नारी के लोकमङ्गलकारी तत्व की प्रतिष्ठा मे अग्रसर रहा है। मार्कण्डेय पुराण मे महर्षि ने **स्त्रिय समस्ता सकला जगत्सु**" और "**या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता नमस्तस्यै** ····" कह कर मातृ शक्ति को नमस्कार किया है। ऐसी महिमामयी महिलाओ की शक्ति को जागृत करने के लिए श्री दयाशकर जी श्रोत्रिय ने महिला मण्डल की स्थापना—सेवा-रूप मे अपने जीवन को सफल बनाया है। इस महान् सेवा के लिए उनका अभिनन्दन किया जा रहा है। यह श्रोत्रियजी का ही नही अपितु समस्त प्रबुद्ध महिला समाज का अभिनन्दन है।



राजपूत वीरांगनाएं

—कृष्णचन्द्र श्रोत्रिय

राजस्थान की भूमि वीर-प्रसविनी रही हैं। उसका इतिहास राजपूत वीरागनाओं के देशप्रेम, त्याग, शौर्य एवं जातीय गौरव के अनेक उदाहरणो से भरा पडा है। राजस्थान का कोई भी भाग ऐसा नही है जहा की वीर नारियो ने अपने व्यक्तिगत, जातिगत एव देशगत गौरव को ऊपर उठाने मे कोई कमी रखी हो। जब कभी देश, जाति, समाज एव-सस्कृति की प्रतिष्ठा मे आँच लगने का सकट उपस्थित हुआ, राजपूत महिलाओं ने अपने प्राणो की आहुति देकर उपस्थित सकट को दूर किया।

देशप्रेम, वीरता, त्याग आदि इन क्षत्रिय वीरागनाओ के अनुकरणीय गुण थे। देश प्रेम तो इनकी रग-रग मे भरा हुआ था। अपने नव जात शिशुओ मे देशप्रेम के सस्कार डालने की इन्हें सदैव चिन्ता रहती थी। राजस्थान के मार्तण्ड कवि सूर्यमल्ल मिश्रण ने इनकी उक्त प्रवृत्ति का बडा ही सुन्दर चित्रण किया है-—

इला न देणी आपणी, हालरिया हुलराय।
पूत सिखावै पालणै, मरण बडाई माय॥

वे गर्भस्थ शिशुओ को भी शौर्य की ही शिक्षा दिया करती थी।

थाल बजता हे सखी, दीठो नैण फुलाय।
बाजा रे सिर चेतणौ, भ्रूणा कवण सिखाय।

राजस्थान में पुत्र-जन्म के अवसर पर थाल बजाने की प्रथा है। वीर क्षत्रिय बालक अपने जन्म पर थाल बजने की आवाज सुन कर शौर्योन्मत्त हो जाता है। केवल क्षत्रिय बालक ही नही अपितु क्षत्रिय बालाएँ भी अग्नि-स्नान करने के लिये लालायित रहती है—

हु बलिहारी राणियाँ, सांचा गरभ सिखाय।
जार्चा हदै तापणौं, हरखै घी हग लाय॥

यदि थाल बजने पर नवजात बालको मे शौर्योन्माद उत्पन्न हो जाता था तो बालिकाओं मे अग्नि तापने से अग्नि स्नान करने की भावना प्रवाहित हो जाती थी।

राजपूत महिलाएँ यह कभी सहन नही कर सकती थी कि उनका पुत्र या पति अपनी कायरता से उनका दूध व वलय लज्जित करे।

सहणी सबरी हूं सखी, दो उर उलटी दाह।
दूध लजाणी पूत सम, वलय लजाणी नाह ॥

वे अपने पतियों से यही कामना किया करती थी कि वे हाथी के दांत उखाड कर उनके लिये चूडा चिरवावे और हाथी के मस्तक फोड़ कर उनके कंठाभरण के लिये गज-मुक्ता लावें। ये ही दो वस्तुएँ उनके लिये सच्चे शृङ्गार की हैं।

न्याय भडा घर नारियाँ, चूडो मोल सुहाग ॥

कायर पुरुष को पति स्वीकार करने की अपेक्षा वे वैधव्य जीवन व्यतीत करने मे गौरवानुभूति किया करती थी।

यो गहणौ यो वेस अब, कीजै धारण कंत।
हूँ जोगण किण कामरी, चूडा खरच मिटंत ॥

कायर की भाँति युद्ध से भाग कर घर पर आने वाले पति को वे क्या कटूक्तियाँ सुनाया करती थी।

बब जीवै भव खोवियो, मो मन मरियो आज।
मोनू ओछै कचुवै, हाथ दिखाता लाज ॥

विधवा स्त्रियाँ लम्बी कचुली पहनती हैं। इस जन्म मे अब वे उनसे नही मिल सकती।

कत भलाँ घर आविया, पहरीजै मो वेस।
अब धण लाजी चूडियां, भव दूजै भेटेस ॥

यदि दैवयोग से उनका पुत्र कायर निकल जाता तो पुत्र जनन पर उन्हे अतिशय पश्चात्ताप होता। ऐसे पुत्र को स्तन्यपान कराने मे वे अपने यौवन का क्षय ही समझती थी।

पूत महा दुख पालियौ, वय खोवण थण पाय।
एम न जाण्यौ आवही, जामण दूध लजाय ॥

वे अन्य स्त्रियो को भी यही शिक्षा दिया करती थी कि कायर पुत्र को कभी उत्पन्न नही करना है—ऐसे पुत्र को जन्म देने से केवल यौवन का क्षय ही होता है।

जणणी जणे कपूत मत, चंगो जोबन खोय।

यदि पुत्र जनना ही है तो ऐसा जन जो अपने बाप के वैर का बदला लेकर कुल को सुशोभित करने वाला हो।

जण तू बैर विहडणो, कै कुल मडण होय ॥

वे क्षत्रिय कुल के लिये भी ऐसी ही मर्यादा स्थापित करती है जिसमे लडको के लिये तलवार की घाट उतरने तथा लडकियो के लिये अग्नि स्नान करने का विधान है। इसका पालन करने पर कुल में कलङ्क लगने की कही भी गुञ्जाइश नही है



या घर खेती ऊजली, रजपूता कुल राह।
चढणौ धव खारा चिता, बढणौ थारा बाह॥

रजवट धर्म की भी क्या ही असगति है।

उरसा खेती बीज घर, रजवट उलटी राह॥

अपने पुत्रो को युद्ध मे मरते तथा पुत्र वधुओ को सती होते देख कर वीर क्षत्राणियो को सच्ची प्रसन्नता हुआ करती थी।

सुत थारा रज रज थियो, वहू बलेवा जाय।
लखिया डूगर लाज रा, सासू उर न समाय॥

सच्ची क्षत्राणियाँ, अपने पतियो को उनकी कायरता व विलासिता पर फटकारती थी।

पोता रे बेटा थिया, घर मे वढियौ जाल।
अब तो छोडौ मागणौ, कत लुभायौ काल।
कत सुपेती खेलता, अब की जीवण आस।
मो धण रहणौ, हाथ हू छातै मुहडै घास॥

कायर पति की मृत्यु का तो उन्हे तनिक भी दुख नही होता था।

भल्ला हुआ जु मारिया, बहिणि म्हारा कत।
लज्जे जतु वयसिअहु, जइ भग्गा घरु एतु॥

[हे बहिन ! यह भला हुआ जो मेरा पति मारा गया है। यदि वह भाग कर घर आता तो मैं अपनी समवयस्क सखियो मे लज्जित होती]

वीर क्षत्राणियो को अपनेसतीत्व-रक्षण की बहुत ही चिन्ता रहा करती थी। इसके लिये वे आये दिन जौहर किया करती थी। चित्तौड की रानी पद्मिनी का जौहर इतिहास-प्रसिद्ध है। जीते जी उसके शरीर को कोई स्पर्श नही कर पाता था। तभी तो यह कहावत के रूप मे प्रचलित हुआ है—कि कृपण का धन, सर्प की मणि, सिंह की मूँछ और सती का स्तन मृत्यु के बाद ही छुये जा सकते हैं। उन्हे सदैव इस बात का ध्यान रहता था कि अपने कारण उनके पति युद्ध मे वीर गति प्राप्त करने से चूक न जाय। इस सम्बन्ध मे हाडी रानी का त्याग प्रसिद्ध है। रण से भाग कर आने वाले अपने स्वामियो का वे कभी स्वागत नही करती थी। कहते हैं कि एक बार जोधपुर के महाराजा जसवतसिंह युद्ध से भाग कर जोधपुर चले गये थे तो उनकी हाडी रानी ने किले के दरवाजे बद करवा कर उन्हे प्रवेश नही होने दिया। इससे लज्जित होकर वे पुन विजय प्राप्त करने के लिये चल पडे। इस वीरोचित कार्यवाही से राणी भी यश धवलित हो गई।

या हाडी लाडी जसवत तणी ... ।

राजपूत बालाएँ अपने देश-गौरव की रक्षा के लिए अपने प्राणो को सहर्ष तिलाञ्जलि दिया करती थी। इस सम्बन्ध में मेवाड़ के महाराणा भीमसिंह की पुत्री कृष्णकुमारी का नाम इतिहास मे सदैव अमिट अक्षरो मे लिखा रहेगा।

वीर क्षत्राणियो मे सती होने की अभिलाषा सदैव रहा करती थी। वे अपने पतियो से सती होने का अवसर प्रदान करने की कामना किया करती थी।

हू पाछै आगै हुवै, आगी नाह घरेह।
जे बाली घण जीव हूं, आगै मूझ करेह ।।

प्रसिद्ध है सती होते समय स्त्री सती षोडश शृङ्गार कर नारियल उछालती हुई शव के आगे-आगे चलती है।

वीर क्षत्राणियां कभी विधवा जीवन व्यतीत नही करती थी। न वे अपने पतियो की मृत्यु पर रोती तथा न चूड़ियो उतारती थी।

काली चूडी की तजै, मगल वेला रोय।
राउत जाई डीकरी, सदा सुहागंण होय।

प्रसिद्ध है पति की मृत्यु पर षोडश शृङ्गार कर तथा चूडा धारण कर सती होने का विधान है।

श्री दयाशंकरजी श्रोत्रिय के जीवन का एक मात्र लक्ष्य नारी जाति की सेवा करने का रहा है। इसी एक तपस्या मे उन्होने अपने जीवन की आहुति दे दी है। अत. उनके पुनीत प्रयास को समाहृत करने के लिये यह उपयुक्त तथा अर्थ-संगत होगा कि आधुनिक काल की नारियो को अपनी प्राचीन, बहिनो के आदर्श की एक झलक दिखाई जाय ताकि वे इससे कुछ प्रेरणा ले सकें। इसी अभिप्राय की पूर्ति के लिये ये रेखाएँ यहाँ अंकित की जाती हैं।





भारत में महिला कल्याण-प्रवृत्तियों का विकास : एक सिंहावलोकन

—कुमारी पुष्पा भटनागर बी ए (ग्रानर्स), एम एस. डब्ल्यू

किसी भी देश की उन्नति का मूल्याकन हम वहा के महिलावर्ग की स्थिति को देख कर करते है। बीसवी शताब्दि क्रान्ति का सदेश चारो ओर फैला रही है। धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक सभी क्षेत्रो मे क्रान्ति का तीव्र स्वर व्याप्त है। शताब्दियो से शोषित पद दलित महिलाओ ने अपनी उन्नति का कदम उठाया, और इस जागृति ने ही उन्हे आधुनिक दुनिया मे खडा किया। सामान्यत यह माना जाता है कि सस्कृति आदमी की देन है किन्तु उसके पीछे महिलाओ की प्रेरणा एव उसके रचनात्मक हाथ रहते हैं। भारतीय महिलाओ ने आज के समाज में अपना स्थान बनाने के लिये कठिन से कठिन परिस्थितियो का सामना किया है। हजारो सालो से चले आ रहे रीति-रिवाजो को तोड मरोड कर उसने आज के समाज मे अपना स्थान बनाया है। भारतीय महिलाओ का जीवन हमेशा से अनेक समस्याओ के बीच उलझा हुआ है। हमेशा उसकी जिन्दगी के दो पहलू रहे हैं, एक ओर उसको पवित्रता, आज्ञाकारिता, परिवार के प्रति कर्त्तव्य परायणता और उत्तरदायित्व, तो दूसरी ओर उसका अपना व्यक्तित्व और उसकी स्वतत्रता, जो अकसर नष्ट हो जाती है और उसे अपना जीवन व्यर्थ लगता है।

आधुनिक समाज मे चारो ओर महिला कल्याण-कार्यक्रमो की वर्षा सी हो रही है। यह कार्यक्रम कौन-कौन से है ? कैसे विकास हुआ आदि का परिचय प्राप्त करने के पहले हमे प्राचीन समय से चली आ रही महिलाओ की स्थिति के बारे मे जानना आवश्यक है।

प्राचीन काल

मनु स्मृति आदि सस्कृति के मूल्यवान ग्रथो मे महिलाओ के कर्त्तव्य और कानून के सम्बन्ध मे अनेक बातें कही गई हैं। ऋग्वेद मे भी महिला के कर्त्तव्य के बारे मे बहुत सी बातें दी गई है। जिस समय आर्य भारत मे आये थे उस समय मे महिलाओ को खूब सम्मान एव स्वतत्रता दी जाती थी। वे समाज के सभी कार्यो मे भाग लेती थीं। वे श्रद्धारूप थीं। उनके बिना हर मागलिक कार्य वर्जित था। उन्हे सभी धार्मिक और सामाजिक कार्यो में स्वतत्रता रहती थी। आर्य भारत मे बहुत कम सख्या में आये थे और उन्हे अपना परिवार बढाने की इच्छा थी। आर्य लोग भी लडके के जन्म को शुभ व लडकी के जन्म को उलझनो का कारण मानते थे। इस समय मे महिलाओ को उपनयन सस्कार द्वारा धार्मिक शिक्षा दी जाती थी। इस प्रकार महिलाए सभी धार्मिक एव सामाजिक कार्यो मे हिस्सा लेने की अधिकारिणी थीं।

मध्य काल

मध्ययुग मे महिलाओ की स्थिति अच्छी नही रही। मुहम्मद गोरी से लेकर अंग्रेजो तक सभी आक्रमणकारी अपने राज्य को सुदृढ बनाने के लिये प्रयत्नशील रहे। किसी ने महिलाओ के कल्याण के बारे मे सोचा भी नही। उनकी स्थिति गिरती गई। समाज बदलता गया, और महिलाओ की स्थिति अत्यन्त शोचनीय हो गई। पहले भारतीय महिलाओ ने स्वतत्र, सुखपूर्ण एव सम्मान से जीवन व्यतीत किया था परन्तु अब बाहर के आक्रमणो के कारण महिलाओ को हमेशा भय सा बना रहने लगा। फल-स्वरूप हमारे समाज मे असामाजिक कार्य, जैसे कि बाल विवाह, सतीप्रथा, बहुविवाह, पर्दाप्रथा आदि प्रवेश करते गये। इस काल मे महिलाओ को लगभग सभी अधिकारो से वचित कर दिया गया था। वह आर्थिक दृष्टि से भी पूरी तरह आश्रित थी। इस काल मे समाज सुधार और अन्य अच्छे विचार आदि का कोई महत्व नही रह गया था। मुगलकालीन सभ्यता ने महिला को पर्दे मे फिर बन्द कर भोग-विलास का साधन बना दिया।

पुनरुत्थानकाल

अग्रेजो के समय मे उन लोगो को धार्मिक, सामाजिक आदि कार्यो मे कोई रुचि नही रही। आर्थिक रीति से लोगो का शोषण किया जाता था। लघु उद्योगो को नष्ट कर दिया गया। खेती एव इन उद्योगो पर आश्रित रहने वाली महिलाओ को पैसो का भी अभाव महसूस होने लगा। अग्रेजो के काल मे लोगो की भावनाओ को थोडी प्रेरणा मिली और समाज सुधार की दिशा मे कुछ कदम उठाये गये। राजाराममोहनराय, जस्टिस रानाडे, स्वामी विवेकानद आदि समाज सुधारको ने महिलाओ की उन्नति के लिये अनेक कार्य किये और इसी समय सामाजिक सघर्ष की नीवे पडी और इन सुधारको के प्रयत्नो द्वारा सतीप्रथा, विधवा व पुनर्विवाह तथा बालविवाह आदि के लिये कानून बने और क्रमश १८२६, १८५६ और १६२६ मे पारित किये गये। इसी समय मे आर्य समाज, व ब्रह्मसमाज आदि की स्थापना हुई। सन् १६१७ मे पहली बार श्रीमती मार्गरेट कजिन द्वारा श्रीमती एनी बिसेन्ट के नेतृत्व मे Indian women's Organisation की स्थापना मद्रास मे की गई जिसके उद्देश्य महिलाओ के अधिकार लेना और उनकी आर्थिक एव सामाजिक स्थिति को ऊपर उठाना था। इसके बाद अनेक महिला-सगठनो की स्थापना की गई। गाधीजी को भारतीय महिलाओ मे बहुत दृढ विश्वास था। गाधीजी ने राजनीति के अतिरिक्त समाजसुधार, कल्याण शिक्षा और आर्थिक उन्नति के लिये भी प्रयत्न किये। उन्होने नई तालीम के माध्यम से समाज शिक्षा का प्रचार किया। समाजसुधारको मे सबसे पहले राजाराममोहन राय और सबसे बाद के गाधीजी थे जिन्होने धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक आदि सभी क्षेत्रो मे कार्य किया। इसके फलस्वरूप महिलाओ ने स्वतत्रता आन्दोलन मे भाग लिया तथा अनेक महत्वपूर्ण कार्य किये। अब महिलाए राजनीति मे भी सक्रिय भाग लेने लगी।

स्वातंत्र्य-युग

१६४७ मे भारत स्वतत्र हुआ और १६५० मे बनाये गये नये सविधान मे महिलाओ को समान अधिकार दिये गये। अनेक महिला सगठनो की स्थापना की गई तथा महिलाओ को शिक्षण,



प्रशिक्षण एव व्यक्तित्व के विकास के लिये पूर्ण अवसर प्रदान किये जाने लगे। महिलाओ ने भी महिलाओ की स्थिति को उठाने मे सहयोग दिया। महिलाओ की समस्याओ को देखते हुए अनेक कार्यक्रमो का विकास हुआ।

अनेक समस्याए

महिलाओ में शिक्षा सबंधी समस्या भी बहुत जटिल है। आजकल तो लगभग सभी वर्गों के लोग अपनी लडकियो को शिक्षा दिलवाते हैं, फिर भी हमारे समाज में आज भी लडकियो के लिये शिक्षा को अनिवार्य नही समझा जाता। सन् १९५६-५७ में National committee on women's education ने अपनी गणना के अनुसार बताया कि ३८.७% लडकियाँ ६-११ वर्ष के आयु समूह में स्कूल जाती हैं जबकि इस आयु समूह में स्कूल जाने वाले लडको की सख्या ७३.८%। हमारे यहा की आर्थिक और सामाजिक स्थिति ऐसी नही है कि ज्यादा से ज्यादा सख्या में महिलाए शिक्षा एव प्रशिक्षण कार्यक्रमो में भाग ले सकें। आजकल तो कई सस्थाए इस क्षेत्र मे कार्य कर रही है परन्तु इनका लाभ बहुत कम महिलाए उठा रही है। समाज शिक्षा के अन्तर्गत प्रौढ शिक्षा को भी काफी प्रोत्साहन मिला है। निराश्रित महिलाओ की शिक्षा सम्बन्धी समस्या भिन्न प्रकार की है। उनकी शिक्षा के साथ-साथ अनेक व्यक्तिगत समस्याए भी रहती है। उनके लिये ऐसी शिक्षा तथा प्रशिक्षण की व्यवस्था की जाती है कि वे अपनी आजीविका खुद कमा सकें।

हमारे देश मे महिलाओ की स्वास्थ्य सबधी समस्याए भी अनेक हैं। कठिन आर्थिक एव सामाजिक परिस्थितियो के कारण महिलाओ का स्वास्थ्य-स्तर दिनो दिन घटता ही चला जाता है। इसीलिये महिला कल्याण कार्यक्रमों के अन्तर्गत मातृत्व तथा बालस्वास्थ्य की ओर विशेष महत्व दिया गया है। हमारे यहा अभी तक बहुत सी महिलाए अज्ञान, शका तथा सकुचित विचार के चक्कर मे फस कर अपने जीवन तक से हाथ धो बैठती हैं। इसके अलावा अस्वस्थ वातावरण व गरीबी आदि के कारण बीमारिया ज्यादा फैलती है। बहुत सी महिलाए आर्थिक समस्या या अन्य कारणो से बाहर जाकर कार्य करती हैं जिससे भी पारिवारिक एव स्वास्थ्य सबधी समस्याए उत्पन्न होती है।

बहुत से लोगो का कहना है कि महिलाओ की जगह उनका घर है और बाहर की गतिविधियो मे भाग लेने से उनका जीवन बेकार हो जाता है। परन्तु अगर ऐसा समझ लिया जाय तो प्रगति सभव नही है। हमारे भूतपूर्व प्रधानमत्री श्री जवाहरलाल नेहरू ने कहा कि— "To awaken the people, it is woman who must be awaken, once she is on move, the family moves, the village moves, the nation moves"

आज का दायित्व

श्री जवाहरलाल नेहरू के ये उद्गार महिला के महत्व की कहानी कहते हैं। आधुनिक समाज मे कार्यरत महिला अगर अपने कार्यक्रम की योजनाओ को ठीक प्रकार कार्यान्वित करे तो सभी समस्याओ को

दूर किया जा सकता है । इस प्रकार महिलाएँ बाहर जाकर कार्य भी कर सकती है तथा सुखी पारिवारिक जीवन भी व्यतीत कर सकती है । प्राचीन समय मे महिलाए केवल गृहकार्य ही करती थी किन्तु आज के समाज मे उनकी जिम्मेदारिया बढ गई है । । आर्थिक अभाव व बढती मागो के कारण उन्हे बाहर जाकर भी कार्य करना पडता है । इसके अलावा पहले बच्चो को इतना अधिक महत्व नही दिया जाता था, केवल बच्चो के खिलाने पिलाने और कपडो की ही समस्या रहती थी । किन्तु आजकी महिलाओ के समक्ष उनके सामाजिक, शैक्षणिक एव व्यक्तिगत विकास की ओर भी पर्याप्त ध्यान देना भी एक बडा कर्तव्य बन गया है । इसके उपरान्त महिलाओ को समाज के प्रति भी कर्त्तव्य निभाना होता है । महिलाओ की जिम्मेदारिया कितनी बढ गई है , इसका अनुमान हम लगा सकते है ।

जिन महिलाओ को पारिवारिक जीवन नही मिल पाया है उनकी भी बहुत सी समस्याए रहती हैं । इन महिलाओ को आर्थिक, सामाजिक एव व्यक्तिगत कारणो से स्वस्थ वातावरण नही मिल पाता । ये महिलाए सामान्य जीवन व्यतीत नही कर सकती । इनमे निराश्रित महिलाए, जिनका नैतिक जीवन खतरे मे है, उपेक्षित महिलाए , आश्रित महिलाएँ आदि आती है । इन महिलाओ को बहुत ही कठिन समस्याओ का सामना करना पडता है । इन समस्याओ के समाधान के लिये हमारे यहा भारत मे बहुत सी सस्थाए शासकीय तथा अशासकीय, दोनो ही क्षेत्रो मे महत्वपूर्ण कार्य कर रही है । इन सस्थाओ को अत्यन्त ही सावधानीपूर्वक चलाने की आवश्यकता होती है । ऐसा समस्याएं उत्पन्न ही न हो, इसके लिये प्रयत्न होने चाहिये ।

विभिन्न संस्थाएँ

महिला कल्याण कार्यक्रमो ने महिलाओ के जीवनस्तर को ऊँचा उठाने मे काफी मदद की है । हमारे यहाँ लगभग दस हजार से भी ज्यादा सस्थाए इस क्षेत्र मे कार्य कर रही है । इन सस्थाओ मे से कुछ निम्नलिखित है ।

१ इडियन रेड क्रास सोसाइटी ।

२ कस्तूरबा गाधी नेशनल मेमोरियल फण्ड ।

३ नेशनल एसोसिएशन फोर सोशल एड मोरल हाईजिन ।

४ दी इडियन वुमन्स कानफरन्स् ।

५. नेशनल काउन्सिल आफ विमेन इन इडिया ।

६ नेशनल एसोसिएशन फार प्लान्ड पेरेन्ट हुड

सन् १९५३ मे समाज कल्याण सेवाओ को सगठित करने तथा आयोजना मे जनसहयोग को प्राप्त करने के उद्देश्य से १२ अगस्त को केन्द्रीय समाज कल्याण वोर्ड की स्थापना की गई । इसके बाद अगस्त १९५४ मे प्रत्येक राज्य मे राज्य समाज कल्याण सलाहकार वोर्ड की स्थापना की गई जिसका महत्त्वपूर्ण



उद्देश्य महिला तथा बाल कल्याण कार्यक्रमो का सगठन करना था । स्वास्थ्य मत्रालय द्वारा परिवार नियोजन, मातृत्व तथा बाल स्वास्थ्य की ओर ज्यादा ध्यान दिया गया । गृह मत्रालय ने सामाजिक और नैतिक स्वास्थ्य, भिक्षावृत्ति, सस्थाओ से निष्कासित किये गये व्यक्तियो के और महिलाओ के विकास के लिये कार्यक्रम बनाये गये । प्रथम पचवर्षीय योजना मे ५ करोड रुपये खर्च किये गये जिनमे महिला-कल्याण-कार्यक्रम भी सम्मिलित है । द्वितीय पचवर्षीय योजना मे इन कार्यक्रमो पर २९ करोड रुपये खर्च किये गये । इसमें से केन्द्रीय समाज कल्याण बोर्ड द्वारा महिला कल्याण कार्यक्रमो को आयोजित करने वाली सस्थाओ को अनुदान दिया गया । इसके उपरान्त समाज कल्याण बोर्ड द्वारा अनेक कार्य शुरु तथा प्रोत्साहित किये गये जैसे परिवार कल्याण परियोजनाए, उत्तर रक्षा कार्यक्रम तथा अन्य बालकल्याण कार्यक्रम । सन् १९५७ तक ये परियोजनाए सामुदायिक विकास योजनाओ के साथ थी जिनके द्वारा १०० गांवो में १४ से १७ केन्द्र रहते थे । इनमें ग्रामसेविका, मिडवाईफ आदि रहती थी । ये सेवाए सामुदायिक विकास के क्षेत्र मे केन्द्रीय समाज कल्याण बोर्ड के अन्तर्गत रहती थी । इसके अन्तगत जो गतिविधियाँ दी जाती थी उनमें बालवाडियाँ, झूलाघर, स्कूल मातृत्व सम्बन्धी सेवाएँ हस्तकला की कक्षाए, समाजशिक्षा, सास्कृतिक मनोरजन सम्बन्धी सुविधाएँ आदि हैं । इसके उपरान्त केन्द्रीय समाजकल्याण बोर्ड द्वारा महिला तथा बालकल्याण सम्बन्धी सेवाओ के लिये परियोजनाए शुरु की गई जिनका मुख्य उद्देश्य महिलाओ को समाज शिक्षा, हस्तकला और मनोरजन सम्बन्धी सुविधाएँ देना था ।

हमारे समाज मे महिलाओ की स्थिति उसके रीति-रिवाजो से बनती है । कानून द्वारा असामाजिक तत्वो को दूर कर महिलाओ को सुरक्षा तथा हक प्रदान करवाया जाता है । ऐसे बहुत से कानून हैं जैसे बालविवाह सतीप्रथा, विधवाविवाह, सम्पति में अधिकार आदि । इनके द्वारा महिला कल्याण कार्यक्रमो में सहायता मिलती है । इस प्रकार कानून द्वारा भी महिलाओ की प्रगति में सहायता मिलती है ।

हमारे देश में जैसा कि पहले कहा गया है चारो ओर महिला कल्याण कार्यक्रम की धूम सी मची किन्तु विशाल नारी समाज को देखते हुए ये सेवा कार्य पर्याप्त नही है । अभी भी इस दिशा में बहुत सा कार्य बाकी रह जाता है । ग्रामीण क्षेत्रो में भी महिलाओ के सगठनो की स्थापना की गई है परन्तु ये भी पर्याप्त नही है । एक ओर झोपडी में टिमटिमाता दीपक जलता है, दूसरी ओर हम चाँद पर पहुँच कर अपने आपको सफलता की चरम सीमा पर पहुँच गया मानते हैं । परन्तु इन दोनो में कितना अन्तर है । इसमे सामजस्य स्थापित करने में कितना समय लगेगा यह कोई नही बता सकता । यद्यपि सामाजिक परिवर्तन जल्दी सभव नही लेकिन समय के साथ ही इस राष्ट्र की महिला भी दिनोदिन प्रगति के पथ पर बढती जायगी ।

[१३३, मोतीलाल नेहरू नगर, उज्जैन]

नारी

नारी ! तुम केवल ममता हो
नर का दुख देख न सकती हो।
तुम उसकी व्यथा मिटाने को
हे देवि ! स्वयं मर मिटती हो ।।

तुम आप मिटाकर अपने को
नर मे नव जीवन भरती हो।
हे दीप-शिखे ! तुम जल–जलकर
भव को आलोकित करती हो ।।

तुम दुखिया को अपनी शीतल
छाया मे झट ले लेती हो।
ले करके उसकी व्यथा सभी
तुम अपना सुख दे देती हो ।।

—नरोत्तमदास स्वामी
कुलपति,
भारतीय विद्या मदिर,
बीकानेर



आधुनिक राजस्थान की प्रथम आदरास्पद महिला श्रीमती इन्दुबाला सुखाड़िया

—श्री दयाशंकर श्रोत्रिय

वहिन इन्दुवाला ने सभी प्रकार के प्रलोभनो को त्याज्य समझकर, सदैव मौन भाव से ऐसा ही जीवन स्वीकार किया, जिसमे दूसरो के लिये आदर्श था। स्वय के लिये तप से पूरित कठिन जीवन-साधना और वह भी मौन भाव से। एक राज्य की प्रथम शीर्षस्थ महिला के लिये इससे बडा और क्या दायित्व हो सकता था ? वहन इन्दुवाला इस युग–परीक्षा मे वरावर उत्तीर्ण होती गई और पूरे राज्य की जनता से श्रद्धा प्राप्त करती रही।

नारीरत्न श्रीमती इन्दुवाला सुखाडिया मेवाड भूमि की एक ऐसी व्यक्तित्व हैं, जिन्होने जीवन के विविध क्षेत्रो मे समाज को अपनी वहुमूल्य सेवाए दी हैं और जो सदैव समाज की क्रियाशील गतिविधियो का केन्द्र रही हैं।

नारी–जागरण, वाल सेवा, हरिजन–उत्थान, शिक्षा–प्रसार, सस्कृति, सगीत और सामाजिक चेतना के विविध क्षेत्रो मे उनके योगदान को कभी अस्वीकार नही किया जा सकता। शासन से प्राप्त पद की लोकप्रियता को उन्होने कभी स्वीकार नही किया। लेकिन राष्ट्रीयभावना, विकासोन्मुख और उदार विचार, गरीवो की सेवा, सरल और परिश्रमी जीवन तथा नारी-जागरण मे निष्ठा रखकर समाज सेवा के क्षेत्र मे उन्होने जो कार्य किये, उनके फलस्वरूप सामान्य जनजीवन मे उन्हें भारी प्रतिष्ठा सहज ही प्राप्त हो गई।

श्रीमती इन्दुवहिन सुखाडिया का जीवन एक अदम्य इच्छाशक्ति सबल आत्म विश्वास, अखड सक्रियता और सहृदय समाज सेवी जीवन का रहा है। उनके प्रसन्नचित्त, विनोदप्रिय, कठोर परिश्रम, सरल एव भव्य व्यक्तित्व और सेवा–वृत्ति की विशेषता ही हमे प्रोत्साहित करती है कि हम उनकी सफल जीवनयात्रा को इस कहानी को पढें।

इन्दुजी का जन्म उदयपुर के प्रसिद्ध सूर्यपोल मुहल्ले मे हुआ। सर्वश्री रमा वहिन की देखरेख मे उच्च साहित्यकार श्री उमाशकर द्विवेदी के सानिध्य मे आपका हिन्दी शिक्षण आरम हुआ। अध्ययन और काव्य–पाठ मे लीन सुश्री इन्दुजी हिन्दी की रुचिशील छात्रा मानी जाने लगी। श्री शभूलाल शर्मा से प्रेरणा पाकर आप गद्यलेख भी लिखने लगी, जो कई सामयिक पत्रो मे भी प्रकाशित होने लगे। हिन्दी साहित्य मे आपने कई परीक्षाए भी दी।

वचपन से ही आप गभीर, सरल, स्वाभिमानी, चतुर, तीक्ष्ण वुद्धि और सहृदय थी। सर्वसाधारण

के मुख से इन्दुजी को देखकर यही शब्द निकलते थे कि बालिका भाग्यशाली है। भविष्य उज्वल दीखता है। ऐसे व्यक्तियो का बडी सावधानी से लालन पालन होता है और आदर्श जीवन की कल्पना भी होती है।

वल्लभ सम्प्रदाय के सस्कारो मे मास्टर पुरुषोत्तमजी सुखाडिया के घर पर प्रसिद्ध तीर्थ नाथद्वारा मे एक बालक का जन्म हुआ जो महाराणा भूपाल कालेज और बाद मे बम्बई मे विद्युत इजीनियरिंग का अध्ययन समाप्त कर उदयपुर मे क्रान्तिकारी, समाज सुधारक और सर्वप्रिय के रूप मे आये, जो अन्तर्जातीय विवाह करना स्वीकार कर श्रीमती इन्दुजी के साथ विवाह सूत्र मे बधे। समाज मे चर्चाए हुई। रूढिग्रस्त व्यक्तियो ने अगुलिया उठाई। किन्तु निर्भय, दृढप्रतिज्ञ सुखाडिया दम्पति ने तनिक भी पर्वाह नही की। यह विवाह ११ जून १९३९ को ब्यावर (अजमेर) मे हुआ। सुखाडियाजी की आयु इस समय २३ वर्ष थी।

'होनहार विरवान के होत चीकने पात' की कहावत प्रत्यक्ष समक्ष थी। समाज ने इस दम्पति को स्नेह दिया, युवको ने आदर दिया, बुजुर्गो ने आशीर्वाद दिया और देखते ही देखते हरिजन सेवा, विद्यार्थी सगठन, महिला जागरण तथा राजनैतिक कार्यो मे यह सौभाग्यशाली जोडा लग गया। मेवाड में फैली सम्पूर्ण सस्थाए आप से योगदान लेने लगी। अपने सद्व्यवहार, उदारविचार, नि स्वार्थभाव, त्याग और निज के गुणो से सुखाडिया दम्पति को लोकप्रियता प्राप्त होती रही।

पति का संबल

बहन इन्दुबाला के सामने सबसे बडी परीक्षा उस समय आई, जब कि सन् १९४२ मे 'भारत छोडो आन्दोलन' के दौरान, मोहनलालजी सुखाडिया गिरफ्तार कर लिये गये। पीछे से पुलिस ने बहन इन्दुबाला को तग करना शुरू किया और यह दबाव देने लगी कि तुम अपने पति को अगर माफी मागने पर राजी करलो तो उन्हे छोड दिया जावे। आपने पुलिस से पति से मिलने की सुविधा चाही। आप जेल मे जाकर पति से मिली और जरासा एकान्त मिलते ही पति से यही कहा कि माफी मागने की जरूरत नही है, चाहे जो हो, मैं सब भुगत लू गी, लेकिन आप जिस दिशा में बढ चुके है, वहा से वापस लौटने की अब आवश्यकता नही है। सुखाडियाजी को अपनी चिरसगिनी के ये प्रेरणास्पद शब्द सुन कर बहुत राहत मिली।

बच्चो के पालन का प्रश्न था, घर मे आर्थिक स्थिति चिन्तनीय थी। आपने तुरन्त एक फैसला किया और एक स्कूल में अध्यापिका बन गई। और इस पद पर आप लगभग १० वर्षो तक रही।

इस दौरान में आपने मेवाड की स्त्रियो की सेवा का सार्वजनिक क्षेत्र भी अपना प्रिय विषय बना लिया। वे उनकी सम्मुन्नत अवस्था के स्वप्न ही रात दिन देखा करती थी। जो भी पति का अवशिष्ट राजनीतिक कार्य था, उसे भी पूरा करने की लगन लिये रही। परिवार की सेवा मे आपने सदैव किसी तरह की कमी न आने दी। कह सकते है कि सुखाडियाजी के जीवन की आप सबसे लोक प्रसिद्ध साहचर्य की मूर्ति बन गई थी इससे बडा आनन्द एक राजनीतिक कार्यकर्त्ता के लिये और क्या हो सकता था ?



सुगृहिणी

मेवाड के लोकप्रियता मत्रीमडल में सर्वप्रथम श्री सुखाडियाजी मत्री हुए, तब से आज तक केवल शास्त्री सरकार को छोड कर निरतर सुखाडियाजी मत्री मण्डल में मत्री और मुख्यमत्री के रूप में रहे। घर की व्यवस्था, परिवार की देख-रेख, कार्यकर्त्ताओ का जमाव, अतिथियो की सेवा इत्यादि कार्यो में सदा आप इन्दुजी को व्यस्त पायेंगे। स्वच्छता इनको बहुत पसन्द है। अव्यवस्था इनके जीवन में कभी नही हुई। एक सुगृहिणी की भाति सदा गृहस्थी की शोभा रही। मित्र प्राय कहा करते हैं कि सुखाडियाजी की सफलता की द्योतक श्रीमती इन्दुजी हैं। आपके २ पुत्र हैं, ५ कन्याए, जिनमें से ३ का विवाह हो चुका है।

परिश्रमी—

राजस्थान के मुख्यमत्री जी की कोठी में कोई चला जाय तो इन्दुजी को सदा गृहकार्य में व्यस्त पायेगा। कपडे धोना, सफाई करना, बच्चो को खेलाना, कोठार की देखरेख में आपका स्वय का श्रम देखेंगे।

इन दिनो भारत के सभी नारीरत्नो में आपने एक अद्वितीय जीवन-साधना शुरू की है। पिछले ५-७ वर्षो से आप कृषि कार्य में और गौपालन में अधिक रुचि लेने लगी हैं। प्रात ६ से साय ६-७ तक कृषि सम्बन्धित सम्पूर्ण कार्य आप साधारण महिला की भाति करती हैं। साग-सब्जी, फल-फूल अनाज और अगूरो के प्रयोग उच्चस्तर पर आप विशेषज्ञ की भाति करती हैं। बोआई, गुडाई, नीडाई, कटाई, सिंचाई इत्यादि का समय, साधन, मात्रा के रक्षण का आपको क्रियात्मक ज्ञान है। इसी कृषि उद्योग में आप हजारो रुपया प्रतिवर्ष कमाती हैं और देश के समक्ष श्रम साध्य जीवन का ज्वलन्त उदाहरण देती है।

कृषि-कार्य के साथ आप गौपालन का कार्य भी उत्तमतापूर्वक कर रही है। गौवश की सेवा का कार्य स्वय अपने हाथो से करती है। पशुओ के रोगो की जानकारी और चिकित्सा का भी आपको अच्छा ज्ञान है।

विशालहृदयता

श्री सुखाडिया के निकटवर्ती लोग जानते हैं कि वे राजस्थान के कोने कोने से परिचित है। राज्य-व्यापी यात्रा मे, जनसम्पर्क में, अभाव अभियोग सुनने राज्य की समस्याओ को गहराई से समझने और हल करने में बहन इन्दुबाला भी सहयात्रा करते हुए अपने भी १६-१७ घटे प्रतिदिन लगा देती है। पति के खान पान विश्राम, मनोरजन, स्वास्थ्य इत्यादि मे इन्दुजी बराबर ध्यान देती है। पति के प्रति अपना कर्त्तव्य निभाने में उन्हे हम सदा तत्पर देखेंगे। मूल बात यह है कि अब के राजस्थान के मुख्यमत्री निवास की विशाल हृदया माता है जो अपने राज्य की जनता के किसी भी तात्कालिक दुःख का निवारण करने में अपनी भरी पूरी सदाशयता लिये तत्पर रहती हैं।

धर्मनिष्ठ जीवन

पर्व, त्यौहार, रस्म, रिवाज सम्पूर्ण कार्य विधि विधान के साथ होते है, किन्तु देवी की पूजा दोनो वक्त चलती है। सुखाडिया-परिवार देवी का उपासक है। नवरात्रि के अन्तिम दिन चितौड दुर्ग पर कालिका-माता के प्रसिद्ध मन्दिर मे आप सुखाडिया दम्पति को देख सकते हैं।

सार्वजनिक जीवन

केन्द्रीय समाज कल्याण बोर्ड राजस्थान की आप बराबर ७-८ वर्ष तक अध्यक्षा रही। इस बीच राजस्थान की समाज सेवा में लगी हुई सस्थाओ को अधिक सहयोग प्रदान कर आपने कन्याओ, महिलाओ, रोगियो, निरक्षरो की चिरस्मरणीय सेवा की है।

इन्दु बहिन इन दिनो अध्यक्षा पद पर महिला मडल उदयपुर का योग्यतापूर्वक सचालन कर रही है, जिससे हजारो बहिने प्रतिदिन लाभान्वित हो रही है।

गरीब, अनाथ, अभावग्रस्त, बेकार और दुखी व्यक्तियो का आपके यहां सहायता प्राप्ति हेतु जमाव रहता है। जाति, वर्ग, सम्प्रदाय आदि से ऊपर उठकर, उदारतापूर्वक सहृयता से सबकी यथाशक्ति सहायता करती रहती हैं

पाकशास्त्री

अतिथियो के लिये भोजन बनाने और भोजन कराने मे श्रीमती सुखाडिया को विशेष आनन्द होता है। भिन्न २ प्रान्तो के भोजन बनाने मे आपकी श्रेष्ठ गति है। एक बार आपका आतिथ्य प्राप्त कर पुन सुस्वादु भोजन करने की इच्छा बनी रहती है।

श्रीमती इन्दुबालाजी कष्ट सहिष्णु, सरल, व्यवहार कुशल, मितव्ययी, सहृदय, परोपकारी, रोगसेवी, कुशाग्रबुद्धि, गंभीर, मितभाषी, भाग्यशाली, धैर्यवान, मनोवैज्ञानिक, अनुभवी, परिश्रमी, सुगृहिणी और सुयोग्य माता है।

उनसे मिलने पर श्रान्त और निराश मन को विश्वास और प्रेरणा मिलती है। अपने कर्मशील जीवन का विश्वास लेकर वे प्रसन्न है और समाज के लिये दायित्व पूर्ति की भूमिका मे वे कभी पीछे नही रही है।

राष्ट्रीय संकट में योगदान

बहन इन्दुबाला का जीवन धन्य है। आपने राष्ट्र के और राज्य के आसन्न सकटो के समय अधिक से अधिक काम किया। जब भारत पाक युद्ध हुआ तो आपने समाज कल्याण बोर्ड के सभी कार्यकर्ताओ और बहनो को गरम वस्त्र, आहार योग्य तैयारशुदा वस्तुओ का सग्रह और जवानो की स्त्रियो के लिये सिलाई की मशीने जुटाने मे लगा दिया और स्वय इस काम के सचालन मे अखण्ड-जागरण करने लगी। स्वय मशीन पर बैठ कर कपडे सीने मे आपने बहुत समय दिया।

अभी राजस्थान मे अकाल चल रहा है। आपने इस अवसर पर दीवाली के त्यौहार का भावभरा अवसर देख कर, एक दीवाली मेला लगाया और उसमे अकाल सहायता कोष के लिये काफी रुपया एकत्र किया।

पति के सग कठिन यात्रा मे सबसे आगे, लेकिन सार्वजनिक जीवन मे जहा नाम का सवाल आये वहा, सबसे पीछे, यही आपके जीवन का मूलमत्र है।



जागृत नारी !

—डा० उदयसिंह भटनागर

"उदीर्ध्वं जीवो असुर्न आगादप प्रागात्तम आ ज्योतिरेति ।
आरैक पन्था यातवे सूर्यायागन्म यत्र प्रतिरन्त आयु ।।" (ऋग्वेद १, ११३,१६)

सन् १९४० से १९५० का दशक उदयपुर-मेवाड-राजस्थान की सुप्त चेतना मे नव जागृति का स्फुरण अनुप्राणित कर जीवन-ज्योति को प्रज्वलित करने वाला दशक था। ऋग्वेद की उषा का यह मन्त्र जागृत नारी का उद्बोधन सा गूंज रहा था—हे प्राणियो ! उठो, जीवन-ज्योति प्रज्वलित हो रही है। अन्धकार को भेदता हुआ आलोक प्रसरित होकर हमे जागरण का सन्देश दे रहा है। अरुण उषा ने सूर्य के विकास के लिये मार्ग प्रशस्त कर दिया है। हे उषा ! जहा तुम ऐश्वर्य प्रदान करती हो, हम भी वहाँ जाने को कृत-सकल्प हो। हमारे पूर्वज भी वही गये हैं, हम भी वही जायेंगे और हमारे पीछे भी उषा से सप्रेरित ससृति इसी मार्ग का अनुसरण करेगी—

"ईयुष्टे ये पूर्वतरामपश्यन् व्युच्छन्तीमुषस मर्त्यास ।
अस्माभिरू नु प्रतिचक्ष्याभूदो ते यन्ति ये अपरीषु पश्यान् ।" (ऋग्वेद १,११३,११)

युग चेतना के इस उद्बोधन से हमारे हृदयो का अन्धकार दूर हुआ। हमारे हृदय कर्म की उत्साह पूर्ण उमग से अनुप्राणित हो उठे। जननी-जन्म-भूमि की सन्तानें उसको विदेशियो के फौलादी पजो से मुक्त करने के लिये प्रतिज्ञा-बद्ध होकर अपने को सक्षम बनाने को सलग्न होने लगी। उषा की अरुण रश्मियो से अनुरंजित और अनुप्राणित हृदय की भावनाए कर्म त्याग से अनुस्यूत होकर जन-मानस-प्रकृति मे उद्घोष करने लगी— 'जागो, उठो, आगे बढो !', क्योंकि—'माता भूमि पुत्रो अह पृथिव्या' (अथर्व० स० १२-१-१२) और उसकी मुक्ति के लिये— 'आरोहणमाक्रमण जीवतो जीवतोऽयनम्' (अथर्व० स० ५-३०-७) उठना और आगे बढना ही हमारा लक्ष्य है। अत उसके हित मे—सर्वभूत, सारे समाज के हित मे, जन कल्याण और राष्ट्र के उत्थान के लिये सौ वर्ष जीकर कर्म-यज्ञ मे सलग्न होकर (कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छत समा —यजु० स० ४०—२) आगे बढें। यदि हमारे दायें हाथ मे पुरुषार्थ है तो बायें हाथ मे सफलता निश्चित है—

'कृत मे दक्षिणे हस्ते जयो मे सव्य आहित' (अथर्व० स० ७-५२-८)।

हमारी इस प्रेरणा मे पवित्र लक्ष्य की प्राप्ति के लिये कर्म करने की इच्छा, साहस, उत्साह और धैर्य से वेष्टित आत्म शक्ति तो थी ही, परन्तु साथ ही आजादी के बाद जीवन के नव—विकास से सयुक्त

वर्त्तमान की भयंकर स्फीतियो मे सापेक्षित सन्तुलन बनाये रखने की क्षमता भी थी। यही कारण है कि हम आज भी जीवित हैं। हम जीना जानते हैं, क्योकि हम मृत्यु को पहचानते हैं।

"तमेव विद्वान् न विभाय मृत्यो" (अथर्व० सं० १०.८४०)।

सन् १९३९ मई मे अपना विद्याध्ययन समाप्त कर बनारस से उदयपुर लौटते समय रेल मे स्वर्गीय लोकनायक माणिक्यालालजी वर्मा से भेंट हो गई। उनका आदेश था कि मैं उदयपुर मे रह कर ही देश के लिये रचनात्मक कार्यों मे सक्रिय भाग लूँ। अत. अपनी रिसर्च योजना को स्थगित कर पुन. बनारस जाने का विचार छोड दिया और समाज के शैक्षणिक क्षेत्र मे प्रवेश किया। मेवाड के शिक्षको मे जागृति के लिये 'मेवाड शिक्षक सघ' की योजना बनाई। हिन्दी की सेवा के लिये, स्व० प० उमाशकर द्विवेदी हिन्दी साहित्य सम्मेलन की परीक्षाओ के लिये पिछले कई वर्षो से अपने घर पर रात्रिशाला चला रहे थे; मेरे एक परम मित्र जनार्दनराय नागर ने उसी रात्रिशाला को शहर मे लाकर हिन्दी विद्यापीठ के रूप मे परिणत किया; इसी रात्रिशाला को हमने हिन्दी माध्यम द्वारा शिक्षा के बहुमुखी विकास के लिये केन्द्र बनाया और इसकी योजना को व्यावहारिक रूप देने मे सलग्न हो गये। उसके भावी विकास की नींव डालते समय मेरे मन मे हर समय अथर्ववेद का यह सज्ञान सूक्त गूंजता रहता था—

"ज्यायस्वन्तश्चित्तिनो मा वि यौष्ट
सराधन्त. सधुराश्चरन्त ।
अन्योन्यस्मै वल्गु वदन्तो यात
समग्रास्थ सध्रीचीनान्॥५॥"

श्रेष्ठत्व हमारा लक्ष्य है। उसको सिद्ध करने के लिये हार्दिक प्रेम के साथ मिलकर संगठित होकर, प्रसन्नतापूर्वक सहयोग कर, मधुर वचनो द्वारा प्रेमालाप करते हुए जीवन मे आने वाले सघर्ष मे जुट जावें। भारी से भारी बोझ को खीचते हुए आगे बढ चलें। हमारा सबका एक ही मार्ग है। उसको तय करने के लिये हम सब एक मना हैं। परस्पर प्रेम और समान भाव से हम सब एक ही उद्देश्य और एक ही लक्ष्य मे अनुस्यूत हैं—

"सध्रीचीनान् व समनस कृण्णोम्येकश्नुष्टीन् सवनेन सहृद ॥७॥"

श्रद्धा और त्याग के भाव-सयोग से विद्यापीठ का जनता मे स्वागत हुआ और थोड़े ही दिनो मे यह उत्साहपूर्ण प्रगति के मार्ग पर आ लगी। उस समय किसी भी प्रकार की प्रगति—विशेषकर स्कूलो और कॉलेजो के युवको की प्रगति राजकीय अग्रेजी दृष्टि में सिर फिरे दिमागो की सिडिशियस प्रवृत्ति समझी जाती थी। अत पुलिस की 'काली-सूची' मे सस्था और सस्था के कार्यकर्त्ताओ का नाम आने से इस सस्था के विकास को और भी अधिक गति प्राप्त हुई। कर्त्तव्य प्रेरणा जीवन-लक्ष्य की ओर ले चली। 'बालाश्रम' नामक बाल-शिक्षण-सस्था के संस्थापक बाबू अर्जुनसिंह वर्मा और 'राजस्थान महिला विद्यालय' के सस्थापक काका साहब भेरूलालजी गेलडा ने अपनी-अपनी सस्थाओ मे सहयोग के लिये आदेश दिया—आदेश ही



कहूँगा क्योंकि बचपन से ही ये मेरे समाज-सेवा के प्रेरक रहे है। पुरुषों के प्रौढ शिक्षण के लिये रात्रि शालाएँ खोली गयी। स्त्री समाज में प्रौढ शिक्षण की समस्या सामने थी।

उस समय जब मैं प्रसाद की 'कामायनी' मे आये हुए श्रद्धा के, मनु के प्रति, इन वाक्यों के सन्दर्भ के लिये ऋग्वेद की छानबीन कर रहा था—

अकेले कैसे तुम असहाय
यजन कर सकते ? तुच्छ विचार !
तपस्वी ! आकर्षण से हीन
कर सके नही आत्म विस्तार।

तो ऋग्वेद के श्रद्धा सूक्त मे ही श्रद्धा की यह अभिव्यक्ति गूंज रही थी—

"श्रद्धयाग्नि समिध्यते श्रद्धया हूयते हवि।
श्रद्धां भगस्य मूर्द्धनि वचसा वेदयामसि ॥१॥

राष्ट्रयज्ञ की अग्नि श्रद्धा के द्वारा ही प्रज्वलित होती है, उसीके द्वारा उस यज्ञ मे आहुति दी जाती है। नारी रूप श्रद्धा के सहयोग से ही पुरुष अपना आत्म विस्तार कर पाते है, श्रद्धा के कारण ही पुरुष श्रद्धामय है—

"श्रद्धामयोऽय पुरुषो यच्छ्रद्ध स एव स" [गीता १७-३]

हम सब राष्ट्र के विकास मे सप्रयत्न सलग्न हैं। समाज के सामूहिक विकास मे स्त्री वर्ग कैसे अलग रह सकता है। 'जागृत नारी राष्ट्र की जीवन ज्योति हैं—इसी भाव की घोषणा करते हुए, एक दुबले-पतले श्रोत्रिय दम्पति ने अपने परिवारिक सुखो का त्याग कर स्त्री-शिक्षा और विकास के लिये 'महिला-मण्डल' की स्थापना करदी—दुबले-पतले शरीर मे कर्त्तव्यनिष्ठ आत्मा की सबल अभिव्यक्ति की प्रतीक इस श्रोत्रिय दम्पत्ति को मैंने श्रद्धा और प्रेम से सयुक्त जीवन ज्योति प्रज्वलित करने वाले प्रचेता के रूप मे देखा—स्वय जागृत और दूसरो को जगाने वाली—

'इच्छन्ति देवा सुन्वन्त न स्वप्नाय स्पृहयन्ति। (ऋक् स० ८ २ १८)।

जागृत नारी ही राष्ट्र को जाग्रत कर सकती है। 'जागृत नारी' के इस उद्घोष ने मुझे भी जागृत किया—जागरण ने प्राप्त वैभव सोने मे खो जाता है—

'मूल्यै जागरण अमूल्यै स्वप्नम्' (यजु० स० ३० १७)।

राष्ट्र के उत्थान मे नारी कैसे पीछे रह सकती है। नारी के जागरण, उत्थान और विकास का यज्ञ प्रारम्भ हुआ। इस यज्ञ की समिधा श्रद्धा रूपी नारी—श्रीमती कमला कुमारी श्रोत्रिय—ने प्रज्वलित की।

हमारा देश उस समय परतन्त्र था, पुरुष समाज रियासती परम्पराओ मे उलझा था, स्त्री समाज की तो हालत ही बुरी थी। घर से बाहर निकलने पर भी चलते-फिरते तम्बुओ से घिरी रहती थी। श्रोत्रिय दम्पति का यह उद्घोष उन तम्बुओ मे गूँज उठा। उनमे प्रगति की चिन्गारियाँ छूटने लगी। धीरे धीरे आवरण हटा, महिलाएँ तम्बुओ से बाहर निकलकर 'महिला-मण्डल' मे यज्ञ की समिधा जागृत करने लगी, और राष्ट्र की जीवन ज्योति प्रज्वलित हो उठी। 'महिला-मण्डल' प्रौढ, युवा और बालिकाएँ—सबकी प्रगति का केन्द्र बना। इस यज्ञ की होता बनी श्रोत्रिय दम्पत्ति। सस्था प्रगति करने लगी।

श्रोत्रिय दम्पति का परिचय उसी दिन से हुआ और धीरे धीरे वह एक घनिष्ट सम्बध मे बदल गया। तभी से मेरा सम्बन्ध श्रोत्रिय परिवार से बराबर बना हुआ है। कही कभी कोई स्थिति नही आयी, जहा किसी प्रकार का कोई मतभेद, विरोध या वैमनस्य उत्पन्न हुआ हो। चाहे व्यक्तिगत जीवन मे, चाहे सार्वजनिक जीवन मे, सबने हिलमिल कर, एक मना होकर, सहयोग के साथ काम किया। अनेक सस्थाएँ चली, कुछ बनी और कुछ बन कर मिट भी गई। यह एक स्वाभाविक बात है, मानव-प्रवृत्ति है कि जहाँ, व्यक्तिगत या सार्वजनिक, विकास होता है वहाँ परस्पर स्पर्द्धा की भावना जागृत हो ही जाती है और व्यक्तिनिष्ठ स्थिति उत्पन्न होकर ईर्ष्या भी जागृत हो जाती है। महत्त्वाकाक्षा की झोक मे व्यक्ति अपने उद्देश्य को भूल कर अपने अह को जगाने लगता है। मैं समझता हू कि एक सार्वजनिक कार्यकर्त्ता के लिये यह अह बडा घातक होता है। आत्मनिष्ठ और वस्तुनिष्ठ दोनो ही क्षेत्रो मे उसकी अहंपूर्ण असहिष्णुता अनिष्टकारी ईर्ष्या की अग्नि प्रज्वलित करती है और उसमे अनेक कार्यकर्त्ताओ का त्यागपूर्ण सहयोग भस्म हो जाता है। हमारे सार्वजनिक कार्यो मे भी ऐसी परिस्थितियाँ आयी हैं, और आना मानव-सहज प्रवृत्ति थी, जिसमे सार्वजनिक कार्यकर्त्ताओ के सहयोग की उपेक्षा हुई है और व्यक्तिनिष्ठ अह को बढावा मिलने से अहप्रिय नेतृत्व का विकास हुआ है। इन सबके बावजूद हमारी सस्थाओ ने विकास किया है, जिससे सार्वजनिक हित का विकास हुआ है—हमारी जीवन दृष्टि अधिक व्यापक, विस्तृत और गहन हुई है। हमारे जीवन मे आत्मविश्वास प्रबल हुआ है और हम आज की स्थिति मे अपने को स्थापित कर, अपने को और अधिक विकास की ओर अग्रसर करने मे सक्षम हुए हैं। यह सब श्रोत्रिय जैसे व्यक्तियो के कारण है। श्री दयाशकर श्रोत्रिय सार्वजनिक कार्यकर्त्ताओ मे ऐसे व्यक्ति रहे हैं जिनमे कार्य के प्रति गहन दृष्टि और उसके लिये सहयोग लेने और देने की तत्पर आकाक्षा रही है। व्यक्तिनिष्ठ अह को जागृत करने वाले ईर्ष्या और क्रोध को वश मे किये बिना जनता की सेवा नही होती। यह गुण मैंने श्रोत्रियजी मे देखा और उससे मैं काफी प्रभावित होकर रहा। उन्होने ऐसे ही गुणो से मुझे आकर्षित किया। तभी से 'महिला-मडल' के साथ मेरा सम्बन्ध बना हुआ है। आज उसको तीस वर्ष हो गये है। इन तीस वर्षो में इस सस्था ने राष्ट्र यज्ञ मे नारी को श्रद्धा के रूप मे प्रतिष्ठित कर उसके द्वारा जो जीवन-ज्योति जगायी है वह दिन-प्रतिदिन प्रकाशमान हो कर राष्ट्र-जीवन को तमस् से ज्योति की ओर, असत्य से सत्य की ओर तथा मृत्यु से अमृत की ओर ले जायगी—ये ही हमारी शुभ आकाक्षाएँ हैं।

आज अब मै पिछले तीस वर्षो के सार्वजनिक विकास के इतिहास—परिप्रेक्ष्य मे यह सस्मरण लिखने बैठा हू, तो सोचता हूँ उन सघर्ष-रत दिनो कि और तुलना करता हू, आज के दिनो से। मेरे सामने दोनो



स्थितियों के दो सघन चित्र उपस्थित हो जाते हैं । उनमें से क्या लूँ और क्या छोड़ूँ ? संस्मरण में क्या लिखूँ और क्या न लिखूँ ? बड़ा कठिन होता है, मेरे जैसे भावुक व्यक्ति के लिये, इस भावावेश में कुछ लिखना और कुछ छोड़ देना । सोचता हूँ और झिझकता हूँ कि संस्मरण कहीं प्रमाण पत्र या प्रशंसा पत्र हो जाय तो मेरी अश्रद्धा होगी । और यदि अपनी बातें भी उसमें जोड़ दूँ तो कहीं आत्मपरकता के दोष में दूषित हो जाय । क्योंकि संस्मरण व्यक्ति और व्यक्ति के बीच का आत्मपरक वस्तु निरीक्षण होता है । इस कारण अपनी बात उसमें आये बिना रहती ही नहीं है ।

श्रोत्रियजी को मैंने कई स्थितियों में देखा है और उन सबका यहां उल्लेख सम्भव नहीं है । पहले तो श्रीमती कमलाकुमारी श्रोत्रिय, श्री दयाशंकर श्रोत्रिय और 'महिला मण्डल' इन तीनों को अलग-अलग करके देखा ही नहीं जा सकता । एक बार महिला मण्डल में ही श्रीमती रामेश्वरी नेहरू ने मुझे अपनी व्यक्तिगत चर्चा में सार्वजनिक कार्य की रूप रेखा खींचते हुए कहा— 'बीज की तरह मिट्टी में घुल जाने पर ही महान फलदायक वृक्ष उत्पन्न होगा ।' यह कथन श्रोत्रिय दम्पत्ति पर आज कितना सत्य सिद्ध हुआ है । श्रोत्रिय दम्पत्ति का सम्पूर्ण जीवन 'महिला-मण्डल' के रूप में फलीभूत हो रहा है । इस वृक्ष में श्रोत्रिय दम्पत्ति बीज की तरह घुल गये हैं । और तीनों को अलग-अलग नहीं किया जा सकता ।

अति निकट की स्थिति और अति दूर की स्थिति--दोनों ही स्थितियां अन्तर्दृष्टि और बहिर्दृष्टि से परे की स्थितियां होती हैं । आँखों से अति दूर स्थिति को जिस प्रकार हम नहीं देख सकते, उसी प्रकार आँखों के अति निकट वस्तु भी नहीं दिखाई देती । ऐसी स्थिति में संस्मरण लिखते समय सभी बातें दूर की डूँगर होकर रेल के सुहावने दृश्यों के समान गतिशील होती जाती हैं और हम गतिशील होते हुए भी वहीं के वहीं रह जाते हैं । फिर भी प्रिय वस्तु के अभाव में भाव जागृत हो ही जाता है । श्रोत्रियजी से अति निकट और आज अति दूर होने पर भी हृदय की भाव-भूमि में अनेक प्रसंगों में उनकी कर्त्तव्यनिष्ठा, स्नेहपूर्ण व्यवहार दृष्टि और प्रोत्साहनदायिनी अन्तश्चेतना की सहज और स्वाभाविक अभिव्यक्ति का स्मरण हो आता है । साथ रहे, साथ काम किया, कहीं भी इस बात का आभास नहीं मिला कि हमारे साथ सहयोग करने वाला व्यक्ति हम से कहीं अधिक ऊँचाई पर बैठा हुआ, अहं के आसन से आदेश देने वाला कोई अधिकारी है । सरलता और सादगी के आवरण में वेष्ठित प्रतिभा सबके साथ एक ही धरातल पर सब के साथ स्नेह और सहज भाव के साथ प्रतिष्ठित होकर छोटे से छोटे और निम्न से निम्न स्तर का काम करने को तत्पर रहती थी, जिससे कई युवक और युवतियां कर्त्तव्य-प्रेरित हो उठते थे ।

मेवाड़ की जागृत नारी की अपनी परम्पराएँ हैं । उसने जीवन की प्रत्येक स्थिति में अपने आपको उसके अनुकूल और सक्षम बनाया है । इस भूमि की मिट्टी का एक-एक कण स्वाधीनता के राग से अनुरंजित और त्याग से अभिसिंचित है तथा आत्मगौरव से प्रतिभासित है । मातृ-भूमि के पराधीन होने पर वह अपने पुत्र से क्या आकांक्षा रखती है—

पुत्ते जाएँ कवण गुण, अवगुणु कवणु मुएण ।
जा बप्पी की भुंहडी, चम्पिज्जइ अवरेण ।।

क्योकि अपने पति के बलिदान को गौरव उसे पहले ही प्राप्त हो चुका है—

भल्ला हुआ जु मारिआ, बहिणी म्हारा कन्तु ।
लज्जेज्जन्तु वयसिअहु, जइ भग्गा घर एन्तु ।।

असख्य नारियो पुरुषो के साथ जीवन सग्राम मे विरोधी स्थितियो का सामना किया है। मुस्लिम आक्रमणो के युग में तो अनेक सती नारियो ने पद्मिनी के जौहर-आदर्श को अपनाया है—

खड्ग जीभ दहु निज देह, पिण नवि जाउ असुराँ गेह।
लाखाँ जमहट करिनइ बलु, पिणि नवि कोट थकी नाकलु ।। ४०६ पदमिणी चउपई ।।

भक्ति और प्रेम की आध्यात्मिक ज्योति मीराँ राजमहलो की सुख-विलासमयी उच्च मर्यादा का त्याकर, 'सन्तन ढिग बैठ-बैठ लोक-लाज खोई' और आध्यात्म के शून्य मन्दिर में गाने लगी— 'विरहिणी बैठी जागु जगत सब सोये री आली'। विलास-लोलुप राजाओ, धनलोलुप दौलतरावो और अमीरखानो की विपाक्त लालसा को कृष्णा ने विष पीकर बुझाते हुए मेवाड की रक्षा की। जागृत नारी समकालीन परिस्थितियो मे सदा जीवन ज्योति-जगाती रही है और समाज को जाग्रत करती रही है। ९ अगस्त सन् १९४२ को 'अग्रेजो भारत छोडो' की घोषणा सारे देश मे गूँज उठी। मेवाडी-राजस्थानी नारी ने भी सघर्ष की घोषणा की—

नही विदेशी के शासन मे
जीना भी स्वीकार हमे।
स्वाधीन सदा मरने पर मिलता
जीने का अधिकार हमे। (जौहर-ज्वाला)

'महिला-मण्डल' के कक्षो मे भी यह घोष प्रतिध्वनित हो उठा। इसमे प्रेरित-जागृत-जन—क्या स्त्री, युवक-युवतियाँ, यहाँ तक कि छोटे-छोटे बच्चे भी इन्कलाब का नारा लगाते हुए सघर्ष मे कूद पडे। देश आजाद हुआ। वह क्रान्ति की लहर थी। उस समय नारी स्वाधीनता सग्राम के लिये जागृत थी।

देश को आजाद हुए २३ वर्ष हो गये। हम अभी भी प्रगति की ओर गतिशील हैं। अभी भी हम पूर्णता की ओर अग्रसर होने जा रहे हैं। स्वाधीन देश की नारी उषा मे नयी पीढी राष्ट्र की बागडोर अपने हाथ मे सँभाल रही है। श्रोत्रिय दम्पत्ति द्वारा प्रज्वलित ज्योति 'महिला-मण्डल' को सँभालना है—

'अतारिष्म तमसस्पारमस्योषा उच्छन्ती वयुना कृणोति।
श्रिये छन्दो न स्मयते विभाति सुप्रतीका सौमनसायाजीग।" (ऋक् १,९२,६)



देश के महिला वर्ग को उषानुरंजित प्रगति के मार्ग पर उत्तरोत्तर चले जाना है— श्रोत्रिय दम्पत्ति का अभिनन्दन करते हुए—

"सहृदय सामनस्यमवि द्वेषकृणोमि व॰ ।
अन्योऽन्यमभिनवत वत्स जातमिवाघ्न्या ।।१।।
"अनुव्रत पितु पुत्रो मात्रा अवति सयत ।
जाया पत्ये मधुमती वाच वदतु शान्तिवाम् ।।२।।
"माभ्राता भ्रातर द्विक्षन् मा स्वासारमुत स्वसा ।
सम्यञ्च सव्रता भूत्वा वाच वदत भद्रया ।।३।। (अथर्व॰ स॰)

"उपस्थास्ते अनमीवा अयक्ष्मा अस्मभ्य सन्तु पृथिवि प्रसूता ।
दीर्घ न आयु प्रतिवुघ्यमाना वय तुभ्य बलिहृत स्याम ।। (६२-पृथ्वी सूक्त ६२।।)



बाल शिक्षण पद्धति की अग्रदूत मारीआ मान्टेसरी

—श्रीमती मोहनदेवी शर्मा

आप इस बात के बारे में अवश्य जागरूक होगे कि डॉ० मारीआ मॉन्तेस्सोरि के विचार और उनके द्वारा कार्यान्वित शिक्षा विधि के सिद्धान्त और उनका व्यवहारिक प्रयोग पिछले ६३ वर्षों से शिक्षा जगत को वहुत अधिक प्रभावित कर रहा है। यह प्रभाव अभी भी देश, काल और विस्तार में बढ रहा है। डॉ० मारीआ मॉन्तेस्सोरि द्वारा किये गये अद्वितीय व अग्रगामी कार्य को शिक्षा शास्त्री तथा मनोवैज्ञानिक वर्धमानत स्वीकार कर रहे है और दिन प्रतिदिन इसकी ओर अधिकाधिक ध्यान आकर्षित हो रहा है।

मारीआ मॉन्तेस्सोरि की देन केवल शिक्षा क्षेत्र तक ही सीमित नही है परन्तु वाल-कल्याण, सामाजिक उन्नति व शान्ति के लिये भी उन्होने महत्वपूर्ण योग दिया है। डॉ० मॉन्तेस्सोरि मन्दबुद्धि वालको की शिक्षा के क्षेत्र मे अग्रगामी थी, वे शैक्षणिक-मानव विज्ञान की निर्मात्री थी [रोम विश्वविद्यालय मे वे इस विज्ञान की पहली अध्यक्ष वनाई गई थी] परन्तु वाल-विकास और मनोविज्ञान के क्षेत्र मे खोजो के परिणाम स्वरूप वे ससार प्रसिद्ध हुई। इन खोजो के फलस्वरूप ही शिक्षा की मॉन्तेस्सोरि विधि का निर्माण हुआ। जिसका प्रयोग अव जन्म से लेकर प्रौढपन तक के लिये पांचो महाद्वीपो मे किया जा रहा है। उनके द्वारा स्थिर किये गए सिद्धान्तो का विकलांग बालको तथा प्रौढ–शिक्षा के लिये भी उपयोग किया जा रहा है।

वहुत से देशो की सरकारो ने उनको अलकृत करके, विश्वविद्यालयो ने सम्मानार्थ उपाधियाँ प्रदान करके और वैज्ञानिक परिषदो ने अपना सदस्य वना कर उनका वहुत अधिक सम्मान किया। उनका नाम नोवल शाँति पुरस्कार के लिये १९५० में वहुत सी सरकारो [जिनमें भारत सरकार भी थी] एव गैर सरकारी सगठनो व व्यक्तियो ने प्रस्तावित किया था।

उन्होने इस देश में लगभग दस वर्ष विताए। इस देश मे उनके कार्य का महात्मा गाँधी, रवीन्द्रनाथ ठाकुर और अन्य प्रमुख व्यक्तियो ने वहुत अधिक महत्व और वढा दिया। भारत सरकार ने शताब्दी वर्ष मे उनकी स्मृति मे विशेष डाक टिकिट निकाला है।

वे एसोसिएशन मॉन्तेस्सोरि इन्टरनेशनल की सस्थापक अध्यक्ष थी। यह एसोसिएशन अधिकारिक



रूप से उनके कार्य का प्रतिनिधित्व करता है और उनके विकास के लिये मार्गदर्शन दे रहा है और सम्बद्ध प्रशिक्षण संस्थाओं द्वारा मॉन्तेस्सोरि विधि में प्राधिकृत अन्तर्राष्ट्रीय उपाधि प्रदान करता है।

उनको श्रद्धांजलि प्रदान करने के लिये सारे संसार भर में मॉन्तेस्सोरियन्स और बाल-शिक्षा के क्षेत्र में कार्य कर रहे अन्य लोगों ने उनके जन्म शताब्दी वर्ष के ३१ अगस्त १९७० को स्मरणोत्सव के रूप में मनाया। इस उत्सव को दिल्ली में अखिल भारतीय स्तर पर मनाया गया। शिक्षा मन्त्रालय ने इन उत्सवों में विशेष रुचि दिखाई, एक डाक टिकिट भी निकाला और इस अवसर पर एक विशेष समारोह का आयोजन किया जिसमें मॉन्तेस्सोरि विकास साधनों, मॉन्तेस्सोरि बालघरों के बच्चों के कार्य तथा चित्रों की प्रदर्शनी भी लगाई।

[महिला मण्डल, उदयपुर]



स्वतंत्र भारत में शिक्षित महिलाओं का कार्य

—श्रीमती प्रतिभा पुरुषात्तम कुलकरणी, एम, एस सी.
असिस्टेन्ट लेक्चरर, विज्ञान सकाय, एम. एस. युनिवर्सिटी बड़ौदा

भारत ने केवल २१ वर्ष पूर्व स्वतंत्रता प्राप्त की और राष्ट्र अभी अपने शैशव मे है। महिलाए किसी राष्ट्र की प्रगति मे उल्लेखनीय योग देती हैं। अतः स्वतन्त्र भारत मे शिक्षित महिलाओ का महत्व है।

महिलाओ को विभिन्न क्षेत्रो मे सक्रिय भाग लेना होता है। किसी परिस्थिति से पलायन करने की अपेक्षा उसका दृढतापूर्वक सामना करना चाहिये। उस परिस्थिति का अध्ययन विभिन्न पहलुओं से किया जा सकता है, जिसके लिये व्यापक दृष्टिकोण की आवश्यकता है। शिक्षा का अर्थ उपाधियाँ धारण करना और नाम के पीछे कुछ अक्षर लगा लेना नही है। इसका अर्थ है बदलते हुए घटना-चक्र के अनुसार स्वय को उपयुक्त बनाना। नई पीढी को सुधारने के लिए महिलाओ को प्रयत्न करना चाहिये, जिसके कंधो पर राष्ट्र का भाग्य निर्भर है।

हमारे देश मे स्वतन्त्रता के पश्चात महिलाओ की शिक्षा मे अच्छी प्रगति हुई है। हमे जीवन के लगभग सभी मार्गों मे महिलाएं दिखाई पड़ती हैं, उदाहरणार्थ विश्वविद्यालयो मे, महाविद्यालयो मे अनुसन्धान शालाओ मे, चिकित्सालयो मे तथा सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्रो मे। महिला को स्वतन्त्रता और स्पष्टतापूर्वक अपना मत प्रकट करने और अपनी अन्तरात्मा के अनुसार कार्य करने में पर्याप्त दृढता रखनी चाहिये।

आजकल विज्ञान के क्षेत्र मे महिलाए गहरी दिलचस्पी ले रही हैं। विज्ञान अवलोकन की एक कला है। महिलाओ के लिए विज्ञान का अध्यापन मुख्यतया घर मे काम आने वाले उपकरणो से सम्बन्ध रखता है। ताकि वे विभिन्न उपकरणो के व्यावहारिक ज्ञान से सुसज्जित हो सकें। उन्हे विज्ञान का अध्ययन एक व्यवसाय या कम से कम एक हॉबी की भाँति ग्रहण करना चाहिये। भारत में नारियो को वैज्ञानिक ज्ञान कराने के लिए ग्रीष्म सस्थान चलाये जा सकते हैं जिनका उद्देश्य यह हो कि नई पीढी के समक्ष विज्ञान के आधार विस्तृत रूप से प्रस्तुत किये जा सकें।

स्वतन्त्र भारत मे शिक्षित नारियो का कार्य है नये अवसरो तथा नयी दिशाओ की खोज, जिनमें कि शैक्षणिक भावना–सहिष्णुता की परम्परा, सहनशीलता और पारस्परिक समझ-मानवता के आगे के लाभ के लिए सशक्त की जा सके।

"स्वतन्त्र भारत मे महिला–शिक्षा की प्रगति" से साभार।



बच्चों के प्रति माँ का कर्त्तव्य

—श्रीमती इन्दरा गांधी
प्रधान मन्त्री, भारत, नई दिल्ली

रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने लिखा था– प्रत्येक बालक परमात्मा का यह सन्देश लेकर आता है कि ईश्वर मनुष्य से हतोत्साह नही है। स्त्री के लिये मातृत्व ही सर्वोच्च पूर्णता है। ससार मे एक नया प्राणी लाना, उसकी लघुता को पूर्णत्व मे विकसित करना और उसके महान् भविष्य के स्वप्न सजोना आश्चर्य-जनक रूप से प्रशसनीय है।

राजनीतिक सघर्षों के कारण मेरा अपना बचपन अनियमित, एकान्त और अरक्षित रहा। इसी-लिये मैंने अपने बच्चो पर पूरा समय देने का पक्का निश्चय किया था। लेकिन जीवन अपनी इच्छाओ और आशाओ के अनुसार नही चला करता। जब भारत स्वतत्र हुआ तो मुझे एक नए जीवन मे झोक दिया गया और मुझे नई जिम्मेदारियो मे उलझना पड़ा। ये जिम्मेदारिया समय के साथ साथ बढती चली गई। पहले तो नई दिल्ली मे पिताजी के लिये एक घर स्थापित करना और उस घर के सामाजिक अनुग्रहो की पूर्ति करने का ही प्रश्न था। धीरे धीरे परिस्थितियो ने एव उस दिशा मे मेरी गहरी रुचि ने मुझे सार्वजनिक कार्यों मे अधिक सक्रिय बना दिया।

माँ के प्यार और देखभाल की बालक को उतनी ही आवश्यकता है जितनी किसी पौधे को सूर्य के प्रकाश और जल की। माँ को अपने बच्चो को सदैव प्राथमिकता देनी चाहिए क्योंकि वे माँ पर विशेष रूप से निर्भर रहते हैं। मेरी अब प्रमुख समस्या यह थी कि सार्वजनिक कर्तव्यो के साथ-साथ मे अपने घर और बच्चो के प्रति उत्तरदायित्वो का निर्वाह कैसे करू ?

जब राजीव और सजय बालक थे तो किसी और से उनकी सेवा कराना मुझे बिल्कुल नही भाता था और अधिकाधिक मै ही उनकी देखभाल करने का प्रयत्न करती थी। बाद मे जब वे स्कूल जाने लगे तो मै अपने कार्य उनके स्कूल के समय मे निपटा लेने का ध्यान रखती जिससे उनके स्कूल मे लौटने पर मुझे उनके लिये समय मिल जाए। एक बार जब सजय बिल्कुल छोटा था, उसका एक बाल सगा अपनी माँ के साथ हमारे घर आया। उसकी माँ ने, जो एक सामाजिक महिला थी, मेरे सार्वजनिक जीवन की चर्चा करते हुए कहा कि मैं अपने बेटो पर अधिक समय न दे पाती होऊगी। यह सुनकर सजय के दिल को चोट लगी और इसके पहले कि मै कोई उत्तर सोच पाती वह जल्दी से बोल पडा कि मेरी माँ बहुत से महत्वपूर्ण कार्य करती है, फिर भी वह, आप जितना अपने बच्चे के साथ खेलती हैं उस से अधिक समय



मेरे साथ खेलती है। ऐसा लगा कि उसके छोटे साथी ने सजग से अपनी माँ के ब्रिज खेलते रहने की शिकायत की थी।

फिर भी बच्चो के साथ अधिक समय बिताया जाए, यह उतना महत्वपूर्ण नही है जितना यह कि वह समय कैसे बिताया जाए ? जब किसी के पास सीमित समय ही हो तो वह स्वाभाविक रूप से उसका अधिकतम सदुपयोग करेगा। चाहे मैं कितनी भी व्यस्त या थकी हुई अथवा अस्वस्थ रही होऊं, मैंने फिर भी अपने बेटो के साथ खेलने अथवा पढने के लिये समय निकाला है। आदर्श उपस्थित करके ही सर्वश्रेष्ठ शिक्षा दी जा सकती है। बच्चो मे झूठ या बहानेबाजी को तुरन्त समझ लेने की असाधारण शक्ति होती है। यदि वे हमारा विश्वास करते है और आदर करते हैं तो वे अत्यन्त अल्पायु मे भी हमें सहयोग प्रदान करेंगे। मेरा बडा बेटा राजीव प्रसन्न, हसमुख बालक था। परन्तु तीन वर्ष की आयु मे उसके छोटे भाई के आने के साथ-साथ हमारे इलाहबाद के सुपरिचित वातावरण से स्थानातरण के कारण बहुत से परिवर्तनो ने उसे कुछ समय के लिये असन्तुलित कर दिया। मै स्वय स्वस्थ्य नही रहती थी। उसके क्रोध पर मुझे चिडचिडाहट होती थी। डाटने से स्थिति और भी बिगडती थी। अत मैंने युक्ति से काम लिया। मैने उसे बताया कि मुझे उससे बहुत स्नेह है परन्तु उसका चीखना मेरे स्नेह मे विघ्न डालता है। उसने पूछा कि मैं क्या करू ? मैं चिल्लाना नही चाहता फिर भी चीख अपने आप निकल जाती है। तब मैने उसे बताया कि पास ही बाग मे एक फव्वारा है, जब तुम चिल्लाना चाहो तो फव्वारे पर चले जाओ और वहा चिल्लाओ। इसके बाद कभी भी उसकी आंखो में आँसू दिखने पर मै धीरे से उससे फव्वारे का नाम ले देती और वह वहाँ से चला जाता। बाग मे उसका ध्यान आकर्षित करने की बहुत सी चीजें थी और वहा वह शीघ्र ही अपनी सारी परेशानी भूल जाता था।

जब लड़के बड़े हो गए तो वे आवासीय विद्यालय मे पढने गए। तभी मैने देश का दौरा करना आरभ किया। जब तक वे बाहर रहते मै व्यापक रूप से दौरा करती, ताकि अवकाश के दिनो मे उनके साथ रह सकूं। जब भी मै लडको से दूर होती, उन्हे सप्ताह मे कम से कम एक बार अवश्य पत्र लिखती जिससे उन्हे ख्याल रहे कि मै उसका ध्यान रखती हूँ।

सुख-दुख का नाम ही जीवन है। शिक्षा का व्यापक अर्थ मस्तिष्क और शरीर का ऐसा प्रशिक्षण है जो जीवन की बदलती हुई परिस्थितियो मे बिना बाधा डाले हुए समन्वय करने योग्य सन्तुलित व्यक्तित्व की उत्पत्ति कर सके। यह बात केवल विद्यालयो अथवा पुस्तकीय ज्ञान से प्राप्त नही हो सकती। इसका बहुत बड़ा भार माँ पर है। उसे बालक के स्व—अनुशासन और चरित्र विकास मे सहायता करनी चाहिये। वास्तविक प्यार केवल बालक की इच्छाऐं पूरी कर देने मे नही है बल्कि मा को आवश्यकतानुसार बालक को अनुशासित एव शिक्षित बनाने मे योग देने मे है।

राजीव १२ वर्ष का भी नही हुआ था कि उसे एक आपरेशन कराना पडा। डाक्टर उसे कहना चाहता था कि इसमे उसे कष्ट नही होगा। लेकिन मेरे विचार से यह बालक की समझदारी का अपमान



होता और इसलिये मैंने राजीव को बता दिया कि ऑपरेशन से आरम्भ के कुछ दिनो काफी कष्ट और असुविधा होगी। हाँ, यदि सम्भव होता तो मैं खुशी से उसके कष्टों को अपने ऊपर ले लेती, लेकिन चूँकि ऐसा सम्भव नहीं था अत. उसे ही यह कष्ट सहन करने को तैयार होना था। रोने-चिल्लाने से, सिवाय सिर-दर्द बढाने के और कोई अन्तर पडने वाला नही था। और ऑपरेशन में राजीव एक बार भी न चिल्लाया, न रोया, बल्कि मुस्कराते हुए उसने सारा दर्द सहन कर लिया। डाक्टर ने बताया कि उसे पहले बडे लोगो मे भी कभी इतना अच्छा बीमार नही मिला।

सार्वजनिक कार्यों के कारण मुझे कभी-कभी अपने बच्चो से दूर रहना पडता है परन्तु वे इसका कारण समझते हैं कि मैं भारत के सभी बच्चो का भविष्य सुन्दर बनाने के लिये प्रयत्नशील हूँ।

प्रधानमन्त्री निवास नई दिल्ली



महिलाएँ—उनके अधिकार और कर्त्तव्य

डॉ. (कुमारी) उषाकिरण मेहरा, एम. ए., पी-एच. डी
रीडर, अर्थशास्त्र विभाग, महिला विद्यालय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

संस्कृति के इतिहास के अध्ययन से प्रकट होता कि हम जितनी प्राचीनता की ओर जाते है, महिलाओं की सामान्य स्थिति उतनी ही अधिक असतोषजनक मिलती है। इस दृष्टि से हिन्दू सस्कृति सचमुच अनूठी है क्योकि यहां हमें इस सामान्य नियम का आश्चर्यजनक अपवाद मिलता है। जितने हम पीछे जाकर देखते हैं, अधिकाधिक क्षेत्रों मे नारियो की स्थिति उतनी ही सतोषप्रद पाते है, और उनमे शिक्षा का क्षेत्र सर्वाधिक उल्लेखनीय है। किन्तु यह विचित्र बात समझी जा सकती है जबकि हम यह स्मरण रखे कि प्राचीन भारत में शिक्षा का अभिप्राय था वैदिक शिक्षा और वह शिक्षा उन सभी को आवश्यक रूप से दी जाती थी जिनसे कि वैदिक यज्ञो मे भाग लेने की अपेक्षा की जाती थी, चाहे वे स्त्रियाँ हो अथवा पुरुष।

हमे बाद की शताब्दियो मे भारतीय नारियो की स्थिति मे निरन्तर अवनति भी दिखाई पड़ती है जो प्रबुद्ध जनमत द्वारा और न सदाशयी शासको द्वारा ही रोकी जासकी। अठारवी शताब्दी मे मुगल साम्राज्य के विघटन और उसके पश्चात देश भर मे राजनीतिक अवस्था ने भारतीय नारियो के कष्टो मे और वृद्धि की और परिणामस्वरूप जब ब्रिटिश युग का सूत्रपात हुआ तो भारत मे महिलाओ की स्थिति देश के इतिहास में सबसे बुरी थी। बाल विवाह हिन्दुओ की उच्च जातियो मे एक सामान्य नियम था और यह मुस्लिम आबादी के कुछ भागो मे भी फैल गया था। सती प्रथा व्याप्त थी और सिक्खो मे भी यह रीति हो गई थी। यद्यपि उनके गुरुओ द्वारा यह निषिद्ध थी। हिन्दू और मुस्लिम नारियो मे पर्दा प्रथा का कठोरता से पालन किया जाता था और नारी शिक्षा के बारे मे माना जाता था कि वह नैतिक खतरे का साधन है क्योकि साधारणतया केवल वैश्याए ही पढ-लिख सकती है।"

भारतीय सविधान 'सैद्धातिक दृष्टि से लैंगिक समानता' स्वीकार करता है, क्योकि यह बिना लिंग-भेद के सब नागरिको को सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक न्याय और विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म एव उपासना की स्वतत्रता तथा प्रतिष्ठा (Status) और अवसर की समानता की सुरक्षा प्रदान करता है।

लगिक समानता हमारे सविधान का एक घोषित उद्देश्य है और बाद के विधि-निर्माण के इतिहास से यह रुख प्रकट होता है। क्योकि दुनिया के कुछ ही देशो ने नारियो की युग-युग से चली आ रही कानूनी



निर्योग्यताओ का निराकरण इतने काम समय मे कर दिखाया है जितने में कि स्वतन्त्रता के पश्चात् भारत ने किया है। वयस्क मताधिकार का सिद्धान्त सविधान में निहित है और स्वतन्त्र भारत मे सर्व प्रथम होने वाले १६५२ के चुनाव मे भी इसका पूरा पालन किया गया था। भारत ने बिना लिंग भेद के वयस्क मताधिकार लागू किया और किसी भी पुरुष, स्त्री या नपुसक को वोट देने का अधिकार हो गया बशर्ते कि उस व्यक्ति ने न्यूनतम आयु पूरी करली हो। यह सही है कि ऐसे देश मे जहा अधिकाश जनसख्या निरक्षर है जिसे मतदाता की जिम्मेदारी का बहुत अस्पष्ट आभास है वहां वयस्क मताधिकार दे देने से लोकतत्र को होने वाली हानियो की एक लम्बी सूची बनाई जा सकती है फिर भी सामान्यतया महिलाएँ इस दृष्टि से पुरुषो की अपेक्षा हीन सिद्ध नही हुई हैं।

जब तक महिलाएँ शिक्षित न हो कोई भी समाज आगे नही बढ सकता। एक लडके को शिक्षा दें तो आप एक व्यक्ति को शिक्षित करते हैं। एक लडकी को शिक्षा दें तो आप एक पूरे परिवार को शिक्षित कर देते हैं। पूरा प्रयत्न होने पर भी स्त्री शिक्षा लडको की शिक्षा की अपेक्षा बहुत कम है। इस दृष्टि से प्रगतिशील और पिछडे राज्यो मे भी असमानता देखी जा सकती है।

पुरुषों के स्तर पर ही महिलाओ को भी बाहरी दुनिया का सामना और कर्त्तव्यो का वहन करना चाहिये। एक सुयोग्य प्रशासक, चिकित्सक, वकील या अभियान्त्रिक (इजिनीयर) होने के साथ ही उसे एक सुयोग्य माता भी बनाना हैं।

विश्वविद्यालय की शिक्षा प्राप्त करने वाली लडकियो की सख्या मे अत्यधिक वृद्धि हुई है। आत्म-निर्भर होने के साथ ही आवश्यकता के समय वे अपने परिवारो की आर्थिक सहायता भी कर रही हैं। अपने उद्यमी और परिश्रमी स्वभाव के कारण वे लडको से अधिक अच्छा काम कर रही हैं। योग्य और साहसी होने से वे परमाणु भौतिकी, अभियान्त्रिकी (इजिनीयरी), बिजली इत्यादि नये क्षेत्रो मे प्रयत्न करना चाहती हैं। औषध क्षेत्र मे भी वे मानस चिकित्सा (Neurology), नेत्र चिकित्सा (Opthalmology), दन्त चिकित्सा (Dentistry) आदि में विशेषज्ञता के लिये जाती हैं।

अब समय आगया है जब कि हमे नव युवतियों को दी जाने वाली शिक्षा को सुयोजित करने और योग्यता के मानदण्डो की ओर ध्यान देना चाहिये। प्राविधिक और विज्ञान-शिक्षा को बहुत महत्व देना चाहिये। हमें शिक्षित नवयुवतियो की आवश्यकता है जो इस दरिद्र देश को समृद्ध बनायें। मैं विज्ञान को अधिक महत्त्व देती हूँ, न केवल इसलिए कि विज्ञान का अर्थ ज्ञान है, बल्कि विज्ञान का यह भी अभिप्राय है कि वह देश के दृष्टिकोण को बदलने की एक रीति है। वैज्ञानिक शिक्षा के द्वारा ही हम अपने मस्तिष्क और मन की अभिरुचिया बदल सकते हैं। हम अब भी उन अंधविश्वासो और दुराग्रहो से पीड़ित हैं जो हमारी प्रगति में बाधक हैं। हम अपने देश मे समुदायवाद, गुटवाद और जातिवाद की बात करते हैं। किन्तु इससे सघर्ष का एक ही तरीका यह है कि हम अपनी नवयुवतियो को विज्ञान के अध्ययन में ऊपर उठावें ताकि वे वास्तविक सत्यता और समाज के विवेकयुक्त आधुनिक तथ्यपूर्ण मूल्यांकन की प्रकृति को समझना आरम्भ कर सकें।

सुरक्षा के बाद शिक्षा ही राष्ट्रीय क्षेत्रो में सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। हमे नारियो की शिक्षा मे योग्यता और सुयोजना (Consolidation) को प्राप्त करना चाहिये। हमने लम्बी छुट्टियो की इग्लैड वाली रीति का अनुसरण किया है। किन्तु अमेरिका के महाविद्यालयें और विश्वविद्यालयो में विद्यार्थी हमारे यहा की अपेक्षा बहुत अधिक परिश्रम करते हैं। छुट्टियो के कार्यक्रम जिनसे कि हमारी नवयुवतिया जाकर कुछ रचनात्मक चीज कर सके किसी पाठशालाओ या महाविद्यालय मे हमारी सर्वोत्तम प्रवृत्ति हो सकते हैं। सामाजिक कार्य, प्रौढ साक्षरता, स्वच्छता, स्वास्थ्य आदि के क्षेत्र मे बहुत काम किया जा सकता है। आखीरकार आपको रचनात्मक प्रवृत्ति से बढकर कोई चीज आनन्द नही देती। विद्यार्थियो के अवकाश का समुचित रूप से उपयोग होना चाहिये। यदि छात्र रचनात्मक कार्य मे व्यस्त रखे जायें तो अनुशासनहीनता के लिए न समय होगा न अवसर। हमारी शिक्षा प्रणाली मे पाठ्योतर प्रवृत्तियो को यथोचित महत्व देना चाहिये। छात्र अपनी रचनात्मक शक्ति का प्रदर्शन करने की स्वच्छदता अनुभव करते है।

विद्यार्थियो की अपने कार्यों मे अभिरुचि पैदा करने मे ही वास्तविक शिक्षा निहित है। शिक्षा सकट और कष्ट नहीं बन जानी चाहिये! यदि हमारी नवयुवतियां अपने काम मे मन लगावें और यह अनुभव करें कि जो वे कर रही हैं वह उपयोगी है तो स्त्री शिक्षा की समस्या बहुत सीमा तक हल हो जाती है।

हमे उस कार्य के सम्बन्ध में कोई सन्देह नहीं हो सकता जो कि स्वाधीनता के पश्चात अनेक योग्य भारतीय नारियो ने किया है। उन्होने भारत सरकार के अधीन उत्तरदायित्वपूर्ण पद सम्भालें हैं तथा अपने कठिन कर्त्तव्यो का चतुराई और शक्तिपूर्वक निर्वाह किया है। हमारे स्वाधीनता सग्राम के समय महिलाओ ने भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस मे जो महत्वपूर्ण भाग लिया वह स्वाधीनता के बाद उनके बड़ा काम आया! काग्रेस मे भी चार महिलाएं अध्यक्ष रही, १९१७ मे डॉ. एनी बीसेण्ट, १९२५ मे श्रीमती सरोजनी नायडू १९३३ मे नेली सेन गुप्ता और स्वतन्त्रता के पश्चात १९५९ मे श्रीमती इन्दिरा गाधी। महिलाओं ने देश में कुछ सर्वोच्च प्रशासकीय और राजनयिक पदो को भी सुशोभित किया है। तीन तो राज्यो मे गवर्नर रही है, श्रीमती सरोजनी नायडू, कुमारी पद्मजा नायडू और श्रीमती विजयालक्ष्मी पडित। महात्मा गाधी की एक सच्ची अनुयायी, राजकुमारी अमृतकौर ने सघीय मत्री परिषद् मे कई वर्षों तक स्वास्थ्य विभाग सम्भाला तो केरल की श्रीमती अन्नाचडी को हाईकोर्ट मे न्यायाधीश के पद पर नियुक्त की जाने वाली प्रथम महिला होने का सम्मान प्राप्त हुआ। हमारी प्रधान मंत्री, श्रीमती इन्दिरा गाधी, हमारी भावी पीढ़ियो के लिए उदाहरण प्रस्तुत कर रही है। मैं पक्का विश्वास करती हूँ कि अवसर मिलने पर नारियां जीवन के किसी भी क्षेत्र मे पुरुषो जैसा ही अच्छा कार्य कर सकती है। इतिहास और परिस्थितियो के कारण वे पिछड़ी रही हैं। सामाजिक शक्तियो ने उन्हे नीचा रखा है और हम उन शक्तियो मे बदलने का प्रयत्न कर रहे हैं। महिलाओ को अपने अलगाव से बाहर आना चाहिये और महसूस करना चाहिये कि उनके वे ही अधिकार हैं जो पुरुषो के। अधिकार होना एक बात है और इन अधिकारो के प्रयोग के लिए अवसर होना दूसरी बात। हमे उस दिवस की प्रतीक्षा है कि जब लगभग सभी क्षेत्रो मे और जीवन के सभी भागो मे महिलाए महती सफलता प्राप्त करेंगी।

श्री दयाशंकर श्रोत्रिय

अभिनन्दन समारोह परिशिष्टांक



महिला- मण्डल की सकल्पित भावना का प्रतीक-चिन्ह



वासाहव का दा साहव
को
आशीर्वाद



भावना

सत्य बनें
सुन्दर बनें,
बने शम्भू अवतार ।
शत आयु,
पूरी करें,
स्वस्थ करें करतार ।।

भ के सप्रेम प्रणाम
—नीमकुंज

परम श्रध्देय श्रीयुत दयाशंकरजी श्रोत्रिय
के
अभिनन्दन समारोह पर सप्रेम भेंट

अज्ञान खा चुका मात आज तो, जीत हुई है ज्ञान की ।
आओ हिलमिल हर्ष मनाले, शुभ वेला सम्मान की ।।
नगर उदयपुर पुण्य भूमि है, वीर प्रताप महान की ।
अंतिम दम तक साहस जिसमें, जीवन मे लड़ पायेगा ।।
विवेक धैर्य निश्चय जिसमे, वह आगे बढ़ पायेगा,
डींग हाकने वालो के क्या, बध जीत का सेहरा है,
जन सेवी कर्मठकर्त्ता का, सदा प्रफुल्लित चेहरा है,
श्रोत्रिय अभिनन्दन वेला, श्री दयाशंकर गुणवान की,
जिसने सच्ची सेवा की है, उसको फल मिल पाया है,
बीज कर्म के बोने से ही, सुरभि कमल खिल पाया है,
बाग लगाने से मुर्गो के, होता नही सवेरा है,
यहाँ किसी की नही बपौती, चार दिनो का डेरा है,
प्यार करेगी सृष्टि जिसमे, बू ना हैं अभिमान की ।
आओ हिल मिल हर्ष मनालें, शुभ वेला समान की ।।
आदि देव हैं शंकर जग मे, वह दानी–विज्ञानी है,
शिव जीवन मे अवगुण देखे, वह दानी–अज्ञानी है,
सुरा सुरो के संघर्षो मे, जिसने विष का पान किया,
भस्मासुर-रावण को जिसने, भक्ति वश वरदान दिया,
राम भक्त की जय जय गूंजे, जयश्री दयाशंकर गुण-निधान की ।
आज पूर्णिमा तुम्हे बधाई, वृद्धि सुख धन धान की ।।

—रामप्रसाद 'राम', सुजानगढ़

महिला—मण्डल के जल्से मे शरीक होकर मुझे बड़ा हर्ष हुआ। पहिले भी मैं यहां आ चुकी थी और इस सस्था के काम से परिचित हूँ। यह देखकर और यह सुनकर सतोष हुआ कि बराबर उन्नती हो रही हैं। मेरी शुभकामनाऐं है कि महिला—मण्डल का काम बढता रहे और इसके द्वारा राजस्थान की कन्याओं और महिलाओ को लाभ पहुँचे। भारत में बड़ी शिघ्रता से परिवर्तन हो रहे हैं और इस बात की अधिक आवश्यकता है कि हमारी बच्चिया अपनी नई जिम्मेदारियों के लिये तैयार रहे।

—विजया लक्ष्मी पडित

—❀—



रेल मन्त्री, भारत
नई दिल्ली
नवम्बर १३, १९७०

यह जानकर बडी प्रसन्नता हुई कि लोक सेवक श्री दयाशकर श्रोत्रिय को उनके ६८ वें जन्म दिवस पर सार्वजनिक रूप से अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट किया जा रहा है।

लोक सेवक के लिए यही सबसे बडे गौरव की बात होती है कि उसकी सेवाओं की जनता सराहना करे। श्रोत्रियजी का सार्वजनिक सम्मान उनकी सेवाओ की स्वीकृति का ही सूचक है।

मेरी हार्दिक कामना है कि श्री श्रोत्रियजी चिरायु हो जिससे उनकी त्यागमय सेवा परायणता से समाज लाभान्वित हो और अन्य लोगों को उनका अनुकरण करते हुए सेवा मार्ग अपनाने की प्रेरणा मिल सके।

—गुलजारीलाल नन्दा

—❀—



उप मन्त्री
पर्यटन तथा नगर विमानन मन्त्रालय
३-सफदरजग रोड
नई—दिल्ली

मुझे आमन्त्रित करने के लिए धन्यवाद। किन्तु खेद है कि उन दिनो संसद का सेशन होने के कारण मैं नही आ सकती। किसी अन्य समय यदि आप बुलाते हैं तो आने का प्रयत्न करूगी।

इस उत्सव की सफलता के लिये मैं अपनी शुभकामनायें भेजती हूँ।

—सरोजिनी महिषी



नई दिल्ली

यह जानकर हर्ष हुआ कि महिला-मण्डल उदयपुर की ओर से श्री दयाशकरजी श्रोत्रिय को अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट किया जा रहा है। जनता की नि.स्वार्थ सेवा में अपना सारा जीवन लगा देने वाले ऐसे सार्वजनिक व्यक्ति को सम्मान प्रदान करना उचित ही है। इससे दूसरो को भी समाज सेवा करने की प्रेरणा मिलती है। बच्चे देश के भावी कर्णधार होते हैं और उनका पालन-पोषण व शिक्षा-दिक्षा माताओ के ही द्वारा होती है अतः महिला समाज की उन्ननी मे ही देश का भविष्य निहित है। हमारी शुभकामनायें आपके साथ हैं।

—डॉ. करणीसिंह
M P., बीकानेर

—*—



इस्पात और भारी इन्जिनियरिंग मंत्री,
भारत
नई दिल्ली, ११ नवम्बर १९७०

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि महिला-मण्डल उदयपुर, द्वारा समारोह १० से १५ नवम्बर '७० तक मनाया जा रहा है। आपको इस कार्य मे पूर्ण सफलता मिले ऐसी मै मंगल कामना करता हूँ।

—बलिराम भगत

—*—



जयपुर,
दिनाक ९ नवम्बर, १९७०

आपके कृपा पत्र के लिये आभारी हूँ। सूचित करते प्रसन्नता है कि प्रभू कृपा और आप जैसे सहृदय मित्रो की शुभकामनाओ एवं सद्भावनाओ के बल बीमारी की जकड़ से निकलता स्वास्थ लाभ की ओर अग्रसर हूँ। रूग्णता के कारण समारोह मे सम्मिलित होने मे असमर्थ हूँ—क्षमा करें। यो इस युग में आर्थिक सकट के कारण सस्थाओं का सचालन एक साधना है, किन्तु आपके श्रम एवं तपस्या के कारण इस सस्था का भविष्य उज्जवल है—एवं उत्तरोत्तर आपके मार्ग दर्शन से महिला-मण्डल प्रगति करता रहेगा।

मै उत्सव की सफलता की कामना करता हूँ।

—निरंजननाथ आचार्य

नई दिल्ली–१
११ नवम्बर, १९७०

श्रोत्रिय अभिनन्दन समारोह का पत्र मिला। धन्यवाद। खेद है पूर्व-निश्चित कार्यक्रम के कारण इसमें सम्मिलित न हो सकूंगा।

श्री दयाशंकरजी श्रोत्रिय का नारी-शिक्षा और समाज सेवा में बहुत ऊंचा स्थान है। पूज्य बापू के इन रचनात्मक कार्यों को उन्होंने बडे उत्साह से किया है। वे कर्मठ नेता हैं। भगवान उन्हें दीर्घायु करें।

समारोह की सफलता की कामना करता हूँ।

—शान्तिप्रसाद जैन

—•—

गांधी भवन, यशवन्त रोड,
इन्दौर–४

श्री दयाशंकरजी श्रोत्रिय के अभिनन्दन एवं स्वागत समारोह श्रीमती विजयालक्ष्मी पण्डित की अध्यक्षता मे मनाये जाने सम्बन्धी निमन्त्रण प्राप्त हुआ धन्यवाद।

उदयपुर महिला-मण्डल के द्वारा वर्षों से की गई सेवायें एक विशेष महत्त्व रखती है, उसमे हजारों महिलाओ ने इस महिला-मण्डल से योग्यता प्राप्त कर सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक कार्य में योगदान दिया है। राजस्थान के पुराने कार्यकर्त्ता श्री दयाशंकर-श्रोत्रिय का इन कार्यों के लिये जितना भी सम्मान किया जावे वह थोडा ही होगा।

मेरी ओर से उन्हें बहुत बहुत बधाई।

—कन्हैयालाल खादीवाला

—•—

New Delhi,
11 November, 1970

Minister of Food and Agriculture is thankful for your kind invtaition to attend the Function of Shri Daya Shankar Shrotriya 36th Annual Function of Mahila-Mandal at Udaipur. from 10th to 15 November, 1970 but regrets his inability to do so due to heavy Pre occupation. He wishes the function all success

with good wishes,

—*Abdul Hakim*

जयपुर ६
१० नवम्बर, १९७०

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि दिनाक १३-११-७० को भाई श्री दयाशकर जी श्रोत्रिय की सार्वजनिक सेवाओ के उपलक्ष मे अभिनन्दन ग्रन्थ का विमोचन हो रहा है। इस अवसर पर भाई श्रोत्रियजी जैसे समाज सेवी के लिये मेरी शुभकामनायें हमेशा रही है। इस अवसर पर मै यह कहूँगा कि 'श्री श्रोत्रियजी अपने आप मे मेवाड़ की एक जीवित सस्था है जिसमे अपना सम्पूर्ण जीवन नारी जागरण के पुनित कार्य मे अर्पित कर रखा है।' उनकी समाज सेवाए, योग्यतम् व्यवस्था, शैक्षणिक तथा सामाजिक चेतना के कार्य उन सभी को प्रेरणास्पद है जो कि समाज सेवा के क्षेत्र में लगे हुए है।

मैं श्रोत्रिय जी की दिर्घायु होने की कामना करते हुए अभिनदन ग्रन्थ समारोह की सफलता चाहता हूं तथा अभिनन्दन ग्रन्थ समिति की भी प्रशसा किये बिना नही रहता कि इस आवश्यक समारोह का आयोजन किया।

मुझे इस समारोह मे सम्मिलित होते अत्यन्त प्रसन्नता होती यदि मेरा पूर्व मे निश्चित प्रवास कार्यक्रम नही होता।

सद्भावना के साथ।

—भोगीलाल पड्या

—•—

पुसा निवास, भीलवाडा
९–११–१९७०

१३ नवम्बर को होने वाले अभिनन्दन समारोह तथा महिला-मण्डल के वार्षिकोत्सव के लिये आपका निमन्त्रण मिला जिसके लिये मै आभारी हूं। इस अवसर पर मै अवश्य उपस्थित होना चाहता था लेकिन पूर्व निश्चित कार्यक्रम मे परिवर्तन सम्भव नही होने से क्षमा प्रार्थी हू।

भाई श्री दयाशंकर जी श्रोत्रिय से मेरा परिचय उनकी सेवा भावना के माध्यम से ही हुआ था और तब से मेरा सम्पर्क उनसे बराबर बना हुआ है। यह उचित ही है कि उनकी सेवाओ का समाज मूल्याकन कर उनको समादृत करें। समारोह की सफलता के लिये मेरी शुभ कामनायें करें। भाई श्री दयाशंकर जी के सेवा मय दीर्घ जीवन की कामना करता हूं।

—दामोदरलाल मानसिंहका

कलकत्ता—१
११ नवम्बर १९७०

श्री दयाशकर श्रोत्रिय नागरिक—अभिनन्दन समिति की ओर से आयोजित श्रोत्रिय अभिनन्दन समारोह मे सम्मिलित होने के लिये निमन्त्रण पत्र आज मिला। धन्यवाद। इस समारोह में समयाभाव के कारण सम्मिलित न हो सकूंगा, इस पर मुझे खेद है।

श्री श्रोत्रियजी ने जो समाज-सेवा का उदाहरण प्रस्तुत किया है, वह सदैव स्वर्ण-अक्षरों में अंकित रहेगा।

मेरी शुभ कामना इस पुण्य अवसर पर स्वीकार करें।

—सुरजमल कनोई

—*—

२२७, कालबादेवी रोड, बम्बई-२
११ नवम्बर १९७०

आपका निमन्त्रण पत्र मिला। हमारा मन तो आपके अभिनन्दन समारोह में उपस्थित होने मे बहुत उत्सुक है लेकिन कुछ परिस्थितियो के कारण हम पहुँच नही सकेगें। हमारी शुभ कामनायें श्रोत्रिय अभिनन्दन समारोह के साथ है। शेष कुशल। धन्यवाद।

—मदनलाल रुंगा, परमेश्वर श्री० बगड़का

—*—

बम्बई २५ डी० डी०
१४ नवम्बर, १९७०

आपके सम्मान मे 'नागरिक अभिनन्दन समारोह' का आमत्रण-पत्र आज मिला। बहुत खुशी हुई कि आपकी सेवाओ को देखते हुए नगर वासियो ने आपका अभिनन्दन करने का निश्चय किया है। इस शुभ अवसर पर मेरी हार्दिक बधाई स्वीकार करें। आशा है आप भविष्य में भी इसी प्रकार समाज और देश की सेवा करते रहेंगे।

—रामप्रसाद पोद्दार

२२, वैराठी कालोनी नं. १,
इन्दौर–४

आपकी सतत् सेवाओं का मूल्यांकन 'अभिनन्दन-ग्रन्थ-भेट करके सम्मान किया जा रहा है" इसका हमे गौरव है ।

इस शुभ अवसर पर मेरी शुभकामनायें सादर समर्पित है ।

ईश्वर सपरिवार आपको चिरायु करें ।

—कजोड़ीमल आचार्य

—*—

कलकत्ता

उत्सव की सफलता चाहता हूं तथा श्रोत्रिय जी के दीर्घायू की की कामना करता हूं ।

—भँवरलाल घुप्या

—*—

आज मैंने महिला–मण्डल को देखा है । देखकर बहुत बड़ी खुशी हुई । राजस्थान मे यह शिक्षा के लिये बहु उपयोगी कार्य कर रहा है. मकानो को महत्व नही देकर शिक्षा को महत्व दे रहे हैं जो वास्तव में यही होना चाहिये । मेरी शुभ कामना इसके साथ हैं ।

—श्री गोपाल साबू
एम० पी०

—*—

अहमदाबाद

श्री दयाशंकर भाई श्रोत्रिय ना हाथ अगेनों तमारो पत्र-मलायो छे। श्री दयाशंकर भाई श्रोत्रिय श्रे श्रेमनुं समग्र जीवन बेनोनी उन्नती ना कार्य मा व्यतित कर्यु छे अने श्रे जीवन विषेनी माहिती आपनारो ग्रंथ नारी प्रवृत्तिना विकास मां घणो उपयोगी थई पड़से, श्रेम मानु छु। तमारू आ कार्य सर्वांशे सफल थाय श्रेवी प्रार्थना छे।

—ले. शंकरलाल बेंकरना, अनसुया बेन साराभाई

जो आपको सम्मान प्राप्त हो रहा है उसकी शुभ कामनायें स्वीकारें।

—ऊंकारलाल शास्त्री, सत्यवती शास्त्री, मेघराज सेवक,
कलकत्ता

—

इस समारोह की सफलता की कामना करता हूं।

—गोस्वामी, जनरल मेनेजर, बिड़ला सिमेन्ट फैक्ट्री,
चित्तौड़गढ़

—

इस समारोह की सफलता की कामना करता हू।

—जयदेव सिंघानिया, बम्बई

—

समारोह की शुभकामनायें चाहता हूं, हवाई जहाज की असुविधा से समय पर न पहुच पा रहा हूं।

—चम्पालाल वास्टवे, पूना

—

आपकी ५० वर्ष की सेवाओं के प्रति मेरी हार्दिक शुभकामनायें प्रस्तुत है। ईश्वर आपको १०० वर्ष की आयु प्रदान करें।

—चितरमल गोयल जयपुर

—

आपने जो विशिष्ठता प्राप्त की है उसके लिये हार्दिक शुभकामनायें स्वीकारें।

—सगम मेटल इन्डस्ट्रीज, बम्बई

—

श्री दयाशकर श्रोत्रिय की दिर्घायु की कामना करता हूं जिससे राष्ट्र की सेवा होती रहे।

—श्रीकृष्णचन्द्र अग्रवाल, सचालक, दैनिक हिन्दी विश्वमित्र
कलकत्ता

—

उत्सव की शुभकामना चाहता हूँ।

—रामकुमार भुवालका, कलकत्ता

—

श्री दयाशंकर श्रोत्रिय अभिनन्दन ग्रन्थ समारोह की शुभकामनायें चाहता हूं।

—रेड्डी, राज्यपाल, म० प्र०

आपके नागरिक अभिनन्दन पर बधाई।

—मदनलाल तिवारी, कानपुर

—

अभिनन्दन समारोह की शुभकामनाये स्वीकार करें साथ ही हम श्रीदयाशकर श्रोत्रिय की दीर्घायु की कामना करते है।

—सत्यनारायण पडित इन्जिनियर, अतुल प्रोडक्ट, अतुल (गुजरात)

—

इस समारोह के खुशी के अवसर पर हम हार्दिक अभिनन्दन करते हुए ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि आपको अधिक से अधिक खुशी प्रदान करें।

—पं० रामनारायण, चन्द्रगुप्त भारतीय, दातारसिंह, सुखेड़ा

—

पूर्व निर्धारित अनिवार्य कार्य के कारण आने में असमर्थ हू इसका मुझे दुख है इस समारोह की पूर्ण सफलता के लिये मेरी शुभकामनायें अर्पित करता हूँ।

—शिवचरण माथुर, शिक्षा मंत्री, राज०

—

आपने जो सम्मान प्राप्त किया है उसके लिये मेरी शुभ कामनायें अर्पित है।

—जगमोहन जोशी, इन्जिनियर, बर्मा शेल, बम्बई

—

इस समारोह की पूर्ण सफलता की कामना करता हूं।

—रामचन्द्र सिंघी, चार्टर्ड अकाउन्टेन्ट, कलकत्ता

—

मेरी शुभ कामनायें आदरणीय श्रोत्रिय के प्रति है। उनके द्वारा मातृ-जाति की सेवा मे उत्तरोत्तर वृद्धि होती रहे और वह पल्लवित एवम् पुष्पित होती रहे, यही मंगलमय कामना है।

—बलराम मिश्र, वृन्दावन

—

आपके निमत्रण के लिये हृदय से आभारी हू। अनुपस्थिति के लिये क्षमा प्रार्थी हूँ। श्रोत्रियजी के अभिनन्दन तथा महिला-मण्डल की उत्तरोत्तर उन्नति के लिये अपनी शुभकामनायें प्रेषित करता हूं।

—भक्तदर्शन, शिक्षा राज्यमंत्री, भारत सरकार, दिल्ली

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई है कि श्री दयाशकर श्रोत्रिय को अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट किया जा रहा है। उन्होंने अपने क्षेत्र में नारी जगत की शिक्षा के लिये जो प्रयास किये हैं, वे अत्यन्त सराहनीय है।

यह तो निर्विवाद सत्य है कि राष्ट्र की सर्वाङ्गीण उन्नति के लिये नारी-जगत का शिक्षित होना परम आवश्यक है। समाज के उत्थान के लिये जब तक जनता का भी पूर्ण सहयोग सरकार को न मिले तब तक कोई भी कार्य सम्पन्न होना कठिन हो जाता है। श्रोत्रियजी जैसे समाज सेवियो ने महिला-मण्डल की जो सेवा की, वह औरो के लिये भी प्रेरणा बने, यह मेरी शुभकामना है।

—बरकतुल्ला खाँ, विधि एव विद्युत मत्री, राजस्थान, जयपुर

—

श्रोत्रियजी के अभिनन्दन की मुझे प्रसन्नता है। उनके त्यागमय, परिश्रमी जीवन से मै वर्षों से परिचित हूँ। अभिनन्दन समारोह की सफलता की शुभकामनायें प्रेषित है।

—जयदेव सिघानिया, एडवोकेट, सदस्य म्युनिसिपल कारपोरेशन
और चेयरमेन लॉ, रेवेन्यू कमेटी ग्रेटर, बम्बई

—

श्री दयाशकरजी श्रोत्रिय ने नारी जागृति एव बौद्धिक अध्ययन के क्षेत्र मे जो निरवधि योगदान दिया है, वह वस्तुत सुन्दर, समीचीन और सराहनीय है। अभिनन्दन समारोह की हार्दिक कामना करता हू।

—व्रजभूषणलाल गोस्वामी, कांकरोली

—

श्री श्रोत्रियजी की सेवाओ को समाज के समक्ष प्रस्तुत करने तथा उनके आलोक से नवीन प्रेरणा देने का मञ्जुम उपक्रम है। अभिनन्दन समारोह की पूर्ण सफलता की शुभ कामनायें अर्पित करता हू।

—डॉ० रूद्रदेव त्रिपाठी, एम ए.,पी.एच डी, दिल्ली

—

श्रोत्रियजी कर्मठ एव गहनधूनी महानुभाव है। नारी के उत्थान मे इन्होने सम्पूर्ण जीवन ही समर्पित किया है। मैं प्राणपण से इस शुभ कार्य मे सदैव साथ हू। हार्दिक शुभकामनायें।

—मदनकुमार, सम्पादक, कुमार, मन्दसौर

यह जानकर मुझे सचमुच खुशी हुई है कि श्री दयाशकरजी श्रोत्रिय के सघर्ष और साधनामय काल के ६९ वर्ष पूर्ण होने पर उनके सम्मान मे अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट किया जा रहा है।

मुझे इसकी प्रसन्नता है कि निर्माण के युग मे श्रोत्रियजी ने नारी जाती के उत्थान हेतु सराहनीय कार्य किया है।

मै अपनी शुभकामनायें प्रेषित करता हूं।

—रायबहादुर गंगा विष्णु सवाईका जे०पी०
चेयरमेन सवाई का ग्रुफ आफ इन्डस्ट्रीज, कलकत्ता

समारोह पर शुभ कामनायें स्वीकारियेगा।

—राव हरिसिंह, उपमत्री कृषि, राजस्थान, जयपुर





हवाई अड्डे पर श्रीमती विजयालक्ष्मी पंडित का मंगल कलश से
स्वागत करती हुई महिला-मण्डल की छात्राएँ :

महिला-मण्डल उदयपुर के ३६ वें वार्षिकोत्सव के प्रमुख समारोह की अध्यक्षाजी श्रीमती विजयालक्ष्मी पण्डित संस्था की प्रधान मन्त्रिणी और आचार्या के साथ पण्डाल की ओर





उदयपुर हवाई अड्डे पर महिला–मण्डल की मुख्य अतिथि श्रीमती पण्डित का स्वागत



मालवा के प्रसिद्ध कवि श्री मदनकुमार चौबे (मन्दसौर)
महिला–मण्डल में काव्य–पाठ करते हुए



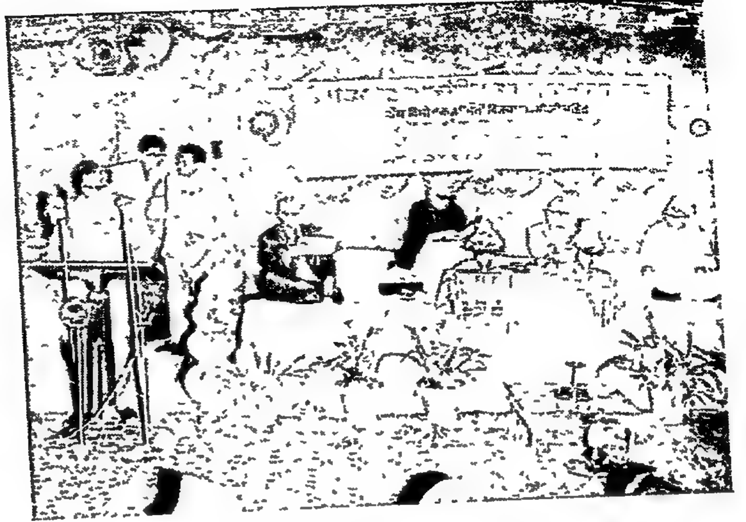
राजस्थान संस्कृत विद्यापीठ, भीलवाड़ा के महामंत्री
श्री शिवकुमार त्रिवेदी
श्री दयाशंकर श्रोत्रिय को तिलक कर रहे हैं



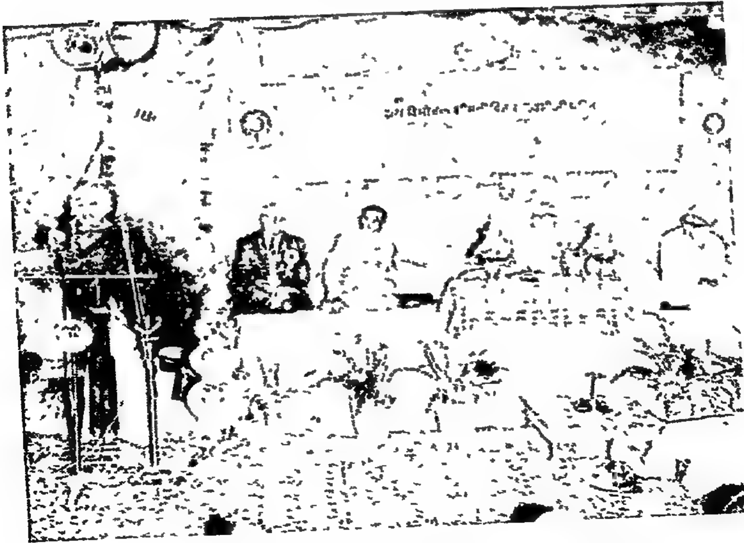
हवाई अड्डे पर मुख्य अतिथि श्रीमती विजयालक्ष्मी का स्वागत करते हुए
श्रीमान् दयाशंकरजी श्रोत्रिय।



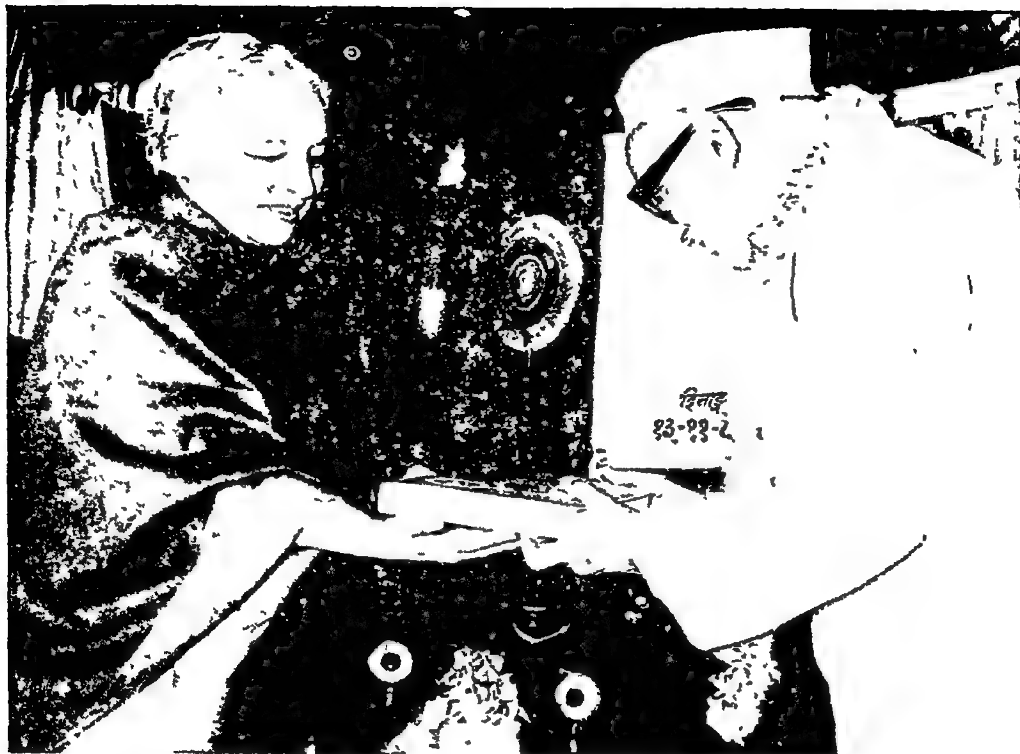
महिला-सम्मेलन के अवसर पर संस्था के संचालक द्वार पर से
अतिथियों को अन्दर ले जाते हुए।



श्रोत्रिय अभिनन्दन ग्रन्थ समारोह पर स्वागत भाषण देते हुए, राजस्थान के
गृह एव पर्यटन राज्य मत्री, श्रीमान् हीरालालजी सा. देवपुरा



श्रोत्रिय अभिनन्दन ग्रन्थ विमोचन के पश्चात्
श्रीमती विजयालक्ष्मी पडित आशीर्वचन देती हुई ।



नागरिक अभिनन्दन समिति की ओर से
श्री दयाशकर श्रोत्रिय को अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट करते हुए श्रीमती विजयालक्ष्मी पण्डित

स्वागताध्यक्ष ग्रन्थ विमोचक
श्री श्रोत्रिय और समारोह के अध्यक्ष :





माल्यार्पण करते हुए : श्रीगीता प्रिंटिङ्ग प्रेस के स्वामी और
अभिनन्दन ग्रन्थ के मुद्रक एवं सहयोगी श्री कालूलाल मेनारिया

माल्यार्पण   श्री कुबेरकान्त पारोरी एडवोकेट





माल्यार्पण : उदयपुर रूरल इन्स्टीट्यूट विद्याभवन के डायरेक्टर

माल्यार्पण : डॉ ग. स. महाजनि, उपकुलपति उदयपुर विश्वविद्यालय





शहनाई-वादन से शुभारम्भ : मंच पर क्रमशः सर्व श्री ग. स. महाजनि हीरालाल देवपुरा, श्रीमती विजयालक्ष्मी पण्डित, डॉ. मोहनसिंह मेहता और दयाशंकर श्रोत्रिय



श्री दयाशंकर श्रोत्रिय

राजस्थान गांधी स्मारक फण्ड के यशस्वी मन्त्री और श्री दयाशंकर श्रोत्रिय के स्काउट मास्टर और बाल साथी श्री केसरपुरी गोस्वामी (भीलवाड़ा) श्री श्रोत्रिय के जीवन के संस्मरण सुनाते हुए





महिला-मण्डल उदयपुर के कार्य वाहक अध्यक्ष शिक्षाविद श्रीमान डॉ० शम्भूलाल शर्मा भू. पू. डिप्टी डायरेक्टर राजस्थान शिक्षा विभाग श्री श्रोत्रियजी का अभिनन्दन करते हुए

'श्रोत्रियजी उस पंक्ति में हैं जिनका जीवन सेवा को समर्पित है'—

डॉ० महाजनी, डॉ० मेहता, श्रीगोस्वामी तथा गणमान्य नागरिकों द्वारा श्री दयाशंकर श्रोत्रिय का सार्वजनिक अभिनन्दन

श्रीमती विजयालक्ष्मी पण्डित द्वारा श्रोत्रिय अभिनन्दन-ग्रन्थ का विमोचन

(प्रस्तुतकर्ता—श्री श्रीकृष्ण शर्मा)

उदयपुर । १३ नवम्बर १९७०

श्री दयाशंकर श्रोत्रिय नागरिक अभिनन्दन समिति द्वारा संकल्प-सर्जित-स्वप्नकार, प्रखर मना संस्था-सेवी समाज सेवी और राष्ट्र सेवी "महिला-मण्डल" के यशस्वी संचालक श्री दयाशंकर श्रोत्रिय का नागरिक अभिनन्दन प्रख्यात शिक्षाविद् सेवा मन्दिर के संस्थापक पद्म विभूषण डा० मोहनसिंह मेहता की अध्यक्षता में स्थानीय महिला-मण्डल के प्रांगण में समारोहपूर्वक सम्पन्न हुआ। अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त समाज सेविका महिला-रत्न एवं संयुक्त राष्ट्र संघ की भूतपूर्व अध्यक्षा श्रीमती विजयालक्ष्मी पण्डित समारोह

की मुख्य अथिति थी। राजस्थान साहित्य अकादमी के भूतपूर्व निदेशक एवं राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान के उपनिदेशक तथा श्रोत्रिय अभिनन्दन ग्रन्थ के सम्पादक डॉ० पुरुषोत्तमलाल मेनारिया ने समारोह का सयोजन किया।

स्वागताध्यक्ष श्री देपुरा—

राजस्थान के गृह, जन सम्पर्क एव पर्यटन राज्य मत्री तथा 'श्री दयाशकर श्रोत्रिय नागरिक अभिनन्दन समिति' के अध्यक्ष माननीय श्री हीरालालजी देपुरा ने अपने स्वागत भाषण मे कहा कि जब नारियो मे शिक्षा प्रसार-प्रचार के कार्य को धर्म भ्रष्ट करना समझा जाता था तब श्री दयाशकर श्रोत्रिय ने राष्ट्रपिता महात्मा गाधी से "राजस्थान को बढ़ाओ और सेविकाएँ तैयार करो" का आशीर्वाद लेकर महिला-मण्डल की स्थापना की। आपने कहा कि महिला-मण्डल ने शहर और गाँव दोनो ही क्षेत्रो मे अपनी निस्वार्थ सेवाएँ अर्पित की है। उन्होने ग्रामीण महिला-समाज को प्रौढ-शिक्षण और सामाजिक चेतना के कार्यक्रमो से जागृत किया और शहरी महिलाओ को शिक्षित बनाते हुए न केवल उन्हे जागरूक बनाया अपितु स्वावलम्बी भी बनाया, तब शिक्षित महिलाओ की इस अचल मे इतनी कमी थी कि महिला-मण्डल से शिक्षा प्राप्त करने वाली सन्नारियो ने ही समाज और सरकार की अध्यापिकाओ की माग को वर्षों तक पूरा किया। श्री देवपुरा ने कहा कि न केवल अध्यापिकाओ की ही अपितु अन्य सभी क्षेत्रो मे महिला-मण्डल की सुशिक्षित महिलाए पहुँची, जो आज अनेक उच्च पदो पर प्रतिष्ठित है।

नारी-कल्याण की बहुमुखी प्रवृत्तिया—

श्री देवपुरा ने कहा कि श्री श्रोत्रिय ने निराश्रित महिलाओ के उद्योग केन्द्र चलाये बालिकाओ की शिक्षा सचालित की और उसका क्रमश: विकास किया। शहरी मोहल्लो और ग्रामीण क्षेत्रो मे अनेक बाल मदिर चलाये, प्रौढ महिलाओ को शिक्षा, आदिवासी छात्राओ को छात्रावास और अध्ययन की सुविधा दी, निराश्रित और बाल बच्चेदार महिलाओ के निवास और अध्ययन की एक साथ व्यवस्था की।

पर्दा प्रथा-उन्मलन की चर्चा करते हुए श्री देवपुरा ने कहा कि श्री दयाशकर श्रोत्रिय ने पर्दा प्रथा तोड़ने और पर्दा विरोधी जुलूसो का सचालन सफलतापूर्वक किया। यही नही वीर प्रसवा मेवाड भूमि की भील कन्याओ ने महिला-मण्डल के शिक्षण मे क्रीडा प्रतियोगिताओ मे अनेक राष्ट्रीय रेकार्ड स्थापित किये हैं तथा स्काउटिंग, गर्ल्स गाइड, भारत भ्रमण, गावो मे शिविर एव लोक सस्कृति के सुन्दर कार्यक्रम प्रस्तुत किये है।

प्रजामण्डल-आन्दोलन—

प्रजा मण्डल के आन्दोलनो मे श्री श्रोत्रियजी कि भूमिका का उल्लेख करते हुए श्री देवपुरा ने कहा कि कई बार श्रोत्रियजी को जेल जाना पडा तथा खादी, सर्वोदय, स्वदेशी भावना, स्वावलम्बन और नैतिक उत्थान के कार्यक्रम सदैव इनके जीवन के अग बने रहे। ऐसे कर्मशील व्यक्ति के पास आज न कोई निजी भवन है, न बैंक बेलेन्स और न कोई चल-अचल सम्पति। आज भी विरासत के नाम पर श्री श्रोत्रियजी के पास या तो अपना सेवा भावी जीवन है या फिर महिला-मण्डल।

उपकुलपति डॉ. महाजनि—

उदयपुर विश्वविद्यालय के उपकुलपति डॉ ग० स० महाजनि ने कहा कि नारियाँ नवीन पीढी की जन्मदात्री हैं। उन्ही के अधरो और गोदी मे वह पलती है अत उनका शिक्षित और सुसस्कृत होना आवश्यक है। आपने सिस्टर निवेदिता के भारत में क्रियाशील होने से सन् १८९७ से आज की स्थितियों की तुलना करते हुए कहा कि आज तो स्थिति बिल्कुल बदल गई है। हमने नारी को स्वाधीनता सग्राम मे जेल जाते देखा है। आज वे शासन व प्रशासन के महत्वपूर्ण पदो पर कार्यरत है। डा० महाजनि ने कहा कि जिस समय डा० डी० जी० कर्वे ने पूना मे महिलाओ के अनाथ आश्रम की नीव डाली और एक विधवा से विवाह किया तो समाज ने उनका बहिष्कार किया पर बाद मे डा० कर्वे को उनकी उल्लेखनीय सेवाओ के लिये "भारत रत्न" की उपाधि से मण्डित किया गया। डा० महाजनि ने कहा कि भारत मे महिला उत्थान के लिये सफरेज मूवमेन्ट जैसे किसी आन्दोलन की आवश्यकता नही पड़ी। यहा पुरुषो ने उनके उत्थान में पहल की है। श्री श्रोत्रिय ने ३६ वर्षो तक नारी जाति की जो सेवा की यह उनके लिये ही नहीं अपितु हम सबके लिये गौरव की बात है।

डॉ. शम्भूलाल शर्मा—

भूतपूर्व शिक्षा उपनिदेशक एव महिला-मण्डल के कार्यवाहक अध्यक्ष डा० शभूलाल शर्मा ने कहा कि श्री श्रोत्रियजी ने भाई साहब डा० मोहनसिंहजी मेहता से प्रेरणा ली। उनसे सतत मार्गदर्शन ग्रहण किया और गाधीजी से आशीर्वाद प्राप्त कर निरन्तर नारी उत्थान के लिये लगे रहे है। डा० शभूलाल शर्मा ने कहा कि सन्दीपन ऋषि के आश्रम से कृष्ण सुदामा जब बिछुडे तो कृष्ण राजनीति मे चले गये और सुदामा ने शिक्षा का कार्य सम्हाला। ठीक इसी प्रकार श्री श्रोत्रियजी को इनके साथियो की तरह कृष्णत्व प्राप्त था किन्तु इन्होने तो सुदामा की राह ही अपनाई। जेल तो श्री श्रोत्रियजी गये ही थे, चाहते तो मत्री उप मत्री तो आज तक हो ही गये होते. पर श्री श्रोत्रिय ने रचनात्मक कार्य को अगीकार किया है, इसलिये वे अभिनन्दनीय है।

केसरपुरी गोस्वामी—

राजस्थान गाधी स्मारक निधि के मत्री श्री केसरपुरी गोस्वामी ने कहा कि वस्तु के निर्माण के बाद लोग निर्माता को भूल जाते हैं पर वस्तुत 'वरदान है वे, जो प्रेरणा देते है और 'धन्य हैं वे, जो प्रेरणा लेते हैं।' श्री श्रोत्रिय ने डा० मोहनसिंह मेहता को आज स्मरण किया, तदर्थ वे धन्यवाद के पात्र हैं। श्री पुरी ने कहा कि यह अभिनन्दन वस्तुत श्री श्रोत्रिय दम्पति के त्याग सेवा एव निष्ठा का ही अभिनन्दन है।

श्री शिवकुमार त्रिवेदी—

जिला कांग्रेस भीलवाडा के अध्यक्ष और "लोक जीवन" साप्ताहिक के सम्पादक श्री शिवकुमार त्रिवेदी ने कहा कि श्री श्रोत्रिय अभिनन्दन समारोह व्यक्ति का सम्मान नहीं अपितु एक नवीन परम्परा का सूत्रपात है। श्री श्रोत्रियजी व्यक्ति नही, सस्था नही, अब तो परम्परा बन गये हैं सेवा की, त्याग की।

श्री मदनकुमार चौबे–

मालवा के लोक प्रिय समाज सेवी श्री मदनकुमारजी चौबे ने कहा कि श्री श्रोत्रिय में त्याग, तपस्या, यशस्विता का प्रभूत मात्रा मे समन्वय है। ये 'जाग्रत नारी ही राष्ट्र की जीवन ज्योति है" के युग उच्चारक हैं।

नारी जाति की ओर से अभिनन्दन

श्रीमती विजयालक्ष्मी पण्डित–

श्रीमती विजयालक्ष्मी पण्डित ने कहा कि निसन्देह मैं एक महान व्यक्ति के सामने हूँ। मेरा श्री श्रोत्रिय से दीर्घकालीन परिचय है। न उन्हे कुर्सी मिली न वे 'पद्मश्री' बने पर हम सबको क्या चीज यहां घसीट कर लाई है ? मात्र इनकी सेवा की साधना। श्रीमती पण्डित ने कहा कि मैं सामान्यतया सम्मान-समारोहो मे नही जाती-वे या तो ऐसे होते हैं जहां उनके प्रति कुछ न कहना अपने लिये बला मोल लेना होता हैं। या फिर वे ऐसे होते हैं कि जिनके अभिनन्दन का कोई अर्थ नही। आपने कहा कि गत दिनो मेरे परिवार के लोगो ने, नातियो ने, नवासियो ने मेरा जन्म दिवस मनाया था, वो एक घरेलू बात थी। पर मैं तो आज एक व्यक्ति का अभिनन्दन कर रही हूँ और समस्त नारी जाति की ओर से भी इनका अभिनन्दन करने खड़ी हूं।

सेवा का जीवन–

श्रीमती पण्डित ने कहा कि भारतीय नारियों की ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है जिससे कि आज राष्ट्रीय और सामाजिक उत्तरदायित्व को वे सभाल सकने मे समर्थ हों। फिर वे स्वय को अपने पैरों पर खड़ा हुआ महसूस करें। पर हमारे देश मे अनेक लोग काम तो उठाते हैं लेकिन थोड़ा बहुत करके थक जाते हैं। पर वे धन्य है जो जीवन पर्यन्त जुटे रहते हैं। श्री श्रोत्रियजी उनमें से एक है।

श्रीमती पण्डित ने कहा कि मैं ऐसे समय मे पैदा हुई थी जबकि मुझे आगे बढने के, काम करने के अवसर हाथ लगे, उस समय पढी लिखी महिलाए थोड़ी संख्या मे थी। पर आज तो रास्ते खुले हुये हैं। सौ मे से साठ नहीं, पच्चीस को तो अवसर है ही। आज महिलाएं विमान चलाती है, इजीनियरिंग का काम करती हैं, न्यायालयो मे अभिभावक का काम करती हैं, महाविद्यालयो मे पढाती हैं। श्रीमती पण्डित ने कहा कि पश्चिम मे महिलाओ ने मताधिकार के लिये आन्दोलन चलाये, फलस्वरूप उनके यहा रागद्वेष ज्यादा है।

मेरी शादी का जमाना–

हमारे देश मे जब मेरी नई नई शादी हुई थी, समाज का काम करती थी। घर भी चलाया, बच्चे भी हुए और परिवार में भी किसी ने बाधा नही डाली। वे भी, जब कभी बात चलती, कहते थे, यह तुम्हारा धर्म है। उन्होंने हमें धक्के दे देकर कार्यों पर लगाया। गाधीजी ने जब सेविकाओ की मांग की। मैं घर घर

सम्पर्क करती, जवाब मिलता-'तू आवारा हो गई तो क्या ? हम भी आवारा हो जाय। पर गाधीजी ने महिलाओ के लिए द्वार खोल दिये। वे तो कहते थे कि तुम घर से न निकलो पर ससार को ही घर मे ले आओ। उनका मतलब साफ था कि महिलाए ससार को समझें। और जब समझने लगेंगी तो ये समस्याएं ही नही आयेंगी। श्रीमती पण्डित ने कहा कि मैं मानती हूँ कि घर केन्द्र है-समाज का, समाज केन्द्र है-विश्व का, और जब बाहर निकलने की बात करती हू तो मेरा मतलब यह नही होता कि महिला परम्परागत कार्यों को भूल जाय। जो कार्य जिसके लिये उचित है वो तो करना ही चाहिये।

डॉ० मोहनसिंह मेहता–

अध्यक्षीय भाषण करते हुए डा० मोहनसिंह मेहता ने कहा कि श्री दयाशकर श्रोत्रिय ने समाज सेवा का बेमिसाल काम किया है, नारी उत्थान मे इन्होने जबरदस्त काम किया है। यू नारियो के उत्थान मे देश भर मे जो काम हुए उनमे डा० डी० जी० कर्वे, दुर्गा बाई देशमुख, ठक्कर बापा आदि के नाम भी स्मरणीय हैं। डा० मेहता ने कहा कि केवल कन्याओ की शिक्षा से ही काम नही चलेगा। प्रौढ महिलाओ का भी शिक्षण अनिवार्य है। यद्यपि महिला-मण्डल के पास इस कार्य के लिये साधन कम है फिर भी यह कार्य हाथ में लेना ही चाहिये।

संयोजकीय–

प्रारभ मे सयोजकीय वक्तव्य में डा० पुरुषोत्तमलाल मेनारिया ने अभिनन्दन ग्रन्थ की पृष्ठ भूमि का विस्तार से वर्णन किया। आपने कहा कि स्वाधीनता प्राप्ति के बाद भी ऐसा आभास होता है कि कार्य-कर्त्ता उपेक्षित है। अत समाज मे कार्य करने वाले कार्यकर्ताओ का सार्वजनिक रूप से अभिनन्दन करने की योजना बनाई गई और आज का समारोह उसी का प्रतिफल है। आपने बताया कि अभिनन्दन ग्रन्थ में श्री श्रोत्रियजी के लिये आशीर्वचन, ससमरण, नारी उत्थान व महिला-मण्डल पर प्रमाणिक विवरण है और लगभग एक हजार लेखनियो का सहयोग इसमें प्राप्त हुआ है।

माल्यार्पण—

सामाजिक, सास्कृतिक, साहित्यिक, व्यावसायिक क्षेत्रो में कार्य करने वाली नगर की पचास से अधिक सस्थाओ के प्रतिनिधियो ने अपनी अपनी सस्थाओ की ओर से श्री श्रोत्रियजी के दीर्घायु की कामना करते हुए माल्यार्पण किया जिनमे सर्वश्री हीरालालजी देवपुरा, डा० मोहनसिंह मेहता, डा. ग स महाजनि, हमीरलाल मुडिया, प्रेमशकर शर्मा, वशी उस्ताद, अर्जुनसिंह भाटो, डा० आर० सी० द्विवेदी, उगमलाल कोठारी, डा० शूरवीरसिंह, योगेशचन्द्र शर्मा, नन्दन जोशी, बलवन्तसिंह मेहता, तेजसिंह मेहता, केदारनाथ श्रीवास्तव, विश्वनाथ व्यास, शरद नेवटिया, केसरपुरी गोस्वामी, मगन भारती, रजिया तहमीन आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

श्री श्रोत्रिय के नागरिक अभिनन्दन और अभिनन्दन ग्रन्थ समारोह पर महामहिम राष्ट्रपति श्री वी० वी० गिरि, उपराष्ट्रपति श्री गोपाल स्वरूप पाठक रक्षा मत्री श्री जगजीवनराम, सूचना प्रसारण

तथा संचार मंत्री श्री सत्यनारायणसिंह, राजस्थान के मुख्य मंत्री श्री मोहनलाल सुखाड़िया, आन्ध्र प्रदेश के राज्यपाल श्री खण्डूभाई देसाई, गुजरात राज्य के राज्यपाल श्री मन्नारायण एवं श्रीमती मदालसा नारायण, मध्यप्रदेश के राज्यपाल के० सी० रेड्डी, पंजाब के राज्यपाल श्री दा० चि० पावटे, नेपाल में भारतीय राजदूत श्री राज बहादुर, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अध्यक्ष श्री दौलतसिंह कोठारी, डा० सेठ गोविन्ददास, श्री यशपाल जैन. श्री रामधारी सिंह दिनकर',श्रीमती जानकी देवी बजाज, राजस्थान विधान सभाध्यक्ष श्री निरंजननाथ आचार्य आदि के लगभग ७०० से अधिक शुभ कामना संदेश प्राप्त हुए जिनमे श्रोत्रियजी के दीर्घ एवं सुखी जीवन की मंगल कामनाएं की गई।

श्रोत्रियजी द्वारा आभार—

श्री दयाशंकर श्रोत्रिय ने अन्त मे सभी आगन्तुको के प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए कहा कि मै जो कुछ भी हूँ श्रद्धेय डा० मोहनसिंह मेहता की कृपा का फल है। उनके प्रेरणादायक वचन ही मेरे मार्ग दर्शक रहे। श्री श्रोत्रिय ने कहा कि कीर्ति थोडा मीठा जहर होती है अतः मेरी तरफ थोड़ा ध्यान रखे कि कहीं कीर्ति का यह विष मुझे खा न जाय। वस्तुत मेरा अभिनन्दन त्याग का ही अभिनन्दन है। श्री श्रोत्रियजी ने कहा कि जीवन भर समाज सेवा का वृत धारण किया था। मेरा यह उत्साह, उमंग सदैव बनी रहे, यही आकांक्षा है।



अभिनन्दन ग्रन्थ का अवलोकन प्रमुख अतिथि द्वारा

सार्वजनिक जीवन और कार्यकर्ता

समाजसेवी कार्यकर्ता श्री श्रोत्रिय के अभिनन्दन के अवसर पर एक सामयिक और विचारोत्तेजक सगोष्ठी

महिला-मण्डल के ३६ वें वार्षिकोत्सव एव श्रोत्रिय अभिनन्दन समारोह के अवसर पर महाराणा भूपाल कालेज के निर्देशक उदय पारीक की अध्यक्षता मे एक कार्यकर्ता सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसका सयोजक उदयपुर विश्वविद्यालय मे राजनीति विज्ञान के प्रवक्ता प्रो० चन्द्रसिंह नैनावटी ने किया। परिचर्चा मे 'सार्वजनिक जीवन और कार्यकर्ता विषय पर महत्वपूर्ण विचार विनिमय हुआ।

केदारनाथ श्रीवास्तव–

रूरल इन्स्टीट्यूट, विद्याभवन के निर्देशक श्री केदारनाथ श्री वास्तव ने कहा कि सार्वजनिक जीवन में जो कार्यकर्ता कार्यरत हैं उनके समक्ष प्रमुख ध्येय देश को गरीबी बेकारी और भुखमरी से मुक्ति दिलाना है। आपने कहा कि ज्यो ज्यों औद्योगीकरण बढ रहा है त्यो त्यो इन समस्याओ की विकरालता समाप्त होती जाती है। पर जिस प्रकार पश्चिम में पागलपन बढ रहा है, वहा के कार्यकर्ताओ का ध्यान पागलपन से मुक्ति की ओर केन्द्रित है, ठीक उसी प्रकार हमारे यहा भी कार्यकर्ताओ के क्षेत्र और कार्य पद्धति मे परिवर्तन वाछनीय होता रहेगा। श्री श्रीवास्तव ने कहा कि पहले बीस वर्षो मे चाहे वह महिला म ण्डल हो अथवा विद्याभवन जितने अधिक कार्यकर्ताओ को रोक पाए, अब नही रोक पा रहे है। उसका मूल कारण यही है कि अब वित्तीय साधनो के प्रवाह मे पूर्वापेक्षा आमद कम हो गई है।

बद्रीप्रसाद जोशी—

स्टेट इन्स्टीट्यूट आफ साइन्स के निर्देशक श्री बद्रीप्रसाद जोशी ने कहा कि ज्ञान की शाखाओ मे निरन्तर विस्तार होने के स्वरूप समाज सेवी कार्यकर्ताओ के कार्य का क्षेत्र भी व्यापक होता जा रहा है पर आज हमारे देश मे कार्यकर्ता भी यह पहले पूछता है कि मैं अमेरिका कैसे जा सकता हूँ ? मै सम्पन्न कैसे हो सकता हूँ ? वस्तुस्थिति यह है कि आज हमारे यहाँ राष्ट्रीयता नाम को जैसी कोई चीज शेष नही रह गई है। रेलगाड़ियो मे बसो मे, आम सडको पर मू गफली, केले के छिलके, बीड़ी–सीगरेट के टुकडे आदि गन्दगी-प्रसारक-उपकरण फेंक देते है। और ऐसा कभी महसूस नही करते कि यह रेलगाडिया, ये सडकें हमारी है। यह देश हमारा है जब तक राष्ट्रीयता की भावना जाग्रत नही होगी तब तक सार्वजनिक जीवन समुन्नत नही किया जा सकता।

श्रीकृष्ण शर्मा—

गतिशील साहित्यिक व सास्कृतिक सस्था 'कला लोक' के अध्यक्ष श्री श्रीकृष्ण शर्मा ने कहा कि सार्वजनिक जीवन में कार्य का मतलब करोडो-करोड़ो पीडितो की नि स्वार्थ, निष्काम सेवा अर्थात सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक न्याय, सभी क्षेत्रो मे अवसरो की विषमता का अन्त विधिग्राह्य समानता तथा धर्म निरपेक्षता की भावना को पुष्ट करते हुए विधि और शिष्टाचार की मर्यादाओ मे वैचारिक अभिव्यक्ति की स्वाधीनता व उसके लिये सकल्प पूर्वक कार्य।

कार्यकर्ताओं के मनोविज्ञान की चर्चा करते हुए श्रीकृष्ण शर्मा ने कहा कि आज अधिकाश रूप में कार्यकर्ता सत्ताभिमुखी हो गया है और वह सतासीन अथवा सत्तारूढ होना चाहता है फलत. सार्वजनिक जीवन की पवित्रता भग होती जा रही है। कार्यकर्ता को सदैव देने की भावना अर्थात् त्यागने की भावना से कार्य करना चाहिये न कि लेने की भावना से लेने की भावना तो व्यापार अथवा व्यवसाय का उपकरण है।

सार्वजनिक जीवन मे पवित्रता बनाये रखने के लिये कार्यकर्ता मे आवश्यक गुणो का उल्लेख करते हुए श्री श्रीकृष्ण शर्मा ने कहा कि कार्यकर्ता की आखे निश्छल हो, उसका मन निष्कपट हो और उसके हाथ पवित्र हो। वह निर्भय, विनयी, स्वावलम्बी निर्व्यसनी एव अनुशासन प्रिय हो। आपने कहा कि कार्यकर्ता को भारतीय सविधान के व्यापक स्तर पर प्रशिक्षण का कार्य, विधि-विधानो मे सशोधन, परिवर्तन एव परिवर्धन विषयक जानकारी से सामान्य जन को अवगत कराने का कार्य, साप्रदायिकता एवं क्षेत्रीयता की सकीर्ण मनोवृत्ति पर तीव्र प्रहार करने का कार्य अपने हाथ मे लेना चाहिये।

डॉ. शंभूलाल शर्मा—

भूतपूर्व शिक्षा उप निर्देशक डॉ० शभूलाल शर्मा ने कहा कि समाज सेवा का भी अपना विज्ञान होता है। अनेक व्यक्ति अब समाज सेवा के कार्यों मे निष्णात होकर निकल रहे है। फिर भी जब तक कार्यकर्ता इन्सान को इन्सान से मोहब्बत करने की बात नही सिखाएगा, शान्ति और अहिंसा का पाठ नही पढायगा तब तक कार्यकर्ता अपने धर्म का पालन नही कर पायगा।

श्री गोविन्द माधव याज्ञिक—

राजकीय शिक्षा सस्थान के उप निर्देशक श्री गोविन्दमाधव याज्ञिक ने कहा कि लगता है जैसे कार्यकर्ताओ का अवमूल्यन हो गया है। आज के कार्यकर्ताओं का समाज पर प्रभाव नही है। उनके कार्यों की उपादेयता ही प्रतीत नही होती। वे भी प्राय: उदरपूर्ति के साधन जुटाने मे ही लगे रहते है। फल यह होता है कि वे कार्य की बारीकियो तक नही पहुच पाते अतः कार्यकर्ताओ को प्रशिक्षित किये जाने की भारी आवश्यकता है।

प्रो. नैनावटी—

प्रारम्भ मे सयोजकीय वक्तव्य मे श्री चन्द्रसिंह नैनावटी ने कहा कि विदेशी साम्राज्यवाद और सामन्तवाद के कन्टको के बीच जनहित-कार्य करने वाली सस्थाओ की कलिकाओ को प्रफुल्लित होने के पूर्व

प्राण वायु के लिये छटपटाना और जीवन के झंझावात से जूझना पडता था। राष्ट्रपिता महात्मा गाधी और अन्य महापुरुषो ने तथा हजारो ज्ञात और अज्ञात कार्यकर्ताओ ने सार्वजनिक जीवन मे अपना खून और पसीना बहाया ताकि हम आजादी के वायु मण्डल मे सास ले सकें और अपने देश का राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक पुनर्निर्माण कर सकें। श्री नैनावटी ने कहा कि सार्वजनिक सस्थाओ के माध्यम से कार्य करने वालो के अतिरिक्त आज देश मे प्रशासन और अन्य सेवाओ मे भी ऐसे पदाधिकारियो और कर्मचारियो की आवश्यकता है जो सार्वजनिक सेवा-भाव से कार्य वहन कर सकें।

डॉ. उदय पारीक–

अपने अध्यक्षीय भाषण में डा० उदय पारीक ने कहा कि सामाजिक परिवर्तन करना ही सार्वजनिक जीवन मे कार्य करने वाले व्यक्ति का काम है और सामाजिक मूल्यो से विहीन किसी कार्यकर्ता की कल्पना हम नही कर सकते। हा, आवश्यकता इस बात की है कि कार्यकर्ता प्रशिक्षित हो और उसको केवल त्याग के आधार पर ही कार्य करने की बात न कही जाए। केवल त्याग का नारा देकर आज कार्य नही करवाया जा सकता है। श्री पारीक ने कहा कि आज सार्वजनिक जीवन मे सरकारी प्रभाव बढता जा रहा है, सरकारी पैसा भी प्रभूत मात्रा मे आ रहा है अत कार्यकर्ताओ को कार्य के नये तकनीक खोजने ही होंगे।

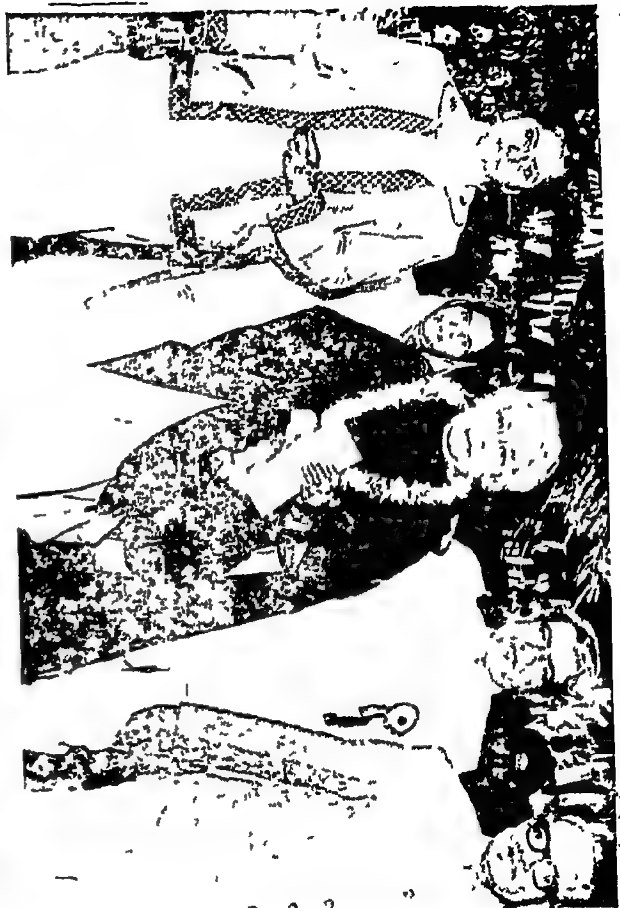
बालगोविन्द तिवारी–

कार्यकर्ता सम्मेलन मे "विकासशील भारत में नारी समस्याए और दायित्व" विषय पर लोकमान्य तिलक शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के आचार्य श्री बालगोविन्द तिवारी ने अपने पत्र मे बताया कि समस्या न नर की है, न नारियो की। समाज के मूल्यो की समस्या है और वह यह है कि क्या हम मन, वचन और कर्म से एक हो अथवा उनमें इतनी गत्यात्मकता हो कि मन से वचन तक आने मे एक क्षण के हजारवें भाग मे परिवर्तन हो जाय और वचन से कर्म तक आने मे फिर परिवर्तन हो जाय।

महिला-मण्डल के सस्थापक सचालक श्री दयाशकर श्रोत्रिय को, जिन्हे कि उनके ६८ वें जन्म दिवस पर महिलारत्न श्रीमती विजयालक्ष्मी पण्डित ने श्री दयाशकर श्रोत्रिय नागरिक अभिनन्दन समिति की ओर से अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट किया। इस कार्यकर्ता सम्मेलन मे आये कार्यकर्ताओ ने भी श्री श्रोत्रिय के सुखी एव सम्पन्न जीवन की कामना की। मगल कामनाओ को ग्रहण करते हुए श्री श्रोत्रिय ने उन सभी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की।

श्रीमती मोहनदेवी शर्मा प्रधान मन्त्रिणी महिला-मण्डल महिला सम्मेलन मे स्वागत भाषण देती हुई अध्यक्षा—श्रीमती कमलाजी नेवटिया मुख्य अतिथि श्रीमती विजयालक्ष्मी पंडित और वक्ता श्रीमती इन्दुमती महाजनी





अभिनन्दन समारोह मे स्वागत समिति के साथ श्रीमती पण्डित

श्रीदयाशंकर श्रोत्रिय अभिनन्दन समारोह
ग्रंथ विमोचक श्रीमती विजयालक्ष्मीजी पंडित

समारोह के अध्यक्ष पद्मभूषण डॉ० मोहनसिंह मेहता का आशीर्वाद

श्रीदयाशंकर श्रोत्रिय अभिनन्दन
ग्रंथ विमोचक श्रीमती विजयालक्ष्मीजी पंडित

... मानव : आभार प्रकट करते हुए

मूक और निःस्वार्थ सार्वजनिक सेवा का सामूहिक सम्मान

श्रोत्रिय अभिनन्दन समारोह एक दृष्टि

[बहादुरसिंह सरूपरिया]

साधना इन्फोरमेशन सर्विस, उदयपुर

राजस्थान के प्रमुख शैक्षिक और सास्कृतिक नगर मे इस बार जीवन व्यापी सार्वजनिक सेवाओ के अभिनन्दन का एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम सम्पन्न हुआ जिसमे देश के विख्यात शिक्षाशास्त्रियो, शिक्षा, सेवियो, सार्वजनिक कार्यकर्ताओ और प्रात के वरिष्ठ जन-प्रतिनिधियो ने सामूहिक रूप से भाग लिया। मेवाड प्रजामण्डल के सस्थापक कार्यकर्ता और नारी कल्याण प्रवृत्तियो तथा महिला शिक्षण की विख्यात सस्था महिला-मण्डल के सस्थापक श्री दयाशकर श्रोत्रिय को नागरिक अभिनन्दन समिति की ओर से एक वृहत् ग्रन्थ भेंट किया, सयुक्त राष्ट्र सघ की भूतपूर्व भारतीय अध्यक्षा श्रीमती विजयलक्ष्मी पण्डित ने।

भारतीय स्वाधीनता सग्राम की महिला सेनानी श्रीमती पडित ने कहा कि वर्तमान तथाकथित अभिनन्दन समारोह से वे सदा दूर रहती आयी है लेकिन श्रोत्रियजी की सेवाओ का एक लम्बा इतिहास मेरे सामने रहा है और मे अपना कर्त्तव्य समझकर विशेष रूप से इसी समारोह मे भाग लेने आई हूँ। न श्रोत्रियजी को कुर्सी मिली, न पद्मश्री मिली फिर भी इनकी सेवाए मुझे और हम सब को यहा खीच लाई। मै आज समस्त नारी जाति की ओर से इनका अभिनन्दन करती हू।

श्रीमती पण्डित ने स्वतन्त्र-पूर्व-युग को स्मरण करते हुए कहा कि तब पढी लिखी महिलाए देश भर मे बहुत कम थी लेकिन भारतीय सस्कृति की यह एक महत्वपूर्ण देन रही कि यहा नारियो को अधिकार प्राप्ति के लिये पुरुषो से सघर्ष नही करना पडा वल्कि पुरुषो ने हमें आगे बढाया। उन्होंने नारी जागरण के इस अभियान मे महात्मा गाधी के योगदान को भी याद किया। गाधीजी कहते थे कि तुम (नारी) घर से मत निकलो लेकिन ससार को ही अपने घर मे लेओ।

श्रीमती पण्डित ने कहा कि स्वय पण्डित नेहरू दो बार इस सस्था का अवलोकन कर चुके हैं। अगर आज वे जिन्दा होते तो सस्था की प्रगति को देखकर अत्यधिक प्रसन्न होते। श्रीमती पण्डित ने

अपने एक लिखित सन्देश मे कहा कि महिला–मण्डल के जलसे में शरीक होकर मुझे बड़ा हर्ष हुआ। पहले भी मैं यहां आ चुकी हूँ और इस सस्था के काम से पुरी तरह परिचित हूं। यह देखकर और सुनकर सन्तोष हुआ कि सस्था बरावर उन्नति के पथ पर अग्रसर हैं। मेरी शुभकामनाए है कि महिला-मण्डल का काम और अधिक बढे और इसके द्वारा राजस्थान की कन्याओ और महिलाओ को लाभ पहुँचे। भारत मे बडी शीघ्रता से परिवर्तन हो रहे हैं। और इस बात की अधिक आवश्यकता है कि हमारी बच्चियां अपनी नई जिम्मेदारियो के लिये तैयार रहे।

श्री दयाशकर श्रोत्रिय गाधीजी के पास रहे और जनसेवा की प्रेरणा प्राप्त की, फिर भी वे पण्डित मदनमोहन मालवीय, सेठ जमनालाल बजाज के सरक्षण मे सार्वजनिक सेवा कार्य मे दीक्षित हुए। और आज से ३५ वर्ष पूर्व मेवाड के पिछडे क्षेत्रो मे नारी कल्याण का यह यज्ञ (महिला-मण्डल) प्रारम्भ किया। श्रीमती पण्डित ने कहा कि भारतीय नारियों को आज ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है जिससे वे राष्ट्रीय और सामाजिक उत्तरदायित्व को सभाल सकने मे समर्थ हो और स्वय को आत्म-निर्भर महसूस कर सके।

नागरिक अभिनन्दन समिति के प्रधान सरक्षक थे मुख्य मन्त्री श्री मोहनलाल सुखाड़िया और स्वागताध्यक्ष का दायित्व निभाया राज्य के गृह पर्यटन एव जन सम्पर्क राज्य मन्त्री श्री हीरालाल देवपुरा ने।

श्री देवपुरा ने अपने भाषण मे श्रोत्रिय जी की पाच दशाब्दियो मे फैली सेवाओ का सिंहावलोकन प्रस्तुत किया। महिला मण्डल के ३५ वर्षों की सेवाएं आज सभी के सामने हैं। मेवाड के शिक्षा प्रसार के लिये महिला शिक्षिकाओं की पूर्ति सर्वप्रथम महिला-मण्डल ने ही की। आदिवासी और हरिजन महिलाओ ने तो इस सस्था में उपलब्धियो के राष्ट्रीय कीर्तिमान स्थापित किये। एथलेट्स में मण्डल भील छात्राओ ने कई राष्ट्रीय रेकार्ड कायम किये। मण्डल की अनेक स्नातिकाए आज देश भर मे अनेक वरिष्ठ पदो पर कार्यरत है।

ग्रामीण क्षेत्रो मे एवम् हरिजन क्षेत्र के सर्वतोमुखी विकास मे भी श्रोत्रियजी का लम्बा और महत्वपूर्ण योगदान रहा है। और केन्द्रीय समाज कल्याण बोर्ड तथा पुर्नवास मन्त्रालय की क्रियान्विति मे भी महिला मण्डल के कार्यकर्त्ता वर्षों सक्रिय रहे।

सामन्ती शासन मे आप छात्रजीवन मे ही जमनालाल बजाज और विख्यात क्रान्तिकारी श्री विजयसिंह पथिक के सम्पर्क मे आये और सार्वजनिक जीवन मे कूद पडे। स्वर्गीय माणिक्यलाल वर्मा ने जब मेवाड प्रजा मण्डल की स्थापना की तो आप उसके महामन्त्री बने, प्रजामण्डल के आन्दोलनो मे अनेक बार जेल यात्रायें की, खादी सर्वोदय एव स्वदेशी भावना, स्वावलम्बन और नैतिक उत्थान के कार्यक्रम सदैव इनके जीवन अग रहे।

विद्याभवन के सस्थापक पद्मभूषण डा० मोहनसिंह मेहता के अनुसार श्रोत्रियजी ने समाज सेवा का बेमिशाल काम किया है। नारियो के उत्थान मे डा० डी० जी० कर्वे, दुर्गाबाई देशमुख, ठक्कर बापा,

आदि का योगदान महत्वपूर्ण रहा है। श्री श्रोत्रियजी ने उस परम्परा को आगे बढाया हैं। डा० मेहता ने महिला-मण्डल को सलाह दी कि वह प्रौढ महिलाओ के शिक्षण के कार्यक्रम को भी अधिक विकास दें।

राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान के उप निदेशक, अभिनन्दन ग्रन्थ के सपादक और स्वागत मन्त्री डा० पुरुषोत्तमलाल मेनारिया ने अभिनन्दन की पृष्ठ भूमि पर प्रकाश डाला और ५० से अधिक सस्थाओ तथा प्रतिष्ठानो के प्रतिनिधियो ने श्रोत्रियजी को माल्यार्पण किया। उदयपुर विश्वविद्यालय के उपकुलपति डा० जी० सी० महाजनि ने श्रीत्रियजी की सेवाओ को एक एतिहासिक उपलब्धि के रूप मे स्वीकार किया। श्रोत्रियजी के बाल साथी और राजस्थान गांधी स्मारक निधी के मन्त्री श्री केसरपुरी गोस्वामी ने कहा कि यह श्रोत्रिय दम्पति के त्याग, सेवा एव निष्ठा का अभिनन्दन है। नगर कांग्रेस भीलवाडा के अध्यक्ष एव पत्रकार श्री शिवकुमार त्रिवेदी ने कहा कि श्रोत्रियजी अब व्यक्ति और सस्था से भी आगे एक परम्परा बन गये है—सेवा की और त्याग की परम्परा। मालवा के लोकप्रिय समाज सेवी श्री मदनकुमार चौबे ने कहा कि वे "जागृत नारी ही राष्ट्र का जीवन है" के युग उच्चारक है। भूतपूर्व शिक्षा उपनिदेशक डा० शभूलाल शर्मा ने कहा कि सत्ता के प्रलोभ से तटस्थ, उनकी रचनात्मक कार्यों की उपलब्धिया वस्तुत अभिनन्दनीय है।

महामहिम राष्ट्रपति से लेकर देश के हर शिक्षा सेवी तक, लगभग ७०० से भी अधिक वरिष्ठ नेताओ और शिक्षाशास्त्रियो ने समारोह को अपने शुभकामना सन्देश भेजे। इनमे से अधिकाश महिला-मण्डल की सेवाओ को प्रत्यक्ष देख चुके हैं। स्वर्गीय प्रधानमन्त्री जवाहरलाल नेहरू और आचार्य विनोबा तक इन सेवाकार्यो के प्रत्यक्ष साक्षी रहें हैं।

अभिनन्दन कार्यक्रम की श्रृंखला में एक और महत्वपूर्ण आयोजन रख सार्वजनिक कार्यकर्ता सम्मेलन का, जिसमे कार्यकर्ता और कार्यक्रम की वर्तमान समस्याओ पर विचार किया गया। सम्मेलन के अध्यक्ष थे "स्कूल आफ बेसिक साईन्सेज एण्ड ह्यूमेनिटीज' के निदेशक श्री उदय पारिक और सयोजन किया विश्वविद्यालय के राजनीति शास्त्र के वरिष्ठ व्याख्याता श्री चन्द्रसिंह नैनावटी ने। रूरल इन्स्टीट्यूट (विद्या भवन) के निदेशक श्री केदारनाथ श्रीवास्तव, राज्य विज्ञान सस्थान के निदेशक श्री बद्रीप्रसाद जोशी लोकमान्य तिलक टीचर्स ट्रेनिंग कालेज के प्राचार्य श्री बालगोविन्द तिवारी एव साहित्यकार श्री श्रीकृष्ण शर्मा ने सगोष्ठी मे अपने पत्र पढे और समस्याओ पर तर्क पूर्ण विवेचन किया। कार्यक्रम की दिशाहीनता और कार्यकर्ता की विरम स्थिति पर विस्तार से प्रकाश डाला गया।

कार्यकर्ताओ के क्षेत्र और कार्यपद्धति मे परिवर्तन की माग की गई ऐसे वातावरण की आवश्यकता महसूस की गई जहा कार्यकर्ता निष्ठा और उत्साह के साथ कार्य कर सके। ज्ञान की व्यापकता के अनुपात मे भारतीय परिपार्श्व की जागरूकता को अवश्यक समझा गया, मानव मूल्यो पर आधारित कार्यक्रमो को प्राथमिकता देने की आवश्यकता को महसूस किया गया।

महिलाओ के लिये पृथक महिला सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमे श्रीमती पण्डित ने भारतीय नारी के अधुनातन दायित्वो की चर्चा की और स्वय सेविकाओ का पथ प्रशस्त किया। बालको

के लिये दो दिन 'आनन्द मेला' आयोजित किया गया। अर्द्ध रात्रि से भी अधिक समय तक आयोजित कवि सम्मेलन मे प्रान्त के ख्यातनामा कवियो ने अपनी कविताओ का पाठ किया। कवि सम्मेलन का सयोजन श्रमजीवी कालेज के उपाचार्य डॉ० शान्तिलाल भारद्वाज ने किया।

महिला--मण्डल के प्रागण का पूरा एक सप्ताह उन विभिन्न गतिविधियों का केन्द्र रहा जहां बालक बालिकाओ, महिलाओ और कार्यकर्ताओं ने सार्वजनिक जीवन के अनेक अनुभव सीखे। और कार्य-क्रमो की प्रेरणाएं प्राप्त की। औपचारिक समारोह की तुलना मे इन प्रवृतियो की यह एक महत्वपूर्ण उपलब्धि रही। राजस्थान और मध्य प्रदेश के अतिरिक्त देश के विभिन्न नगरो से अनेक वरिष्ठ कार्यकर्ता को इसमें सम्मिलित हुवे ही देश के विभिन्न भागो से प्रवासी राजस्थानियो ने भी अपनी उपस्थिति का लाभ दिया और श्रोत्रियजी को अभिनन्दन के पुष्पहार अर्पित किये।

यो एक और अलकरण सम्मान पदक और अभिनन्दन समारोह लोगो की आलोचनाओ के शिकार होते जा रहे हैं और कतिपय आलोचनाओं को नजरअन्दाज भी नहीं किया जा सकता, लेकिन प्रशस्ति और वैभव से दूर तटस्थ और मूक जनसेवियो के वह अभिनन्दन निश्चित ही सार्वजनिक गतिविधियो को प्रेरणा देने वाले है, इस तथ्य का यहां प्रत्यक्ष अनुभव किया।

स्वागताध्यक्ष श्री देवपुरा द्वारा माल्यार्पण





महिला सम्मेलन में श्रीमती पण्डित

श्री दयाशंकर श्रोत्रिय अभिनन्दन ग्रन्थ

——

देश के कर्मठ लोक-सेवी श्री दयाशंकरजी श्रोत्रिय, संचालक महिला-मण्डल, उदयपुर को ६७ वर्ष की आयु मे उनके सतत संघर्ष और साधनामय सेवा-काल के ५० वर्ष पूर्ण होने पर समर्पित किये जाने वाले अभिनन्दन-ग्रन्थ के सम्बन्ध में प्रमुख नागरिको की ओर से प्रस्तावित योजना पर विचार करने हेतु एक सभा का आयोजन उदयपुर मे दि० १६ नवम्बर को हुआ। इस सभा की अध्यक्षता स्वाधीनता संग्राम के वीर सेनानी, सेवा-मूर्ति पं. भवानीशंकरजी वैद्य ने की। सर्व श्री हुमेरलालजी एडवोकेट, भगवतीलालजी चोर्डिया एडवोकेट, हीरालालजी आचार्य, अध्यक्ष नगर-कांग्रेस, प्रो० चन्द्रसिंहजी नैनावटी, प० टेकचन्दजी वैद्य आयुर्वेदाचार्य, सम्पादक 'काया-कल्प' और श्री योगेशचन्द्रजी शर्मा, महामंत्री राजस्थान सार्वजनिक शिक्षण संस्था संघ आदि ने सभा में भाषण देते हुए प्रस्ताव का समर्थन किया। इसी सभा में अभिनन्दन-ग्रन्थ संबन्धी विभिन्न समितियों के चुनाव भी सम्पन्न हुए।

संरक्षक—

श्रीमान् माननीय मोहनलाल सुखाडिया, मुख्यमंत्री राजस्थान
- ,, ,, निरंजननाथजी आचार्य, अध्यक्ष राजस्थान धारा सभा, जयपुर
- ,, ,, शिवचरणजी माथुर, शिक्षा मंत्री, राजस्थान
- ,, ,, हरिदेवजी जोशी, उद्योग मंत्री राजस्थान, जयपुर
- ,, ,, रामप्रसादजी लढ्ढा, सिंचाइ मंत्री राजस्थान जयपुर
- ,, डॉ० मोहनसिंहजी मेहता, भू पू उपकुलपति, राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर, उदयपुर
- ,, सेठ गजाधरजी सोमाणी, बम्बई
- ,, पूज्य गोस्वामीजी महाराज व्रजभूषणलालजी, काकरोली
- ,, महन्त महाराज मुरलीधरणजी, मेवाड महामण्डलेश्वर, अस्थलपीठ, उदयपुर
- ,, पद्मश्री सीतारामजी सेक्सरिया, संचालक शिक्षायतन, कलकत्ता
- ,, सत्यनारायणजी नायानी, भीलवाड़ा
- ,, सेठ दामोदरलालजी मानसिंह का, भीलवाडा
- ,, पद्मभूषण पंडित सूर्यनारायणजी व्यास, ज्योतिषाचार्य, उज्जैन
- ,, गोकुल भाई भट्ट, जयपुर
- ,, हरिभाऊजी उपाध्याय, अजमेर

स्वागताध्यक्ष–

श्रीमान् माननीय हीरालालजी देवपुरा, राज्य मंत्री, गृह, पर्यटन व जनसम्पर्क राजस्थान, जयपुर

कार्यवाहक स्वागताध्यक्ष–

श्रीमान् वैद्य भवानीशंकरजी, सचालक–गांधी स्मारक दवाखाना समिति, उदयपुर

उपस्वागताध्यक्ष–

श्रीमान् हरदेवजी ज्योतिषाचार्य, सोलन
" डॉ० शम्भूलालजी शर्मा, कार्यवाहक-अध्यक्ष, महिला-मण्डल, उदयपुर
" हमीरलालजी मुरड़िया, एडवोकेट, सचालक–शिक्षाभवन, मीरा कन्या विद्यालय, टैगोर सोसायटी, रेडक्रास सोसायटी, उदयपुर
" तेजसिंहजी मेहता, एडवोकेट, उदयपुर
" जीवनसिंहजी चोरडिया एडवोकेट उदयपुर
" पद्मश्री देवीलालजी सामर, अध्यक्ष–राजस्थान सगीत नाटक अकादमी और सचालक भारतीय लोक कला-मण्डल, उदयपुर
" भोगीलालजी पड्या
" गौरीशकरजी आचार्य, श्रीगगानगर

प्रधान स्वागत मंत्री–

श्रीमान् डॉ. पुरुषोत्तमलालजी मेनारिया, निदेशक–राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर

स्वागत मंत्री–

श्रीमान् योगेशचन्द्रजी शर्मा, मत्री सार्वजनिक शिक्षण सस्था सघ, उदयपुर
श्री कु० कान्ताजी भटनागर, एडवोकेट, उदयपुर
श्रीमान् नानालालजी बोर्दिया, उप निदेशक, राजस्थान समाज कल्याण विभाग, उदयपुर
" डॉ० शान्तिलालजी भारद्वाज, उपाचार्य, मा वि. श्रमजीवी महाविद्यालय राजस्थान विद्यापीठ, उदयपुर
" प्रोफेसर चन्द्रसिंहजी नैनावटी, महाराणा भूपाल कालेज. उदयपुर
" राजवैद्य प्रेमशकरजी शर्मा, अवकाश प्राप्त निदेशक, राजस्थान आयुर्वेद विभाग, उदयपुर

उपस्वागत मंत्री–

श्रीमती मोहनदेवीजी शर्मा, प्रधान मंत्रीणी, महिला-मण्डल, उदयपुर
" विमलाजी कोठारी आचार्या, महिला-मण्डल, उदयपुर
" विद्याजी पाणेरी, वरिष्ट अध्यापिका, उच्चतर विद्यालय, महिला-मण्डल, उदयपुर
" चन्द्रकलाजी शर्मा, प्रधानाचार्या, महिला-मण्डल, उदयपुर

श्रीमान् त्रिलोकचन्द्रजी जैन, आचार्य खादी विद्यालय, शिवदासपुरा
सुश्री अमरकौर वहिनजी, आचार्या, कन्या विद्यालय, विजयनगर

आय-व्यय निरीक्षक–

श्रीमान् वी एन शर्मा, चार्टर्ड अकाउन्टेन्ट, उदयपुर
" सम्पतलालजी वोहरा, चार्टर्ड अकाउन्टेन्ट, उदयपुर

अर्थ समिति–

श्रीमान् सुन्दरलालजी शर्मा, एडवोकेट, उदयपुर, अर्थ मंत्री
" कालूलालजी मेनारिया, अध्यक्ष न्याय पचायत, सवीना
" कुवेरकान्तजी पानेरी एडवोकेट उदयपुर
" नन्दलालजी कछारा, एडवोकेट उदयपुर
" वन्शीलालजी, सचालक, श्री हेमराज राष्ट्रीय व्यायाम शाला, उदयपुर
" रमेशचन्द्रजी श्रोत्रिय, लेवर ऑफिसर, विडला सिमेन्ट फेक्ट्री, चित्तौडगढ
" उत्सवलालजी शर्मा, आर ए एस, जयपुर
" जयदेवजी सिहानिया, एडवोकेट, चेयरमेन लॉ एण्ड फायनेन्स कमेटी, वम्वई कार्पोरेसन, वम्वई
" चम्पालालजी चाष्ठवे, आयकर सलाहकार, पूना, अध्यक्ष, अ भा. गुजरगौड ब्राह्मण महासभा
" पडित सत्यनारायणजी, इन्जीनियर, अतुल प्रोडक्टस अतुल (गुजरात)
" जयसिंह मेहता, कलकत्ता
" जीवनसिंह मेहता, मत्री चेम्बर ऑफ कामर्स कलकत्ता
" तेजसिंहजी कोठारी एडवोकेट, कलकत्ता
" हिम्मतसिंहजी जैन, चार्टर्ड अकाउन्टेन्ट, कलकत्ता
" कन्हैयालालजी खादीवाला भू पू ससद सदस्य, इन्दौर
" मथुरालालजी वाहेती, मैनेजर कॉटन फैक्ट्री, आमेट
" चम्पालालजी एडवोकेट, रतनगढ
" भागीरथजी शर्मा, आर. ए एस, वीकानेर
श्रीमती राजवैद्य सुशीलाजी शर्मा, वम्वई
श्रीमान् जान मुहम्मदजी, उप-सचिव, वित्त विभाग, राजस्थान, जयपुर
" वालूलालजी पानगडिया, सहायक सचिव, प्रशासन विभाग, राजस्थान, जयपुर
" स्वरुपनारायणजी पुरोहित, सीकर
" सेठ भीमसिंहजी सचेती, गुलावपुरा
" मुनीम कस्तूरचन्दजी नाहर, गुलाबपुरा

श्रीमान् सेठ गणेशलालजी, गुलाबपुरा
" नर्मदाशंकर दवे, उदयपुर (खजान्ची)

विज्ञापन संग्रह समिति–

" श्रीमान् रतनलालजी सुखवाल, उदयपुर
" व्रजभूषणजी शर्मा, कलकत्ता
" बजरंगलालजी उपाध्याय, बम्बई
" वैद्य गजानन्दजी, आयुर्वेदाचार्य, बम्बई
" राधाकृष्णजी लाहोटी, बम्बई
" शरदकुमारजी, संचालक निमकुंज, उदयपुर
श्रीमती सुमन बहिनजी भारतीय, अजमेर
श्रीमान् शिवकुमारजी त्रिवेदी एम. ए. सपादक 'लोक जीवन' भीलवाड़ा
" ऊंकारलालजी शास्त्री कलकत्ता
" जगन्नाथप्रसादजी जालान, जे. पी., कलकत्ता
" कालूलालजी मेनारिया, सचालक श्रीगीता प्रिन्टिंग प्रेस, उदयपुर
श्रीमती सुशीलाजी दशोत्तर, सचालिका मान्टेसरी स्कूल विद्याभवन, उदयपुर
श्रीमान् गोविन्दजी शर्मा, खादीवाला, जयपुर
" वैद्य चन्द्रशेखरजी भट्ट, आयुर्वेदाचार्य, उदयपुर
श्रीमती प्रतिभाजी खण्डेलवाल, कलकत्ता
श्रीमान् इच्छाशकरजी श्रोत्रिय, रतलाम

प्रधान सम्पादक–

श्रीमान् डॉ. पुरुषोतमलालजी मेनारिया, निदेशक, राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर

सम्पादक मंडल–

श्रीमान् राजेन्द्रशंकरजी भट्ट, निदेशक राजस्थान जन सम्पर्क विभाग, जयपुर
श्रीमती रानी लक्ष्मीकुमारीजी चूण्डावत, सदस्या धारासभा राजस्थान, जयपुर
श्रीमान् डॉ. मडनजी मिश्र, निदेशक लालबहादुर शास्त्री सस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली
" ऋषिजेमिनी कौशिक बरूआ, कलकत्ता
" प्रो. डॉ० कृष्णचन्द्रजी श्रोत्रिय, अवकाश प्राप्त हिन्दी व्याख्याता, उदयपुर विश्व विद्यालय, उदयपुर
" प्रोफेसर प्रकाशजी आतुर, हिन्दी विभाग महाराणा भूपाल कालेज, उदयपुर
" गिरधारीलालजी शर्मा, सम्पादक अरावली, उदयपुर

श्रीमान् भवानीशंकरजी उपाध्याय, एडवोकेट उदयपुर
,, रतनलालजी जोशी, सम्पादक 'हिन्दुस्तान', नई दिल्ली
,, शोभालालजी गुप्ता, भू० पू० सम्पादक 'हिन्दुस्तान', दिल्ली
,, मदनकुमारजी सम्पादक 'कुमार', मन्दसौर
,, उत्सवलालजी तिवारी, 'सुमन', उज्जैन
,, बद्रीप्रसादजी जोशी डिप्टी डायरेक्टर राजस्थान साइन्स इन्स्टीट्यूट, उदयपुर
श्रीमती जे जे सिंह (रामबहिनजी), उदयपुर,

प्रचार-प्रकाशन समिति—

श्रीमान् अचलेश्वर प्रसादजी, सम्पादक 'प्रजासेवक', जोधपुर
,, चन्द्रेशजी व्यास, सम्पादक 'पन्द्रह अगस्त', उदयपुर
,, हनुमानप्रसादजी प्रभाकर सम्पादक 'उदयपुर टाइम्स', उदयपुर
,, कनकमधुकरजी सम्पादक, 'नवजीवन', उदयपुर
,, छोगालालजी शर्मा, सम्पादक 'मार्शल' उदयपुर
,, कृष्णकान्त व्यास, सम्पादक 'लेखा-जोखा', इन्दौर
,, शिवकुमारजी त्रिवेदी, सम्पादक 'लोक-जीवन', भीलवाडा
,, महेशचन्द्रजी श्रोत्रिय, उद्घोषक आकाशवाणी, उदयपुर
,, दुर्गेशजी जोशी, सम्पादक 'प्रगति', उदयपुर
,, अम्बालालजी माथुर, सम्पादक 'लोकमत', बीकानेर
श्रीमती मुकुन्दजी भण्डारी, उदयपुर
श्रीमान् रणजीतलालजी अग्रवाल, उदयपुर

प्रबन्ध समिति—

श्री डॉ० आत्मप्रकाशजी	उदयपुर
,, सोहनलालजी हींगड	,,
,, रविशंकरजी व्यास, एडवोकेट	,,
,, डॉ० हरिशचन्द्रजी	,,
,, कमलाजी शर्मा गृह व्यवस्थापिका, श्री भूवालका कस्तुरबा कन्या छात्रालय, महिला-मण्डल	,,
,, जगन्नाथप्रसादजी चौबे सम्पादक 'यूथ'	,,
,, गुलाबसिंहजी शक्तावत, एम एल ए., अध्यक्ष जिला कांग्रेस, उदयपुर	,,
,, रोशनलालजी शर्मा, एम एल ए जिला प्रमुख	,,
,, भगवतीलालजी भट्ट, मंत्री उदयपुर जिला कांग्रेस	,,
,, शरफअलीजी आई ए एस	,,

श्री भाई भगवान एम. ए. बी. टी.	उदयपुर
,, नूर अहमदजी एडवोकेट	,,
,, अकबर महमदजी रि० आर. ए. एस	,,
,, गोवर्द्धनसिंहजी मेहता रि० आई. ए. एस.	,,
,, परशरामजी अग्रवाल	,,
,, वैद्य रामेश्वरजी	गंगानगर
,, केसरपुरीजी गोस्वामी, मंत्री, राजस्थान गांधी निधि	भीलवाड़ा
,, रमेशचन्द्रजी व्यास, एम. पी.	,,
,, धूलेश्वरजी एम. पी.	उदयपुर
,, जयनारायणजी, एल एल. ए.	धरियावद
,, महेन्द्रकुमारी एम. एल ए.	डूंगरपुर
,, शंकरलालजी अग्रवाल	उदयपुर
,, महम्मदहैदरी	,,
,, नाथूलालजी अग्रवाल	,,
,, जयन्नाथजी माहेश्वरी	,,
,, चतरलालजी मूंदड़ा	,,
,, लालसिंहजी शक्तावत, भू. पू. मंत्री, अलवर (राज्य(	,,
,, चतुरविहारीलालजी गुप्ता, आर ए. एस.	,,
, भँवरलाल भदादा	भीलवाड़ा
,, रूपलालजी सोमाणी संचालक सेवा सदन	,,
,, चेनसुखजी अजमेरा, एडवोकेट	,,
,, ज्ञानमलजी कोठारी, अध्यक्ष, नगर विकास प्रन्यास	,,
,, रमेशचन्द्रजी माथुर, प्रधानाचार्य	,,
,, जमनेशजी चौबे	स्वरूपगंज
,, गंगाधरजी व्यास	उदयपुर
,, यशवन्तसिंहजी नाहर, एडवोकेट	भीलवाड़ा
,, गहरीलालजी ब्रोदिया	उदयपुर
श्रीमती फुलकुंवर अग्रवाल	,,
,, नानी बहिनजी राव श्रीमती राधाबहिनजी	,,
,, सुन्दर बहिनजी वर्मा श्रीमती निर्मलाजी बोदिया	,,

कार्यालय मंत्री—

श्री रतनलालजी सुखवाल श्री कमलाजी शर्मा	,,
,, विद्यानिवासजी उपाध्याय श्री नर्मदाशंकरजी दवे	,,



दो शिक्षा सेवी
श्री दयाशंकर श्रोत्रिय अनुज श्री इच्छाशंकर श्रोत्रिय के साथ



श्री दयाशंकर श्रोत्रिय : अभिनन्दन का आभार



डॉ० मोहनसिंह मेहता के चरण स्पर्श करते हुए श्रोत्रियजी

श्री दयाशंकर श्रोत्रिय अभिनन्दन ग्रन्थ विमोचन समारोह

१३ नवम्बर १९७०

स्वागताध्यक्ष का भाषण

(श्री हीरालाल देपुरा, गृह सूचना एवम् पर्यटन राज्य मत्री, राजस्थान)

आदरणीय श्रीमती विजयालक्ष्मीजी पडित, माननीय अध्यक्ष डॉ० मोहनसिंह मेहता, देवियो और सज्जनों,

उदयपुर का सौभाग्य है कि इस नगर की सार्वजनिक शिक्षण सस्था "महिला-मण्डल" की शिक्षा सेवा ने अपना राष्ट्रीय महत्व प्राप्त किया और आज अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त समाज सेविका श्रीमती विजयालक्ष्मी पण्डित राजस्थान के इस सेवा कार्य को प्रोत्साहन करने के लिये यहाँ पधारी। आपका आगमन हमारे लिये महत्वपूर्ण इसलिये भी है कि महिला-मण्डल के सस्थापक और प्रान्त के लोकप्रिय सामाजिक कार्यकर्ता श्री दयाशकर श्रोत्रिय की समाज सेवाओ का सम्मान करने वाला यह नागरिक समाज आज आपके हाथो श्रोत्रियजी को अपनी भेंट अर्पित करेगा।

"महिला-मण्डल" आज यो अनेक शिक्षण सस्थाओ की पक्ति में खडी है, जिनमे से अनेक विख्यात भी है लेकिन जब हम सन् १९३५ के उदयपुर नगर की कल्पना करते हैं तो इस सस्था का वास्तविक महत्त्व हमारी समझ मे भली प्रकार आ जाता है। जब मन्दिरों मे दर्शनार्थ जाने वाली स्त्रियो को भी केवल घूघट मे नही, बल्कि भारी भरकम पर्दों की आड़ मे जाते हुए देखा जाता था। जब नारियों मे शिक्षा प्रचार को धर्म भ्रष्ट करना समझा जाता था। उस समय श्री दयाशंकर श्रोत्रिय और श्रीमती कमला श्रोत्रिय ने इस सस्था का बीजारोपण किया। श्रीमती कमला श्रोत्रिय ने "प्रयाग महिला विद्यापीठ" की विधिवत् दीक्षा लेकर उस कार्य को राजस्थान मे फैलाया। राष्ट्रपिता महात्मा गाधी के आश्रम में रहकर और व्यवस्था के सस्कार लेकर तथा पूज्य बापू का आशीर्वाद लेकर श्रोत्रियजी ने नारी जागरण का यह कार्यक्रम हाथ मे लिया। बापू ने कहा था—

"राजस्थान को बढाओ और
सेविकाएं तैयार करो।
ऐसे शुभ कार्य में मेरा आशीर्वाद है।"

तब से आज तक के महिला-मण्डल के ३५ वर्ष हमारे अनेक बुजुर्गों के सामने गुजरे हैं और आज हम सभी यह भली प्रकार जानते है कि उदयपुर और मेवाड़ के सांस्कृतिक एवं सामाजिक उत्थान मे इस संस्था का कितना योगदान रहा है।

महिला-मण्डल ने शहर और गाव दोनो क्षेत्रो में अपनी सेवाएं दी है। इस सस्था ने ग्रामीण महिला को प्रौढ-शिक्षण और सामाजिक चेतना के कार्यक्रमो से जगाया और शहरी महिला को शिक्षित बनाते हुए उसे केवल जागरूक ही नही बल्कि आत्म निर्भर भी बनाया। तब शिक्षित नारियो का इस अचल में इतना अभाव था कि महिला-मण्डल की शिक्षित नारियो ने ही समाज और सरकार की अध्यापिकाओ की मांग को वर्षों तक पूरा किया। अन्य क्षेत्रो और व्यवसायो मे भी महिला-मण्डल की शिक्षित नारिया पहुँची जो आज अनेक बडे पदों पर प्रतिष्ठित हैं।

वार्ड स्तर पर थोडे थोडे समय के रात्रि स्कूल या प्रौढ़-शिक्षण केन्द्र चलाकर शुरू किये गये इस कार्यक्रम ने ३५ वर्षो के इस काल मे सराहनीय सेवायें दी है इसने निराश्रित महिलाओ के उद्योग केन्द्र चलाये बालिकाओ और किशोरियो की शिक्षा सचालित की और उसका क्रमश: विकास किया, शहरी मोहल्लो और ग्रामीण क्षेत्रो मे अनेक बाल मन्दिर चलाये, प्रौढ महिलाओ को शिक्षा, आदिवासी छात्राओ को छात्रावास और अध्ययन की सुविधा दी, निराश्रित और बाल-बच्चेदार महिलाओं के निवास और अध्ययन की एक साथ व्यवस्था की। पर्दा प्रथा तोड़ने, पर्दा विरोधी जुलूसो का सचालन भी किया। इस महिला-मण्डल की स्वय सेविकाओ ने गावो मे लम्बे समय तक रहकर ग्रामीण महिलाओ को आधुनिक चेतना के प्रति जागरूक बनाया।

यही कारण था कि राष्ट्रपिता गाधी से लेकर आचार्य विनोबा, जमनालाल बजाज, पं. जवाहरलाल नेहरू, श्रीमती लीलालती मुन्शी, श्रीमती दुर्गाबाई देशमुख, श्रीमती इन्दिरा गाधी और राष्ट्रीय तथा प्रातीय स्तर के शिक्षा शास्त्रियो तथा समाज सेवियो की इस पर सदा कृपा रही और सभी का शानदार सहयोग मिलता रहा। आचार्य विनोबा ने इस सस्था में कुटिया बनाकर निवास किया, केन्द्रीय समाज कल्याण बोर्ड ने इसे ग्राम सेवा की व्यापक योजनाएं करीब ८ वर्ष तक सौपी और भारत पाक विभाजन के सकट की घडी मे शरणार्थी बहिनो के पुनर्वास का बडा कार्य भी इस सस्था ने केन्द्रीय शासन के सहयोग से सचालित किया। हर्ष की बात तो यह है कि आज के समारोह की प्रमुख अतिथि श्रीमती पडित का भी इस सस्था मे आज तीसरी बार पदार्पण हुआ है।

वीर भूमि मेवाड़ की भील कन्याएं क्रीड़ा प्रतियोगिताओ मे अनेक राष्ट्रीय रेकार्ड स्थापित कर सकती हैं, यह प्रमाण भी सर्व प्रथम महिला-मण्डल की छात्राओ ने ही दिया। स्काउटिंग, गर्ल्स गाईड, भारत-भ्रमण, ग्रामो के केम्प तथा लोक सस्कृति के सुन्दर कार्यक्रम प्रस्तुत करने मे भी इस सस्था ने बड़ी प्रसिद्धि प्राप्त की।

ऐसे योगदान के लिये श्री दयाशकरजी श्रोत्रिय को, उनकी पत्नि श्रीमती कमला श्रोत्रिय को और श्रोत्रिय दम्पति के प्रेरणाश्रोत एव सहयोगी "पद्मविभूषण" डा० मोहनसिंहजी मेहता को जितना धन्यवाद दिया जाय उतना कम है। महिला-मण्डल की स्थापना और श्रोत्रियजी के मार्गदर्शन में डा० मेहता का जो योगदान रहा है, उसकी जानकारी हमें प्रस्तुत अभिनन्दन ग्रन्थ से प्राप्त होगी।

इस अवसर पर मैं सस्था की प्रथम अध्यक्षा श्रीमती विजयालक्ष्मी नागर का भी अभिनन्दन करता हू, जिनके मूहूर्त से यह सस्था अपना विकास करती ही चली गई, और आज श्रीमती इन्दूबाला सुखाडिया की अध्यक्षता में महिला-मण्डल अपने कर्तव्य पथ पर अग्रसर है।

श्रोत्रियजी और महिला-मण्डल, यो दोनो एक ही कहानी के दो पहलू है, लेकिन श्रोत्रियजी का जीवन इससे कही अधिक दूर तक फैला हुआ है।

सामन्ती शासन के समय आप छात्र जीवन में ही श्री जमनालाल बजाज और विख्यात क्रान्तिकारी श्री विजय पथिक के सम्पर्क मे आये और तभी से सार्वजनिक जीवन मे कूद पडे। स्वर्गीय माणिक्यलाल वर्मा ने जब मेवाड प्रजा-मण्डल की स्थापना की तो श्री वर्मा महामत्री हुए तो आप प्रजा-मण्डल के मन्त्री पद पर उनके प्रमुख सहयोगियो की पक्ति मे रहे। प्रजा-मण्डल के आन्दोलनों मे अनेक बार जेल यात्रायें की। खादी, सर्वोदय, स्वदेशी भावना, स्वावलम्बन और नैतिक उत्थान के कार्यक्रम सदैव इनके जीवन के अग बने रहे।

आपकी एक प्रशसनीय विशेषता तो यह है कि ऐसा समर्थ और सेवा भावी व्यक्तित्व लेकर भी आप एक सामान्य कार्यकर्ता की भाति चुप-चाप अपना कार्य करते रहे। ऐसे अवसर अनेक आये जब श्रोत्रियजी यश और धन इच्छाए पूरी कर सकते थे, लेकिन इस दिशा मे उनकी कभी कोई इच्छा नही रही।

ऐसे कर्मशील और समाज सेवी व्यक्ति की सेवाओ के अभिनन्दन स्वरूप नागरिक अभिनन्दन समिति ने जो 'श्रोत्रिय अभिनन्दन ग्रन्थ' तैयार किया, यह वास्तव मे उस प्रत्येक निःस्वार्थी कार्यकर्ता का सम्मान है जो अपना जीवन समाज सेवा को दे रहा है। श्री श्रोत्रियजी का तो आज न कोई निजी भवन है न बैंक बेलेन्स है और न किसी प्रकार की कोई चल-अचल सम्पति है। समाज सेवा की वेदी पर आपने अपनी पारिवारिक सम्पति का बलिदान वर्षो पूर्व कर दिया था। आज भी विरासत के नाम पर श्रोत्रियजी के पास या तो अपना सेवाभावी जीवन है, या फिर यह महिला-मण्डल है।

मुझे प्रसन्नता है कि नागरिक अभिनन्दन समिति की ओर से आज मुझे यह अवसर मिला कि श्रोत्रियजी जी सेवाओ को स्वीकार करते हुए उनका परिचय दूँ।

श्री दयाशकर श्रोत्रिय नागरिक अभिनन्दन समिति की ओर से मै सस्था सेवी, समाज सेवी और राष्ट्र सेवी श्री दयाशकरजी श्रोत्रिय का हार्दिक अभिनन्दन करता हूँ और यह कामना करता हूँ कि ईश्वर श्रोत्रियजी को लम्बी आयु दें, जिसे वे समाज सेवा को अर्पित करते रहे।

मैं इस समारोह में उपस्थित सभी सज्जनो और देवियो का भी स्वागत करता हूँ जिन्होने इस आयोजन के महत्व को समझा और यहा पधारे।

प्रमुख अतिथि श्रीमती विजयालक्ष्मी पंडित का पुनः आभार मानते हुए मैं अपना स्थान ग्रहण करता हूँ।

आपको बहुत बहुत धन्यवाद।



राज्य में परिवार नियोजन के क्षेत्र में प्राप्त उपलब्धियां

योजना के शुरू से जून १९७० तक (प्रोविजनल)

विवरण	उपलब्धियां
अ) नसबन्दी किये गये	१,७६०९७
ब) लूप लगाये गये	१,००००१
स) गर्भ निरोधक उपकरण बांटे गये–	
(१) निरोध	५०,५३००५
(२) डायफ्राम	१,२००२८
(३) जेलीक्रीम	१,२६६०५
(४) भागवाली गोलियां	२१,१०८५४

राज्य परिवार नियोजन संस्थान, जयपुर द्वारा प्रकाशित

राजस्थान राज्य लौटरीज

अठारहवें ड्रा में प्रथम पुरस्कार की भेंटः—

रु० २,५०,०००

द्वितीय पुरस्कार	रु० ५०,०००
तृतीय पुरस्कार (पांच)	रु० १०,००० प्रत्येक सीरीज में एक
चतुर्थ पुरस्कार (तीस)	रु० १,००० प्रत्येक सीरीज मे छः

अठाहरवें ड्रा के लिये

अत्याकर्षक दैनिक ड्रा योजना :

प्रतिदिन एक पुरस्कार	रु० १,०००
प्रतिदिन चार पुरस्कार	रु० ५०० (प्रत्येक)
प्रतिदिन २० सान्त्वना पुरस्कार	रु० ५० (प्रत्येक)
प्रथम रविवार को छोड कर शेष चार रविवारो को विशेष पुरस्कार	रु० ५००० (प्रत्येक)

एव

दैनिक ड्रा में रु० १,००० के विजेता

टिकिटो की सख्या के ग्रधार पर एक विशेष पुरस्कार रु० ५०,००० और विशेष पुरस्कार विजेता टिकिट के नम्बर वाले ही अन्य सीरीज के नम्बरो को चार सान्त्वना पुरस्कार रु० १,००० प्रत्येक।

दैनिक ड्रा दिनांक १०–१–७१ से ग्रारम्भ

कुल २२९६ पुरस्कार

ड्रा की तिथी १०–२–७१

टिकिट मूल्य एक रुपया

एजेन्सी के लिये राज्य के जिलो के कोषाधिकारियो से मिलिये, तहसोलो (सब ट्रेजरी) मे टिकिट मिलने की व्यवस्था है।

विशेष जानकारो के लियेः—

निर्देशक

अल्प बचत एव स्टेट लौटरीज राजस्थान

सचिवालय जयपुर

राजस्थान आपको आमन्त्रित करता है !
आइये ! अपना उद्योग लगाइये !

राज़स्थान में विपुल आर्थिक साधन एवं जन-शक्ति उपलब्ध है।
यह साधन आपको अपना उद्योग लगाने का अवसर प्रदान करते है।

राज्य सरकार आपको निम्न सुविधाएं प्रदान करती है—

१. औद्योगिक क्षेत्रो मे सस्ती दर पर भूमि।

२. औद्योगिक बस्ती मे निर्मित शेड तथा सस्ती दरो पर भू-खण्ड, साथ ही बिजली, पानी, सड़कें, बैंक इत्यादि की सुविधा।

३. सस्ते ब्याज एव आसान किस्तो पर ऋण।

४. बडे एव मध्यम श्रेणी के उद्योगो को वितीय सस्थाओ द्वारा दिये जाने वाले ऋण पर गारन्टी।

५ उधार पट्टे पर मशीनें प्राप्त करने मे सहायता।

६. सस्ती दरो पर विद्युत-शक्ति तथा लघु उद्योगो द्वारा विद्युत-शक्ति उपभोग पर वितीय अनुदान।

७. राजकीय जल प्रदाय योजना तथा सिंचाई परियोजना के द्वारा सस्ती दरो पर स्वच्छ पानी।

८. चुंगी कर, बिक्री कर, तथा बिजली की ड्यूटी पर छूट।

९. उत्पादित माल की बिक्री मे सहायता।

१०. कच्चा माल एव मशीनरी प्राप्त करने मे सहायता।

११. नि शुल्क सूचना सेवा एव उचित मार्ग दर्शन।

विस्तृत जानकारी के लिए कृपया निदेशक, उद्योग एव नागरीक रसद विभाग, राजस्थान, जयपुर से सम्पर्क स्थापित करें।

राजस्थान के औद्योगिकरण में भागीदार बनिये।

राजस्थान सरकार द्वारा प्रसारित।

अनुपम परिधान जो सौंदर्य को अधिक मोहक बना देता है।

कोमल व नयनाभिराम सूती साडियों में
देखिये अपने रूप का निखार।

कॉटसेल-'ओ' (वॉश-एन-वेयर)
सिल्कन टच
लेक्स ब्युटी



दि सेंचुरी स्पि. एन्ड मैन्यु. कं. लिमिटेड
सेचुरी भवन,
डॉ. एनी बेजन्ट रोड, बम्बई-२५

ADROIT/CM/2